# तीतरीय

## ब्राह्मणार

#### Colophon

This document was typeset using XAMFX, and uses the Siddhanta font extensively. It also uses several 附y macros designed by H. L. Prasad. Practically all the encoding was done with the help of Ajit Krishnan's mudgala IME (http://www. aupasana.com/).

### **Acknowledgements**

The initial ITRANS encodings of some of these texts were obtained from http://sanskritdocuments.org/ and https://sa.wikisource.org/.Thanksare also due to Ulrich Stiehl (http://sanskritweb.de/) for hosting a wonderful resource for Yajur Veda, and also generously sharing See also http://stotrasamhita.github.io/about/ the original Kathaka texts edited by Subramania Sarma.

### अन्रमणिका

| -  |  |  |
|----|--|--|
|    |  |  |
| -9 |  |  |
| ,  |  |  |
|    |  |  |
|    |  |  |

प्रथमः प्रश्नः द्वितीयः प्रश्नः चतुर्थः प्रश्नः पञ्चमः प्रश्नः

अष्टकम् १

47 70 94 116

सप्तमः प्रश्नः अष्टमः प्रश्नः

षष्ठमः प्रश्नः

166

- 180
- 180

200 225 245

प्रथमः प्रश्नः द्वितीयः प्रश्नः तृतीयः प्रश्नः चतुर्थः प्रश्नः

अष्टकम् २

| =           | 273            | 291            | 328            | 353            | 383       | 383            | 408              | 439            | 467             | 473            | 485            | 503            | 549            | 585          |
|-------------|----------------|----------------|----------------|----------------|-----------|----------------|------------------|----------------|-----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|--------------|
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              |                 | •              |                | •              | •              | •            |
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              | •              | •              | •              | •            |
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              | •              | •              | •              | •            |
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              | •              | •              | •              | •            |
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              | •              | •              | •              | •            |
|             | •              |                | :              |                |           | •              | :                | •              | •               |                | •              | :              |                | •            |
|             |                |                |                |                |           |                |                  |                |                 |                |                |                |                |              |
|             |                |                |                |                |           |                |                  |                |                 |                |                |                |                |              |
|             |                |                |                |                |           |                |                  |                |                 |                |                | •              |                | •            |
|             |                | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              |                | •              | •              | •            |
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              | •              | •              | •              | •            |
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              | •              | •              | •              | •            |
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              | •              | •              | •              | •            |
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              | •              | •              | •              | •            |
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              | •              | •              | •              | •            |
|             |                |                |                |                |           |                |                  |                |                 |                |                |                |                |              |
|             |                |                |                |                |           |                |                  |                |                 |                |                |                |                |              |
|             |                |                |                |                |           |                |                  |                |                 |                |                |                |                | •            |
|             |                | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              |                 |                |                |                |                | •            |
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              | •              | •              | •              | •            |
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              | •              | •              | •              | •            |
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              | •              | •              | •              | •            |
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              | •              | •              | •              | •            |
|             | •              |                | :              |                |           | •              | :                | •              | •               |                | •              | :              |                | •            |
|             |                |                |                |                |           |                |                  |                |                 |                |                |                |                |              |
|             |                |                |                |                |           |                |                  |                |                 |                |                |                |                |              |
|             |                |                |                |                |           |                |                  |                |                 |                |                |                |                |              |
|             |                | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              |                | •              | •              | •            |
|             | •              | •              | •              | •              |           | •              | •                | •              | •               | •              | •              | •              | •              | •            |
| अनुक्रमणिका | पश्चमः प्रश्नः | षष्टमः प्रश्नः | सप्तमः प्रश्नः | अष्टमः प्रश्नः | अष्टकम् ३ | प्रथमः प्रश्नः | द्वितीयः प्रश्नः | तृतीयः प्रश्नः | चतुर्थः प्रश्नः | पश्चमः प्रश्नः | षष्टमः प्रश्नः | सप्तमः प्रश्नः | अष्टमः प्रश्नः | नवमः प्रश्नः |
| الم<br>الم  |                |                |                |                | ल         |                |                  |                |                 |                |                |                |                |              |

**619** 619

प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः

तैत्तिरीय आरण्यकम्

| ानुक्रमणिका | द्विनीयः प्रश्नः |
|-------------|------------------|
|             |                  |
|             |                  |
|             |                  |
|             |                  |
|             |                  |
|             |                  |
|             |                  |
|             |                  |

तृतीयः प्रश्नः चतुर्थः प्रश्नः

पश्चमः प्रश्नः

षष्ठः प्रश्नः

| ≔ | 665 | 684 | 703 | 738 | 777 | 795      | 803         | 810                      |
|---|-----|-----|-----|-----|-----|----------|-------------|--------------------------|
|   |     | •   |     | •   | •   |          | •           | •                        |
|   |     |     | •   | •   | •   | •        | •           | •                        |
|   |     |     |     |     | •   |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             |                          |
|   |     |     |     |     |     |          |             | . '                      |
|   |     |     |     |     |     |          | 33          |                          |
|   |     |     |     |     |     | dec      | 0           |                          |
|   |     |     |     |     |     | <u>છ</u> | 1           | de la                    |
|   |     |     |     |     |     | क्षावछी  | ह्मानन्दवछी | ्रविद्ध्य <mark>े</mark> |

816

महानारायणोपनिषत्

ब्रह्मानन्दवर्ष्ट्रो

अष्टमः प्रश्नः — सप्तमः प्रश्नः –

भुगुवस्त्री

नवमः प्रश्नः – द्शमः प्रश्नः – कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्

द्वितीयः प्रश्नः तृतीयः प्रश्नः

प्रथमः प्रश्नः

867 867 884 905

#### **■ प्रथम: प्रश्न:** ■

॥ अष्टकम् १॥

# ॥तैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके प्रथमः प्रपाठकः॥

ब्रह्म सन्येत्तं तन्मे जिन्वतम्। क्षत्र र सन्येत्तं तन्मे जिन्वतम्। इष् र सन्येत्तं तां मे जिन्वतम्। ऊर्जे र सन्येत् तां मे जिन्वतम्। रृषि र सन्येत् तां मे जिन्वतम्। पुष्टि॰ सन्येत्तं तां<sup>–</sup>में जिन्वतम्। प्रजा॰ सन्येत्तं तां में जिन्वतम्। पृश्नन्थ्सन्येत्तं तान्में जिन्वतम्। स्तुतोऽसि जनेघाः। देवास्त्वां शुक्रपाः प्रणेयन्तु॥१॥

सञ्जग्मानौ दिव आपृषिव्यायुः। सन्येत् तन्मे जिन्वतम्। प्राण॰ सन्येत् तं मे देवास्त्वां मन्थिपाः प्रणंयन्तु। सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन्यसीहि। मन्थी मन्थिशोचिषा। सुवीराैः प्रजाः प्रजनयन्परीहि। शुक्रः शुक्रशोचिषा। स्तुतोऽसि जनधाः। जिन्वतम्। अपान सन्येत्ं तं मे जिन्वतम्॥२॥

व्यान ९ सन्धेत्ं तं में जिन्वतम्। चक्षुः सन्धेत्ं तन्में जिन्वतम्। श्रोत्र ९ सन्धेत्ं

तन्मे जिन्वतम्। मनः सन्येनं तन्मे जिन्वतम्। बाच्र सन्येनं तां मे जिन्वतम्। आयुः स्यु आयुर्मे धत्तम्। आयुर्यज्ञायं धत्तम्। आयुर्येज्ञपंतये धत्तम्। प्राणः स्थेः प्राणं में धत्तम्। प्राणं युजायं धत्तम्॥३॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

प्राणं युज्ञपंतये धत्तम्। चक्षुः स्युश्चक्षुमें धत्तम्। चक्षुर्यज्ञायं धत्तम्। चक्षुर्यज्ञपंतये

धत्तम्। श्रोत्रङ् स्यः श्रोत्रं मे धत्तम्। श्रोत्रं युज्ञायं धत्तम्। श्रोत्रं युज्ञपंतये धत्तम्। तौ देवौ शुक्रामन्थिनौ। कृत्पयंतुं देवीविशाः। कृत्पयंतुं मानुषीः॥४॥

इषमूर्जमस्मासुं धत्तम्। प्राणान्युषुषुं। प्रजां मयिं च यजमाने च। निरंस्तः शण्डेः। निरंस्तो मर्केः। अपंनुतो शण्डामकों सहामुना। शुक्रस्यं समिदंसि। मन्थिनेः समिदंसि। स प्रथमः सङ्गतिर्विष्वकेर्मा। स प्रथमो मित्रो वरुणो अग्निः। स प्रथमो

न्यन्त्वपान॰ सन्येत् तं में जिन्वतं प्राणं युज्ञायं थत्तं मानुषीर्षिष्ठें चं॥ (ब्रह्मं क्षत्रं तदिष्मूर्जं॰ रृषि पुष्टिं प्रजां तां पृश्नतान्थ्सन्धेत्ं तस्राणमेषानं व्यानं तं चक्षुः शोत्रं मनुस्तद्वाच् ताम्। इषादिपश्चेक् बाच् तां में पृश्न्थसन्धेत् तान्मैं प्राणादित्रितेषे बृहस्पतिश्चिकित्वान्। तस्मा इन्द्रांय सुतमा जुंहोमि॥५॥

तं मेऽन्यत्र तन्में)॥—

कृतिकास्विग्नमादंधीत। एतद्वा अग्नेनेक्षेत्रम्। यत्कृतिकाः। स्वायांमैवैनं देवतांयामाषायं। ब्रह्मवर्चसी भेवति। मुखं वा एतन्नक्षेत्राणाम्। यत्कृतिकाः। यः कृतिकास्विग्नमांधते। मुख्यं एव भेवति। अथो खलुं॥६॥

अग्रिनक्षत्रमित्यपंचायन्ति। गृहान् ह् दाहुंको भवति। प्रजापंती रोहिण्यामग्रिमम्जता तं देवा रोहिण्यामादंधत। ततो वै ते सर्वात्रोहांनरोहन्। तद्रोहिण्यै रोहिण्विम्। यो रोहिण्यामग्रिमांधते। ऋष्रोत्येव। सर्वात्रोहाँत्रोहति।

देवा वै मुद्राः सन्तोऽग्रिमाधिध्सन्त॥७॥

ततो कै तान् बामं बसूपावेतीत। यः पुराऽभुद्रः सन्पापीयान्थ्रयात्। स पुनेर्वस्बोर्गिमादेधीत। पुनेरे्वैनं वामं बसूपावेतीत। भूद्रो भेवति। यः कामयेत् दानकामा मे प्रजाः स्युरिति। स पूर्वेयोः फल्गुन्योर्गिमादेधीत॥८॥ तेषामनीहितोऽग्निरासीत्। अधैभ्यो बामं वस्वपौकामत्। ते पुनेर्वस्बोरादेधता

दानेकामा अस्मै प्रजा भेवन्ति। यः कामयेत भगी स्यामिति। स उत्तरयोः फल्गुन्योर्गियमादेधीत्। भगेस्य वा एतन्नक्षेत्रम्। यदुत्तेर् फल्गुनी। भृग्येव भेवति। अर्थमो वा एतन्नक्षेत्रम्। यत्पूर्वे फल्गुंनी। अर्थमेति तमांहुर्यो ददाति।

कालकञ्जा वै नामासुरा आसन्॥९॥

ते सुंबगांयं लोकायाग्रिमीचिन्वता पुरुष इष्टेकामुपांदधात्पुरुष इष्टेकाम्। स इन्द्रौ ब्राह्मणो ब्रुबाण इष्टेकामुपांधता एषा में चित्रा नामेति। ते सुंबग लोकमा प्रारोहन्। स इन्द्र इष्टेकामाबृहत्। तेऽबांकीर्यन्ता येऽबाकीर्यन्त। त ऊर्णाबमेयो-

ऽभवन्। द्वावुदपतताम्॥१०॥

तौ द्वियौ श्वानोवभवताम्। यो आतृव्यवान्थ्स्यात्। स चित्रायांमुग्रिमादंधीत।

अवकीर्येव आतृष्यान्। ओजो बर्लमिन्द्रियं वीर्यमात्मन्येते। वसन्तौ ब्राह्मणौ-ऽग्निमादंधीत। वसन्तो वै ब्रौह्मणस्यतुः। स्व एवैनेमृतावाधाये। ब्रह्मवर्चेसी भेवति। मुखं वा एतहंतूनाम्॥११॥

यद्वंसन्तः। यो वसन्ताऽग्रिमांधते। मुख्यं एव भवति। अथो योनिमन्तमेवैनं प्रजातमार्धते। ग्रीष्मे रोज्न्यं आदंधीत। ग्रीष्मो वै रांजुन्यंस्यर्तुः। स्व एुवेनमृतावाधाये। <u>इन्द्रिया</u>वी मेवति। श्रार्दे वैश्य आदेधीत। वैश्यस्यतुः॥१२॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

स्व एवैनंमृतावाधायं। पृशुमान्नंवति। न पूर्वयोः फल्नुंन्योर्ग्रिमादंधीत। एषा वै

जंघन्यां रात्रिः संबध्सरस्यं। यत्पूर्वे फल्गुंनी। पृष्टित एव संवध्सरस्याग्निमाधायां पापीयान्मवति। उत्तरयोरा देधीत। एषा वै प्रंथमा रात्रिः संवध्सरस्यं। यदुत्तेरे फल्गुंनी। मुख्त एव संवथ्स्रस्याग्रिमा्घायं। वसीयान्मवति। अथो खतुः। यदेवैनं

खल्वोपिथ्सन्त् फल्गुंन्योर्ग्रिमादंथीतासत्रपततामृतूनां वैश्यंस्युर्तुरुत्रं फल्गुंनीं षद्गै॥🕳

यज्ञ उपनमेत्। अथादंधीत। सैवास्यर्ष्धिः॥१३॥

निवंपति। एतद्वा अग्नेर्वेश्वान्रस्यं क्पम्। क्पेणेव वैश्वान्रमवं रुन्धे। ऊषां उद्धन्ति। यदेवास्यां अमेध्यम्। तदपंहन्ति। अपोऽवाँक्षति शान्त्यै। सिकंता

निवेपति। पुष्टिवी एषा प्रजनंनम्। यद्षाः॥१४॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

वा एत४ रसं पृथिव्या उंपदीका उद्दिहन्ति। यद्दल्मीकम्। यद्दल्मीकवृपा संम्मारो भवंति। ऊर्जमेव रसं पृथिव्या अवं रुन्ये। अथो् श्रोत्रमेव। श्रोत्र्ङु ह्यंतत्पृथिव्याः। यदांखुकरीष संम्मारो भवंति। यदेवास्य तत्र न्यंक्तम्। तदेवावं रुन्ये। ऊर्जं समंचरत्। तदांखुकरीषमंभवत्॥१६॥ यद्वल्मोकः॥१७॥

पुष्ट्यांमेव प्रजनेनेऽभिमाधेते। अथौ संज्ञाने एव। संज्ञान् हु ह्येतत्पेशूनाम्। यदूषौः। द्यावापृथिवी सहास्ताम्। ते वियती अंब्रताम्। अस्त्वेव नौ सह यज्ञियमिति। यदुमुष्यां यज्ञियमासीत्। तदुस्यामंदधात्। त ऊषां अभवन्॥१५॥ यद्स्या यज्ञियमासीत्। तद्मुष्यांमदधात्। तद्दक्ष्वन्द्रमंसि कृष्णम्। ऊषात्रिवपंत्रदो ध्यायेत्। द्यावापृथिष्योरेव यज्ञियेऽग्रिमाधंते। अग्निर्देवेभ्यो निलायत। आख् रूपं कृत्वा। स पृथिवीं प्राविशत्। स ऊतीः कुर्वाणः पृथिवीमनु

मबीते। नास्ये गृहेऽत्रं क्षीयते। आपो वा इदमग्रे सिकेलमोसीत्। तेनं ताभ्युः सूद्मुपुप्राभिनत्। ततो वै तासामत्रं नाक्षीयत। यस्यु सूदेः सम्भारो अबंधिरो भवति। य एवं वेदे। प्रजापंतिः प्रजा अंसुजत। तासामत्रमुपाक्षीयत। प्रजापोतेरश्राम्यत्॥१८॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

कथमिदङ् स्यादिति। सोऽपश्यत्पुष्करपुणै तिष्ठंत्। सोऽमन्यत। अस्ति वै तत्। यस्मिन्निदमप्रि तिष्ठतीति। स वेराहो रूपं कृत्वोप् न्यमञ्जत्। स पृथिवीम्ध

आंच्छेत्। तस्यां उपृहत्योदमञ्जत्। तत्पुष्करपुर्णेऽप्रथयत्। यदप्रथयत्॥१९॥

यद्वंगुहविंहत सम्मारो भवंति। अस्यामेवाछंम्बद्वारम्भ्रिमाधेते। शर्करा भवन्ति तत्पृथिको पृथिवित्वम्। अभूद्वा इदमिति। तद्भमै भूमित्वम्। तां दिशोऽनु वातः समेवहत्। ता॰ शर्कराभिरद्द॰हत्। शं वै नोऽभूदिति। तच्छकंराणा॰ शर्कर्त्वम्। धृत्यें॥२०॥

अथो शुन्त्वाये। सरेता अग्रिग्षेय इत्योहुः। आपो वर्षणस्य पर्वय आसन्।

ता अग्निरुभ्यंप्यायत्। ताः समंभवत्। तस्य रेतः परांऽपतत्। तद्धिरंण्यमभवत्। यद्धिरंण्यमुपास्यंति। सरेतसमेवाग्निमाधंते। पुरुष् इन्त्रे स्वाद्रेतंसो बीभध्सत् प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १) इत्याहः॥२१॥

उत्तर्त उपास्यत्यबीभथ्सायै। अति प्रयेच्छति। आर्तिमेवाति प्रयेच्छति। अग्निर्वेक्यो निलायता अश्वो क्पं कृत्वा। सौऽश्वत्थे संबध्स्रमितिष्ठत्। तदेश्वत्थस्यांश्वत्यत्वम्। यदाश्वंत्थः सम्भागे भवंति। यदेवास्य तत्र न्यंक्तम्। तदेवावं रुन्धे॥२२॥

देवा वा ऊर्जं व्यंभजन्ता ततं उदुम्बर् उदंतिष्ठत्। ऊग्वां उंदुम्बरंः। यदौदुंम्बरः

सम्भारो भवंति। ऊर्जमेवावं रुन्ये। तृतीयंस्यामितो दिवि सोमं आसीत्। तं

यस्यं पर्णमयंः सम्भारो भवंति। सोमपीथमेवावं रुन्ये। देवा वै ब्रह्मेत्रवदन्त। तत्पुर्ण उपन्रिणोत्। सुश्रवा वै नामे। यत्पेर्णमयंः सम्भारो भवंति। ब्रह्मवर्चसमेवावं गियुत्र्याऽहेरत्। तस्ये पूर्णमेच्छिद्यता तत्पूर्णोऽभवत्। तत्पूर्णस्यं पर्णत्वम्॥२३॥

रुन्ये। प्रजापेतिरग्रिमंसुजता सोंऽबिमेत्प्र मां धक्ष्यतीति। त॰ शुम्यां-प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १) ऽशमयत्॥२४॥ तच्छुम्यै शमित्वम्। यच्छुमीमयः सम्भारो भविति। शान्त्या अप्रदाहाय। अग्रेः मुष्टस्यं यतः। विकेङ्गतं भा औच्छेत्। यद्वेकेङ्गतः सम्भारो भवंति। भा एवावं रुन्ये। सहंदयोऽग्रिराधेयु इत्यांहुः। मुरुतोऽद्भिर्गिर्मतमयन्। तस्यं तान्तस्य हद्युमाच्छिन्दन्। साऽशनिरभवत्। यद्शनिहतस्य वृक्षस्यं सम्भारो भवति। सहंदयमेवाग्रिमा धंते॥२५॥

द्वाद्शासुं विकामेष्विग्नमा देधीत। द्वादंशु मासाः संवथ्सुरः। संवथ्सुरादेवेनमवुरुद्धा ऊषां अभवत्रभवद्वल्मीकौऽश्राम्युदप्रंथयुद्धुत्ये बीभथ्सत् इत्यांहू रुस्ये पर्णत्वमंशमयदच्छिन्द्ङुस्नीणि च॥====

इयुद्वादेश विकामा(३) इति। परिमितं चैवापीरिमितं चावं रुन्ये। अनुतं वै वाचा चक्षुर्वे मृत्यम्। अद्रा(३)गित्योह। अदंर्शामिति। तथ्मृत्यम्। यश्वक्षुर्निमिते-धेते। यद्वांदशसुं विकामेष्वा दधीत। परिंमितमवं रुन्धीत। चक्षेनिंमित आदेधीत। वेदति। अनुतं मनेसा ध्यायति॥२६॥

ऽग्रिमांधृते। सृत्य एवेनुमा धेते। तस्मादाहिताग्रिनीनुतं बदेत्। नास्यं ब्राह्मणो-

दिवाऽऽहवनीयम्। इन्द्रियमेवावं रुन्ये। अर्थोदिते सूर्यं आहवनीयमा दंधाति। एतस्मिन्वे लोके प्रजापेतिः प्रजा अंसुजत। प्रजा एव तद्यजमानः सुजते। अथौ

इडा वै मांनुवी यंज्ञानूकाशिन्यांसीत्। साऽश्रृंणोत्। असुरा अग्रिमादंधत् इतिं।

मूतं चैव भविष्यचावे रुसे॥२८॥

तदंगच्छत्। त आंहवनीयमग्र आदंधता अथ् गार्हपत्यम्। अथौन्वाहार्यपचेनम्। साऽब्रेवीत्। प्रतीच्येषाङ् श्रीरंगात्। मुद्रा भूत्वा परां भविष्युन्तीति॥२९॥

आग्रेयाः पृशवंः। ऐन्द्रमहंः। नक्तं गार्हंपत्युमा दंधाति। पृशूनेवावं रुन्ये।

ऽनांशान्गृहे वेसेत्। सत्ये ह्यंस्याभिराहितः। आभ्येयी वै रात्रिः॥२७॥

देवा अग्निमादंधत् इति। तदंगच्छत्। तैऽन्वाहार्यपर्वनुमग्र आदंधता अथ्

गार्ह्पत्यम्। अर्थाऽऽहवनीयम्। साऽब्रेवीत्॥३०॥

यस्यैवमग्निरांधीयते। प्रतीच्यंस्य श्रीरंति। भूद्रो भूत्वा परांभवति। साऽश्रंणोत्।

प्राच्येषाङ् श्रीरंगात्। भुद्रा भूत्वा सुंवर्गं लोकमैष्यन्ति। प्रजां तु न वैध्स्यन्त इति। यस्यैवमृभिरोधोयतै। प्राच्यंस्यु श्रीरेति। भूद्रो भूत्वा सुंवर्गं लोकमीते। प्रजां प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

तु न विन्दते। साऽब्रवीदिडा मनुम्। तथा वा अहं तवाभ्रमाधास्यामि। यथा प्र

प्रजयां पृश्मिमिथुनैजीनुष्यसे॥३१॥

प्रत्यस्मिँह्रोके स्थास्यिसि। अभि सुंबर्ग लोकं जेष्यसीति। गार्हपत्यमग्र आदंधात्। गार्हपत्यं वा अनु प्रजाः पशवः प्रजायन्ते। गार्हपत्येनेवास्मै प्रजां पश्चाजनयत्। अथौन्वाहार्यपर्वनम्। तिर्यिङ्कां वा अयं लोकः। अस्मिन्नेव तेनं लोके प्रत्यतिष्ठत्। अथोऽऽहबनीयम्। तेनैव सुंबर्ग लोकमन्येजयत्॥३२॥

यस्यैवमुभिराधीयते। प्र प्रजयां पृशुभिर्मिथुनैर्जायते। प्रत्यस्मिँक्षोके तिष्ठति। अभि सुंवर्ग लोकं जीयति। यस्य वा अयंथादेवतमुभिराधियते। आ देवताभ्यो वृश्यते। पापीयान्मविति। यस्ये यथादेवतम्। न देवताभ्य आवृश्यते।

वसीयान्मवोते॥ ३३॥

त्वा देवानां व्रतपते व्रतेनादेथामीत्यन्यासां ब्राह्मणीनां प्रजानाम्। वरुणस्य त्वा राज्ञों व्रतपते ब्रतेनादेधामीति राज्ञं। इन्द्रंस्य त्वेन्द्रियेणं व्रतपते ब्रतेनादंधामीति राज्जन्येस्य। मनोस्त्वा ग्रामण्यों व्रतपते ब्रतेनादंधामीति वैश्येस्य। ऋभूणां त्वां भृगूंणां त्वाऽङ्गिरसां व्रतपते ब्रतेनादंधामीति भृग्वङ्गिरसामादंध्यात्। आदित्यानां प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

ध्यायति वै रात्रिश्चावं रुन्धे भविष्यन्तीत्यंब्रवीज्ञनिष्यसेऽजयद्वसीयान्भवति नवं च॥🕳

प्रजापतिर्वाचः स्त्यमपश्यत्। तेनाग्निमार्यता तेन् वै स आर्प्नीत्। भूर्भुवः

सुवरित्योह। एतद्वै वाचः सत्यम्। य एतेनाग्रिमांधत्ते। ऋप्रोत्येव। अथौ सत्यप्रांशूरेव भेवति। अथो य एवं विद्वानीभेचरति। स्तृणुत एवैनम्॥३५॥ भूरित्योह। प्रजा एव तद्यजंमानः सुजते। भुव इत्योह।

अस्मित्रेब | तिष्ठति। देवानां व्रतपते ब्रतेनादंधामीति रथकारस्यं। यथादेवृतमग्निराधीयते। न देवताैन्य सुवर्ग एव लोके प्रति तिष्ठति। सुवृरित्याह। आवृंश्यते। वसीयान्मवति॥३४॥

त्रिभिर्क्षरैगरिहेपत्युमा देधाति। त्रयं इमे लोकाः। एष्वेवैनं लोकेषु प्रति-ष्ठितमार्थते। सर्वैः पृअभिराहवनीयम्॥३६॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

सुवगांय वा एष लोकायाधीयते। यदाहवनीयः। सुवर्ग एवास्मे लोके वाचः

एष वै प्रजापितिः। यद्भिः। प्राजापुत्योऽभैः। यद्भै पुरस्तात्रयीते। स्वमेव चक्षुः

ज्योतिरुदंगृह्णात्। तं ज्योतिः पश्यंन्तीः प्रजा अभि समावेतन्त। उपरीवाग्निमुद्गृह्णीयादु्य ज्योतिरेव पश्यंन्तीः प्रजा यजमानम्भि समावेतिन्ते। प्रजापेतेरक्ष्यंश्वयत्। तत्परां-प्रजापंतिः प्रजा अंसुजता ता अंस्माष्सृष्टाः परांचीरायन्। ताभ्यो न्यः सर्वमाप्रोति। त्रिभिगरिह्पत्यमा देघाति। प्अभिराहवनीयम्। अष्टौ पश्येन्य्रजापीतेरनूदेति। वृज्ञी वा एषः। यदर्षः। यदर्शं पुरस्तान्नयंति। जातानेव सम्पंद्यन्ते। अष्टाक्षंरा गायुत्री। गायुत्रींऽग्रिः। यावांनेवाग्रिः। तमार्यते॥३७॥ ऽपतत्। तदश्वोऽमवत्। तदश्वंस्याश्वत्वम्॥३८॥ आहेव्यान्प्रणुद्ते। पुन्रा वेर्तयति॥३९॥

जनिष्यमाणानेव प्रतिनुदते। न्याहवनीयो गार्हपत्यमकामयत। निगार्हपत्य

आह्वनीयम्। तौ विभाजं नाशक्रोत्। सोऽर्थः पूर्ववाङ्गत्वा। प्राञ्चं पूर्वमुदंवहत्।

तत्पूर्ववाहंः पूर्ववाद्वम्। यदश्वं पुरस्तात्रयति। विभंक्तिरेवैनयोः सा। अथो नानावीर्यावेवेनौ कुरुते॥४०॥

यदुपर्युपार् शिरो हरौत्। प्राणान् विच्छिन्द्यात्। अयोऽपः शिरो हरति। प्राणानां

गोपीथाये। इयत्यमें हरति। अथेयृत्यथेयंति। त्रयं इमे लोकाः। पृष्वेवेनं लोकेषु

प्रतिष्ठितमार्थते। प्रजापितिराग्नमंसृजता सोऽबिभेत्य मां घक्ष्यतीति॥४१॥

महिमानंमेवास्य तद्यूहति। शान्त्या अप्रेदाहाय। पुन्रा वेर्तयति। महिमानेमेवास्य सन्देपाति। पृशुर्वा एषः। यदर्भः। एष कृदः॥४२॥

तस्यं त्रेया मंहिमानं व्यौहत्। शान्त्या अप्रदाहाय। यत्रेषाऽग्निरांधीयतै॥

यद्भिः। यदर्शस्य प्दैऽभिमांद्ध्यात्। रुद्रायं पृशूनपिंदध्यात्। अपुशुर्यजमानः

स्यात्। यत्राक्रमयेत्। अनंबरुद्धा अस्य पृशवंः स्युः। पार्श्वेत आर्त्रमयेत्।

5 यथाऽऽहितस्याग्नेरङ्गारा अभ्यव्वर्तेरन्। अवेरुद्धा अस्य पृशवो भवंन्ति। न प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

त्रीणि हवी शष्ट निर्वपति। विराजं एव विकांन्तं यजमानोऽनु विकेमते। अग्रये पर्वमानाय। अग्रये पावकाये। अग्रये शुचेये। यद्ग्रये पर्वमानाय निर्वपति।

रुद्रायापिंदधाति॥४३॥

पुनात्येवेनम्। यद्ग्रये पावकाये। पूत एवास्मित्रत्राद्यं दशाति। यद्ग्रये शुचेये।

देवासुराः संयेता आसन्। ते देवा विजयमुंपयन्तेः। अग्नौ वामं वसु सं न्यंदधता <u>इ</u>दमुं नो भविष्यति। यदिं नो जेष्यन्तीतिं। तद्ग्रिनेष्सिहेमशक्रोत्। तत्

पुनमाहबनीयं धत्तेऽश्वत्वं वंतियति कुरुत इति रुद्रो दंधाति यद्ग्रये शुचंय एकं च॥===

<u>बृह्मवर्चसमेवास्मिन्नुपरिष्टाद्घाति॥४४॥</u>

निरंवपन्। पृशवो वा अभिः पर्वमानः। यदेव पृशुष्वासीत्। तत्तेनावांरुन्यत। तैऽग्रये

त<u>द</u>्देवा विजित्ये। पुन्रवांरुरुथ्सन्ता तेऽअये पर्वमानाय पुरोडाशम्षाकेपाले

त्रेया विन्यंदधात्। पृशुषु तृतीयम्। अपसु तृतीयम्। आदित्ये तृतीयम्॥४५॥

16

प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

तत्तेनावांरुन्यता ब्रह्मवादिनो वदन्ति तनुवो वावेता अंग्याधेयंस्या आग्रेयो वा अष्टाकेपालोऽग्याघेयमिति। यत्तं निर्वेपैत्। नैतानि। यथाऽऽत्मा स्यात्॥४७॥

तैऽभ्रषे शुचेये। असौ वा आदित्यौऽभिः शुचिंः। यदेवाऽऽदित्य आसीत्।

पाव्कायं। आपो वा अग्निः पांव्कः। यद्वापस्वासीत्। तत्तेनावांरुन्यत॥४६॥

यौंऽग्रिमांधृते। ऐन्द्राग्रमेकांदशकपालुमनु निर्वपेत्। आदित्यं चुरुम्। इन्द्राग्नी वै

नाहगेव तत्। उभयानि सह निरुप्याणि। युज्ञस्यं सात्मत्वाये। उभयं वा पुतस्यैन्द्रियं

वीर्यमाप्यते॥ ४८॥

नाङ्गानि। ताट्गेव तत्। यदेतानि निविपैत्। न तम्। यथाऽङ्गानि स्युः। नाऽऽत्मा

रुन्थे। आदित्यो भेवति। इ्यं वा अदितिः। अस्यामेव प्रति तिष्ठति। धेन्वै वा

भवति।

व्य

<u>रुन्ध</u>े

मिथुनमेवाव

ॶॖन्डुहस्तण्डुलाः।

यदाज्यम्।

एतद्रेतं:॥४९॥

देवानामयातयामानो। ये एव देवते अयातयाम्री। ताभ्यामेवास्मां इन्द्रियं वीर्यमवं

यज्ञस्यालूक्षान्तत्वाय। चत्वारं आर्षेयाः प्राश्जीन्ता दिशामेव

जुहोति। पृशवो वा पृतानि हुवी शिषे। पृष कृद्रः। यद्ग्रिः॥५०॥

यथ्सुद्य एतानि ह्वीश्षि निविपैत्। क्द्रायं पृशूनपि दध्यात्। अपुशुर्यजमानः

स्यात्। यत्रानुनिर्वपैत्। अनेवरुद्धा अस्य पृशवंः स्युः। द्वादृशसु रात्रोष्वनु निर्वपेत्।

संवथ्सरप्रतिमा वै द्वादंश रात्रयः। संवथ्सरेणेवास्मै कृद्र शमियित्वा। पृशूनवं रुन्ये। यदेकेमेकमेतानि हुवी रिषे निर्वेपैत्॥५१॥

उत्तेरे समेस्येत्। तृतीयेमेवास्मै लोकमुच्छि॰्षति प्रजनंनाय। तं प्रजयां पशुमिरनु प्रजायते। अथों यज्ञस्यैवैषाऽभिक्रान्तिः। र्थच्कं प्रवित्यति। मनुष्यर्थेनैव देवर्थं

यथा त्रीण्यावपंनानि पूरयैत्। तादक्तत्। न प्रजनंनमुच्छि १षेत्। एकं निरुष्ये।

जुहुयात्। अयंथापूर्वमाहुती जुहुयात्। यत्र जुंहुयात्। अग्निः परां भवेत्। तूष्णीमेव

ब्रह्मवादिनो वदन्ति। होत्व्यमिश्रहोत्राँ(३) न होत्व्या(३) मिति। यद्यजुषा

प्रत्यवंरोहति॥५२॥

8

विह्नेनेव विह्ने युजस्यावं रुन्ये। मिथुनौ गावौ ददाति। मिथुनस्यावंरुस्त्री वासो ददाति। सुर्वेद्वत्यं वै वासः। सर्वा एव द्वताः प्रीणाति। आ द्वांदुशभ्यों

ददाति। द्वादेश मासौः संबथ्सरः। संबृथ्सर एव प्रति तिष्ठति। कामेमूर्जं देयमै।

अपेरिमितस्यावंरुद्धौ॥५५॥

अग्रिमुंखानेवर्त्-प्रीणाति। उपबर्हणं ददाति। रूपाणामवेरुस्ये। अर्थं ब्रह्मणै। इन्द्रियमेवावे रुन्ये। धेनु॰ होत्रे। आशिषं एवावे रुन्ये। अनुद्वाहंमध्वरीवै। विह्विवी

भंनद्वान्। विहिंरष्वर्षुः॥५४॥

होत्व्यम्। य्थापूर्वमाहुती जुहोति। नाग्नः परांभवति। अग्नीधे ददाति॥५३॥

घर्मः शिर्स्तद्यमग्निः। सम्प्रियः पशुमिर्भुवत्। छुर्दिस्तोकाय तनयाय यच्छा। बातः प्राणस्तद्यमग्निः। सम्प्रियः पशुमिर्भुवत्। स्वदितं तोकाय तनयाय पितुं पंच। प्राचीमनुं प्रदिशं प्रेहि विद्वान्। अग्नेरंग्ने पुरो अग्निर्भेवह। विश्वा आशा दीद्यानो

आदित्ये तृतीयमुफ्स्वासीत्ततेनाबौरुच्यत् स्यादाष्यते रेतोऽग्निरकमेकमेतानि हुवी∜षि निवंपैष्यवर्गेहति ददात्यष्वयुँदैयमेकं च॥ि ६ ]

19

विभोहि। ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुंष्पदे॥५६॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अकेश्वक्षुस्तद्सौ सूर्यस्तद्यमुग्निः। सम्प्रियः पुशुभिर्भुवत्। यत्ते शुक्र शुक्रं वर्चः शुक्रा तृन्ः। शुक्रं ज्योतिरजेस्नम्। तेनं मे दीदिहि तेन त्वाऽऽदेधे। अग्निनौऽभ्रे क्रह्मणा। आनुशे व्यानशे सर्वमायुव्यानिशे। ये ते अग्ने शिवे तनुवौ। विराद्वे स्वराद्वे। ते माविशतां ते मां जिन्वताम्॥५७॥

ये ते अग्ने शिवे तनुवौं। सम्माद्दांभिभूश्चं। ते माविशतां ते मां जिन्वताम्। ये ते अग्ने शिवे तनुवौं। विभूश्चं परिभूश्चं। ते मा विशतां ते मां जिन्वताम्। ये ते अग्ने शिवे तनुवौं। प्रम्वी च प्रभूतिश्च। ते मा विशतां ते मां जिन्वताम्। यास्ते अग्ने श्विवास्त्नुवेः। तामिस्त्वाऽऽदेधे। यास्ते अग्ने घोरास्त्नुवेः। तामिरमुं गेच्छ॥५८॥ वतुष्पदे जिन्वतां तृनुब्स्नीणिं च॥■

ड्रमे वा एते लोका अग्नयः। ते यदव्यांवृत्ता आधीयेरन्। शोचयेयुर्यजीमानम्। घुर्मः शिर् इति गार्हेपत्युमा देधाति। वातेः प्राण इत्येन्वाहार्यपचेनम्।

20

प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अस्मित्रेवैनं लोके प्रतिष्ठितमा धेते। वामदेव्यम्भिगायत उद्धियमाणे। अन्तरिक्षं

अर्कश्चक्षुरित्योहवनीयम्। तेनैवेनान्व्यावेर्तयति। तथा न शोचयन्ति यज्नेमानम्। र्थन्त्रमृभिगायते गार्हेपत्य आर्थायमाने। राथेन्तर्गे वा अयं लोकः॥५९॥

शान्तमेवैनं पश्व्यमुद्धरते। बृहद्भिगायत आहवनीयं आधीयमाने। बार्हतो वा

वै वामदेव्यम्। अन्तरिक्ष एवेनं प्रतिष्ठितमार्थते। अथो शान्तिकै वामदेव्यम्।

असौ लोकः। अमुष्मिन्नेवैनं लोके प्रतिष्ठितमार्थते। प्रजापितिराग्नमंसृजत॥६०॥ सोऽश्वोऽवारो भूत्वा परोडेत्। तं वारवन्तीयेनावारयत। तद्वारवन्तीयंस्य वारवन्तीयत्वम्। श्येतेनं श्येती अंकुरुत। तच्छ्येतस्यं श्येतत्वम्। यद्वारवन्तीयमिमे गायेते। वार्यित्वेवैनं प्रतिष्ठितमा धेते। श्येतेनं श्येती कुंरुते। घर्मः शिर इति

उपैनुमुत्तेरो युज्ञो नेमति। कुद्रो वा एषः। यद्ग्रिः। स आंधीयमांन ईश्युरो

गार्ह्पत्युमाद्धाति। सशीर्षाणमेवेनुमा धेते॥६१॥

यजंमानस्य पृशून् हि॰सितोः। सम्प्रियः पृशुभिर्भुबदित्याह। पृशुभिर्वेवेन्॰ सम्प्रियं

करोति। पश्रूनामहि<sup>र्</sup>सायै। छुर्दिस्तोकाय तनयाय युच्छेत्योह। आमेवैतामा शौस्ते। वातेः प्राण इत्येन्वाहार्यपचेनम्॥६२॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

सप्राणमेवेनमा धेते। स्वदितं तोकाय तनेयाय पितुं प्चेत्याह। अत्रेमेवास्मैं स्वदयति। प्राचीमनुं प्रदिशं प्रेहिं विद्वानित्याह। विभेक्तिरेवेनयोः सा। अथो

- ँ - ँ - न् नानावीयविवेनौ कुरुते। ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पद् इत्याह। आमेवेतामा शास्ते। अकेश्वसुरित्योहवनीयम्। अर्को वै द्वानामन्नम्॥६३॥

अत्रमेवावं रुन्ये। तेनं मे दीदिहीत्यांहा सिमिन्य एवैनम्। आनुशे व्यानशु इति

कार्यम्। वीङ्गितमप्रतिष्ठितमा देधीत। उद्धृत्यैवार्घायोभिमञ्जियः। अवीङ्गितमेवैनं प्रतिष्ठितमार्धते। विराद्वं स्वराद्वं यास्ते अग्ने शिवास्तनुवस्तामिस्त्वाऽऽदेध 

इत्याह। पृता वा अग्नेः शिवास्त्नुवंः। ताभिरेवैन समर्पयति। यास्ते अग्ने घोरास्त्नुबस्ताभिर्मु गुच्छेति ब्र्याद्यं द्विष्यात्। ताभिरेवेनं परोभावयति॥६४॥

शुमीगुर्भाद्भिं मन्थति। एषा वा अग्नेर्यीज्ञयां तनूः। तामेवास्मे जनयति। अदितिः पुत्रकामा। साष्येभ्यो देवेभ्यो ब्रह्मोद्नमपंचत्। तस्यां उच्छेषणमददुः। तत्प्राश्र्जात्। सा रेतोऽधत्ता तस्यै घाता चौर्यमा चोजायेताम्। सा द्वितीयेमपचत्॥६५॥ लोकोऽसुजतैनुमार्थतेऽन्वाहार्युपचेनं देवानामत्रमेनं प्रतिष्ठितमार्थते पश्चं च॥🕳 प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

तस्यां उच्छेषंणमददुः। तत्प्राश्र्जात्। सा रेतोऽधत्ता तस्यै मित्रश्च

वर्रणश्वाजायेताम्। सा तृतीयंमपचत्। तस्यां उच्छेषंणमददुः। तत्प्राश्र्जात्।

तस्यां उच्छेषंणमददुः। तत्प्राध्जौत्। सा रेतोऽधत्त। तस्या इन्द्रेश्च

सा रेतोंऽधत्ता तस्या अश्शंश्च भगंश्वाजायेताम्। सा चंतुर्थमेपचत्॥६६॥

- रेतों ऽधत्त॥ ६७॥

ओंद्नम्। यदाज्यंमुच्छिष्यंते तेनं समिधोऽभ्यज्या दंधाति। उच्छेषंणाद्वा अदिती

विवस्वाङ्श्वाजायेताम्। ब्रह्मोद्नं पंचति। रेतं एव तद्धाति। प्राश्चेनि

ब्राह्मवा

उुच्छेषेणादेव तद्रेतो धत्ते। अस्थि वा एतत्। यथ्समिधेः। एतद्रेतेः। यदाज्यम्॥

यदाज्येंन समिपोऽभ्यज्यादधांति। अस्थ्येव तद्रेतंसि दधाति। तिस्र आदंधाति मिथुन्त्वाये। इयंतीर्भवन्ति। प्रजापंतिना यज्ञमुखेन् सम्मिताः॥६८॥

पृतद्वा अग्नेः प्रियं धामी यद्घृतम्। प्रियेणैवैनं धाम्ना समंध्यति। अथो तेजंसा। गायत्रीभिन्नक्विणस्यादंध्यात्। गायत्रछंन्दा वै ब्रौह्मणः। स्वस्य छन्दंसः प्रत्ययन्त्त्वाये। त्रिष्टुग्भी राज्न्यंस्य। त्रिष्टुप्छंन्दा वै राज्न्यः। स्वस्य छन्दंसः

प्रत्ययनस्त्वाय॥७०॥

जगंतीभिवैश्यंस्य। जगंतीछन्दा वै वैश्यंः। स्वस्य छन्दंसः प्रत्ययन्स्वायं। त॰ संबध्मरं गोपायेत्। संबध्मर हिरेतो हितं वर्धते। यद्येन धंबध्सरे नोपनमैत्।

इयंतीर्मवन्ति। यज्ञपुरुषा सम्मिताः। इयंतीर्मवन्ति। पृतावद्वे पुरुषे वीर्यम्। वीर्यसम्मिताः। आद्री भवन्ति। आद्रीमेव हि रेतः सिच्यते। चित्रियस्याश्वत्थस्यादंथाति। चित्रमेव भवति। घृतवंतीर्भिरा दंधाति॥६९॥ सुमिषः पुनुरादेध्यात्। रेते पृव तिष्ट्वतं वर्धमानमेति। न मा्र्यसमेश्जीयात्। न

24

यन्मार्समम्भ्योयात्। यश्क्त्रियंमुपेयात्। निर्वीर्यः स्यात्। नैनंमग्रिरुपंनमेत्। श्व

स्त्रियमुपेयात्॥ ७१॥

आधास्यमानो ब्रह्मोद्नं पंचति। ऑदित्यां वा इत उत्तमाः सुंवर्गं लोकमायन्। ते

वा <u>इ</u>तो यन्तुं प्रतिनुदन्ते। एते खलु वावाऽऽद्तियाः। यद्वाह्मणाः। तैरेव सन्त्वं

गच्छति॥७२॥

नैनं प्रतिनुदन्ते। ब्रह्मवादिनो वदन्ति। क्रां सः। अग्निः कार्यः। यौऽस्मै

<u> मुजां पश्चन्नेजनयुतीति। शल्केस्ता १ रात्रिम्भिमिन्धीता तस्मिन्नुपब्युषमरणी</u>

निष्टेपेत्। यर्थर्ष्मायं वाश्विता न्यांविच्छायति। ताद्योव तत्। अपोद्द्य भस्माभि

मंन्थति॥ ७३॥

सैव साऽग्रेः सन्तेतिः। तं मीथेत्वा प्राश्चमुर्खरति। संवृथ्सुरमेव तद्रेतो हितं प्रजनयति। अनोहित्स्तस्याग्निरित्योहुः। यः सामिषोऽनाषायाग्निमाष्ट्त इति। ताः

संबथ्मरे पुरस्तादादध्यात्। संबृथ्सरादेवैनमवृरुध्याधेते। यदि संबथ्मरेऽनादध्यात्।

25

द्वाद्श्याँ पुरस्तादादेध्यात्। संवृथ्स्रप्रीतिमा वै द्वादेश् रात्रयः। संवृथ्स्रम्नेवास्याहिता प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

क्वितीयंमपचचतुर्धमंपच्ददितो रेतोऽधन् सम्मिता घृतवंतीमिरादंधाति राजुन्यः स्वस्य छन्दंसः प्रत्ययनुस्त्वायंयाद्रच्छति मन्यति

भवन्ति। यदि द्वादृश्यां नादृष्यात्। त्र्युहे पुरस्तादादष्यात्। आहिता पुवास्य

भवन्ति॥७४॥

रात्रंयश्चल्वारिं च॥🕳

आत्मन्वीर्यमपश्यत्। तदंवर्धत। तदंस्माष्सहंसोष्ठ्वमंसुज्यत। सा विराडेभवत्। तां

देवासुरा व्यंगृह्नता सौऽब्रवीत्यजापीतः। मम् वा एषा॥७५॥

मुजापंतिः मुजा अंसुजता स रिरिचानोऽमन्यता स तपोऽतप्यता

प्रजां में गोपायेति। सा तृतीयुमुदंकामत्। तत्युजापंतिः पर्यगृह्णात्। शाङ्स्यं पृशाून्मे

गोपायेति॥ ७६॥

अर्थर्व पितुं में गोपायेति। सा द्वितीयमुदंकामत्। तत्युजापंतिः पर्यंगुह्वात्। नर्यं

दोहां एव युष्माकृमितिं। सा ततः प्राच्युदंकामत्। तत्प्रजापेतिः पर्यगृह्णात्।

सा चेतुर्थमुदंकामत्। तत्य्जापतिः पर्यगृह्णात्। सप्रंथ स्भां मे गोपायेति। सा

पंश्वममुदंकामत्। तत्युजापंतिः पर्यगृह्णात्। अहं बुधिय मत्रं मे गोपायेति। अग्नीन्

वाव सा तान्त्र्यंक्रमता तान्य्रजापेतिः पर्वगृह्णात्। अथों पृङ्किमेव। पृङ्किबी एषा

ब्राह्मणे प्रविष्टा॥७७॥

अत्रमेवैतेन स्पुणोति। नर्यं प्रजां में गोपायेत्याह। प्रजामेवेतेन स्पुणोति। शङ्स्यं

पशून्मे गोपायेत्यांह॥७८॥

तामात्मनोऽधि निर्मिमीते। यदग्रिरांधीयते। तस्मांदेतावंन्तोऽग्रय आधीयन्ते। पाङ्गं वा इदर सर्वम्। पाङ्गेनैव पाङ्गर्थं स्पृणोति। अर्थर्वं पितुं में गोपायेत्यांह।

पशूनेवैतेनं स्पुणोति। सप्रंथ सुभां में गोपायेत्यांह। सुभामेवैतेनीन्द्रिय इ

स्पुणोति। अहे बुग्निय मत्रे मे गोपायेत्याह। मन्नमेवेतेन त्रिय हं स्पुणोति।

आज्येमधिश्रयन्ति सम्पत्नीयाजियन्ति। तेन् सौऽस्यामीष्टः प्रोतः। यदाहिब्नीये

यदेन्वाहार्यपचेनेऽन्वाहार्यं पर्चन्ति। तेन सौंऽस्याभीष्टेः प्रोतः। यद्वार्ह्पत्य

| - |
|---|
|   |
|   |
|   |
|   |

#### जुह्यंति॥७९॥

तेन सौऽस्याभीष्टः प्रीतः। यथ्सभायां विजयंन्ते। तेन सौऽस्याभीष्टंः प्रीतः।

गृहानेति। तादगेव तत्। पुनंगात्योपतिष्ठते। सा भागयमेवेषां तत्। सा तते आधीयन्ते। प्रवस्थमेष्यत्रेवमुपतिष्टेतैकमेकम्। यथां ब्राह्मणायं गृहेवासिने परिदायं यदांवस्थेऽत्रुर् हर्यन्ति। तेन् सौऽस्याभीष्टेः प्रोतः। तथाऽस्य सर्वे प्रीता अभीष्टा

ऊर्जारोहत्। सा रोहिण्यंभवत्। तद्रोहिण्ये रोहिण्विम्। रोहिण्यामुग्रिमादंधीत। स्व एवेन् योनो प्रतिष्ठितमाधेते। ऋप्नोत्येनेन॥८०॥ एषा पृश्नूमें गोपायेति प्रविंष्टा पृश्नूमें गोपायेत्यांहु जुह्नीत तिष्ठते सुप्त चं॥🕳

ब्रह्म सन्येत्ं कृत्तिंकामूद्धीन्ते द्वाद्शसुं प्रजापीतर्बाचो देवासुरास्तद्ग्रिनोद्धर्मः शिरं ड्रमे वै शंमीगुर्मास्रजापितिः स रिरिचानः स तप्ः स आत्मन्बोर्यं दश्गा१०॥

ब्रह्म सन्येन्तं तौ दिव्यावथौ शुन्त्वायु प्राच्यैषां यदुपर्युपिरि यथ्सुद्धः सोऽभोऽवारौ भूत्वा जगेतीभिरशीतिः॥८०॥

ब्रह्म सन्यंतम्भ्रोत्यंनेन॥

| 28                         |           | ५ प्रथमः प्रपाठकः समाप्तः॥                           |
|----------------------------|-----------|--|
| प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १) | हरिः ओम्॥ | ॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैतिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके |

द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

॥ द्वितीयः प्रश्नः॥

# ॥तौत्तरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके द्वितीयः प्रपाठकः॥

उद्धन्यमांनमस्या अंमेध्यम्। अपं पाप्मानं यजंमानस्य हन्तु। शिवा नेः सन्तु ग्रदिश्वक्षतंस्रः। शं नो माता पृथिवी तोकंसाता। शं नो देवीर्मिष्येये। आपो भवन्तु

पीतयै। शं योर्भि स्नेवन्तु नः। वैश्वान्रस्यं रूपम्। पृथिव्यां परिस्नसा। स्योनमा विंशन्तु नः॥१॥

यदिदं दिवो यद्दः पृथिव्याः। स्ञुज्ञाने रोदंसी सम्बभूवतुः। ऊषाँ-कृष्णामंवतु कुष्णमूषाः। इहोभयौर्यत्रियमागीमिष्ठाः। ऊतीः कुर्वाणो यत्पृथिवीमचेरः।

ाुहाकारमाखुरूपं प्रतीत्या तत्ते न्यंक्तमिह सम्भरंन्तः। श्रातं जीवेम श्रारदः

वृम्रीमिर्नुवित् गुहोसु। श्रोत्रं त उर्व्यबिधिरा भवामः। प्रजापेतिसृष्टानां प्रजानाम्। सवीराः। ऊर्जं पृथिव्या रसमामर्नन्तः। शृतं जीवेम श्ररदेः पुरूचीः॥२॥

क्षुघोऽपेहत्यै सुवितं नो अस्तु। उप प्रभित्रमिषमूजै प्रजाभ्यः। सूदं गृहेभ्यो

30 त्मुमाभेरामि। यस्ये रूपं बिन्नेदिमामविन्दत्। गुहा प्रविष्टा॰ सरि्रस्य मध्यैं। तस्येदं विह्तमामरंन्तः। अछ्म्बद्वारमस्यां विधेम॥३॥ द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

यत्पर्यपेश्यथ्सरिरस्य मध्यै। उर्वीमपेश्युज्जगंतः प्रतिष्ठाम्। तत्पुष्कंरस्यायतंनांग्द्धे

अद्धः सम्भूतमुन्तं प्रजासु। तथ्सम्भरंत्रुत्तर्तो निघाये॥४॥

अतिप्रयच्छं दुरितिं तरेयम्। अश्वो रूपं कृत्वा यदंश्वत्थेऽतिष्ठः। संवथ्सरं देवेग्यों निलाये। तत्ते न्यंक्तमिह सम्भरंन्तः। शतं जीवेम श्ररदः सवीराः। ऊर्जः पृथिव्या अध्युत्थितोऽसि। वनंस्पते शृतवंलशो विरोह। त्वयां वयमिषमूर्जं मदंन्तः। रायस्योषेण समिषा मेदेम। गायत्रिया हियमोणस्य यत्तै॥५॥

पूर्णमपंतत्तृतीयंस्यै दिवोऽधि। सोऽयं पूर्णः सोमपूर्णाद्धि जातः। ततो हरामि

सोमपीथस्यावेरुद्धो। देवानां ब्रह्मवादं वदंतां यत्। उपार्थणोः सुश्रवा वे श्रुतोऽसि।

ततो मामाविशतु ब्रह्मवर्चसम्। तथ्सुम्भर्ङ्स्तदव॑रुन्धीय साक्षात्। ययां ते

मुष्टस्याग्रेः। हेतिमशमयस्यजापंतिः। तामिमामप्रदाहाय॥६॥

श्वामी १ शान्त्ये हराम्यहम्। यते सृष्टस्यं यतः। विकंद्धतं भा आंच्छंज्ञातवेदः। तयां भासा सम्मितः। उरुं नो लोकमनु प्रभाहि। यते तान्तस्य हदयमाच्छिन्दञ्जातवेदः। मुरुतोऽद्विस्तमयित्वा। एतते तदेशनेः सम्भेरामि। सात्मां अग्रे सहंदयो भवेह।

चित्रियादश्वत्थाथ्सम्भृता बृह्त्यः॥७॥

शरीरम्मि सङ्स्कृताः स्थ। प्रजापेतिना यज्ञमुखेन सम्मिताः। तिस्रक्षिबृद्धिर्मिथुना प्रजात्ये। अश्वत्थाद्येव्यवाहाद्वि जाताम्। जेग्नेस्तन् यज्ञियार् सम्पेरामि। शान्तयोनिर शमीगर्भम्। अग्रये प्रजनियितवै। यो अश्वत्थः शमीग्रमः। आर्र्शह त्वे सचा। तं ते हरामि ब्रह्मणा॥८॥

युत्रियैः केतुभिः सृह। यं त्वां समभंरआतवेदः। यथा्श्राशुरं भूतेषु न्यंकम्। स सम्भृतः सीद शिवः प्रजाभ्यः। उुरुं नौ लोकमनुनेषि विद्वान्। प्रवेधसे कृवये

द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

मेध्यांय। वचो वन्दारु वृष्माय वृष्णै। यतो भृयमभंयं तन्नो अस्तु। अवं देवान् यंजे हेड्यान्। सृमिषाऽभ्रिं दुवस्यत॥९॥

शोचिष्केशो घृतनिर्णिक्पावकः। सुयज्ञो अग्निर्यज्ञायं देवान्। घृतप्रंतीको घृतयोनिर्गनः। घृतेः समिद्धो घृतमस्यान्नम्। घृतप्रुपंस्त्वा स्रितो वहन्ति। घृतं पिबैन्थ्सुयजो यक्षि देवान्। आयुर्दा अग्ने हविषो जुषाणः। घृतप्रंतीको घृतयोनिरिधा घृतं पात्वा मधु वारु गव्यम्। पितेवं पुत्रम्भिरंक्षतादिमम्॥११॥

बृहच्छोचा यविष्ठा। समिष्यमानः प्रथमो नु धर्मः। सम्कुभिरज्यते विश्ववारः॥१०॥

घृतैर्बोधयुतातिथिम्। आऽस्मिन् हृव्या जुंहोतन। उपं त्वाऽग्ने हृविष्मेतीः। घृताचीर्यन्तु हर्यत। जुषस्वं समिधो ममे। तं त्वां समिद्धिरिङ्गरः। घृतेनं वर्धयामसि।

घृतयोनिमाहेतम्। त्वेषं चक्षेदिधिरे चोद्यन्वेति। त्वामेग्ने प्रदिव आहेतं घृतेने। सुम्रायवेः सुष्मिया समीधिरे। स वावृधान ओषेधीभिरुक्षितः। उरु ज्रयार्थिस्

त्वामेग्ने समियानं यीवेष्ठ। देवा दूतं चीक्ररे हव्युवाहमै। <u>उ</u>रुज्ञयेसं

33 पार्थिवा वितिष्ठसे। घृतप्रेतीकं व ऋतस्ये धूर्षदम्। अग्निं मित्रं न सीमेथान द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

## इन्यांनो अको विदधेषु दीद्यंत्। शुक्रवंणामुदुं नो यश्सते धियम्। प्रजा अंग्रे संवासय। आशाक्ष पृशुभिः सृह। राष्ट्राण्यंस्मा आधेहि। यान्यासैन्थ्सिवृतुः स्वे। मुही वि्षपती सदेने ऋतस्या अवांची एतं धरुणे रयी्णाम्। अन्तर्वती जन्यं

ऋअते॥१२॥

आरोहतं दशत् शक्षेरीमी। ऋतेनाम आयुषा वर्चसा सह। ज्योग्जीवेन्त उत्तरामुत्तराष्ट्र समाम। दर्शमहं पूर्णमोसं युज्ञं यथा यजै। ऋत्वियवती स्थो

जातवेदसम्। अष्वराणां जनयथः पुरोगाम्॥१३॥

अग्निरेतसौ। गर्भं दधाथां ते बांमहं देदे। तथ्सत्यं यद्वीरं बिभृथः। बीरं जनयिष्यथः। ते मत्प्रातः प्रजीनष्येथे। ते मा प्रजाते प्रजनयिष्यथः॥१४॥

देवीं वाचं यच्छामि। शल्कैर्ग्निमिन्यानः। उुमौ लोकौ सनिमृहम्। उुभयौलोकयोर्

प्रजयां पशुभिब्रह्मवर्चसेनं सुव्गे लोके। अनृताथ्स्त्यमुपैमि। मानुषाद्देव्यमुपैमि।

अग्रिमंश्वत्थादिधं हव्यवाहम्। श्रमीगुर्माञ्जनयुन् यो मंयोभ्ः। अयं ते योनिर्ऋत्वियः। यतो जातो अरोचथाः। तं जाननंभ् आरोह। अथां नो वर्धया र्ययम्। अपेत बीत वि चं सर्पतातः। येऽत्र स्थ पुराणा ये च नूतेनाः। अदादिदं युमोऽवसानं पृथिव्याः। अर्कान्नमं पितरो लोकमंस्मे॥१६॥ क्ष्मा। आति मृत्युं तेराम्युहम्। जातेवेदो भुवेनस्य रेतेः। इह सिश्च तर्पसो

यज्ञीनष्यते॥१५॥

अग्रेर्भस्मौस्यग्नेः पुरीषमसि। संज्ञानमसि कामधरंणम्। मधि ते कामधरंणं भूयात्। संबेः सृजामि हृदंयानि। स॰सृष्टं मनौ अस्तु वः। स॰सृष्टः प्राणो अस्तु वः। सं या वेः प्रियास्तनुवेः। सं प्रिया हृदंयानि वः। आत्मा वो अस्तु सिम्प्रेयः। सम्प्रियास्त्नुवो मर्म॥१७॥

कल्पेतां द्यावापृथिवी। कल्पेन्तामाप् ओषेधीः। कल्पेन्तामुग्रयः पृथेक्। मम् ज्यैष्ट्रांयु सब्रेताः। येऽग्रयुः समेनसः। अन्त्रा द्यावांपृथिवी। वासीन्तेकावृत्

अपि कल्पंमानाः। इन्द्रमिव देवा अपि सं विशन्तु। दिवस्त्वां वार्येण। पृथियौ द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १) मंहिम्रा॥१८॥

अन्तरिक्षस्य पोषेण। सर्वपंशुमादेधे। अजीजनत्रमृतं मत्यांसः। अस्त्रेमाणं तराणें बीडुजेम्भम्। दश्र स्वसारो अग्रुवेः समीचीः। पुमार्षसं जातमृभि सरूरेमन्ताम्।

प्जापंतेस्त्वा प्राणेनाभि प्राणिमि। पूष्णः पोषेण मह्यम्। दीर्घायुत्वायं शृतशांरदायो शृत श्वरद्ध आयुषे वर्चसे॥१९॥

जीवात्वै पुण्याय। अहं त्वदेस्मि मदेसि त्वमेतत्। ममोसि योनिस्तव योनिरस्मि। ममैव सन्वहं हत्यान्यंग्रे। पुत्रः पित्रे लोककुञ्जातवेदः। प्राणे त्वाऽमृत्मादेधामि। अत्रादम्त्राद्याय। गोप्तारं गुप्यै। सुगार्हप्त्यो विदह्त्रग्तिः।

उषसः श्रेयंसीः श्रेयसीर्दर्यत्॥२०॥

अग्नें सृपत्नार् अप् बार्थमानः। रायस्पोषमिषमूर्जमस्मासुं धेहि। इमा उ मामुपेतिष्ठन्तु रायेः। आमिः प्रजामिरिह संवेसेय। इहो इडो तिष्ठतु विश्वरूपी।

मध्ये वसौदीदिहि जातवेदः। ओजंसे बलांय त्वोद्यंच्छे। वृषंणे शुष्मायायुषे वर्चसे। स्पृबतूरीसे वृत्रतः। यस्ते देवेषु महिमा सुंबर्गः॥२१॥ द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

यस्तं आत्मा पृशुषु प्रविष्टः। पुष्टियां ते मनुष्येषु पप्रथे। तयां नो अभ्रे जुषमांण एहिं। दिवः पृथिव्याः पर्यन्तिरक्षात्। वातौत्पशुभ्यो अध्योषंधीभ्यः। यत्रं यत्र जातवेदः सम्बभूधं। ततों नो अभ्रे जुषमांण एहिं। प्राचीमनु प्रदिशं प्रिहे विद्यान्। अभ्रेरंभ्रे पुरो अभ्रिभेवेह। विश्वा आशा दीद्यांनो वि भोहि॥२२॥

ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे। अन्बृग्निरुषसामग्रीमख्यत्। अन्बहानि प्रथुमो

जातवेदाः। अनु सूर्यस्य पुरुत्रा चं रश्मीन्। अनु द्यावापृथिवी आतेतान। विक्रेमस्व मृहा ६ असि। वेदिषन्मानुषेभ्यः। त्रिषु लोकेषु जागृहि। यदिदं दिवो यद्दः ्थियाः। संविदाने रोदंसी सं बभूवतुः॥२३॥

तयौंः पृष्ठे सींदतु जातवेदाः। शुम्भूः प्रजाभ्यंस्तनुवै स्योनः। प्राणं त्वाऽमृत

आ देथामि। अत्रादमुत्राद्याय। गोप्तारं गुस्यै। यते शुक्र शुक्रं वर्चः शुक्रा तुन्।

नर्यं प्रजां में गोपाय। अमृतत्वायं जीवसैं। जातां जीनेष्यमांणां च। अमृते सत्ये प्रतिष्ठिताम्। अर्थर्वं पितुं में गोपाय। रसमत्रीमिहायुषे। अदंब्यायोऽशींततनो। अविषत्रः पितुं कृणु। शङ्स्यं पृशून्मे गोपाय। द्विपादो ये चतुष्पदः॥२५॥ शुक्रं ज्योतिरजंस्नम्। तेनं मे दीदिहि तेन् त्वाऽऽदंधे। अग्निनाँऽभ्रे ब्रह्मणा। आन्नशे व्यानशे सर्वमायुव्यानशे॥२४॥ द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अष्टाशंफाश्च य इहाग्रें। ये चैकेशका आशुगाः। सप्रंथ सभां में गोपाय। ये च

सभ्याः सभासदेः। तानिन्द्रियावेतः कुरु। सर्वमायुरुपांसताम्। अहे बुधिय मत्रे मे गोपाय। यमुषेयस्त्रेविदा विदुः। ऋचः सामोनि यजूरेषि। सा हि श्रीर्मुता सताम्॥२६॥

महुते सौभंगाय। मह्यं धुक्ष्वं यजंमानाय कामान्। इहैव सन्तत्रं सृतो वों अग्नयः। प्राणेनं वाचा मनंसा बिभर्मि। तिरो मा सन्तमायुर्मा प्रहांसीत्। चतुंः शिखण्डा युवृतिः सुपेशाः। घृतप्रेतीका भुवंनस्य मध्ये। मुमुज्यमांना अग्नयः। प्राणेन

38 विश्वन्तु नः पुरूचीविधेम निषाय् यत्तेऽप्रदाहाय बृहत्यौं ब्रह्मणा दुवस्यत विश्ववार ड्रममुंअते पुरोगां प्रजनियिष्यथों जनिष्यतेंऽस्मै ज्योतिषा वो वैश्वानरेणोपेतिष्ठे। पञ्चपाऽग्रीन्त्यंक्रामत्। विराद्ध्युष्टा प्रजापेतेः। कुर्घाऽऽरोहद्रोहिणी। योनिरुग्नेः प्रतिष्ठितिः॥२७॥ द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

ममं महिम्ना वर्चेसे दर्धश्मुबर्गो भांहि सम्बभूवतुरायुर्व्यांनश्रे चतुष्पदः सृतां प्रजापेतेंद्वे चे॥\_\_\_\_\_

नवैतान्यहानि भवन्ति। नव् वै सुवर्गा लोकाः। यदेतान्यहान्युप्यन्ति। न्वस्वेव तथ्सुवर्गेषु लोकेषु सन्निणः प्रतितिष्ठेन्तो यन्ति। अग्निष्टोमाः परः सामानः कार्या

इत्योहुः। अग्निष्टोमसीम्मतः सुवर्गो लोक इति। द्वादंशाग्निष्टोमस्यं स्तोत्राणि। द्वादंश मासौः संवध्सरः। तत्तन्न सूक्ष्यम्। उक्थ्यां एव संप्तदशाः परंः सामानः "

कार्योः॥२८॥

एकंया गौरतिरिक्तः। एक्याऽऽयुंष्ट्नः। सुवृगीं वै लोको ज्योतिः। ऊर्ग्विराट्॥२९॥ सप्तदृशाः परेः सामानः। ते सङ्स्तुता विराजमिभि सम्पंद्यन्ते। द्वे चर्चावतिरिच्येते।

पुशाबो वा उक्थानि। पुशूनामवेरुद्धो। विश्वजिद्मिजिताविभिष्टोमौ। उक्थ्याैः

सुवर्गमेव तेने लोकमभि जंयन्ति। यत्पर्भ राथंन्तरम्। तत्पंथमेऽहंन्कार्यम्॥ बृहद्वितोये। वेरूपं तृतीये। वेराजं चंतुर्थे। शाक्वरं पंश्वमे। रैवतभ षुष्ठे। तदुं पृष्ठभ्यो नयन्ति। सन्तनंय एते ग्रहां गृह्यन्ते॥३०॥ 39 द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अतिग्राह्यौः परंः सामसु। इमानेवैतैलोकान्थ्सन्तंन्वन्ति। मिथुना एते ग्रहां गृह्यन्ते। अतिग्राह्यौः परंः सामसु। मिथुनमेव तैर्यज्ञंमाना अवंरुन्यते। बृहत्पृष्ठं भंवति। बृहद्दे सुंवर्गो लोकः। बृहतैव सुंवर्गं लोकं यंन्ति। त्र्यस्त्रिष्धं नाम सामे।

त्रयंक्षिश्बोहे देवताः। देवतां एवावंरुन्यते। ये वा इतः पराञ्चश् संवथ्सरमुप्यन्ति। न हैनं ते स्वस्ति समंश्जुवते। अथु येऽमृतोऽवाश्चिमुप्यन्ति। ते हैनः स्वस्ति समंश्जुवते। एतद्वा अमुतोऽर्वाञ्चमुपंयन्ति। यदेवम्। यो ह खलु वाव प्रजापंतिः। स उंवेवेन्द्रः। तदु देवेभ्यो नयन्ति॥३२॥ माध्यं दिने पर्वमाने भवति॥३१॥

कार्या विराङ्गृह्यन्ते पर्वमाने भवतीन्द्र एकं च॥━

द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

सन्तेतिवी एते ग्रहाँः। यत्परंः सामानः। विषूवान्दिवाकीत्यम्। यथा शालाेये

पक्षंसी। एव॰ संवथ्सरस्य पक्षंसी। यदेतेन गृह्येरन्। विषूंची संवथ्सरस्य पक्षंसी

व्यवंस्र सेयाताम्। आर्तिमाच्छेयुः। यदेते गृह्यन्तै। यथा शालांये पक्षंसी मध्यमं

वृश्यम्भि संमायच्छीते॥३३॥

प्राणान्दंधाति। तस्माध्यप्त शीर्षन्याणाः। इन्द्रों वृत्र॰ हत्वा। असुंरान्यराभाव्यं। स इमाँस्रोकान्भ्यंजयत्। तस्यासौ लोकोऽनीभेजित आसीत्। तं विश्वकेर्मा भूत्वा-

ऽन्यंजयत्। यद्वैश्वकर्मणो गृह्यते॥३५॥

स्पप्त वै शीर्षणयाः प्राणाः। असावीदित्यः शिरंः प्रजानाम्। शीर्षत्रेव प्रजानां

<u>एकिवि॰्शमहर्भवति। शुक्राश्रा ग्रहां गृह्यन्ते। प्रत्युत्तंक्यै सय्त्वायं। सौर्यं एतदहंः</u>

एव संवथ्सरस्य पक्षेसी दिवाकीत्यंम्भि सं तंन्वन्ति। नार्तिमाच्छेन्ति

पुशुरालेभ्यते। सौयौंऽतिग्राह्यों गृह्यते। अहंर्व रूपेण समंधेयन्ति। अथो अहं

पुवैष बुलिर्ह्यिते। सुमैतदहंरतिग्राह्यां गृह्यन्ते॥३४॥

तावाऽपेरापिथ्संवथ्सरस्यान्यौन्यो गृह्येते। ताबुभौ सह मेहाब्रेते गृह्येते। युज्ञस्यैवान्तं गुत्वा। उमयौर्लेकयोः प्रति तिष्ठन्ति। अुर्क्यमुक्धं भंवति। अत्राद्यस्यावंरुस्त्री॥३६॥ आदित्यः श्वो गृह्यते। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रति तिष्ठन्ति। अन्यौन्यो सुवर्गस्यं लोकस्यामिजित्यै। प्र वा एतैऽस्माल्लोकाच्यंवन्ते। ये वैश्वकर्मणं गृह्षतै गृह्यते। विश्वान्येन कर्माणि कुर्वाणा यन्ति। अस्यामन्येन प्रति तिष्ठन्ति द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

सुमायच्छंत्यतिग्राह्यां गृह्यते संबथ्सरस्यान्यौन्यो गृह्येते पर्श्वं च॥🕳

पुकाबि×ुशा एष भेवति। पुतेन वै देवा एकवि×ुशेने। आदित्यमित उत्तम×्

सुंबर्गं लोकमारोहयन्। स वा एष इत एंकवि॰्शः। तस्य दशावस्तादहांनि। दशं पुरस्तात्। स वा एष विराज्युंभ्यतः प्रतिष्ठितः। विराजि हि वा एष उंभ्यतः प्रतिष्ठितः। तस्मीदन्त्रेमौ लोकौ यन्। सर्वेषु सुव्गेषु लोकेष्वीभृतपेत्रेति॥३७॥

द्वा वा आंद्रित्यस्यं सुवृगस्यं लोकस्यं। परांचोऽतिपादादेबिभयुः। तं छन्दोभिरद्दरहं धृत्यैं। देवा वा आदित्यस्यं सुवर्गस्यं लोकस्यं। अवांचो-

तस्मदिकवि॰्शेऽह्न्यञ्च दिवाकीत्यांनि कियन्ते। रृश्मयो वै दिवाकीत्यांनि। ये गांयुत्रे। ते गांयुत्रीषूत्तंरयोः ऽवपादादेबिभयुः। तं पञ्जभी रश्मिमिरुदेवयन्। द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

पर्वमानयोः॥३८॥

महादिवाकीर्त्ये॰ होतुंः पृष्ठम्। विकुणं ब्रह्मसामम्। भासौंऽग्निष्टोमः। अथैतानि पराणि। परेवे देवा आदित्य॰ सुंवर्गं लोकमंपारयन्। यदपारयन्। तत्पराणां परत्वम्। पारयन्त्येनं पराणि। य एवं वेदं। अथैतानि स्पराणि। स्परेवे देवा आदित्य॰ सुंवर्गं लोकमंस्पारयन्। यदस्पारयन्। तथ्स्पराणाङ् स्परत्वम्।

स्पारयन्त्यैन्ङ् स्पराणि। य एवं वेदं॥३९॥

पुति पर्वमानयोः स्पराणि पर्श्व च॥■

अप्रतिष्ठां वा एते गेच्छन्ति। येषार् संबष्स्रेऽनाप्तेऽथं। एकाद्शिन्याप्यते॥

रेन्द्राथमालेमन्ते। इन्द्राधी वै देवानामयांतयामानी। ये एव देवते अयांतयामी।

ते एवालंभन्ते॥४०॥

वैष्णुवं वामुनमालेभन्ते। युज्ञो वै विष्णुः। युज्ञमेवालेभन्ते प्रतिष्ठित्यै।

\_\_\_\_\_\_ द्यावापृथिव्योरेव प्रति तिष्ठन्ति। वायुव्यं वृथ्समालेभन्ते। वायुरेकेयों यथा-वैश्वदेवमालेभन्ते। देवतां एवावंकन्यते। द्यावापृथिव्यां धेनुमालेभन्ते। द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

ऽऽयतुनाद्देवता अवं रुन्ये। आदित्यामविं वृशामालेभन्ते। द्वयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रति तिष्ठन्ति। मैत्रावरुणीमालेभन्ते॥४१॥

मित्रेणेव यज्ञस्य स्विष्ट शमयन्ति। वर्रुणेन दुरिष्टम्। प्राजापत्यं तृप्रं मेहाव्रत आलेभन्ते। प्राजापत्योऽतिग्राह्यो गृह्यते। अहीर्व रूपेण समर्धयन्ति। अथो अहे एवैष बिलिर्हियते। आग्नेयमा लेभन्ते प्रति प्रज्ञांत्ये। अज्येपत्वान् वा एते पूर्वेर्मासैरवे रुन्यते। यदेते गुव्याः पृशवे आकुन्यन्तै। उभयेषां पशूनामवेरुस्द्रो॥४२॥

यदतिरिक्तामेकादशिनीमालभैरन्। अप्रियं आतृव्यमभ्यतिरिच्यत। यद्द्रौ द्वौ पशू स्मस्येयुः। कनीय आयुः कुर्वीरन्। यदेते ब्राह्मणवन्तः पृशवं आक्रभ्यन्तै। नाप्रियं

भातृव्यमभ्यतिरिच्यते। न कनीय आयुः कुर्वते॥४३॥

ते एवालेमन्ते मैत्रावरूणीमालेम्न्तेऽवंरुख्यै सुप्त चं॥🕳

द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

प्रजापतिः प्रजाः सुष्टा वृत्तोऽश्रयत्। तं देवा भूतानार रसं तेजः सम्भृत्ये। तेनैनमभिषज्यन्। मृहानेववृतीति। तन्मेहाबृतस्यं महाब्रत्त्वम्। मृहद्वृतमिति। चतुंवि रशात्यर्धमासः संवथ्म्राः। यद्वा पृतस्मिन्थ्संवथ्मरेऽधि प्राजायत। तदन्ने

तन्महाबृतस्य महाब्रत्लम्। मृह्तो ब्रतमिति। तन्मेहाबृतस्य

\_ <u>प्रश्</u>रविष्धाः स्तोमो भवति॥४४॥

पश्चवि×्शमंभवत्। मृष्यतः क्रियते। मृष्यतो ह्यत्रमशितं पिनोति। अथो मध्यत

एुव प्रजानामूग्धीयते। अथ् यद्वा इदमन्तृतः क्रियते। तस्मोदुद्न्ते प्रजाः समेधन्ते।

अन्तृतः क्रियते प्रजनंनायैव। त्रिवृच्छिरो भवति॥४५॥

स्पृद्शौऽन्यः। तस्माद्वयार्श्स्यन्यत्रम्धम्मि प्यवितिन्ते। अन्यत्रतो हि तद्गीयः

त्रेथाविहित १ हि शिरंः। लोमं छुवीरस्थि। परांचा स्तुवन्ति। तस्मात्तथ्सदगेव। न मेद्यतोऽनुं मेद्यति। न कृश्यतोऽनुं कृश्यति। पृञ्जदुशौऽन्यः पृक्षो भेवति।

द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

पश्चविष्श आत्मा भेवति। तस्मौन्मध्यतः पृशवो वरिष्ठाः। पृकविष्शं पुच्छुमै। द्विपदांसु स्तुवन्ति प्रतिष्ठित्ये। सर्वेण सृह स्तुवन्ति। सर्वेण ह्यौत्मनौऽऽत्मन्त्री। सृहोत्पतीन्ते। एकैकामुच्छिश्वन्ति। आत्मन्न् ह्यङ्गोनि बृद्धानि। न वा पृतेन् सर्वेः

यदित इंतो लोमोनि दतो नुखान्। परिमादेः क्रियन्ते। तान्येव तेन प्रत्युष्यन्ते। औदुम्बर्स्तल्पो भवति। ऊग्वी अत्रमुदुम्बरेः। <u>ऊ</u>र्ज एवात्राद्यस्यावेरुस्त्रो। यस्ये

पुरुषः॥४७॥

तल्पुसद्यमनीभेजित्ङ् स्यात्। स देवाना्॰् साम्यक्षे। तृल्पुसर्धममिजयानीति

तल्पंमारुद्योद्गायेत्। तृल्पुसद्यंमेवाभि जीयति॥४८॥

यस्ये तल्प्सद्यममिजिंतङ् स्यात्। स देवानार साम्येक्षे। तल्प्सद्यं मा परांजेषीति तल्पेमारुह्योद्रायेत्। न तेल्प्सद्यं परांजयते। घ्रेङ्के शरंसति। महो

वै घ्रेङ्कः। महंस पृवात्राद्यस्यावंरुखी देवासुराः संयंता आसन्। त आदित्ये

व्यायेच्छन्ता तं देवाः समंजयन्॥४९॥

ब्राह्मणश्चे शूद्रश्चे चर्मकर्ते व्यायेच्छेते। दैव्यो वै वर्णो ब्राह्मणः। असुयेः शूदः। इमेऽराथ्सुरिमे सुभूतमंत्रत्रित्यंत्यत्रो ब्र्यात्। इम उंद्वासीकारिणं इमे दुर्भूतमंत्रत्रित्यंत्यत्यः। यदेवैषाः सुकृतं या राष्ट्रिः। तदंन्यतरोऽिम w श्रीणाति। यद्वेषपं दुष्कृतं याऽशीद्धः। तदंन्यत्रोऽपं हन्ति। ब्राह्मणः सं जयति। उुद्धन्यमांनं नवैतानि सन्ततिरेकवि्ष्श एषोऽप्रतिष्ठां प्रजापेतिर्कुनः षट्॥६॥ उद्धन्यमांन शोचिक्केशोऽप्रे स्पत्नांनिशाह्यां वैश्वदेवमालेभन्ते पञ्चाशत्॥५०॥ अमुमेवाऽऽदित्यं आतृव्यस्य संविन्दन्ते॥५०॥ मुब्ति भुब्ति क्रियते पुरुषो जयत्यजयञ्जयत्येकं च॥🕳 द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १) उद्धन्यमान् ् संविन्दनो॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके द्वितीयः प्रपाठकः समाप्तः॥ हरिः ओम्॥

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

## ॥ तृतीयः प्रश्नः॥

॥तौत्तरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके तृतीयः प्रपाठकः॥

देवासुराः संयंता आसन्। ते देवा विजयमुप्यन्तंः। अग्नीषोमयोस्तेज्मित्नीस्तृन्ः

सन्त्रंदधत। इदमुं नो भविष्यति। यदिं नो जेष्यन्तीति। तेनाग्नीषोमावपौकामताम्।

ते देवा विजित्यं। अग्रीषोमावन्बैच्छन्। तैऽग्रिमन्वंविन्दत्रृतुषूथ्संत्रम्। तस्य

विभंकीभिस्तेजस्विनीस्त्नूरवांरुन्यत॥१॥

ते सोममन्वविन्दन्। तमेघन्। तस्यं यथाऽभिज्ञायं तनूर्व्यंगृह्णता ते ग्रहां अभवन्। तद्ग्रहाणां ग्रहत्वम्। यस्यैवं विदुषो ग्रहां गृह्यन्तै। तस्य त्वेव गृहीताः। नानाऽऽग्नेयं

उुमावाभ्रेयावाज्येमागौ स्याताम्। अनाज्यभागौ भवत् इत्योहुः। यदुभावाभ्रेयावन्त्रञ्चाि

अनाअयं वा एतक्कियते। यथ्यमिष्स्तनूनपांतमिडो बर्हिर्यजाते।

पुनराधेये कुर्यात्। यदनाभ्रयं पुनराधेये कुर्यात्। व्युद्धमेव तत्॥२॥

अग्रये पर्वमानायोत्तरः स्यात्। यत्पर्वमानाय। तेनाऽऽज्येभागः। तेनं सौम्यः।

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

तेनाग्नेय॰ सर्वं भवति। एक्घा तेर्जस्वनीं देवतामुपैतीत्योहः। सैनमीश्वरा प्रदह

यथौ सुप्तं बोधयीते। ताटगेव तत्। अग्रिन्यंक्ताः पत्नीसंयाजानामुचंः स्युः।

बुधन्वत्याभ्रेयस्याऽऽज्यंभागस्य पुरोऽनुवाक्यां भवति॥३॥

इति। नेति ब्रयात्। प्रजनेनं वा अग्निः। प्रजनेनमेवोपैतीति। कृतयेजुः सम्भैतसम्भार

इत्याहः॥४॥

न सम्भृत्याः सम्भाराः। न यजुः कार्यमिति। अथो खलु। सम्भृत्यां एब

संम्माराः। कार्यं यजुः। पुनराधेयंस्य समृद्धो। तेनोपार्ष्यु प्रचंरति। एष्यं इव बा

एषः। यत्पुंनग्षेयंः। यथोपार्ष्यु नृष्टिमिच्छति॥५॥

ताहगेव तत्। एक्घा तेज्रस्विनीं देवतामुपैतीत्योहः। सैनंमीश्वरा प्रदह इति। तत्तथा नोपैति। प्रयाजानूयाजेष्वेव विभंक्तीः कुर्यात्। यथापूर्वमाज्येभागौ स्याताम्। एवं

पेलीसंयाजाः॥६॥

ताट्गेव तत्। उुचैः स्विष्ट्कृत्मुथ्सुजति। यथां नृष्टं वित्त्वा प्राहायमिति।

| $\infty$ |  |
|----------|--|
| 4        |  |

49

तद्वैश्वान्रवेत्प्रजनेनवत्तर्मुपैतीति। तदांहुः। व्युंखं वा एतत्। अनाभियं वा एतक्कियत् इति। नेति ब्रूयात्। अभिं प्रथमं विभेक्तीनां यजाति। अभिमृत्ममं पेत्रीसंयाजानाम्। तेनाभियम्। तेन् समृंखं िकयत् इति॥७॥ अरु-थुतेव तद्ववित सम्भृतसम्भार् इत्योहरिच्छिति पत्नीसंयाजा नवं च॥■■ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

महैव सर्वे वाजुपेयेमपश्यन्। ते। अन्यौऽन्यस्मै नातिष्ठन्त। अहमनेने यजा इति।

तेऽब्रुवन्। आजिम्स्य धांवामेति॥८॥

तमिन्द्रौऽब्रबीत्। माम्नेनं याज्येतिं। तेनेन्द्रंमयाजयत्। सोऽप्रं देवतानां पर्येत्। तस्मित्राजिमधावन्। तं बृहस्पतिरुदंजयत्। तेनायजत। स स्वाराज्यमगच्छत् अगंच्छथ्स्वाराँज्यम्। अतिष्ठन्तास्मै ज्यैष्ठ्याय॥९॥

य एवं विद्वान् वांजपेयेन यजते। गच्छेति स्वारांज्यम्। अग्ररं समानानां

देवा वे यथादर्शं युज्ञानाहंरन्ता यौऽग्रिष्टोमम्। य उुक्थ्यम्। योऽतिरात्रम्। ते पर्येति। तिष्ठेन्तेऽस्मे ज्यैष्ठ्याय। स वा एष ब्राह्मणस्यं चैव रांजुन्यंस्य च यृज्ञः।

50 तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

तं वा पुतं वांजपेय इत्योहुः। वाजाप्यो वा पुषः। वाज् क्षेतेनं देवा ऐफ्सन्। सोमो वै वांजपेयः। यो वै सोमं वाजपेयं वेदं॥१०॥

बाज्येवेनं पीत्वा भवति। आऽस्यं वाजी जायते। अत्रं वे वाजपयः। य पृवं वेदं। अत्यन्नम्। आऽस्यानादो जायते। ब्रह्म वे वाजपेयः। य पृवं वेदं। अत्ति

वाग्वै वाज्ञंस्य प्रसुवः। य एवं वेदं। कुरोति वाचा वीर्यमा। ऐनं वाचा गच्छति। ब्रह्मणाऽत्रम्। आऽस्यं ब्रह्मा जायते॥११॥

अपिवर्तों वाचं वदति। प्रजापेतिर्देवेभ्यों युज्ञान्त्यादिशत्। स आत्मन्वांजुपेयंमधत्त। तं देवा अंबुवन्। एष वाव युज्ञः। यद्वांजपेयः॥१२॥

अप्येव नोऽत्रास्त्विति। तेभ्यं पृता उज्जितीः प्रायंच्छत्। ता वा पृता उज्जितयो व्याख्यायन्ते। यज्ञस्यं सर्वत्वायं। देवतांनामनिर्मागाय। देवा वे ब्रह्मणक्षात्रंस्य च शमंलुमपाप्टम्। यद्वह्मणः शमंलुमासीत्। सा गाथां नाराश्वाङ्क्यंभवत्। यदत्रंस्या

सा सुरां॥१३॥

तस्माद्गायेतश्च मृत्तस्यं च न प्रतिगृह्यम्। यत्प्रेतिगृह्योयात्। शमंलं प्रतिगृह्णीयात्। सर्वा वा एतस्य वाचोऽवंरुद्धाः। यो वांजपेययाजी। या पृथिव्यां याऽग्रौ या तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

याऽपसु यौषेधीषु या वन्स्पतिषु। तस्मौद्वाजपेयया्ज्यार्त्विजीनः। सर्वो ह्यस्य

रंथन्तरे। याऽन्तरिक्षे या बायौ या वांमदेव्ये। या दिवि याऽऽदित्ये या बृहति।

सर्वे ऐन्द्रा भेवन्ति। एकप्वैव यजेमान इन्द्रियं देयति। सृप्तदेश प्राजापत्या ग्रहां गृह्यन्ते। सृप्तदुशः प्रजापेतिः। प्रजापेतेरास्त्रै। एकप्वां गृह्णाति। एकप्वेव यजेमाने

तदंतिग्राह्यांणामतिग्राह्यत्वम्। यदंतिग्राह्यां गृह्यन्ते। यदेवान्यैग्रेहेंर्यज्ञस्य नावं

रून्ये। तदेव तैरंतिगृह्यावे रुन्ये। पश्चं गृह्यन्ते। पाङ्गो युज्ञः। यावानेव

तमास्वाऽवं रुन्ये॥१५॥

द्वा वै यद्न्यैभ्हें'र्यज्ञस्य नावार्रन्थता तदीतभाह्यैरतिभुह्यावारन्थत

थाबामेति ज्येष्ठगंय वेदं ब्रह्मा जायते बाजपेयः सुराऽऽत्विंजीन एकं च॥━

वाचोऽवरुद्धाः॥१४॥

52 वीर्यं दर्याति। सोम्युहाङ्क्षं सुरायृहाङ्क्षं गुह्णाति। पृतद्वे देवानां पर्ममन्नमा तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १) यथ्सोमंः॥१६॥

एतन्मंनुष्योणाम्। यथ्मुरौ। प्रमेणेवास्मो अत्राद्येनावंरमत्राद्यमवं रुन्धे। सोम्यहान्गृह्वाति। ब्रह्मणो वा एततेजः। यथ्सोमः। ब्रह्मण एव तेजसा तेजो

यजंमाने दथाति। सुराग्रहान्गृंह्वाति। अत्रंस्य वा एतच्छमंलम्। यथ्सुरा॥१७॥

अत्रेस्यैव शमेलेन शमेले यजमानादपेहन्ति। सोमग्रहाङ्श्चे सुराग्रहाङ्श्चे गृह्णाति। पुमान् वै सोमेः। स्त्री सुराँ। तिन्मिथुनम्। मिथुनमेवास्य तद्यज्ञे

केरोति प्रजनेनाय। आत्मानेमेव सोमग्रहेः स्पृंणोति। जाया॰ सुंराग्रहेः।

तस्मौद्वाजपेयया्ज्यंमुष्मिँक्षोके स्निय्॰् सम्मेवति। बाज्पेयांभिजित्ङ् ह्यंस्य॥१८॥

पूर्वे सोमग्रहा गृह्यन्ते। अपेरे सुराग्रहाः। पुरोऽक्ष॰ सोमग्रहान्थ्सांदयति। पृश्चाद्क्ष॰ सुराग्रहान्। पापुबस्युसस्य विधृत्ये। एष वै यजमानः। यथ्सोमेः। अन्न॰

सुरौ। सोम्युहाङ्श्रं सुरायुहाङ्श्रं व्यतिषजाते। अत्राद्येनैवेनं व्यतिषजाते॥१९॥

तैलोंकममिजयिति। प्रत्यङ्ख्सुराग्रहेः। इममेव तैलोंकममिजयिति। प्रतिष्ठन्ति सोमग्रहेः। यावेदेव सत्यम्। तेने सूयते। वाजसुद्धाः सुराग्रहान् हंरन्ति। अनृतेनैव विश्वार् सर्स्नजिति। हिरण्यपात्रं मथौः पूर्णं दंदाति। मधय्योऽसानीति। एक्घा ब्रह्मण् उपं हरति। एक्घेव यजमान् आयुस्तेजो दथाति॥२१॥ सम्मुचंः स्थ सं मां भद्रेणं पृङ्केत्याहा अत्रं वे भद्रम्। अत्राद्येनैवेन् स स स्मुंजिति। अत्रंस्य वा पृतच्छमेलम्। यथ्सुरा पाप्मेव खलु वे शमेलम्। पाप्मना वा एनच्छमेलेम्। यथ्सुरा पाप्मेव खलु वे शमेलम्। पाप्मना वा एनमेतच्छमेलेन व्यतिषजीति। यथ्सोमग्रहा १ श्वं सुराग्रहा १ श्वं व्यतिषजीते। विपृचंः स्थ वि मां पाप्मनां पृङ्केत्याह। पाप्मनेवेन् शमेलेन् व्यावित्यति॥२०॥ तस्माद्वाजपेययाजी पूतो मेध्यों दक्षिण्यंः। प्राङुद्देवति सोमग्रहेः। अमुमेव तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

ም | बृह्मवादिनो वद्नि। नाग्निष्टोमो नोक्थ्यः। न षोंडुशी नातिराृत्रः। अथु आस्वाऽवं रुन्ये सोम्ः शर्मकुं यथ्सुग् ह्यंस्यैनुं व्यतिषजति व्यावेर्तयति मुजति चृत्वारिं च॥\_\_\_\_

कस्मौद्वाजुपेये सर्वे यज्ञकृतवोऽवंरुध्यन्तु इतिं। पृशुभिरिति ब्रूयात्। आग्नेयं

ग्रुमालेभते। अग्रिष्टोममेव तेनावं रुन्ये। ऐन्द्राग्नेनोकथ्यम्। ऐन्द्रणं षोड्शिनंः स्तोत्रम्। सार्स्बत्याऽतिरात्रम्॥२२॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

मारुत्या बृह्तः स्तोत्रम्। एतावेन्तो वै यंज्ञकृतवेः। तान्पशुभिरेवावे रुन्ये। आत्मानेमेव स्पृणोत्यग्निष्टोमेने। प्राणापानाबुक्थ्येन। बीर्यं षोड्शिनं स्तोत्रेणे। बाचेमतिरात्रेणे। प्रजां बृंहुतः स्तोत्रेणे। इममेव लोकममिजेयत्यग्निष्टोमेने। अन्तरिक्षमुक्थ्येन॥ २३॥

सुवर्गं लोक १ षोडशिनेः स्तोत्रेणं। देवयानांनेव पथ आरोहत्यतिरात्रेणं। नाक १ रोहति बृहतः स्तोत्रेणं। तेजं एवाऽऽत्मन्यंत्त आग्नेयेनं पशुनाँ। ओजो बलेमेन्द्राग्नेनं। इन्द्रियमेन्द्रेणं। वाच १ सारस्वत्या। उभावेव देवलोकं चं मनुष्यलोकं चाभिजयिति माकृत्या वृशया। स्पत्रदेश प्राजापृत्यान्यशूनालेभते। स्पत्र्शः प्रजापेतिः॥२४॥

प्रजापंतेरास्यै। श्यामा एकेरूपा भवन्ति। एवमिव हि प्रजापेतिः समृध्ये।

तान्यर्यभ्रिकृतानुथ्सुंजति। मुरुतो युज्ञमंजिघा॰सन्युजापेतेः। तेभ्यं पृतां मांकृतीं

वृशामालेभत। तयेवैनानशमयत्। मा्फुत्या प्रचर्य। एतान्थ्संज्ञीपयेत्। मुरुते एुव पुतैः प्रचंगति। युज्ञस्याघांताय। पुक्षा वृपा जुंहोति। पुक्देवृत्यां हि। पुते। तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १) शमोयेत्वा॥२५॥

नूर्वं यदपंरमिति। सुवितुप्रसूत एव यथापूर्वं कर्माणि करोति। सर्वनेसवने जुहोति। आक्रमणमेव तथ्सेतुं यजमानः कुरुते। सुवर्गस्य लोकस्य समिष्टो।

सावित्रं जुहोति कर्मणः कर्मणः पुरस्तात्। कस्तद्वेदत्यांहुः। यद्वांजपेयंस्य

रुतत्पुरोडाशा ह्येते। अथौ पशूनामेव छिद्रमपिंद्धाति। सार्स्वत्योत्तमया प्रचरति।

अथो एक्षेव यजमाने बीयै दथाति। नैबारेणं सप्तदंशशरावेणैतर्हि प्रचंरति

वाग्वै सर्स्वती। तस्मौत्राणानां वागुंत्ना। अथौ प्रजापंतावेव युज्ञं प्रतिष्ठापयति।

प्रजापेतिर्हि वाक्। अपंत्रदती भवति। तस्मा"मनुष्याः सर्वा वाचं वदन्ति॥२६॥

शृतिरात्रम्न्तरिक्षमुक्थ्येन प्रजापीतः शमयित्वोन्मया प्रचेरति षट् चं॥━

बाचस्पतिबचिम्द्य स्वदाति न् इत्योह। वाग्वे देवानां पुराऽत्रमासीत्। वाचेमेवास्मा

56 अन्नर्धं स्वद्यति॥२७॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

इन्द्रंस्य वज्रोऽसि वार्त्रघ्न इति रथमुपावेहरति विजित्यै। वार्जस्य नु प्रसुवे मातरं महीमित्याह। यच्चेवयम्। यचास्यामधि। तद्वावं रुन्धे। अथो तस्मिन्नेवोभये-ऽभिषिच्यते। अपस्वेन्तर्मृतम्पस् भेष्जमित्यश्वाैन्यत्पूलयति। अपसु वा अश्वस्य

तृतींयं प्रविष्टम्। तदंनुवेन्न्ववंप्रवते। यद्फ्सु पंल्पूलयंति॥२८॥

यदेवास्यापसु प्रविष्टम्। तदेवावं रुन्ये। बृहु वा अश्वोऽमेध्यमुपंगच्छति। यद्पसु

पेल्यूलयंति। मेध्यांनेवैनांन्करोति। वायुर्वां त्वा मनुर्वा त्वेत्यांह। पृता वा पृतं देवता अग्रे अश्वेमयुञ्जन्। ताभिरेवैनान् युनक्ति। स्वस्योञ्जित्यै। यजुषा युनक्ति व्यार्वृत्यै॥२९॥

अपात्रपादाशुहेम्त्रिति सम्माधि। मध्यानेवैनांन्करोति। अथो स्तौत्येवैनांनाजि ॰

सीरष्यतः। विष्णुकृमान्क्रमते। विष्णुरेव भूत्वेमाँह्योकान्मिजयिति। वैश्वदेवो वै

रथेः। अङ्को न्यङ्कावमितो रथं यावित्याह। या एव देवता रथे प्रविष्ठाः। ताभ्यं

्रव नमंस्करोति। आत्मनोऽनाँत्यै। अशंमरधं भावुकोऽस्य रथो भवति। य एवं वेदं॥३०॥ स्बद्यति पृत्पूलयीते व्यावृत्या अन"त्ये द्वे चं॥■ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

देवस्याहरू सीवितुः प्रंस्वे बृहस्पतिना वाज्ञाजिता वाजं जेषामित्योह। सावित्प्रंसूत एव ब्रह्मणा वाज्रमुञ्जयित। देवस्याहरू सीवितुः प्रंस्वे बृहस्पतिना वाज्ञाजिता वर्षिष्ठं नाकरू रुह्यमित्योह। सावित्प्रंसूत एव ब्रह्मणा वर्षिष्ठं नाकरू रोहति। वात्वोले रथचक्रं निर्मितरू रोहति। अतो वा अङ्गिरस उत्तमाः सुवर्ग लोकमायन्। साक्षादेव यजमानः सुवर्ग लोकमेति। आवैष्टयित। वज्रो वे रथः। वज्रेणेव दिश्गेऽभिजयिति॥३१॥

वाजिना॰ सामे गायते। अत्रं वै वाजः। अत्रेमेवावं रुन्ये। वाचो वर्ष्म

दुेन्दुभौ। तस्मौदुन्दुभिः सर्वो वाचोऽतिवदति। दुन्दुभीन्थ्समाघ्नीन्त। प्र्मा वा एषा र्वेभ्योऽपाकामत्। तद्वनस्पतीन्माविशत्। सैषा वाग्वनस्पतिषु वदति।

58

वा एतर्हीन्द्रं। यो यजेते। यजमान एव वाजमुञ्जयिति। सप्तदेश प्रव्याधानाजि धांवन्ति। सुप्तदुशङ् स्तोत्रं भेवति। सुप्तदेशसप्तदश दीयन्ते॥३३॥ या दुन्दुभौ। प्रमयेव बाचाऽवेरां वाच्मेव रुन्धे। अथौं बाच एव वर्ष्म यजमानो-ऽवे रुन्धे। इन्द्रांय वाचे वद्तेन्द्रं वाजे जापयतेन्द्रो वाजमजायिदित्याह। एष तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १) वाक्॥३२॥

समदृशः प्रजापीतः। प्रजापतेरास्यै। अर्वाऽसि सप्तिरसि वाज्यंसीत्यांह। अग्निर्वा " अर्वा। वायुः सिप्तेः। आदित्यो वाजी। एताभिरेवास्मै देवतांभिर्देवर्थं युनिक्ति।

वाजिनो वाजं धावत काष्टां गच्छुतेत्याह। सुवुगीं वै लोकः काष्टां। सुवुगीमेव

प्रष्टिवाहिनं युनक्ति। प्रष्टिवाही वै देवर्थः। देवर्थमेवास्में युनक्ति॥३४॥

लोकं यंन्ति। सुबर्गं वा एते लोकं यंन्ति। य आजिं धावंन्ति। प्राञ्जो धावन्ति। प्राष्टिंब

हि सुंवर्गो लोकः। चृतसुभिरनुं मन्नयते। चृत्वारि छन्दार्शसि। छन्दोभिरेवैनान्थ्सुवर्ग

लोकं गंमयति॥३५॥

प्र वा एतैऽस्मास्नोकाच्यंवन्ते। य आजिं धावंन्ति। उदं च् आवंतन्ते। अस्मादेव तेने लोकात्रयंन्ति। रथविमोचनीयं जुहोति प्रतिष्ठित्यै। आ मा बाजंस्य प्रसुबो जंगम्यादित्योह। अत्रुं वै बाजंः। अत्रोमेबावं रुन्ये। यथालोकं बा एत उज्जयन्ति। य आजें धार्वन्ति॥३६॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

कृषालं कृषालं वाज्मुखः प्रयंच्छति। यमेव ते वाजं लोकमुञ्जयंनि। तं

पंरिक्रीयावं रुन्ये। एक्घा ब्रह्मण उपंहरति। एक्घेव यजंमाने वीर्यं दथाति। देवा वा ओषंधीर्ष्वाजिमंयुः। ता बृह्स्पतिरुदंजयत्। स नीवारात्रिरंवृणीत। तत्रीवारांणां

नीवार्त्वम्। नैवारश्वरुभेवति॥३७॥

पुतद्वे देवानौं परममन्नमै। यन्नीवारौः। परमेणैवास्मां अन्नाद्येनावंरमन्नाद्यमवं धे। सप्तदंशशरावो भवति। सप्तदशः प्रजापेतिः। प्रजापेतेरास्यै। क्षीरे भंवति। रुचेमेवास्मिन्दधाति। सृर्पिष्वान्भवति मेध्युत्वायं। बार्हुस्पृत्यो वा एृष रुन्ये। सुप्तदेशशरावो भवति। सुप्तदुशः प्रजापेतिः।

देवतया॥३८॥

9 यो वांजपेयेन यजेते। बार्हस्पत्य एष चरुः। अश्वांन्थ्सरिष्यतः सुसुष्धावं तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

प्रापयति। यमेव ते वाजं लोकमुज्जयंन्ति। तमेवावं रुन्ये। अजीजिपत वनस्पतय इन्द्रं वाजुं विमुच्यर्ष्वमिति दुन्दुभीन् विमुंश्रति। यमेव ते वाजं लोकमिन्द्रियं दुन्दुभयं उज्जयंन्ति। तमेवावं रुन्ये॥३९॥

अभिजंयति वा एषा वाग्दीयनोऽस्मै युनक्ति गमयति य आजि धार्वन्ति भवति देवतंयाऽष्टौ चं॥━━━━━━━ि द्

ताप्यै यजमानं परिधापयति। यज्ञो वै ताप्यम्। यज्ञेनैवैन् समेर्धयति। दर्भमयं परिधापयति। प्वित्रं वै दर्भाः। पुनात्येवैनम्। वाज्ं वा एषोऽवेरुरुध्सते। यो

वांजपयेन यजते। ओषंधयः खलु वै वाजंः। यहंर्भमयं परिधापयंति॥४०॥

वाजस्यावेरुस्त्री। जायु एहि सुवो रोहावेत्योह। पत्निया एवैष युज्ञस्यान्वारुम्नो-ऽनेवच्छित्यै। सप्तदेशारित्वर्यूपो भवति। सप्तदुशः प्रजापेतिः। प्रजापेतेरास्यै। तूपुरश्चतुरिश्चभवति। गौधूमं चुषालुम्। न वा एते ब्रोहयो न यवाः। यद्गेधूमाः॥४१॥ एुवमिंव हि प्रजापितिः समृष्ट्यै। अथों अमुमेवास्मैं लोकमन्नेवन्तं करोति।

द्वादेश मासाः संवथ्सरः। संवथ्सरमेव प्रीणाति। अथो संवथ्सरमेवास्मा उपेदधाति। सुवर्गस्ये लोकस्य समेध्ये। दशमिः कल्पै रोहति। नव वै पुरुषे प्राणाः। नाभिदेशमी। प्राणानेव यथास्थानं केल्पयित्वा। सुवर्गं लोकमेति। एताबद्वे 6 वासोभिवेष्टयति। एष वै यजमानः। यद्यपेः। सर्वेद्वत्यं वासंः। सर्वाभिरेवैनं देवताभिः समेर्धयति। अथो आक्रमणमेव तथ्सेतुं यजमानः कुरुते। सुवर्गस्यं लोकस्य समेष्ट्रो। द्वादेश वाजप्रसृवीयानि जुहोति॥४२॥ यावेत्प्राणाः। यावेदेवास्यास्ति। तेनं सह सुंवर्गं लोकमीते। सुवेदेवा । अंगुन्मेत्याह। सुवर्गमेव लोकमीते। अमृतां अभूमेत्याह। अमृतीमेव हि सुंवर्गो जोकः। प्रजापेतेः प्रजा अभूमेत्योह। प्राजापृत्यो वा अयं लोकः। अस्मादेव तेनं तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १) पुरुषस्य स्वम्॥४३॥ लेकात्रैति॥४४॥

समृहं प्रजया सं मयौ प्रजेत्योह। आमेवैतामा शौस्ते। आसपुटैघ्रीन्त। अन्रं

62

वा इ्यम्। अत्राद्येनेवेन् समंधयन्ति। ऊषैप्नीन्ते। पृते हि साक्षादन्नमै। यदूषौः। साक्षादेवेनम्त्राद्येन् समंधयन्ति। पुरस्तात्य्यश्चं घन्ति॥४५॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

पुरस्ताष्टि प्रतोचीनमन्नमंद्यते। शोर्षतो घ्रोन्त। शोर्षतो ह्यनंमद्यते। दिग्भ्यो घ्रोन्त। दिग्भ्य एवास्मा अन्नाद्यमवंरुन्यते। ईश्वरो वा एष पर्राङ्गदर्यः। यो यूप्र् रोहिति। हिरंण्यमध्यवंरोहिति। अमृतं वै हिरंण्यम्। अमृतरं सुवर्गो लोकः॥४६॥ अमृतं एव सुवर्गे लोके प्रति तिष्ठति। श्रतमानं भवति। श्रतायुः पुरुषः श्रतिन्द्रयः। आयुष्येवेन्द्रिये प्रति तिष्ठति। पुष्ट्ये वा एतद्र्पम्। यद्जा। तिः

संबथ्सरस्यान्यान्यशून्यरि प्रजायते। बुस्ताजिनम्प्यवं रोहति। पुष्ट्यांमेव प्रजनेने प्रति निष्ठति॥४७॥

पुरेधापयीत गोधूमो जुहोति स्वं नैति प्रत्यश्चं प्रन्ति लोको नवं च॥■

सुप्त ग्राम्या ओषंधयः। सुप्तार्ण्याः। उुभयीषामवेरुद्धो। अत्रेस्यात्रस्य जुहोति।

सुप्तात्रहोमाञ्जेहोति। सुप्त वा अत्रानि। यावेन्त्येवात्रानि। तान्येवावं रुन्धे

63

औदुंम्बरेण स्रुवेणं जुहोति। ऊग्वां अत्रंमुदुम्बरंः। ऊर्ज एवात्राद्यस्यावंरुस्द्रो। देवस्यं त्वा सर्वितुः प्रंसुव इत्याह। सुवितुप्रंसूत एवैनं ब्रह्मणा देवतांभिर्भिषिश्चति। अत्रंस्यात्रस्यामिषिश्चति। अत्रंस्यात्रस्यावंरुस्ट्रै॥४९॥ अवेरुद्धेन व्युंद्धोत। सर्वेस्य समवृदायं जुहोति। अनंवरुद्धस्यावंरुद्धो। अत्रेस्यात्रस्यावंरुद्धो। यद्वांजपेययाज्यनंवरुद्धस्याश्जीयात्॥४८॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

पुरस्तांत्यृत्यश्चेम्भिषिश्चति। पुरस्ताष्टि प्रतिचीन्मत्रम्बते। शार्ष्यतोऽभिषिश्चति।

शीर्षतो ह्यत्रेमद्यते। आ मुखांद्न्ववंसावयति। मुख्त एवास्मां अत्राद्यं दथाति। अग्रेस्त्वा साम्रौज्येनाभिषिश्चामीत्याह। एष वा अग्रेः स्वः। तेनैवैनमभिषिश्चति। इन्द्रंस्य त्वा साम्रौज्येनामिषिश्चामीत्याह॥५०॥

इन्द्रियमेवास्मिन्नेतेनं दधाति। बृहस्पतैस्त्वा साम्रौज्येनामिषिश्वामीत्याहा ब्रह्म

वै द्वानां बृह्स्पतिः। ब्रह्मणैवैनममिषिश्रति। सोम्यृहाङ्श्रांवदानीयानि चृत्विभ्य उपेहरन्ति। अमुमेव तैर्लोकमन्नेवन्तं करोति। सुराग्रहा १ श्रांनवदानीयानि

वाजुसुद्धः। ड्रममेव तैर्लोकमन्नवन्तं करोति। अथो उभयीष्वेवाभिषिच्यते। विमाथं कुर्वते वाजसृतंः॥५१॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अृश्जो्यादत्रनस्यात्रस्यावेरुद्धाः इन्द्रंस्य त्वा साम्रौज्येनाभिषिश्चामीत्याह वाज्मुतः शिपिक्शीणे च॥━━ बृहदन्त्यं भवति। अन्तमेवैनक्षं श्रिये गमयति॥५२॥

प्रजापंतेरास्यैं। वाजंवतीभिर्माध्यं दिने। अत्रं वै वाजंः। अत्रमेवावं रुन्ये। शिपिविष्ट-

ड्डन्द्रियस्यावंरुख्यै। अनिंरुक्ताभिः प्रातः सबने स्तुंबते। अनिंरुक्तः प्रजापंतिः।

वैतीभिस्तुतीयसव्ने। युज्ञो वै विष्णुंः। पृशवः शिपिः। युज्ञ एव पृशुषु प्रति तिष्ठति।

नृषद् त्वेत्योह। प्रजा वै नृन्। प्रजानांमेवेतेनं सूयते। द्रुषद्मित्यांह। वनस्पतंयों वै द्रु। वनस्पतींनामेवेतेनं सूयते। भुवनसदमित्यांह। यदा वै वसीयान्भवंति। भुवनमग्त्रिति वै तमांहः। भुवनमेवेतेनं गच्छति॥५३॥

अफ्सुषदं त्वा घृत्सद्मित्योह। अपामेवेतेनं घृतस्यं सूयते। व्योम्सद्मित्योह।

युदा वै वसीया-भवति। व्योमागुन्निति वै तमोहः। व्योमैवेतेनं गच्छति। पृथिविषदं

65 त्वाऽन्तरिक्षसद्मित्यांह। पृषामेवेतेनं लोकानारं सूयते। तस्मौद्वाजपेययाजी न कञ्चन प्रत्यवेरोहति। अपीव हि देवतांनारं सूयते॥५४॥ नाकसदमित्यांह। यदा वै वसीयान्भवंति। नाकेमगन्निति वै तमांहुः। नाकेमेवेतेनं गच्छति। ये ग्रहाः पञ्चज्नीना इत्यांह। पृञ्चजुनानांमेवेतेनं सूयते। अपार रसमुद्वयसमित्याह। अपामेवैतेन रसंस्य सूयते। सूर्यरिशिमर तैऽब्रुब्न्वरं वृणामहे। अर्थ वः पुनेर्दास्यामः। अस्मभ्यमेव पूर्वेद्युः क्रियाता गूर्वेद्युरागंच्छन्। पितॄन् युज्ञोऽगच्छत्। तं देवाः पुनंरयाचन्ता तमेभ्यो न पुनंरददुः। सुमार्भृतमित्योह सशुकृत्वायं॥५५॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १) गुच्छुति सूथते नवं च॥■

तमैम्यः पुनेरददुः। तस्मौत्पितुभ्येः पूर्वेद्युः क्रियते। यत्पितुभ्येः पूर्वेद्युः क्रोति।

डाते॥५६॥

99 पितुभ्यं एव तद्यज्ञं निष्क्रीय यजंमानः प्रतंनुते। सोमांय पितृपीताय स्वधा नम् इत्याह। पितुरेवाधि सोमपीथमवं रुन्ये। न हि पिता प्रमीयंमाण् आहेष सोमपीथ इति। इन्द्रियं वै सोमपीथः। इन्द्रियमेव सोमपीथमवं रुन्धे। तेनीन्द्रेयेणं द्वितीयाँ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

जायाम्भ्यश्जूते॥५७॥

एतद्वे ब्राह्मणं पुरा बांजवश्रवसा विदामंत्रन्। तस्माते द्वेद्वं जाये अभ्याक्षता

य एवं वेदं। अभि द्वितीयाँ जायामंश्जुते। अग्रये कव्यवाहंनाय स्वधा नम् इत्योह। य एव पितृणामग्रिः। तं प्रीणाति। तिस्र आहंतीर्जुहोति। त्रिनिंदधाति।

षड्डा ऋतवंः। ऋतूनेव प्रीणाति। तूष्णीं मेक्षेणमादंधाति। अस्ति वा हि षष्ठ ऋतुर्न वा। देवान् वै पितृन्प्रोतान्। मनुष्याः पितरोऽनु प्रपिपते। तिस्र आहेतीर्जुहोति। त्रिर्निदंधाति। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्वा ऋतवंः॥५९॥ षट्थ्सम्पंद्यन्ते॥५८॥

ऋतवः खकु वे देवाः पितरः। ऋत्नेव देवान्यितृन्भीणाति। तान्भीतान्। मनुष्याः

67

ह्रीका हि पितरंः। ओष्मणौ व्यावृत् उपौस्ते। ऊष्मभांगा हि पितरंः। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। प्राश्या (३) त्र प्राश्या (३) मिति। यत्प्रौश्जीयात्। जन्यमत्रेमद्यात्। पितरोऽनु प्रपिपते। सकुदाच्छित्रं बर्हिर्भवति। सकृदिव हि पितरंः। त्रिनिदंधाति। तुतीये वा इतो लोके पितरः। तानेव प्रीणाति। पराङाविति॥६०॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

प्रमायुकः स्यात्। यत्र प्राश्चियात्। अहिविः स्यात्॥६१॥

पितुम्य आवृक्ष्येत। अवघ्नयंमेव। तत्रेव प्राशितं नेवाप्रांशितम्। वीरं वा वै पितरंः प्रयन्तो हरीन्त। वीरं वा ददति। दशां छिनाति। हर्गणभागा हि पितरंः। पितृनेव निरवंदयते। उत्तंर आयुषि लोमं छिन्दीत। पितुणाङ् होतर्हि नेदीयः॥६२॥

नमेस्करोति। नमस्कारो हि पितृणाम्। नमो वः पितरो रसाय। नमो वः पितरः शुष्माय। नमो वः पितरो जीवाये। नमो वः पितरः स्वधायै। नमो वः पितरो

युष्माङ्स्तेऽनु। यैऽस्मिँह्योके। मां तेऽनु। य ए्तस्मिँह्योके स्थ। यूयं तेषां विसिष्ठा

मन्यवै। नमो वः पितरो घोराये। पितरो नमो वः। य प्तस्मिँ छोके स्था। ६३॥

89 देवानां वा इतरे युज्ञाः। तेन् वा एतितितृलोके चंरति। यत्पितुभ्यः करोति। स भूयास्ता येंऽस्मैक्षोके। अहं तेषां विसिष्ठो भूयासमित्यांह। विसिष्ठः समानानां भवति। य एवं विद्वान्मितुम्यः कुरोति। एष वै मेनुष्यांणां यज्ञः॥६४॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

ईश्वरः प्रमेतोः। प्राजापुत्ययुर्वा पुनरैतिं। यज्ञो वै प्रजापीतः। यज्ञेनैव सृह पुनरैतिं। न प्रमायुको भवति। पितृलोके वा एतद्यजीमानश्वरति। यत्पितुभ्यः करोतिं। स ईश्वर आर्तिमातौः। प्रजापित्रस्वावेनं तत् उत्रेतुमर्हतीत्याहुः। यत्प्राजापुत्ययुर्वा इत्पंश्चुते पद्यन्ते पद्यन्ते पङ्गा ऋतवों वर्तेतेऽहीवेः स्यात्रेदीयुः स्थ युज़ो यजमानश्चरति यस्पितुभ्यः करोति पश्चं चा⊩[१०] देवासुरा अग्नीषोमंयोर्देवा वै यथादर्शं देवा वै यद्न्यैग्रेहैंब्रहावादिनो नाग्निष्टोमो न सावित्रं देवस्याहं ताप्यै॰ पुन्रेति। प्रजापीतरेवेनं तत् उत्रयति। नार्तिमाच्छेति यजमानः॥६५॥

देवासुरा वाज्येवैने तस्मौद्वाजपेययाजी देवस्याहं वाजुस्यावेरुद्धा इन्द्रियमेवास्मिन् ह्रीका हि पितरः पर्श्वषष्टिः॥६५॥ सुप्तात्रेहोमात्रुषद् त्वेन्द्रो वृत्र॰ हृत्वा दशं॥१०॥

देवासुरा यजमानः॥

|  |   | • |   |
|--|---|---|---|
|  | • | 7 | 1 |
|  |   |   |   |
|  |   |   |   |
|  |   |   |   |
|  |   |   |   |

| /<br>-/ | रः<br>अनम≡ |
|---------|------------|
| C       | u          |
|         |            |
|         |            |
|         |            |

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके तृतीयः प्रपाठकः समाप्तः॥

चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

॥ चतुर्थः प्रश्नः॥

## ॥तौत्तरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके चतुर्थेः प्रपाठकः॥

उुभये वा एते प्रजापंतेरध्यंसुज्यन्ता देवाश्वासुराश्वा तात्र व्यंजानात्। ड्मेंऽन्य ड्मेंऽन्य इतिं। स देवान्॰शूनंकरोत्। तानुभ्यंषुणोत्। तान्पवित्रेणापुनात्। तान्पुरस्तौत्पवित्रेस्य व्यंगृह्णात्। ते ग्रहां अभवन्। तद्घहांणां ग्रहत्वम्॥१॥

देवता वा एता यजमानस्य गृहे गृंद्यन्ते। यद्ग्रहाः। विदुरेनं देवाः। यस्यैवं विदुषं एते ग्रहां गृह्यन्ते। एषा वै सोम्स्याऽऽहुतिः। यदुपार् शुः। सोमेन देवा इस्तंर्पयाणीति

खकु वै सोमेन यजते। यदुपा×ुधुं जुहोति। सोमेनैव तद्देवा १स्तेपयिति। यद्गहाँ जुहोति॥२॥

देवा एव तद्देवान्योच्छन्ति। यचमुसां जुहोति। तेनैवानुंरूपेण् यजमानः सुवुगै लोकमेति। किं न्वेतदग्रं आसीदित्यांहुः। यत्पात्राणीति। इयं वा पृतदग्रं आसीत्।

मुन्मयांनि वा पृतान्यांसन्। तेर्देवा न व्यावृतंमगच्छन्। त पृतानि दार्गमयांणि

नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

पात्राण्यपश्यन्। तान्यंकुर्वत॥३॥

गच्छति। यानि दारुमयाणि पात्राणि भवेत्ति। अमुमेव तैर्लोकमभिजयति। यानि मृन्मयानि। इममेव तैर्लोकमभिजयति। बृह्मवादिनो वदन्ति। काश्चतंत्रः

तस्यां पुते स्तनां आसन्। इयं वै पृष्टिजंः। तामांदित्या आंदित्यस्थाल्या चतुष्पदः

स्थातीर्वाययाः सोम्गर्हणीरिति। देवा वै पृश्चिमदुहन्॥४॥

दुहै। तामिन्द्रं उक्ध्यस्थान्येन्द्रियमंदुहत्। यदुंक्ध्यस्थाली भर्वति। इन्द्रियमेव तया

्शूनेदुहन्। यदादित्यस्था्ती भवंति। चतुष्पद एव तयां पृशून् यजमान डुमां

यजंमान इमां दुहे। तां विश्वे देवा आग्रयणस्थाल्योर्जमदुहन्। यदांग्रयणस्थाली

ऊर्जमेव तया यजेमान इमां देहे। तां मेनुष्यां ध्रुवस्थाल्याऽऽयुंरदुहन्। यद्धुवस्थाली भवेति। आयुंरेव तया यजेमान इमां देहे। स्थाल्या गृह्णाति।

तैवैं ते व्यावृतमगच्छन्। यहांकमयाणि पात्राणि भवंन्ति। व्यावृतमेव तैर्यजमानो

बा्य्वेन जुहोति। तस्मोद्न्येन् पात्रेण पृश्नन्दुहिन्ति। अन्येन् प्रतिगृह्णन्ति। अथौ ग्रहुत्वं ग्रहां जुहोत्यंकुर्वतादुह्नत्राप्रयणस्था॒ली भवीते नवं च॥■ व्यावृतमेव तद्यजमानो गच्छति॥६॥ वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

युवर सुरामेमक्षिना। नमुंचावासुरे सचौ। विपिपाना शुभस्पती। इन्द्रं कर्म स्वावतम्। पुत्रमिव पितराविश्विनोभा। इन्द्रावेतं कर्मणा द्र्सनाभिः। यथ्सुराम्

व्यपिंबः शर्चोभिः। सर्स्वती त्वा मघवन्नभीष्णात्। अहाँव्यभ्रे ह्विरास्येते। स्रुचीवं षृतं चुमू इंवृ सोमंः॥७॥

वाजसिने रियमस्मे सुवीरम्। प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम्। यस्मिनश्वांस ऋष्मासं उक्षणंः। वशा मेषा अवसृष्टास् आहुंताः। कीलालपे सोमंपृष्ठाय वेयसें। हृदा मृतिं जनय वार्रमभ्रये। नाना हि वां देवहितर सदो मितम्। मा सरमुक्षाथां परमे व्योमन्। सुरा त्वमिसे शुष्मिणी सोमे एषः। मा मा हिरसीः

स्वां योनिमाविशन्॥८॥

मत्यांनाम्। ताभ्यांमिदं विश्वं भुवंनु समीति। अन्तरा पूर्वमपेरं च केतुम्। यस्ते देव वरुण गायुत्रछेन्दाः पाशेः। तं ते पृतेनावे यजे॥९॥ यदत्रं शिष्ट॰ गुसेनेः सुतस्ये। यदिन्द्रो अपिबच्छवीभिः। अहं तदेस्य मनेसा शिवेने। सोम्॰ राजानिमृह मेक्षयामि। द्वे स्रुती अंश्रणवं पितृणाम्। अहं देवानोमुत नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

यस्ते देव वरुण त्रिष्टुष्छंन्दाः पाशांः। तं तं पुतेनावं यजे। यस्ते देव वरुण जगेतीछन्दाः पाशांः। तं तं पृतेनावं यजे। सोमो वा पृतस्यं राज्यमादेते। यो राजा सन्नाज्यो वा सोमेन यजेते। देवसुवामेतानि हवीशिषे भवन्ति। पुतावंन्तो वै देवानार् सुवाः। त पुवास्मे सुवान्प्रयेच्छन्ति। त एमं पुनः सुवन्ते राज्याये।

. दुवसू राजां भवति॥१०॥ सोमे आवि्शन् यंजे राज्यायैकं च॥🕳

उदंस्थाहेव्यदितिर्विश्वरूपी। आयुर्येज्ञपंतावधात्। इन्द्रांय कृण्वृती मागम्

मित्राय वर्रणाय च। इयं वा अभिहोत्री। इयं वा पृतस्य निषीदति। यस्याभिहोत्री निषीदति। तामुत्थापयेत्। उदंस्थाद्देव्यदितिरिति। इयं वै देव्यदितिः॥११॥

ड्मामेबास्मा उत्थापयति। आयुर्यज्ञपंतावर्षादित्यांह। आयुरेवास्मिन्दथाति। इन्द्राय कृण्वती भागं मित्राय वर्षणाय चेत्यांह। यथायजुरेवेतत्। अवितिं वा ए्षैतस्यं पाप्मानं प्रतिख्याय निषीदति। यस्याधिहोत्र्यपंसुष्टा निषीदति। तां दुग्खा ब्रौह्मणायं दद्यात्। यस्यात्रं नाद्यात्। अवेतिमेवास्मिन्याप्मानं प्रतिमुश्चति॥१२॥ वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

दुग्ध्वा दंदाति। न ह्यदंष्टा दक्षिणा दोयते। पृथिवीं वा पृतस्य पयः प्रविश्वाति। यस्याभिहोत्रं दुह्यमान् स्कन्दंति। यद्द्य दुग्धं पृथिवीमसंक्ता यदोषंधीरप्यसंरद्यदापेः। पयो गृहेषु पयो अघ्रियासुं। पयो वश्सेषु पयो अस्तु तन्मयीत्योह। पये पुवाऽऽत्मन्गृहेषु पृशुषु धत्ते। अप उपंसुजति॥१३॥

अद्भिरेवैनंदाप्रोति। यो वै युज्ञस्याते नानाति सम्मुजति। उमे वै ते यदंभिदुह्यात्। आर्ते नानांतै युज्ञस्य स॰सृजेत्। तदेव याटक्कोटक्रे होत्व्यम्। अथान्यां दुग्ष्वा पुनंर्होत्व्यम्। अनातिनेवातं युज्ञस्य निष्केरोति॥१४॥ तह्योच्छेतः। आच्छीते खलु वा एतदंग्निहोत्रम्। यदुद्यमान् 🖫

यद्युद्देतस्य स्कन्दैत्। यत्ततोऽहुत्वा पुनेर्यात्। यज्ञं विच्छिन्द्यात्। यत्र स्कन्दैत्। तत्रिषद्य पुनेर्गृह्षीयात्। यत्रैव स्कन्देति। तते एवेनृत्पुनेर्गृह्णाति। तदेव यादक्कीदक्रे होत्व्यम्। अथान्यां दुग्प्वा पुनंर्होत्व्यम्। अनातिनेवातं युज्ञस्य निष्केरोति॥१५॥ वि वा पुतस्यं युज्ञक्षिद्यते। यस्याप्निहोत्रेऽधिश्रिते क्षाऽन्त्रा घावीते। कृद्रः खलु वा पुषः। यद्ग्रिः। यद्गमंन्वत्या वृत्येत्। कृद्रायं पृशूनिपे अनाद्यमग्रेरापः अनाद्यमाभ्यामपि दध्यात्। गार्हपत्याद्धस्मादाये। इदं विष्णुर्विचेकम् वैष्णव्यर्चाऽऽहेवनीयादस्बर्सयञ्जद्रवेत्। यज्ञो वै विष्णुः। यज्ञेनैव सन्तेनोति। भस्मेना प्दमपि वपति शान्त्यै॥१६॥ दघ्यात्। अपुशुर्यजमानः स्यात्। यद्पौऽन्वतिषिञ्जत्। वै देव्यदितिर्मुश्चति मुजति करोत्याभ्यामपि दष्यात् पर्श्रं च॥■ वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

नि वा पृतस्यांऽऽहवनीयो गार्हपत्यं कामयते। निगार्हपत्य आहवनीयम् यस्याग्रिमनुंख्तुष्ट् सूर्योऽभि निम्रोचीते। दुर्भेण हिरंण्यं प्रबद्धं पुरस्तांखरेत्

वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अथाग्निम्। अथाग्निहोत्रम्। यद्धिरंण्यं पुरस्ताद्धरंति। ज्योतिर्वे हिरंण्यम्। ज्योतिर्वेनं पश्यन्नुद्धरति। यद्ग्रिं पूर्वेष्ट हर्ग्त्यथाग्निहोत्रम्॥१७॥

सर्वाभिरेवेनं देवतांभिरुद्धरति। अग्रिहोत्रमुंपुसाद्यातमितोरासीत। ब्रतमेव हतमनु

म्रियते। अन्तं वा एष आत्मनो गच्छति। यस्ताम्यंति। अन्तंमेष युज्ञस्यं गच्छति।

यस्याग्रिमनुद्धत्र सूर्योऽभि निम्रोचिति॥१८॥

मागुधेयेनैवैनं प्रणयिति। ब्राह्मण आंर्षेय उद्धेरेत्। ब्राह्मणो वै सर्वा देवताः।

युज्ञं गृह्णाति। यस्याग्निमनुष्टुत॒॰् सूर्योऽभि निम्रोचीते। बारुणं चरु निर्वपेत्। तेनेव युज्ञं निष्कीणीते। नि वा पृतस्योऽऽहर्वनीयो गार्हेपत्यं कामयते। नि

॥र्हेपत्य आहब्नीयम्। यस्याग्रिमनुंख्तुष्ट्र सूर्योऽभ्युंदेति। चृतुर्गृहीतमाज्यं

पुरस्ताद्धरेत्॥१९॥

अथाग्रिम्। अथाग्निहोत्रम्। यदाज्यं पुरस्ताद्धरंति। एतद्वा अग्नेः प्रियं धामे।

पुनेः सुमन्यं जुहोति। अन्तेनैवान्तं युज्ञस्यु निष्केरोति। वर्षणो वा पृतस्यं

यस्ताम्यीति। अन्तेमेष यज्ञस्यं गच्छाति। यस्याग्रिमनुष्कुत्रं सूर्योऽभ्युदेतिं। पुनेः समन्यं जुहोति। अन्तेनेवान्तं यज्ञस्य निष्कंरोति। मित्रो वा एतस्यं यज्ञं गृह्णाति। सर्वाभिरेवैनं देवतांभिरुद्धंरति। परांची वा एतस्मैं व्युच्छन्ती व्युच्छाति। यस्याग्निमनुंद्धतुर् सूर्योऽम्युंदेतिं। उषाः केतुनां जुषताम्। यज्ञं देवेभिरिन्वितम्। देवेम्यो मधुमत्तमङ् स्वाहेति प्रत्यङ्गिषद्याज्येन जुह्यात्। प्रतीचीमेवास्मै यदाज्यम्। प्रियेणैवेनं धाम्रा समेर्धयति। यद्ग्रिं पूर्वे॰ हर्त्त्यथाप्निहोत्रम्। भाग्घेयेनैवेनं प्रणयति। ब्राह्मण आंर्षेय उद्धेरेत्। ब्राह्मणो वै सर्वो देवताः॥२०॥ यस्याग्निमनुंख्तुर सूर्योऽभ्युदेति। मैत्रं चरुं निवेपेत्। तेनैव युज्ञं निष्कीणीते। यस्योऽऽहवनीयेऽनुंद्वाते गार्हेपत्य उद्वायैत्॥२२॥ विवासयति। अग्रिहोत्रमुपुसाद्यातमितोरासीत। बृतमेव हृतमनु म्रियते। अन्तुं वा एष आत्मनो गच्छति॥२१॥ वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

यदांहव्नीयुमनुद्वाप्यु गार्ह्पत्युं मन्थैत्। विच्छिन्द्यात्। भातृेव्यमस्मै जनयेत्।

इतः प्रंथमं जंजे अग्निः। स्वाद्योनेराधे जातवेदाः। स गांयत्रिया त्रिष्टुभा जगंत्या। देवेभ्यों हव्यं वेहतु प्रजानन्निति। छन्दोभिरेवेन्थ् स्वाद्योनेः प्रजनयति। गार्हपत्यं मन्यति। गार्हपत्यं वा अन्वाहिताग्नेः पृशव उपं तिष्ठन्ते। स यदुद्वायेति। तदनुं पृशवोऽपं कामन्ति। इषे रृष्यै रंमस्व॥२४॥ 78 आह्वनीयंमुद्वाप्य यत्पूर्वमन्ववस्येत् यद्वे यज्ञस्य वास्तव्यं क्रियते। तदनुं फ्द्रोऽवंचरति। वास्तव्यमिभ्रमुपोसीत। क्द्रोंऽस्य पृश्न्यातुंकः स्यात्। गार्हेपत्यं मन्येत्॥२३॥ वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

सहेसे द्युम्नाये। ऊर्जेऽपत्यायेत्योह। पृशवो वै रायेः। पृशूनेवास्मै रमयति। सारम्वतौ त्वोथ्सौ समिन्यातामित्योह। ऋख्सामे वै सारम्बताबुथ्सौ। क्रब्सामाभ्यांमेवेन्॰ समिन्या सुम्राडीसे विराड्सीत्यांहा र्थन्त्रं वै सुम्राट् <u>बृहों द्वेराट्॥ २५॥</u>

ताभ्यमिवेन् समिन्धा वज्रो वे च्कम्। वज्रो वा एतस्यं युज्ञं विच्छ्निति

हर्त्यथाप्रिहोत्रं निम्रोचीत हरेद्देवता गच्छत्युद्वायैनम्थेद्रमस्व बृहद्विराडिति नवं च (नि वै पूर्वे शीणे निम्रोचीत दुर्भेण \<u>∞</u> यदेशे पूर्वै प्रभुतं पुद॰ हि तें। सूर्यस्य र्थमीनन्वांतृताने। तत्रे रियुष्ठामनु सं पूर्वेणेवास्यं युज्ञेनं युज्ञमनु सन्तेनोति। त्वमेग्ने स्प्रथां असीत्योह। अग्निः सर्वा देवताः। देवतांभिरेव युज्ञ सन्तेनोति। अग्रये पथिकृते पुरोडाशम्षाकेपालं निर्वेपेत्। अग्रिमेव पीथेकृत्ङ् स्वेनं भागधेयेनोपंधावति। स एवेनं यज्ञियं पन्थामपि नयति। अनुद्वान्दक्षिणा। वृही ह्येष समृद्धै॥२७॥ यक्दिरंण्यमग्निहोत्रं पुनर्बरुणो बारुणं नि वा एतस्याप्युदेति चतुर्गृहीतमाज्यं यदाज्यं पराैच्युषाः पुर्नार्मेत्रो मैत्रं यस्योऽऽहवनीयेऽनुद्वाते यस्यानों वा रथों वाऽन्त्राऽग्री याति। आह्वनीयंमुद्वाप्यं। गार्हपत्यादुद्धरेत्। भैरतम्। सं नेः सुज सुमत्या वाजंबत्येति॥२६॥ गार्हेपत्यो यद्वे मन्येदुधरेत्॥)॥🕳 नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

यस्ये प्रातः सबने सोमोऽतिरिच्यते। माध्यं दिन् सबनं कामयमानो-

ऽन्यतिरिच्यते। गौर्धयति मुरुतामिति धर्यद्वतीषु कुर्वन्ति। हिनस्ति वै सुन्ध्यधींतम्।

80 मुन्यीव खलु वा एतत्। यथ्सवंनस्यातिरिच्यंते। यद्धयंद्वतीषु कुर्वन्ति। सुन्येः नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

शान्त्यै। गायुत्र सामे भवति पश्चदृशः स्तोमंः। तेनैव प्रांतः सबुनात्रयंन्ति॥२८॥ मुरुत्वेतीषु कुर्वन्ति। तेनैव माप्यं दिना्थ्सवेनात्रयंन्ति। होतुंश्चम्समनूत्रयन्ते।

होताऽनु शश्सिति। मध्यत एव यज्ञश्समादंधाति। यस्य माध्यं दिने सर्वने सोमोऽतिरिच्यंते। आदित्यं तृतीयसवनं कामयमानोऽभ्यतिरिच्यते। गौरिबीतश् सामं भवति। अतिरिक्तं वै गौरिबीतम्। अतिरिक्तं यथ्सवनस्यातिरिच्यंते॥२९॥

अतिरिक्तस्य शान्त्यै। बण्महा॰ असि सूर्येति कुर्वन्ति। यस्यैवाऽऽदित्यस्य सर्वनस्य कार्मेनातिरिच्येते। तेनैवैनं कार्मेन सर्मर्धयन्ति। गौरिबीत॰ सामं भवति। तेनैव माध्यं दिना्थ्सवेनात्रयंन्ति। सृषदृशः स्तोमंः। तेनैव तृंतीयसवृनात्रयंन्ति। होतुंश्वमसममूत्रयन्ते। होताऽनुं शश्सिति॥३०॥

मुध्यत एव युज्ञ समादंशाति। यस्यं तृतीयसवने सोमोऽतिरिच्यंता उक्ध्यं

कुर्वीत। यस्योक्ध्येऽतिरिच्येत। अतिरात्रं कुर्वीत। यस्यांतिरात्रेऽतिरिच्येते। तत्त्वे

8 चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

कुर्वन्ति। शिपिविष्टो वै देवानां पुष्टम्। पुष्ट्यैवेन्॰ समेर्धयन्ति। होतुश्चमसमनूत्रयन्ते।

होताऽनुंशश्सति। मृष्युत एव युज्ञश्समादंधाति॥३१॥

युन्ति सर्वनस्यातिरिच्यंते श॰सति दाधाराष्टो चे॥━

एकैको वै जनतायामिन्द्रः। एकं वा एताविन्द्रंमभि स॰सुंनुतः। यौ द्वौ स॰सुनुतः। प्रजापेतिर्वा एष वितायते। यद्यज्ञः। तस्य ग्रावाणो दन्ताः। अन्यतरं

वा एते सर्सुन्वतोर्निबैफ्सति। पूर्वेणोपुसुत्यो देवता इत्योहुः। पूर्वोपुसुतस्य वै

श्रेयांन्मवति। एतिंवन्त्याज्यांनि भवन्त्यमिजिंत्ये॥३२॥

मुरुत्वेतीः प्रतिपदेः। मुरुतो वै देवानामपेराजितमायतंनम्। देवानांमेवापंराजित आयतेने यतते। उमे बृहद्रधन्तरे भेवतः। इयं वाव रिधन्तरम्। असौ बृहत्।

आभ्यामेवेनम्न्तरेति। वाचश्च मनंसश्च। प्राणाचापानाच। दिवश्चं पृथिव्याश्चे॥३३॥

दुष्प्रज्ञानम्। यजेमानं वा एतत्प्शवं आसाह्ययन्ति। बृहथ्सामं भवति। बृहद्वा डुमाँल्लोकान्दांधार। बार्हताः पृशवंः। बृह्तैवास्मे पृशून्दांधार। शिपिविष्टवंतीषु

नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

सर्वस्माद्विताद्वद्यौत्। अभिवृतों ब्रह्मसामं भेवति। सुवर्गस्यं लोकस्याभिवृत्त्यै। अभिजिद्धवति। सुवर्गस्यं लोकस्याभिजित्यै। विश्वजिद्धवति। विश्वस्य जित्यै। यस्य भूयारंसो यज्ञकृतव् इत्योहुः। स देवतां वृङ्क इति। यद्येग्निष्टोमः सोमेः

नुरस्ताथ्स्यात्॥ ३४॥

उकथ्यं कुर्वीत। यद्युक्थः स्यात्। अतिरात्रं कुर्वीत। यज्ञ्जतुभिरेवास्यं देवतां बृङ्का यो वै छन्दोभिरभिमवीत। स सर्समुन्वतोर्भिमेवति। संवेशायं त्वोपवेशाय त्वेत्योह। छन्दार्सम् वै संवेश उपवेशः। छन्दोभिरेवास्य छन्दार्धस्यभिमेवति।

ड्डर्णः खलु वै पूर्वोऽष्टुः क्षीयते। प्राणापानौ मृत्योमां पातामित्याह। प्राणापानयोरेव श्रेयते। प्राणापानो मा मा हासिष्टमित्याह। नैनं पुराऽऽयुषः

इष्टगों वा ऋत्विजांमध्वर्युः॥३५॥

प्राणापानो जीहितः। आर्ति वा एते नियंन्ति। येषां दीक्षितानां प्रमीयेते। तं

यदंववजेयुः। ऋ्कुतामिवैषां लोकः स्यौत्। आहेर दहिति ब्रूयात्॥३६॥

तं देक्षिणतो वेद्यै निघाये। सर्पराज्ञियां ऋग्भिः स्तुयुः। इयं वै सर्पतो राज्ञी। अस्या एवैनुं परिददति। व्युंख्ं तदित्योहः। यथ्स्तुतमनेनुशस्तुमिति। होता प्रथुमः प्रांचीनावीती मौर्जालीयं परीयात्। यामीरंनुब्रुवन्। सर्पराजीनौ कीर्तयेत्। वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अथो धुवन्त्येवैनम्। अथो न्येवास्मै ह्रवते। त्रिः परियन्ति। त्रयं हुमे लोकाः उभयोरेवेनं लोकयोः परिंददति॥३७॥

एम्य एवैनं लोकेम्यों धुवते। त्रिः पुनः परियन्ति। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्डा ऋतवः

क्तुभिरेवेनं धुवते। अग्रु आयू शिष पवस् इति प्रतिपदं कुर्वीरन्। र्थन्तरसामिषा र सोमः स्यात्। आयुरेवाऽऽत्मन्दंधते। अथौ पाप्मानंमेव विजहंतो यन्ति॥३८॥ अमिजित्यै पृथियाश्च स्यादेष्वर्धुक्रूयात्रोकयोः परिददति कुर्वीर्ङ्क्षीणि च॥🕳

असुर्यं वा एतस्माद्वर्णं कृत्वा। पृशवो वीर्यमपं कामन्ति। यस्य यूपो विरोहीति। त्वाष्ट्रं बेहुरूपमालेभेत। त्वष्टा वै रूपाणामीशे। य एव रूपाणामीशे। सौंऽस्मिन्युशून्

बीर्यं यच्छति। नास्मौत्पुशवो बीर्यमपं कामन्ति। आर्तिं वा पृते नियंन्ति। येषाँ

84 जुहुयाद्न्यत्। सोममेवाभिषुणोति। सोमं जुहोति। सोमेस्य वा अभिष्यमाणस्य यस्माद्दारोकद्वायौत्। तस्यारणी कुर्यात्। कुमुकमपि कुर्यात्। पृषा वा अग्नेः प्रिया गार्हेपत्यो वा अग्नेयोनिः। स्वादेवैनं योनैजनयति। नास्मै भातृेव्यं जनयति। यस्य सोमं उपदस्यैत्। सुवर्णे हिरंण्यं द्वेषा विच्छिद्धां। ऋजीषैऽन्यदांधूनुयात्। यदांहवनीयं उद्वायेत्। आग्नीद्धादुद्धंरेत्। यदाग्नीद्ध उद्वायेत्। गार्हपत्यादुद्धंरेत्। यद्वार्हपत्य उद्वायेत्। अतं पृव पुनेर्मन्थेत्॥४०॥ अत्र वाव स निलेयते। यत्र खलु वै निलीनमुत्तमं पश्येन्ति। तदेनमिच्छन्ति। यदांहवनीयं उद्वायेत्। यत्तं मन्थेत्। विच्छिन्द्यात्। भ्रातृंव्यमस्मै जनयेत्। त्नुः। यत्क्रेमुकः। प्रिययैवेनं त्नुवा समर्धयति। गार्हपत्यं मन्थति॥४१॥ दीक्षितानांमग्रिरुद्वायंति॥३९॥ वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

तथ्सुवर्णे ९ हिरंण्यमभवत्। यथ्सुवर्णे हिरंण्यं कुर्वन्ति। प्रिययैवेनं तनुवा प्रेया त्नूरुदकामत्॥४२॥

नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

त आंदारा अभवन्। इन्द्रों वृत्रमंहन्। तस्यं वृत्कः परांऽपतत्। तानि फाल्गुनान्यंभवन्। पशवो वे फाल्जुनानि। पशवः सोमो राजा। यदांदाराङ्क्षं फाल्गुनानि चाभिषुणोति। सोममेव राजांनममिषुणोति। श्रुतेनं प्रातः सवने

वृताः स्युः। त ऐनं याजयेयुः। एकां गां दक्षिणां दद्यातेभ्यं एव। पुनः सोमं क्रीणीयात्। यज्ञेनैव तद्यज्ञमिच्छति। सैव ततः प्रायेश्चितिः। सर्वाभ्यो वा एष देवताभ्यः सर्वेभ्यः पृष्ठेभ्यं आत्मानुमागुरते। यः स्त्रायांगुरते। एतावान्बकु वै

नीतमिश्रेणं तृतीयसब्ने। अग्रिष्टोमः सोमेः स्याद्रथन्त्रसामा। य एबर्लिजो

श्रीणीयात्। द्धा मध्यं दिन॥४४॥

पुरुषः। यावेदस्य वित्तम्। सर्ववेदसेने यजेता सर्वपृष्ठोऽस्य सोमेः स्यात्। सर्वाभ्य

समर्धयन्ति। यस्याक्रीतर् सोमेमपृहरेयुः। कोणीयादेव। सैव ततः प्रायेक्षित्तिः। यस्ये कीतमेपृहरेयुः। आदाराङ्क्षं फाल्युनानि चामिषुणुयात्। गायुत्री यर सोमुमाहरत्। तस्य योऽरेशुः पुराऽपैतत्॥४३॥

86

एुव द्वताभ्यः सर्वेभ्यः पृष्ठभ्यं आत्मानं निष्कीणीते॥४५॥ उद्वायंति मन्थेन्मन्थत्यकामत्प्राऽपंतन्मृष्यन्दिन आगुरते पर्श्न च॥∎ नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

पवेमानः सुबर्जनः। प्वित्रेण विचंर्षाणः। यः पोता स पुनातु मा। पुनन्तु

मा देवजुनाः। पुनन्तु मनेवो घिया। पुनन्तु विश्वं आयवेः। जातेवेदः पृवित्रेवत्। पृवित्रेण पुनाहि मा। शुक्रेणं देव दीद्यंत्। अग्रे कत्वा कत्रू॰ रनुं॥४६॥

यत्ते पुवित्रमिषिषे। अग्ने वितंतमन्तरा। ब्रह्म तेनं पुनीमहे। उभाभ्यां देव सवितः। पुवित्रेण सुवेनं च। इदं ब्रह्मं पुनीमहे। वैश्वदेवी पुनती देव्यागात्। यस्यै ब्रह्मीस्तनुवों वीतपृष्ठाः। तया मदन्तः सधुमाद्येषु। वृयङ् स्यांम् पतंयो रयोणाम्॥४७॥

वैश्वान्रो रश्मिभिर्मा पुनातु। वातेः प्राणेनेषिरो मयोभूः। द्यावापृथिवी पर्यसा पर्योभिः। ऋतावेरी यज्ञिये मा पुनीताम्। बृहद्धिः सवितस्तुभिः। वर्षिषैषैदेव मन्मेभिः। अग्रे दक्षैः पुनाहि मा। येने देवा अपुनत। येनाऽऽपो दिव्यं कशः। तेने द्वियेन् ब्रह्मणा॥४८॥ 87

ड्डं ब्रह्मं पुनीमहे। यः पांवमानीरुध्येति। ऋषिभिः सम्भृतर् रसम्। सर्वर् स पूतमंश्र्ञाति। स्वदितं मांतिरश्वेना। पावमानीयों अध्येति। ऋषिभिः सम्भृतर् रसम्। तस्मे सरंस्वती दुहे। क्षीरर् सर्पिर्मधृंद्कम्। पावमानीः स्वस्त्ययंनीः॥४९॥ वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

पावमानीदिंशन्तु नः। इमं लोकमथौ अमुम्। कामान्थ्समेर्धयन्तु नः। देवीदेवैः समामृताः। पावमानीः स्वस्त्ययेनीः। सुदुषा हि घृतश्चतेः। ऋषिभिः सम्मृतो सुदुषा हि पर्यस्वतीः। ऋषिभिः सम्भृतो रसंः। ब्राह्मणेष्वमृतरं हितम्।

||一との||

ब्राह्मणेष्वमृतर् हितम्। येनं देवाः पवित्रेण। आत्मानं पुनते सदाँ। तेनं सहस्रिधारेण। पावमान्यः पुनन्तु मा। प्राजापत्यं पवित्रम्। शृतोद्योमर हिर्णमयम्। तेनं ब्रह्मविदों व्यम्। पूतं ब्रह्मं पुनीमहे। इन्द्रंः सुनीती सह मां पुनातु। सोमंः

स्वस्त्या वरुणः सुमीच्यौ। युमो राजौ प्रमृणाभिः पुनातु मा। जातवेदा मोर्जयन्त्या

पुनातु॥ ५१॥

अनु रधोुणां ब्रह्मणा स्वस्त्ययंनीः सुदुघा हि घृंतश्रुत ऋषिभिः सम्भृतो रसः पुनातु त्रीणि च॥━

88 प्रजा वै स्त्रमांसत् तप्स्तप्यंमाना अजुंह्नतीः। देवा अपश्यश्चमसं घृतस्यं पूर्णं इ स्वृषाम्। तमुपोदतिष्टन्तमंजुहवुः। तेनाधमास ऊर्जमवांरुन्यत। तस्मोदर्धमासे देवा नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

डंज्यन्ते। पितरोऽपश्यश्चमसं घृतस्यं पूर्णङ् स्वधाम्। तमुपोदंतिष्टन्तमंजुहबुः। तेनं मास्यूर्जमवोरुन्यत। तस्मौन्मासि पितुभ्यंः क्रियते। मृनुष्यां अपश्यश्चमसं घृतस्यं

तमुपोदंतिष्टुन्तमंजुहबुः। तेनं द्वयीमूर्जमवांरुन्यत। तस्माद्विरह्नों मनुष्यैन्य

पूर्णे स्वधाम्॥५२॥

तमुपोदीतष्ट्रन्तमंजुहबुः। तेनं त्रयीमूर्जमवांरुन्यता तस्मात्रिरहः पृशवः प्रेरते।

उपेहियते। प्रातश्चे सायं चे। पृशवोऽपश्यश्चमसं घृतस्ये पूर्णं

प्रातः संङ्गवे सायम्। असुरा अपश्यश्चमसं घृतस्यं पूर्णङ् स्वधाम्॥५३॥

अमी वा इदमंभूवन्। यद्वयङ् स्म इति। त पृतानि चातुर्मास्यान्यंपश्यन्। तानि

निरंवपन्। तैरेवैषां तामूर्जमबुअता ततो देवा अभेवन्। पराऽसुराः॥५४॥

तमुपोदंतिष्टुन्तमंजुहबुः। तेनं संबथ्सर ऊर्जमवांरुन्यता ते देवा अंमन्यन्त।

89 यामेव पितर् ऊर्जमुवारुन्यत। तान्तेनावं रुन्ये। यदावस्थेऽत्रु॰ हर्रन्ति। यामेव यद्यजंते। यामेव देवा ऊर्जम्वारुन्यता तान्तेनावं रुन्ये। यत्पृतुभ्यंः कृरोतिं। नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

मेनुष्यां ऊर्जमवारुन्यता तान्तेनावं रुन्ये। यह्किणां ददांति॥५५॥

यामेव पशव ऊर्जमवारुन्यता तान्तेनावं रुन्ये। यद्यांतुर्मास्यैर्यजंते। यामेवासुंग् ऊर्जमवारुन्यता तान्तेनावं रुन्ये। भवंत्यात्मनां। परास्य आतृंब्यो भवति। विराजो वा एषा विक्रान्तिः। यद्यांतुर्मास्यानि। वैश्वदेवेनास्मिंक्षोके प्रत्यंतिष्ठत्। <u>बरुणप्रघासैर-तरिक्षे। साकमे</u>यैर्मुर्षिक्षेके। एष ह त्वावेतथ्सर्व मुनुष्यो अपश्यश्चमसं घृतस्ये पूर्णेः स्वघामसुरा अपश्यश्चमसं घृतस्यं पूर्णः स्वघामसुरा ददाँत्यतिष्ठचत्वारि च॥**———**[९] भवति। य एवं विद्वाङ्श्वांतुर्मास्यैर्यज्ञापिष्ट॥

बायुरंनुवथ्सरः। यद्वैश्वदेवेन यजेते। अग्रिमेव तथ्संवथ्सरमाप्नोति। तस्माद्वैश्वदेवेन अग्निर्वाव संवध्सरः। आदित्यः पीरवध्सरः। चन्द्रमां इदावध्सरः।

यजंमानः। संवृथ्सूरीणार्डं स्वस्तिमाशास्त् इत्याशांसीत। यद्वेरुणप्रघासैर्यजतेो

96 वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

तस्माद्वरुणप्रघासैर्यजमानः। परिवृथ्सुरीणार्डं स्वस्तिमाशास्त इत्याशांसीत। आदित्यमेव तत्पीरवध्सरमाप्नोति॥५७॥

यथ्सांकमेधेर्यजंते। चन्द्रमंसमेव तदिदावथ्स्रमाप्नोति। तस्माथ्साकमेधेर्यजंमानः।

ड्दावृथ्स्रीणार् स्वस्तिमाशौस्त इत्याशांसीत। यत्पितृयज्ञेन यजेते। देवानेव तद्न्ववंस्यति। अथ्वा अंस्य वायुश्चांनुवध्सुरश्चाप्रीतावुच्छिष्येते। यच्छुनासीरीयेण्

यजने॥५८॥

वायुमेव तदंनुवथ्सरमाप्नोति। तस्माच्छुनासीरीयेण् यजंमानः। अनुवथ्सरीणार्

स्वस्तिमाशास्त इत्याशांसीत। संवथ्सरं वा एष ईफ्सतीत्योहः। यश्चातुर्मास्यैर्यज्ञात् इति। एष हु त्वै संवथ्स्रमाप्रोति। य एवं विद्वाङ्श्वांतुर्मास्यैर्यजते। विश्वे देवाः समेयजन्ता तैऽग्रिमेवायेजन्ता त एतं लोकमेजयन्॥५९॥

यस्मित्रग्निः। यद्वैश्वदेवेन यजेते। एतमेव लोकं जंयति। यस्मित्रग्निः। अग्नेरेव सायुज्यमुपैति। यदा वैश्वदेवेन यजेते। अधे संवध्सरस्यं गृहपेतिमाप्रोति।

सहस्रयांजिनंमाप्रोति। अध युदा संबध्सरस्यं गृहपंतिमाप्रोति। संहस्रयाजिनमाप्रोति॥६०॥ वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अथ गौर्मविति। एषा वै वैभवदेवस्य मात्रौ। एतद्वा एतेषामवमम्। अतोतो वा उत्तराणि श्रेयारंसि भवन्ति। यद्विश्वे देवाः समयंजन्ता तद्वैश्वदेवस्यं अर्थ गृहमेषिनंमाप्रोति। युदा गृहमेषिनंमाप्रोति। अथाग्रिभंवति। युदाग्रिभेवति। वैश्वदेवत्वम्॥६१॥

अथोऽऽदित्यो वर्षण् रोजानं वरुणप्रघासैरंयजत। स पृतं लोकमंजयत्। यस्मित्रादित्यः। यद्वेरुणप्रघासैर्यजते। पृतमेव लोकं जंयति। यस्मित्रादित्यः। आदित्यस्यैव सायुज्यमुपैति। यदांदित्यो वर्षण् राजांनं वरुणप्रघासै-रयंजता तद्वरुणप्रघासानां वरुणप्रघासुत्वम्। अथु सोमो राजा छन्दार्शस साकमेघैरंयजत॥६२॥

स एतं लोकमेजयत्। यस्मिॐश्रुन्द्रमां विभाति। यथ्सांकमेधेर्यज्ञते। एतमेव

अथौषंधय <u>इ</u>मं देवं त्र्यम्बकैरयजन्त प्रथेमहीति। ततो कै ता अप्रथन्त। य एवं विद्वाङ्स्यम्बकैर्यजेते। प्रथेते प्रजयां पृशुभिः। अधे वायुः परमेष्ठिन<sup>६</sup> लोकं जयिति। यस्मिॐश्रुन्द्रमां विभाति। चन्द्रमंस एव सायुज्यमुपैति। सोमो तथ्सांकमेथानार् साकमेथत्वम्। अथत्वेः पितरंः प्रजापेति पितरं पितृयज्ञेनायजन्ता त एतं लोकमंजयन्। यस्मित्रृतवेः। यत्पितृयज्ञेन यज्तेते। एतमेव लोकं जंयति। यस्मित्रृतवेः। ऋतूनामेव सायुज्यमुपैति। यदृतवेः पितरंः वै चन्द्रमाः। एष ह त्वै साक्षाथ्सोमं भक्षयति। य एवं विद्वान्थ्सांकमेथैर्यजते। प्जापेतिं पितरं पितृयुज्ञेनायंजन्ता तिसितृयुज्ञस्यं पितृयज्ञुत्वम्॥६४॥ यथ्सोमेश्र राजा छन्दार्सि च समैधन्ता ६३॥ नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

बायोरेव सायुंज्यमुपैति। ब्रह्मबादिनों वदन्ति। प्र चांतुर्मास्ययाजी मीयुता (३)

शुनासीरीयेणायजत। स पृतं लोकमंजयत्। यस्मिन्बायुः। यच्छुनासीरीयेण् यजेते।

पुतमेव लोकं जयति। यस्मिन्बायुः॥६५॥

93 भेवति। यदि ग्रीष्मे ग्रीष्मः। यदि वर्षासुं वर्षाः। यदि शृरदि शृरत्। यदि हेमेन् हेम्न्तः। ऋतुर्भूत्वा संवथ्सरमप्येति। संवथ्सरः प्रजापेतिः। प्रजापेतिवविषः॥६६॥ पुरेबुध्सुरमाप्नोति शुनासीरीयेण यजेतेऽजयन्थ्सहस्रयाजिनमाप्नोति वैश्वदेबुत्व॰ सांकमेपैरंयजत सुमैर्यन्त पितृयज्ञत्वं जंयति उुभयें युव॰ सुराममुदेस्थात्रि वै यस्ये प्रातः सब्न एकैकोऽसुयैं पर्वमानः प्रजा वै स्त्रमांसताशिर्वाव संवथ्सरो न प्रमीयता (३) इति। जीवन्वा एष ऋतूनप्यंति। यदि वसन्तौ प्रमीयंते। वसन्तो । ८ - ८ - ८ - ८ - ८ - २ - २ उुमये वा उदंस्थाथ्सर्वाभिर्मध्यतोऽत्र वाव ब्राँह्राणेष्यथं गृहमेषिन् षट्ध्यंष्टिः॥६६॥ चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १) यस्मिन्बायुर्हेम्नतस्त्रीणि च॥🕳 उुभये वा वैषः॥ दश्ता१०॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥ हरिः ओम्॥

पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

|| **TARH: 78:** ||

## ॥तौत्तरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके पञ्चमः प्रपाठकः॥

कृदस्यं बाह्र। मृगयवंः पुरस्ताहिं <u>बा</u>रोऽवस्तात्। अदित्ये पुनर्वसू। वातेः पुरस्तांदार्द्रमुवस्तात्॥१॥ अग्नेः कृत्तिकाः। शुक्रं प्रस्ताङ्योतिर्वस्तांत्। प्रजापेते रोहिणी। आपेः गुरस्तादोषेघयोऽवस्तात्। सोमेस्येन्वका वितेतानि। पुरस्ताद्वयेन्तोऽवस्तांत्।

56न बृहस्पतैस्तिष्येः। जुह्नेतः पुरस्ताद्यजमाना अवस्तीत्। सपाणामाश्रेषाः। अभ्यागच्छेन्तः पुरस्तोदभ्यानृत्येन्तोऽवस्तीत्। पितृणां मघाः। रुदन्तेः पुरस्तोदप्रश्रेश्वोऽवस्तीत्। अर्यम्णः पूर्वे फल्गुनी। जाया पुरस्तोद्दष्मोऽवस्तीत्।

देवस्यं सर्वितुर्हस्तंः। प्रसुवः पुरस्तांथ्सनिर्वस्तांत्। इन्द्रंस्य चित्रा। तं पुरस्तांथ्सृत्यमुवस्तात्। वायोर्निष्ठां वृतितः। पुरस्तादसिष्ठिर्वस्तात्। मगुस्योत्तेरे। बृहुतवेः पुरस्ताृद्वहेमाना अुवस्तौत्॥२॥

ङ्-द्राभियोविशांखे। युगानि प्रस्तांत्कृषमांणा अवस्तांत्। मित्रस्यांनूराघाः। अभ्यारोहेत्प्रस्तांद्भ्यारूढम्वस्तात्॥३॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

प्रतिमञ्जन्तंः प्रस्तौत्प्रतिश्रुणन्तोऽवस्तौत्। अपां पूर्वा अषाढाः। वर्चः प्रस्ताथ्समितिर्वस्तौत्। विश्वेषां देवानामुत्तेराः। अभिजयेत्प्रस्तांद्भिजितम्बस्तौत् विष्णौः श्रोणा पृच्छमानाः। प्रस्तात्पन्यो अवस्तौत्॥४॥

इन्द्रंस्य रोहिणी। श्रृणत्प्रस्तौत्रतिश्रृणद्वस्तौत्। निर्ऋत्ये मूलुबर्हणी।

वसूनाङ् श्रविष्ठाः। भूतं प्रस्ताद्भूतिर्वस्तात्। इन्द्रंस्य श्रातमिषक्। विश्वव्येचाः प्रस्ताद्भिश्वक्षितिर्वस्तात्। अजस्यैकेपदः पूर्वे प्रोष्ठप्दाः। वैश्वान्रं प्रस्ताद्भैश्वावस्वमवस्तात्। अहेबुधियस्योत्ते। अभिषिश्चन्तेः प्रस्तादमिषुण्वन्तो-

ऽवस्तात्। पूष्णो रेवती। गावेः प्रस्ताद्वथ्सा अवस्तात्। अस्थिनोरश्वयुजी। ग्रामेः

गुरस्ताथ्सेनाऽवस्तौत्। युमस्यांपुभरंणीः। अपुकर्षेन्तः पुरस्तांदपुबहंन्तोऽवस्तौत्।

पूर्णा पुशादाते देवा अद्धुः॥५॥

96

आर्द्रमवस्ताद्वहंमाना अवस्तांद्रभ्यारूढमवस्तात्पन्थां अवस्ताद्वध्सा अवस्तात्पश्चं च॥■ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

यावेति तत्र सूर्यो गच्छैत्। यत्रे जघन्यं पश्यैत्। तावेति कुर्वीत यत्कारी स्यात्। पुण्याह एव कुरुते। एव॰ ह वे युजेषुं च शृतद्येम्रं च माथ्स्यो निरवसाययां यत्पुण्यं नक्षेत्रम्। तद्वद्वेवीतोपव्युषम्। यदा वै सूर्यं उदिति। अथ नक्षेत्रं नैति।

चकार॥६॥

यो वै नेक्षत्रियं प्रजापेतिं वेदं। उमयोरेनं लोकयौर्विदुः। हस्तं पृवास्य हस्तंः। चित्रा शिरंः। निष्ट्या हृदंयम्। ऊरू विशांखे। प्रतिष्ठाऽनूराधाः। पृष वै नेक्षत्रियंः प्रजापेतिः। य पृवं वेदं। उमयोरेनं लोकयौर्विदुः॥७॥

अस्मिङ्श्वामुष्मिङ्श्व। यां कामयेत दुहितरं प्रिया स्यादिति। तां निष्यायां दद्यात्। प्रियेव भेवति। नेव तु पुनरागेच्छति। अभिजिन्नाम नक्षेत्रम्। उपरिष्टादषाढानाम्। अवस्ताच्छोणायै। देवासुराः संयंता आसन्। ते दुवास्तोस्मृन्नक्षंत्रेऽभ्यंजयन्॥८॥

तमेतिस्मिन्नक्षेत्रे यातयेत्। अनपज्यमेव जयति। पापपंराजितमिव तु। मुजापेतिः पुशूनेसृजत। ते नक्षेत्रं नक्षत्रमुपोतिष्ठन्त। ते समावन्त पुवाभेवन्। ते यदुभ्यजंयन्। तदंभिजितोंऽभिजित्त्वम्। यं कामयेतानपज्ययं जंयेदिति ्वतोमुपातिष्ठन्त॥१॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

प्रैव भवन्ति। सुष्टिलं वा इदमेन्त्रासीत्। यदतंरन्। तत्तारंकाणां तारकृत्वम्। यो ते रेबत्यां प्राभेवन्। तस्मौद्रेवत्यां पश्नुनां कुर्वीत। यक्किं चौर्वानु सोमौत्।

वा इह यजेते। अमुर स लोकं नेक्षते। तन्नक्षेत्राणां नक्षत्रत्वम्॥१०॥

द्वगृहा वै नक्षेत्राणि। य एवं वेदं। गृह्यंव भंवति। यानि वा इमानि पृथिव्याश्चित्राणि। तानि नक्षेत्राणि। तस्मांदक्षीलनांमङ्श्वित्रे। नावंस्येत्र यंजेत। यथां पापाहे कुंरुते। ताहगेव तत्। देवनक्षत्राणि वा अन्यानि॥११॥

युम्नुक्षुत्राण्युन्यानि। कृत्तिकाः प्रथुमम्। विशांखे उत्तुमम्। तानि देवनक्षत्राणि।

अनूरा्घाः प्रथमम्। अपुभरंणीरुत्तमम्। तानि यमनक्षत्राणि। यानि देवनक्षत्राणि।

98 तान्युत्तेरेण। अन्वेषामराष्ट्रमिति। तदंनूरायाः। ज्येष्ठमेषामविष्टिष्मिति। तज्यैष्ट्रप्री। तानि दक्षिणेन परियन्ति। यानि यमनक्षत्राणि॥१२॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

प्रोष्ठपदेषूदंयच्छन्त। रेबत्यांमरबन्त। अश्वयुजोंरयुअत। अपभरंगीष्वपांबहन्। तानि वा पृतानि यमनक्षत्राणि। यान्येव देवनक्षत्राणि। तेषु कुर्वीत यत्कारी चुकारै्बं वेदोभयोरेनं लोकयोविंद्रजयत्रेबतीमुपांतिष्ठन्त नक्षत्रत्वमृन्यानि यानि यमनक्षत्राण्यक्षोणद्यमनक्षत्राणि त्रीणि च॥**—ि्य**ी तच्छ्रोणा। यदश्रंणोत्। तच्छ्रविष्ठाः। यच्छुतमर्भिषज्यन्। तच्छुतर्भिषक्। मूलेमेषामवृक्षामेति। तन्मूलेवर्हणी। यत्रासंहन्त। तदंषा्ढाः। यदश्रोणत्॥१३॥ स्यात्। पुण्याह एव कुरुते॥१४॥

देवस्ये सवितुः प्रातः प्रेसुवः प्राणः। वरुणस्य सायमासवोऽपानः। यत्प्रेतीचीनं प्रातुस्तनौत्। प्राचीनरे सङ्गवात्। ततो देवा अग्निष्टोमं निरीममत। तत्तदात्तेवीयै निर्मार्गः। मित्रस्यं सङ्गवः। तत्पुण्यं तेजुस्व्यहंः। तस्मात्तर्राहे पृशवंः सुमायंन्ति। यत्प्रतोचीनरं सङ्गवात्॥१५॥ 99

बृहस्पतेमध्यं दिनः। तत्पुण्यं तेजुस्व्यह्ः। तस्मात्तर्हि तिक्ष्णिष्ठं तपति। यत्प्रेतीचीनं प्राचीनं मुध्यं दिनात्। ततो देवा उक्थ्यं निरंमिमत। तत्तदात्तंवीयं निर्मागः पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

मुष्यं दिनात्। प्राचीनेमपराह्वात्। ततो देवाः षोड्शिनं निरीममत। तत्तदात्तेवीर्यं निर्मार्गः॥१६॥

भगेस्यापराह्यः। तत्पुण्यं तेजुस्व्यहेः। तस्मोदपराह्यं कुमायों भगीमेच्छमानाश्चरन्ति। यत्प्रेतीचीनेमपराह्यात्। प्राचीन १ सायात्। ततो देवा अतिरात्रं निरंमिमत। तत्तदात्तेवीर्यं निर्मार्गः। वर्षणस्य सायम्। तत्पुण्यं तेजुस्व्यहंः। तस्मात्तर्हि नानृतं

वदेत्॥१७॥

ब्राह्मणो द्वांदुशः। य एवं विद्वान्थ्संवथ्स्रं वृतं चरीते। संवथ्सरेणेवास्ये वृतं गुप्तं

<u>च</u>त्वार्येश्<u>च</u>ोलानी तानि नवे। यमे प्रस्तात्रक्षेत्राणां यमावस्तौत्। तान्येकांदशा

भंवति। सुमानस्याह्यः पञ्च पुण्यानि नक्षेत्राणि। चृत्वार्येश्चोलानि। तानि नवे। आग्रेयी

ब्राह्मणो वा अंष्टाविर्शो नक्षंत्राणाम्। समानस्याहुः पञ्च पुण्यानि नक्षंत्राणि।

100 ब्रह्मवादिनों वदन्ति। कति पात्राणि युज्ञं वेहन्तीति। त्रयोद्शेति ब्रूयात्। स यद्भूयात्। कस्तानि निरीममोतेति। प्रजापेतिरिते ब्रूयात्। स यद्भूयात्। कुत्स्तानि निरीममोतेति। आत्मन् इति। प्राणापानाभ्यामेवोपाङ्थन्तर्यामौ निरीममीत॥१९॥ रात्रिः। ऐन्द्रमहेः। तान्येकांदशा आदित्यो द्वांदृशः। य एवं विद्वान्थ्संवर्ध्सरं वृतं आयुषो धुवम्। प्रतिष्ठायो ऋतुपात्रे। युज्ञं वाव तं प्रजापितिर्निरीममीत। स सङ्गवाष्योंद्रशिनं निरंमिमत् तत्तदात्तंबीयै निर्मागौ बंदेद्भवति समानस्याहुः पश्च पुण्यांनि नक्षेत्राण्युष्टो चं॥============= 🎗 व्यानादुंपा १ शुसवंनम्। वाच ऐन्द्रवायवम्। द्ध्<u>रकृतुभ्यां</u> मैत्रावरुणम्। श्रोत्रांदाश्विनम्। चक्षेषः शुक्रामन्थिनौ। आत्मनं आग्रयुणम्। अङ्गेभ्य उक्ध्यमै। वरीत। संवृथ्सरेगुवास्य व्रतं गुप्तं भवति॥१८॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

तैर्वे स यज्ञमप्यंवपत्। यदंपिवापा भवंन्ति। युज्ञस्य धृत्या असंब्रुयाय॥२०॥ उुपा्॰्रश्वन्तर्थामी निरंमिमीतामिमीत षद्वै॥■

निर्मितो नाद्धियत् समेब्लीयत। स पुतान्युजापीतिरपिबापानपश्यत्। तां निरंबपत्।

101

संमुद्र आहितः " ऋतमेव पंरमेष्ठि। ऋतं नात्येति किञ्चन। ऋते संमुद्र आहिं ऋते मूमिरियर्श्वश्रता। अग्रिस्तिग्मेनं शोचिषाँ। तप आर्जान्तमुष्णि शिरस्तपस्याहितम्। वैश्वानरस्य तेजंसा। ऋतेनाँस्य नि वंतये। सत्येन । वर्तये। तपंसाऽस्यानुं वर्तये। शिवेनास्योपं वर्तये। शुग्मेनाँस्यापि वर्तये। त पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

तथ्सुत्यम्। तद्वतं तच्छेकेयम्। तेनं शकेयं तेनं राध्यासम्॥२१॥

यद्घर्मः प्रवित्यत्। अन्तान्मृथिव्या दिवः। अग्निरीशांन् ओजंसा।

अग्निरीशांन ओजंसा। वर्रणो यो अस्याः पृथिव्यास्त्वचि। निवर्तयत्योषेधीः। तिभिः सृह। इन्द्रो मृकिद्धः सिखेभिः सृह। गीतिभिः सृह।

तेजंसा। ऋतेनाँस्य नि वंतये।

आक्रौन्तमुष्णिह्या शिर्स्तपुस्याहितम्। वैश्वानुरस्य

वरुणो धीतिभिः सह। इन्द्रो मुरुद्धिः सब्बिभिः सह। अग्निस्तुग्मेनं शोचिषां। तप् आक्रान्तमुष्णिहाँ। शिरुस्तपुस्याहितम्। वैश्वानुरस्य तेजंसा। ऋतेनास्य नि वंतये। सत्येन परि वर्तये। तपेसाऽस्यानुं वर्तये। शिवेनास्योपं वर्तये। शुग्मेनास्याभि वंतये। त<u>ह</u>तं तथ्सत्यम्। त<u>ह</u>तं तच्छेकेयम्। तेनं शकेयं तेनं राध्यासम्॥२२॥ अग्निस्तिग्मेनं शोचिषां। तप इन्द्रों मर्शाद्धः

102 शिरस्तपस्याहितम्। वैश्वानरस्य तेजंसा। ऋतेनौस्य नि वंतये। सत्येन परि वर्तये। तपेसाऽस्यानु वर्तये। शिवेनास्योपं वर्तये। शुग्मेनौस्यामि वर्तये। तदृतं तथ्सत्यम्। तद्वतं तच्छेकेयम्। तेनं शकेयं तेनं राध्यासम्॥२४॥ एकं मास्मुदंसुजत्। प्रमेष्ठी प्रजाभ्यंः। तेनाभ्यो मह् आवेहत्। अमृतं ऋतवेः परिवध्सराः। येन ते तै प्रजापते। ईजानस्य न्यवंतेयन्। तेनाहमस्य ब्रह्मणा। निवंतयामि जीवसै। अग्निस्तिग्मेनं शोचिषौं। तप् आक्रौन्तमुष्णिहौं। ع ا मुत्येन परि वर्तये। तर्पसाऽस्यानु वर्तये। शिवेनास्योपं वर्तये। शग्मेनास्याभि परिवरीये सुहाभिवेतीय उष्णिहो राप्यासं न्यवेतीयृत्रुपेवरीये चृत्वारि च। (ऋतमेव षोडेश। यद्घुर्मो यो अस्याः सप्तदंशसप्तदश। मत्योभ्यः। प्रजामनु प्र जायसे। तदु ते मर्त्यामृतम्। येन् मासा अर्धमासाः। वितेये। तद्दतं तथ्मत्यम्। तद्दतं तच्छेकेयम्। तेने शकेयं तेने राध्यासम्॥२३॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १) एक् मास् चतुर्वि∜श्रातिः)॥∎

देवा वै यद्यज्ञेऽकुर्वता तदसुंरा अकुर्वता तेऽसुंरा ऊर्ज्वं पृष्ठेभ्यो नापंश्यन्। ते केशानग्रेऽवपन्ता अथु श्मश्रूणि। अथोपपक्षौ। तत्रस्तेऽवाश्च आयन्। पर्राऽभवन्।

पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अथो परेव भवति। अर्थ देवा कुर्ध्वं पृष्ठेभ्योऽपश्यन्। त उंपपृक्षावग्रेऽवपन्त यस्यैवं वर्पन्ति। अवडिग्ता २५॥

अथु शमश्रीणा अथु केशान्। तत्रस्तेऽभवन्। सुवगै लोकमायन्। यस्यैवं वपेन्ति। भवंत्यात्मना। अथो सुवर्ग लोकमेति॥२६॥

अथैतन्मनुर्वेत्रे मिथुनमपश्यत्। स श्मश्रूण्यग्रेऽवपत। अथोपपृक्षौ। अथ्

केशान्। ततों वै स प्राजायत प्रजयां पृशुनिः। यस्यैवं वर्पन्ति। प्र प्रजयां

वैश्वदेवेनं चतुरो मासोऽवुञ्चतेन्द्रंराजानः। ताञ्छीर्षं नि चावंतयन्त परि च। पृशुभिमिथुनैजीयते। देवासुराः संयेता आसन्। ते संवथ्सरे व्यायेच्छन्त। तान्देवाश्वातुर्मास्यैरेवाभि प्रायुअत॥२७॥

<u>वरुणप्रघासैश्वतुरो मासोऽवृञ्जत वरुणराजानः। ताञ्छीर्षं नि चावेर्तयन्त परि च।</u> साकुमेघेश्वतुरो मासोऽवृञ्जत सोमेराजानः। ताञ्छीर्षं नि चावेर्तयन्त परि च। या

संबथ्सर उंपजीबाऽऽसींत्। तामेषामबुञ्जता ततो देवा अभंबन्। पराऽसुराः॥२८॥

पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

य एवं विद्वाङ्श्रांतुर्मास्यैर्यजते। आतृष्यस्यैव मासो बृक्ता। शोर्षं नि चं वर्तयेते परि च। यैषा संबध्सर उपजीवा। बृङ्के तां आतृव्यस्य। क्षुधाऽस्य आतृव्यः परो भवति। लोहितायसेन नि वर्तयते। यद्वा इमामग्रिर्ऋतावागेते निवर्तयेति। एतदेवैनार् रूपं कृत्वा निवर्तयति। सा ततः श्वश्वो भूयंसी भवंन्त्येति॥२९॥

प्र जायते। य पुवं विद्वांक्षोहितायसेनं निव्तयंते। पृतदेव रूपं कृत्वा नि वंतयते। स ततः श्वश्वो भूयान्भवंत्रेति। प्रैव जायते। त्रेण्या शंकृत्या नि वंतयत। त्रीणे त्रीणे वै देवानामुद्धानि। त्रीणे छन्दार्शसे। त्रीणे सवंनानि। त्रयं हुमे

लोकाः॥३०॥

ऋष्यामेव तद्वीर्यं एषु लोकेषु प्रति तिष्ठति। यचांतुर्मास्ययाज्याँत्मनो नावद्येत्। देवेन्य आवृंश्येत। चतृषु चंतृषु मासेषु नि वंतयेत। परोक्षंमेव तद्देवेन्यं आत्मनो-ऽवंद्यत्यनाँव्रस्काय। देवानां वा एष आनीतः। यश्चांतुर्मास्ययाजी। य एवं विद्वात्रि चं वृत्यंते परि च। देवतां एवाप्येति। नास्यं रुद्रः प्रजां पृश्न्नि मन्यते॥३१॥

105 पुत्येत्य्युञ्जतासुंग एति लोका मंन्यते॥■ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

आयुषः प्राण॰ सन्तंनु। प्राणादंपान॰ सन्तंनु। अपानाद्धान॰ सन्तंनु। व्यानाद्यकुः सन्तेनु। चक्षेषः श्रोत्र॰ सन्तेनु। श्रोत्रान्मनः सन्तेनु। मनेसो वाच्॰

सन्तेनु। अन्तरिक्षाहिब्र् सन्तेनु। दिब्ः सुब्ः सन्तेनु॥३२॥ अन्तरिक्ष्ट्र सन्तेनु द्वे ची।

सन्तेनु। बाच आत्मान् सन्तेनु। आत्मनेः पृथिवी ५ सन्तेनु। पृथिव्या अन्तरिक्ष्

इन्द्रों दर्धोचो अस्थिभिः। वृत्राण्यप्रीतिष्कुतः। जुघानं नवतीर्नवे। इच्छन्नश्वस्य

यच्छिरंः। पर्वतेष्वपंत्रितम्। तिद्विदच्छर्युणाविति। अत्राह् गोरमंन्वत। नाम् त्वधुरपोच्यम्। इत्था च्न्द्रमंसो गृहे। इन्द्रमिद्राधिनो बृहत्॥३३॥

इन्द्रंमकेभिर्किणेः। इन्द्रं वाणीरनूषत। इन्द्र इद्धयोः सचाै। सम्मिश्च आवेचो युजाै। इन्द्रो वृज्ञी हिर्ण्ययेः। इन्द्रो दोर्घाय चक्षेसे। आ सूर्ये रोहयद्विवे। वि गोभिरद्रिमैरयत्। इन्द्र वाजेषु नो अव। सृहस्रप्रधनेषु च॥३४॥ 106 पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

उग्र उग्राभिरूतिभिः। तमिन्द्रं वाजयामसि। महे वृत्राय हन्तवे। स वृषां वृष्भो भुवत्। इन्द्रः स दामेने कृतः। ओजिष्टः स बले हितः। द्युम्री श्रोकी स सौन्येः। गिरा वज्रो न सम्भेतः। सर्वलो अनंपच्युतः। वृवृक्षुक्ग्रो अस्तृतः॥३५॥ बृहचास्तृंतः॥**—** 

देवासुराः संयंता आसन्। स प्रजापंतिरिन्दं ज्येष्ठं पुत्रमप् न्यंधत्ता नेदंनुमसुरा

बलीयाश्सोऽहन्निति। प्रहादो हु वै कायाषुवः। विरोचन्डु स्वं पुत्रमप् न्यंधत्त

नेदेनं देवा अहन्त्रिति। ते देवाः प्रजापितिमुपस्मेत्योचुः। नाराजकंस्य युद्धमंस्ति।

इन्द्रमन्विच्छामेति। तं यंज्ञकृतुमिरन्वैच्छन्॥३६॥

तमिष्टिंभिरन्वविन्दन्

दीक्षणीय यंत्रकृतुमिनन्विविन्दन्। तमिष्टिमिर-वैच्छन्।

तिदेधीनामिष्टित्वम्। एष्टेयो हे वै नामे। ता इष्ये इत्याचेक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षेप्रिया इव हि देवाः। तस्मां एतमाभावेष्णवमेकांदशकपालं दीक्षणीयं निरंवपन्। तदंपुद्रत्यांतन्वत। तान्यंत्रीसंयाजान्त उपानयन्॥३७॥

107 पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

ताञ्छुथ्य्वैन्त उपोनयन्। ते तदेन्तमेव कृत्वोदंदवन्। त आंतिथ्यमभि समारोहन्। तदंपद्रुत्यांतन्वता तानिडान्त उपोनयन्। ते तदंन्तमेव कृत्वोदंद्रवन्। तस्मांदेता ते तदंन्तमेव कुत्वोदंद्रवन्। ते प्रांयुणीयंमुभि सुमारोहन्। तदंपुद्रुत्यांतन्वत। पुतदंना इष्यः सन्तिष्ठन्ता ३८॥

एवर हि देवा अकुर्वत। इति देवा अंकुर्वत। इत्यु वै मंनुष्याः कुर्वते। ते देवा ऊच्ः। यद्वा इदमुचैर्यज्ञेन चराम। तन्नोऽसुराः पाप्माऽनुविन्दन्ति। उपार्श्यपसदां चराम। तथा नोऽसुराः पाप्मा नानुवेध्स्यन्तीति। त उपार्श्यपसदेमतन्वत। तिस्र रुव सामिथेनीर्नूच्यं॥३९॥

् - -स्रुवेणांघारमाघार्य। तिस्रः परांचीराहेतीर्हुत्वा। स्रुवेणोंपुसदे जुहुवां चेकुः। उभं तथौ एवैतदेवंविद्यजमानः। तिस्र एव सामिधेनीर्नूच्ये। स्रुवेणांघारमाघार्य॥४०॥ 108 तिसः परांचीराहुतीर्हुत्वा। स्रुवेणोंपुसदं जुहोति। उुभं वचो अपांवधीन्त्वेषं पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

वचो अपांवधीङ् स्वाहेति। अश्वनयापिपासे ह वा उग्नं वचंः। एनश्च वैरंहत्यं च त्वेषं वचेः। एतमेव तच्चेतुर्धाविहितं पाप्मानं यजमानोऽपं हते। तेऽभिनीयैवाहेः

पृशुमाऽलेभन्ता अहं एव तद्देवा अविति पाप्मानं मृत्युमपंजघिरे। तेनािभेनीयेव

त्र में प्राचेरन्। रात्रिया एव तहुवा अविति पाप्मानं मृत्युमपेजघ्निरे॥४१॥

तस्मांदभिनीयैवाहंः पशुमा लेभेत। अहं एव तद्यजंमानोऽवंतिं पाप्मानं आतृंब्यानपं नुदते। तेनांभिनीयेव रात्रेः प्रचंरत्। रात्रिया एव तद्यजंमानोऽवंतिं पाप्मानं प्रातृंब्यानपं नुदते। स एष उपवस्थीयेऽहं द्विदेवत्यंः पशुरा लेभ्यते। द्वयं वा अस्मिँह्योके यजंमानः। अस्थं व मार्सं चं। अस्थं चेव तेनं मार्सं च यजंमानः। अस्थं व मार्सं चं। अस्थं चेव तेनं मार्सं च यजंमानः पश्च देवताः। अश्रोषोमांविध्रिर्मित्रावरुणो॥४२॥

एतमेव

स्नावाऽस्थि मुज्ञा।

पृश्रपृश्री वे यजमानः। त्वङ्गार्भार्

तत्पश्चधाोवोहेतमात्मानं वरुणपाशान्मुंश्चति। भेष्जतांयै निर्वरुणत्वाये।

109 सुप्तमिष्ध् स्दोभिः प्रातरंह्वयन्। तस्मौथ्सुप्त चेतुरुत्तराणि छन्दार्शसे प्रातरनुवाके-ऽनूच्यन्ते। तमेतयोपसमेत्योपांसीदन्। उपाँस्मै गायता नर् इति। तस्मादेतयां बहिष्यवमान उपसद्यः॥४३॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

यजंमानो देवा देवा यजंमानो यजंमानः प्राचंर प्रचरेदालेभुन्तालेभेत मृत्युमपंजिष्ठिरे भातृंव्यान्॥)॥====

ऐच्छुत्रन्यङ्स्तिष्टन्ठेऽनूच्यानूच्यं स्रुवेणांघारमाषार्यं रात्रिया एव तद्देवा अवेतिँ पाप्मानं मृत्युमपंजिष्ठरे मित्रावर्नणौ नवं च (देवा

स संमुद्र उंतर्तः प्राज्वेलद्भ्यन्तेने। एष वाव स संमुद्रः। यचात्वालः। एष उंबेब स भूम्युन्तः। यद्वैद्यन्तः। तदेतत्रिश्यलं त्रिपूरुषम्। तस्मात्तं त्रिबितस्तं खंनन्ति।

न सुवर्णरज्नताभ्यां कुशीभ्यां परिगृहीत आसीत्। तं यद्स्या अध्यजनयन्।

अथ् यथ्सुवर्णरज्ञताभ्यां कुशीभ्यां परिगृहीत् आसीत्। साऽस्यं कोशिकता। तस्मांदादित्यः॥४४॥

तं त्रिवृताऽभि प्रास्तुवता तं त्रिवृताऽदेदता तं त्रिवृताऽहेरम्। यावेती त्रिवृतो मात्रौ। तं पेश्चदशेनाभि प्रास्तुंबत। तं पेश्चदशेनादंदत। तं पेश्चदशेनाहंरन्। यावेती

पश्चद्शस्य मात्रा॥४५॥

त४ संप्तदुशेनाभि प्रास्तुवत। त४ संप्तदृशेनादंदत। त४ संप्तदृशेनाहं४न्। यावेती सप्तदृशस्य मात्रौ। तस्यं सप्तदृशेनं हियमाणस्य तेजो हरोऽपतत्। तमेकवि×्शेनाभि प्रास्तुवत। तमेकवि×्शेनादंदत। तमेकवि×्शेनाहं४न्। पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

यावेत्येकवि॰्शस्य मात्रौ। ते यत्रिवृतौ स्तुवते॥४६॥

तुवते। पृश्रद्शेनेव तद्यजमान्मादंदते॥४७॥

त्रिवृतेव तद्यजंमानमादंदते। तं त्रिवृतेव हंरन्ति। यावंती त्रिवृतो मात्रां। अग्निवै त्रिवृत्। यावृद्वा अग्नेदंहंतो धूम उदेत्यानु व्येति। तावंती त्रिवृतो मात्रां। अग्नेरेवेनं तत्। मात्रा॰ सायुंज्य॰ सलोकतां गमयन्ति। अथ् यत्पेश्चद्शेनं तं पंअदशेनेव हंरन्ति। यावंती पञ्चदशस्य मात्रौ। चन्द्रमा वै पंञ्चद्रशः। एष हि पंञ्जदृश्यामपक्षीयते। प्ञ्जदृश्यामपिर्यते। चन्द्रमंस एवेन् तत्। मात्रार् सायुज्यर सलोकतां गमयन्ति। अथ् यथ्संप्रदुशेनं स्तुबते। स्प्रदुशेनेव तद्यजंमानुमादंदते। त १ संप्तदशेनैव हंरन्ति॥४८॥

यावेती सप्तद्शस्य मात्रौ। प्रजापेतिवै संपद्शः। प्रजापेतेरेवेनं तत्। मात्रा ू पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

वा आंदित्य एकिविश्याः। आंदित्यस्यैवेनं तत्॥४९॥

मात्रार् सायुज्यर सलोकतां गमयन्ति। ते कुश्यौं। व्यंघ्नन्। ते अंहोरात्रे

अभवताम्। अहेरेव सुवर्णाऽभवत्। रज्ता रात्रिः। स यदादित्य

पृतामेव तथ्सुवर्णां कुशीमनु समीति। अथ यदंस्तमेति। पृतामेव तद्रंजतां कुशीमनुसंविशति। प्रहादों हु वै कायाधवः। विरोचनङ् स्वं पुत्रमुदास्यत्। स प्रंदरोऽभवत्। तस्मौत्रद्रादुंदकं नाचामेत्॥५०॥

तचतुष्टोमस्य चतुष्टोमुत्वम्। तदांहुः। कृतमानि तानि ज्योती∜षि। य पृतस्य स्तोमा

ये वै चत्वारः स्तोमाः। कृतं तत्। अथु ये पश्चे। कल्ठिः सः। तस्माचतुष्टोमः।

आदित्यः पंअद्शस्य मात्रौ स्तुवते पश्चद्शेनैव तद्यजंमानमादंदते सप्तद्शेनैव हं≀न्त्यादित्यस्यैवैनं तिद्वंशति चृत्वारि चा⊪[१०]

. उदेति।

112 यद्भिभ्यां धानाः। पूष्णः कंरम्भः। भारंत्यै परिवापः। मित्रावर्रणयोः पयस्याऽथे। कस्मोदेतेषार् हविषामिन्द्रमेव यंजन्तीति। पृता ह्येनं देवता इति पुतानि वाव तानि ज्योती रेषि। य पृतस्य स्तोमाः। सौऽब्रवीत्। सृप्दशेन ब्रुयात्। पृतैर्ह्विर्भिरभिषज्युङ्क्तस्मादिति। तं वसेवोऽष्टाकेपालेन प्रातः सवने-ऽभिषज्यन्। कृद्रा एकदिशकपालेन माध्यं दिने सर्वने। विश्वं देवा द्वादंशकपालेन ह्वियमांगों व्यलेशिषि। भिषज्यंत मेति। तमुश्चिनौ धानाभिरभिषज्यताम्। पूषा केरम्भेणां भारती परिवापेणां मित्रावर्त्रणो पयस्येया। तदाहः॥५२॥ इति। त्रिवृत्पंश्चद्धाः संप्तद्धा एकविष्धाः॥५१॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

स यद्ष्टाकेपालान्प्रातः सब्ने कुर्यात्। एकांदशकपाला्नाध्यं दिने सबेने। द्वादेशकपालाङ्स्तृतीयसब्ने। विलोम् तद्युज्ञस्यं क्रियेत। एकांदशकपालानेव

तृतीयसवने॥ ५३॥

प्रांतः सब्ने कुर्यात्। एकांदशकपालान्माध्यं दिने सबेने। एकांदशकपालाङ्-

113 पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

माध्यं दिन<u>॰</u> सर्वनम्। विश्वेषां देवानां तृतीयसवनम्। अथ कस्मादेतेषा<sup>६</sup> ह्विषामिन्द्रेमेव यंजन्तीति। एता ह्येनं देवता इति ब्रयात्। एतैर्ह्रविर्मेरीने-

तस्यावांचोऽवपादादेबिभयुः। तमेतेषुं सप्तसु छन्देः स्वश्रयन्। यदश्रेयन्। तच्छ्रांयन्तीयंस्य श्रायन्तीयुत्वम्। यदवांरयन्। तद्वांरवन्तीयंस्य वारवन्तीयत्वम्।

एकवि॰्श आंहस्तुतीयसवने प्रांतः सवनं पश्चं च॥■

षज्युङ्कस्तस्मादिति॥५४॥

तस्यावांच एवावेपादादंबिभयुः। तस्मां एतानिं सृप्त चंतुरुन्गाणे् छन्दाङ् स्युपांदधुः।

तेषामति त्रीण्यंरिच्यन्ता न त्रीण्युदंभवन्॥५५॥

स बृहतीमेवास्पृंशत्। द्वाभ्यांमक्षराभयाम्। अहोरात्राभ्यांमेव। तदांहुः। कृतमा सा देवाक्षेरा बृहती। यस्यान्तत्य्रत्यतिष्ठत्। द्वादंश पौर्णमास्यः। द्वाद्शाष्टेकाः।

द्वादंशामावास्याः। एषा वाव सा देवाक्षंरा बृहती॥५६॥

पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

तानि निर्वीयाणि हीनान्यंमन्यन्ता साऽब्रंबीद्वहती। मामेव भूत्वा। मामुप्

सङ्श्रंयतेति। चृतुर्मिर्क्षरैरनुष्टुग्बृह्तीं नोदंभवत्। चृतुर्मिर्क्षरैंः पृद्धिर्बृह्ती-

मत्यीरच्यता तस्यांमेतानि चत्वार्यक्षराण्यप्च्छिद्यांद्यात्॥५७॥

ते बृंहती एव भूत्वा। बृहतीमुप समेश्रयताम्। अष्टाभिर्क्षरैरुष्णिग्बृंहतीं नोदेभवत्। अष्टाभिर्क्षरैक्षिष्टुग्बृंहतीमत्येरिच्यत। तस्यामृतान्युष्टावृक्षराण्यपुच्छिद्यां-

दधात्। ते बृंहती एव भूत्वा। बृहतीमुप् समंश्रयताम्। द्वादशभिर्क्षरैगांयत्री बृंह्तीं नोदंभवत्। द्वादशभिर्क्षरैर्जगंती बृहतीमत्यंरिच्यत। तस्यांमेतानि

ते बृंहती एव भूत्वा। बृहतीमुप् समेश्रयताम्। सौऽब्रवीत्युजापंतिः। छन्दार्शम्

द्वादंशाक्षराँण्यपच्छिद्यांदघात्॥ ५८॥

रथों में मवत। युष्माभिंरहमेतमध्वानमनु सर्श्वराणीति। तस्य गायत्री च जगती च

पृक्षावेभवताम्। उष्णिक्नं त्रिष्टुप्च् प्रष्ट्यौ। अनुष्टुप्चं पङ्किश्चं धुर्यौ। बृह्त्येवोद्धिरंभवत्।

यस्यान्तस्रस्यतिष्ठदिति। यानि च छन्दार्धस्यस्यिरिस्यन्त। यानि च नोदर्भवन्।

\[ \sigma\_{\sigma} \] 115 पुतमप्तांनुमनु सर्श्वरति। येनैष पृतथ्सुश्वरीते। य एवं विद्वान्थ्सोमेन यजेते। य उं स पुतं छंन्दोर्थमास्थायं। पुतमध्वांनुमनु समंचरत्। पुत ४ ह वै छंन्दोर्थमास्थाये। अुभुबु-वाब सा देवाक्षेरा बृह्त्यंदधाद्वादंशाृक्षरांण्यपुच्छिद्घांदधादास्थायु षद्दं॥■ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १) चैनमेवं वेदं॥५९॥

अुग्नेः कृत्तिंका यत्पुण्यं देवस्यं सवितुर्क्रहावादिनः कत्युतमेव देवा वा आयुषः प्राणमिन्द्रों दर्धाचो देवासुराः स

प्रजापेतिः स संमुद्रो ये वै चृत्वार्स्तस्यावांचो द्वादंश॥१२॥

अुग्नेः कृत्तिका देवगृहा ऋतमेवध्यमिव तिसः परांची्ये वै चत्वारो नवंपश्चाशत्॥५९॥ हरिः ओम्॥ अुग्नेः कृत्तिका य उं चैनमुबं वेदं॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके पश्चमः प्रपाठकः समाप्तः॥

|| **48**H: **48**:||

## ॥तौत्तरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके षष्ठः प्रपाठकः॥

अनुमत्यै पुरोडाशम्षाकेपालं निर्वपति। ये प्रत्यक्षः शम्याया अवशीयन्ते।

तत्रैर्ऋतमेकेकपालम्। इयं वा अनुमितिः। इयं निर्ऋतिः। नैर्ऋतेन् पूर्वेण

प्रचंरति। पाप्मानंमेव निर्ऋतिं पूर्वां निरवंदयते। एकंकपालो भवति। पुक्षेव निर्ऋतिं निरवंदयते। यदहुत्वा गार्हपत्य ईयुः॥१॥

कुद्रो भूत्वाऽग्निर्यनूत्थाये। अष्वुर्युं च यजमानं च हन्यात्। वीहि स्वाहा-ऽऽह्रीतें जुषाण इत्योह। आहुत्येवेन् शमयति। नार्तिमाच्छेत्यध्वर्युनं यजमानः। रुकोल्मुकेनं यन्ति। तिष्कं निर्ऋत्ये भाग्धेयम्। इमान्दिशं यन्ति। पृषा वै निर्ऋत्ये दिक्। स्वायोमेव दिश्चि निर्ऋतिं निर्वेदयते॥२॥

निर्ऋतिं निरवंदयते। पुष ते निर्ऋते भाग इत्यांह। निर्दिशत्येवैनाम्। भूते

स्वकृत इरिणे जुहोति प्रद्रे वा। एतहै निर्ऋत्या आयतंनम्। स्व एवायतंने

ह्विष्मंत्युसीत्यांहा भूतिमेवोपावंतित। मुश्चेमम॰हंस् इत्यांहा अ॰हंस एवैनं

मुर्आते। अङ्गष्टाभ्यां जुहोति॥३॥

अन्तत एव निर्ऋतिं निरवंदयते। कृष्णं वासंः कृष्णतूषं दक्षिणा। एतद्वै निर्ऋत्ये रूपम्। रूपेणेव निर्ऋतिं निरवंदयते। अप्रतिक्षमायेन्ति। निर्ऋत्या अन्तर्हित्ये। स्वाहा नमो य इदं चकारेति पुनरेत्य गार्हपत्ये जुहोति। आहुत्येव नेमस्यन्तो गार्हपत्यमुपावंतन्ते। आनुमतेन प्रचंरति। इयं वा अनुमतिः॥४॥

ड्यमेवास्मै राज्यमनु मन्यते। धेनुर्दक्षिणा। ड्रमामेव धेनुं कुरुते। आदित्यं च्रं

निर्वपति। उुभयीष्वेव प्रजास्वमिषिच्यते। दैवीषु च मानुषीषु च। वरो दक्षिणा। वरो हि राज्यः समृद्धी। आग्रावैष्ण्वमेकांदशकपालं निर्वपति। अग्निः सर्वा

तेनांभ्रेयः। यद्वांम्नः। तेनं वैष्णुवः समृष्ट्यै। अ्रुभ्रोषो्मीयुमेकांदशकपालं निर्वपति

विष्णुंर्यज्ञः। देवताश्चेव युज्ञं चावं रुन्ये। वामनो वृही दक्षिणा। यद्वही

देवताः ॥ ६॥

अुश्रीषोमाभ्यां वा इन्द्रों बुत्रमंहन्निति। यदंशीषोमीयमेकांदशकपालं निर्वपंति॥६॥

वात्रेघ्नमेव विजित्यै। हिरंण्यं दक्षिणां समृध्यै। इन्द्रों वृत्र॰ हत्वा

देवताभिश्चेन्द्रियेणं च व्याप्यित। स एतमैन्द्राग्नमेकांदशकपालमपश्यत्। तन्निरंवपत्। तेन वै स देवताश्चेन्द्रियं चावांकन्य। यदैन्द्राग्नमेकांदशकपालं निर्वपति। देवताश्चेव तेनैन्द्रियं च यजमानोऽवं रुन्ये। ऋषुमो बृही दक्षिणा॥७॥

यद्दही। तेनाभ्रेयः। यद्ष्यमः। तेनैन्द्रः समृध्द्यै। आग्रेयम्ष्टाक्षालं निर्वपति। ऐन्द्रं

दिधि। यदाभेयो भवति। अभिवै यंजमुखम्। यज्ञमुखमेविद्धिं पुरस्ताँद्धते। यदैन्द्रं

ड्डन्द्रियमेवावे रुन्ये। ऋषुमो वृही दक्षिणा। यद्वही। तेनाैंग्रेयः। यद्देषमः। तेनैन्द्रः समृंस्ट्री। यावेतोेवै प्रजा ओषंधीनामहैतानामाश्वन्। ताः परोऽभवन्। आग्रयणं

देवा वा ओर्षधीर्ष्वाजिमंयुः। ता इंन्द्राग्नी उदंजयताम्। तावेतमैंन्द्राग्नं

मेवति हुताद्याया यजमान्स्यापंराभावाय॥९॥

द्वादंशु मासौः संवथ्सरः। संवथ्सरेणैवास्मा अत्रमवं रुन्धे। वैश्वदेवश्वरुर्भवति। वैश्वदेवं वा अन्नम्। अनेमेवास्मै स्वद्यति॥१०॥ द्वादंशकपालं निरंबृणाताम्। यदेंन्द्राग्नो भवत्युज्ञित्यै। द्वादंशकपालो भवति षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

प्रथमजो वृथ्सो दक्षिणा समृष्ट्यै। सौम्यङ् श्यांमाकं चुरं निर्वपति। सोमो बा अंकृष्टपुच्यस्य राजाँ। अकृष्टपुच्यमेवास्मै स्वदयति। बासो दक्षिणा। सौम्यङ् हि

एति। अष्टावेतानि ह्वी॰िषे भवन्ति। अष्टाक्षंरा गायुत्री। गायुत्रीऽग्निः। तेनैव यंज्ञमुखादध्यो अग्रेद्वताये नैति॥११॥ ईयुर्निरवंदयतेऽङ्गुष्ठाभ्यां जुहोत्यनुमतिर्वेवतां निर्वपति वृही दक्षिणा यद्रेन्द्रं दध्यपंराभावाय स्वदयति गावो दक्षिणा समृख्ये पद्गा[१] देवतेया वासः समृद्धो। सरंस्वत्यै च्रं निर्वपति। सरंस्वते च्रुमम् मिथुनमेवावं रुन्ये। मिथुनौ गावौ दक्षिणा समृद्धो। एति वा एष यंज्ञमुखाद्घ्याः। योऽअर्देवताया

वैश्वदेवेन वै प्रजापितिः प्रजा अंसुजत। ताः सृष्टा न प्राजायन्त

अहमिमाः प्रजनयेयमिति। स प्रजापेतये शुचेमदथात्। सौऽभिरंकामयत।

सोऽशोचत्प्रजामिच्छमानः। तस्माद्यं चं प्रजा भुनक्ति यं च न। ताबुभौ शोचतः प्रजामिच्छमानौ। तास्विग्नमप्येसुजत्। ता अग्निरध्यैत्॥१२॥ षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

सोमो रेतोऽदधात्। सुविता प्राजनयत्। सरंस्वती वाचमदधात्। पूषाऽपोषयत्।

संबक्ष्सरेणैवास्मै प्रजाः प्राजनयत्। ताः प्रजा जाता मुरुतोऽघ्नन्। अस्मानपि न प्रायुश्यतेति॥१३॥

स एतं प्रजापंतिर्मारुतः सप्तकेपालमपश्यत्। तन्निरंबपत्। ततो वै प्रजाभ्योऽकल्पता यन्मारुतो निरुप्यते। यज्ञस्य क्रस्यै। प्रजानामघाताय। सप्तकेपालो भवति। सप्तगंणा वै मुरुतः। गणश एवास्मै विशं कल्पयति। स प्रजापंतिरशोचत्॥१४॥

याः पूर्वाः प्रजा असृक्षि। मुरुतस्ता अवधिषुः। कथमपेराः सुजेयेति। तस्य शुष्मे आण्डं भूतं निरंवर्तत। तद्युदेहरत्। तदेपोषयत्। तत्प्राजायत। आण्डस्य वा

तैऽग्रिना मुखेनासुरानजयन्। सोमेन राज्ञा। सुषित्रा प्रसूताः। सरंस्वतीन्द्रियमंदधा

यूषा प्रतिष्ठाऽऽसीत्। ततो बै देवा व्यंजयन्त। यद्तानि ह्वीशिषं निरुप्यन्ते

विजित्यै। नोत्तंरवेदिमुपंवपति। पृशवो वा उंत्तरवेदिः। अजाता इव ह्येतर्हि

मामग्ने यजत। मया मुखेनासुंराञ्जष्यथेति। मां द्वितीयमिति सोमौऽब्रवीत्। मया राज्ञो जष्यथेति। मां तृतीयमिति सिविता। मया प्रसूता जेष्यथेति। मां चंतुर्थीमिति सरंस्वती। इन्द्रियं वोऽहं धौस्यामीति। मां पंश्वममिति पूषा। मयौ प्रतिष्ठयो जेष्यथेति॥१७॥

द्यावापृथिव्यं एकंकपालो भवति। प्रजा एव प्रजांता द्यावापृथिवीन्यांमुम्यतः परि गृह्णाति। देवासुराः संयेता आसन्। सौऽग्निरंब्रवीत्॥१६॥

प्रजा एव तद्यजंमानः पोषयति। वैश्वदेव्यांमिक्षां भवति। वैश्वदेव्यों वै प्रजाः। प्रजा एवास्मै प्रजनयति। वार्जिनमानयति। प्रजास्वेव प्रजातासु रेतों दघाति।

पुतद्रुपम्। यदामिक्षा। यद्युद्धरंति॥१५॥

षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

ऐदित्यंशोचद्युद्धरंत्यब्रबीत्यतिष्ठयां जेष्य्थेत्येतर्हि पृशवंः॥■ षष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १) पश्रवः॥१८॥

त्रिवृद्धग्हिर्भवति। माता पिता पुत्रः। तदेव तिन्मेथुनम्। उल्बं गर्भो ज्राधु।

तदेव तिन्मिथुनम्। त्रेघा बर्हिः सर्नेछं भवति। त्रयं इमे लोकाः। पृष्वेव लोकेषु प्रति तिष्ठति। पृक्घा पुनः सत्रेछं भवति। एकं इव् ह्यंयं लोकः॥१९॥

अस्मिन्नेव तेनं लोके प्रति तिष्ठति। प्रसुवों भवन्ति। प्रथम्जामेव पुष्टिमवं रुन्ये। प्रथमुजो वथ्सो दक्षिणा समृख्ये। पृषदाज्यं गृह्णाति। पृशवो वै पृषदाज्यम्। पृशूनेवावे रुन्ये। पृश्वगृहीतं मेवति। पाङ्गा हि पृशवंः। बृहुरूपं मेवति॥२०॥

बहुरूपा हि पृशवः समृद्धौ। अभिं मंन्थन्ति। अभिमुंखा वै प्रजापंतिः प्रजा

त्रि×ुशध्सम्पंद्यन्ते। त्रि×ुशदंक्षरा विराट्। अत्रं विराट्। विराजेवात्राद्यमवं अंसुजत। यद्भिं मन्थंन्ति। अभिमुंखा एव तत्युजा यजमानः सुजते। नवं प्रयाजा इंज्यन्ते। नर्वानूयाजाः। अष्टौ ह्वी॰िषे। द्वावांघारौ। द्वावाज्यंभागौ॥२१॥

यदेकेकपाल आज्येमानयीते। यजमानमेव पशुभिः समर्थयति। यदल्पेमानयैत्। अल्पो एनं पृशवो भुञ्जन्त उपीतेष्ठेरन्। य<u>द्</u>दह्वानयैत्। बृहवे एनं पृशवोऽभुञ्जन्त

उपतिष्ठरन्। बृह्वानीयाविः पृष्ठं कुर्यात्। बृहवं एवैनं पृशवों भुञ्जन्त उपतिष्ठन्ते।

यजमानो वा एकेकपालः। यदेकेकपालस्यावृद्येत्॥२३॥

यजंमानस्यावंद्येत्। उद्वा माद्येद्यजंमानः। प्र वां मीयेत। स्कृदेव होंतव्येः। स्कृदिंव हि सुवर्गो लोकः। हुत्वाऽभि जुहोति। यजंमानमेव सुवर्ग लोकं

गमिथित्वा। तेजंसा समधियति। यजमानो वा एकंकपालः। सुवगो

आंहवनीयंः॥२४॥

यदेकेकपालमाहवनीये जुहोति। यजमानमेव सुंवर्गं लोकं गंमयति। यद्धस्तेन जुहुयात्। सुवर्गाक्षोकाद्यजमानुमविष्येत्। स्रुचा जुहोति। सुवर्गस्य लोकस्य

रुन्ये। यजमानो वा एकेकपालः। तेज आज्यम्। यदेकेकपाल आज्यमानयीते। यजमानमेव तेजेसा समर्धयति। यजमानो वा एकेकपालः। पृशव आज्यम्॥२२॥

समेष्ट्री। यत्प्राङ्गद्येत। देवुलोकम्भिजंयेत्। यहंिष्ट्रिणा पितृलोकम्। यत्प्रत्यक्॥२५॥

रक्षार्शसे यज्ञ १ हेन्युः। यदुदङ्के। मनुष्युलोकमभिजयेत्। प्रतिष्ठितो होतृब्येः। एकेकपालं वै प्रतितिष्ठेन्तं द्यावापृथिवी अनु प्रति तिष्ठतः। द्यावापृथिवी ऋतवेः।

कृतून् युज्ञः। युज्ञं यजमानः। यजमानं प्रजाः। तस्मात्प्रतिष्ठितो होत्व्यः॥२६॥

बाजिनो यजाते। अग्निबायुः सूर्यः। ते वै बाजिनः। तानेव तद्यंजाते। अथो खल्वांहुः। छन्दारंसि वै बाजिन इति। तान्येव तद्यंजाते। ऋख्सामे वा इन्द्रंस्य हरी सोमपानौ। तयौः परिषये आधानमै। बाजिनं भागपेयमै॥२७॥

यदप्रेहृत्य परिधीं जुंहुयात्। अन्तर्गधानाभ्यां घासं प्रयेच्छेत्। प्रहृत्यं परिधीं जुंहोति। निराधानाभ्यामेव घासं प्रयेच्छति। बर्हिषि विषिश्चन्वार्जिनमा नयिति। प्रजा वै बर्हिः। रेतो वाजिनम्। प्रजास्वेव रेतो दधाति। समुपृह्यं भक्षयन्ति।

रुतथ्सोमपीया होते। अथो आत्मन्नेव रेतो दथते। यजमान उत्तमो भक्षयति।

पृशवो वै वाजिनम्। यजमान एव पृशून्प्रतिष्ठापयन्ति॥२८॥

वरुणगृहीताः। प्रजापेतिं पुनरुपोधावत्राथमिच्छमोनाः। स पृतान्प्रजापेतिर्वरुण-प्रघासानपश्यत्। तां निरेवपत्। तेर्वे स प्रजा वेरुणपाशादेमुञ्जत्। यद्वेरुणप्रघासा लोको बंहुरूपं भेवत्याज्येभागौ पृशव आज्यंमवृद्यदांहुवुनीयः प्रत्यक्तस्मात्प्रतिष्ठितो होत्व्यों भागधेयंमेते चृत्वारिं च॥—— 🎝 षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

निंरुप्यन्तै॥२९॥

प्रजानामवेरुणग्राहाय। तासां दक्षिणो बाहुन्यंकृ आसीत्। सृव्यः प्रसृतः। स

तस्म"चातुर्मास्ययाज्यंमुष्मिँक्षोक उंभ्याबांहुः। युज्ञाभिजित्ङु ह्यंस्य। पृथुमात्राद्वेदी पुतां द्वितीयां दक्षिणतो वेदिमुदंहन्। ततो वै स प्रजानां दक्षिणं बाहुं प्रासारयत्। यिष्ट्रितीयाँ दक्षिणतो वेदिमुद्धन्ति। प्रजानामेव तद्यजमानो दक्षिणं बाहुं प्रसारयति। असंस्मिन्ने भवतः॥३०॥

तस्मौत्पृथमात्रं व्यश्सौं। उत्तरस्यां वेद्यांमुत्तरवेदिमुपं वपति। पृशवो वा

उंत्तरवेदिः। पशूनेवावं रुन्धे। अथो यज्ञपुरुषोऽनंन्तरित्यै। एतद्वाँह्मणान्येव पर्श्चं हवीरूषिं। अथैष ऐन्द्राग्नो भवति। प्राणापानौ वा एतौ देवानाम्। यदिन्द्राग्नी। यदैन्द्राग्नो भवति॥३१॥ षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

मेध्यत्वायं॥३२॥

अन्नाद्यस्यावेशस्त्री। सौम्यानि वै करीरांणि। सौम्या खलु वा आहंतिर्दिवो वृष्टिं च्यावयति। यत्करीरांणि भवेन्ति। सौम्ययैवाहंत्या दिवो वृष्टिमवं रुन्ये। काय एकेकपालो भवति। प्रजानां कन्त्वाये। प्रतिपूरुषं कंरम्भपात्राणि भवन्ति। प्राणापानावेवावं रुन्ये। ओजो बलं वा एतौ देवानाम्। यदिन्द्राग्नी। यदैन्द्राग्नी भवेति। ओजो बलेमेवावं रुन्ये। मारुत्यांमिक्षां भवति। वारुण्यांमिक्षां। मेषी चं मेषश्चं भवतः। मिथुना एव प्रजा वंरुणपाशान्मुश्चति। लोमशौ भवतो शुमीपुणान्युपं वपति। घासमेवाभ्यामपि यच्छाति। प्रजापीतमुत्राद्यं नोपानमत्। स एतेनं श्रातेघ्नेन हविषाऽत्राद्यमवारुन्य। यत्परः श्रातानि शमीपुर्णानि भवेन्ति।

जाता एव प्रजा वंरुणपाशान्मुंश्रति। एकुमतिरिक्तम्। जानुष्यमांणा एव प्रजा

निरुप्यन्ते भवतो भवंति मेध्युत्वायं रुन्ये षद्वै॥■

वंरुणपाशान्मुंअति॥३३॥

उत्तंरस्यां वेद्यांमन्यानिं ह्वी शिषं सादयति। दक्षिणायां मारुतीम्। अपुषुरमेवैनां युनिक्ति। अथो ओजं पुवासामवं हरति। तस्माद्वह्मणश्च क्षत्राच्च विश्लोऽन्यतो-ऽपक्रमिणीः। मारुत्या पूर्वया प्रचंरति। अनृंतमेवावं यजते। वारुण्योत्तंरया। अन्तत पृव वर्षण्मवं यजते। यदेवास्वर्युः क्रोतिं॥३४॥

तत्प्रंतिप्रस्थाता केरोति। तस्माद्यच्छेयां-करोति। तत्पापीया-करोति। पत्नीं वाचयति। मेध्यांमेवेनां करोति। अथो तपं एवेनामुपं नयति। यञ्जार सन्तन्न

प्रंबूयात्। प्रियं ज्ञाति॰ केन्य्यात्। अुसौ में जा्र इति निर्दिशेत्। निर्दिश्येवैनं

यत्पन्नी

अह्वतेवेनाम्।

पत्नीमुदानयिति।

ह्य न

हवामह

वरुणपाशेनं ग्राहयति॥३५॥

गुरोनुवाक्यांमनुब्रूयात्। निर्वीयो यजमानः स्यात्। यजमानोऽन्वाहा आत्म<u>त्र</u>ेव ोुर्यं धत्ते। उुमौ याज्यारं सवीर्यत्वाये। यद्गामे यदर्गण्य इत्योह। यथोदितमेव षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

वर्षणमवं यजते। यजमानदेवत्यों वा आहवनीयः॥३६॥

भातृष्युद्वुत्यो दक्षिणः। यदाहिवुनीये जुहुयात्। यजमानं वरुणपाशेनं ग्राहयेत्।

दक्षिणेऽग्रौ जुहोति। आतृव्यमेव वंरुणपाशेनं ग्राहयति। शूर्पेण जुहोति। अन्यमेव

प्रत्यड्डेव वेरुणपाशात्रिमुंच्यते। अक्रन्कर्म कर्मकृत इत्याह। देवा-ऽनृणं निरवदाये। अनृणा गृहानुप प्रेतेति वावैतदाह। वर्रुणगृहीतं वा एतद्यज्ञस्ये। यद्यजुषा गृहीतस्यातिरिच्येते। तुषाश्च निष्कासश्चे। तुषैश्च निष्कासेने

मत्यिङ्गिष्टं जुहोति॥३७॥

अुफ्सु वै वर्षणः। साक्षादेव वर्षणुमवेयजते। प्रतियुतो वर्षणस्य पाश्

वावभृथमवैति। वर्षणगृहीतेनैव वर्षणमवंयजते। अपोऽवभृथमवैति॥३८॥

वर्षणमवं यजते। शीर्षत्रीय निधायं जुहोति। शीर्षत एव वर्षणमवं यजते।

इत्योह। बुरुणपाशादेव निर्मुच्यते। अप्रेतीक्षमा येन्ति। वर्रणस्यान्तर्राहेत्यै। एथौऽस्येधिषीमहीत्योह। सृमिधेवाग्निं नमुस्यन्तं उपायेन्ति। तेजोऽसि तेजो मिये धेहीत्योह। तेजं एवाऽऽत्मन्येते॥३९॥ षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

कुरोति ग्राहयत्याहवनीयुस्तिष्ठं जुहोत्युपोऽवभुथमवैति धत्ते॥🕳

देवासुराः संयेता आसन्। सौऽग्निरंब्रवीत्। ममेयमनीकवती तन्ः। तां प्रीणीता अथासुरान्मि भविष्यथेति। ते देवा अग्नयेऽनीकवते पुरोडाशमष्टाकपालं निरंवपन्। सौऽग्निरनीकवान्थ्स्वेनं भाग्येयेन प्रीतः। चतुर्घाऽनीकान्यजनयता

ततो देवा अभेवन्। पराऽसुंराः॥४०॥

यद्ग्रयेऽनीकवते पुरोडाशमष्टाकेपालं निर्वपीते। अग्निमेवानीकवन्तॐ् स्वेनं माग्षेयेन प्रीणाति। सौऽग्निरनीकवान्थ्स्वेनं माग्षेयेन प्रोतः। चृतुर्धाऽनीकानि

जनयते। असौ वा आंदित्यौंऽग्निरनीकवान्। तस्यं रुश्मयोऽनीकानि। साक॰ सूर्येणोद्यता निर्वपति। साक्षादेवास्मा अनीकानि जनयति। तेऽसुंराः परांजिता ते देवा मरुद्धाः सान्तपुनेभ्यंश्वरं निरंवपन्। तान्द्यावांपृथिवीभ्यांमेवोभ्यतः समेतपन्। यन्मुरुद्धाः सान्तपुनेभ्यंश्वरं निर्वपीते। द्यावांपृथिवीभ्यांमेव तदुर्भयतो

यन्तेः। द्यावांपृथिवी उपांश्रयन्॥४१॥

षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

आशिता पृवाद्योपंवसाम। कस्य वाऽहेदम्। कस्यं वा श्वो भवितेति। स शृतो-

<u>च</u>रुर्भवति। स<u>ु</u>र्वते एवैना्न्थ्सन्तंपति। ते देवाः श्रोविज्यिनः सन्तः। सर्वासां दुग्धे

गृहमेधीयं चरुं निरंबपन्॥४२॥

ग्जमानो आतृव्यान्थ्यन्तेपति। मृष्यन्दिने निर्वपति। तर्राहे हि तेक्ष्णिष्टं तपेति।

ऽमवत्। तस्याहुंतस्य नाश्जन्। न हि देवा अहुंतस्याश्जन्ति। तेंऽब्रुवन्। कन्मां इम ६ होष्याम् इति। मुरुद्यो गृहमेधिन्य इत्येब्रुवन्। तं मुरुद्धो गृहमेधिन्यो-

भवंत्यात्मनां। पराऽस्य आतृत्यो भवति। यहै युजस्यं पाकुत्रा क्रियतें। पृशुत्यें

ततो देवा अभेवन्। पराऽसुराः। यस्यैवं विदुषों मुरुद्धों गृहमेिष्यों गृहे जुह्निति।

ऽजुहबुः॥४३॥

130

न प्रंयाजा इज्यन्तै। नानूयाजाः। य एवं वेदं। पृशुमान्नेवति। आज्येभागौ यजति। यज्ञस्यैव चक्षुंषी नान्तरेति। मुरुतो गृहमेधिनो यजति। भाग्येयेनैवेनान्थ्समंधयति। अग्निश्क्सिंष्ट्रकृतं यजति प्रतिष्ठित्यै। इडाँन्तो भवति। पृश्वो वा इडाँ। पृशुष्येवोपरिंष्टात्प्रति तिष्ठति॥४५॥ तत्। पाकुत्रा वा एतक्त्रियते। यत्रेघ्माबुर्हिर्भवंति। न सांमिधेनीर्न्वाहे॥४४॥ षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

यत्पत्नी गृहमेधीयंस्याश्जीयात्। गृहमेध्येव स्यौत्। वि त्वंस्य यज्ञ ऋध्येत। यत्राश्जीयात्। अगृहमेधी स्यात्। नास्यं यज्ञो व्यृद्धोत। प्रतिवेशं पचेयुः। तस्यौश्जीयात्। गृहमेध्येव भेवति। नास्यं यज्ञो व्यृद्धाते॥४६॥ असुरा अश्रय-गृहमेपीयं चुरु निरंवपत्रजुहवुर्-वाहेडा"नो भवति द्वे ची⊪—

ते देवा गृहमुपीयेनेष्ट्या आशिता अभवन्। आञ्जंताभ्यञ्जत। अनु वृथ्सानेवासयन्। तेभ्योऽसुंग्ः क्षुष्ं प्राहिण्वन्। सा देवेषुं लोकमवित्वा। असुरान्युनेरगच्छत्। गृहमेधीयेनेष्टा आशिता भवन्ति। आञ्चेतेऽभ्यंञ्जते॥४७॥

उपांबर्तितेति। तानिन्द्रो निहितमाग उपार्वतत। गृहमेपीयेनेष्ट्रा। इन्द्रांय निष्कासं निदंध्यात्। इन्द्रं पुवैनं निहितमाग उपार्वतेते। गार्हपत्ये जुहोति॥४८॥ अनुं बथ्सान् वांसयन्ति। आतृंव्यायेव तद्यजंमान्ः क्षुष्ं प्रहिणोति। ते देवा गृहमेपीयेनेष्टा। इन्द्राय निष्कासं न्यंद्षुः। अस्मानेव स्व इन्द्रो निहितमाग षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

भागधेयेनैवेन् समर्धयति। ऋष्भमाह्नयति। वषद्वार एवास्य सः। अथो

इन्द्रियमेव तद्दोर्यं यजमानो आतृव्यंस्य वृङ्गा इन्द्रो वृत्र॰ हुत्वा। परा

परावतंमगच्छत्। अपाराधुमिति मन्यंमानः। सौऽब्रवीत्। क<sup>े</sup> इदं वेदिष्युतीति।

तेऽब्रुवन्म्कतो वरं वृणामहै॥४९॥

पुतद्वौह्मणान्येव पश्चे ह्वी श्षे। पुतद्वौह्मण ऐन्द्राग्नः। अथेष पुन्दश्चरुर्भवति॥५०॥

तक्रोडिनां कीड्विम्। यन्मरुद्धाः क्रोडिभ्यः प्रथुम॰ ह्विनिंरुप्यते विजित्यै।

अर्थ वृयं वेदाम। अस्मभ्यमेव प्रथम॰ ह्विर्निक्ष्याता इति। त एनुमध्येकीडन्

साक १ सूर्येणोद्यता निर्वपति। एतस्मिन्वै लोक इन्द्रों वृत्रमंहन्थ्समृद्धी।

133

उद्धारं वा एतमिन्द्र उदेहरता वृत्र॰ हत्वा। अन्यासुं देवतास्वधिं। यदेष ऐन्द्रश्चरुभेवीते। उद्धारमेव तं यजमान् उद्धरते। अन्यासुं प्रजास्वधिं। वैश्वकर्मण

एकंकपालो भवति। विश्वान्येव तेन् कर्माणि यजंमानोऽवं रुन्ये॥५१॥

कृष्युतेऽभ्यंअते जुहोति वृणामहै भवत्युष्टौ चं॥\_\_\_\_

वैश्वदेवेन वै प्रजापीतः प्रजा अंसृजता ता वेरुणप्रघासैर्वरुणपाशादेमुश्चत्।

नुने प्रत्यस्थापयत्। त्र्यम्बके कृद्

एुव तद्यजमानः सृजते।

यजेते। प्रजा

लोकमंगमयत्। यद्वैश्वदेवेन

वरुणप्रघासैर्वरुणपाशान्मुश्चति। साकुमेरेः

निरवंदयते॥ ५२॥

निरवांदयता पितृयुज्ञेन

प्रतिष्ठापयति। त्र्यम्बकै

दक्षिणाबृद्धि पिंतृणाम्। अनोदृत्य तत्। उत्तर्त एवोप्वीय निर्वेपत्। उभये हि देवाश्चे पितरंश्चेज्यन्तै। अथो यदेव दक्षिणार्घेऽधि श्रयंति। तेनं दक्षिणावृत्। सोमाय

पितृयुजेन' सुवुगै लोकं गमयति। दृष्टिण्तः प्रांचीनावीती निर्वपति।

संब्थ्सरमेव प्रौणाति। पितुभ्यौ बर्हिषम्द्यौ धानाः। मासा वै पितरो बर्हिषदः। पितृमते पुरोडाशुर् षद्गेपालं निर्वपति। स्वथ्सुरो वै सोमंः पितृमान्॥५३॥

मासानेव प्रीणाति। यस्मिन्वा ऋतौ पुरुषः प्रमीयंते। सौऽस्यामुष्पिंत्रोके भेवति।

बृहुरूपा याना भेवन्ति। अहोरात्राणांम्भिजित्यै। पितुभ्यौऽग्निष्वातेभ्यों मुन्थम्।

अर्धमासा वै पितरौऽग्निष्वाताः॥५४॥

अर्धमासानेव प्रीणाति। अभिवान्यांयै दुग्धे भेवति। सा हि पितृदेवत्यं दुहे। यत्यूर्णम्। तन्मेनुष्यांणाम्। उपुर्यर्षे देवानाम्। अर्थः पितृणाम्। अर्ध उपमन्यति। अर्थो हि पितृणाम्। एक्योपेमन्थति॥५५॥

एका हि पितृणाम्। दक्षिणोपंमन्थति। दक्षिणावृद्धि पितृणाम्। अनारुभ्योपंमन्थति। तिद्धि पितॄन्नच्छेति। इमान्दिशं वेदिमुर्छन्ति। उभये हि देवाश्चं पितरेश्चेज्यन्तै। वतुः स्रक्तिर्भवति। सर्वो ह्यनु दिशः पितरेः। अखांता भवति॥५६॥

खाता हि देवानाम्। मृष्युतौंऽग्रिराधीयते। अन्तृतो हि देवानांमाधीयते॥

बर्षीयानिष्म इष्माद्भवति व्यावृत्त्यै। परिश्रयति। अन्तर्हितो हि पितृलोको

यथ्समूलम्। तित्येतृणाम्। समूलं ब्र्हिर्भवति व्यावृत्यै। दृष्टिणा स्तृणाति।

मंनुष्यलोकात्। यत्पर्रषि दिनम्। तद्देवानाम्। यदंन्त्रा। तन्मंनुष्यांणाम्॥५७॥

दृष्टिणाबृष्टि पितृणाम्। त्रिः पर्येति। तृतीये वा इतो लोके पितरंः। तानेव प्रीणाति।

त्रिः पुनः पर्येति। षट्ध्सम्पंद्यन्ते॥५८॥

षड्डा ऋतवेः। ऋतूनेव प्रीणाति। यत्प्रेस्तरं यजुषा गृह्षीयात्। प्रमायुको यजमानः स्यात्। यत्र गृह्षीयात्। अनायतनः स्यौत्। तूष्णीमेव न्यंस्येत्। न प्रमायुको भवेति। नानायत्नः। यत्रीन्पीर्यीन्पेरिद्ध्यात्॥५९॥

मृत्युना यजमानं परिगृह्षीयात्। यत्र पीरद्ध्यात्। रक्षार्धिस यज्ञश्हेन्युः। द्वौ पीर्धी परिद्धाति। रक्षेसामपेहत्यै। अथीं मृत्योर्व यजमानुमृष्सुंजति।

यत्रीणि त्रीणि हवीङ्ष्युंदाहरेयुः। त्रयंस्रय एषां साकं प्रमीयेरन्। एकैकमनूचीनाैन्युदाहरेनि। एकैक एवैषांमन्वञ्चः प्रमीयते। कृशिषुं कशिपव्याय।

136 उपबर्हणमुपबर्हण्यांय। आश्रंनमाञ्चन्यांय। अभ्यञ्जेनमभ्यञ्चन्यांय। यथामागमे-वैनान्प्रीणाति॥६०॥ षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

निरवेदयते पितृमानीश्रष्ट्याता एक्योपं मन्थ्त्यखोता भवति मनुष्यांणां पद्यन्ते परिद्ध्यान्मीयते पश्चं च॥━━━━━━िि

अग्रये देकेन्यंः पितुन्यंः समिष्यमांनायानुं ब्रहीत्यांह। उनये हि देवाश्चं पितरंश्वेज्यन्ते। एकामन्वांह। एका हि पितृणाम्। त्रिरन्वांह। त्रिर्ह देवानामा आ्षारावाघांरयति। यज्ञपुरुषोरनंन्तरित्यै। नार्षेयं वृणीते। न होतांरम्॥६१॥

यदांर्षेयं वृंणीत। यद्धोतांरम्। प्रमायुंको यजंमानः स्यात्। प्रमायुंको होतां। तस्मात्र वृंणीते। यजंमानस्य होतुंगोंपीथायं। अपं बर्हिषः प्रयाजान् यंजति। प्रजा वै ब्रुहिः। प्रजा एव मृत्योरुध्संजिति। आज्यंभागौ यजिति॥६२॥

यज्ञस्यैव चक्षुषी नान्तरेति। प्राचीनावीती सोमं यजति। पितृदेवत्यां हि। एषाऽऽहीतिः। पञ्चकृत्वोऽवं द्यति। पञ्च ह्येता देवताः। द्वे पुरोऽनुवाक्ये। याज्यां दुवतां वषद्वारः। ता एव प्रीणाति। सन्तंतमवं द्यति॥६३॥

षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

आ स्वधेत्याश्रोवयति। अस्तुं स्वधेति प्रत्याश्रोवयति। स्वधा नम् इति वषेद्वरोति। स्वधाकारो हि पितृणाम्। सोममभ्रे यजति। सोमप्रयाजा हि पितरेः।

सोमं पितृमन्तं यजति। संबृथ्स्रो वै सोमंः पितृमान्। संबृथ्स्रमेव तद्येजति।

पितृन्बर्हिषदो यजाति॥६५॥

गुमयीते याज्यया। तृतीये वा इतो लोके पितरंः। अहं एवेनान्पूर्वया पुरो-ऽनुवाक्ययाऽत्यानयिति। रात्रिये द्वितीयया। ऐवेनान् याज्यया गमयति। दक्षिणतो-

ऽबदाये। उद्दृति कामति व्यावृत्ये॥६४॥

कृतूना सन्तेत्यै। प्रैकेन्यः पूर्वया पुरोऽनुवाक्ययाऽऽह। प्रणयिति द्वितीयया।

ये वै यज्वांनः। ते पितरों बर्हिषदंः। तानेव तद्यंजति। पितृनीग्रेष्वात्तान् यंजति। ये वा अयंज्वानो गृहमेथिनंः। ते पितरोंऽग्रिष्वात्ताः। तानेव तद्यंजति। अग्नें केव्यवाहेनं यजति। य एव पितृणामृग्निः। तमेव तद्यंजति॥६६॥

अथो यथाऽग्रिङ् स्विष्टुकृतं यजीते। तादगेव तत्। एतते तत् ये च त्वामन्विति

-हीज्यन्तै। अत्रे पितरो यथाभागं मेन्दप्वमित्याहा ह्रीका हि पितरेः। उदेश्रो -तिसुधुं स्रुक्तीषु निदंघाति। तस्मादा तृतीयात्युरुषात्राम् न गृह्धन्ति। एतावेन्तो निकामन्ति। एषा वै मनुष्याणां दिक्। स्वामेव तिह्यमनु निकामन्ति॥६७॥ षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

आह्वनीयमुपंतिष्ठन्ते। न्येवास्मै तद्धुवते। यथ्मत्याहवनीयै। अथान्यत्र चरन्ति।

----आतमितोरुपतिष्ठन्ते। अग्निमेवोपंद्रष्टारं कृत्वा। पितृत्रिरवंदयन्ते। अन्तं वा पृते प्राणानां गच्छन्ति। य आतमितोरुप् तिष्ठंन्ते। सुसन्दशं त्वा व्यमित्याह॥६८॥

प्राणो वै सुसन्दक्। प्राणमेबाऽऽत्मन्देधते। योजा न्विन्द्र ते हरी इत्योह।

प्राणमेव पुनेरयुक्ता अक्षत्रमीमदन्त हीति गार्हपत्यमुपंतिष्ठन्ते। अक्षत्रमीमद्न्ताथ् त्वोपेतिष्ठामह् इति बावैतदोह। अमीमदन्त पित्रं सोम्या इत्युपि प्रपंद्यन्ते। अमीमदन्त पितरोऽथं त्वाऽभि प्रपंद्यामह् इति वावैतदाहा अपः परिषिश्रति। मार्जयंत्येवेनान्॥६९॥

अथों तुर्पयंत्येव। तृप्यंति प्रजयां पृशुभिः। य एवं वेदं। अपं बर्हिषावनूयाजौ

139 यंजति। प्रजा वै बर्हिः। प्रजा एव मृत्योरुध्सृंजति। चतुरंः प्रयाजान् यंजति। द्वावंनूयाजौ। षट्ध्सम्पंद्यन्ते। षड्वा ऋतवंः। ऋतूनेव प्रीणाति। न पत्यन्वास्ते। न षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

रुकमतिरिक्तम्। जनिष्यमांणा एव प्रजा रुद्रात्रिरवंदयते। एकंकपाला भवन्ति। <u>रुक</u>्षेव रुद्रं निरवंदयते। नाभिषांरयति। यदंभिषारयैत्। अन्तरवर्चारणर् रुद्रं

. कुर्यात्। पृकोल्मुकेनं यन्ति॥७१॥

होतांरमाज्येभागौ यजाते सन्तंतमवंद्यति व्यावृत्यै वर्हिषदों यजाति तमेव तद्यंज्त्यमु निष्कांमन्याहेनानृतवो नवं च॥━ [९]

मतिपूरुषमेक्कपालां निर्वपति। जाता एव प्रजा रुद्रात्रिरवदयते।

संयोजयन्ति। यत्पत्यन्वासीत। यथ्संयाजयेयुः। प्रमायुका स्यात्। तस्मात्रान्वास्ते।

न संयोजयन्ति। पनियै गोपीथाये॥७०॥

तिष्ठं कृद्रस्यं भागधेयम्। इमान्दिशं यन्ति। एषा वै कृद्रस्य दिक्। स्वायांमेव दिशि कृदं निरवेदयते। कृदो वा अपृशुकाया आहुत्ये नातिष्ठत। असौ ते पृशुरिति

निर्दिशेद्यं द्विष्यात्। यमेव द्वेष्टिं। तमंस्मै पृशुं निर्दिशति। यदि न द्विष्यात्। आखुस्ते

पशुरितिं ब्रूयात्॥७२॥

षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

न ग्राम्यान्पशून् हिनस्ति। नार्ण्यान्। चतुष्प्थे ज़ैहोति। एष वा अंग्रीनां पङ्कींशो नामे। अग्निवत्येव ज़ैहोति। मुष्यमेनं पूर्णेनं जुहोति। सुग्घ्येषा। अथो खलुं। अन्तमेनेव होतव्यम्। अन्तत एव रूद्रं निरवंदयते॥७३॥

एष ते रुद्र भागः सृह स्वसाऽम्बिकयेत्योह। श्रारद्वा अस्याम्बिका स्वसा। तया वा एष हिनस्ति। यर हिनस्ति। तयैवैनर् सृह शमयति। भेषजङ्ग इत्योह।

यावेन्त एव ग्राम्याः पृशवंः। तेभ्यों भेषुजं कंरोति। अवाम्ब कृद्रमेदिमृहीत्याह।

आमेवेतामा शाँस्ते॥७४॥

त्र्यम्बकं यजामह् इत्योह। मृत्योमुंक्षीय माऽमृतादिति वावैतदांह। उत्किरन्ति। भगंस्य लीफ्सन्ते। मूतेकृत्वाऽऽसंजन्ति। यथा जनं यृतेऽवसं करोति। ताहगेव

कुदस्यान्तर्हित्यै। प्र वा पृतैऽस्माक्षोकाच्यंवन्ते। ये त्र्यंम्बक्रेश्वरंन्ति। आदित्यं चुरु

तत्। एष ते रुद्र भाग इत्योह निरवेत्यै। अप्रेतीक्षमा येन्ति। अपः परिषिश्वति।

140

युन्ति ब्रुयात्रिरवंदयते शास्ते सिश्चति षद्गा🖿

पुन्रेत्य निर्वपति। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रति तिष्ठन्ति॥७५॥

अनुंमत्यै वैश्वदेवेन ताः सृष्टात्र्विवृत्प्रजापंतिः सवितोत्तंरस्यान्देवासुराः सौऽग्निर्यत्तत्नीं वैश्वदेवेन ता वेरुणप्रघासैर्प्नये देवेभ्यंः प्रतिपूरुषं दश्रा।१०॥

अनुंमत्यै प्रथम्जो वृथ्सो बंहुरूपा हि पृशवृस्तस्मौत्युथमाृत्रं यद्ग्रयेऽनींकवत उद्धारं वा अग्रये देवेभ्यः प्रतिपूरुषं हरिः ओम्॥ अनुमत्ये प्रति तिष्ठन्ति॥ पश्चंसप्ततिः॥७५॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके षष्ठः प्रपाठकः समाप्तः॥

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

पृतद्वौह्मणान्येव पञ्चे हुवी शिष् । अथेन्द्रांयु शुनासीराय पुरोडाशुं द्वादेशकपाले

वायव्यं पयो भवति। वायुर्वे वृष्ट्यै प्रदापयिता। स एवास्मे वृष्टिं प्रदापयति। सौर्ये एकेकपालो भवति। सूर्येण वा अमुर्ष्यिक्षेक्षेके वृष्टिर्धृता। स एवास्मे वृष्टिं

नियंच्छति॥१॥

निर्वपति। संवध्सरो वा इन्द्राथुनासीरंः। संवध्सरेणेवास्मा अत्रमवं रुन्ये।

द्वाद्श्वग्वश् सीरं दक्षिणा समृष्ट्यै। देवासुराः संयंता आसन्। ते देवा अग्निमेब्रुवन्। त्वयां वीरेणासुरानमिमेवामिति। सौऽब्रवीत्। त्रेघाऽहमात्मानं विकेरिष्य् इति। स त्रेघाऽऽत्मानं व्येकुरुता अग्निं तृतीयम्। रुद्रं तृतीयम्। वर्षणं

सौंऽब्रवीत्। क इदं तुरीयमिति। अहमितीन्द्रौऽब्रवीत्। सन्तु सुंजावहा इति। तौ

तृतीयम्॥२॥

॥तैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके सप्तमः प्रपाठकः॥

|| <del>स्तरमः</del> प्रश्नः||

समम्मुजेताम्। स इन्द्रंस्तुरीयंमभवत्। यदिन्द्रंस्तुरीयमभेवत्। तदिन्द्रतुरीयस्यैन्द्र-तुरीयुत्वम्। ततो वै देवा व्याजयन्त। यदिन्द्रतुरीयं निरुप्यते विजित्ये॥३॥ बृहिनीं धेनुर्दक्षिणा। यद्वहिनीं। तेनांभेयी। यद्गैः। तेनं सेद्री। यद्धेनुः। तेनेन्द्री। यथ्की सृती दान्ता। तेनं वारुणी समृष्ट्ये। प्रजापंतिर्युज्ञमंसृजत॥४॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

त॰ सृष्ट॰ रक्षाईस्यजिघा॰सन्। स पुताः प्रजापेतिरात्मनो देवता निरीममीत।

ताभिकें स दिग्ग्यो रक्षार्शमे प्राणुंदत। यत्पंश्वावतीयं जुहोति। दिग्ग्य एव तद्यजीमानो रक्षार्शमे प्रणुंदते। समृंदुरू रक्षः सन्देग्धुरू रक्षु इत्योह। रक्षार्थस्येव

सन्दंहति। अग्रये रक्षोघ्ने स्वाहेत्यांह। देवताैभ्य एव विजिग्यानाभ्यो भागपेयं करोति। <u>प्रष्टिवा</u>ही रथो दक्षिणा समृंस्ट्रो॥५॥

इन्द्रों वृत्र% हत्वा। असुंरान्यराभाव्ये। नमुंचिमासुरं नालेभत। त% शृच्यां-ऽगुह्णात्। तौ समेलभेताम्। सौऽस्माद्भिशुंनतरोऽभवत्। सौऽब्रवीत्। सुन्या%

सन्देधावहै। अथ् त्वाऽवं स्नक्ष्यामि। न मा शुष्केण नार्देणं हनः॥६॥

न दिवा न नक्मिति। स पृतम्पां फेनमसिश्चत्। न वा पृष शुष्को नाद्री सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

व्युष्टाऽऽसीत्। अनुदितः सूर्यः। न वा पृतद्दिवा न नक्तम्। तस्यैतस्मिंक्षोके। अपां फेनेन् शिर् उदेवर्तयत्। तदेनुमन्वेवर्तत। मित्रंद्रुगिति॥७॥

स्वकृत इरिणे जुहोति प्रदुरे वाँ। पुतहै रक्षंसामायतनेम्। स्व पुवायतेने रक्षार्शिस हन्ति। पुर्णमयेन स्रुवेणं जुहोति। ब्रह्म वै पुर्णः। ब्रह्मणैव रक्षार्शेस हन्ति। देवस्ये त्वा सवितुः प्रेसुव इत्योह। सवितुप्रसूत पुव रक्षार्शिसे हन्ति। हुत र रक्षोऽविधिष्म

रषु इत्यांह। रक्षेमाॐ स्तृत्यै। यद्वस्ते तद्दक्षिणा निरवेत्ये। अप्रेतीक्षमायेन्ति।

रक्षंसाम्-तर्हित्यै॥ ९॥

भागुधेयम्। डुमान्दिशं यन्ति। एषा वै रक्षेसां दिक्। स्वायांमेव दिशि रक्षार्शसे

हन्ति॥८॥

यदंपामार्गहोमो भवति। रक्षेसामपेहत्यै। एकोल्मुकेनं यन्ति। तिष्कि रक्षेसां

स पृतानेपामागीनेजनयत्। तानेजुहोत्। तैर्वे स रक्षाङ् स्यपोहत।

धात्रे पुरोडाशुं द्वादेशकपाऌं निर्वपति। स्वथ्सरो वै घाता। संवथ्सरेणेवास्मै युच्छुति वर्षणं तृतीयं विजित्या असुजत समृद्धौ हनो मित्रंद्रुगिति हन्ति स्तृत्ये त्रीणि च॥■ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

पुजाः प्रजनयति। अन्वेवास्मा अनुमतिर्मन्यते। राते राका। प्र सिनीवाली

-जनयति। प्रजास्वेव प्रजातासु कुह्वा वाचं द्याति। मिथुनौ गावो दक्षिणा समृध्ये।

आग्रावैष्णवमेकांदशकपालं निर्वपति। ऐन्दावैष्णुवमेकांदशकपालम्॥१०॥

ङ्न्द्रासोमीयमेकांदशकपालम्। सौम्यं चुरुम्। सोमो वै रेंतोघाः। अग्निः प्रजानां प्रजनयिता। बृद्धानामिन्द्रः प्रदापयिता। सोमं एवास्मै रेतो दर्घाति॥१२॥

तेनैन्दः। यद्वांमुनः। तेनं वैष्णुवः समृष्ट्यै। अ्श्रीषोमीयमेकांदशकपालं निर्वपति।

अग्निः प्रजां प्रजंनयति। वृद्धामिन्द्रः प्रयंच्छति। बुभुदीक्षेणा् समृध्द्ये। सोमापोष्णं

वैष्णुवं त्रिकपालम्। वीर्यं वा अग्निः। वीर्यमिन्द्रः। वीर्यं विष्णुः। प्रजा एव

प्रजांता बोर्ये प्रतिष्ठाप्यति। तस्मौत्युजा बोर्यावतीः। बामुन ऋषुमो बृही दक्षिणा।

यद्वही। तेनाभियः। यद्वभः॥११॥

146 सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

च्रं निर्वपति। ऐन्द्रापौष्णं च्रम्। सोमो वै रेतोधाः। पूषा पश्चनां प्रजनयिता। बृद्धानामिन्द्रंः प्रदापयिता। सोमं एवास्मे रेतो दर्धाति। पूषा पश्चन्प्रजनयति॥१३॥

वृद्धानिन्द्रः प्रयेच्छति। पौषाश्वरुर्भवति। इयं वै पूषा। अस्यामेव प्रति तिष्ठति। श्यामो दक्षिणा समृद्धाे। बृहु वै पुरुषो मुष्यमुपंगच्छति। वैश्वान्रं द्वादेशकपाले

निर्वपति। संवृथ्सरो वा अग्निवैश्वानुरः। संवृथ्सरेणैवैनॐ स्वदयति। हिर्पण्

दक्षिणा॥१४॥

पवित्रं वै हिरंण्यम्। पुनात्येवैनम्। बहु वै राजन्योऽनृतं करोति। उपं जाम्यै हरंते। जिनाति ब्राह्मणम्। वदत्यनृतम्। अनृते खलु वै ऋियमाणे वरुणो गृह्षाति।

वारुणं येवमयं चरु निर्वपति। वरुणपाशादेवेनं मुअति। अश्वो दक्षिणा। वारुणो

गुनिनांमेतानि हुवी शिषे भवन्ति। पुते वै गृष्ट्रस्यं प्रदातारंः। पृतेऽपादातारंः। य

ऐन्डावेेण्यवमेकांदशकपाऌं यहंषुभो दशांति पूषा पुशून्मजंनयति हिरंण्यं दक्षिणा दक्षिणेकं च॥━

\_ हि देवतयाऽश्वः समृद्धो॥१५॥

एुव राष्ट्रस्यं प्रदातारंः। येऽपादातारंः। त एवास्मै राष्ट्रं प्रयंच्छन्ति। राष्ट्रमेव भवति। यथ्सेमाहत्ये निर्वपैत्। अरेनिनः स्युः। यथाय्थं निर्वपति रनित्वायं॥१६॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अन्बहत्रिर्वपति। भूर्यसीमेवाशिषमवं रुन्ये। भूयंसो यज्ञकृतूनुपैति। बार्हस्पत्यं यथ्सुद्यो निर्वपैत्। यावेतीमेकेन हविषाऽऽशिषंमव कुन्ये। तावेतीमवंरुन्यीत।

च्रं निर्वपति ब्रह्मणो गृहे। मुख्त एवास्मै ब्रह्म सङ्क्यंति। अथो ब्रह्मंत्रेव क्षत्रम्न्वारंम्नयति। श्रितिपृष्ठो दक्षिणा समृष्ट्ये॥१७॥

ऐन्द्रमेकादशकपाल १ राजन्यस्य गृहे। इन्द्रियमेवावं रुन्ये। ऋषुमो दक्षिणा समृद्धो। आदित्यं चुरुं महिष्ये गृहे। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रतितिष्ठति। येनुद्क्षिणा समृष्ट्या मगाय चुरु वावाताय गृहे। भगमेवास्मिन्दर्घाता विचित्तगर्भा

नैर्ऋतं चरुं पीरवृक्ते गृहे कृष्णानां ब्रीहीणां नखनिर्भित्रम्। पाप्मानेमेव निर्ऋतिं निरवेदयते। कृष्णा कूटा दक्षिणा समृद्धा। आग्नेयमृष्टाकेपाल र सेनान्यों

पष्टोही दक्षिणा समृष्ट्रो॥१८॥

गृहे। सेनांमेवास्य सङ्क्यंति। हिरंण्यं दक्षिणा समृध्यै। वारुणं दशंकपाल॰ सूतस्यं गृहे। वरुणस्वमेवावं रुन्ये। मृहानिरष्टो दक्षिणा समृद्धे। मारुत॰ सप्तकपालं ग्रामुण्यों गृहे॥१९॥ अत्रं वै मरुतंः। अत्रमेवावं रुन्ये। पृश्चिद्धिणा समृष्ट्ये। सावित्रं द्वादंशकपालं श्वतुर्गृहे प्रसूत्ये। उपष्वस्तो दक्षिणा समृष्ट्ये। आश्विनं द्विकपाले संङ्गृहीतुर्गृहे। अश्विनौ वै देवानौ मिषजौ। ताभ्यामेवास्मै भेषजं कंरोति। सर्वात्यौ दक्षिणा समृष्ट्ये। पोणां वरं भागदुघस्यं गृहे॥२०॥ अत्रं वै पूषा। अत्रोमेवावं रुन्ये। श्यामो दक्षिणा समृष्ट्ये। रौद्रं गांवीयुकं चरुमंक्षावापस्य गृहे। अन्तत एव रुद्रं निरवंदयते। शबल उद्वारो दक्षिणा समृष्ट्ये। द्वादंशेतानि हवीशिषे भवन्ति। द्वादंशु मासाः संवध्सरः। संवध्सरेणेवास्मे राष्ट्रमवं रुन्धे। राष्ट्रमेव भेवति॥२१॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

यत्र प्रीत निर्वपैत्। रृत्निने आशिषोऽवेरुन्धीरन्। प्रतिनिर्वपति। इन्द्रांय सुत्राम्यो

पुरोडाशमिकांदशकपालम्। इन्द्रांया॰होमुचै। आशिषं पृवावं रुन्ये। अयं नो राजां वृत्रहा राजां भूत्वा वृत्रं वेप्यादित्याह। आमेवेतामा शाँस्ते। मैत्राबार्हस्पत्यं भेवति। क्षेतायै <u>क</u>्षेतवंथ्सायै दुग्धे॥२२॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

बार्हस्पत्ये मैत्रमपि दथाति। ब्रह्मं चैवास्मैं क्षत्रं चं समीची दथाति। अथो

ब्रह्मेत्रेव क्षत्रं प्रतिष्ठापयति। बार्हस्पत्येन पूर्वेण प्रवंरति। मुखत एवास्मे ब्रह्म सङ्श्यीते। अथो ब्रह्मेत्रेव क्षत्रमन्वारंम्भयति। स्वयं कृता वेदिर्भवति। स्वयं दिनं बर्हिः। स्वयं कृत इष्मः। अनीभिजितस्याभिजित्यै। तस्माद्राज्ञामरंण्यमभिजितम्। सैव खेता खेतवंथ्सा दक्षिणा समृद्धा।२३॥

देवसुवामेतानि हवीशिषे भवन्ति। एतावेन्तो वै देवानारं स्वाः। त एवास्मै

र्गितेलाय समृद्धी पष्टोही दक्षिणा समृद्धी ग्रामण्यों गृहे भांगदुघस्यं गृहे भंवति दुग्धेऽभिजित्ये द्वे चं॥━━━━━━[ゑ]

सुवान्प्रयंच्छन्ति। त एंन॰ सुवन्ते। अग्निरेवैनं गृहपंतीना॰ सुवते। सोमो

वनुस्पतींनाम्। कृद्रः पंशूनाम्। बृहुस्पतिर्वावाम्। इन्द्रौ ज्येष्ठानाम्।

150 सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १) सत्यानाँम्॥२४॥

राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना्॰ राजेत्यांह। तस्माथ्सोमंराजानो ब्राह्मणाः। प्रति वरुणो धर्मपतीनाम्। एतदेव सर्वं भवति। सृषिता त्वां प्रसुवानाः सुवतामिति हस्तं गृह्णाते प्रसूत्ये। ये देवा देवः सुवः स्थेत्यांह। यथायजुरेवैतत्। मृहते क्षत्रायं महुत आधिपत्याय महुते जानंराज्यायेत्यांह। आमेवैतामा शांस्ते। एष वो भरता

त्यन्नामं राज्यमंधायीत्यांह॥२५॥

राज्यमेवास्मिन्प्रतिदधाति। स्वां तनुवं वर्षणो अशिश्रेदित्योह। वर्षणस्वमेवावे रुन्ये। शुचैमित्रस्य व्रत्यो अभूमेत्योह। शुचिमेवेनं व्रत्यं करोति। अमेन्महि महत

ऋतस्य नामेत्याह। मनुत एवेनमै। सर्वे ब्राता वर्ुणस्याभूवित्रत्याह। सर्वेब्रातमेवैने करोति। वि मित्र एवेररातिमतारीदित्याह॥२६॥

अर्रातिमैवैनं तारयति। असूषुदन्त यज्ञियां ऋतेनेत्याह। स्वदयंत्येवैनम्।

ब्युं त्रितो जीर्माणं न आनुडित्यांहा आयुरेवास्मिन्दधाति। द्वाभ्यां विमृष्टे।

151 अुशीषोमीयस्य चैकांदशकपालस्य देवसुवां द्विपाद्यजंमानः प्रतिष्ठित्यै। सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

चं ह्विषांमग्रये स्वष्टकृते समवंद्यति। देवतांभिरेवैनंमुभ्यतः परिगृह्णाति। विष्णुकृमान्क्रेमते। विष्णुंरेव भूत्वेमाँक्षोकानुभिजयिति॥२७॥

अ्थेत्ः स्थेति जुहोति। आहुत्यैवेनां निष्कीयं गृह्णाति। अथों हविष्कृतानामेवाभिधृंत

सृत्यानांमधायीत्यांहातारीदित्यांह कमत् एकं च॥🕳

गृह्णाति। वहंन्तीनां गृह्णाति। एता वा अपा॰ राष्ट्रम्। राष्ट्रमेवास्मे गृह्णाति। अथो् श्रियमेवेनममिवेहन्ति। अपां पतिर्सीत्याह। मिथुनमेवाकेः। वृषाँ-

ऊर्मिमन्तेमेवैनं करोति। वृष्सेनोऽसीत्याह। सेनामेवास्य सङ्श्यंति। ब्रज्नक्षितः

ऽस्यूमिरित्यांह॥ २८॥

स्थेत्योह। पुता वा अपां विश्वां। विश्वांमेवास्मै पर्यूहति। मुरुतामोजः स्थेत्यांह।

अन्नं वै मुरुतः। अन्नेमेवावं रुन्धे। सूर्यवर्चसः स्थेत्याह॥२९॥

गृष्टमेव वेर्चस्योकः। सूर्यत्वचसः स्थेत्योह। सृत्यं वा पृतत्। यद्वर्षिति। अनृतं

यदातपीते वर्षति। सृत्यानुते पुवावं रुन्धे। नैनरं सत्यानुते उदिते हिर्इस्तः। य पृशूनेवावं रुन्ये। विश्वमृतः स्थेत्याह। राष्ट्रमेव पंयस्व्यंकः। जनमृतः स्थेत्याह। राष्ट्रमेवेन्द्रियाव्यंकः। अग्नेस्तेजस्याः स्थेत्याह॥३१॥ वाशाः स्थेत्यांह। राष्ट्रमेव वृश्यंकः। शक्तंरीः स्थेत्यांह। पृशवो वै शक्तरीः। एुवं वेदे। मान्दाः स्थेत्योहा राष्ट्रमेव ब्रह्मवर्चस्येकः॥३०॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

सार्स्वतं ग्रहं गृह्णाति। एषा वा अपां पृष्ठम्। यथ्सरंस्वती। पृष्ठमेवेन समानानाँ गृष्ट्रमेव तेज्रस्व्यंकः। अपामोषंधीना्॰ रसः स्थेत्यांह। गृष्ट्रमेव मंघ्व्यंमकः।

करोति। षोडुशभिर्गृह्वाति। षोडेशकलो वै पुरुषः। यावानेव पुरुषः। तस्मिन्वीर्यं दघाति। षोडुशभिर्जुहोति षोडुशभिर्गृह्वाति। द्वात्रिरंशृष्सम्पंद्यन्ते। द्वात्रिरंशदक्षरा-

ऊर्मिरित्यांहे सूर्यंवर्चसः स्थेत्यांह ब्रह्मवर्चस्यंकस्तेज्स्याः स्थेत्यांहेव पुरुषः षट् चं॥━

ऽनुष्टुक्। वागंनुष्टुफ्सर्वाणि छन्दार्शसि। वाचैवैनुर् सर्वेभिष्छन्दोभिर्भिषिश्चति॥३२॥

देवीराप्ः सं मधुमतीमधुमतीभिः सुज्यष्वमित्योह। ब्रह्मणेवैनाः स॰सृजति।

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अनोधृष्टाः सीद्तेत्योह। ब्रह्मणैवेनाः सादयति। अन्तरा होतुंश्च घिष्णियं ब्राह्मणाच्छुर्सिनंश्च सादयति। आग्नेयो वै होता। ऐन्द्रो ब्राह्मणाच्छुर्सी। तेजंसा चैवेन्द्रियेणं चोभ्यतो राष्ट्रं परिगृह्णाति। हिरंण्येनोत्पुंनाति। आहेत्ये हि

सोमंस्य होतद्दात्रम्। शुक्रा वेः शुक्रणोत्पुंनामीत्यांह। शुक्रा ह्यापेः। शुक्र॰ हिरंण्यम्। चन्द्राश्चन्द्रणेत्यांहा चन्द्रा ह्यापेः। चन्द्र॰ हिरंण्यम्। अमृतां अमृतेनेत्यांह। अमृता ह्यापेः। अमृत॰ हिरंण्यम्॥३५॥

श्वतमानं भवति। श्वतायुः पुरुषः श्वतिन्द्रियः। आयुष्येवेन्द्रियं प्रति तिष्ठति। अनिभृष्टम्सीत्योह। अनिभृष्ट् ् ह्येतत्। वाचो बन्युरित्योह। वाचो ह्येष बन्युः।

गवित्रौन्यामुत्युनन्ति व्यावृत्यै॥३३॥

तुपोजा इत्याह। तुपोजा ह्येतत्। सोमंस्य दात्रमुसीत्याह॥३४॥

स्वाहो राजुसूयायेत्योह। राजुसूयाय ह्येना उत्पुनाति। सुधुमादौ ह्युम्निनीरूर्जं एता इति वारुण्यर्चा गृह्वाति। वुरुणुसुवमेवावे रुन्ये। एकेया गृह्वाति। एक्येव

यजंमाने वीर्यं दधाति। क्षत्रस्योल्बमिसि क्षत्रस्य योनिर्सीति ताप्यं चोष्णीषं च प्रयेच्छति सयोनित्वाये। एकेशतेन दर्भपुञ्जोलेः पंवयति। शृतायुर्के पुरुषः शृतवीर्यः। सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

यावानेव पुरुषः। तस्मिन्वोर्यं दधाति। दध्यांशयति। इन्द्रियमेवावं रुन्ये।

आत्मैकेशतः॥३६॥

उदुम्बरमाशयति। अन्नाद्यस्यावेरुद्धो शष्पौण्याशयति। सुरोबलिमेवैनं करोति। -

आबिदं एता भंवन्ति। आबिदंमेवैनं गमयन्ति॥३७॥

अग्निरेवेनं गार्हेपत्येनावति। इन्द्रं इन्द्रियेणं। पूषा पशुभिः। मित्रावरुणौ प्राणापानाभ्याम्। इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदंयच्छत्। स दिवंमलिखत्। सौऽर्यम्णः पन्थां अभवत्। स आवित्रे द्यावांपृथिवी धृतव्रंते इति द्यावांपृथिवी उपायावत्। स आवित्रे द्यावांपृथिवी धृतव्रंते इति द्यावांपृथिवी उपायावत्। स आभ्यामेव प्रसूत इन्द्रों वृत्राय वज्रं प्राहेरत्। आवित्रे द्यावांपृथिवी धृतव्रंते

आवित्रा

आ्रम्यामेव प्रसूतो यजमानो वज्रं भातृंच्याय प्रहंरति।

इति यदाहं॥३८॥

155 देव्यदितिविश्वरूपीत्योह। इयं वै देव्यदितिविश्वरूपी। अस्यामेव प्रति तिष्ठति। आवित्रोऽयम्सावामुष्यायुणौऽस्यां विश्यीस्मित्राष्ट्र इत्योह। विश्वेवैन ५ इन्द्रंस्य वज्रोऽसि वार्त्रेघ्र इति धनुः प्रयेच्छति विजित्यै। श्रृजुबाधनाः स्थेतीषून्। शत्रूनेवास्ये बाधन्ते। पात मौ प्रत्यश्चं पात मो तिर्यश्चंमन्बश्चं मा पातेत्यांह। तिस्रो वै शंर्व्याः। प्रतीची तिरश्यन्ची। ताम्ये एवेनं पान्ति। दिग्भ्यो मो पातेत्यांह। गुष्टेणु समेर्धयति। मृह्ते क्षुत्रायं महुत आर्थिपत्याय महुते जानंराज्यायेत्यांह। दिग्ग्य एवैनं पान्ति। विश्वाम्यो मा नाष्ट्राभ्यंः पातेत्यांह। अपीरिमितादेवैनं पान्ति। हिरंण्यवणांवुषसां विरोक इति त्रिष्टमां बाहू उद्गुह्नाति। इन्द्रियं वै वीयं त्रिष्टुक्। आमेवेतामा शास्ते। एष वो भरता राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना॰ राजेत्यांह। ड्रन्द्रियमेव वीर्यमुपरिष्टादात्मन्येते॥४०॥ तस्माथ्सोमंराजानो ब्राह्मणाः॥३९॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

व्यावृंत्यै दात्रमूसीत्योहामृत्×ु हिरंण्यमेकशृतो गंमयुन्त्याहं ब्राह्मणा नाष्ट्राभ्यंः पातेत्यांह चत्वारिं च॥■

दिशो व्यास्थांपयति। दिशाममिजिंत्यै। यदंनु प्रकामैंत्। अभि दिशों जयेत्। उत्तु माँदोत्। मनुसाऽनु प्रकामिति। अभि दिशों जयति। नोन्मांद्यति। समिष्मा तिष्ठेत्योह। तेजं एवावं रुन्ये॥४१॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

उुआमा तिष्ठेत्याह। इन्द्रियमेवावं रुन्ये। विराजमातिष्ठेत्याह। अन्नाद्यमेवावं रुन्ये। उदीचीमा तिष्ठेत्याह। पृशूनेवावं रुन्ये। ऊर्ध्वामातिष्ठेत्याह। सुवर्गमेव लोकमभिजयति। अनूश्चिहीते। सुवर्गस्यं लोकस्य समेष्ट्ये॥४२॥

मारुत एष भेवति। अन्नं वै मरुतंः। अन्नेमेवावं रुन्धे। एकेवि॰शतिकपालो भवति प्रतिष्ठित्ये। योऽरण्येऽनुवाक्यों गुणः। तं मध्यत उपदधाति। ग्राम्यैरेव गुशुनिसार्णयान्यशून्यरि गुह्णाति। तस्मीद्धांन्यैः पृशुनिसार्णयाः पृशवः परिगृहीताः। गृथिवैन्यः। अभ्यंषिच्यत॥४३॥

स गुष्ट्रं नाभेवत्। स पृतानि पार्थान्येपश्यत्। तान्यंजुहोत्। तैर्के स गुष्टमेभवत्।

यत्पार्थीनि जुहोति। राष्ट्रमेव भवति। बार्हस्पत्यं पूर्वेषामुत्तमं भवति। ऐन्द्रमुत्तेरेषां

प्रथमम्। ब्रह्मं चैवास्मै श्रुत्रं च समीची द्याति। अथो ब्रह्मेत्रेव श्रुत्रं

षदुरस्तांदमिषेकस्यं जुहोति। षडुपरिष्टात्। द्वादेश् सम्पंद्यन्ते। द्वादेश् मासाः

ष्टापयोते॥४४॥

संवथ्सरः। संवथ्सरः खलु वै देवानां पूः। देवानांमेव पुरं मध्यतो व्यवंसर्पति।

तस्य न कुतंश्चनोपाँव्याघो भेवति। भूतानामवैधीर्जुहोति। अत्रात्र वै मृत्युर्जायते। यत्रयत्रेव मृत्युर्जायते। तते एवैन्मवयजते। तस्माँद्राज्सूयेनेजानो नाभिचीरत्वे।

सोमंस्य त्विषिरम् तवेव मे त्विषिभूयादिति शार्द्लच्मोपंस्तुणाति। यैव सोमे

हुन्ये समंध्या असिच्यत स्थापयिते जायेते पश्चं च॥🕳

प्रत्यगेनमभिचारः स्तृणुते॥४५॥

त्विषिः। या शाँदूले। तामेवावे रुन्ये। मृत्योवां एष वर्णः। यच्छाँदूलः। अमृत्

हिरंण्यम्। अमृतंमिस मृत्योमां पाहीति हिरंण्युमुपौस्यति। अमृतंमेव मृत्योर्न्तर्धतो।

शृतमांनं भवति॥४६॥

गृहीत्युपरिष्टादिषे निदंधाति। उम्यतं एवास्मै शर्मं दधाति। अवैष्टा दन्दशूका श्तायुः पुरुषः श्रतिन्द्रियः। आयुष्येवेन्द्रिये प्रति तिष्ठति। दिद्योन्मा सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

सोमो राजा वरुणः। देवा धर्मसुवंश्व ये। ते ते वाचं सुवन्तां ते ते प्राण् सुवन्तामित्याह। प्राणानेवाऽऽत्मनः पूर्वान्भिषिश्चति। यद्वयात्। अग्रेस्त्वा

तेजंसाऽभिषिश्चामीति। तेजस्व्यंव स्यौत्। दुश्चर्मा तु भंवेत्। सोमंस्य त्वा द्युम्नेनाभिषिश्चामीत्यांह। सौम्यो वै देवतंया पुरुषः॥४८॥

स्वयेवैनं देवतयाऽभिषिश्रति। अग्रेस्तेजमित्याह। तेजं एवास्मिन्दयाति। सूर्यस्य

वर्चसेत्याह। वर्चे एवास्मिन्दपाति। इन्द्रस्येन्द्रियेणेत्यांह। इन्द्रियमेवास्मिन्दपाति।

मित्रावरुणयोर्वीर्येणेत्याह। वीर्यमेवास्मिन्दधाति। मुरुतामोजुसेत्याह॥४९॥

ड्रोते क्रीबर सीसेन विध्यति। दन्दशूकांनेवावंयजते। तस्मौत्क्रीबं देन्दशूका दर्शुकाः। निरंस्तं नमुचेः शिर् इति लोहितायुसं निरंस्यति। पाप्मानेमेव नमुचिं

नि्रवंदयते। प्राणा आत्मन्ः पूर्वेऽभिषिच्या इत्योहुः॥४७॥

क्षत्राणांमेवेनं सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

वावैतदांह। सुमाववृत्रत्रधूरागुदीचीरित्याह। राष्ट्रमेवास्मिन्धुवमंकः। उच्छेषंणेन जुहोति। क्षत्रपति करोति। अति दिवस्पाहीत्योह। अत्यन्यान्याहीति ओजं एवास्मिन्दधाति। क्षत्राणां क्षत्रपंतिरसीत्याह। उच्छेषणमागो वै क्दः। भागपेयेनैव क्दं निरवंदयते॥५०॥

रुद्र यत्ते कथी परं नामेत्योह। यद्वा अस्य कथी परं नामे। तेन वा एष हिनस्ति। य र हिनस्ति। तेनैवेन रेसह शमयति। तस्मै हुतमीस यमेष्टमसीत्योह। यमादेवास्य उदं धुरेत्याग्नी छे जुहोति। एषा वै क्द्रस्य दिक्। स्वायांमेव दिशि क्द्रं निरवदयते। मृत्युमवंयजते॥५१॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्य इति तस्यै गृहे जुंहयात्। यां कामयेत राष्ट्रमंस्यै प्रजा स्यादिति। राष्ट्रमेवास्यै प्रजा भेवति। पर्णमयेनाष्वर्धुरमिषिश्चति। ब्रह्मवर्चसमेवा-स्मिन्त्विषं दधाति। औदुम्बरेण राजन्यः। ऊर्जमेवास्मित्रन्नाद्यं दधाति। आश्वेत्थेन् वैश्यंः। विश्रमिवास्मिन्पुष्टिं दथाति। नैयंग्रोधेन जन्यंः। मित्राण्येवास्मै कल्पयति।

प्रशास्त्रोः प्रशिषां युनज्मीत्याह। ब्रह्मणैवेनं देवताभ्यां युनक्ति। प्रष्टिवाहिनं युनक्ति। प्रष्टिवाही वे देवर्थः। देवर्थमेवास्मै युनक्ति। त्रयोऽश्वां भवन्ति। रथंश्चतुर्थः। द्वौ

इन्द्रंस्य वज्रोऽसि वार्त्रघ्न इति रथंमुपावंहरति विजित्यै। मित्रावरुणयोस्त्वा

मुबत्याहुः पुरुषु ओजुसेत्यांह नि्रवंदयते यजते जन्यो द्वे चं॥■

अथो प्रतिष्ठित्यै॥५२॥

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

षङ्घा ऋतवंः। ऋतुभिरेवैनं युनक्ति। विष्णुकुमान्क्रेमते। विष्णुरेव

संब्यष्टसारथी। षट्थ्सम्पंद्यन्ते॥५३॥

मूलेमाँस्रोकानुमिज्यति। यः क्षत्रियः प्रतिहितः। सौऽन्वारंभते। राष्ट्रमेव

र्मवति। त्रिष्टुर्माऽन्वारंभते। ड्रन्द्रियं वै त्रिष्टुक्। ड्रन्द्रियमेव यजमाने दथाति॥५४॥

मुरुतां प्रसुवे जेषमित्योह। मुरुद्भिरेव प्रसूत उञ्जयिते। आपं मन् इत्योह। यदेव मनुसैफ्सीत्। तदापत्। राजन्यं जिनाति। अनाकान्त एवाकेमते। वि वा एष इन्द्रियेणं वीर्येणध्यते। यो राजन्यं जिनाति। समुहमिन्द्रियेणं वीर्येणेत्याह॥५५॥

161 सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

इन्द्रियमेव वीर्यमात्मन्येते। पृश्नां मन्युरंसि तवेव मे मन्युर्मयादिति वार्राही उपानहाबुपं मुश्रते। पृश्नां वा एष मन्युः। यद्वेराहः। तेनैव पंशूनां मन्युमात्मन्येते। अभि वा इय॰ सुंषुवाणं कामयते। तस्यैश्वरेन्द्रियं वीर्यमादातोः। वार्राही उपानहाबुपेमुश्रते। अस्या एवान्तर्धते। इन्द्रियस्यं वीर्यस्यानाँत्ये॥५६॥

नमो मात्रे पृथिव्या इत्याहाहिৼंसायै। इयंदस्यायुंरस्यायुंर्मे घेहीत्यांहा आयुंरेवाऽऽत्मन्यंते। ऊर्गस्यूर्जं मे घेहीत्यांहा ऊर्जमेवाऽऽत्मन्यंते। युङ्कंिस् वर्चोऽसि वर्चो मिये घेहीत्यांहा वर्चे एवाऽऽत्मन्यंते। एक्घा ब्रह्मण उपंहरति।

्रक्षेव यजमान आयुरूजुं वर्चो द्याति। र्थावृमोचनीयां जुहोति प्रति-

ष्ठित्ये॥५७॥

सुमानं लोकमियाताम्। सृह संङ्गहोत्रा रंथुवाहेने रथुमादेथाति। सुवुगदिवैनं

त्रयोऽश्वां भवन्ति। रथेश्वतुर्थः। तस्मांचृतुर्जुहोति। यदुगौ सृहावृतिष्ठेताम्

162 सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

सर्वेभिरेवैनं छन्दोभिरादेधाति। वर्ष्मे वा एषा छन्देसाम्। यदतिच्छन्दाः। यदतिच्छन्दसा दर्धाति। वर्ष्मैवैन समानानां करोति॥५८॥

ऽऽदंधाति। अतिच्छन्द्साऽऽदंधाति। अतिच्छन्दा वै सर्वाणि छन्दार्शसे।

पृद्यन्ते द्र्याति वीर्येणेत्याहानांैत्ये प्रतिष्ठित्ये ब्रह्मणाऽऽदंधाति सृप्त चं॥━

वैश्वदेव्यों वै प्रजाः। ता एवाद्याः कुरुते। क्षत्रस्य नाभिरसि क्षत्रस्य

स्वमेवेनों भाग्धेयंमुपावंहरति। सम्हं विश्वेंद्वेरित्यांह॥५९॥

योनिर्सीत्यंधीवासमास्तृणाति नयोनित्वायं। स्योनामा सींद सुषदामा सीदेत्याह। यथायजुरेवैतत्। मा त्वां हि॰सीन्मा मां हि॰सीदित्याहाहि॰सायै। निषंसाद धृतव्रंतो बरुणः पुस्त्यौस्वा साम्रौज्याय सुकतुरित्याह। साम्रौज्यमेवैन॰

मित्रोऽसि वर्षणोऽसीत्योह। मैत्रं वा अहंः। वारूणी रात्रिः। अहोरात्राभ्यांमेवैनंमुपाव मित्रोऽसि वर्षणोऽसीत्योह। मैत्रो वै दक्षिणः। वारूणः सब्यः। वैश्वदेव्यांमिक्षा।

लोकाद्नतर्धाति। ह्×्सः शुंचिषदित्यादंधाति। ब्रह्मणेवैनंमुपावृहरंति। ब्रह्मणा-

163 सुकर्तुं करोति। ब्रह्मा(३)न्त्व र्राजन्ब्रह्माऽसिं सविताऽसिं सत्यसंव इत्योह। स्वितारमेवेन रं सत्यसंवं करोति॥६०॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

इत्यंह। मित्रमेवैन ५ सुशेवं करोति। ब्रह्मा(३)न्त्व राजन्ब्रह्मासि वर्तणोऽसि सृत्यधर्मेत्यंह। वर्रणमेवैन ५ सत्यर्थमांणं करोति। स्विताऽसिं सृत्यसंव इत्यंह। गायत्रीमेवैतेनामि व्याहेरति। इन्द्रोऽसि सृत्योजा इत्यंह। त्रिष्टुभमेवैतेनामि

मित्रोऽसि सुशेव इत्योह। जगेतीमेवैतेनांभि व्याहंरति। सत्यमेता देवताः। सत्यमेतानि छन्दार्शसा सत्यमेवावं रुन्ये। वर्षणोऽसि सत्यथमेत्याह।

मुनुष्टुर्भमेबेतेनामि व्याहेरति। सृत्यानृते वा अनुष्टुप्। सृत्यानृते वर्षणः। सृत्यानृते

पुवावं रुन्ये॥६२॥

ब्रह्मा(३)न्त्व४ राजन्ब्रह्माऽसीन्द्रोऽसि सृत्योजा इत्याह। इन्द्रमेवैन४ सृत्योजसं करोति। ब्रह्मा(३)न्त्व४ राजन्ब्रह्माऽसि मित्रोऽसि सुशेव

164 तच्छ्रेयंः। यदंस्मा पृते रध्येयुः। दिशोऽभ्यंय॰ राजांऽभूदिति पञ्चाक्षान्प्रयंच्छति। एते वै सर्वेऽयाः। अपंराजायिनमेवेनं करोति॥६३॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

ओदनमुद्वेवते। परमेष्ठी वा एषः। यदोदनः। परमामेवेन् १ श्रियं गमयति। सुश्रोकाँ(४) सुमेङ्गलाँ(४) सत्यंराजा(३)नित्यांह। आमेवेतामा शास्ते। शोनः

श्रोपमाख्यांपयते। वरुणपाशादेवैनं मुझति। पुरः शृतं भंवति। शृतायुः पुरुषः शृतेन्द्रियः। आयुष्येवेन्द्रिये प्रति तिष्ठति। मारुतस्य चैकविश्शतिकपालस्य वैश्वदेव्यै चामिक्षाया अग्नये स्विष्ट्कते समवंद्यति। देवतांभिरेवैनंमुभयतः परिं गृह्णाति। अपान्नभ्रे स्वाहोर्जो नभ्रे स्वाहाऽग्रये गृहपंतये स्वाहोते तिस्र आहुतीर्जुहोति। त्रयं ड्रमे लोकाः। एष्वेव लोकेषु प्रति तिष्ठति॥६४॥ देवैरित्यांह स्त्यसंवं करोति त्रिष्टुर्भमेवैतेनांमि व्याहंरति सत्यानृते एवावं रुन्ये करोति श्रृतिन्द्रंयः षट् चं॥————[१०]

| 165      |  |
|----------|--|
|          |  |
|          |  |
|          |  |
|          |  |
|          |  |
|          |  |
|          |  |
|          |  |
|          |  |
|          |  |
| <b>≈</b> |  |
| मष्टकम्  |  |
| 8        |  |

| सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)  |
|---|
| एतद्वौक्षणानि धात्रे रक्षिनाैन्देवसुवाम्थेतो देवीदिंशः सोम्स्येन्द्रंस्य मित्रो दशं॥१०॥   |
| एतद्वाँहाणानि वैष्णुवं त्रिकपालमन्नं वै पूषा वाशाः स्थेत्यांह दिशो व्यास्थापयृत्युदंबुरेत्य ब्रह्मा(३)न्त्व॰ रांजुञ्जतुष्पष्टिः॥६४॥ |
| एतद्वांबाणानि प्राते तिष्ठति॥   |
| हिर्भः ओम्॥   |

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके सप्तमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ अष्टमः प्रश्नः॥

# ॥तैतिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके अष्टमः प्रपाठकः॥

वरुणस्य सुषुवाणस्यं दश्योन्द्रियं वीर्यं परांऽपतत्। तथ्स् भुद्धिरनु समंसर्पत्। तथ्स् भुपारं सर्सुत्वम्। अग्निनां देवेनं प्रथमेऽह्न्ननु प्रायुङ्का। सरंस्वत्या वाचा द्वितीयें। स्वित्रा प्रस्वेनं तृतीयें। पूष्णा पृशुभिश्चतुर्थे। बृहस्पतिना ब्रह्मणा पञ्चमे। इन्द्रेण देवेनं षुष्ठे। वरुणेन् स्वयां देवतेया सप्तमे॥१॥

सोमेन राज्ञौऽष्टमे। त्वष्ट्रो रूपेणं नवमे। विष्णुंना यज्ञेनौऽऽप्रोत्। यथ्स<sub>र</sub>सुपो भवंन्ति। इन्द्रियमेव तद्वीर्यं यजमान आप्रोति। पूर्वापूर्वा वेदिर्भवति। इन्द्रियस्य

वीर्यस्यावेरुस्ट्री। पुरस्तांदुपुसदार्थ सौम्येन प्रचंरति। सोमो वै रेतोघाः। रेतं एव तद्दंघाति। अन्तरा त्वाष्ट्रेणं। रेतं एव हितं त्वष्टां रूपाणि विकेरोति। उपरिष्टाद्वैष्णवेनं। युज्ञो वै विष्णुंः। युज्ञ एवान्ततः प्रति तिष्ठति॥२॥

सुप्तमे देथाति पश्चं च॥∎

167 अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अत्रं विराट्। विराजेवात्राद्यमवं रुन्ये। मुष्करा मेवन्ति सेन्द्रत्वायं। द्शपेयो मविति। अत्राद्यस्यावेरुद्धे। शृतं ब्रौह्मणाः पिबन्ति। शृतायुः पुरुषः शृतिन्द्रियः। आयुष्येवेन्द्रिये प्रति तिष्ठति। समद्शाः स्तोतं भंवति। समुद्शः प्रजापंतिः॥४॥

दशमिवध्सतरेः सोमं कीणाति। दशाक्षरा विराट्॥३॥

द्वादंश पष्टोहिर्ब्रह्मणै। आयुरेवावं रुन्ये। वृशां मैत्रावरुणायं। राष्ट्रमेव वृश्यंकः। ऋषुमं ब्रौह्मणाच्छुर्सिनै। राष्ट्रमेवेन्द्रियाव्यंकः। वासंसी नेष्टापोतुभ्याम्। प्वित्रे

व्येवास्मै वासयति। कुक्म॰ होत्रै। आदित्यमेवास्मा उन्नेयति। अर्थ

प्रस्तोतुप्रतिहुर्तुभ्याम्। प्राजापुत्यो वा अर्थः। प्रजापेतेरास्यै॥५॥

प्रजापंतेरास्यै। प्राकाशावध्वयंवे ददाति। प्रकाशमेवैनं गमयति। स्रजंमुद्रात्रे।

जामि वा एतत्कुर्वन्ति। यथ्मुद्यो दीक्षयंन्ति सुद्यः सोमं क्रोणन्ति। पुण्डिरिस्रुजां प्रयेच्छुत्यजामित्वाय। अङ्गिरसः सुवर्गं लोकं यन्तंः। अपसु दीक्षातपमी प्रावेशयन्। तत्पुण्डरीकमभवत्। यत्पुण्डरिस्नुजां प्रयच्छीति। साक्षादेव दीक्षात्पसी अवं रुन्धे।

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अनुडाहंमुग्रीषै। वहिर्वा अनुडान्। वहिंरुग्रीत्। वहिंनैव वहिं युजस्यावं

पुवास्यैते। स्थूरि यवाचितमेच्छावाकाये। अन्तृत एव वर्षणमवं यजते॥६॥

ब्रह्मसामं भेवति। वार्वन्तीयमग्रिष्टोमसामम्। सार्स्वतीर्पो गृह्णाति। इन्द्रियस्य

वीर्यस्यावेरुस्या श्रायन्तीयं ब्रह्मसामं भवति। इन्द्रियमेवास्मिन्वीर्यक्षं

वार्वन्तीयंमग्निष्टोमसामम्। इन्द्रियमेवास्मिन्वार्यं वारयति॥७॥

विराद्वजापीतिरक्षेः प्रजापेतेरास्यै यजते ब्रह्मसामं भेवति सप्त चे॥🕳

श्रायुन्तीयुं तृतीयम्। सरंस्वती तृतीयम्। भागीवो होतां भवति। श्रायुन्तीयं

रुन्ये। इन्द्रंस्य सुषुवाणस्यं त्रेघेन्द्रियं वीर्यं परांऽपतत्। भगुस्तृतीयमभवत्।

इंश्वरो वा एष दिशोऽनून्मंदितोः। यं दिशोऽनुं व्यास्थापयंन्ति। दिशामवैष्टयो भवन्ति। दिक्ष्वेव प्रति तिष्टत्यनुन्मादाय। पश्चं देवतां यजति। पश्च दिशंः। दिक्ष्वेव प्रति तिष्ठति। हविषोहविष इष्टा बांर्हस्पत्यमभिषांरयति। यजमानदेवत्यों वै

बृह्स्पतिः। यजमानमेव तेजंसा समंधयति॥८॥

आदित्यां मृत्कृहां गुर्मिणीमा लेभते। मा्कृतीं पृश्चिं पष्टोृहीम्। विशं चैवास्में गुष्टं चे सुमीची दयाति। आदित्यया पूर्वया प्रचरित। मा्कृत्योत्तरया। गुष्ट् अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

रुव विश्वमनुबभ्नाति। उच्चेरोदित्याया आश्रोवयति। उपार्श्यु मांकृत्ये। तस्मौद्राष्ट्रं

विश्वमतिवदति। गुर्मिण्यादित्या भेवति॥९॥

संत्रिपायं। अनुतेनासुरान्भ्यंभवन्। तैऽिक्षेभ्यां पूषो पुरोडाशुं द्वादेशकपाले

निरंवपन्। ततो वै ते वाचः सृत्यमवांरुन्यत॥१०॥

बाचः सत्यमवे रुन्धे। सर्रस्वते सत्युवाचे चुरुम्। पूर्वमेवोदितम्। उत्तेरणामि

यद्श्विभ्याँ पूष्णे पुंगेडाश् द्वादंशकपालं निर्वपंति। अनुतेनैव भातृव्यानमिभूये।

गृंणाति। सिवित्रे सृत्यप्रेसवाय पुरोडाश्वं द्वादंशकपालं प्रसूत्ये। दूतान्प्रहिणोति। आविदं एता भवन्ति। आविदंमेवेनं गमयन्ति। अथों दूतेभ्यं एव न छिंद्यते।

ड्रन्द्रियं वै गर्मः। राष्ट्रमेवेन्द्रियाव्यंकः। अगुर्भा मांक्ती। विड्डै मुरुतंः। विश्नमेव

निरिन्द्रियामकः। देवासुराः संयत्ता आसन्। ते देवा अश्विनोः पूष-वाचः सत्ये र

तिसृपन्व १ शुष्कदृतिदक्षिणा समृष्ट्ये॥११॥ अर्थयति भवत्यक्चत गमयन्ति द्वे चं॥∎ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

आग्नेयमृष्टाकेपालं निर्वपति। तस्माच्छिशिरं कुरुपञ्चालाः प्राञ्चो यान्ति। सौम्यं चुरुम्। तस्माद्वसुन्तं व्यवसायोदयन्ति। सावित्रं द्वादेशकपालम्। तस्मौत्पुरस्ताद्यवानाः सिवेत्रा विरुन्थते। बार्हस्पत्यं चुरुम्। सुवित्रेव विरुध्यं

ब्रह्मणा यवानादंधते। त्वाष्ट्रमुष्टाकंपालम्॥१२॥

क्पाण्येव तेने कुर्वते। वैश्वान्रं द्वादेशकपालम्। तस्मां अघन्ये नैदांघे प्रत्यश्चे

कुरुपञ्चाला याँनित। सार्यस्वतं चुरु निर्वपति। तस्मौत्प्रावृषि सर्वा वाचो वदन्ति। पौष्णेन व्यवस्यन्ति। मैत्रेणं कुषन्ते। वारुणेन विधृता आसते। क्षेत्रपृत्येनं पाचयन्ते। आदित्येनादंधते॥१३॥

मासिमास्येतानि ह्वी॰षि निरुष्याणीत्याहुः। तेनैवर्तन्प्रयुङ्ग इति। अथो

खल्वांहुः। कः संवथ्म्रं जीविष्युतीति। षडेव पूर्वेद्युर्निरुष्याणि। षडुंत्तरेद्युः।

| 171                        | T<br>Z   | ×                                     |
|----------------------------|--|---------------------------------------|
|                            | उत्तरेषाम्                                       |                                       |
|                            | ( <del>)</del>   ( <del>)</del>   ( <del>)</del> |                                       |
|                            | · दक्षिणा।<br>मिस्र्रे॥१४॥                       |                                       |
|                            | हः पूर्वेषां<br>त्रोकस्य सम                      |                                       |
|                            | रथवाहनवाह<br>सुवर्गस्य ल                         |                                       |
| भू १३                      | दक्षिणो .<br>  युनक्ति।                          | न्त्येके च॥                           |
| अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १) | तेनैवर्तन्प्रयुद्धे।<br>संब्रुसरस्यैवान्ती       | ्वाष्ट्रम्षाकेपालं दधते युन्त्येकं च॥ |

म्रिक्हः। यदक्ष्योः॥१५॥

स शाँर्दूलः। यत्कर्णयोः। स वृकंः। य ऊर्ध्वः। स सोमंः। याऽवांची। सा सुराँ। त्रयाः सक्तेवो भवन्ति। इन्द्रियस्यावंरुद्धो। त्र्याणि लोमानि॥१६॥

त्विषिमेवावं रुन्ये। त्रयो ग्रह्मैः। वीर्यमेवावं रुन्ये। नाम्नां दशमी। नव वै पुरुषे प्राणाः। नाभिदेश्मी। प्राणा इन्द्रियं वीर्यम्। प्राणानेवेन्द्रियं वीर्यं यजमान आत्मन्यंते। सीसेन क्रीबाच्छप्यांणि कीणाति। न वा पुतदयो न हिरंण्यम्॥१७॥

तत्क्रेलमभवत्। यद्द्वितीयम्। तद्वदंरम्। यत्तृतीयम्। तत्क्रकेन्धुं। यत्रुस्तः। स यथ्सीसम्। न स्त्री न पुमान्। यत्क्रीबः। न सोमो न सुरा। यथ्सौत्रामणी इन्द्रंस्य सुषुवाणस्यं दश्योद्दियं वीयं परांऽपतत्। स यत्प्रंथमं निरष्ठीवत्।

172 समृष्ट्री। स्वाद्वीन्त्वां स्वादुनेत्यांह। सोममेवेनां करोति। सोमोंऽस्यिश्विभ्यां पच्यस्व सरंस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णो पच्यस्वेत्याह। एताभ्यो ह्यंषा देवताभ्यः पच्यते। तिसः स\*सृष्टा वसति॥१८॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

तिस्रो हि रात्रीः कीतः सोमो वसीते। पुनातुं ते परिस्रुतमिति यजुंषा पुनाति व्यावृत्त्ये। प्वित्रेण पुनाति। प्वित्रेण हि सोमं पुनन्ति। वारेण शश्वेता तनेत्याह। वारेण हि सोमं पुनन्ति। वायुः पूतः पवित्रेणेति नैतयां पुनीयात्। व्युद्धा ह्येषा। अतिप्वितस्यैतयां पुनीयात्। कुविद्ङेत्यनिंरुक्तया प्राजापृत्ययां गृह्णाति॥१९॥

अनिरुक्तः प्रजापीतः। प्रजापेतेरास्यै। एकेयुचां गृह्णाति। एकप्रैव यज्ञेमाने बीर्यं दधाति। आश्विनं धूम्रमालेभते। अश्विनौ वै देवानां भिषजौं। ताभ्यामेवास्मै भेषुजं -क्रोति। सार्स्वतं मेषम्। वाग्वै सर्स्वती। वाचैवैनं भिषज्यति। ऐन्द्रमृष्भ «

मैन्द्रत्वायं॥२०॥

अक्ष्योलींमांनि हिरंण्यं वसति गृह्णाति भिषज्यत्येकं च॥∎

173 नैतेषाँ पशूनां पुंरोडाशां भवन्ति। ग्रहंपुरोडाशा॒ ह्येते। युव॰ सुरामंमिथिनेति रुक्यूप आलंभते। एक्षेवास्मिन्निन्द्र्यं वीर्यं दथाति। नास्मे भ्रातृेव्यं जनयति। यत्रिषु यूपैष्वालभेता बृहिर्धाऽस्मादिन्द्रियं वीर्यं दध्यात्। आतृष्यमस्मै जनयेत्। सर्वदेवत्ये याज्यानुबाक्ये भवतः। सर्वा एव देवताः प्रीणाति॥२१॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

ब्राह्मणं परिक्रीणीयादुच्छेषंणस्य पातारम्। ब्राह्मणो ह्याहुत्या उच्छेषंणस्य पाता। यदि ब्राह्मणं न विन्देत्। वत्मीकवपायामवं नयेत्। सैव ततः प्रायंश्वित्तः। यद्वे सौत्रामण्ये व्युद्धम्। तदेस्ये समृद्धम्। नानादेवत्यौः प्शवंश्व पुरोडाशांश्व भवन्ति समृद्धे। ऐन्दः पंशूनामुत्तमो भवति। ऐन्दः पुरोडाशांनां प्रथमः॥२२॥

इन्द्रिये एवास्मै स्मीची दथाति। पुरस्तांदनूयाजानां पुरोडाशैः प्रचंरति। पृशवो

वै पुरोडाशाः। पुशूनेवावं रुन्यो। ऐन्द्रमेकांदशकपालं निर्वपति। इन्द्रियमेवावं रुन्ये।

सावित्रं द्वादेशकपाऌं प्रसूँत्ये। वारुणं दशकपालम्। अन्तृत एव वर्षणुमवं यजते।

वडंबा दक्षिणा॥२३॥

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

ब्रह्मणैव युज्ञस्य व्युंख्मपि वपति। पुरोडाशीवानेष पशुर्भवति। न ह्येतस्य ग्रहें गृह्मन्ति। सोमेप्रतीकाः पितरस्तृष्णुतेति शतातृण्णायार् समवेनयति॥२४॥

उत वा एषाऽश्वर्षं सूते। उताऽर्थंतरम्। उत सोमं उत सुराँ। यथ्सौत्रामणी समृंखै। बार्हस्पत्यं पृशुं चंतुर्थमंतिपवितस्या लेभते। ब्रह्म वै देवानां बृहस्पतिः।

पाप्वस्यसस्य व्यावृत्ये। हिरंण्यमन्तरा धांरयति। पूतामेवेनां जुहोति। श्रतमानं भवति। श्रतायुः पुरुषः श्रतिन्द्रियः। आयुष्येविन्द्रिये प्रति तिष्ठति। यत्रेव श्रतातृण्णां

श्तायुः पुरुषः श्रोनिद्रयः। आयुष्येविन्द्रिय प्रति तिष्ठति। दक्षिणेऽग्रौ जुहोति।

तत्रिदंधाति प्रतिष्ठित्यै। पितृन् वा एतस्यैन्द्रियं वीर्यं गच्छति। य॰ सोमोऽति

धारयंति॥ २५॥

पवेते। पितृणां याँज्यानुवाक्यांभिरुपं तिष्ठते। यद्वास्यं पितृनिन्द्रियं वीर्यं गच्छंति।

अथो त्रीणि वै युज्ञस्यीन्द्रयाणि। अष्वपुर्होतौ ब्रह्मा। त उपेतिष्ठन्ते। यान्येव

तद्वावं रुन्ये। तिस्मिम्यूपं तिष्ठते। तृतीये वा इतो लोके पितरं। तानेव प्रीणाति।

175

युजस्यैन्द्रियाणि। तैर्वास्मै भेषजं करोति॥२६॥ प्रोणाति प्रथमो दक्षिणा समवनयति धारयंतीन्द्रियाणि चत्वारि च॥🕳 अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अग्निष्टोममग्र आहेरति। यज्ञमुखं वा अग्निष्टोमः। यज्ञमुखमेवारभ्यं सवमा केमते। अथैषोऽभिषेचनीयंश्वतुत्त्रिङ्शपंवमानो भवति। त्रयंत्रिङ्शदे देवताः। ता एवाऽऽप्रोति। प्रजापंतिश्वतुत्त्रिङ्शः। तमेवाऽऽप्रोति। स्॰्शर एष स्तोमानामयंथापूर्वम्। यद्विषेमाः स्तोमाः॥२७॥

यथ्समाः

आत्मना एतावान् वै युज्ञः। यावान्यवेमानाः। अन्तः श्लेषणं त्वा अन्यत्। पर्वमानाः। तेनाऽस<sup>५</sup>शरः। तेनं यथापूर्वम्। आत्सनैवाग्निष्टोमनुर्प्रोति।

पुण्यों भवति। प्रजा वा उक्थानि। पृशवं उक्शानि। यदुकथ्यों स्तोमाः पृशवं उक्थान्येकं च॥∎ सन्तंत्ये॥ २८॥

भवत्यन

उपं त्वा जामयो गिर् इति प्रतिपद्भवति। वाग्वै वायुः। वाच एवैषोऽभिषेकः

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

सर्वासामेव प्रजानारं सूयते। सर्वा एनं प्रजा राजीते वदन्ति। एतमु त्यन्दश् क्षिप् इत्योह। आदित्या वै प्रजाः। प्रजानामेवेतेनं सूयते। यन्ति वा एते यंज्ञमुखात्।

ये संम्मायां अकन्॥२९॥

तस्मादुद्वेतीर्भवन्ति। सौर्यनुष्टुर्गुत्तमा भेवति। सुवर्गस्यं लोकस्य सन्तंत्यै। यो वै सवादेति। नैनर् सव उपनमति। यः सामेभ्य एति। पापीयान्थ्सुषुवाणो भेवति।

एतानि खलु वै सामानि। यत्पृष्ठानि। यत्पृष्ठानि भवंनि॥३१॥

यदाह् पर्वस्व वाचो अग्रिय इति। तेनैव यंज्ञमुखात्रयंन्ति। अनुष्टुक्प्रंथमा भेवति। अनुष्टुर्गुत्तमा। वाग्वा अनुष्टुक्। वाचैव प्रयन्ति। वाचोद्यंन्ति। उद्वेतीर्भवन्ति। उद्वद्वा

अंनुष्टुमों रूपम्। आनुष्टुमो राजन्यः॥३०॥

तैरेव स्वात्रैति। यानि देवराजाना॰ सामानि। तैरमुर्ष्णिक्षोक ऋप्रोति। यानि मनुष्यराजाना॰ सामानि। तैर्स्मिक्षोक ऋप्रोति। उभयोरेव लोकयोर् ऋप्रोति।

देवलोके चं मनुष्यलोके चं। एकवि॰्शोऽभिषेचनीयंस्योत्नमो भंवति। एकवि॰्शः

176

177

केशवप्नीयंस्य प्रथमः। स्मृद्शो दंशपेयंः॥३२॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

विड्डा एंकवि॰्शः। राष्ट्रं संप्तदशः। विशं एवेतन्मंध्यतोऽभिषिच्यते। तस्माद्वा एष विशां प्रियः। विशो हि मध्यतोऽभिषिच्यते। यद्वा एंनमदो दिशोऽनुं व्यास्थापयेन्ति। तथ्मुंवर्गं लोकमभ्या रोहति। यदिमं लोकं न प्रंत्यवरोहेंत। अतिज्ञनं वेयात्। उद्वां माद्येत्। यदेष प्रंतीचीनंः स्तोमो भवंति। इममेव तेनं लोकं प्रत्यवरोहित। अथो अस्मिन्नेव लोकं प्रति तिष्ट्रत्यनुंन्मादाय॥३३॥

हिरंण्यमभवत्। यद्रुक्ममंन्त्रदेधाति। इन्द्रियस्यं वार्यस्यानिर्घाताया श्रातमानो भवति

शृतक्षेरः। शृतायुः पुरुषः शृतेन्द्रियः। आयुष्येवेन्द्रिये प्रति तिष्ठति। आयुर्वै हिरंण्यम्। आयुष्यां एवेनमम्प्यति क्षरन्ति। तेजो वै हिरंण्यम्। तेजस्यां एवेनमम्प्यति क्षरन्ति।

ड्डयं वै रंजुता। असौ हरिणी। यद्रुक्गौ भवंतः। आम्यामेवैनमुभयतः परि

अक्रेत्राज्न्यों भवन्ति दश्पेयों माधे्त्रीणिं च॥■

गृह्णाति। वरुणस्य वा अभिषिच्यमानस्यापेः। इन्द्रियं वीर्यं निरंघ्नन्। तथ्सुवर्णे ९

178

वर्चो वै हिरंण्यम्। वर्चस्यां एवैनंम्भ्यति क्षरन्ति॥३४॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

अप्रतिष्ठितो वा एष इत्योहुः। यो राजमूर्येन यजंत इति। यदा वा गुष एतेन हिरात्रेण यजेते। अर्थ प्रतिष्ठा। अर्थ संबध्सरमीप्रोति। याविन्ति

श्रतक्षेरोऽष्टो चं॥∎

मंबर्ध्सरस्याहोरात्राणि। तावेतीरेतस्यं स्तोत्रीयाः। अहोरात्रेष्वेव प्रति तिष्ठति।

अग्रिष्टोमः पूर्वमहेर्भवति। अतिरात्र उत्तरम्॥३५॥

नानैवाहोरात्रयोः प्रति तिष्ठति। पौर्णमास्यां पूर्वमहंर्भवति। व्यष्टकायामुत्तरम्। नानैवार्धमासयोः प्रति तिष्ठति। अमावास्यायां पूर्वमहंर्भवति। उद्दृष्ट उत्तरम्। नानैव मासेयोः प्रति तिष्ठति। अथो खले। ये एव समानपक्षे पुण्याहे स्याताम्। तयोः

अपुशुच्यो द्विरात्र इत्योहुः। द्वे ह्येते छन्दंसी। गायुत्रं च त्रेष्टुभं च।

कार्यं प्रतिष्ठित्ये॥३६॥

जगंतीम्न्तर्यन्ति। न तेन् जगंती कृतेत्यांहुः। यदेनान्तुतीयसब्ने कुर्वन्तीति।

179 यदा वा एषाऽहीनस्याहर्भजोते। साह्नस्यं वा सर्वनम्। अथेव जगेती कृता। अधं पश्चव्यः। व्युष्टिर्वा एष द्विंग्त्रः। य एवं विद्वान्द्विंगत्रेण् यजेते। व्येवास्मो © ~ **T** उच्छति। अथो तमे <u>ए</u>वापे हते। अग्रिष्टोममेन्तत आ हंरति। अग्रिः सर्वा देवताः। देवतास्वेव प्रति तिष्ठति॥३७॥ वरुणस्य जामि वा ईंश्वर आंध्रेयमिन्द्रस्य यत्रिष्वंग्निष्यं त्वेयं वै रंज्ताऽप्रतिष्ठितो दशं॥१०॥ वरुणस्य यद्भिभ्यां यत्रिषु तस्मादुद्वतीः सुप्तत्रि शत्॥३७॥ उत्तेरं प्रतिष्ठित्यै पशुब्यः सुप्त ची॥\_ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १) वरुणस्य प्रति तिष्ठति॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके अष्टमः प्रपाठकः समाप्तः॥

|| **724:** || **72:** ||

∥अष्टकम् २॥

## ॥तैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके प्रथमः प्रपाठकः॥

अङ्गिरसो वै स्त्रमांसत। तेषां पृश्चिर्घर्मधुगांसीत्। सर्जीषेणांजीवत्। तैऽब्रुवन्

तासाँ जग्प्वा रुप्यन्त्यैत्। तेऽब्रुवन्। क इदमित्थमंकरिति। वयं भागपेयीमेच्छमाना इति पितरौऽब्रुवन्। किं वो भागपेयमिति। अग्रिहोत्र यावेन्तः स्तोका अवापेद्यन्ता तावेतीरोषेघयोऽजायन्ता ता जाताः पितरो कस्मे नु स्त्रमास्महे। यैऽस्या ओषंधोर्न जनयांम इति। ते दिवो बृष्टिंमसुजन्त विषेणांत्रिम्पन्॥१॥

एव नोऽप्यस्त्वित्यंब्रुवन्। तेभ्यं पृतद्भांग्येयं प्रायंच्छन्। यद्धत्वा निमार्छि। ततो वै

स्वदंन्तेऽस्मा ओषंघयः। ते वृथ्समुपावांसुजन्। इदं नों हृव्यं प्रदांपुयेति। -त ओषंधीरस्वदयन्। य पृबं वेदं॥२॥

181 तद्वीचिकिथ्सत्। जुहवानी(३) मा होषा(३)मिति। तिद्वीचिकिथ्साये जन्मे। य एवं विद्वान् विचिकिथ्मति॥५॥ सौऽब्रबीद्वरं वृणे। दशे मा रात्रीजांतं न दोहन्। आ<u>सङ्</u>गवं मात्रा सह चंराणीति। तस्मौद्वथ्सं जातं दश्च रात्रीनं दुहन्ति। आसङ्गवं मात्रा सह चंरति। बारेवृत्ङु प्रजापंतिर्षिमेसुजता तं प्रजा अन्वंसुज्यन्ता तमेभाग उपास्ता सौऽस्य तद्घृतमंभवत्। तस्माद्यस्यं दक्षिणतः केशा उन्मृंधाः। ताञ्ज्यंष्ठलक्ष्मी प्रजामिरपौकामत्। तमेवरुरुसमानोऽन्वैत्। तमेवरुधं नाशंक्रोत्। स तपोऽतप्यत। सौऽग्रिरुपारमृतातापि वै स्य प्रजापितिरिति। स रुराटादुदंमृष्ट॥४॥ प्रांजापुत्येत्योहुः। यद्रराटांदुदमृष्टा तस्मांद्रराटे केशा न संन्ति। तद्ग्रौ प्रागृह्णात्। ह्यंस्य। तस्मौद्वथ्सः संसृष्टप्यः कृद्रो घातुंकः। अति हि स्न्यान्ययंति॥३॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् २) अ्लिम्पन्वेद् घातुंक् एकं च॥🕳

वसीय एव चेतयते। तं वागुन्यंवदञ्जुह्धीतिं। सौऽब्रवीत्। कस्त्वमुसीतिं। स्वैव ते

## वागित्येब्रवीत्। सोऽजुहोध्स्वाहेतिं। तथ्स्वांहाका्रस्य जन्मं। य पुवर्श्स्वांहाका्रस्य जन्म वेदं। क्रोति स्वाहाका्रेणं वीर्यम्। यस्यैवं विदुषंः स्वाहाकारेण जुह्नंति॥६॥ भोगांयैवास्यं हुतं भवति। तस्यां आहुत्यें पुर्षषमसुजत। द्वितीयमजुहोत्।

सोऽश्वेमसुजत। तृतीयेमजुहोत्। स गामेसुजत। चृतुर्थमंजुहोत्। सोऽविमसुजत। पश्चममंजुहोत्। सोऽजामेसुजत॥७॥

सौऽग्निर्शक्षेत्। आहुतीभिके मौऽऽप्रोतीति। स प्रजापंति पुनः प्राविशत्। तं प्रजापेतिरब्रवीत्। जायुस्वेति। सौऽब्रवीत्। किं भागधियमिभे जीनष्य इति।

तस्मांदग्निहोत्रमुंच्यते। तद्भ्यमांनमादित्यौऽब्रवीत्। मा हौषीः। उभयोर्बे

नावेतदिति। सौऽग्निरंब्रवीत्। कृथं नौ होष्युन्तीति। सायमेव तुभ्यं

प्रातमिह्यमित्येब्रवीत्। तस्मोद्गये साय॰ ह्यते। सूर्याय प्रातः॥९॥

तुभ्यंमेवेद १ ह्याता इत्यंब्रवीत्। स एतद्धांग्येयंमुभ्यंजायत। यदंग्रिहोत्रम्॥८॥

आंग्रेयी वै रात्रिः। ऐन्द्रमहंः। यदनुदिते सूर्ये प्रातर्जुहुयात्। उभयमेवाग्नेयङ्

स्यौत्। उदिते सूर्ये प्रातर्जुहोति। तथाऽग्रये साय॰ ह्यते। सूर्याय प्रातः। रात्रिं वा अनुं प्रजाः प्र जायन्ते। अह्ना प्रतिं तिष्ठन्ति। यथ्सायं जुहोति॥१०॥ प्रैव तेनं जायते। उदिते सूर्यं प्रातर्जुहोति। प्रत्येव तेनं तिष्ठति। प्रजापंतिरकामयत् प्रजायेयेति। स एतदिभ्रिहोत्रं मिथुनमंपश्यत्। तदुदिते प्रैव जायते। अथो यथा दिवा प्रजानन्नेति। ताहगेव तत्। अथो खल्वाहुः। यस्य वै द्वौ पुण्यौ गृहे वसीतः। यस्तयीर्न्य॰ राधयेत्यन्यं न। उुभौ वाव स मूर्येऽजुहोत्। यजुषाऽन्यत्। तूष्णीमन्यत्। ततो वै स प्राजायत। यस्यैवं विदुष ताबृच्छुतीति। अभिं वावाऽऽदित्यः सायं प्र विशति। तस्मांद्भिर्दूरात्रक्तं ददशे। उदिते सूर्यैऽभिहोत्रं जुह्नीते॥११॥

उद्यन्तं वावाऽऽदित्यम्भिरनुं स्मारोहति। तस्मौष्ट्म एवाभ्रेदिवां ददशे। यद्भये

उुमे हि तेजंसी सम्मद्येते॥१२॥

मायं जुंहुयात्। आ सूर्याय वृश्चेत। यथ्सूर्याय प्रातर्जुंहुयात्। आऽग्रये वृश्चेत।

द्वताभ्यः सुमदं दध्यात्। अग्निज्योतिज्योतिः सूर्यः स्वाहेत्येव साय ६ होत्व्यम्।

मूर्यो ज्योतिज्योतिरम्भः स्वाहेति प्रातः। तथोभाभ्यारं सायरं ह्यते॥१३॥

उुमाभ्यां प्रातः। न देवताभ्यः स्मदं दधाति। अग्निज्योतिरित्यांह। अग्निबै

रेतोषाः। प्रजा ज्योतिरित्योह। प्रजा एवास्मै प्र जनयीते। सूर्यो ज्योतिरित्योह। प्रजास्वेव प्रजातासु रेतो दथाति। ज्योतिर्भिः स्वाहेत्योह। प्रजा एव प्रजाता

पथाऽतिथये प्रद्रेताय शून्यायांवस्थायांहार्ये हर्गन्ता ताद्दगेव तत्। क्राऽऽह्

ततस्तद्भवतीत्योहः। यथ्म न वेदं। यस्मे तद्धर्न्तीति। तस्माद्यदौष्सं जुहोति।

तूष्णीमुत्तंयामाहीतें जुहोति। मिथुनत्वाय् प्रजात्यै। यदुदिते सूर्यं प्रातर्जुहुयात्।

अस्यां प्रतिष्ठापयति॥१४॥

अमृष्ट विचिकिश्सीते जुह्नैत्युजामंसृजताप्रिहोत्र∜ सूर्याय प्रातर्जुहोति जुह्नीत सम्मधेते हूयते स्थापयति सम्प्रति हे चं॥∎ि२्

तदेव सम्मति। अथो यथा प्रार्थमौष्सं परिवेवैष्टि। ताहगेव तत्॥१५॥

कुद्रो वा एषः। यद्ग्रिः। पतीं स्थाली। यन्मध्येऽग्नेरंधिश्रयंत्। कृद्राय पत्नीमपि दघ्यात्। प्रमायुका स्यात्। उदीचोऽङ्गारात्रिक्ह्याधि श्रयति। पत्निये गोपीथाये।

घुमों वा एषोऽशान्तः। अहं रहः प्र वृज्यते। यदंग्रिहोत्रम्। प्रतिषिश्चेत्पशुकांमस्य। शान्तिमिव हि पंशुच्यम्। न प्रतिषिश्चद्वह्मवर्चसकांमस्य। सिमेद्धमिव हि

व्यंन्तान्करोति। तथा पत्यप्रमायुका भर्वाते॥१६॥

पर्योग्न करोति। रक्षंसामपंहत्ये। त्रिः पर्योग्ने करोति। त्र्यांकृष्टि यज्ञः। अथों

मेध्यत्वाये। यत्प्राचीनंमुद्द्यासयैत्। यजंमान॰ शुचाऽर्पयेत्। यद्देक्षिणा। पितृदेवृत्यঙ्

स्यात्। यत्रत्यक्॥१९॥

रुतद्स्मास्रोकात्। अगेतं देवलोकम्। यच्छृत\* हविरनेभिघारितम्। अभि

द्योतयति। अभ्येवेनंद्घारयति। अथों देवत्रेवेनंद्रमयति॥१८॥

तत्पंश्व्यम्। यञ्जहोति। तद्ग्रह्मवर्चीस। उभयमेवाकः। प्रच्युतं

ब्रह्मवर्चसम्। अथो खलु। प्रतिषिच्यंमेव। यत्प्रतिष्अति॥१७॥

186

तामेवैनदनूद्वांसयति शान्त्यै। वर्त्मं करोति। युज्ञस्य सन्तंत्ये। निष्टंपति। उपुेव तथ्स्तृंणाति। चृतुरुत्रयति। चतुष्पादः पशवंः॥२०॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

पृश्नेवावे रुन्ये। सर्वान्यूर्णानुत्रेयति। सर्वे हि पुण्यां राखाः। अनूच उत्रेयति।

प्रजायां अनूचीनत्वायं। अनूच्येवास्यं प्रजाऽर्धुका भवति। सम्मृंशति व्यावृंत्ये। नाहोष्युत्रुपं सादयेत्। यदहोष्यत्रुपसादयैत्। यथाऽन्यस्मां उपनिषायं॥२१॥

अन्यस्मै प्रयच्छीति। ताद्रगेव तत्। आऽस्मै वृश्येत। यदेव गार्ह्पत्येऽधि

श्रयंति। तेन् गार्हपत्यं प्रोणाति। अग्निर्धिनेत्। आहुंतयो माऽत्यैष्य्न्तीति। स

रुता समिधेमपश्यत्। तामाऽधेता ततो वा अ्रुप्रावाहुंतयोऽप्रियन्त॥२२॥

यदेन समयेच्छत्। तथ्समिषेः समित्वम्। समिष्मा देधाति। समेवैनं

यच्छति। आह्तीनां धृत्यै। अथों अभिहोत्रमेवेध्मवेत्करोति। आह्तीनां प्रतिष्टित्यै

ब्रह्मवादिनो वदन्ति। यदेकार् समिधेमायाय् द्वे आदुती जुहोति। अथ् कस्यार्

187 यह्ने समिषांवा दुष्यात्। आतृंव्यमस्मै जनयेत्। एकार् सामिषंमाषायं। यजुंषा-सुमिधि द्वितीयामाहीते जुहोतीति॥२३॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

ऽन्यामाहीतें जुहोति। उमे एव समिद्दंती आहुती जुहोति। नास्मै भातृेव्यं जनयति। आदींपायां जुहोति। समिद्धमिव हि ब्रह्मवर्चसम्। अथो यथाऽतिथिं ज्योतिष्कृत्वा पीरे बेबैष्टि। ताट्गेव तत्। चृतुरुत्रयति। द्विर्जुहोति। तस्मौद्विपाचतुष्पादमति।

मुब्ति प्रतिषिश्चति गमयति प्रत्यक्पुशवं उपनिधायांष्प्रियन्तेति तच्त्वारि च॥■

उत्तरावेतीं वै देवा आहेतिमजुहवुः। अवाचीमसुराः। ततो देवा अभेवन्।

पराऽसुराः। यं कामयेत् वसीयान्थ्स्यादिति। कनीयस्तस्य पूर्वे हुत्वा। उत्तरं भूयों जुहुयात्। एषा वा उंत्त्रावृत्याहीतेः। तान्देवा अंजुहबुः। तत्रस्तेऽभवन्॥२५॥

यस्येवं जुह्नीते। भवंत्येव। यं कामयेत् पापीयान्थस्यादिति। भूयस्तस्य पूर्वे ५

हुत्वा। उत्तंरं कनीयो जुहुयात्। एषा वा अवाच्याहुतिः। तामसुरा अजुहबुः। तत्रस्ते अथौ द्विपद्येव चतुष्पद्ः प्रतिष्ठापयति॥२४॥

188

प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अनंनुष्यायिनमेवैनं करोति। अग्निहोत्रस्य वै स्थाणुरंस्ति। तं य ऋच्छेत्। युज्रस्थाणुमुच्छेत्। एष वा अग्निहोत्रस्यं स्थाणुः। यत्पूर्बाऽऽहीतेः। तां हुत्वोपं सादयत्यजामित्वाय। अथो व्यावृंत्यै। गार्हपत्यं प्रतीक्षते। परांऽभवन्। यस्यैवं जुह्वति। परैव भेवति॥२६॥

यदुत्तंरयाऽभि जुंहुयात्॥२७॥

युज्रस्थाणुमृच्छेत्। अतिहायु पूर्वामाहीतं जुहोति। युज्यस्थाणुमेव परि वृणक्ति। अथोू आतृव्यमेवास्वाऽति कामति। अवाचीन् सायमुपंमार्छि। रेतं एव तद्देथाति। द्वर्जुहोति। अथु क्रे द्वे आहुती भवत् इति। अग्नौ वैश्वान्र इति ब्रूयात्। एष वा अग्निवैश्वान्रः। यद्वौह्मणः। हुत्वा द्विः प्राथ्ञांति। अग्नावेव वैश्वान्रे द्वे आहुती ऊर्जं प्रातः। प्र जनयत्येव तत्। ब्रह्मवादिनो वदन्ति। चतुरुन्नयति॥२८॥

षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्डा ऋतवंः। ऋतूनेव प्रीणाति। ब्रह्मवादिनो वदन्ति। किं जुहोति। द्विजुहोति। द्विनिमार्षि। द्विः प्राश्र्याति॥२९॥

र्वुत्यमग्रिहोत्रमिति। वैश्वदेवमिति ब्रूयात्। यद्यजुषा जुहोति। तदैन्द्राग्रम् र्तात्यंतृणाम्। यत्रिमार्छि। तदोषंधीनाम्। यद्द्वितीयम्। यतूष्णीम्। तत्रांजापत्यम्॥३०॥

<u> उदंद्व र्यावृत्याचांमीते॥ ३१॥</u>

मुमुर्षीनेव प्रीणाति। दृक्षिणा प्यांवेतिते। स्वमेव वीर्यमनु प्यांवेतिते।

तस्माद्दक्षिणोऽर्धं आत्मनो बीयांबत्तरः। अथो आदित्यस्यैवावृतमनु प्यांबर्तते। हुत्वोप् समिन्ये॥३२॥

ब्रह्मवर्चसस्य समिष्टी। न ब्राहिरनु प्र हेरेत्। असर्धस्थितो वा एष यज्ञः। यदेशिहोत्रम्। यदेनु प्रहरेत्। यज्ञं विच्छिन्द्यात्। तस्मान्नानुं प्रहत्यम्। यज्ञस्य सन्तेत्यै। अपो नि नेयति। अवभुधस्यैव रूपमेकः॥३३॥ यत्प्राश्र्याति। तन्मंनुष्यांणाम् आत्मनो गोपी्थायं। निर्णेनिक् शुद्धौ। निष्पति स्वृगाकृत्ये। उद्दिशति यदाचामीते। तद्गर्भाणाम्। तस्माद्गर्भा अनंश्जन्तो वर्धन्ते।

ब्रह्मवादिनो वदन्ति। अग्रिहोत्रप्रांथणा यज्ञाः। किं प्रांथणमग्रिहोत्रमिति। वथ्सो वा अग्रिहोत्रस्य प्रायंणम्। अग्रिहोत्रं यज्ञानाम्। तस्यं पृथिवी सदेः। अन्तरिक्षमाग्नीद्धम्। द्यौर्हविर्धानम्। दिव्या आपः प्रोक्षेणयः। ओषेधयो थुभुबु-भुबाते जुहुयात्रयति माष्टिं द्विः प्राक्ष्ञांति प्राजापुत्यमाचामतीन्धेऽकः॥■

ब्राहिः॥३४॥

वनुस्पतंय इष्मः। दिशः परिषयः। आदित्यो यूपेः। यजमानः पृशुः। सुमुद्रो-

ऽवभृथः। संवृथ्मरः स्वंगाकारः। तस्मादाहिताग्रेः सर्वमेव बर्हिष्यं दुत्तं भेवति। यथ्मायं जुहोति। रात्रिमेव तेनं दक्षिण्यां कुरुते। यत्रातः॥३५॥

अहेर्व तेनं दक्षिण्यं कुरुते। यत्ततो ददांति। सा दक्षिणा। यावंन्तो वै देवा अहेत्मादन्। ते परोऽभवन्। त पृतदेभिहोत्र॰ सर्वस्येव संमवदायोजुहकुः तस्मोदाहुः। अग्निहोत्रं वे देवा गृहाणां निष्कृतिमपश्यत्रिति। यथ्सायं जुहोति तित्रेया पुव तद्धुताद्यांय॥३६॥

यत्ततोऽश्र्ञाति। हुतमेव तत्। द्वयोः पर्यसा जुहुयात्पुशुकांमस्य। एतद्वा अग्निहोत्रं

मिथुनम्। य एवं वेदे। प्र प्रजयां पृशुभिमिथुनैर्जायते॥३७॥

इमामेव पूर्वया दुहे। अमूमुत्तंरया। अधिश्रित्योत्तंरमा नंयति। योनावेव तद्रेतंः सिश्चति मुजनेने। आज्येन जुहुयातेजंस्कामस्य। तेजो वा आज्यम्। तेजुस्व्येव

मेवति। पर्यसा पृशुकामस्य। एतद्वे पंशूनाः कृपम्। कृपेणेवास्मे पृशूनवं

रुन्दे∥३८∥

पृशुमानेव भेवति। दुप्रेन्द्रियकांमस्य। इन्द्रियं वै दिधे। इन्द्रियाव्येव भेवति। युवाग्वौ ग्रामेकामस्योष्धा वै मेनुष्यौः। भागुधेयेनेवास्मे सजातानवं रुन्धे। ग्राम्येव

मेवति। अयंज्ञो वा एषः। योऽसामा॥३९॥

अन्तरिक्षं वामदेव्यम्। वामदेव्यस्यैष वर्णः। द्विजुंहोति। द्यक्षरं बृहत्। बृहत एष

चृतुरुत्रयति। चतुरक्षरः रथन्त्रम्। रथन्त्रस्यैष वर्णः। उपरीव हरति।

यजीमानुस्यापेराभावाय। यत्पातः। अहं एव तद्धुताद्याय। यजीमानुस्यापेराभावाय।

192

प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

यो वा अग्निहोत्रस्योपसदो वेदं। उपैनमुप्सदो नमन्ति। विन्दतं उपस्तारमै। <u>उ</u>त्रीयोपं सादयति। पृथिवीमेव प्रीणाति। होष्यनुपंसादयति। अन्तरिक्षमेव

वर्णः। अग्निहोत्रमेव तथ्सामंन्वत्करोति॥४०॥

त्रीणाति। हुत्वोपं सादयति। दिवमेव प्रीणाति। एता वा अग्निहोत्रस्योप्सदंः॥४१॥

य एवं वेदं। उपैनमुप्सदो नमन्ति। विन्दतं उपस्तारमाँ। यो वा

अग्निहोत्रस्याश्रोवितं प्रत्याश्रोवित<u>ः</u> होतोरं ब्रह्माणं वषद्वारं वेदे। तस्य त्वेव हुतम्। प्राणो वा अग्निहोत्रस्याश्रोवितम्। अपानः प्रत्याश्रोवितम्। मनो होताै।

न्ता एनं प्रजयो पशुनिस्तर्पयेयुः। स्जूर्देवैः सायं यावेभिरिति साय सम्मुशति। स्जूर्देवैः प्रावानो प्रावानो ये चे

य एवं वेदे। तस्य त्वेव हुतम्। सायं यावानश्च वै देवाः प्रांतर्यावाणश्चाभिहोत्रिणो

नक्षेत्र्रह्माः निमेषो वषद्गरः॥४२॥

गृहमागंच्छन्ति। तान् यत्र तर्पयैत्। प्रजयाऽस्य पृशुभिवि तिष्ठेरन्। यत्तर्पयैत्।

प्रजापंतिरकामयताऽऽत्मन्वन्मे जायेतेति। सोऽजुहोत्। तस्याऽऽत्मन्वदंजायत। तस्मान्मत्पापीयाश्सो आतेव्या इति। चतुरुत्रयति। द्विज़ैहोति। समिध्संप्तमी। स्प्तपंदा शक्नेरी। शाक्ररो वज्रेः। अग्रिहोत्र एव तथ्सायं प्रांतर्वज्रं यजमानो आतेव्याय् प्र हेरति। भवत्यात्मना। पराऽस्य आतेव्यो भवति॥४४॥ बुर्हिः प्रातरहुताद्याय जायते रुन्धेऽसामा केरोत्येता वा अप्रिहोत्रस्योपसदो वषद्वारश्चं प्रातर्यावाणो वज्रुक्षीणे च॥==== 🗲 🛚 अग्निबांयुरांदित्यः। तेऽब्रुवन्। प्रजापंतिरहोषीदात्मन्वन्मे जायेतेति। तस्यं वृयमंजनिष्महि। जायंतात्र आत्मन्वदिति तेऽजुहबुः। प्राणानांमग्निः। तनुबै तानेबोभयार्थस्तर्पयति। त एनं तृपाः प्रजयां पृशुभिंस्तर्पयन्ति। अकृणो हं स्माहौपेवेशिः। अग्रिहोत्र एवाह<sup>ू</sup> सायं प्रांतर्वञ्चं भातृष्येभ्यः प्र हंरामि। प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् २) प्रातर्यावांणः॥४३॥ वायुः॥४५॥

चक्षुष आदित्यः। तेषारं हुतादंजायत् गौरेव। तस्यै पर्यास् व्यायेच्छन्त। ममं

तनुवां अहमिति वायुः। चक्षुषोऽहमित्यांदित्यः। य एव प्राणानामहौषीत्। तस्ये हुतादंजनीति। अग्नेर्हुतादंजनीति। तदीग्रहोत्रस्याग्निहोत्रत्वम्। गौर्वा अग्निहोत्रम्। य एवं वेदं। तौ वायुरंब्रवीत्। अनु मा भंजत्मिति। यदेव गार्हपत्ये-ऽधिश्रित्याहवनीयंमुभ्यंद्रवान्। तेन त्वां प्रीणानित्यंब्रताम्। तस्माद्यद्वार्हपत्ये-ऽधिश्रित्याहवनीयंमुभ्यंद्रविति। वायुमेव तेनं प्रीणाति। प्रजापेतिर्देवताः सृजमानः। हुतादेजम् ममेति। ते प्रजापेतिं प्रश्जमायम्। स आदित्यौऽग्निमंब्रबीत्। युत्रो मौ उँ एवं वेद् गौरीक्रोहोत्रमिति। प्राणापानाभ्यामेवाग्नि॰ समर्धयति। अर्व्यर्धकः जयात्। तत्रौ सहास्विति। कस्यै कोऽहौषीदिति प्रजापंतिरब्रबीत्कस्यै क् इति। अग्निमेव देवतानां प्रथममंसुजता सौऽन्यदांलम्यमिवित्वा॥४८॥ प्राणापानाभ्यां भवति॥४७॥ प्राणानांमृहमित्यभ्रिः॥४६॥

प्रजापंतिम्भि पर्यावंतता स मृत्योरंबिभेत्। सोंऽमुमांदित्यमात्मनो निरंमिमीत।

त॰ हुत्वा पराष्टुःयविर्तता ततो वै स मृत्युमपोजयत्। अपं मृत्युं जंयति। य एवं वेदे। तस्माद्यस्यैवं विदुषेः। उतैकाहमुत द्यहं न जुह्नीते। हुतमेवास्यं भवति। असौ रौद्रं गवि। बायव्योमुपंसृष्टम्। आर्थिनं दुह्यमानम्। सौम्यं दुग्धम्। बारुणमधि श्रितम्। वैश्वदेवा भिन्दवेः। पौष्णामुदेन्तम्। सार्क्वतं विष्यन्देमानम्। मैत्र १ शरंः। धातुरुद्वासितम्। बृह्स्यतेरुत्रीतम्। सवितुः प्र कौन्तम्। द्यावापृथिष्यः हियमाणम्। ुन्द्राग्रमुपंसन्नम्। अग्नेः पूर्वाऽऽहीतिः। प्रजापंतेरुत्तंरा। ऐन्द्र हुतम्॥५०॥ त्नुवै बायुर्गिर्भवत्यवित्वा भवत्येकं च॥🕳 ह्यांदित्यौऽग्रिहोत्रम्॥४९॥

द्क्षिण्त उपं सुजति। पितृलोकमेव तेनं जयति। प्राचीमा वेर्तयति। देव्लोकमेव

ज्यैष्टिनेयस्यं। यो वां गृतश्रोः स्यात्। अपंरौ दुह्यात्किनिष्ठस्यं कानिष्टिनेयस्यं। यो

तेनं जयति। उदींचीमावृत्यं दोग्धि। मृनुष्युलोकमेव तेनं जयति। पूर्वो दुह्याक्ष्येष्ठस्यं

उद्वांसित∜ सृप्त चां॥**—** 

वा बुभूषेत्॥५१॥

न सं मृंशति। पापवस्यसस्य व्यावृंत्यै। वायव्यं वा एतदुपंसुष्टम्। ऑश्विनं दुह्यमानम्। मैत्रं दुग्धम्। अर्थम्ण उद्दास्यमानम्। त्वाष्ट्रमुंत्रीयमानम्। बृह्स्पतेरुत्रीतम्। सावितुः प्रक्रौन्तम्। द्यावापृथिव्यः हियमाणम्॥५२॥

ऐन्द्राग्रमुपं सादितम्। सर्वाभ्यो वा एष देवताभ्यो जुहोति। योंऽग्रिहोत्रं जुहोति। यथा खलु वै धेनुं तीर्थे तर्पयीते। एवमीग्रहोत्री यजमानं तर्पयति। तृप्यीते प्रजयां पृशुभिः। प्र सुंवर्ग लोकं जानाति। पश्यति पुत्रम्। पश्यति पौत्रमा। प्र प्रजयां

पुशुभिमिथुनैजायते। यस्यैवं विदुषौऽग्रिहोत्रं जुह्वीते। य उं चैनदेवं वेदं॥५३॥ बुभूषेष्ट्रियमाणआयते द्वे चा।🕳

त्रयों वै प्रैयमेधा आंसन्। तेषां त्रिरकौंऽग्रिहोत्रमंजुहोत्। द्विरकंः। सकुदेकंः।

तेषां यिक्निरजुंहोत्। स ऋचाऽजुंहोत्। यो द्विः। स यजुंषा। यः सुकृत्। स

तूष्णीम्॥५४॥

यश्च यजुषाऽजुंहोद्यश्चं तूष्णीम्। ताबुभावाँधृताम्। तस्माद्यजुषाऽऽहुंतिः पूर्वां होतव्याँ। तूष्णीमुत्तंरा। उमे एवधीं अवं रुन्ये। अग्निज्योंतिज्योंतिर्गभः स्वाहेतिं सायं जुंहोति। रेतं एव तद्देथाति। सूर्यो ज्योतिज्योंतिः सूर्यः स्वाहेति प्रातः। रेतं एव हितं प्र जनयति। रेतो वा एतस्यं हितं न प्र जायते॥५५॥

यस्याप्निहोत्रमहेत् सूर्योऽन्युदेति। यद्यन् स्यात्। उन्नीय् प्राङुदाद्रेवेत्। स

उंपुसाद्यातमितोरासीत। स युदा ताम्यैत्। अथु भूः स्वाहेति जुहुयात्। प्रजापतिबै

भूतः। तमेवोपांसरत्। स एवेनं तत् उत्रयति। नार्तिमाच्छीते यजमानः॥५६॥

रूणीं जायते यजमानः॥━

यद्ग्रिमुद्धरीत। वसंवस्तर्धिग्रिः। तस्मिन् यस्य तथाविषे जुह्नीत

वसुष्वेवास्याभिहोत्र\* हुतं भेवति। निहितो धूपायञ्छेते। क्द्रास्तर्ह्यभिः। तस्मिन्

यस्य तथांविषे जुह्वंति। कृद्रष्वेवास्यांग्निहोत्र॰ हुतं भेवति। प्रथुममिष्ममुर्चिरा लेमते। आदित्यास्तर्द्यि**भः**॥५७॥

तिस्मिन् यस्य तथाविषे जुह्नीते। आदित्येष्वेवास्याभिहोत्र॰ हुतं भेवति। सर्वे

एव संवंश इप्म आदींप्तो भवति। विश्वे देवास्तर्ह्याग्नः। तस्मिन् यस्य तथांविधे जुह्वति। विश्वैष्वेवास्यं देवेष्वंग्निहोत्रः हुतं भंवति। नितरामर्चिरुपावेति लोहिनीकेव भवति। इन्द्रस्तर्ह्याग्नः। तस्मिन् यस्य तथांविषे जुह्वति। इन्द्रं एवास्याग्निहोत्रः हुतं भेवति॥५८॥

अङ्गारा भवन्ति। तेभ्योऽङ्गोरभ्योऽर्चिरुदंति। प्रजापित्स्तर्ह्याग्नाः। तस्मिन् यस्य

तथांविषे जुह्नंति। प्रजापंतावेवास्यांग्रिहोत्र॰ हुतं भंवति। शरोऽङ्गांग् अप्यूहन्ते।

वसुंषु फ्द्रेष्वांदित्येषु विश्वंषु देवेषुं। इन्द्रें प्रजापंतो ब्रह्मन्। अपीरवर्गमेवास्येतासुं देवतांसु हुतं मेविति। यस्येवं विदुषौंऽग्रिहोत्रं जुह्वंति। य उं चैनदेवं वेदं॥५९॥ ब्रह्म तर्ह्योग्नः। तस्मिन् यस्य तथाविषे जुह्नीते। ब्रह्मत्रेवास्याप्रिहोत्र ६ हुतं भेवति।

आदित्यास्तर्धीग्रीरेन्द्रं एवास्याप्रिहोत्र॰ हुतं भेवति देवेषुं चत्वारिं च (यद्ग्रित्रिहितः प्रथुम॰ सर्वं एव निंतरामङ्गाराः शरोऽङ्गारा

ब्रह्म वसुष्वृष्टो॥)॥

कृतं त्वां सृत्येन् परिषिश्वामीति सायं परिषिश्वति। सृत्यं त्वर्तेन् परिषिश्वामीति

प्रातः। अग्निर्वा ऋतम्। असावादित्यः सत्यम्। अग्निमेव तदादित्येनं सायं परिषिश्चति। अग्निनाऽऽदित्यं प्रातः सः। यावेदहोग्ने भवंतः। तावंदस्य लोकस्ये। नार्तिनं रिष्टिः। नान्तो न पर्यन्तौऽस्ति। यस्यैवं विदुषौऽग्निहोत्रं जुह्नति। य

उचैनदेवं वेदं॥६०॥

अर्झिरसः प्रजापेतिर्षेष्ठे कुद्र ठेन्रावेतीं ब्रह्मवादिनौऽिष्रिहोत्रप्रायणा युजाः प्रजापेतिरकामयताऽऽत्मुन्वद्रोदक्षिवि

दक्षिणतस्त्रयो वै यद्ग्रिमृतं त्वां सत्येनेकांदश॥११॥

अङ्गिरम्ः प्रैव तेनं पृश्ननेव यत्रिमाष्टिं यो वा अग्निहोत्रस्योपसदो दक्षिणतः पृष्टिः॥६०॥

अिंश्निसो य उंचैनदेवं वेदे॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके प्रथमः प्रपाठकः समाप्तः॥ हरिः ओम्॥

### ॥ द्वितीयः प्रश्नः॥

# ॥तैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके द्वितीयः प्रपाठकः॥

प्रजापेतिरकामयत प्रजाः सुंजेयेति। स एतं दशेहोतारमपश्यत्। तं मनेसा-

ऽनुदुत्यं दर्भस्तुम्बेऽजुहोत्। ततो वै स प्रजा अंसुजत। ता अंस्माथ्सृष्टा

अपाकामन्। ता ग्रहेंणागुह्णात्। तद्ग्रहंस्य ग्रहत्वम्। यः कामयेत प्रजायेयेति। स दशहोतारं मनेसाऽनुदुत्ये दर्भस्तम्बे जुंहुयात्। प्रजापंतिंके दशहोता॥१॥

प्रजापेतिरेव भूत्वा प्रजायते। मनेसा जुहोति। मने इव हि प्रजापेतिः। प्रजापेतेरास्यै। पूर्णयो जुहोति। पूर्ण इव हि प्रजापेतिः। प्रजापेतेरास्यै। न्यूनया जुहोति। न्यूनाद्धि प्रजापंतिः प्रजा असुंजत। प्रजाना् सुष्यै॥२॥

दुर्भस्तम्बे जुहोति। पुतस्माद्वै योनैः प्रजापीतेः प्रजा असृजत। यस्मदिव योनैः प्रजापेतिः प्रजा असृजत। तस्मदिव योनेः प्रजायते। ब्राह्मणो देक्षिण्त उपास्ते।

ब्राह्मणो वै प्रजानांमुपद्रष्टा। उपुद्रष्टुमत्येव प्रजायते। ग्रहो भवति। प्रजानारं सृष्टानां

201

सोऽरंण्यं प्रेत्ये। दुर्भस्तुम्बमुद्गथ्ये। ब्राह्मणं देक्षिण्तो निषाद्ये। चतुरहोतॄन्याचेक्षीत धृत्यै। यं ब्रौह्मणं विद्यां विद्वारस्ं यशो नच्छेत्॥३॥

पुतद्वे देवानां पर्मं गुह्यं ब्रह्मं। यचतुर्होतारः। तदेव प्रकाशं गमयति। तदेनं प्रकाशं गृतम्। प्रकाशं प्रजानां गमयति। दुर्मस्तम्बमुद्धस्य व्याचेष्टे॥४॥

अग्निवान् वै देर्भस्तम्बः। अग्निवत्येव व्याचेष्टे। ब्राह्मणो देक्षिणत उपाँस्ते। ब्राह्मणो वै प्रजानांमुपद्रष्टा। उपदृष्टुमत्येवेनं यशं ऋच्छति। ईश्वरन्तं यशोतोंिशत्योहुः। यस्यान्तै व्याचष्ट इतिं। वर्स्तस्मै देयः। यदेवेनं तत्रोपनमिति।

अग्निमादधानो दश्होत्राऽरणिमवं दध्यात्। प्रजातमेवेनमा धेत्ते। तेनेवोद्दुत्याग्निहोत्रं

तदेवाव रुन्धे॥५॥

जुंह्यात्। प्रजातमेवैनंशुहोति। ह्विर्निर्वफ्स्यं दश्होतार् व्याचेक्षीत। प्रजातमेवेनं

निर्वपति। सामिधेनीरंनुबक्ष्यं दर्शहोतारं व्याचेक्षीत। सामिधेनीरेव सृष्टाऽऽरभ्य प्रतंनुते। अथों युजो वै दर्शहोता। युज्ञमेव तंनुते॥६॥

तावेस्माथ्सृष्टावपौक्रामताम्। तौ अहेणागृह्षात्। तद्कहंस्य अहुत्वम्। दुर्शपूर्णमासावात्क्रे

प्रजापीतिरकामयत दर्शपूर्णमासौ सेजेयेति। स पृतं चतुर्होतारमपश्यत्। तं मनेसाऽनुद्धत्योऽऽहबनीयेऽजुहोत्। ततो वै स देर्शपूर्णमासावेसुजत।

निर्क्तिगृहीत पुवैनुं निर्क्रत्या ग्राहयति। यद्वाचः कूरम्। तेनु वर्षद्वरोति। वाच

एवेनं कूरेण् प्र वृक्षति। ताजगार्तिमाच्छीते॥७॥

दशहोता सुष्ट्यां ऋच्छेद्याचेटे रुन्य एव तेनुते निर्ऋतिगृहीतं पर्श्रं च॥\_\_\_

चतुरहोतारं मनेसाऽनुद्रत्योहबनीये जुहुयात्। दुर्शपूर्णमासावेव सृष्टाऽऽरभ्य

चातुमास्यानि

ग्रहों भवति। दुर्<u>शपूर्णमा</u>सयौं: सृष्टयोधृत्यैं। सोऽकामयत

प्रतंनुते॥८॥

अभिचरं दर्शहोतारं जुहुयात्। नव वै पुरुषे प्राणाः। नाभिदेशमी। सप्राणमेवेनममि चेरति। पुताबद्वे पुरुषस्य स्वम्। यावेत्प्राणाः। यावेदेवास्यास्ति। तद्भि चेरति। स्वकृत इरिणे जुहोति प्रद्रे वा। पृतद्वा अस्यै निर्ऋतिगृहीतम्।

मुजेयेति। स पुतं पश्चंहोतारमपश्यत्। तं मनंसाऽनुद्रुत्यांऽऽहवनीयेऽजुहोत्। ततो

वै स चांतुर्मास्यान्यंसुजत। तान्यंस्माथ्सुष्टान्यपौक्रामन्। तानि ग्रहेणागुह्णात्। तद्गहस्य ग्रहुत्वम्। चातुमोस्यान्यालभंमानः॥९॥

पश्चेहोतारं मनंसाऽनुद्रुत्योऽऽहवनीये जुहुयात्। चातुर्मास्यान्येव सृष्टाऽऽरभ्य प्रतेनुते। ग्रहो भवति। चातुर्मास्यानारं सृष्टानां धृत्यै। सोऽकामयत पशुबन्यर

सुंजेयेति। स एत॰ षड्डोतारमपश्यत्। तं मनेसाऽनुद्धत्योऽऽहवनीयेऽजुहोत्। ततो वै स पंशुबन्धमंसुजता सौस्माथ्सृष्टोऽपौकामत्। तं ग्रहेणागुह्नात्॥१०॥

तद्गहेस्य ग्रहुत्वम्। पृशुबन्धेनं युक्ष्यमाणः। षङ्कोतारं मनंसाऽनुद्धत्यांऽऽहवनीये

जुहुयात्। पृशुबन्धमेव सृष्टाऽऽरभ्य प्र तेनुते। ग्रहों भवति। पृशुबन्धस्यं सृष्टस्य धृत्यैं। सोऽकामयत सौम्यमेश्वर॰ सृजेयिति। स एत॰ सप्तहोतारमपश्यत्। तं मनेसाऽनुदुत्यांऽऽहवनीयेऽजुहोत्। ततो वै स सौम्यमेश्वरमेसृजत॥११॥

सौऽस्माध्सृष्टोऽपाँकामत्। तं ग्रहेंणागृह्णात्। तद्गहंस्य ग्रहुत्वम्। द्राेक्षिष्यमांणः

सृप्तहोतारं मनंसाऽनुदुत्योऽऽहबनीये जुहुयात्। सौम्यमेवाष्व्र सृष्टाऽऽरभ्य प्र तेनुते। ग्रहो भवति। सौम्यस्याष्ट्वरस्यं सृष्टस्य धृत्यै। देवेभ्यो वै युज्ञो न प्रामेवत्। तमेतावच्छः समंभरन्॥१२॥

यथ्सम्माराः। ततो वै तेभ्यो युज्ञः प्रामेवत्। यथ्सम्मारा भवंन्ति। युज्ञस्य प्रभूत्यै।

आतिथ्यमासाद्य व्याचेष्टे। यज्ञमुखं वा आंतिथ्यम्। मुख्त एव यज्ञश् सम्भृत्य प्रतिनुते। अयंज्ञो वा एषः। योऽप्बीकेः। न प्रजाः प्रजायेश्न्। पबोर्व्याचेष्टे। यज्ञमेवाकेः। प्रजानां प्रजनेनाय। उपसध्सु व्याचेष्टे। एतद्वे पबीनामायतेनम्। स्व एवैनां आयत्नेऽवंकल्पयति॥१३॥ तुनुत आलभमानोऽगृह्वादसुजताभरञ्जायेर्न्थ्यद्वी।===

प्रजापीतरकामयत् प्रजायेयेति। स तपोऽतप्यत। स त्रिबृत्र् स्तोमंमसुजत

अन्बसुंज्यन्ता अपूर्पक्षमन्बसुंराः। ततो देवा अभेवन्। पराऽसुंराः। यं कामयेत्

तं पंञ्चद्शः स्तोमो मप्यृत उद्तृणत्। तो पूर्वपुक्षश्चांपरपुक्षश्चांभवताम्। पूर्वपुक्षं देवा

205 वसीयान्थस्यादिति॥१४॥ द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

ते तपौऽतप्यन्ता त आत्मित्रिन्द्रेमपश्यन्। तमेब्रुवन्। जायुस्वेति। सौऽब्रवीत्। किं भागधयममि जीनेष्य इति। ऋतून्थ्संवथ्सरम्। प्रजाः

पृश्न्। इमाँस्रोकानित्यंब्रुवन्। तं वै माऽऽहुत्या प्र जनयतेत्यंब्रवीत्॥१७॥

प्रजाः पृशवं इमे लोकाः। य एवं प्रजापीतें बहोर्भूयार्श्सं वेदे। बहोरेव भूयाँ-भविति। प्रजापीतिर्दवासुरानेसुजत। स इन्द्रमिप् नासुजत। तं देवा अंबुवन्।

सवध्सरः॥१५॥

इन्द्रं नो जन्येति। सौऽब्रवीत्। यथाऽहं युष्माङ्स्तप्साऽसृक्षि। एवमिन्द्रं

जनयध्वमिति॥१६॥

तं पूँर्वपक्षे योजयेत्। वसीयानेव भेवति। यं कामयेत पापीयान्थ्र्यादिति। तमेपरपक्षे योजयेत्। पापीयानेव भेवति। तस्मौत्पूर्वपक्षोऽपरपक्षात्केरुण्येतरः। प्रजापितेवै दशहोता। चतुरहोता पश्चहोता। षड्डोता सप्तहोता। ऋतवेः

तं चतुंरहोत्रा प्राजनयन्। यः कामयेत वीरो म् आजायेतेति। स चतुंरहोतारं जुहुयात्। प्रजापेतिकैं चतुंरहोता। प्रजापेतिरेव भूत्वा प्रजायते। जजनिदेन्द्रीमिन्द्रयाय स्वाहेति ग्रहेण जुहोति। आऽस्यं वीरो जायते। वीर॰ हि देवा एतयाऽऽहुत्या प्राजनयन्। आदित्याश्चाङ्गिरसश्च सुवर्गे लोकैऽस्पर्यन्त। वयं पूर्वे सुवर्ग लोकिमियाम वयं पूर्वे इति॥१८॥ 206 द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

ततो वै ते पूर्वे सुवर्गं लोकमांथन्। यः सुंवर्गकांमः स्यात्। स पश्रहोतारं पुरा प्रांतरनुवाकादाश्रींध्रे जुहुयात्। संवथ्सरो वै पश्चहोता। संवथ्सरः सुंवर्गो लोकः। संवथ्सर एवर्तुधु प्रतिष्ठाये। सुवर्गं लोकमेति। तैऽब्रुवन्नाङ्गिरस आदित्यान्॥१९॥

त आंदित्या पुतं पश्चहोतारमपश्यन्। तं पुरा प्रांतरनुबाकादाश्रीप्रेऽजुहबुः

के स्था के वः सुद्धो हृव्यं वेक्ष्यामु इति। छुन्दः स्वित्येब्रुवन्। गायत्रियां त्रिष्टुमि जगेत्यामिति। तस्माच्छन्देः सु सुद्ध आदित्येन्येः। आक्दीर्सीः प्रजा हृव्यं वेहन्ति। वहेन्त्यस्मै प्रजा बुलिम्। ऐनुमप्रीतिख्यातं गच्छति। य पृवं वेदे। द्वादेश्

207 मासाः पश्चर्तवेः। त्रयं इमे लोकाः। असावोदित्य एंकवि॰्षः। एतस्मिन्वा एष श्रितः। एतस्मिन्मतिष्ठितः। य एवमेतङ् श्रितं प्रतिष्ठितं वेदं। प्रत्येव तिष्ठति॥२०॥ स्यादिति संबध्मरो जनयप्यमितीत्येब्रबीत्पूर्वे इत्योदित्यानृतवः षद्गै॥=== द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

प्रजापीतिरकामयत् प्रजायेयेति। स पुतं दश्होतारमपश्यत्। तेनं दश्याऽऽत्मानं

कि्पायं दशहोत्राऽतप्यता तस्य चित्तिः स्रुगासीत्। चित्तमाज्यम्। तस्यैतावेत्येव

वागासीत्। पुतावान् यज्ञकृतुः। स चतुंर्होतारमसुजता सोऽनन्दत्॥२१॥

असृक्षि वा इममिति। तस्य सोमौ हविरासींत्। स चतुर्होत्राऽतप्यता

सोऽताम्यत्। स भूरिति व्याहेरत्। स भूमिममुजत। अग्रिहोत्रं दंरशपूर्णमासौ सौंऽन्तरिक्षमसुजत। चातुर्मास्यानि सामोनि। स तृतीयंमतप्यत। सोऽताम्यत्। यजूरेषि। स द्वितीयमतप्यता सौऽताम्यत्। स भुव् इति व्याहंरत्॥२२॥

स सुर्वारिति व्याहेरत्। स दिवेमसुजता अग्निष्टोममुक्थ्यंमतिरात्रमुचंः। एता वै व्याहेतय हुमे लोकाः। हुमान्खलु वै लोकाननुं प्रजाः पृशवृश्छन्दार्भिस प्राजायन्त।

208

प्र प्रजयां पृशुभिमिथुनैजांयते। स पश्चेहोतारमसुजत। स हविनाविन्दत। तस्मै य एवमेताः प्रजापेतेः प्रथमा व्याह्तेतोः प्रजाता वेदं॥२३॥ द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

हिरंण्यमभवत्। तथ्सुवर्णस्य हिरंण्यस्य जन्मे। य एवश् सुवर्णस्य हिरंण्यस्य जन्म सुवर्णं एव भंवति। ऐनं प्रियं गंच्छति नाप्रियम्। स सृप्तहोतारमसृजत। स सृप्तहोंत्रेव सुवर्गं लोकमैत्। त्रिणवेन स्तोमेनैभ्यो लोकेभ्योऽसुंरान्प्राणुंदत। त्र्यक्रिंश्नेन सोमेस्तुनुं प्रायेच्छत्। पृतत्ते हविरिति। स पश्चेहोत्राऽतप्यता सोऽताम्यत्। स सोऽताम्यत्। स प्राङंबाधता स देवानंसृजता तदंस्य प्रियमांसीत्। तथ्सुवर्णे ॰ सुवर्ण आत्मना भवति। दुर्वर्णौऽस्य आतृव्यः। तस्मौध्सुवर्ण् हिरंण्यं भार्यम्॥ तहुर्वणे्॰ हिरंण्यमभवत्। तहुर्वर्णस्य हिरंण्यस्य जन्मे। स द्वितीयंमतप्यता प्रत्यङ्क्षायत। सोऽसुरानसृजत। तद्स्यांप्रियमासीत्॥२४॥ प्रत्यतिष्ठत्। पुक्वि॰्शेन् रुचंमधत्त॥२६॥

209 त्रिण्वेन स्तोमेनेन्यो लोकेन्यो आतृव्यान्यणुदते। त्र्यस्त्रिर्शेन प्रति तिष्ठति स्पट्शेन् प्राजायता य एवं विद्वान्थ्सोमेन् यजीता स्पत्हांत्रेव सुवर्ग लोकमीत द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

राजाँ त्वा वर्षणो नयतु देवि दक्षिणेऽग्रये हिरंण्यमित्यांह। आग्रेयं वै हिरंण्यम्। स्वयेवेनंद्देवतंया प्रतिगृह्णाति। सोमाय वास् इत्यांह। सौम्यं वै वासंः। स्वयेवेनंद्देवतंया प्रतिगृह्णाति। कृद्राय गामित्यांह। गैद्री वै गौः। स्वयेवेनां देवतंया

गतिगृह्णाति। वर्षणायाश्वमित्याह॥२९॥

प्रत्यंगृह्णन्। ततो वै तान्दक्षिणा नाब्रीनात्। य एवं विद्वान्व्यावृत्य दक्षिणां प्रतिगृह्णाति। नैनं दक्षिणा ब्रीनाति॥२८॥

तैऽब्रुवन्। व्यावृत्यु प्रतिगृह्णाम। तथां नो दक्षिणा न ब्रैप्यतीति। ते व्यावृत्यु

देवा वै वर्षणमयाजयन्। स यस्यैयस्यै देवतांयै दक्षिणामनंयत्। तामंब्रीनात्।

अनन्द्द्धव इति व्याहंरद्वदांसीद्वदांधम् प्रजात्यै॥===

एकवि×्शेन रुचं धते। सुप्तदुशेन प्र जायते। तस्माध्सप्तदुशः स्तोमो न निर्हत्यः। प्रजापेतिकै संप्तदुशः। प्रजापेतिमेव मध्यतो धेते प्रजात्यै॥२७॥

बारुणो वा अर्थः। स्वयेवैनं देवतंया प्रतिंगृह्णाति। प्रजापंतये पुरुषमित्यांह। प्राजापृत्यो वै पुरुषः। स्वयेवैनं देवतंया प्रति गृह्णाति। मनंवे तल्पमित्यांह। मानुवो

- --वै तल्पैः। स्वयैवैनं देवतंया प्रति गृह्णाति। उत्तानायाङ्गीर्सायान् इत्याहा इयं वा

उंतान आंङ्रोरसः॥३०॥

वयों दात्र इत्योह। वयं एवेनं कृत्वा। सुवगै लोकं गंमयति। मयो मह्यंमस्तु

प्रतिमहीत्र इत्योह॥३१॥

अनयैवैन्त्रति गृह्णाति। वैश्वान्यवी रथं प्रति गृह्णाति। वैश्वान्रो वै देवतेया रथेः। स्वयैवैनं देवतेया प्रति गृह्णाति। तेनामृत्त्वमेश्यामित्याह। अमृतमेवाऽऽत्मन्येते।

कामो हि दाता। कामेः प्रतिग्रहीता। कामर् समुद्रमाविशेत्योह। सुमुद्र इंवु हि

प्रजापेतिकैं कः। स प्रजापेतये ददाति। कामः कामायेत्योह। कामेन हिं ददाति। कामेन प्रतिगृह्णाति। कामो दाता कामेः प्रतिग्रहीतेत्याह॥३२॥

यद्वे शिवम्। तन्मयंः। आत्मनं एवैषा परीतिः। क इदं कस्मां अदादित्यांह।

210

ते काम् दक्षिणेत्यांह। कामं एव तद्यजंमानोऽमुष्मिंश्लोके दक्षिणामिच्छति। न प्रतिग्रहीतारे। य एवं विद्वान्दक्षिणां प्रतिगृह्णाते। अनुणामेवेनां प्रति गृह्णाति॥३३॥ थेन् कामेन प्रतिगृह्णाति। स पृवैनममुर्षिक्षेत्रोके काम् आगंच्छति। कामैतत्तं एषा कामंः। नेव हि कामस्यान्तोऽस्तिं। न संमुद्रस्यं। कामेन त्वा प्रतिगृह्धामीत्यांह।

इव हि प्रजापेतिः। प्रजापेतेरास्यै। देवा वै सर्पाः। तेषांमियः राज्ञी। यथ्संपराज्ञियां ऋग्मिः स्तुवन्ति। अस्यामेव प्रति तिष्ठन्ति॥३५॥

चतुंर्होतॄन् होता व्याचंष्टे। स्तुतमनुंश्ररसति शान्त्यै। अन्तो वा एष युज्ञस्ये।

अत्रमेवावं रुन्यते। मनंसा प्रस्तौति। मनसोद्गायति। मनंसा प्रति हरति। मनं

अन्तो वा एष य्जस्ये। यद्शाममहेः। द्शामऽहै-थ्सर्पराज्ञियां ऋभिः स्तुवन्ति

ध्रीनात्यश्वमित्यांहाक्वीरुसः प्रतिप्रहीत्र इत्यांह प्रतिप्रहीतेत्यांह दक्षिणेत्यांह चत्वारि च॥====

युज्ञस्यैवान्तं गुत्वा। अन्नाद्यमवं रुन्यते। तिसुभिः स्तुवन्ति। त्रयं ड्रमे लोकाः एभ्य एव लोकेभ्योऽन्नाद्यमवं रुन्यते। पृश्चिवतीर्भवन्ति। अन्नं वै पृश्चिन॥३४॥

यद्देशममहेः। पुतत्खलु वे देवानां पर्मं गुह्यं ब्रह्मं। यचतुर्होतारः। दशमेऽहुङ् श्रतुर्-

होतॄ-च्याचेष्टे। युज्ञस्यैवान्तं गुत्वा। पुरुमं देवानां गुह्यं ब्रह्मावं रुन्ये। तदेव प्रकाशं

गमयोते॥ ३६॥

तदेनं प्रकाशं गतम्। प्रकाशं प्रजानां गमयति। वाचं यच्छति। यज्ञस्य धृत्यै। यजमानदेवत्यं वा अहंः। भातृव्यदेवत्यां रात्रिः। अहा रात्रिं ध्यायेत्। भातृव्यस्यैव तस्रोकं वृङ्का यहिवा वाचं विसुजेत्। अह्रभीतृव्यायोच्छिरषेत्।

यत्रक्तं विस्जेत्। रात्रिं भातृेव्यायोच्छि९षेत्। अपिवृक्षसूर्ये वाचं विसुजति।

पुतावंन्तमेवास्मे लोकमुच्छि १ षति। यावंदादित्यौऽस्तमेति॥३७॥

गृश्चिनं तिष्ठन्ति गमयति शि॰्षेत्पश्चं च॥🕳

<u>พ</u> |

तस्मोदाहुः। रूपं वै प्रजापेतिरिति। ता नाम्राऽनु प्राविशत्। तस्मोदाहुः। नाम् वै

प्रजापतिरिति। तस्मादप्यामित्रौ सङ्गत्ये। नाम्ना चेद्ध्वयेते॥३८॥

प्रजापंतिः प्रजा अंमुजता ताः सृष्टाः समीक्षेष्यन्। ता रूपेणानुप्राविशत्।

मित्रमेव भंवतः। प्रजापंतिदेवासुरानंसुजत। स इन्द्रमपि नासुंजत। तं द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

देवा अंबुवन्। इन्द्रं नो जन्येति। स आत्मित्रिन्द्रेमपश्यत्। तमेसृजत। तं त्रिष्टुग्बीर्यं भूत्वाऽनु प्राविशत्। तस्य वज्नंः पञ्चदुशो हस्त आपंद्यत। तेनोदय्यासुरानुभ्यभवत्॥३९॥

य एवं वेदं। अभि आतृव्यान्भवति। ते देवा असुरैविजित्यं। सुवर्गं लोकमायन्।

तेऽमुष्पिंक्षोके व्यक्षप्यन्। तेऽब्रुवन्। अमुतेः प्रदानं वा उपीजजीविमिति। ते स्प्तहोतारं युज्ञं विधायायास्यम्। आक्षीर्सं प्राहिण्वन्। एतेनामुत्रे कल्पयेति॥४०॥

तस्य वा इयं क्नीतेः। यदिदं किं चे। य एवं वेदे। कल्पेतेऽस्मे। स वा अयं मेनुष्येषु यज्ञः सप्तहोता। अमुत्रे सम्बो देवेभ्यों हव्यं वेहति। य एवं वेदे। उपैनं युज्ञो नेमिति। सोऽमन्यता अभि वा इमेंऽस्माल्लोकादमुं लोकं किमिष्यन्त इति।

स वाचेस्पते हदिति व्याहेरत्। तस्मौत्युत्रो हद्यम्। तस्मांदस्मास्रोकादुमु लोकं

नाभि कामयन्ते। युत्रो हि हृदयम्॥४१॥

अभि सुंबर्ग लोकं जंयति। षड्डोत्रा प्रायणीयमा सांदयति। अमुष्मे वे लोकाय पड्डोता। घ्रन्ति खलु वा एतथ्सोमम्। यदंभिषुण्वन्ति॥४२॥ देवा वै चतुर्होतुभिर्यज्ञमंतन्वता ते वि पाप्मना आतृष्येणाजंयन्ता अभि सुंवगै लोकमंजयन्। य एवं विद्वाङ् अतुर्होत्मिर्युज्ञं तेनुते। वि पाप्मना आतृष्येण जयते। ह्वयेते अभवत्कल्प्येतीति चृत्वारि च॥∎ द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

ऋजुपैवेनममुं लोकं गमयति। चतुंर्होत्राऽऽतिध्यम्। यशो वै चतुंर्होता। यशं

एवाऽऽत्मन्येते। पश्चेहोत्रा पृशुमुपेसादयति। सुवग्यों वै पश्चेहोता। यजेमानः पृशुः। यजेमानमेव सुवर्ग लोकं गेमयति। ग्रहाँन्गुहोत्वा सुप्तहोतारं जुहोति। इन्द्रियं वै

पशुभिः। उपैन सोमपीथो नेमति। बृहिष्पुबमाने दश्होतारं व्याचंक्षीत। माध्यं

दिने पर्वमाने चतुरहोतारम्। आर्मेवे पर्वमाने पर्श्वहोतारम्। पितृयुज्ञे षङ्घोतारम्।

ड्डन्द्रियमेवाऽऽत्मन्यंते। यो वै चतुंर्होतॄननुसव्नं तृर्पयंति। तृप्यंति प्रजयां

सप्तहोता॥ ४३॥

215

इन्द्रंः सुप्तहौत्रा। प्रजापेतिर्दशहोत्रा। तेषा्॰ सोम्॰ राजांनं यशं आच्छेत्। तत्त्र्येकाम्यत। तेनापाकामत्। तेनं प्रलायमचरत्। तं देवाः प्रेषेः प्रैषंमैच्छन्। तत्र्रेषाणां प्रेषुत्वम्। निविद्धिन्येवेदयन्। तत्रिविद्रात्रिवित्त्वम्॥४६॥

अग्रीभिराप्रुवन्। तदाप्रीणामाप्रित्वम्। तमेघ्नन्। तस्य यशो व्यंगुह्नत। ते ग्रहां अभवन्। तद्वहाणां ग्रहत्वम्। यस्यैवं विदुषो ग्रहां गृह्यन्तै। तस्य त्वेव गृहीताः।

तमेवधिष्मा पुनेरिम सुवामहा इति। तं छन्दोभिरसुवन्ता तच्छन्देसां

तैऽब्रुवन्। यो वै नः श्रेष्ठोऽभूत्॥४७॥

तथ्साम्रः

छन्दुस्त्वम्। साम्रा समानंथन्।

सामुत्वम्। उक्थैरुदंस्थापयन्।

तृष्यंति प्रजयां पृशुभिः। उपैन सोमपीथो नेमति। देवा वै चतुरहोतुभिः सत्रमासता ऋद्धिपरिमितं यशस्कामाः। तैऽब्रुवन्। यत्रेः प्रथमं यशं ऋच्छात्। सर्वेषात्रुस्तथ्मुहास्दिति। सोम्श्रतुर्होत्रा। अग्निः पश्नेहोत्रा। घाता षड्डौत्रा॥४५॥ युज्ञाय्जियंस्य स्तोत्रे स्प्तहोतारम्। अनुस्वनमेवैनार्धस्तर्पयति॥४४॥

तस्मोदाहुः। यश्चेवं वेद् यश्च न। तावुभौ सोम्मागंच्छतः। सोमो हि यशंः। तं त्वाऽव यशं ऋच्छुतीत्योहुः। यः सोमे सोमं प्राहेति। तस्माध्सोमे सोमः प्रोच्येः।

सर्वमाधुरेति। सोमो वै यशः। य एवं विद्वान्थ्सोमंगगच्छंति। यशं एवैनंमृच्छति।

तद्क्थानांमुक्थत्वम्। य एवं वेदं। प्रत्येव तिष्ठति॥४८॥

तदसेदेव सन्मनोऽकुरुत स्यामिति। तदंतप्यत। तस्मौतेपानाखूमोऽजायत। तद्र्यों-

ऽतव्यता तस्मौतेपानाद्भिरंजायता तद्भयोऽतव्यत॥५०॥

ड्डदं वा अग्रे नैव किं च नाऽऽसींत्। न द्यौरांसीत्। न पृंथिवी। नान्तरिक्षम्।

अभिषुण्वन्ति स्पहोता तर्पयति पङ्काता निवित्त्वमभूतिष्ठति प्राहेति द्वे चं॥🕳

यशं एवेनमृच्छति॥४९॥

तस्मौतेपानाञ्योतिरजायत। तद्भयोऽतप्यत। तस्मौतेपानाद्चिरंजायत। तद्भयो-

ऽतप्यत। तस्मांतेपानान्मरींचयोऽजायन्त। तद्भयोऽतप्यत। तस्मांतेपानादुंदारा

अंजायन्त। तद्भूयोंऽतप्यत। तद्भ्रमिंव समंहन्यत। तद्वस्तिमंभिनत्॥५१॥

216

217

दशंहोता। य एवं तपेसो वीर्यं विद्वाङ्स्तप्यंते। भवंत्येव। तद्वा इदमापेः सक्लिमांसीत्। सोऽरोदीत्युजापंतिः॥५२॥

स कस्मां आज्ञा यद्यस्या अप्रतिष्ठाया इति। यद्फ्स्वंवापंद्यता सा

गुंधिव्यंभवत्। यद्यमृष्टा तद्न्तरिक्षमभवत्। यद्ध्वंमुदमृष्टा सा द्यौरंभवत्।

गदरोदीत्। तदनयो रोदुस्त्वम्॥५३॥

तस्मौत्पुशोर्जायेमानादापेः पुरस्तौद्यन्ति। तद्दशहोताऽन्वंसुज्यत। प्रजापतिबै

स संमुद्रोऽभवत्। तस्मौध्समुद्रस्य न पिंबन्ति। प्रजनेनमिव हि मन्येन्ते।

लोकानां जन्म वेदं। नैषु लोकेष्वार्तिमाच्छीते। स इमां प्रतिष्ठामीवन्दता स

य एवं वेदे। नास्ये गृहे र्रदन्ति। एतद्वा एषां लोकानां जन्मे। य एवमेषां

डुमां प्रतिष्ठां वित्वाऽकामयत् प्रजायेयेति। स तपोऽतप्यत। सौऽन्तर्वानभवत्। स

जघनादसुरानस्जत॥५४॥

तेभ्यों मृन्मये पात्रेऽत्रमदुहत्। याऽस्य सा तृनूरासींत्। तामपोहता सा

तमिस्नाऽभवत्। सोऽकामयत प्रजाययेति। स तपोऽतप्यत। सौन्तर्वानभवत्। स

प्जनेनादेव प्रजा अंसुजत। तस्मांदिमा भूयिषाः। प्रजनेना्स्येना असुंजत॥५५॥

ताभ्यों दार्षमये पात्रे पयोऽदुहत्। याऽस्य सा तृनूरासीत्। तामपोहत। सा

स उपपृक्षाभ्यमिवर्तूनम्जता तेभ्यों रज्ते पात्रे घृतमंदुहत्। याऽस्य सा

तनूरासीत्॥५६॥

जोध्स्रोऽभवत्। सौऽकामयत् प्रजायेयेति। स तपौऽतप्यत। सौऽन्तर्वानभवत्।

तामपाहता सोऽहोरात्रयौः सन्धिरंभवत्। सोऽकामयत् प्रजायेयेति। स तपो-

ऽतप्यता सौऽन्तर्वानमवत्। स मुखांह्वानंसुजता तेभ्यो हरिते पात्रे सोमंमदुहत्।

याऽस्य सा तृनूरासीत्। तामपोहता तदहंरभवत्॥५७॥

तहेवानां देवत्वम्। य पृवं देवानां देवत्वं वेदं। देववानेव भेवति। पृतद्वा अहोराुत्राणां

जन्मं। य एवमेहोरात्राणां जन्म वेदं। नाहोरात्रेष्वार्तिमाच्छीते॥५८॥

एते वै प्रजापेतेर्दोहाः। य एवं वेदं। दुह एव प्रजाः। दिवा वै नोऽभूदितिं।

218 द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

असतोऽधि मनोऽसुज्यत। मनेः प्रजापीतमसुजत। प्रजापीतेः प्रजा असुजत। तद्वा इदं मनेस्येव प्रमं प्रतिष्ठितम्। यदिदं किं चे। तदेतच्क्वोवस्यसन्नाम ब्रह्मे।

ब्युच्छन्तींब्युच्छन्त्यस्मे वस्यंसीवस्यसी ब्युंच्छति। प्रजायते प्रजयां पृशुभिः। प्र

पेरमेष्ठिनो मात्रामाप्रोति। य एवं वेदं॥५९॥

अप्रिरंजायत् तद्भयोऽतप्यताभिनदरोदीत्य्जापंतीरोद्स्त्वमंसृजृतासुजत घृतमंदुहृद्याऽस्य सा तृनूरासीदहंरभवदच्छति वेदं (इदं धूमौं-

ऽग्रिज्योतिर्विर्मरीचय उदारास्तद्ञ्रर स जृघनाथ्या तर्मिस्रा स प्रजनेनाथ्या जोथ्स्रा स उंपपुक्षाभ्यार सौऽहोरात्रयौंः मुन्धिः

स मुखात्तदहेंदेववान्मुन्मये दारुमये रज्ञते हरिते तेभ्युस्ताभ्यो द्वे तेऽत्रं पयो घृत॰ सोमम्॥)॥====

यद्स्मित्रोद्ति। तदेनमब्रवीत्। पुतन्मे प्रयेच्छ। अथाहमेतेषां देवानामधिपतिर्भविष

अंबोच्निति। अथ् वा इदं तर्हि प्रजापेतौ हरं आसीत्॥६०॥

कोऽहङ् स्यामित्यंब्रवीत्। पुतत्युदायेति। पुतथ्स्या इत्यंब्रवीत्। यद्तद्ववीषीति।

प्रजापेतिरिन्द्रेमसृजतानुजावरं देवानाँम्। तं प्राहिणोत्। परेहि। एतेषाँ देवानामधिपतिरेधीति। तं देवा अंबुवन्। कस्त्वमसि। वयं वै त्वच्छ्रेयारंसः स्म इति। सौऽब्रवीत्। कस्त्वमसि वयं वै त्वच्छ्रेयारंसः स्म इति मा देवा

विदुरेंनुं नाम्नां। तदेस्मै कृक्कं कृत्वा प्रत्यंमुश्रत्। ततो वा इन्द्रों

को ह वै नामे प्रजापितिः। य एवं वेदं॥६१॥

द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

देवानामधिपतिरभवत्। य एवं वेदं। अधिपतिरेव संमानानां भवति। सोऽमन्यत। किं किं वा अकरमिति। स चन्द्रं म आह्रेति प्रालेपत्। तचन्द्रमंसश्चन्द्रमस्त्वम्।

तथ्सूर्यस्य सूर्यत्वम्। य एवं वेदं। नैनं दभ्रोति। कश्च नास्मिन्वा इदमिन्द्रियं

मत्येस्थादितिं तिदेन्द्रेस्येन्द्रत्वम्। य पृवं वेदं। इन्द्रियान्येव भविति॥६३॥

च्न्द्रवांनेव भेवति। तं देवा अंब्रुवन्। सुवीयों मर्या यथां गोपायत् इति।

य एवं वेदे॥६२॥

अ्यं वा इदं परमोऽभूदिति। तत्परमेष्ठिनः परमिष्टित्वम्। य एवं वेदं। परमामेव

काष्टां गच्छति। तं देवाः समम्नतं पर्यविशन्। वसेवः पुरस्तात्। कृद्रा दक्षिण्तः।

आदित्याः पृक्षात्। विश्वे देवा उंतर्तः। अङ्गिरसः प्रत्यश्रम्॥६४॥

साष्याः पराश्वम्। य एवं वेदे। उपैन॰ समानाः संविधान्ति। स प्रजापेतिरेव

\_ दक्षिण्तः पर्यायम्। स दक्षिण्तः पर्यवर्तयत। ता मुखं पुरस्तात्पश्येन्तीः। मुखं मूला प्रजा आवेयत्। ता अंस्मै नातिष्ठन्तात्राद्याय। ता मुखं पुरस्तात्पश्येन्तीः। पृश्रात्पर्यायन्। स पृश्वात्पर्यवर्तयत। ता मुखं पुरस्तात्पश्यंन्तीः। मुखं दक्षिणतः द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २) दोक्षेणतः॥६५॥

मुखं पृश्वात्। उत्तर्तः पर्यायन्। स उत्तर्तः पर्यवर्तयत। ता मुखं पुरस्तात्पश्येन्तीः

मुखं दक्षिण्तः। मुखं पृश्वात्॥६६॥

मुख्मेमुत्तरतः। ऊर्घ्वा उदायन्। स उपरिष्टान्त्रीवर्तयत। ताः सर्वतोमुखो भूत्वा-ऽऽवेयत्। ततो वै तस्मै प्रजा अतिष्ठन्तात्राद्याय। य एवं विद्वान्परि च वर्तयते नि

चं। प्रजापंतिरेव भूत्वा प्रजा अंति। तिष्ठंन्तेऽस्मै प्रजा अत्राद्यांय। अत्राद एव

मुजापंतिरकामयत बृहोर्भूयांन्थ्स्यामिति। स पृतं दश्होतारमपश्यत्। तं आसीद्वेदं चन्द्रमुस्त्वं य एवं वेदैन्द्रियाव्येव भेवति प्रत्यश्चं मुखं दक्षिणतो मुखं पृक्षात्रवं च॥🕳 मंबीते॥६७॥

प्रायुंङ्गा तस्य प्रयुक्ति बृहोर्भूयांनभवत्। यः कामयेत बृहोर्भूयांन्थ्स्यामिति। स द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

तस्य प्रयुक्तीन्द्रोऽजायत। यः कामयेत बीरो म् आजायेतेति। स चतुरहोतार्

दशंहोतारं प्रयुंअीत। बहोरेव भूयौ-भवति। सोऽकामयत वीरो म आजायेतेति। स दशंहोतुश्चतुंर्होतारं निरमिमीत। तं प्रायुंङ्गा६८॥

प्रयुं औत। आऽस्यं वीरो जायते। सोऽकामयत पशुमान्थ्स्यामिति। स चतुरहोतुः

पश्चेहोतारं निरीममीता तं प्रायुङ्का तस्य प्रयुक्ति पशुमानेभवत्। यः कामयेत

पशुमान्थ्स्यामिति। स पश्चेहोतारं प्रयुज्जीत॥६९॥

निर्मिमीत। तं प्रायुङ्ग। तस्य प्रयुत्तग्रुतवौऽस्मा अकल्पन्त। यः कामयेतर्तवो मे कल्पेर्निति। स षड्डोतार् प्रयुञ्जीत। कल्पेन्तेऽस्मा ऋतवेः। सोऽकामयत सोम्पः

स षड्डोतुः सुप्तहोतारं निरीममीता तं प्रायुङ्का तस्य प्रयुक्ति सोमपः

सोमयाजी स्याम्। आ में सोमपः सोमयाजी जायेतेति॥७०॥

पृशुमानेव भंवति। सोऽकामयतृर्तवो मे कल्पेर्नन्निति। स पश्चेहोतुः षङ्घोतार्

सोमयाज्येभवत्। आऽस्यं सोमपः सोमयाज्यंजायत। यः कामयेत सोमपः सोमयाजी स्याम्। आ में सोमपः सोमयाजी जायेतेति। स सप्तहोतारं प्रयुंज्ञीत। सोमप एव सोमयाजी भेवति। आऽस्यं सोमपः सोमयाजी जायते। स वा एष पृथुः पंञ्चया प्रति तिष्ठति॥७१॥

पद्धिमुखेन। ते देवाः पृशून् वित्वा। सुवर्गं लोकमायन्। तेऽमुष्मिंस्रोके व्यक्षुध्यन्। तेऽब्रुवन्। अमुतेः प्रदानं वा उपजिजीविमेति। ते सप्तहोतारं युज्ञं विषायायास्यम्। आक्टीरसं प्राहिण्वन्। एतेनामुत्रं कल्पयेति। तस्य वा इयं

क्रिमिः॥७२॥

यदिदं किं चे। य पुवं वेदे। कल्पेतेऽस्मै। स वा अयं मंनुष्येषु यज्ञः सप्तहोता। अमुत्रं सम्होता। योनं सम्होता। यो पुवं वेदे। उपैनं यज्ञो नेमिति। यो वे चतुरहोतुणां निदानं वेदे। निदानंबान्भविति। अग्निहोतं वे दशहोतुर्निदानम्। दुर्शपूर्णमासौ चतुरहोतुः। चातुर्मस्यानि पश्चहोतुः। पृशुबन्यः षड्डोतुः। सौम्यौ-

223 द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

 $\frac{1}{2}$ अमिमीत तं प्रायुङ्क पश्रहोतारं प्र युंक्षीत जायेतेति तिष्ठति क्रुमिर्दशहोतुर्मिदानः सुप्त चं॥====

प्रजापेतिरकामयत प्रजाः सृजेयेति प्रजापेतिरकामयत दर्शपूर्णमासौ सृजेयेति प्रजापेतिरकामयत प्रजायेयेति स

तप्ः स त्रिवृतं प्रजापंतिरकामयत् दशहोतारं तेनं दश्पाऽऽत्मानं देवा वै वर्षणमन्तो वै प्रजापंतिस्ताः सृष्टाः समीक्षव्यं

देवा वै चतुरहोतुमिरिदं वा अग्नै प्रजापितिरिन्दं प्रजापितिरकामयत बहोर्भूयानेकांदशा।११॥

प्रजापेतिस्तद्वहंस्य प्रजापेतिरकामयतानयैवेनतस्य वा इयं क्रप्रिस्तस्मौतेपानाज्ञ्योतिर्यदस्मित्रांदित्ये स षड्डोतुः सृप्तहोतारं

प्रजापंतिरकामयत निदानंबान्भवति॥ त्रिसंप्ततिः॥७३॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके द्वितीयः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ तृतीयः प्रश्नः॥

## ॥तौत्तरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके तृतीयः प्रपाठकः॥

तेन् चतुर्होतारः। तस्मा्चतुर्होतार उच्यन्ते। तचतुर्होतुणां चतुर्होतुत्वम्। सोमो ब्रह्मवादिनो वदन्ति। किं चतुंर्होतुणां चतुर्होतृत्वमिति। यदेवैषु चंतुर्धा होतांरः। वै चतुंरहोता। अग्निः पश्चहोता। घाता षड्डोता। इन्द्रंः सप्तहोता॥१॥

प्रजापीतिर्दश्रहोता। य एवं चतुर्होतुणामुद्धिं वेदं। ऋष्रोत्येव। य एषामेवं बन्युतां वेदं। बन्धुमान्भवति। य एषामेवं कृपिं वेदं। कल्पेतेऽस्मे। य एषामेवमायतेनं वेदं।

आयतेनवान्भवति। य एषामेवं प्रतिष्ठां वेदं॥२॥

प्रत्येव तिष्ठति। <u>ब्रह्मवादिनों वदन्ति। दश</u>होता चतुंर्होता। पश्चहोता षड्डोता सुप्तहोता। अथु कस्माचतुंर्होतार उच्यन्त इति। इन्द्रो वै चतुंरहोता। इन्द्रः खलु वै श्रेष्ठों देवतानामुपदेशनात्। य एवमिन्द्रङ्के श्रेष्ठं देवतानामुपदेशनाहेदे। वसिष्ठः समानानां भवति। तस्माच्छ्रेष्ठमायन्तं प्रथमेनैवानुं बुध्यन्ते। अ्यमागन्।

226 तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अयमवांसादिति। कीर्तिरंस्य पूर्वाऽऽगंच्छति जनतांमायुतः। अथो एनं प्रथमेनैवानु

बुध्यन्ते। अयमागन्। अयमवांसादिति॥३॥

सुप्तहोता प्रतिष्ठां वेदं बुध्यन्ते षद्गा 🕳

समिन्धे।

दक्षिणां प्रतिग्रहीष्यन्थ्सप्तदंशकृत्वोऽपौन्यात्। आत्मानमेव

तेजंसे बीयांया अथौं प्रजापंतिरेवेनां भूत्वा प्रतिगृह्णाति।

क्रुप्ता अस्मा ऋतव् आयेन्ति। षड्डोता वै भूत्वा प्रजापेतिरिदश सर्वमसुजत। स

पुनेरुप् शिक्षेयुः। आग्रीप्र एव

प्राणानेवास्योपं दासयति। यद्येनं पुनेरुप् शिक्षेयुः। आग्नीप्न एव जुहुयाद्दशिहोतारम्। चृतुर्गृहीतेनाऽऽज्येन। पृक्षात्पाङासीनः। अनुलोममिषेग्राहम्।

गुणानेवास्मे कल्पयति। प्रायेश्विती वाग्घोतेत्युंतुमुखऋंतुमुखे जुहोति।

कृत्नेवास्मे कल्पयति। कल्पेन्तेऽस्मा कृतवंः॥५॥

ऽनाँत्ये। यद्येनुमार्त्विज्याद्वृत् सन्तं निर्हरेरन्। आभ्रीप्ने जुहुयाद्दशहोतारम्।

वृतुर्गृहीतेनाऽऽज्येन। पुरस्तात्मत्यिङ्ग्छन्। मृतिलोमं विग्राहम्॥४॥

मनोऽसुजता मन्सोऽधि गायुत्रीमंसुजत। तद्गायुत्रीं यशं आच्छेत्। तामाऽलेभत। गायित्रिया अपि छन्दाईस्यसुजता छन्दोभ्योऽपि सामे। तथ्साम् यशं आच्छेत्। तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

तदाऽलभत॥६॥

साम्रोऽधि यज्ञ्ङ्ष्य्यसुजता यजुभ्योऽधि विष्णुम्। तद्विष्णुं यश्ने आच्छेत्। तमाऽलेभता विष्णोरध्योषधीरसुजता ओषंधीभ्योऽधि सोमम्। तथ्सोमं यश्ने

आच्छेत्। तमाऽलेभता सोमादिधे पृशूनंसुजता पृशुभ्योऽधीन्द्रम्॥७॥

तदिन्द्रं यशं आच्छेत्। तदेनुत्राति प्राच्यंवत। इन्द्रं इव यश्चस्वी भंवति।

- य एवं वेदं। नैनं यशोऽति प्रच्यंवते। यद्वा इदं किं चं। तथ्सर्वमुत्तान एवाऽऽङ्गीर्सः प्रत्येगुह्वात्। तदेनं प्रतिगृहीतं नाहिनत्। यत्किं चं प्रतिगृह्यीयात्।

- तथ्सर्वमुत्तानस्त्वौऽऽङ्गीर्सः प्रतिगृह्णात्वित्येव प्रतिगृह्णीयात्। इयं वा उंत्तान

- आंक्षीर्सः। अन्येवेन्त्रतिगृह्णाति। नैन १ हिनस्ति। ब्रहिषा प्रतीयाद्धां

वा। एतद्वे पंशूनां प्रियं धामी। प्रियेणेवेनं धाम्रा प्रत्येति॥८॥

विश्राहंमृतवस्तदाऽलेभ्तेन्द्रं गृह्णीयाथ्यद्री॥

228 तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

यो वा अविद्वात्रिवतयते। विशीर्षा सपौप्पाऽमुर्ष्पिल्लोके भवति। अथ यो

विद्वात्रिवर्तयेते। सशीर्षा विपाँप्माऽमुष्मिँह्योके भेवति। देवता वै सृप्त पुष्टिकामा

न्यंवर्तयन्ता अग्निश्चं पृथिवी चे। वायुश्चान्तरिक्षं च। आदित्यश्च द्योश्चं चन्द्रमाः।

अग्निन्यंवर्तयता स सांह्स्नमंपुष्यत्॥९॥

पृथिवी न्यंवर्तयता सौषंधीमिर्वन्स्पतिमिरपुष्यत्। बायुन्यंवर्तयता स

मरीचीमिरपुष्यत्। अन्तरिक्षं न्यंवर्तयत। तद्वयोमिरपुष्यत्। आदित्यो न्यंवर्तयत।

स र्शिमभिरपुष्यत्। द्यौन्यंवर्तयत। सा नक्षेत्रैरपुष्यत्। चन्द्रमा न्यंवर्तयत। सोऽहोर्ात्रैरंधमासैमसिर्कृतुभिः संवध्सरेणांपुष्यत्। तान्पोषाँन्पुष्यति। याङ्स्ते-

ऽपुष्यम्। य एवं विद्वात्रि चं वर्तयंते परि च॥१०॥

<u>अपुष्युनक्षत्रेरपुष्यत्पश्चं</u> च॥**——** 

<u>m</u>

तस्य वा अग्नेर्हिरंण्यं प्रतिजग्रुहुषंः। अर्धिमिन्द्रियस्यापाकामत्। तदेतेनैव

ऽऽत्मत्रुपाधेते। य एवं विद्वान् हिरंण्यं प्रतिगृह्णाति। अथ योऽविद्वान्प्रतिगृह्णाति। अर्धमस्यिन्द्रियस्यापेन्नामति। तस्य वै सोमंस्य वासेः प्रतिजग्रहुषेः। तृतीयमिन्द्रिय-" प्रत्यंगृह्णात्। तेन वै सौंऽर्धीमेन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपार्धत्ता अर्धीमेन्द्रियस्या-तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

तदेतेनैव प्रत्यंगृह्वात्। तेन वै स तृतीयमिन्द्रियस्याऽऽत्मत्रुपाधत्त। गृतीयमिन्द्रियस्याऽऽत्मत्रुपाधेते। य एवं विद्वान् वासेः प्रतिगृह्वाति। अथ्

स्यापाँकामत्॥११॥

योऽविद्वान्प्रतिगृह्णाति। <sup>-</sup>तृतीयमस्येन्द्रियस्यापेकामति। तस्य वै कद्रस्य गां प्रतिजग्रहुषेः। चृतुर्थीमिन्द्रियस्यापौकामत्। तामेतेनैव प्रत्येगृह्णात्। तेन् वै स

<u>चतुर्थीमेन्द्रियस्याऽऽत्मत्रुपार्धते। य एवं विद्वान्गां प्रीतेगृह्णाति। अथ</u>

चेतुर्थीमेन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपार्धत्त॥१२॥

योऽविद्वान्प्रतिगृह्णाति। चृतुर्थमंस्येन्द्रियस्यापेकामति। तस्यु वै वर्षण्स्यार्थ

प्रतिजग्रहुषंः। पञ्चममिन्द्रियस्यापांकामत्। तमेतेनेव प्रत्यंगृह्णात्। तेन

स पश्चममिद्रियस्याऽऽत्मन्नुपार्धता पश्चममिन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपार्धते। य एवं

विद्वानश्चं प्रतिगृह्णाति॥१३॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अथ् योऽविद्वान्प्रतिगृह्णाति। पश्चममंस्येन्द्रियस्यापंकामति। तस्य वे प्रजापेतेः

पुरुषं प्रतिजग्रहुषंः। षुष्ठमिन्द्रियस्यापाँकामत्। तमेतेनैव प्रत्यंगुह्णात्। तेन वै स

षृष्ठमिन्द्रियस्याऽऽत्मत्रुपार्धता षृष्ठमिन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपार्धते। य एवं विद्वान्युर्ुष

प्रतिगृह्णाते। अथ् योऽविद्वान्प्रतिगृह्णाते। षष्ठमंस्येन्द्रियस्यापंत्रामति॥१४॥

तस्य वै मनोस्तल्पं प्रतिजयृहुषंः। सृषममिन्द्रियस्थापाकामत्। तमेतेनैव प्रत्येगृह्णात्। तेन वै स संप्तमिनिद्रयस्याऽऽत्मन्नुपार्घत। सृष्तमिनिद्रयस्या-

ऽऽत्मत्रुपाधंते। य एवं विद्वाङ्स्तर्त्यं प्रतिगृह्णाति। अथ् योऽविद्वान्प्रतिगृह्णाति।

सृप्तममंस्येन्द्रियस्यापंकामति। तस्य वा उत्तानस्याऽऽङ्गीर्सस्याप्राणित्प्रतिजग्रहुषेः।

अष्टममिन्द्रियस्यापाँकामत्॥१५॥

तदेतेनैव प्रत्यंगृह्णात्। तेन वै सौंऽष्ट्मिमिन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपार्धता अष्ट्रमिनिद्रय-

स्याऽऽत्मत्रुपाधंते। य एवं विद्वानप्रांणत्प्रतिगृह्णाते। अथ् योऽविद्वान्प्रतिगृह्णाते।

231 अष्टममेस्येन्द्रियस्यापेक्रामति। यद्वा इदं किं चे। तथ्सर्वेमुत्तान पृवा-ऽऽङ्गीरसः प्रत्येगुह्वात्। तदेने प्रतिगृहीतं नाहिनत्। यक्किं चे प्रतिगृह्षीयात्। तृतीयमिद्रियस्यापौकामचतुर्थीमिद्रियस्यात्मत्रुपाष्ट्तार्थं प्रतिगृह्णाते षष्ठमंस्येद्रियस्यापंकामत्यष्टमिनिद्र्यस्यापौकामत्यतिगृह्णीयाच्लारि च (तस्य वा अभ्रेर्हिरंण्यु॰ सोमंस्य वास्फ्तदेतेनं रुद्रस्य गान्तामेतेन वर्षण्स्यार्थं प्रजापंतेः पुर्षषु मनोस्तल्युन्तमेतेनौतानस्य ब्रह्मवादिनो वदन्ति। यद्दश्होतारः स्त्रमासेत। केन् ते गृहपेतिनाऽऽध्रुवन्। केनं तथ्सर्वमुत्तानस्त्वौऽऽङ्गीर्यसः प्रतिगृह्णात्वित्येव प्रतिगृह्णीयात्। इयं वा उंत्तान तदेतेनाप्राणुद्यद्वे। अर्थं तुर्तीयमष्टमं तर्चतुर्थं तां पश्चम॰ षुष्ठ॰ संप्रमन्तम्। तदेतेन् द्वे तामेतेनैकं तमेतेन त्रीण् तदेतेनैकम्॥)॥[४] आंक्षीर्सः। अन्यैवैन्त्यितिगृह्णाति। नैन् हिनस्ति॥१६॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

यचतुर्होतारः सत्रमासंत। केन ते गृहपंतिनाऽऽर्धुवन्। केनौषंधीरसृजन्तेति। सोमेन वै ते गृहपंतिनाऽऽर्धुवन्॥१७॥ प्रजा अंसुज्नोती। प्रजापीतिना वै ते गृहपीतिनाऽऽध्रुंबन्। तेनं प्रजा अंसुजन्त।

तेनौषंधीरमुजन्ता यत्पश्चहोतारः सृत्रमासंता केन् ते गृहपंतिनाऽऽध्रुंबन्।

232 केनैभ्यो लोकेभ्योऽसुरान्प्राणुदन्ता केनैषां पश्चनेवृञ्जतेति। अग्निमा वै ते गृहपीतिना-ऽऽर्प्ठवन्। तेनैभ्यो लोकेभ्योऽसुरान्प्राणुदन्ता तेनैषां पश्चनेवृञ्जता यथ्बङ्घोतारः स्त्रमासेता केन् ते गृहपेतिनाऽऽध्रीबन्॥१८॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

केन्तूनंकल्पयन्तेति। धात्रा वै ते गृहपंतिनाऽऽधुवन्। तेन्तूनंकल्पयन्त। यथ्सप्तहोतारः सत्रमासेत। केन ते गृहपंतिनाऽऽधुवन्। केन् सुवंरायन्। केन्माँस्त्रोकान्थ्समंतन्वत्रिति। अर्यम्णा वै ते गृहपंतिनाऽऽधुवन्। तेन् सुवंरायन्। तेनेमाँ ह्रोकान्थ्समंतन्बन्निति॥१९॥

एते वै देवा गृहपंतयः। तान् य एवं विद्वान्। अप्यन्यस्यं गार्हपुते दीक्षेते। अवान्तरमेव सत्रिणामुभ्रोति। यो वा अर्यमणं वेदं। दानंकामा अस्मे प्रजा भवन्ति। युज्ञो वा अर्यमा। आर्यावसृतिरिति वै तमांहुर्यं प्रशः सीन्त। आर्यावसृतिर्भवति। य एवं वेदं॥२०॥ यद्वा ड्रदं किं चे। तथ्सर्वे चतुर्होतारः। चतुर्होतुभ्योऽधि युज्ञो निर्मितः। स य

यश्चतुंर्होतॄन् वेदं। यो वै चतुंर्होतृणा॒॰् होतॄन् वेदं। सर्वांसु प्रजास्वत्रंमत्ति॥२१॥ एुवं विद्वान् विवदंत। अहमेव भूयों वेद। यश्चतुंर्होतॄन् वेदेति। स होव भूयों वेदं तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

सर्वा दिशोऽभि जंयति। प्रजापेतिकै दश्होतुणा् होतां। सोमुश्चतुरहोतुणा् होतां। अभ्रम सप्तहोतुणा् होतां। अर्थमा सप्तहोतुणा् होतां। अर्थमा सप्तहोतुणा् होतां। प्रति पश्चोतां। प्रति व वतुरहोतुणा् होतां। तान् य एवं वेदं। सर्वासु प्रजास्वन्नमिति। सर्वा दिशोऽभि जंयति॥२२॥ आर्धुवृत्रार्धुवृत्रित्येवं वेदाौते सर्वा दिशोऽभि जंयति (वे तेनं सृत्रङ्केनं॥)॥■

प्रजापेतिः प्रजाः सृष्टा व्यंक्ष॰सत। स हृदंयं भूतोऽश्रयत्। आत्मन् हा (३) इत्यह्लेयत्। आप्ः प्रत्येश्रण्वन्। ता अग्निहोत्रेणेव यंज्ञकृतुनोपं प्यवितन्त। ताः

कुसिन्यमुपौहन्। तस्मोदग्निहोत्रस्यं यज्ञकृतोः। एकं कृत्विक्। चृतुष्कृत्वोऽह्वंयत्। पयोवंतन्ता ते प्रत्यंश्रण्वन्। ते दंर्शपूर्णमासाभ्यांमेव यंज्ञकृतुनोपं <u>अग्निवाधुरादित्यश्वन्द्रमाः॥२३॥</u>

त उपौहं लोमे छुवीं मार्समास्थि मुज्ञानम्। तस्मौचातुर्मास्यानौं यज्ञकृतोः॥२४॥ पुञ्चकृत्वोऽह्वयत्। पुशवः प्रत्येश्यवन्। ते चातुर्मास्यैरेव यंज्ञकृतुनोपं पूर्यावेतन्त। उपौहङ्श्रुत्वार्यङ्गाना तस्मौद्ग्शपूर्णमासयौर्यज्ञक्तोः। चत्वारं ऋत्विजः तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

पश्चत्विजः। पट्टत्वोऽह्वंयत्। ऋतवः प्रत्यंश्रण्वन्। ते पंशुबन्धेनैव

यंज्ञकतुनोपंप्यवितिन्ता त उपौहन्थ्स्तनांवाण्डो शिष्जमवा अं

तस्मौत्पशुबन्यस्यं यज्ञकृतोः। षड्डित्वज्ञः। स्मुकृत्वोऽह्वयत्। होत्राः प्रत्यंश्रुप्वन्।

ताः सौम्येनेवाष्वरेणं यज्ञकृतुनोपंपयविर्तन्ता २५॥

ता उपौहन्थ्सप्त शीर्षण्यान्याणान्। तस्माध्सोम्यस्याध्वरस्यं यज्ञकृतोः। सृप्त

होत्राः प्राचीर्वषंद्रुर्वन्ति। द्शुकृत्वोऽह्वंयत्। तप्ः प्रत्यंश्रणोत्। तत्कर्मणेव संवथ्सरेण

सर्वैर्यज्ञ कृतुम्किपं प्यवितित। तथ्सर्वमात्मानुमपीरवर्गमुपौहत्। तस्माध्संवथ्सुरे

एकेहोत्रे बृलि॰ हंरन्ति। हरंन्त्यस्मै प्रजा बृलिम्। ऐन्मप्रतिख्यातं गच्छति। य सर्वे यज्ञकतवोऽवेरुष्यन्ते। तस्माद्दशहोता चतुंर्होता। पश्चंहोता षङ्घोता सुप्तहोता।

चन्द्रमांश्वातुर्मास्यानां यज्ञकृतोरंध्बरेणं यज्ञकृतुनोपं पृयांबर्तन्त सुप्तहोता चृत्वारिं च॥━ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २) एवं वेदं॥२६॥

प्रजापंतिः पुरुषमसुजत। सौऽभिरंब्रवीत्। ममायमत्रममिस्विति। सोऽबिभेत्।

सर्व वे माऽयं प्र धंक्ष्यतीतिं। स एताङ्श्वतुंरहोतॄनात्मस्परंणानपश्यत्। तानेजुहोत्। तैर्वे स आत्मानेमस्पृणोत्। यदिभिहोत्रं जुहोतिं। एकेहोतारमेव

तद्यंशकतुमाप्रोत्यग्निहोत्रम्॥२७॥

कुसिन्धं चाऽऽत्मनंः स्पृणोति। आदित्यस्यं च सायुंज्यं गच्छति। चतुरुत्रंयति। चतुंर्होतारमेव तद्यंज्ञकृतुमाप्नोति दर्शपूर्णमासौ। चत्वारि चाऽऽत्मनोऽङ्गानि स्पृणोति। आदित्यस्यं च सायुंज्यं गच्छति। चतुरुत्रंयति। समित्यंश्वमी। पश्चेहोतारमेव तद्यंज्ञकृतुमाप्नोति चातुर्मास्यानि। लोमं छुवीं मार्समस्थि

तानि चाऽऽत्मनंः स्पृणोति। आदित्यस्यं च सायुंज्यं गच्छति। चतुरुन्नयति। मुज्ञानम्॥ २८॥

236 तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

प्राणम्। तानि चाऽऽत्मनेः स्पृणोति। आदित्यस्यं च सायुंज्यं गच्छति। चतुरुन्नयति। <u>द्विज्</u>रिहोति॥२९॥

स्मिध्संप्रमी। स्प्रहोतारमेव तद्यंत्रकृतुमाप्रोति सौम्यमध्वरम्। स्प्त चाऽऽत्मनंः

शीर्षण्याैन्याणान्थ्रम्पुणोति। आदित्यस्यं च सायुंज्यं गच्छति। चतुरुन्नयति। द्विजुहोति। द्विर्मिमार्छि। द्विः प्राथ्ञाति। दश्होतारमेव तद्यंत्रकृतुमाप्नोति

संवथ्सरम्। सर्वं चाऽऽत्मानुमपीरवर्गङ् स्पुणोतिं। आदित्यस्यं च सायुंज्यं अप्रिहोत्रं मुज्ञानन्द्विज्ञीत्यपीरवर्गङ् स्पुणोत्येकं च॥🕳 गच्छति॥३०॥

गर्भेणाताम्यत्। स तान्तः कृष्णः श्यावोऽभवत्। तस्मौतान्तः कृष्णः श्यावो भेवति।

श्यावोऽभवत्। तस्माथ्स्त्र्यंन्तर्वत्नी। हरिणी सृती श्यावा भवति। स विजायमानो

मुजापीतिरकामयत् प्रजायेयेति। स तपोऽतष्यता सौऽन्तर्वानमवत्। स हरितः

तस्यासुरेवाजीवत्॥ ३१॥

पितृनेसुजता तित्येतृणां पितृत्वम्। य एवं पितृणां पितृत्वं वेदं। पितेवैव स्वानां तेनासुनाऽसुरानसृजता तदसुराणामसुर्त्वम्। य एवमसुराणामसुर्त्वं वेदे। असुमानेव भवति। नेनमसुर्जहाति। सोऽसुरान्थ्सृष्टा पितेवामन्यता तदनु भवति॥३२॥

यन्त्यंस्य पितरो हवम्। स पितृन्थमृष्टाऽऽमंनस्यत्। तदनुं मनुष्यांनसुजता। तन्मेनुष्यांणां मनुष्यत्वम्। य एवं मंनुष्यांणां मनुष्यत्वं वेदं। मनस्त्रेव भवति। नैनं

तद्देवानाँ देवत्वम्। य पृवं देवानाँ देवत्वं वेदं। दिवां हैवास्यं देवत्रा भंवति। तानि वा पृतानि चृत्वार्यम्भारंसि। देवा मंनुष्याः पितरोऽसुराः। तेषु सर्वेष्वम्भो नमं इव मनुर्जहाति। तस्मै मनुष्यौन्थ्समुजानाये। दिवां देव्त्राऽभेवत्। तदनुं देवानंसुजता भवति। य एवं वेदं॥३३॥

अ॒जी॒वृथ्स्वानाँ भवति देवानंसृजत सृप्त चं॥■

238 तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

ब्रह्मवादिनों वदन्ति। यो वा इमं विद्यात्। यतोऽयं पवेते। यदंभि पवेते। यदंभि सम्पवेते। सर्वेमायुरियात्। न पुराऽऽयुषः प्र मीयेत। पृशुमान्थ्स्यात्। विन्देतं प्रजाम्। यो वा इमं वेदं॥३४॥

यतोऽयं पवेते। यदिभि पवेते। यदिभि सम्पवेते। सर्वमायुरेति। न पुराऽऽयुंषः प्र मीयते। पृशुमान्भेवति। विन्दते प्रजाम्। अन्धः पंवते। अपोऽभि पंवते। अपोऽभि

सम्पंबते॥ ३५॥

अस्याः पंबते। इमाम्भि पंबते। इमाम्भि सम्पंबते। अग्नेः पंबते। अग्निम्भि पंबते। अग्निम्भि सम्पंबते। अन्तरिक्षात्पवते। अन्तरिक्षम्भि पंबते। अन्तरिक्षम्भि

सम्पेवते। आदित्यात्पेवते॥३६॥

आदित्यम्भि पंवते। आदित्यम्भि सम्पंवते। द्योः पंवते। दिवंम्भि पंवते। दिवंम्भि सम्पंवते। दिग्ग्यः पंवते। दिशोऽभि पंवते। दिशोऽभि सम्पंवते। स यत्पुरस्ताद्वाति। प्राण एव भूत्वा पुरस्ताद्वाति॥३७॥

अथ यदुंतरतो बाति। सबितैव भूत्त्वोत्तंरतो बाति। सबितेव स्वानां भवति। य एवं वेदं। स वा एष सीवेतेव। ते य एंनं पुरस्तांदायन्तंमुपवदंन्ति। य एवास्यं पुरस्तांदायन्तंमुपवदंन्ति। य एवास्यं पुरस्तांत्याप्तानं। तार्श्स्तेऽपं घ्रन्ति। पुरस्तादितंरान्याप्तानंः सचन्ते। अथ् य एंनं सर्वा दिशोऽनु वि वीति। सर्वा दिशोऽनु सं वातीति। स वा एष मांतिरेश्वेव। अथ्य यत्पश्चाद्वाति। पर्वमान एव भूत्वा पृश्चाद्वीति। पूतमेस्मा आहंरन्ति। पूतमुपेहरन्ति। पूतमेश्जाति। य एवं वेदं। स वा एष पर्वमान एव॥३९॥ वाति। मातिरेश्वेव भूत्वा देक्षिणतो वाति। तस्मौद्दक्षिणतो वान्तं विद्यात्। सर्वो प्राण इव प्रियः प्रजानां भवति। य एवं वेदं। स वा एष प्राण एव। अथु यहंक्षिणतो तस्मौत्पुरस्ताृद्वान्तम्। सर्वाः प्रजाः प्रति नन्दन्ति। प्राणो हि प्रियः प्रजानाम्। दिश आ वांति॥३८॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

य एवास्यं दक्षिणतः पाप्मानः। ताङ्स्तेऽपं घ्रन्ति। दक्षिणत इतंरान्याप्मनंः दोक्षेण्त आयन्तंमुपवदंन्ति॥४०॥

240 तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

सचन्ते। अथ् य एनं पृश्चादायन्तंमुप् वदंन्ति। य एवास्यं पृश्चात्पाप्नानंः। ताङ्स्तेऽपं

प्रन्ति। पृश्वादितंरान्याप्मनं सचन्ते। अथु य एंनमुत्तर्त आयन्तंमुप् वर्दन्ति। य

एवास्यौत्तरतः पाप्मानेः। ताङ्स्तेऽपं घ्रन्ति॥४१॥

बायांत्। अथ् प्रवेयांत्। प्र वां धावयेत्। सांतमेव रेदितं व्यूंढं गुन्धम्मि प्रच्यंवते। आऽस्य तं जनपुदं पूर्वा कीर्तिगैच्छति। दानेकामा अस्मै प्रजा भवन्ति। य एवं

व्यस्येवाक्ष्यौ भषित। मृण्टयेदिव। काथयेदिव। श्रृङ्गायेतेव। उत मोपं वदेयुः। उत

उत्तरत इतरान्याप्मनेः सचन्ते। तस्मदिवं विद्वान्। वीवं नृत्येत्। प्रेवं चलेत्।

में पाप्पानुमपं हन्युरिति। स यान्दिशः सानिमेष्यन्थस्यात्। युदा तान्दिशुं वातो

वेद् सम्पंवत आदित्यात्पंवते वात्या वाँत्येष पर्वमान एव देक्षिणत आयन्तंमुप् वदंन्त्युत्तरृतः पाप्मानुस्ताः स्तेपं घृन्तीत्युष्टौ

वेद्॥४२॥

प्रजापेतिः सोम्॰ राजानमसुजता तं त्रयो वेदा अन्वेसुज्यन्ता तान् हस्ते-ऽकुरुता अथु ह सीता सावित्री। सोम्॰ राजानं चकमे। श्रुद्धामु स चेकमे।

241 साऽऽहं पितरं प्रजापेतिमुपंससार। त॰ होवाच। नमंस्ते अस्तु भगवः। उपं तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २) त्वाऽयानि॥४३॥ स्थांग्रमेलङ्कारं केल्पयित्वा। दश्होतारं पुरस्ताद्धाख्याये। चतुर्होतारं दक्षिणतः। पश्चेहोतारं पृश्वात्। षड्डोतारमुत्तरतः। सप्तहोतारमुपरिष्टात्। सम्भारेश्च पर्निभिश्च

प्र त्वो पद्ये। सोमुं वै राजानं कामये। श्रृद्धामु स कामयत् इति। तस्यां उ ह

मुखेऽलुङ्गत्यं॥४४॥

आऽस्यार्धं वेब्राजा ता॰ होदीक्ष्योवाच। उप मा वेर्तस्वेति। त॰ होवाच। भोगं तु म् आचेक्ष्व। एतन्म् आचेक्ष्व। यत्ते पाणाविति। तस्यां उ ह त्रीन् वेदान्प्रदेदो।

तस्मादुह स्त्रियो नोगमैव होरयन्ते। स यः कामयेत प्रियः स्यामिति॥४५॥ यं वो कामयेत प्रियः स्यादिति। तस्मो एतङ् स्थांगरमेलङ्कारं केल्पयित्वा। दशहोतारं पुरस्तौद्यास्थाये। चतुरहोतारं दक्षिणतः। पश्चहोतारं पृश्वात् षङ्कोतारमुत्तर्तः। स्पत्रहोतारमुपरिष्टात्। सम्भारेश्च पनिभिश्च मुखेऽलुङ्गत्यं

ब्रह्मात्म-वदसृजत। तदकामयत। समात्मनां पद्येयेति। आत्मत्रात्मत्रित्यामेत्रयता| तस्मै दशुम १ हूतः प्रत्येश्रणोत्। स दशंहूतोऽनवत्। दशंहूतो हु वै नामैषः। तं वा एतं दशंहूत १ सन्तम्। दशंहोतेत्याचेक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षेपिया इव हि आस्याधै ब्रेजेत्। प्रियो हैव भवति॥४६॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २) <u>अ्यान्युलङ्कल्यं स्यामिति भवति॥</u>

देवाः॥४७॥

आत्मुत्रात्मुत्रित्यामेत्रयत। तस्मै सप्तम हूतः प्रत्येश्रणोत्। स स्पप्तहूतोऽभवत्।

सृप्तहूतो ह वै नामैषः। तं वा एत स्पहूत सन्तम्। सृपहोतेत्याचेक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षेप्रिया इव हि देवाः। आत्मृत्रात्मृत्रित्यामेत्रयत। तस्मै षुष्ठ ६ हूतः प्रत्येत्रणोत्।

षड्ढूतो ह वे नामैषः। तं वा एत षड्ढूत सन्तम्। षड्ढोतेत्याचंक्षते प्रोक्षेण।

स षड्ढेतोऽभवत्॥४८॥

पुरोक्षेप्रिया इव हि देवाः। आत्मृत्रात्मृत्रित्यामंत्रयत। तस्मै पञ्चम॰ हुतः

243 प्रत्येश्रुणोत्। स पश्चेहूतोऽभवत्। पश्चेहूतो हु वै नामेषः। तं वा पृतं पश्चेहूत॒ ९ सन्तम्। पश्चहोतेत्याचेक्षते प्रोक्षेण॥४९॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

प्रत्यंश्रुणोत्। स चतुंर्हतोऽभवत्। चतुंर्हतो हु वै नामैषः। तं वा पृतं चतुंर्हतुं ॰ सन्तम्। चतुंर्होतेत्याचेक्षते परोक्षेण। परोक्षेप्रिया इव हि देवाः। तमेब्रवीत्। त्वं वै मे नेदिष्ठ हुतः प्रत्यंत्रौषीः। त्वयैनानाख्यातार् इति। तस्मान्नु हैनाः अतुंरहोतार परोक्षीप्रया इव हि देवाः। आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयता तस्में चतुर्थं॰ हतः |

देवाः षड्कृतोऽभवृत्पश्चेहोतेत्याचेक्षते प्रोक्षेणाश्रौषीः षद्दं॥🕳

इत्याचेक्षते। तस्मौच्छुश्रूषुः पुत्राणा॒॰ हद्यंतमः। नेदिष्ठो हद्यंतमः। नेदिष्ठो ब्रह्मणो

भवति। य एवं वेदं॥५०॥

ब्रह्मवादिनः किं दक्षिणां यो वा अविद्वान्तस्य वै ब्रह्मवादिनो यद्दशहोतारः प्रजापेतिर्व्येसं प्रजापेतिः पुरुषं

प्रजापेतिरकामयत् स तप्ः सौऽन्तर्वान्त्रह्मवादिनो यो वा हुमं विद्यात्प्रजापेतिः सोम्॰ राजांनं ब्रह्मौत्मन्वदेकांदशा।११॥ ब्रह्मवादिनस्तस्य वा अग्नेर्यद्वा इदं किं चं प्रजापेतिरकामयत् य एवास्यं दक्षिणतः पंश्चाशत्॥५०॥

ब्रह्मवादिनो य एवं वेदे॥

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

| 244                          |            | गियाष्टके तृतीयः प्रपाठकः समाप्तः॥           |
|------------------------------|------------|--|
|                              | ओम्।       | 40   |
| र्तृतायः प्रश्नः (अष्टकम् ४) | हिरिः ओम्॥ | 1 श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वि |
| :<br>マ<br>マ<br>で             |            | इति  |

चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

॥ चत्रथेः प्रश्नः॥

## ॥तैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः॥

जुष्टो दमूना अतिथिदुरोणे। इमं नो युजमुपं याहि विद्वान्। विश्वां अग्नेऽमियुजों

विहत्ये। शृत्र्युतामा भेरा भोजनानि। अभ्रे शर्धं महते सौभेगाय। तवे द्युम्नान्युंत्तमानि सन्तु। सञ्जास्पत्य सुयममा कृणुष्व। शृत्र्यतामिभि तिष्ठा महार्सि। अग्रे यो

नेऽमितो जनः। वृको वारो जिघा १सिति॥१॥

ताङ्स्त्वं वृत्रहं जहि। वस्वस्मभ्यमा भंर। अग्रे यो नोऽभिदासीते। समानो यश्च निष्ठ्यंः। इध्मस्येव प्रक्षायंतः। मा तस्योच्छेषि किञ्चन। त्वमिन्द्राभिभूरंसि। देवो विज्ञातवीर्यः। वृत्रहा पुंक्चेतनः। अप् प्राचं इन्द्र विश्वारं अमित्रान्॥२॥

अपापांचो अभिभूते नुदस्व। अपोदींचो अपंशूराधरा चं ऊरौ। यथा तब

शर्मन्मदेम। तमिन्द्रं वाजयामिस। मृहे बृत्राय् हन्तेवे। स वृषां वृष्मो भुंवत्।

युजे रथं गुवेषण्॰ हरिभ्याम्। उप् ब्रह्माणि जुजुषाणमेस्युः। विबाधिष्टास्य रोदंसी

महित्वा। इन्द्रों वृत्राण्यंप्रतीजंघन्वान्॥३॥ नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

ह्व्यवाहममिमातिषाहमी। रुक्षोहणं पृतेनासु जिष्णुम्। ज्योतिष्मन्तं दीद्यंतं पुरस्यम्। अग्निश् स्विष्टकृतमा हुवेम। स्विष्टमग्ने अभि तत्पुणाहि। विश्वां देव मृतेना अभिष्या उुरुं नः पन्यां प्रादेशन्विमोहि। ज्योतिष्मद्धह्यजरं न आयुः।

त्वामेग्ने ह्विष्मेन्तः। देवं मतीस ईडते॥४॥

मन्यै त्वा जातवेदसम्। स हृव्या वेक्ष्यानुषक्। विश्वांनि नो दुर्गहां जातवेदः।

त्नूनाम्। पूषा गा अन्वेतु नः। पूषा रंक्षुत्ववेतः। पूषा वाजरं सनोतु नः। पूषेमा आशा अनुवेद् सर्वाः॥५॥ सिन्धुं न नावा दुरिताऽति पर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनंसा गुणा्नः। अस्माकं बोध्यविता

सो अस्मार अभेयतमेन नेषत्। स्वस्तिदा अघृणिः सर्ववीरः। अप्रेयुच्छन्पुर

एंतु प्रजानन्। त्वमंग्ने स्प्रथां असि। जुष्टो होता वरैण्यः। त्वयां युज्ञं वितंन्वते।

नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अ४हसः॥६॥

अुग्री रक्षारंसि सेपति। शुक्रशोचिरमेत्यः। शुचिः पावक ईड्यः। अग्रे रक्षां णो

प्रतिष्म देव रीषेतः। तिपेष्ठेर्जरो दहा अग्रे हर्भसे न्यंत्रिणम्। दीद्यन्मत्येष्वा। स्वे क्षये शुचित्रता आ वात वाहि भेष्जम्। वि वांत वाहि यद्रपेः। त्वर् हि

विश्वभेषजः। देवानां दूत ईयेसे। द्वाविमौ वातौ वातः॥७॥

आ सिन्योरा पंरावतंः। दक्षं मे अन्य आवातुं। परान्यो वांतु यद्रपंः। यद्दो वांत ते गृहे। अमृतंस्य निधिर्हितः। ततों नो देहि जीवसैं। ततों नो धेहि भेषजम्।

प्र ण् आयूर्षि तारिषत्। त्वमंग्ने अयासि। अया सन्मनंसा हितः। अया सन्

ततो नो मह आवेह। बात् आवांतु भेष्जम्। शुम्भूर्मयोभूनों हृदे॥८॥

हुव्यमूहिषे। अ्या नौ घेहि भेष्जम्। इष्टो अग्निराहुतः। स्वाहांकृतः पिपतुं नः।

स्वगा देवेभ्यं इदं नमंः। कामो भूतस्य भव्यंस्य। समाडेको विराजाति॥९॥

स इदं प्रति पप्रथे। ऋतूनुथ्मुजते वृशी। काम्स्तदभ्रे समेवर्तताधि। मनेसो

247

248

त्वयां मन्यो सुरधेमाकुजन्तेः। हर्षमाणासो धृषुता मेरुत्वः। तिग्मेषंब आयुधा रेतेः प्रथमं यदासीत्। सतो बन्धुमसीते निरीवन्दन्। हृदि प्रतीष्यां क्वयो मनीषा। स्रशिशानाः। उप प्रयन्ति नरो अग्निर्रूपाः॥१०॥ चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

मन्युर्भगो मन्युरेवासं देवः। मन्युर्होता वर्षणो विश्ववेदाः। मन्युं विश्वं ईडते देवयन्तीः। पाहि नो मन्यो तपंसा श्रमेण। त्वमंग्ने ब्रत्मुच्छुचिः। देवा॰ आसांदया इह। अग्ने हव्याय वोढेवे। ब्रतानुबिभेद्वतपा अदाभ्यः। यजां नो देवा॰ अजरः सुवीरंः। दप्द्रत्नांनि सुविदानो अग्ना गोपाय नो जीवसे जातवेदः॥११॥

जिघा∜सत्युमित्रांअघुन्वानींडते सर्वा अश्हेसो वातो हृदे रांजत्युग्निर्कपाः सुविदानो अंग्रु एकं च॥===

चक्षुषो हेते मनंसो हेते। वाचो हेते ब्रह्मणो हेते। यो मांऽघायुरंभिदासीते। तमंभ्रे मेन्या मेनिं कृणु। यो मा चक्षुषा यो मनंसा। यो वाचा ब्रह्मणाऽघायुरंभिदासीते। तयाँऽभ्रे त्वं मेन्या। अमुममेमेनिं कृणु। यत्किश्चासो मनंसा यच्चं वाचा। युज्ञेर्जुहोति यजुषा हविभिः॥१२॥

यातुधाना मश्रन्तु। मा तथ्समीख्र यद्सौ क्रोति। हम्मि तेऽहं कृत॰ हबिः। यो मे संविदानः। पुरादिष्टादाहुंतीरस्य हन्तु। निर्ऋतिरादुरक्षेः। ते अस्य घ्रन्त्वनृतेन स्त्यम्। इन्द्रेषिता घोरमचीकृतः। अपाैश्रो त उुभौ बाहू। अपनह्याम्याम्यम्॥१३॥ वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २) तमुत्युर्निर्ऋत्या

अप नह्यामि ते बाहू। अपं नह्याम्यास्यम्। अग्नेर्वेवस्य ब्रह्मणा। सर्वं तेऽविधिषं

कृतम्। पुराऽमुष्यं वषद्वारात्। यज्ञं देवेषुं नस्कृषि। स्विष्टमस्माकं भूयात्। माऽस्मान्प्रापृत्ररातयः। अन्तिं दूरे सृतो अग्ने। भातृेव्यस्याभिदासंतः॥१४॥

गिरा युज्ञस्य सार्धनम्। श्रुष्टीवानेन्धितावोनम्। अग्ने श्वकेमं ते वयम्। यमं देवस्यं वाजिनेः। अति द्वेषार्शसे तरेम। अवेतं मा समेनसौ समोकसौ। सर्वेतसौ सरेतसौ।

वृषद्कारेण बन्नेण। कृत्या॰ हेन्मि कृतामृहम्। यो मा नक्तं दिवां सायम्। प्रातश्राह्नों निपीयंति। अद्या तिमेन्द्र बन्नेण। भातृेव्यं पादयामिसि। इन्द्रेस्य गृहोंऽिस्

तन्त्वा। प्रपंद्ये सगुः सार्थः। सृह यन्मे अस्ति तेने। ईडे अग्निं विपक्षितम्॥१५॥

नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

उमौ मामेवतञ्जातवेदसौ। शिवौ भेवतमुद्य नेः। स्वयं कृण्वानः सुगमप्रयावम्॥१६॥

तिग्मर्थक्षो वृष्भः शोधीवानः। प्रत्ने स्थस्थमनु पश्येमानः। आ तन्तुमग्निर्दिव्यं तेतान। त्वत्रस्तन्तुरूत सेतुरग्ने। त्वं पन्थां भवसि देव्यानेः। त्वयाऽग्ने पृष्ठं

वयमार्रहेमा अथा देवेः संघमादं मदेमा उद्तेनमं मुंमुग्धि नः। वि पाशं

मध्यमञ्जूता अवाषमानि जीवसे॥१७॥

देवी सुभगां सुपत्नीं। उद॰शेन पतिविद्ये जिगाय। त्रि॰शदंस्या जघनं योजनानि। उपस्य इन्द्रङ् स्थविरं बिमति। सेनां हु नामं पृथिवी घंनञ्जया। विश्वव्यंचा अदितिः

व्यर सोम ब्रते तवे। मर्नस्त्नूषु विभ्रतः। प्रजावेन्तो अशीमहि। इन्द्राणी

विश्रस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु। मा त्वद्राष्ट्रमधि अशत्। ध्रुवा द्यौधुवा पृथिवी। धुवं

विश्वमिदं जगेत्। ध्रुवा ह पर्वता इमे। ध्रुवो राजां विशाम्यम्। इहेवैधि

सा नो देवी सुहवा शर्म यच्छतु। आत्वोऽहार्षम्नतर्भूः। ध्रुवस्तिष्ठाविचाचितः।

सूर्यत्वक्। इन्द्राणी देवी प्रासहा ददांना॥१८॥

व्यंथिष्ठाः॥१९॥

पर्वत इवाविचाचलिः। इन्द्रं इवेह धुवस्तिष्ठ। इह राष्ट्रमुं धारय। अभितिष्ठ पृतन्यृतः। अर्धरे सन्तु शत्रेवः। इन्द्रं इव वृत्रृहा तिष्ठ। अपः क्षेत्राणि सृञ्जयन्।

इन्द्रं एणमदीधरत्। घुवं घुवेणं ह्विषां। तस्मैं देवा अधिब्रवन्। अयं च

रवेण। इन्द्रे शुष्ममदंधाथा विसिष्ठाः। पावका नः सर्यस्वती। वार्जेभिर्वाजिनीवती। युज्ञं वंष्टु धिया वेसुः। सरंस्वत्यभिनों नेषि वस्यः। मा पंस्फरीः पर्यसा मा न आर्थेक्। जुषस्वं नः सुख्यां वेश्यां च॥२१॥

जुष्टीं नरो ब्रह्मणा वः पितृणाम्। अक्षंमव्ययं न किलोरिषाथ। यच्छक्नेरीषु बृहता

ह्विभिंग्स्यमभि दासेतो विप्क्षित्मप्रयावञ्जोबसे ददांना व्यथिष्ठा ब्रब्नेकं च॥🕳

ब्रह्मणस्पतिः॥२०॥

मा त्वक्षेत्राण्यरंणानि गन्म। वृञ्जे हविर्नमंसा बर्हिर्ग्रो। अयामि सुग्घृतवंती

सुवृक्तिः। अम्यंक्षि सद्म सद्ने पृथिव्याः। अश्रांयि युज्ञः सूर्ये न चक्षुः। इहार्वाश्रुमति

251 चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

252 ड्मं नौ यज्ञं विह्वे जुषस्व। अस्य कुर्मो हरिवो मेदिनं त्वा। असंम्मृष्टो जायसे मातृवोः शुचिः। मन्द्रः कविरुदंतिष्टो विवस्वतः। घृतेनं त्वा वर्धयत्रग्न आहुत। धूमस्ते कृतुरंभवद्दिवि श्रितः। अग्निरग्नै प्रथमो देवतांनाम्। संयांतानामुत्तमो विष्णुंरासीत्। अग्निश्चं विष्णो तपं उत्तमं महः। दीक्षापालेभ्योऽवनंतर हि शंका। विश्वेदविर्यक्षियः संविदानो। दीक्षामस्मै यजमानाय धत्तम्। प्र तद्विष्णुः स्तवते बी्यांय। मुगो न भीमः कुंच्रो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु। अधि क्षियन्ति भुवनानि विश्वा। नूमर्तो दयते सनिष्यन् यः। विष्णंव उरुगायाय ह्वये। इन्द्रं जैत्राय जेतवे। अस्माकेमस्तु केवेलः। अवश्विमिन्द्रंमुमुतो हवामहे। यो गोजिद्धंनजिदंखजिद्यः॥२२॥ यजमानाय परिगृह्यं देवान्। दीक्षयेदर हविरा गंच्छतत्रः॥२३॥ चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २) दाशत्॥ २४॥

प्र यः सुत्राचा मनेसा यजाते। एतावेन्तृत्रर्थमा विवासात्। विचंकमे पृथिवीमेष

253

सुजनिमा चकार। त्रिदेवः पृथिवीमेष एताम्। विचंकमे शृतर्चसं महित्वा। प्र विष्णुरस्तु तृवस्स्तवीयान्। त्वेषङ् ह्यस्य स्थविरस्य नामे॥२५॥ एताम्। क्षेत्रांय विष्णुर्मनुषे दश्यस्यन्। ध्रुवासों अस्य कोरयो जनांसः। उक्षिष्रिति ॰ वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

होतांरं चित्ररंथमध्वरस्यं। यज्ञस्यंयज्ञस्य केतु॰ रुशंन्तम्। प्रत्यंधिं देवस्यंदेवस्य मुहा। श्रिया त्वंग्रिमतिथिं जनानाम्। आ नो विश्वांभिरूतिभिंः सजोषाः। ब्रह्मं जुषाणो हेर्यश्व याहि। वरीवृज्यथ्स्थविरेभिः सुशिप्र। अस्मे दधद्वर्षण्॰ शुष्मंमिन्द्र। इन्द्रंः सुवर्षा जनयत्रहानि। जिगायोशिक्यः पृतंना अभि श्रोः॥२६॥

प्रारोचयन्मनेवे केतुमह्राम्। अविन्दुत्योतिर्बृह्ते रणाय। अश्विनाववंसे निह्नेये वाम्। आ नूनं यांतर सुकृतायं विप्रा। प्रातर्युक्तेनं सुवृता रथेन। उपागेच्छतमवसागंतन्नः। अविष्टं धीष्वश्विना न आसु। प्रजावद्रेतो अहंयं नो अस्तु। आवाँ तोके तनेये तूर्तुजानाः। सुरबांसो देववीतिं गमेम॥२७॥

त्वर सोम् कतुभिः सुकतुर्भुः। त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः।

वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

वृष्त्विभिमहित्वा। बुम्नेभिर्द्धुम्यंभवो नृचक्षाः। अषांढं युथ्सु पृतंनासु पप्रिमाँ। सुवर्षामप्स्वां वृजनंस्य गोपाम्। भरेषुजार सुक्षितिर सुश्रवंसम्। जयंन्तं त्वामनु मदेम सोम। भवां मित्रो न शेव्यों घृतासुतिः। विभूतद्युम्न एव या उं

स्प्रथाः॥२८॥

अथां ते विष्णो विदुषां चिहध्यंः। स्तोमों यज्ञस्य राध्यों हविष्मंतः। यः पूर्व्यायं वेथसे नवीयसे। सुमज्ञानये विष्णांवे ददांशति। यो जातमस्य मंहतो महि ब्रवांत्। सेदु श्रवींभिर्युज्यं चिदम्यंसत्। तमुं स्तोतारः पूर्व्यं यथां विद ऋतस्य। गर्मे हिविषां पिपर्तन। आऽस्यं जानन्तो नामं चिद्विष्तन्त। बृहत्ते विष्णो सुमतिं भंजामहे॥२९॥

हरिवर्षसृङ्गिरः। आर्चर्षणिप्रा वृष्मो जनानाम्। राजां कृष्टीनां पुंभहूत इन्द्रेः।

ड्मा धाना घृतस्रुवेः। हरी ड्रहोपंवक्षतः। इन्द्रं सुखतंमे रथैं। एष ब्रह्मा प्रतेमहे। विदथे शरूसिष्ट् हरीं। य ऋत्वियः प्रते वन्वे। वनुषो हर्यतं मदमैं। इन्द्रो नामे घृतत्रयः। हरिंभिश्वारु सेचेते। श्रुतो गण आ त्वां विशन्तु॥३०॥

वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

स्तुतश्रंवस्यत्रवसोपंमद्रिक्। युक्ता हरी वृष्णायौह्यवीङ्। प्र यध्सिन्येवः प्रसुवं

र्डे यदायन्। आपेः समुद्र*ू* रथ्येव जग्मुः। अतिश्चिदिन्द्रः सर्दसो वरीयान्। यदी<u>र</u>

सोमः पृणति दुग्पो अ॰्युः। ह्वयांमसि त्वेन्द्रं याह्यविद्गा३१॥

अरंन्ते सोमंस्तनुवे भवाति। शतंकतो मादयंस्वा सुतेषुं। प्रास्मा॰ अंव पृतंनासु प्रयुष्सु। इन्द्रांय सोमाः प्रदिवो विदांनाः। ऋभुर्येभिर्वषंपर्वा विहायाः।

प्रयम्यमीणान्प्रति षू गृेभाय। इन्द्र पिब वृषेषूतस्य वृष्णः। अहेडमान् उपयाहि -

युज्ञम्। तुभ्यं पवन्त इन्देवः सुतासंः। गावो न विज्ञन्थस्वमोको अच्छं॥३२॥

इन्द्रा गीहे प्रथमो यजियांनाम्। या ते काकुथ्सुकृता या वरिष्ठा। यया शश्वत्यिबंसि मध्वे ऊर्मिम्। तयां पाहि प्र ते अध्वयुरिस्थात्। सन्ते वज्जो वर्ततामिन्द्र गृव्युः। प्रात्युंजा वि बोधया अश्विनावेह गेच्छतम्। अस्य सोमस्य

युज्ञमृष्विना दर्धाते। प्रश्नंश्सन्ति कृवयंः पूर्वेभाजंः। प्रातर्यज्ञष्वमृश्विनो हिनोत। न

गुतयै। प्रात्यविगा प्रथमा यंजष्यम्। पुरा गुप्रादरंकषः पिबाथः। प्रातर्हि

255

256 वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

सायमेस्ति देवया अजुष्टम्। उतान्यो अस्मद्यंजते विचायः। पूर्वः पूर्वो यजमानो वनीयान्॥ ३३॥

गुर्खाजेद्यो गौच्छतं नो दाशुत्रामांभिश्रीगींमेम सृप्रथा भजामहे विशन्तु याृह्यविङिच्छ्रं पिबाथुः पद्दी।■

पिलेतं च यत्। किलासं च पिलेतं चे। निरितो नांशया पृषेत्। आ नः स्वो अंश्जुतां वर्णः। परा" श्रेतानि पातय। असितं ते निलयनम्। आस्थानमसितं तवं॥३४॥

असिक्रियस्योषधे। निरितो नांशया पृषेत्। अस्थिजस्यं किलासंस्य। तनूजस्यं च यत्त्वचि। कृत्ययां कृतस्य ब्रह्मंणा। लक्ष्मं श्वेतमंनीनशम्। सर्रूपा नामं ते माता। सर्रूपो नामं ते पिता। सर्रूपाऽस्योषधे सा। सर्रूपमिदं कृधि॥३५॥ घन्तं वृत्राणि सिञ्जितं धनांनाम्। धूनुध द्यां पर्वतान्दाशुषे वसु। नि जिहते यामे नो भिया। कोपयंथ पृथिवीं पृश्चिमातरः। युधे यदुंग्राः नुक् जाताऽस्योषधे। रामे कृष्णे असिक्रि च। इदश्र रंजनि रजय। किलास

257

- ॅ प्रोबारत मरुतो दुर्मदो इव। देवांसः सर्वया विशा। पुरुत्रा हि सदङ्घासी। विशो पृषेतीरयुग्ध्वम्। प्रवेपयन्ति पर्वतान्। विविश्वन्ति वनस्पतीन्॥३६॥ चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

विश्वा अनुं प्रभु। समध्सुं त्वा हवामहे। समध्स्वग्निमवेसे। वाज्यन्तों हवामहे। वाजेषु चित्ररोधसम्। सङ्गेच्छध्वर् संवेदध्वम्। सं वो मनार्शेसे जानताम्॥३७॥

देवा भागं यथा पूर्वे। सञ्जानाना उपासेत। समानो मञ्जः समितिः समानी। समानं मनेः सह चित्तमेषाम्। समानं केतो अभि स॰ रेगध्वम्। संज्ञानेन वो हविषो यजामः। समानी व आकेतिः। समाना हदयानि वः। समानमेस्तु वो

मनंः। यथां वः सुसृहासंति॥३८॥

स्ज्ञानं नः स्वैः। संज्ञानमरेणैः। संज्ञानमिष्विना युवम्। इहास्मासु नियंच्छतम्।

नि येच्छतम्। उपं च्छायामिव घृणैः। अगंन्म शर्मं ते व्यम्॥३९॥

संज्ञानं मे बृहस्पतिः। संज्ञान४ सिविता केरत्। संज्ञानेमिश्विना युवम्। इह मह्यं

नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अग्रे हिरंण्यसन्दशः। अदंब्येभिः सवितः पायुभिष्टम्। शिवेभिंग्द्य परिपाहि नो गयम्। हिरंण्यजिह्नः सुविताय नव्यंसे। रक्षा माकिनो अघश्रारंस ईशत। मदेमदे हि नो दुदुः। यूथा गवामुजुऋतुः। सङ्गेभाय पुरूश्वता। उभया हस्त्या वसु। शिशोहि राय आ भर॥४०॥

शिप्रिन्वाजानां पते। शचींवस्तवं द्रसना। आ तू नं इन्द्र भाजय। गोष्वश्वेषु शुभुषुं। सृहस्रेषु तुवीमघ। यहेवा देवहेडेनम्। देवांसश्रकुमा व्यम्।

आदित्यास्तस्मान्मा यूयम्। ऋतस्यतेनं मुश्रत। ऋतस्यतेनांऽऽदित्याः॥४१॥

यजंत्रा मुअतेह माँ। युजेर्बो यज्ञवाहसः। आशिक्षंन्तो न शेकिम। मेदंस्वता

यजमानाः। सुचाऽऽज्येन् जुह्नेतः। अकामा वो विश्वदेवाः। शिक्षेन्तो नोपं शेकिम।

यदि दिवा यदि नक्तम्। एनं एनस्योकेरत्। भूतं मा तस्माद्भव्यं च॥४२॥

द्रुपुदादिव मुश्चतु। द्रुपुदादिवेन्मुमुचानः। स्विन्नः स्नात्वी मलोदिव। पूतं पुवित्रेणेवाऽऽज्यम्। विश्वे मुश्चन्तु मैनेसः। उद्दयं तमेसुस्परि। पश्येन्तो

259 नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

ज्योतिरुत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यम्। अगन्म ज्योतिरुत्मम्॥४३॥ तवे कृष्टि वनुस्पतींआनतामसीते वृषं भेरादित्याश्च नवं च॥🕳

वृषासो अर्ष्धुः पेवते हृविष्मान्थ्सोमेः। इन्द्रेस्य भाग ऋतयुः शृतायुः

स मा वृषांणं वृषमं कृणोतु। प्रियं विशा॰ सर्ववीर॰ सुवीरमाँ। कस्य वृषां सुते सर्चां। नियुत्वान्वृषमो रंणत्। वृत्रहा सोमंपीतये। यस्ते श्रङ्ग वृषोनपात्।

प्रणंपात्कुण्डपाय्यंः। न्यंस्मिन्दप्र आ मनंः॥४४॥

तः सप्रीचीफ्तयो वृष्णियानि। पौङ्स्यानि नियुतः सश्चुरिन्द्रम्। समुद्रं न सिन्येव उक्शशुष्पाः। उक्व्यचेसिङ्ग् आ विशन्ति। इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गाः। अुपः प्रैरंयुन्थ्सगंरस्य बुध्रात्। यो अक्षेणेव चृक्रिया शवीभिः। विर्ष्वत्तृस्तम्भे गृथिवीमुत द्याम्। अक्षोद्युच्छवेसा क्षामंबुभ्रम्। वार्णवांत्स्तविषीभिरिन्द्रः॥४५॥

हढान्यौंघ्रादुशमांन ओजंः। अवाभिनत्ककुभः पर्वतानाम्। आ नो अग्रे

सुकेतुना। राघें विश्वायुपोषसम्। मार्डीकं घेहि जीवसै। त्व॰ सोम मृहे भगमैं।

260 त्वं यूने ऋतायते। दक्षं दथासि जीवसी। रधं युअते मुरुतः शुभे सुगम्। सूरो न चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

रजार्सि चित्रा विचेरन्ति तन्यवेः। दिवः संम्राजा पर्यसा न उक्षतम्। न सुमित्रावरुणाविरोवतीम्। पर्जन्यिश्चित्रां वैदत्ति त्विषीमतीम्। अभा वेसत

मित्रावरुणा गविष्टिषु॥४६॥

सुमाययाै। द्यां वेर्षयतमरुणामेरेपसमै। अयुक्त सप्त शुन्ध्युवेः। सूरो निन्नयेः। ताभियोति स्वयुक्तिभिः। वहिष्ठभिर्विहर्यन् यासि तन्तुमै॥४७॥

यो गर्ममोषंधीनाम्। गवाँ कृणोत्यवंताम्। प्रजन्यंः पुरुषीणाँम्। तस्मा इदास्ये हविः। जुहोता मधुमत्तमम्। इडाँ नः स्यतं करत्। तिस्रो यदंग्ने शुरदुस्त्वामित्।

अवव्ययत्रसितं देव वस्वेः। दविष्वतो रुश्मयः सूर्येस्य। वर्मेवावांधुस्तमों अपस्वेन्तः। पुर्जन्यायु प्र गायत। दिवस्युत्रायं मीदुषै। स नो यवसीमेच्छतु।

अच्छो वद तवसं गोर्भिराभिः। स्तुहि पर्जन्यं नम्साऽऽविवास। कनिकदद्वषुभो जीरदानुः। रेतो दघात्वोषधीषु गर्भम्॥४८॥

शुचिं घृतेन शुचेयः सप्येन्। नामांनि चिद्दिषेरे युज्ञियांनि। असूंदयन्त तृनुब

मुजाताः॥४९॥

इन्द्रेश्च नः शुनासीरौ। इमं यज्ञं मिमिक्षतम्। गर्मं धत्तः स्वस्तयै। ययोरिदं विश्वं भुवेनमा विवेशी। ययोरान्दो निहितो महंश्चा शुनांसीरावृतुभिः संविदानौ। इन्द्रंवन्तौ हविरिदं जुंधेथाम्। आघाये अग्निमिन्यते। स्तुणान्तं बर्हिरांनुषक्। येषामिन्द्रो युवा सखा। अग्न इन्द्रेश्च मेदिना। हृथो वृत्राण्यंप्रति। युवः हि

वृत्रहन्तेमा। याभ्या<u> ५ सुवरजंयत्र</u>ुश्रं एव। यावांतस्यृतुर्भुवंनस्य मध्यै। प्रचंर्षणी वृषणा वज्रेबाह्। अग्री इन्द्रावृत्रहणां हुवे वाम्॥५०॥

उत नेः प्रिया प्रियासु। सृप्तस्वसा सुजुष्टा। सरंस्वती स्तोम्यांऽभूत्। इमा

मन् इन्द्रो गविष्टिषु तन्तुं गर्मे॰ सुजांताः सखां सप्त चं॥━

जुह्दांनायुष्मदा नमोभिः। प्रति स्तोम<sup>५</sup> सरस्वति जुषस्व। तव् शर्मन्रियतंमे

दधांनाः। उपेस्थेयाम शर्णं न वृक्षम्। त्रीणि प्दा विचेक्रमे। विष्णुंगोपा अदाभ्यः।

261 नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

262

तदेस्य प्रियम्भि पाथौ अश्याम्। नरो यत्रे देवयवो मदेन्ति। उरुकुमस्य स वन्वन्थ्सुरेक्णाः। मर्ते आनाश सुवृक्तिम्। इमा ब्रह्म ब्रह्मवाह। प्रिया त् आ बुर्गहेः हि बन्धुंरित्था। विष्णौः पुदे पंरमे मध्य उथ्मंः। ऋत्वादा अंस्थु श्रेष्ठः। अुद्य त्वां ततो धर्माणि धारयन्॥५१॥ नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

सीद। बाहि सूर पुरोडाशाम्॥५२॥

उपं नः सूनवो गिरं। शृणवन्त्वमृतंस्य ये। सुमृडीका भंवन्तु नः। अद्या नो देव सवितः। प्रजावेथ्सावोः सौभंगम्। परां दुःष्वप्रियर् सुव। विश्वांनि देव सवितः। दुरितानि परां सुव। यद्भद्रं तन्म आ सुव। शुचिम्कैर्बृहस्पतिम्॥५३॥

अष्वरेषु नमस्यता अनाम्योज आ चेके। या धारयेन्त देवा सुदक्षा

दक्षंपितारा। असुर्याय प्रमंहसा। स इत् क्षेति सुधित ओकंसि स्वे। तस्मा इडां पिन्वते विश्वदानी। तस्मै विशंः स्वयमेवानंमन्ति। यस्मिन्ब्रह्मा राजनि पूर्व एति।

सकूतिमिन्द्र सच्युतिम्। सच्युतिं जघनंच्युतिम्॥५४॥

263 नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

कनात्काभात्र आ भेर। प्रयपस्यत्रिव सक्थ्यौ। वि नं इन्द्र मृथो जहि। कनींखुनदिव सापयन्। अभि नः सुष्टुतिं नय। प्रजापेतिः स्नियां यशेः। मुष्कयोरदधा्थ्सपम्। कामेस्य तृतिमान्न्दम्। तस्यौग्ने भाजयेह मा। मोदेः प्रमोद जोनन्दः॥५५॥

मुष्कयोनिहितः सपेः। सृत्वेब कामेस्य तृप्याणि। दक्षिणानां प्रतिगृहे।

मनेसिश्चित्तमाकेतिम्। वाचः सृत्यमेशीमहि। पृश्ना॰ रूपमत्रेस्य। यशः श्रीः श्रेयतां मिये। यथाऽहमस्या अतृपङ् स्त्रिये पुमान्। यथा स्त्री तृप्यंति पु॰्सि प्रिये प्रिया। एवं भगेस्य तृप्याणि॥५६॥

युजस्य काम्यः प्रियः। ददामीत्युभ्रिवंदति। तथेति वायुरांह तत्। हन्तेति

मृत्यं चुन्द्रमाः। आदित्यः सृत्यमोमिति। आपुस्तध्सृत्यमा भेरन्। यशो युजस्य

दक्षिणाम्। असौ मे कामः समृद्धताम्। न हि स्पश्नमिवेदत्रन्यमुस्मात्। वैश्वान्रात्युंरपुतारंम्ग्रेः॥५७॥

264 नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अधेममन्थत्रमृतममूराः। वैश्वान्रं क्षैत्रजित्यांय देवाः। येषांमिमे पूर्वे

अमींस् आसन्। अयूपाः सद्म विभृता पुरूणि। वैश्वांनर् त्वया ते नुत्ताः।

ग्रिथेवीम्न्याम्भितंस्थुर्जनांसः। पृथिवीं मातरं महीम्। अन्तरिक्षमुपं

<u>बृह्तीमूतये दिवम्। विश्वं बिमर्ति पृथिवी॥५८॥</u>

अन्तरिक्षं वि पंप्रथे। दुहे द्यौर्बृहती पयंः। न ता नंशन्ति न दंभाति तस्केरः। नैनां अमित्रो व्यथिरादंधर्षति। देवाङ्श्च याभिर्यजंते ददांति च। ज्योगित्ताभिः सचते गोपंतिः स्ह। न ता अर्बा रेणुकंकाटो अष्ट्युते। न सङ्स्कृत्त्रमुपं यन्ति

ता अभि। उक्गायमभेयं तस्य ता अनु। गाबो मत्येस्य वि चंरन्ति यज्बेनः॥५९॥

रात्रो व्यंख्यदायती। पुरुत्रा देव्यंक्षभिः। विश्वा अपि त्रियोऽधित। उपं ते गा

ड्डवाकेरम्। वृणीष्व दुहितर्दिवः। रात्री स्तोमं न जिग्युषीं। देवीं वाचेमजनयन्त देवाः। तां विश्वरूपाः पृशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रषृमूर्जं दुहाना। धेनुर्वागुस्मानुप

सुष्टतैत्॥६०॥

265 यद्वाग्वदंन्त्यविचेत्नानि। राष्ट्री देवानां निषसादं मन्द्रा। चतंस्र ऊर्जं दुदुहे पयारंसि। क्रे स्विदस्याः परमं जंगाम। गौरी मिमाय सलिलानि तक्षेती। एकंपदी द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं। सहस्राक्षरा परमे व्योमन्। तस्यारं समुद्रा अधि विक्षेरन्ति। तेनं जीवन्ति प्रदिश्शक्षतंस्रः॥६१॥ अस्तु गणवान्थ्सजातवान्। अस्य स्रुषा क्षशुंरस्य प्रशिष्टिम्। सपता वाचं मनेसा उपासताम्। इन्द्रः सूरो अतर्द्रजार्शसे। स्रुषा सपता क्षशुरो-क्षंत्रभृदनिभृष्टमोजः। सृहस्रियो दीप्यतामप्रयुच्छन्। विभ्राजमानः समिषा न ऽयमेस्तु। अयर शत्रूंअयतु जर्ह्षषाणः। अयं वाजं जयतु वाजंसातो। अग्निः ततेः क्षरत्यक्षरम्। तद्विश्वमुपं जीवति। इन्द्रासूरो जनयन्विश्वकंमी। मुरुत्वा ५ थारयंन्युरोडाश्रं बृहस्पतिं ज्यनंच्युतिमान्न्दो भगंस्य तृप्याण्युग्रेः पृथिवी यज्वंन एतु प्रदिश्क्षतंस्रो वाजंसातौ च्त्वारिं च॥[६] उग्रः। आऽन्तरिक्षमफहदगुन्द्याम्॥६२॥ नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

वृषौऽस्य॒॰्शुर्वृष्मायं गृह्यसे। वृषा॒ऽयमुग्रो नृचक्षंसे। दिव्यः केर्मण्यों हितो

266 बृहन्नामं। वृष्भस्य या कुकुत्। विषूवान् विष्णो भवतु। अयं यो मामको वृषाँ। नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अथो इन्द्रं इव देवेभ्यंः। वि ब्रवीतु जनैभ्यः। आयुष्मन्तं वर्चस्वन्तम्। अथो अधिपतिं विशाम्॥६३॥

अस्याः पृथिव्या अध्येक्षम्। इममिन्द्र वृष्मं कृणु। यः सुश्वद्धंः सुवृष्भः। कृल्याणो द्रोण आहितः। कार्षीवल प्रगाणेन। वृष्मेणं यजामहे। वृष्मेण् यजामहे। वृष्मेण् यजामातः। अनूरेणेव सार्पिषा। मृद्धंश्व सर्वा इन्द्रेण। पृतेनाश्व जयामिसि॥६४॥ यस्यायमृष्मो हिविः। इन्द्रांय परिणीयते। जयाति शत्रुंमायन्तम्। अथो हिन्ति

पृतन्यतः। नृणामहं प्रणीरसंत्। अग्रं उद्भिन्द्तामंसत्। इन्द्र शुष्मं तनुवा मेरंयस्व। नीचा विश्वां अभितिष्टाभिमातीः। नि श्रंणीह्याबाधं यो नो अस्ति। उुरुं नो लोकं कृणुहि जीरदानो॥६५॥

प्रह्माभे प्रोहे प्र भंग सहंस्वा मा विवेनो वि श्रंणुष्वा जनेषु। उदीडितो वृषम्

तिष्टु शुष्मैः। इन्द्र शत्रून्युरो अस्माकं युष्या अग्ने जेता त्वं जंया शत्रून्थ्सहस्

ओजंसा। वि शत्रून् विमृधों नुद। एतं ते स्तोमं तुविजात विप्नः। रधं न धीरः

267

स्वपां अतक्षम्। यदीदंभे प्रतित्वं देव हर्याः॥६६॥

सुवेवितीर्प एंना जयेम। यो घृतेनाभिमांनितः। इन्द्र जैत्रांय जिशेषो स नः सङ्कांसु पारय। पृतनासाह्येषु च। इन्द्रों जिगाय पृथिवीम्। अन्तरिंक्ष॰ सुवर्मेहत्। बृत्रहा पुंरुचेतंनः। इन्द्रों जिगाय सहंसा सहारंसि। इन्द्रों जिगाय पृतंनानि विश्वा॥६७॥

इन्द्रों जातो वि पुरों रुरोजा। स नेः परस्या वरिंवः कृणोतु। अयं कृत्वरगृभीतः। विश्वजिद्गिद्वदिथ्सोमेः। ऋषिविंप्रः काव्येन। बायुरंग्रेगा यंज्ञप्रोः। साकङ्गन्मनंसा

युजम्। शिवो नियुद्धिः शिवाभिः। वायौ शुक्रो अयामि ते। मप्वो अग्रं

दिविष्टिषु॥६८॥

आ यांहि सोमं पीतये। स्वा्मृहो देव नि्युत्वंता। इममिन्द्र वर्धय क्षत्रियांणाम्।

अयं विशां विश्पतिरस्तु राजां। अस्मा इन्द्र महि वर्चार्सस धिहि। अवर्चसं कणुहि

शत्रुंमस्य। इममा भंज ग्रामे अर्थेषु गोषुं। निर्मुं भंज योंऽमित्रों अस्य। वर्ष्मेन् क्षृत्रस्यं कुकुभिं श्रयस्व। ततों न उग्रो वि भंजा वर्सूनि॥६९॥

अस्मे द्यांवापृथिवी भूरि वामम्। सन्दुहाथां घर्मुदुघेव धेनुः। अय॰ राजा प्रिय

इन्द्रंस्य भूयात्। प्रियो गर्वामोषंधीनामुतापाम्। युनिर्ज्ने त उत्तरावेन्तमिन्द्रम्॥

268 वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

बर्पूछ्यो-

प्र सद्यो अंग्रे अत्यैष्यन्यान्। आविर्यस्मै चार्रतरो बुभूधा ईडेन्यों

स निक्ष्या नहुषो युह्नो अग्रिः। विशक्षिक्रे बलिहतः सहोभिः॥७१॥

किमावा। प्रियो विशामतिथिमनिषीणाम्। ब्रह्मेज्येष्ठा वीयो सम्भृतानि।

विश्वा आशाः पृतंनाः सञ्जयं जयन्। अभि तिष्ठ शत्र्यतः सेहस्व। तुभ्यं भरन्ति श्वितयों यविष्ठ। बलिमेग्ने अन्तित ओत दूरात्। आ भन्दिष्ठस्य सुमतिं चिकिद्धि।

बृहत्ते अग्रे महि शर्म मृदम्। यो देह्यो अनंमयद्वध्कैः। यो अर्थपतीरुषसंश्वकारं।

येन जयांसि न परा जयांसे। स त्वांऽकरेकवृषभङ् स्वानाम्। अथो राजन्नुत्तमं मान्वानाम्। उत्तंरस्त्वमधेरे ते स्पत्नाः। एकेवृषा् इन्द्रंसखा जिगीवान्॥७०॥

269

ज्येष्टं दिवमा तेतान। ऋतस्य ब्रह्मं प्रथमोत जोज्ञे। तेनांर्हति ब्रह्मणा स्पर्धितुङ्कः। ब्रह्म सुचों घृतवेतीः। ब्रह्मणा स्वरंवो मिताः॥७२॥ ब्रह्मं युज्ञस्य तन्तंवः। ऋत्विजो ये हिविष्कृतः। श्रद्गाणीवेच्छुङ्गिणार् सन्दंदिश्रिरे। चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

चुषालेवन्तः स्वरंवः पृथिव्याम्। ते देवासः स्वरंवस्तस्थिवारंसः। नमः सखिभ्यः

सृत्रान्माऽवेगात। अभिभूरग्रिरंतर्द्रजार्शसे। स्पृधौ विहत्य पृतेना अभित्रीः। जुषाणो म् आहीते मामहिष्टा हत्वा सपलान् वरिवस्करत्रः। ईशानं त्वा

भुवेनानामिभिष्ठयम्। स्तौम्यंग्न उक्कृतः सुवीरम्। हविर्जुषाणः सपताः

अभिभूरीस। जाहे शत्रू॰ रप् मृधों नुदस्व॥७३॥

विशां जंयामसि जीरदानो हर्या विश्वा दिविष्टिषु वसूनि जिगीवान्थ्सहोभिर्मिता नंश्रत्वारि च॥====

स प्रेलवत्रवीयसा। अग्नै बुम्नेने स्यताै। बृहत्तेतन्थ भानुनाै। नवं नु स्तोमेमग्नयै। दिवः श्येनाये जीजनम्। वसोैः कुविद्वनाति नः। स्वाफ्हा यस्य श्रियों <u>द</u>शे।

र्यिवीरवेतो यथा। अग्रे युज्स्य चेतंतः। अदौभ्यः पुरपुता॥७४॥

270 उमा हि बार् सुहवा जोहंवीमि। ता वाजरं सद्य उंशते धेष्ठां। अग्रिसिन्द्रो नवस्य नः। अस्य हव्यस्यं तृप्यताम्। इह देवौ संहस्रिणौं। युज्ञं न आ हि गच्छेताम्। वसुमन्तरं सुवर्विदम्। अस्य हव्यस्यं तृप्यताम्। अग्रिरिन्द्रो नवस्य अग्निर्विशां मानुषीणाम्। तूर्णी रथः सदा नवेः। नव्॰ सोमांय वाजिनै। आज्यं पर्यसोऽजनि। जुष्ट्॰ शुचिंतमं वसुं। नव॰ सोम जुषस्व नः। पीयूषेस्येह तृष्णुहि। यस्ते भाग ऋता वृयम्। नवेस्य सोम ते वृयम्। आ सुमतिं वृणीमहे॥७५॥ स नौ रास्व सहस्रिणेः। नवर्ष हविर्जुषस्व नः। ऋतुभिः सोम् भूतेमम्। तद्कः प्रतिहर्य नः। राजौन्थ्सोम स्वस्तयैं। नव्ङ्स्तोमत्रवर्ष हविः। इन्द्राग्निभ्यां नि वेदय। तञ्जुषेता्र् सचेतसा। शुचिं नु स्तोमं नवेजातमुद्य। इन्द्राग्नी वृत्रहणा वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २) जुषेथाम्॥ ७६॥

ह्विषोऽस्य नवेस्य नः। सुबर्विदो हि जीक्नेरे। एदं बर्हाहः सुष्टरीमा नवेन। अयं नः। विश्वौन्देवाङ्स्तंपयत॥७७॥

स एंना विद्वान् येक्ष्यिसि। नव् क्रुं स्तोमं जुषस्व नः। अग्निः प्रंथमः प्राक्ष्यांतु। स हि वेद् यथां हिविः। शिवा अस्मभ्यमोषंधीः। कृणोतुं विश्वचंषणिः। भद्रान्नः श्रेयः समनैष्ट देवाः। त्वयांऽवसेन समंशीमहि त्वा। स नो मयोभूः पिंतो आ विश्वास्व। शं तोकायं तनुवै स्योनः। एतमु त्यं मधुना संयुतं यवम्। सरंस्वत्या अधिमनावंचकृषुः। इन्द्रं आसीध्सीरंपितः शृतकृतः। कीनाशां आसन्मरुतः सुदानंवः॥८०॥ युज्ञो यजंमानस्य भागः। अयं बेभूव भुवंनस्य गर्भः। विश्वं देवा इदम्द्यागंमिष्ठाः। इमे नु द्यावांपृथिवी समीचीं। तन्वाने युज्ञं पुंरुपेशंसन्धिया। आऽस्मे पृणीतां भुवंनानि विश्वा। प्रजां पुष्टिममृतं नवेन॥७८॥ ड्मे धेनू अमृतं ये दुहातै। पर्यस्वत्युत्तरामेतु पुष्टिः। ड्मं युज्ञं जुषमाणे नवेन। समीची द्यावापृथिवी घृताची। यविष्ठो हव्यवाहेनः। चित्रमानुर्धृतासुतिः। नवेजातो वि रोनसे। अग्रे तत्ते महित्वनम्। त्वमंग्रे देवताभ्यः। भागे देव न मीयसे॥७९॥ 271 चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

युरुएता वृंणीमहे जुषेथांैनतर्पयतामृतत्रवेन मीयसे स्योनश्रृत्वारि च॥■

जुष्टों मृन्युर्भगों जुष्टीं नरो हरिवर्षसृङ्गिः शिप्रिन्वाजानामुत नेः प्रिया यद्वाग्वदंनी विश्वा आशा अशीतिः॥८०॥ जुष्टश्वक्षंषेषे जुष्टीनरो नक्तआता वृषास उत नो वृषाँऽस्य्रशुः सप्रेबवद्षो॥८॥ चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

जुष्टे: सुदानंबः॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥

|| **TARH: 728: ||** 

## ॥तैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके पञ्चमः प्रपाठकः॥

प्राणो रक्षिति विश्वमेजेत्। इयों भूत्वा बंहुधा बृहूनि। स इथ्सर्व व्यानशे। यो देवो देवेषु विभूरन्तः। आवृद्दात् क्षेत्रियंध्वगद्दुषाँ। तमित्प्राणं मनसोपं शिक्षत। अग्रं देवानामिदमेतु नो हृविः। मनंस्श्वित्त्म्। भूतं भव्यं च गुप्यते। तिद्धि

देवेष्वंग्रियम्॥१॥

आ ने एतु पुरश्चरम्। सृह देवेरिम हवम्। मन्ः श्रेयंसिश्रेयसि। कर्मन् युजपितिं दर्धत्। जुषतां मे वागिद हिविः। विराड्डेवी पुरोहिता। हव्यवाडनेपायिनी।

ययां रूपाणि बहुषा वदन्ति। पेशार्शसे देवाः पंरमे जनित्रै। सा नो

विराडनंपस्फुरन्ती॥ २॥

वाग्देवी जुषतामिद १ हविः। चक्षुंर्देवानां ज्योतिरमृते न्यंक्तम्। अस्य विज्ञानाय बहुषा निषीयते। तस्यं सुम्रमंशीमहि। मा नौ हासीद्विचक्षणम्। आयुरिन्<u>व</u>ः

प्रजामिकृिष्ढं जनुषांमुपस्थम्। तामिः स॰र्नेब्यो अविद्ध्यडुर्वीः। गातुं प्रपश्येत्रिह राष्ट्रमाऽहाँः। आऽहार्षेषिद्राष्ट्रमिह रोहितः। मृषो व्यास्युदमयं नो अस्तु॥४॥ श्रोत्रेण भृद्रमुत श्रुंण्वन्ति सृत्यम्। श्रोत्रेण् वाचं बहुधोद्यमांनाम्। श्रोत्रेण् मोदंश्र प्रतीच्यै दिशः श्रुण्वन्त्युंत्त्रात्। तदिच्छ्रोत्रं बहुधोद्यमांनम्। अ्रान्न नेमिः परि सर्व उदहिं वाजिन्यो अस्यपस्वन्तः। इद र गृष्टमा विश सूनृतावत्। यो रोहितो विश्वमिदं जजाने। स नो राष्ट्रेषु सुधितान्दघातु। रोहर्शरोहर् रोहित आर्ररोह। प्रतीयंताम्। अनंन्याश्वक्षुषा वृयम्। जीवा ज्योतिरशीमहि। सुवृज्योतिरुतामृतम् महंश्च श्रूयते। श्रोत्रेण सर्वा दिश् आ श्रंणोमि। येन प्राच्यां उत दंक्षिणा अश्रियमनंपस्फुरन्ती सृत्य॰ सृप्त चं॥**≖** पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २) बम्व ॥ ३॥

अस्मभ्यं द्यावापृथिवी शक्नेरीमिः। राष्ट्रं दुहाथामिह रेवतीभिः। विमंमर्था रोहितो विश्वरूपः। सुमाचृकाणः प्रुक्हो कहंश्व। दिवं गृत्वायं महुता मेहिमा। वि नो

275 गृष्ट्रमुननु पर्यसा स्वेने। यास्ते विशास्तपैसा सं बभूबुः। गायुत्रं वृथ्समनु तास्त यूयमुंग्रा मरुतः पृश्चिमातरः। इन्द्रेण सयुजा प्रमृंणीथ् शत्रून्। आ वो रोहितो अश्रुणोदमिद्यवः। त्रिसंप्तासो मरुतः स्वादुसम्मुदः। रोहितो द्यावापृथिवी जंजान। आऽगुः। तास्त्वा विश्वन्तु महंसा स्वेनं। सं मांता पुत्रो अभ्येतु रोहितः॥५॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

तस्मिङ्स्तन्तुं परमेष्ठी तंतान। तस्मिञ्छिश्रिये अज एकपात्। अद्द<sup>र्</sup>हद्यावापृथिबी बलेन। रोहितो द्यावापृथिवी अंद्दश्हत्। तेन् सुवेः स्तर्भितन्तेन् नाकेः॥६॥

सो अन्तिरिक्षे रजंसो विमानः। तेनं देवाः सुवरन्वंविन्दन्। सुशेवं त्वा भानवो

स॰समग्ने युवसे भोजनानि। अग्रे शर्ष महुते सौभंगाय। तवे बुम्रान्युंत्तमानि दीदिवाश्सम्। समेग्रासो जुह्नो जातवेदः। उक्षन्ति त्वा वाजिनमा घृतेने। सन्तु। सञ्जास्पृत्य ५ सुयम्मा कृणुष्व। शृत्र्यृताम्भि तिष्ठा महा९सि॥७॥

पुनेने इन्द्रों मृषवो ददातु। धनोनि श्रुको धन्येः सुराधौः। अर्वाचीनं कृणुतां <u>अ</u>स्त्वेतु रोहितो नाको महा<sup>५</sup>सि॥**=** 

जेता शत्रून् विचंर्षणिः। आकूँत्यै त्वा कामांय त्वा समुधै त्वा। पुरो दंधे अमृतत्वायं जीवसै। आकूंतिमस्यावंसे। कामंमस्य समृधी। इन्द्रंस्य युअते धियः। आकूंतिं देवीं मनंसः पुरो दंधे। यज्ञस्यं माता सुहवां मे अस्तु। यदिच्छामि मनंसा याचितो मनंः। श्रुष्टी नौ अस्य हविषों जुषाणः। यानि नोऽजिनं धनानि। जहर्थ शूर मृन्युनाँ। इन्द्रानुविन्द नृस्तानि। अनेनं हविषा पुनंः। इन्द्र आशाैभ्यः पीरे। सकामः। विदेयमेन्द्धदेये निविष्टम्॥९॥ सर्वाभ्योऽभंयं करत्॥८॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

समिति। आशानां त्वाऽऽशापालेभ्यंः। चतुभ्यों अमृतैभ्यः। इदं भूतस्याध्येक्षेभ्यः। विधेमं हविषां वयम्। विश्वा आशा मधुना स॰ सृजामि। अनुमीवा आप् ओषंधयो भवन्तु। अयं यजमानो मृषो व्यस्यताम्॥१०॥ सेद्ग्रिर्ग्री ९रत्यैत्यन्यान्। यत्रं वाजी तनेयो वीदुपोणिः। सृहस्रोपाथा अक्षरां

अगृेभीताः पृशवंः सन्तु सर्वे। अग्निः सोमो वर्षणो मित्र इन्द्रः। बृह्स्पतिः सर्विता

पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

यः संहसी। पूषा नो गोभिरवेसा सरंस्वती। त्वष्टो रूपाणि समंनक्त युज्ञेः। त्वष्टां रूपाणि दर्धतो सरंस्वती। पूषा भगरं सविता नो ददातु। बृहस्पतिर्दद्दिन्द्रेः

सृहस्रम्। मित्रो दाता वर्षणः सोमो अग्निः॥११॥

कर्त्रिविष्टमस्यतात्रवं च॥**—** 

कामो अस्मे। तमापुंणा वसुपते वसूनाम्। इमं कामं मन्दया गोभिरधैः। चन्द्रवेता राधेसा प्प्रथेश्च। सुवर्यवो मृतिभिस्तुभ्यं विप्राः। इन्द्रांय वाहंः कुश्चिकासो अकन्।

शिश्रियाणम्। त्वष्टाँऽस्मै वज्ञॐ् स्वर्यन्ततक्ष। वाश्रा इंव धेनवः स्यन्दंमानाः। अञ्जेः समुद्रमवं जग्मुरापेः। वृषायमाणोऽवृणीत् सोममै। त्रिकेद्रुकेष्वपिबथ्सुतस्ये। आ सायेकं मृघवो दत्त वज्रमै। अहेत्रेनं प्रथमुजा महीनाम्॥१३॥

अह्त्राह्मिन्वपस्तेतदी प्रवृक्षणां अभिनृत्पर्वतानाम्। अह्त्राहें

इन्द्रंस्य नु बोर्याणि प्रबोचम्। यानि चकारं प्रथमानि बुज्ञी॥१२॥

आ नो भर् भगीमेन्द्र द्युमन्तम्। नि ते देषास्यं धीमहि प्ररेके। उर्व इंव पप्रथे

<u>ო</u>

यदिन्द्राहंन्प्रथम्जा महीनाम्। आन्मायिनाममिनाः प्रोत मायाः। आथ्सूर्यं जनयन्द्यामुषासमै। तादीक्रा शत्रूत्र किलोविविथ्से। अहंन्वुत्रं वृत्रत्रं व्यश्समै। इन्द्रो वज्रेण महता व्येने। स्कन्यारंसीव कुलिशेनाविवृक्णा। अहिः शयत पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

उपपृक्येथिव्याम्। अयोध्येव दुर्मद् आ हि जुह्ने। महावीरं तुविबाधमुंजीषम्॥१४॥ नातारीरस्य समीते वधानाम्। स॰ रुजानाः पिपिष् इन्द्रंशत्रः। विश्वो विहाया अर्गतः। वसुंद्धे हस्ते दक्षिणे। तर्गणेनं शिश्रथत्। श्रवस्यया न शिश्रथत्। विश्वस्मा इदिषुष्यसे। देवत्रा हव्यमूहिषे। विश्वस्मा इथ्युकृते वारंमुण्वति। अग्निद्धारा व्युण्वति॥१५॥

उदुञ्जिहांनो अभि कामंमीरयन्। प्रपृञ्जन्विश्वा भुवंनानि पूर्वथां। आ केतुना सुषंमिद्धो यजिष्ठः। कामं नो अग्ने अभिहंर्य दिग्भ्यः। जुषाणो हव्यम्मृतेषु दूद्येः। आ नो रृथिं बंहुलां गोमंतीमिषम्। नि धेहि यक्षंदमृतेषु भूषन्। अश्विना यज्ञमागंतम्। दाशुष्टः पुरुदश्ससा। पूषा रक्षतु नो रृथिम्॥१६॥

ड्मं यज्ञमिश्विनो वर्धयेन्ता। ड्मौ राथें यज्ञेमानाय धत्तम्। ड्रमौ पशूत्रेक्षतां विश्वतो नः। पूषा नेः पातु सद्मप्रयच्छन्। प्रते मृहे संरस्वति। सुभेगे वार्जिनीवति। पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

-सत्यवाचे भरे मितम्। इदं ते हव्यं घृतवंथ्सरस्वति। सत्यवाचे प्रभेरमा हवीश्षि। इमानि ते दुरिता सौभंगानि। तेभिर्वयश सुभगांसः स्याम॥१७॥

ब्ज्यहीनामृजीषं व्यंण्वति रक्षतु नो र्यिषः सौभंगान्येकं च॥🕳

तं त्वां भग सर्व इज्ञोहवीमि। स नौ भग पुरपुता भेवेह। भग प्रणेतभेग सत्येराधः। भगेमां धियमुदेव ददेत्रः। भग प्र णो जनय गोभिरश्वैः। भग प्र नृभिनृवन्तः स्याम। शश्वेतीः समा उपयन्ति लोकाः। शश्वेतीः समा उपयन्त्यापेः।

ट्यं वेदिः स्वपृत्या सुवीरां। इदं बर्हिरति बर्हीङ्ष्यन्या। इमं युज्ञं विश्वे अवन्तु देवाः। भगं एव भगेवा॰ अस्तु देवाः। तेनं वृयं भगेवन्तः स्याम॥१८॥

युको रायो युज ईश्रे वसूनाम्। युज्ञः सुस्यानांमुत सुक्षितीनाम्। युज्ञ इष्टः नूर्वचित्तिं द्यातु। युज्ञो ब्रह्मण्वा अप्येतु देवान्। अयं युज्ञो वर्धतां गोर्भिरेषैः।

280

इयमेव सा या प्रथमा व्योच्छेत्। सा रूपाणि कुरुते पश्चं देवी। द्वे स्वसांरौ वयतस्तत्रश्रमेतत्। सुनातनं वितंतर षण्मयूखम्। अवान्यार्शस्तन्तून्किरतो धत्तो अन्यान्। नावेपुज्याते न गमाते अन्तम्। आ वो यन्तूदवाहासो अद्या वृष्टिं ये विश्वे मुरुतों जुनन्ति। अयं यो अग्निमैरुतः समिद्धः। एतं जुषप्वं कवयो ड्छं पूर्ते शक्षेतीना ् समीना शाक्षेतेने। ह्विषेष्वाऽन्नं लोकं पर्मा केरोह॥१९॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २) युवानः॥२०॥

धारावरा मरुतो धृष्णुवोजसः। मृगा न भीमास्तिविषेभिरूमिभिः। अग्रयो न शुंशुचाना ऋंजीषिणेः। भुमिन्धमेन्त उप गा अवृण्वता वि चेक्रमे त्रिर्देवः। आ वेधसं नीलेपृष्ठं बृहन्तम्। बृहस्पति॰ सदेने सादयध्वम्। सादद्योनि दम् आ दीदिवा॰सम्। हिरेण्यवर्णमरुष॰ सेपेम। स हि शुचिः शृतपेत्रः स शुन्ध्यः॥२१॥

हिरंण्यवाशीरिषिरः सुंबर्षाः। बृहस्पतिः स स्वांवेश ऋष्वाः। पूरू सिक्किय आसुतिं केरिष्ठः। पूष्ॐ्रस्तवं वृते वृयम्। नीरिष्येम कृदाच्ना स्तोतारंस्त इह

281

स्मीसे। यास्ते पूष्त्रा वो अन्तः संमुद्रे। हिर्ण्ययीर्न्तरिक्षे चरंन्ति। याभियािस दूत्या १ सूर्यस्य। कामेन कृतश्रवं इच्छमानः॥२२॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अरंण्यान्यरंण्यान्यसौ। या प्रेव नश्यंसि। कृथा ग्रामं न पुंच्छसि। न त्वाभीरिव विन्दती (३)। वृषार्वाय वदेते। यदुपावंति चिच्चिकः। आघाटीभिरिव घावयन्।

अर्णयानिर्महीयते। उत गावं इवादन्। उतो वेश्मेव दृश्यते॥२३॥

उतो अंरण्यानिः सायम्। शुक्टीरिव सर्जीते। गामक्रैष् आ ह्वेयति। दार्बेक्नैष् उपावधीत्। वसेत्ररण्यान्यार सायम्। अक्रैश्वदिति मन्यते। न वा

अंरण्यानिर्हन्ति। अन्यक्षेत्राभिगच्छेति। स्वादोः फलेस्य जुग्ध्वा। यत्रु काम् नि पंदाते। आश्रनगन्धीर सुरुगीम्। बृह्नन्नामकृषीवलाम्। प्राहं मृगाणां मातरम्॥ अर्णयानीमंश्र सिषम्॥ २४॥

बार्त्रहत्यायु शर्वसे। पृत्नासाद्याय च। इन्द्र त्वा वेर्तयामसि। सुब्रह्माणं वी्रवेन्तं स्याम क्रोह युवानः शुन्ध्यूरिच्छमानो इश्यते निपंद्यते चत्वारि च॥🕳

बृहन्तम्। उरु गर्भीरं पृथुबुध्नमिन्द्र। श्रुतर्षिमुग्रमीभेमातिषाहम्। अस्मभ्यं चित्रं वृषेण॰ रृघिं दाः। क्षेत्रिये त्वा निर्ऋत्ये त्वा। द्रुहो मुश्चामि वर्षणस्य पाशात्। अनागस् ब्रह्मणे त्वा करोमि॥२५॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

शिवे ते द्यावांपृथिवी उमे इमे। शं ते अग्निः सहाद्भिरंस्तु। शं द्यावांपृथिवी स्होपंधीमिः। शाम्न्तिरंक्ष॰ सह वातेन ते। शं ते चतंस्नः प्रदिशों भवन्तु। या दैवीश्वतंस्नः प्रदिशों भवन्तु। या दैवीश्वतंस्नः प्रदिशोः। वातंपत्नीर्यो विचष्टे। तासौं त्वा जरस आ दंधािम। प्र यक्ष्मे एतु निर्ऋतिं पराचैः। अमोचि यक्ष्माँदुरितादवंत्ये॥२६॥

सुंकृतस्यं लोके। सूर्यमृतं तमंसो प्राह्या यत्। देवा अमुंश्वत्रसृंजन्त्यंनसः। एवम्हमिमं क्षेत्रियाञ्जामिश्य×्सात्। द्रुहो मुंश्वामि वर्षणस्य पाशात्। बृहंस्पते दुहः पाशानिर्ऋत्ये चोदमोचि। अहा अर्वार्तमविदथ्स्योनम्। अप्येभूद्धद्रे उुत पार्थिवस्य। युत्त॰ गृयिङ् स्तुंबृते

गुवमिन्दंश्च वस्वः। दिव्यस्यंशाधे कीरयेंचित्॥२७॥ 283 तां त्वा मुद्रेला हुविषां वर्धयन्ति। सा नेः सीबले र्यिमा भोजयेह। पूर्वं देवा अपेरेणानुपश्यं जन्मेभिः। जन्मान्यवेरेः पराणि। वेदानि देवा अयमस्मीति सम्भृताम्। हित्वा शरीरं जुरसेः पुरस्तौत्। आ भूतिं भूतिं वयमेश्ञवामहै। इमा एव ता उषसो याः प्रथमा व्यौच्छन्। ता देव्यः कुर्वते पश्चंरूपा। शश्वतीनविपुज्यन्ति। यूयं पांत स्वस्तिभिः सदां नः। देवायुर्यमिन्द्रमा जोहुंवानाः। विश्वावृधंम्भि ये हिमवथ्सु भेष्जम्। मयोभूः शन्तमा यद्धृदोसि। ततौ नो देहि सीबले। अदो माम्। अह् धृत्वा शरीरं जुरसेः पुरस्तात्। प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रम्। बाचं मर्नासे रक्षेमाणाः। येनं हुता दोर्घमप्वांनुमायन्। अनुन्तमर्थमनिवश्स्यमानाः। यते सुजाते गिरिभ्यो अधि यत्प्रधावीस। स्र्शोभेमाना कृन्यंव शुभ्रा।२८॥ कृगेम्यवंत्ये चिच्छुभेऽश्जवामहै चृत्वारि च॥━ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २) न गमन्त्यन्तम्॥२९॥

वसूनां त्वाऽधीतेन। क्द्राणांमून्यां। आदित्यानां तेजंसा। विश्वेषां देवानां

आस्वाशांसु दुष्यहंः। इदं वर्चो अभिनां दुत्तमागात्। यशो भर्गः सह ओजो बले प्रजापेतिः प्रणेता। बृहस्पतिः पुरएता। युमः पन्थाः। चन्द्रमाः पुनरुसुः स्वाहा। अग्निरेत्रादोऽत्रपतिः। अत्राद्यमस्मिन् युजे यजमानाय ददातु स्वाहा। सोमो राजा कतुंना। मुरुतामिम्नां जुहोमि स्वाहाँ। अभिभूतिर्हमागमम्। इन्द्रेसखा स्वायुधेः। सुर्वायुर्सि सर्वमायुरसि। सर्वं म् आयुर्भूयात्। सर्वमायुर्गेषम्। भूर्भुवः सुर्वः। तजपितिः। राज्यमस्मिन् युज्ञे यजमानाय ददातु स्वाहाँ। वर्षणः सुम्राट्थ्समाद्देतिः। दोर्घायुत्वायं शृतशांरदाय। प्रतिगृम्णामि महते वीर्याय। आयुरिस विश्वायुरिस अग्निधर्मेणात्रादः। मृत्युधर्मेणात्रेपतिः। ब्रह्मं क्ष्त्रङ् स्वाहाँ॥३१॥ साम्राज्यमस्मिन् युज्ञे यजंमानाय ददातु स्वाहाँ॥३२॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

मित्रः क्षत्रं क्षत्रपंतिः। क्षत्रमस्मिन् युज्ञे यजंमानाय ददातु स्वाहाँ। इन्द्रो बलं बलेपतिः। बलेमस्मिन् युज्ञे यजंमानाय ददातु स्वाहाँ। बृह्स्पतिब्रह्म ब्रह्मपतिः।

285 ब्रह्मास्मिन् युज्ञे यजमानाय ददातु स्वाहाँ। सविता राष्ट्रं राष्ट्रपंतिः। राष्ट्रमस्मिन् युज्ञे यजमानाय ददातु स्वाहाँ। पूषा विशां विद्वतिः। विश्वमस्मिन् युज्ञे यजमानाय ददातु स्वाहाँ। सरंस्वती पुष्टिः पुष्टिपत्नी। पुष्टिमस्मिन् युज्ञे यजमानाय ददातु गौत्रमिद्वंज्रमृद्यों हीरृष्ठाः। स इंन्द्र चित्रां अभि तृन्धि वाजान्। आ ते शुष्मों वृष्म एेतु पश्चात्। ओत्तरादंधरागा पुरस्तात्। आ विश्वतों अभिसमेत्ववीङ्। इन्द्रं द्युम्नं सुवेर्वेद्धह्यस्मे। प्रोष्वंस्मै पुरोर्थम्। इन्द्रांय शूषमंर्वत॥३४॥ स्वाहों। त्वष्टो पशूनां मिथुनानार् रूप्कुद्रूपपेतिः। रूपेणास्मिन् युज्ञे यजमानाय च स्वाहा साम्रौज्यमुस्मिन् युज्ञे यजमानाय ददातु स्वाहा विशंमुस्मिन् युज्ञे यजमानाय ददातु स्वाहो चृत्वारि च (अुग्रिः स ईं पाहि य ऋंजीषी तर्फत्रः। यः शिप्रवान्वृष्मो यो मंतीनाम्। यो सोमो वर्षणो मित्र इन्द्रो बृहस्पतिः सविता पूषा सरंस्वतो त्वष्टा दशं॥)॥🕳 पुशून्ददातु स्वाहा॥३३॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

चोदिता। अभीके चिदु लोक्कृत्। सृङ्गे सुमध्सुं वृत्रहा। अस्माकं बोधि

नमेन्तामन्यकेषाँम्। ज्याका अधि धन्वेसु। इन्द्रं वयश् शुंनासीरम्। अस्मिन् युज्ञे हेवामहे। आ वाजे्रिक्पं नो गमत्। इन्द्रांय शुनासीराया स्रुचा जुंहुत नो पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २) होवेः॥ ३५॥ जुषतां प्रति मेधिरः। प्र हव्यानि घृतवेन्त्यस्मै। हर्यश्वाय भरता सजोषौः। इन्द्रतुभिब्रेह्मणा बावुधानः। शुनासीरी हविरिदं जुषस्व। वयंः सुपूर्णा उपंसेदुरिन्द्रमै। प्रियमेधा ऋषेयो नाधेमानाः। अपं ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुः। मुमुग्ध्यंस्मान्निधयेऽव

बुद्धान्। बृहदिन्द्राय गायत॥३६॥

मर्फतो वृत्रहन्तंमम्। येन ज्योतिरजंनयत्रृतावृधंः। देवं देवाय जागृवि। कामिहैकाः क इमे पंतक्षाः। मान्यालाः कुलिपरिमापतन्ति। अनीवृतेनान्प्रधंमन्तु देवाः। सौपंर्णं चक्षुंस्तनुवां विदेय। एवा वंन्दस्व वर्फणं बृहन्तम्॥ नुमुस्याधीरममुतस्य गोपाम्। स नः शर्मे त्रिवरूथं वियरसत्॥३७॥

यूयं पांत स्वस्तिमेः सदां नः। नाके सुपूर्णमुप् यत्पतंन्तम्। हृदा वेनंन्तो

अभ्यवंक्षत त्वा। हिरंण्यपक्षं वर्रणस्य दूतम्। युमस्य योनौ शकुनं भुंरुण्युम्। शं नों देवीर्भिष्ये आपों भवन्तु पीतयै। शं योर्भि स्नवन्तु नः। ईशांना वार्याणाम्। क्षयंन्तीश्चर्षणीनाम्॥३८॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अपो यांचामि भेषजम्। अपसु मे सोमो अब्रवीत्। अन्तर्विश्वांनि भेषजा। अभिं चे विश्वशंम्भुवम्। आपेश्च विश्वभेषजीः। यद्पसु ते सरस्वति। गोष्वश्वेषु यन्मधे।

तेनं में वाजिनीवति। मुखंमङ्खि सरस्वति। या सरंस्वती वैशम्भुल्या॥३९॥

तस्यां मे रास्व। तस्यौस्ते मक्षीय। तस्यौस्ते भूयिष्टमाजो भूयास्म। अहं त्वदंसिम् मदिसि त्वमेतत्। ममीसि योनिस्तव योनिरस्मि। ममैव सन्वहं हव्यान्यंग्रे। पुत्रः प्त्रे लोकुकुश्रातवेदः। इहैव सन्तर्य सन्तं त्वाऽग्रे। प्राणेनं वाचा मनंसा विभर्मि।

तिरो मा सन्तमायुर्मा प्रहांसीत्॥४०॥

ज्योतिषा त्वा वैश्वानुरेणोपीतेष्ठे। अयं ते योनिर्ऋत्वियः। यतो जातो अरोचथाः। तं जानन्नेम्र आरोह। अथां नो वर्धया र्यिम्। या ते अग्ने युजियां

पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

तनूस्तयेह्यारोहात्माऽऽत्मानमै। अच्छा वसीने कृण्वत्रस्मे नर्यां पुरूणि। यज्ञो भूत्वा यज्ञमा सीद स्वां योनिमै। जातेवेदो भुव आ जायेमानः सक्षेय एहि। उपावेरोह जातवेदः पुन्स्त्वम्॥४१॥

देवेभ्यों हुव्यं वेह नः प्रजानन्। आयुंः प्रजा॰ ग्यिम्स्मासुं धोहे। अजंस्रो

-दीदिहि नो दुरोणे। तमिन्द्रं जोहवीमि मृघवानमुग्रम्। सृत्रा दधानुमप्रीतष्कुत्र<u>ः</u>

शवार्सि। मर्स्हेष्ठो गीर्मिरा चं यत्रियोऽववर्तत्। राये नो विश्वां सुपथां कृणोतु वज्री। त्रिकंद्रकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मंस्तृपत्। सोमंमपिबद्विष्णुंना सुतं यथा-

ऽवेशत्। स ईं ममाद् मिहे कर्मे कर्तवे मृहामुरुम्॥४२॥

महि पार्थः पूर्व्ये सम्द्रियंक्कः। अग्रं नयथ्सुपद्यक्षंराणाम्। अच्छा रवे प्रथमा सैन र सश्चद्वें देवः सत्यमिन्दु र सत्य इन्द्रः। विदद्यती सरमा रुग्णमद्रैः।

जांन्तीगौत्। विदद्गव्यरं स्रमां हृढमूर्वम्। येनानुकं मानुषी भोजंते विट्। आ

ये विश्वाः स्वपुत्यानि चुकुः। कृण्वानासों अमृत्त्वायं गातुम्। त्वं .

नुर्मिनृपते

पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २) द्वहंती॥ ४३॥

सूर्यं कृणुहि पीपिहीषः। जाहि शत्रू ५ राभे गा इंन्द्र तृन्यि। अग्ने बार्यस्व वि मृधों भूरीणि बृत्वा हंर्यश्व हर्शसे। त्वन्निदंस्युञ्जमुरिम्। धुनिं चास्वांपयो दुभीतंये सुहन्तुं। एवा पाहि प्रवर्था मन्देतु त्वा। श्रुधि ब्रह्मं वावृधस्वोत गीर्मिः। आविः मुदस्वा अपामीवा अप् रक्षांशसि सेघा अस्माथ्संमुद्राद्वेहतो दिवो नंः॥४४॥

अपां भूमानुमुपं नः सृजेह। यज्ञ प्रति तिष्ठ सुमृतौ सुशेबा आ त्वां। वसूनि पुरुषा विशन्तु। दीर्घमायुर्यजीमानाय कृण्वन्। अथामृतेन जरितारंमाङ्घा इन्द्रेः शुनाबद्वितेनोति सीरम्। संबध्सरस्यं प्रतिमाणमितत्। अर्कस्य ज्योतिस्तदिदांस ज्येष्ठम्। संब्थ्यर १ शुनव्थ्मीरंमेतत्। इन्द्रंस्य राष्टः प्रयंतं पुरु त्मना। तदंकेरूपं विमिमानमेति। द्वादंशारे प्रति तिष्टतीद्वुषा। अश्वायन्तो गुव्यन्तो बाजयेन्तः। हवामहे त्वोपंगन्तवा ठे। आगूषंन्तस्त्वा सुमृतौ नवायाम्। वृयमिन्द्र त्वा शुन १ हुवेम॥४५॥

अर्चेत हविगायित य९सचर्षणीनां वैशाम्येल्या हांसीत्त्वमुरुं देवहूतो नुस्त्मना षद्वीा∎

290 प्राण उदिहि पुनरा नो भर युज्ञो रायो वार्त्रहत्यायु वर्सुनार् स इँ पाह्यष्टो॥८॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

प्राणो रंख्नत्यगृभीता धारावृरा मुरुतो दीर्घायुत्वायु ज्योतिषा त्वा पश्चेचत्वारिश्शत्॥४५॥

प्राणः शुनर हुवेम॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके पञ्चमः प्रपाठकः समाप्तः॥

## ॥तैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके षष्टः प्रपाठकः॥

स्बाद्घों त्वौ स्बादुनौ। तीव्रां तीव्रेणी। अमृतांमुमेतेन। मधुमतीं मधुमता। सुजामि स॰ सोमेन। सोमौऽस्यक्षिभ्यां पच्यस्व। सर्स्वत्ये पच्यस्व। इन्द्रांय सुत्राम्यो

इन्द्रंस्य युज्यः सखा। ब्रह्मं क्षत्रं पंवते तेजं इन्द्रियम्। सुरंया सोमंः सुत सूर्यस्य दुहिता। बारेण् शर्श्वता तनाँ। बायुः पूतः पृवित्रेण। प्राङ्ख्सोमो अतिद्रुतः। इन्द्रंस्य युज्यः सखा। बायुः पूतः प्वित्रंण। प्रत्यङ्ख्सोमो अतिद्रतः॥२॥

यवेमन्तो यविश्वित्। यथा दान्त्यंनुपूर्वं वियूये। इहेहेंषां कृणुत् भोजनानि। ये आसुतो मदाय। शुक्रणं देव देवताः पिपृग्धि। रसेनात्रं यजमानाय घेहि। कुविदङ्ग द्घन्वा यो नयों अपस्वन्तरा। सुषाव् सोम्मद्रिभिः। पुनातुं ते परिस्रुतम्। सोम् <

बुग्हिषो नमोवृक्तिं न ज्यमुः। उप्यामगृहीतोऽस्यक्षिभ्यां त्वा जुष्टं गृह्णामि॥३॥ पच्यस्व। परीतो षिञ्चता सुतम्। सोमो य उंत्मम हिविः॥१॥

उपयामगृहीतोऽस्याश्विनं तेजंः। सार्स्वतं वीर्यम्। ऐन्द्रं बलम्। एष ते योनिमींदाय त्वा। आन्न्दायं त्वा महंसे त्वा। ओजोऽस्योजो मिये धिहि। मन्युरंसि मन्युं मिये धिहि। महोऽसि महो मिये धिहि। सहोऽसि सहो मिये धिहि। या व्याघ्रं विष्विका। उभौ वृकं च रक्षेति। श्येनं पंतित्रणं सिंर्हम्। सेमं पात्वश्हेसः। सम्मुचंः स्थ सं मां भ्द्रणं पृङ्कः। विपृचंः स्थ वि मां पाप्मनां सरंस्वत्या इन्द्रांय सुत्राम्गौ। एष ते योनिस्तेजंसे त्वा। वीर्यांय त्वा बलांय त्वा। तेजोऽसि तेजो मिथे धेहि। वीर्यमिस वीर्यं मिथे धेहि। बलेमिस बलं मिथे धेहि। नाना हि वाँ देवहिंतर सदंः कृतम्। मा सर्स्सक्षाथां परमे व्योमन्। सुरा त्वमिसे शुष्मिणी सोमे एषः। मा मां हिर्सीः स्वां योनिमाविशन्॥४॥ 292 षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

सोमो राजाऽमृत<sup>५</sup> सुतः। ऋजीषेणांजहान्मृत्युम्। ऋतेनं सृत्यामिन्द्रियम्। हुविः प्रत्यङ्ख्सोमो अतिदुतो गृह्धाम्याविशन्विषूचिका पर्श्व च॥

293 षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

कुड़ःपिङ्ग्सो घिया। ऋतेनं सत्यमिन्द्रियम्। अन्नाँत्पार्ष्मुतो रसम्। ब्रह्मणा व्यपिषत् क्षत्रम्। ऋतेनं सत्यमिन्द्रियम्। रेतो मूत्रं विजंहाति। योनिं प्रविशादिन्द्रियम्। गर्भो जरायुणाऽऽवृतः। उत्त्वं जहाति जन्मना। ऋतेनं विपान १ शुक्रमन्यंसः। इन्द्रंस्येन्द्रियम्। इदं पयोऽमृतं मधुं। सोमंमुद्धो व्यंपिबत्। छन्दंसा हुर्सः शुंचिषत्। ऋतेनं सृत्यमिन्द्रियम्। अ्द्धः क्षोरं व्यपिबत्॥६॥

सत्यमिन्द्रियम्॥७॥

वेदेन रूपे व्यंकरोत्। सृतासृती प्रजापितिः। ऋतेनं सृत्यमिन्द्रियम्। सोमेन सोमौ व्यपिबत्। सुतासुतौ प्रजापितिः। ऋतेनं सृत्यमिन्द्रियम्। दृष्टा रूपे व्याकेरोत्। सृत्यानृते प्रजापितः। अश्रेद्धामनृतेऽदंधात्। श्रुद्धाः सृत्ये प्रजापितः। ऋतेनं

मुत्यमिन्द्रियम्। दृष्ट्वा पीर्युकुतो रसम्। शुक्रणं शुक्रं व्यपिबत्। पयः सोमं प्रजापितिः।

<u>क</u>ृतेने सृत्यमिद्रियम्। विपान<sup>५</sup> शुक्रमन्येसः। इन्द्रंस्येन्द्रियम्। इदं पयोऽमृतं

षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

सुरावन्तं बर्हिषद् सुवीरम्। युज्ञ हिन्वन्ति महिषा नमोभिः। दर्यानाः सोमं अ़द्धाः क्षोरं व्यंपिब्ज्जन्मंनुर्तेनं सृत्यमिद्भियः श्रृद्धाः सृत्ये प्रजापंतिरृष्टो चं॥■

दिवि देवतांसु। मर्देमेन्द्रं यंजीमानाः स्वकाः। यस्ते रसः सम्भृत ओषंधीषु। सोमेस्य शुष्मः सुरंया सुतस्ये। तेने जिन्व यजीमानं मदेन। सरंस्वतीमक्षिनाविन्द्रमिग्रिम्। यम्क्षिना नमुचेरासुराद्धि। सरंस्वत्यसीनोदिन्द्रियाये॥९॥

रसिनेः सुतस्यै। यदिन्द्रो अपिबृच्छवीभिः। अहं तदंस्य मनेसा शिवेने। सोम् राजानमिह भेक्षयामि। पितुभ्येः स्वधाविभ्येः स्वधा नमेः। पितामहेभ्येः स्वधाविभ्येः स्वधा नमेः। प्रपितामहेभ्यः स्वधाविभ्येः स्वधा नमेः। अक्षेन्यितरेः॥१०॥ ड्मन्त शुक्रं मधुमन्तमिन्दुम्। सोम्र राजांनमिह भंक्षयामि। यदत्रं रिप्तर

अमीमदन्त पितरंः। अतीतृपन्त पितरंः। अमीमृजन्त पितरंः। पितरंः शुन्धेष्वम्।

पुनन्तुं मा पितरंः सोम्यासंः। पुनन्तुं मा पितामहाः। पुनन्तु प्रपितामहाः। पृवित्रंण शृतायुषा। पुनन्तुं मा पितामृहाः। पुनन्तु प्रपितामहाः॥११॥

295 याभ्यामिदं विश्वमेज्यसमेति। यदंन्त्या पितरं मातरं च। इद॰ ह्विः प्रजननं मे अस्तु। दश्वीर स्वंगण स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि। पृथुसन्यंभयसनि लोकसनि। अग्निः प्रजां बंहुलां में करोतु। अत्रं पयो रेतों अस्मासुं धत्ता अस्मिं ह्योके शृत १ समौः। द्वे स्रुती अंश्रुणवं पितृणाम्। अहं देवानांमुत मत्यांनाम्। प्वित्रेण शृतायुषा। विश्वमायुर्व्यक्षत्रवै। अग्र आयूर्षि पवसेऽग्रे पर्वस्व। पर्वमान्: सुव्जीनः पुनन्तुं मा देवजनाः। जातेवेदः प्वित्रंबृद्यते प्वित्रंमचिषि। उमाभ्यां देव सवितर्वेश्वदेवी पुनती। ये समानाः समनसः। पितरो यम्राज्ये ये संजाताः समेनसः। जीवा जीवेषुं माम्काः। तेषाङ् श्रीमीये कल्पताम् इन्द्रियायं पितरंः श्रुतायुंषा पुनन्तुं मा पितामृहाः पुनन्तु प्रपितामहाः कल्पताः स्वस्तये पश्चं च॥━━ तेषां लोकः स्वधा नमंः। युजो देवेषुं कल्पताम्॥१२॥ ग्यस्योष्मिष्मूर्जम्सासुं दीधर्थ्स्वाहाँ॥१३॥ पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

सीसेंन् तत्र्यं मनेसा मनोषिणंः। ऊर्णासूत्रेणं कृवयों वयन्ति। अश्विनां युज्ञ ४

296 षष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

सीविता सरेस्वती। इन्द्रेस्य रूपं वर्त्रणो भिष्ज्यन्। तदेस्य रूपममृत॒ शचींभिः। तिस्रोऽदेधुर्देवताः स॰्रगुणाः। लोमानि शष्पैबहुधा न तोक्पेभिः। त्वगंस्य मार्सममेमवृत्र लाजाः। तद्भिनां मिषजां रुद्रवंतिनी। सरंस्वती वयति पेशो अन्तरः॥१४॥

अस्थि मुज्ञानं मासौरैः। कारोतरेण दर्यतो गवौ त्वचि। सरंस्वती मनेसा पेशुलं वसु। नासीत्याभ्यां वयति दर्श्यतं वपुः। रसं परिस्वता न रोहितम्। नुग्रहुर्धीरस्तर्सरत्न वेमे। पर्यसा शुक्रमुमृतं जुनित्रम्। सुरंया मूत्रौज्जनयन्ति रेतः। अपामीते दुर्मीते

इन्द्रंः सुत्रामा हद्येन सृत्यम्। पुरोडाश्नेन सविता जंजान। यकृत्क्रोमानं वर्षणो मिष्ज्यन्। मतंस्रे वाय्वेन मिनाति पित्तम्। आन्नाणि स्थाली मधु पिन्वेमाना। बाधेमानाः। ऊर्वध्यं वाते सबुवन्तदारात्॥१५॥

गुदा पात्राणि सुदुषा न घेनुः। श्येनस्य पत्रं न घ्रीहा शचीभिः। आस्निदी नाभिकृदर् न माता। कुम्भो वीनुष्ठुर्जनिता श्राचीभिः। यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो अन्तः॥१६॥ पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

297

ष्राशीर्व्यंक्तः श्रृतथीर उथ्मेः। दुहे न कुम्भीङ् स्वधां पितुभ्येः। मुख् सदंस्य शिर् इथ्सदेन। जिह्वा पवित्रमिधिना सर सरंस्वती। वप्पन्न पायुर्भिषगंस्य वालेः। वस्तिन शेपो हरंसा तर्स्वी। अश्विभ्यां वक्षुंरमृतं ग्रह्मैन्याम्। छागेन तेजो हविषां श्रुतेने। पक्ष्मोणि गोधूमैः केलैफ्तानि। पेशो न शुक्रमसितं वसाते॥१७॥

बलोय। कर्णांभ्याङ् श्रोत्रममृतं ग्रहौभ्याम्। यवा न बर्हिर्भुवि केसंराणि। कर्कन्धु जज्ञे मधु सार्घं मुखौत्। आत्मन्रुपस्थे न वृकंस्य लोमे। मुखे श्मश्रूणि न "

अविर्न मेषो नासि वीर्याय। प्राणस्य पन्थां अमृतो ग्रहाभ्याम्। सर्सस्वत्युपुवाकैर्व्यानम्। नस्योनि बुर्हिबंदरैर्जजान। इन्द्रेस्य रूपमृषुभे

शृतमांनुमायुः। चन्द्रेण ज्योतिर्मृतं दर्याना। सर्स्वती योन्यां गर्मेम्न्तः। अश्विभ्यां

अङ्गौन्यात्मिन्भिषज्ञा तर्दिश्विनौ। आत्मानुमङ्गेः समधा्थ्सरंस्वती। इन्द्रंस्य रूप ४

केशा न शीर्षन् यशंसे श्रिये शिखां। सिर्हस्य लोम् त्विषिरिन्द्रियाणि।

व्याँघ्रलोमम्॥१८॥

पत्नी सुकृतं बिभति। अपा॰ रसेन वरुणो न साम्ना। इन्द्रें श्रिये जनयेत्रफ्स

राजा। तेजः पशूना इविशिन्द्रियावेत्। परिस्रुता पर्यसा सार्घं मधुं। अस्थिन्याँ

दुग्धं मिषजा सरेस्वत्या सुतासुताभ्याम्। अमृतः सोम् इन्दुः॥१९॥ भन्तेर आ्राद्नतर्वसाते व्याघ्रलोम र राजां चत्वारि च॥🕳

मित्रोऽसि वर्रणोऽसि। समृहं विश्वेदिवैः। क्षत्रस्य नाभिरसि। क्षत्रस्य योनिरसि। स्योनामा सीद। सुषदामा सींद। मा त्वां हि॰सीत्। मा मां हि॰सीत्। निषंसाद गृतव्रेतो वरुणः। पुस्त्यास्वा॥२०॥

साम्रौज्याय सुकतुंः। देवस्यं त्वा सवितुः प्रंसवे। अश्विनौर्बाहुभ्याम्। पूष्णो हस्तौभ्याम्। अश्विनोर्भैषेज्येन। तेजंसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिश्चामि। देवस्यं त्वा सिवृतुः प्रंस्वे। अस्थिनौबृहुभ्याम्। पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरंस्वत्ये भैषंज्येन॥२१॥

वीर्यायात्राद्याप्रामिषिश्चामि। देवस्यं त्वा सवितुः प्रंसवे। अश्विनौर्बाहुभ्याम्। पूष्णो हस्ताभ्याम्। इन्द्रंस्येन्द्रियेणे। श्रिये यशंसे बलायामिषिश्चामि। कोऽसि

299 षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

यशो मुखमै। त्विषिः केशाँश्च श्मश्रीणे। राजां मे प्राणोऽमृतमै। सम्राद्वक्षेः। विराद्वोत्रमै। जिह्वा में भृद्रम्। वाङ्गहेः। मनों मृन्युः। स्वराङ्गामेः। मोदाँः प्रमोदा कत्मोऽसि। कस्मै त्वा कायं त्वा। सुश्रोकाँ(४) सुमंङ्गलाँ(४) सत्यंगुजा(३)न्।

शिरों मे श्रीः॥२२॥

अङ्गलोरङ्गोनि॥२३॥

चितं में सहंः। बाहू में बलीमिन्द्रियम्। हस्तौ में कमें वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो

ममे। पृष्टीमें राष्ट्रमुदरम×सौं। ग्रीवाश्च श्रोण्यौं। ऊरू अंरती जानुनी। विशो मेऽङ्गोनि सर्वतः। नाभिमें चित्तं विज्ञानमैं। पायुमेंऽपीचितिर्भेसत्॥२४॥

आनन्दनन्दावाण्डौ मैं। भगः सौभाँग्यं पसंः। जङ्गाँभ्यां पद्धां धर्मोंऽस्मि। विश्वि राजा प्रतिष्ठितः। प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे। प्रत्यक्षेषु प्रति तिष्ठामि गोषु।

गत्यङ्गेषु प्रति तिष्ठाम्यात्मन्। प्रति प्राणेषु प्रति तिष्ठामि पुष्टे। प्रति द्यावांपृथियोः। प्रति तिष्ठामि युजे॥२५॥

300 त्रया देवा एकांदश। त्रयम्बि॰शाः सुराघंसः। बृहस्पतिंपुरोहिताः। देवस्यं सर्वितुः सवे। देवा देवैरंवन्तु मा। प्रथमा द्वितीयैंः। द्वितीयांस्तृतीयैंः। तृतीयांः सृत्येने। सृत्यं युज्ञेने। युज्ञो यजुर्भिः॥२६॥ षष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

यज्ञूरंषि सामीभेः। सामौन्युग्भिः। ऋचौ याज्याभिः। याज्यां वषद्वारेः। वषद्वारा आहीतभिः। आहेतयो मे कामान्थ्समधयन्तु। भूः स्वाहाँ। लोमानि प्रयतिमेमे। त्वङ्गु आनेतिरागेतिः। मार्भ्सं म् उपनितिः। वस्वस्थि। मुज्जा म् आनेतिः॥२७॥ पुस्त्यास्वा सरंस्वत्ये भैषेज्येन श्रीरङ्गीन भूसद्यज्ञे युज्ञो यजुर्भिरुपंनतिष्ठे चा॥====

यहेवा देवहेडंनम्। देवांसश्चकुमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनंसः। विश्वाँन्मुञ्जल्व १ हेसः। यदि दिवा यदि नक्तम्। एनां भि चकुमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनंसः। विश्वाँन्मुञ्जल्व १ हेसः। यदि जाग्रद्याद् स्वप्ने। एना भि यथ्सभाया सूर्यो मा तस्मादेनंसः। विश्वाैन्मुञ्जल्ब हंसः। यद्वामे यदरंण्ये। वकुमा वृथम्॥२८॥

301 वरुण नो यदिन्द्रिये। यच्छूद्रे यद्र्ये। एनेश्वकृमा वृयम्। यदेकस्याप्रि धर्मीणे। तस्यांवृयजनमसि। यदापो अघ्निया वरुणेति शपामहे। ततो वरुण नो पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

मुखा २९॥

अवेभृथ निचङ्कण निचेक्रीस निचङ्कण। अवं देवेद्वकृत्मेनोऽयाट्। अब्

पूतं पवित्रेणेवाऽऽज्यमै। आपेः शुन्धन्तु मैनंसः। उद्वयं तमंस्स्यारं। पश्येन्तो ज्योतिरुत्तेरम्। देवं देवत्रा सूर्यमैं। अगंन्म ज्योतिरुत्तमम्। प्रतियुतो वर्रुणस्य पाशेः। प्रत्येस्तो वर्रणस्य पाशेः। एथौऽस्येधिषीमहि। समिदसि॥३१॥ मर्लेमित्यंकृतम्। उरोरा नो देव रिषस्पाहि। सुमित्रा न आप् ओषंधयः सन्तु। दुर्मित्रास्तस्मै भूयासुः। यौऽस्मान्द्वेष्टिं। यं चं वृयं द्विष्मः। द्रुपदादिवेन्सुंमुचानः। स्वन्नः स्नात्वी मलोदिव॥३०॥

तेजोऽसि तेजो मयि धिहि। अपो अन्वेचारिषम्। रसेन समेसृक्ष्महि। पर्यस्वा १ अग्र आगेमम्। तं मा सरसुज वर्चेसा। प्रजयां च धनेन च। समावेवर्ति पृथिवी।

302 समुषाः। समु सूर्यः। समु विश्वमिदं जगेत्। वैश्वान्रज्योतिर्भूयासम्। विभुं काम् पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

स्वप्न एनार्शसे चकुमा वयं मुख्य मलोदिव समिदीसे जगुत्रीणि च॥🕳

व्यंश्जवे। भूः स्वाहाँ॥३२॥

वेत्वाऽऽज्येस्य होत्रर्यज्ञं। होतां यक्षादेडांभिरिन्द्रंमीडितम्। आजुह्वांनममंत्र्यम्। देवो देवैः सवीर्यः। वज्रहस्तः पुरन्दुरः। वेत्वाऽऽज्येस्य होत्रर्यज्ञा होतायक्षद्वर्षहेषीन्द्रि ऊतिभिजेतांरमपंराजितम्। इन्द्रं देव॰ सुंबर्विदम्। पृथिभिमधुंमतमैः। नराशा॰सेन तेजसा॥३३॥ होतां यक्षथ्ममिधेन्द्रमिडस्पदे। नामां पृथिव्या अधि। दिवो वर्ष्यन्थ्समिध्यते। ओजिष्ठश्चर्षणों सहान्। वेत्वाऽऽज्येस्य होत्र्यंजो। होतां यक्ष्तननूनपोतम्। वृष्भं नर्यापसम्। वसुभीक्द्रेरादित्यैः। स्युभिर्बर्हिरासंदत्॥३४॥

वेत्वाऽऽज्येस्य होतर्यजा होतां यक्षदोजो न वीर्यम्। सहो द्वार इन्द्रेमवर्धयन्। सुप्रायुणा विश्रयन्तामृतावृधेः। द्वार् इन्द्राय मीदुषे। वियन्त्वाज्येस्य होत्र्यजी

होतां यक्षदुषे इन्द्रंस्य धेन्। सुदुघे मातरौं मही। सबातरौं न तेजंसी। वथ्समिन्द्रंमवर्धताम्॥ ३५॥ पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

बीतामाज्येस्य होतर्यजी। होतां यक्षद्दैव्या होतांसा। भिषजा सखाया। हविषेन्द्रं भिषज्यतः। कृवी देवौ प्रचेतसौ। इन्द्राय धत्त इन्द्रियम्। बीतामाज्येस्य होत्र्यजी। होतां यक्षत्तिको देवीः। त्रयक्षिघातेवोपसंः। इडा सरेस्वतो मारेती॥३६॥

मृहीन्द्रपत्नीर्ह्विष्मंतीः। वियन्त्वाज्यंस्यु होत्रर्यजा होतां यक्ष्त्त्वष्टांरमिन्द्रं

देवम्। भिषजः 'सुयजं घृतश्रियम्। पुरुरूपः सुरेतंसं मघोनिम्। इन्द्रांय त्वष्टा दर्घदिन्द्रियाणि। वेत्वाऽऽज्येस्य होतर्यजे। होता यक्षद्वनस्पतिम्। शमितार<sup>ं</sup> श्तकंतुम्। थियो जोष्टारीमिन्द्रयम्॥३७॥

मध्वो सम्अन्पथिभिः सुगेभिः। स्वदाति हृव्यं मधुना घृतेने। वेत्वाऽऽज्येस्य होत्र्येजे। होतो यक्षदिन्द्रङ्के स्वाहाऽऽज्येस्य। स्वाहा मेदेसः। स्वाहाँ स्तोकानामा स्वाहा स्वाहांकृतीनाम्। स्वाहां हुव्यसूँक्तीनाम्। स्वाहां देवा॰ आँज्यपान्।

तेजंसाऽऽसददवर्धतां भारंतीन्द्रियं जुषाणा द्वे चं (सुमिथेन्द्रन्तनूनपांतमिडांभिर्बर्हिष्योजं उषे दैव्यां तिस्रस्तवष्टांर वनुस्पतिमिन्द्रम्॥ स्वाहेन्द्र १ होत्राञ्जुषाणाः। इन्द्र आज्येस्य वियन्तु। होत्र्यजा॥३८॥ स्मिधेन्द्रं चतुर्वेत्वेको वियन्तु द्विर्वीतामेको वियन्तु द्विर्वेतवेको वियन्तु होतर्यजा)॥====== षष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

समिष्क इन्द्रं उषसामनीके। पुरोरुचां पूर्वकृद्धांवृथानः। त्रिभिर्देवैक्चिश्याता वज्जेबाहुः। जघानं वृत्रं वि दुरो ववार। नराश्वश्यः प्रतिशूरो मिमानः। तनूनपात्प्रितिं यज्ञस्य धामे। गोमिर्वेपावान्मधुना सम्अन्। हिरंण्यैश्चन्द्री यंजति प्रचेताः। ईडितो देवैर्हरिवाश अमिष्टिः। आजुह्बानो हविषा शर्धमानः॥३९॥

पुर-दरो मघवान् वर्ष्रवाहः। आयोतु यज्ञमुपेनो जुषाणः। जुषाणो बर्हिर्हिर्हिर्वात्र इन्द्रेः। प्राचीन स्मिदत्प्रदिशां पृथिव्याः। उरुव्यचाः प्रथेमान इ स्योनम्। आदित्येरक्तं वसुभिः सजोषाः। इन्द्रं दुरेः कवव्यो धावेमानाः। वृषाणं यन्तु जनयः सुपत्नीः। द्वारो देवीर्मितो विश्रयन्ताम्। सुवीरां वीरं प्रथेमाना

संव्ययंन्ती। देवानौं देवं यंजतः सुरुक्ते। दैव्या मिमांना मनंसा पुरुत्रा। होतांराविन्द्रं प्रथुमा सुवाचौ। मूर्धन् यज्ञस्य मधुना दथांना। प्राचीनं ज्योतिर्हविषां वृधातः। तिस्रो अच्छित्रं तन्तुं पर्यसा सरंस्वती। इडां देवी भारंती विश्वतूर्तिः। त्वष्टा दर्घादिन्द्रांय शुष्मम्। अपाकोचिष्टर्यशसे पुरूणि। वृषा यजन्वृषेणं भूरिरेताः। मूर्धन् यज्ञस्य समेनक्त देवान्। वनस्पतिरवेसृष्टो न पाशैः। त्मन्यो सम्अञ्छोमिता न देवः। इन्द्रंस्य हृव्यैर्जुठरं पृणानः। स्वदोति हृव्यं मधुना घृतेने। स्तोकानामिन्दुं प्रति शूर् इन्द्रं। वृषायमाणो वृष्भस्तुंराषाट्। घृतप्रुषा मधुना हव्यमुन्दन्। मूर्धन् युजस्य उुषासानको बृहती बृहन्तम्। पर्यस्वती सुदुष्टे शूरमिन्द्रम्। पेशंस्वती तन्तुंना -देवीर्ह्विषा वर्धमानाः। इन्द्रं जुषाणा वृषेणं न पत्नीः॥४१॥ शर्धमानो महोभिः पत्नीधृेतेनं चृत्वारि च॥■ जुषता 🗞 स्वाहा॥४२॥ षष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

आचेर्षाणुप्रा विवेषु यन्मा। त॰ सृप्रीचींः। सृत्यमित्तन्न त्वावा॰ अन्यो अस्ति

पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

इन्द्रं देवो न मत्यों ज्यायान्। अहन्नहिं परिशयांनमणिं। अवांसुजोऽपो अच्छां समुद्रम्। प्रसंसाहिषे पुरुहृत् शत्रन्। ज्येष्ठंस्ते शुष्मं इह रातिरंस्तु। इन्द्रा भेर् दक्षिणेना वसूनि। पतिः सिन्धूनामिसि रेवतींनाम्। स शेवृंधमिषे धाद्युम्नमस्मे। महिं क्षत्रं जनाषाडिन्द्र तत्यम्। रक्षां च नो मुघोनः पाहि सूरीन्। राये च नः

देवं बर्1हिरिन्द्र<sup>५</sup> सुदेवं देवैः। वीरवंथ्स्तीर्णं वेद्यांमवर्धयत्। वस्तों'र्वृतं प्राक्तों'र्मृतम्। राया बर्हिष्मतोऽत्यंगात्। वसुवने वसुधेयंस्य वेतु यजी देवीद्वरि इन्द्र<sup>५</sup> सङ्घाते। विड्वीर्यामंत्रवर्धयन्। आ वृथ्सेन् तर्रुणेन कुमारेणं चमीविता

स्वप्त्या हुषे धाः॥४३॥

रेवतीनां चत्वारि च॥**—** 

देवी उषासानक्तौ। इन्द्रं युज्ञे प्रयुत्येह्नेताम्। दैवीर्विशः प्रायोसिष्टाम्। सुप्रीते सुधिते अभूताम्। वृसुवने वसुधेयंस्य वीतां यजे। देवी जोष्टी वसुधिती।

अपार्वाणम्। रेणुकेकाटं नुदन्ताम्। वृसुवने वसुघेयंस्य वियन्तु यजी॥४४॥

306

वृसुवने वसुधेयेस्य वीतां यजी। देवी ऊर्जाहुती दुघे सुदुघै। पयुसेन्द्रेमवर्धताम्। आन्यावाक्षीद्वसु वार्याणि क्रेपार-सि देवमिन्द्रंमवर्धताम्। अयांव्यन्याघा यजंमानाय शिक्षिते॥४५॥ षष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अधौतामूर्जमूर्जाहैतो बसु बार्याणि। यजमानाय शिक्षिते। बसुबने बसुधेयेस्य बीतां इष्मूर्जम्नाऽबाक्षीत्। सर्ग्धि॰ सपीतिम्न्या। नर्बेन् पूर्वं दर्यमाने। पुराणेन् नबमै।

यजा ४६॥

देवा दैव्या होतांरा। देवमिन्द्रंमवर्धताम्। हृताघंशश्सावाभाँष्टां वसुवार्याणा। यजमानाय शिक्षितौ। वसुवने वसुधेयंस्य वीतां यजं। देवीस्तिक्रस्तिको देवीः। पतिमिन्द्रंमवर्धयन्। अस्पृंक्षद्भारतो दिवम्। क्ट्रैर्यज्ञश्सरंस्वती। इडा वसुमती

वसुवने वसुधेयेस्य वियन्तु यजी देव इन्द्रो नराशाश्साः। त्रिवरूथास्निवन्युरः। गृहान्॥ ४७॥

देवमिन्द्रेमवर्धयत्। शृतेने शितिपृष्ठानामाहितः। सहस्रेण प्रवेतिते। मित्रावरुणेदंस्य

होत्रमर्हतः। बृह्स्पतिः स्तोत्रम्। अभिनाऽऽध्वंधवम्। वृसुवने वसुधेयंस्य वेतु षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

देव इन्द्रो वनुस्पतिः। हिरंण्यपर्णो मधुंशाखः सुपिप्पुलः। देवमिन्द्रमवर्धयत्।

दिवमग्रेणाप्रात्। आऽन्तरिक्षं पृथिवीमंद्र<sup>ङ्</sup>हीत्। वसुवने वसुधेयंस्य वेतु यजी देवं बर्हिवीरितीनाम्। देवमिन्द्रेमवर्धयत्। स्वास्स्थमिन्द्रेणासेत्रम्। अन्या

वियन्तु यजं शिक्षिते शिक्षिते वैसुवने वसुधेयैस्य वीतां यजं गृहान् वैतु यजाेभूष्यद्वं (देवं बर्हहेर्देवीद्वारी देवी उषासानको

वसुधेयस्य वेतु यजी॥४९॥

देवी जोष्टीं देवी ऊर्जाहुती देवा दैव्या होतांरा शिक्षितौ देवीस्तिस्नस्तिस्त्रो देवीर्देव इन्द्रो नग्श॰सो देव इन्द्रो वनुस्पतिर्देवं

बर्हिवारितीनान्देवो अग्निः स्विष्टकृद्देवम्। वेतु वियन्तु चतुर्वीतामेको वियन्तु चतुर्वैत्ववर्षयदवर्षय्त्रिभेरामेकोऽ वर्षयङ्श्वतुरेवर्षयत्।

ब्र्ही इष्युन्येभूत्। वृसुवने वसुधेयस्यं वेतु यजी देवो अग्निः स्विष्टकृत्। देवमिन्द्रमवर्धयत्। स्विष्टं कुर्वन्थित्वष्टकृत्। स्विष्टमृद्य केरोतु नः। वृसुवने

होतां यक्षथ्ममिषाऽग्निमिडस्पदे। अश्विनेन्द्र्ं सर्स्वतीम्। अजो धूम्रो न वस्तोरा वृथ्सेन दैवीरयावीष रेहताऽस्पृक्षच्छतेन दिव १ स्वास्स्थ १ स्विष्ट शिक्षिते शिक्षिते शिक्षितो॥)॥========

309 षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

गोधूमैः केलेर्भेष्जम्। मधु शष्पैनं तेजं इन्द्रियम्। पयः सोमंः परिस्रुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्यंस्य होतर्यजां। होतां यक्षत्तनूनपाथ्सरंस्वती। अविमेषो न भेषजम्। पृथा मधुंमृतामेरन्। अश्विनेन्द्राय वीर्यम्॥५०॥

बद्रैरुपवाकांभिर्भेषजं तोक्मंभिः। पयः सोमंः परिस्नुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्येस्य होतर्यजा होतां यक्षं नराश्वरसं न नग्नहुमां पतिर सुराये भेषजम्। मेषः सर्स्वती भिषक्। रथो न चन्द्रीश्वनोविपा इन्द्रेस्य वीर्यमां। बद्रैरुप्वाकांभिर्भेषजं तोक्मंभिः। पयः सोमः परिस्नुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्येस्य

होतर्यजं॥ ५१॥

होतां यक्षदिडेडित आजुह्वांनः सर्यस्वतीम्। इन्द्रं बलेन वर्धयन्। ऋषभेण गवैन्द्रियम्। अश्विनेन्द्राय वीर्यम्। यवैः कर्कन्युभिः। मधुं लाजैर्न मासंयम्। पयः सोमः परिस्रुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्यंस्य होत्र्यंजो। होतां यक्षद्वर्हिः

सुष्टरीमोर्णम्रदाः। भिषङ्गासंत्या॥५२॥

षष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

मिषजाऽश्विनाऽश्वा शिशुंमती। मिषग्धेनुः सर्स्वती। मिषग्दुह इन्द्रांय भेषजम्। पयः सोमः परिस्रुतां घृतं मधे। वियन्त्वाज्येस्य होतर्यजी होतां यक्षद्दरो दिशाः। कब्पों न व्यचेस्वतीः। अश्विभ्यां न दुरो दिशाः। इन्द्रो न रोदंसी दुघै। दुहे

कामान्थ्सरंस्वती॥५३॥

अश्विनेन्द्रांय भेषजम्। शुक्रं न ज्योतिरिन्द्रियम्। पयः सोमेः परिस्रुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्येस्य होत्र्यंजी होतां यक्षथ्सुपेशसोषे नक् दिवा। अश्विनां सञ्जानाने।

समें जाते सरेस्वत्या। त्विषिमिन्द्रे न भेष्जम्। श्येनो न रजेसा हृदा। पयः सोमंः परिसुतो घृतं मधुं॥५४॥

वियन्त्वाज्येस्य होत्यंजी होतां यक्षद्दैच्या होतांरा भिषजाऽश्विनां। इन्द्रं न जागृवी दिवा नक्तं न भेषजैः। शूष्॰ सर्स्वती भिषक्। सीसेन दुह इन्द्रियम्। प्यः सोमेः परिस्रुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्येस्य होत्यंजी होतां यक्षत्तिस्रो देवीने भेष्जम्। त्रयंक्षिघातंबोऽपसंः। रूपमिन्द्रे हिर्ण्ययम्॥५५॥

अस्थिनेडा न भारंती। बाचा सरंस्वती। मह् इन्द्रांय दधुरिन्द्रियम्। पयः सोमंः परिस्रुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्येस्य होतर्यजो। होतां यक्षत्त्वष्टांरमिन्द्रमिश्वना। मिषजुं न सरंस्वतीम्। ओजो न जूतिरिन्द्रियम्। बृको न रंभुसो मिषक्। यथुः सुरंया भेष्जम्॥५६॥ षष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

श्रिया न मासंरम्। पयः सोमंः परिस्रुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्येस्य होत्येजी। होतां यक्षद्वनस्पतिमां श्रामितार श्रातकेतुम्। भीमं न मन्यु श्राजांनं व्याघ्रं नमंसाऽश्विना भाममा। सरंस्वती भिषक्। इन्द्राय दुह इन्द्रियम्। पयः सोमेः परिस्रुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्येस्य होत्र्यंता। ५७॥

सुत्रामाण सिवतारं वरुणं भिषजां पतिमै। स्वाहा वनुस्पतिं प्रियं पाथो न

मेंषुजम्। स्वाहो देवा॰ आँज्युपान्॥५८॥

होतां यक्षद्गिॐ स्वाहाऽऽज्येस्य स्तोकानाँम्। स्वाहा मेदेसां पृथेक्। स्वाहा छागंमित्रिभ्याँम्। स्वाहो मेष॰ सर्रेस्वत्यै। स्वाहंर्षुर्मामन्द्राय सि॰्हाय सहंसेन्द्रियम्। स्वाहाऽभ्रिं न भेषुजम्। स्वाहा सोमीमिन्द्रियम्। स्वाहेन्द्र<sup>६</sup>

ा प्रतामिक्षेना सर्रस्वतीन्द्रेः सुत्रामा वृत्रहा। जुषन्तार्थं सौम्यं मधुं। पिषेन्तु मदेन्तु वियन्तु सोमम्। होत्रर्थजी।५९॥ तिसस्त्वष्टांरम्षावेष्टो। वनस्पतिमुषिः। अग्नित्रयोदश। अस्विना द्वादंश त्रयोदश। स्मिपाऽप्रिं वदरैवदरैयवैर्धिना त्विषिम्सिना न  $\frac{1}{2}$ स्वाहाऽग्नि॰ होत्राञ्चुषाणो अग्निर्भेषजम्। पयः सोमेः परिस्नुतो घृतं मधु। वियन्त्वाज्येस्य होत्र्यंजी होतो यक्षद्भिना सर्स्वतीमिन्द्रं सुत्रामोणम्। इमे बीयै वियन्त्वाज्येस्य होत्रर्यज्ञ नासेत्या सरेस्वतो मधै हिर्ण्ययं भेष्जं वियन्त्वाज्येस्य होत्रर्यज्ञाज्यपानमृताः पश्चं च (समिपाऽग्नि॰ षट्। तनूनपाँथ्युप्त। नर्गशरस्मुषिः। इडेडितो यवैर्ष्टो। बुर्हिः सुप्त। दुरोऽश्विना नवे। सुपेशसर्षिः। दैव्या होतारा सीसेन रसः। नोमाः सुरामाणः। छागेन मेषेर्ऋषमेः सुताः। शष्येन तोक्प्नेभिः। लाजेमहिस्वन्तः। मदा मासेरेण् परिष्कृताः। शुक्राः पर्यस्वन्तोऽमृताः। प्रस्थिता वो मधुश्चतेः। भेषुज्ञ ४ क्पमृश्विना भीमं भामम्॥)॥🕳 पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

समिद्धो अग्निरीक्षेना। तृप्तो घुर्मो विराट्थ्सुतः। दुहे धेनुः सर्रस्वती। सोमर् शुक्रमिहेन्द्रियम्। तृनूपा मिषजां सुते। अश्विनोमा सर्रस्वती। मध्या

पृथिभिवहान्। इन्द्रायेन्दुर् सर्स्वती। नरा्शारसेन रजारंसीन्द्रियम्। इन्द्राय

नुग्रहुः॥६०॥

अधांतामिश्विना मधे। भेषजं भिषजां सुते। आजुह्वांना सरंस्वती। इन्द्रायेन्द्रियाणि वीर्यम्। इडाभिरिश्वनाविषम्। समूर्जे॰ स॰ रथिं देधुः। अश्विना नमुचेः सुतम्। सोम॰ शुक्रं पीरेस्नुता। सरंस्वती तमामेरत्। बर्हिषेन्द्राय

कुबष्यों न व्यवेस्वतीः। अश्विभ्यां न दुरो दिशः। इन्द्रो न रोदंसी दुधै। दुहे कामान्थ्सरंस्वती। उषासा नक्तमिश्वना। दिवेन्द्र∜ सायमिन्द्रियैः। सृञ्जानाने

पातेवे॥६१॥

मुपेशंसा। समं जाते सरंस्वत्या। पातं नौ अश्विना दिवा। पाहि नक्तं

सरस्वति॥६२॥

दैव्यां होतारा मिषजा। पातमिन्द्र॰ सचां सुते। तिस्रक्रेधा सरंस्वती। अश्विना भारतीडाँ। तीव्रं पीरेस्रुता सोममाँ। इन्द्रांय सुषवुर्मदमाँ। अश्विना भेषजं मधुं। भेषजं नः सरंस्वती। इन्द्रे त्वष्टा यशुः श्रियमाँ। रूप॰ रूपमधुः सुते। ऋतुथेन्द्रो

313

गोभिर्न सोमेमिश्विना। मासेरेण परिष्कृताँ। समेधातार् सर्स्वत्या। स्वाहेन्द्रं सुतं वन्स्पतिः। शृश्मानः परिस्नुतां। कोलालेम्किभ्यां मधुं। दुहे धेनुः सरंस्वती।

मध्∥६३∥

अ्थिनां ह्विरिन्द्रियम्। नमुचेर्धिया सरस्वती। आ शुक्रमासुराद्वसु। मुघोमेन्द्राय जभिरे। यमुष्टिना सरंस्वती। हविषेन्द्रमवर्धयन्। स बिर्भेद वृलं मुघम्। नमुचावासुरे नुग्रहुः पातंवे सरस्वत्यधुः सुतेऽष्टो चं॥━

सचौ। तमिन्द्रं पृशवः सचौ। अस्थिनोभा सरंस्वती॥६४॥

दर्याना अभ्यंनूषता ह्रविषां यज्ञमिन्द्रियम्। य इन्द्रं इन्द्रियं दुधुः। सिविता वर्षणो भगेः। स सुत्रामा ह्रिविष्पतिः। यजमानाय सश्चत। सिविता वर्षणोऽदर्यत्। यजमानाय दाशुषै। आदंत् नमुंचेर्वसुं। सुत्रामा बलेमिन्द्रियम्॥६५॥

वरुणः क्षुत्रमिन्द्रियम्। भगेन सिवृता त्रियम्। सुत्रामा यशेसा बलमै। दथोना

युज्ञमांशता अश्विना गोभिरिन्द्रियम्। अश्वीभिर्वीयं बलम्। ह्विषेन्द्र ॒ सरंस्वती।

315 षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

यजंमानमवर्धयन्। ता नासंत्या सुपेशंसा। हिरंण्यवर्तनी नरा। सरंस्वती हविष्मंती।

इन्द्र कर्मसु नोऽवत। ता भिषजां सुकर्मणा। सा सुदुघा सरंस्वती। स वृत्रहा शृतक्रेतुः। इन्द्रांय दधुरिन्द्रियम्॥६६॥

देवं ब्राहिः सरंस्वती। सुदेवमिन्द्रं अस्विना। तेजो न चक्षुंरक्ष्योः। ब्राहिषां दधुरिन्द्रियम्। वृसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यजा। देवीद्वरिते अस्विना। मिषजेन्द्रे

उुभा सर्स्वतो बर्लमिन्द्रियत्रस् षद्गा====

सरंस्वती। प्राणं न वीर्यत्रसि। द्वारो दधुरिन्द्रियम्। वृसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु

यजाहु ॥

देवी उषासांविश्विनां। भिषजेन्द्रे सर्रस्वती। बलं न वाचंमास्यां उषाभ्यां दधुरिन्द्रियम्। वृसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यज्ञं। देवी जोष्टी अश्विनां। सुत्रामेन्द्रे

सर्स्वती। श्रोत्रं न कर्णयोर्यशंः। जोष्टीभ्यां दधुरिन्द्रियम्। वृसुवने वसुधेयंस्य

वियन्तु यजं॥६८॥

देवीस्तिस्नस्तिस्रो देवीः। सरंस्वत्यक्षिना भारतीडाँ। शूष्त्र मध्ये नाभ्याँम्। इन्द्रांय दधुरिन्द्रियम्। वसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यजी देव इन्द्रो नराशारसाः। त्रिवरूधः सरंस्वत्याऽश्विभ्यांमीयते रथेः। रेतो न रूपममृतं जनित्रमाँ। इन्द्रांय त्वष्टा दधीदिन्द्रियाणिं। वसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यजी॥७०॥ देवी ऊर्जाहेती दुघे सुदुघै। पयसेन्द्र सर्गस्वत्यक्षिनां भिषजांवत। शुक्रं न ज्योतिः स्तनयोगहेती धत्त इन्द्रियम्। वसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यजी देवा देव इन्द्रो वनस्पतिः। हिरंण्यपणीं अक्षिभ्यामीं सरंस्वत्याः सुपिप्पलः। इन्द्रांय पच्यते मधुं। ओजो न जूतिमृषमो न भाममी। वनस्पतिनों दर्धदिन्द्रियाणि। वसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यजी। देवं बर्हिवारितीनाम्। अध्वरे स्तीर्णमक्षिभ्यामा देवानां भिषजां। होतांराविन्द्रमिश्वनां। वषद्वारेः सरंस्वती। त्विष्टं न हृदेये मृतिम्। होतुभ्यां दधुरिन्द्रियम्। वसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यज्नाहरु॥ षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

ऊर्णम्रदाः सरस्वत्याः॥७१॥

स्योनमिन्द्र ते सदेः। ईशायै मृन्यु॰ राजांनं बर्हिषां दधुरिन्द्रियम्। वृसुवने षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

होतांराविन्द्रमिश्वनां वाचा वाच् सरंस्वतीम्। अग्निः सोम् स्विष्टकृत्। स्विष्टकृत्। स्विष्ट इन्द्रः सुत्रामां सविता वर्षणो भिषक्। इष्टो देवो वनस्पतिः। स्विष्टा देवा आज्यपाः। इष्टो अग्निरमिना। होतां होत्रे स्विष्टकृत्। यशो न दर्धादिन्द्रियम्। अज्यपाः। इष्टो अग्निरमिना। होतां होत्रे स्विष्टकृत्। यशो न दर्धादिन्द्रियम्। ऊर्जमपीचितिः स्वधाम्। वसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यजे॥७२॥ वसुपेयंस्य वियन्तु यज्ञा देवो अग्निः स्विष्टकृत्। देवान् यंक्षद्यथायुथम्।

द्वारों दधुरिन्द्रियं वेसुवने वसुधेयेस्य वियन्तु यज् जोष्टींभ्यां दधुरिन्द्रियं वेसुवने वसुधेयेस्य वियन्तु यज् होतृंभ्यां दधुरिन्द्रियं

वंसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यजीन्द्रेयाणि वसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यज् सरंस्वत्या वनुस्पतिः षद्वं (देवं बर्हहेर्देवीद्वारीं देवी उषासांबृश्विना देवी जोष्टी देवी ऊर्जाहुती देवा देवाना भिषजा वषद्वारैदॅवीस्तिस्रिसित्सी देवीदॅव इन्द्रो नय्शशरसो देव इन्द्रो वनस्पतिर्देवं बर्गहर्वारितीनान्देवो अग्निः स्विष्टकृद्देवान्। समिषाऽभ्रिं देवं बर्गहः सर्प्स्वत्य्यिका सर्वं वियन्तु। द्वारीस्तृकः

सर्ववियन्तु। अज इन्द्रमोजोऽभ्रिं परः सरंस्वतीम्। नक् पूर्वः सरंस्वति। अन्यत्र सरंस्वती। भिषकपूर्वं दुह इन्द्रियम्। अन्यत्रं

अ्यर सुंतासुती यजमानः। पर्वन्यक्तीः दधुरिन्द्रियम्। सोृत्रामृण्या॰ सुंतासुती। अञ्जन्ययं यजमानः॥)॥■ अंग्रेम्द होतांरमवृणीता

\ ≥ |

318 यजमानः। बृहुभ्य आ सङ्गेतेभ्यः। एष में देवेषु वसु वार्या येक्ष्यत् इति। ता या देवा देवदानान्यदुः। तान्यस्मा आ च शास्वे। आ चे गुरस्व। इषितश्चे होत्रसि अवीवृधन्ताङ्गर्षेः। त्वामृद्यर्षे आर्षेयर्षीणात्रपादवृणीत। अय× सुंतासुती सूपस्था अद्य देवो वनुस्पतिरमवत्। अश्विभ्यां छागेन सर्स्वत्या इन्द्राय॥७३॥ अक्ष्ड्रस्तान्मेंदुस्तः प्रतिपच्ताग्रेभीषुः। अवीवृधन्त् ग्रहैः। अपोतामृश्विना सरस्वत्यै पचन्पुरोडाशान्। गृह्णन्महान्। बभ्नत्रीक्षभ्यां छाग्॰ सरंस्वत्या इन्द्राय ब्धन्थ्सरंस्वत्ये मेषमिन्द्रायाक्षिभ्याम्। ब्ध्रत्रिन्द्रायर्ष्यममिकिभ्या॰ सरंस्वत्ये सर्स्वतीन्द्रः सुत्रामां वृत्रहा। सोमान्थ्मुराम्णाः। उपो उक्थाम्दाः श्रोद्विमदां अदन् सर्स्वत्ये मेषेणेन्द्रायािश्वभ्याम्। इन्द्रायर्ष्येणािश्वभ्यार् -भद्रवाच्यांय प्रेषितो मानुषः। सूक्तवाकायं सूक्ता ब्रूहि॥७४॥ षष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २) इन्द्रांषु यजमानः सृप्त चं॥🕳

उुशन्तेस्त्वा हवामहु आ नो अग्ने सुकेतुना। त्व॰ सोम मृहे भगुं त्व॰

सोम् प्रचिकितो मनीषा। त्वया हि नेः पितर्ः सोम् पूर्वे त्व॰ सोम पितुभिः संविदानः। बर्हिषदः पितर् आऽहं पितृन्। उपेहूताः पितरोऽग्निष्वाताः पितरः। अग्रिष्वातानृतुमतो हवामहे। नराश्वारसे सोमपीथं य आशुः। ते नो अर्वन्तः सुहवां भवन्तु। शं नो भवन्तु द्विपदे शं चतुष्पदे। ये अग्निष्वाता येऽनीग्नेष्वाताः॥७५॥ पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अ॰्होमुचेः पितरंः सोम्यासंः। परेऽवेरेऽमृतांसो भवंन्तः। अधि ब्रुवन्तु ते अवन्त्वस्मान्। वान्यांये दुग्धे जुषमांणाः करम्भम्। उदीरांणा अवेरे परे च। अग्निष्वात्ता ऋतुभिः संविदानाः। इन्द्रवन्तो ह्विरिदं जुषन्ताम्। यदंभ्रे

कव्यवाहन् त्वमंग्न इंडितो ज्ञांतवेदः। मातंली कव्यैः। ये तांतृपुर्देवत्रा जेहंमानाः। होत्राकुपः स्तोमंतष्टासो अकैः। आऽग्ने याहि सुविदत्रेभिर्वाइः। सत्यैः कव्यैः पितृभिर्धर्मसद्धिः। हव्यवाहंमजरं पुरुप्रियम्। अग्निं घृतेनं हविषां सपर्यन्। उपांसदं कव्यवाहं पितृणाम्। स नेः प्रजां वीरवंतीष्ट् समृण्वतु॥७६॥

अनीग्रष्वाता॒ जेहंमानाः सृप्त चं॥∎

शुचिमिन्द्रं वयोधसमी। <u>उ</u>ष्णिहं छन्दं इन्द्रियम्। दित्यवाहं गां वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्येस्य होतर्यजी। होतो यक्षदोडेन्यमी। <u>ईडितं वृत्रहन्तेमम्। इडामि</u>रीड्य<u>रू</u> सहंः। सोममिन्द्रं वयोधसमी। अनुष्टुमं छन्दं इन्द्रियम्। त्रिवृध्सं गां वयो होतां यक्षदिडस्पदे। समियानं मृहद्यशंः। सुषेमिछं वरैण्यम्। आग्रीमिन्दं वयोषसम्। गायत्रीं छन्दं इन्द्रियम्। त्र्यावें गां वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्येस्य होत्र्येजे। होतां यक्षच्छुचित्रतम्। तनूनपोतमुद्भिदम्। यं गर्भमदितिर्देषे॥७७॥ पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

दर्यत्॥ ७८॥

वेत्वाऽऽज्येस्य होत्रर्यजी होतां यक्षथ्सुबर्हिषदमी पूष्णवन्तुममेर्त्यम्। सीदेन्तं ब्र्हिषि प्रिये। अमृतेन्द्रं वयोधसमौ। बृह्तीं छन्दं इन्द्रियम्। पश्चीवे गां वयो द्धेत्। वेत्वाऽऽज्येस्य होत्रर्यजा होतायष्ट्रब्यचंस्वतीः। सुप्रायुणा ऋतावृधंः॥७९॥

द्वारों देवीर्हिरण्ययीः। ब्रह्माण् इन्द्रं वयोधसमी। पङ्किः छन्दं इहिन्द्रियम्। तुर्यवाहं गां वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्येस्य होत्र्यजी होतो यक्षध्सुपेशसे। सुशित्पे बृहती

देवानांमुत्तमं यशेः। होतांग् दैव्यां कवी। सयुजेन्द्रं वयोधसम्। जगेतीं छन्दं इहेन्द्रियम्। अनुद्वाहं गां वयो दर्षत्। वेत्वाऽऽज्येस्य होत्रर्यज्ञा होतां उुमे। नक्तोषासा न दंरशतो। विश्वमिन्दं वयोषसमी। त्रिष्टुभं छन्दं इन्द्रियम्॥८०॥ पृष्टवाहं गां वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यंजां होतां यक्ष्त्प्रचेतसा। षष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २) यक्षत्पेशंस्वतोः॥८१॥

तिस्रो देवीर्हिरण्ययीः। भारतीर्बृहतीर्मृहीः। पतिमिन्द्रं वयोधसम्। विराजं छन्दं इहिन्द्रियम्। धेनुं गां न वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्येस्य होत्र्यंजी होतां यक्षध्सुरेतेसम्।

. त्वष्टारं पुष्टिवर्धनम्। रूपाणि बिभंतं पृथंक्। पुष्टिमिन्दं वयोधसम्॥८२॥

द्विपदं छन्दं इहिन्द्रियम्। उक्षाणं गां न वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्येस्य होत्र्यंजं

होतां यक्षच्छुतक्रेतुम्। हिरंण्यपर्णमुक्थिनम्। र्थुनां बिभ्रंतं वृशिम्। भगुमिन्द्रं वयोषसम्। कृकुभं छन्दं इहेन्द्रियम्। वशां वेहतं गां न वयो दर्पत्। वेत्वाऽऽज्येस्य होत्येजी। होतो यक्षथ्स्वाहोकृतीः। अभिं गृहपेतिं पृथेक्। वर्षणं भेषजं कृविम्।

322 क्षुत्रमिन्द्रं वयो्धसम्। अतिच्छन्दस् छन्दं इन्द्रियम्। बृहर्दष्भं गां वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्यंस्यु होत्रर्यजी८३॥ षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

किराजीमेह धेनुत्रा सुरेतेसन्त्वष्टांर पुष्टिमिन्द्रे द्विपदीमेहोक्षाण्त्रा शृतकेतुं भगमिन्द्रं कुकुर्पमिह वृशात्रा स्वाहोकृतीः क्षत्रमतिच्छन्दसं बृहदंषुमं गां वयों दर्धोदिन्द्रियमृषि वसु नवं दृशेहींन्द्रयमष्टं नव दश् गां न वयों दर्धोद्दरस्पंदे सर्वं वेतु॥)॥━━━[१७] समिद्धो अुग्निः सामिधा। सुर्षमिद्धो वर्रैण्यः। गायुत्री छन्दं इन्द्रियम्।

ब्रह्माणेः पुङ्किमिह तुर्येबाहम्। सुपेशोसे विश्वमिन्द्रं त्रिष्टुभं पष्टबाहम्। प्रचेतसा सयुजेन्द्रं जगेतीमिहानुब्राहम्। पेशोस्वतीस्त्रिकः पति

शुचिंमुणिहिन्दित्युवाहम्। इंडेन्य॒ सोमंमनुष्टभं त्रिवृथ्सम्। सुब्गृहिषदंममुतेन्द्रं बृहुतीं पक्षांविम्। व्यचंस्वतीः सुप्रायुणा द्वारौं

दुषे दर्धहताकुर्धे इन्द्रियं पेशंस्वतीर्वयोपसं वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्रर्यजं सुप्त चं (इडस्प्दैंऽग्रिक्षांयत्रीत्र्याविम्। शुचिन्नत<u>ु</u>

त्र्यावेगौर्वयो दधुः। तनूनपाच्छुचिन्नतः। तनूपाच सर्गस्वती। <u>उ</u>ष्णिक्छन्दं इन्द्रियम्। दित्यवाङ्गोर्वयो दधुः। इडांभिर्ग्निरीड्यः। सोमो देवो अमेर्त्यः॥८४॥

अनुष्टुप्छन्दं इन्द्रियम्। त्रिवृथ्सो गौर्वयो दधुः। सुबर्हिरग्निः पूषण्वान्। स्तीणबिहिरमेत्यः। बृह्ती छन्दं इन्द्रियम्। पश्चािवृगौर्वयो दधुः। दुरो देवीर्दिशो

उषे यही सुपेशसा। विश्वे देवा अमंत्याः। त्रिष्टुप्छन्दं इन्द्रियम्। पृष्टवाद्रोर्वयो दधुः। दैव्यां होतारा मिषजा। इन्द्रेण स्युजां युजा। जगंती छन्दं इहिन्द्रियम्। मृहीः। ब्रह्मा देवो बृह्स्पतिः। पृङ्गिश्छन्दं इहिन्द्रियम्। तुर्यवाङ्गोर्वयो दधुः॥८५॥ षष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अनुड्डान्गौर्वयो दधुः। तिस्र इडा सरंस्वती। भारंती मुरुतो विश्नः॥८६॥

विराद्धन्दं इहेन्द्रियम्। धेनुर्गौनं वयो दधुः। त्वष्टां तुरीपो अद्भुतः। इन्द्राभी

पुष्टिवर्धना। द्विपाच्छन्दं <u>इ</u>हेन्द्रियम्। उक्षा गौर्न वयों दधुः। श्रामिता नो वनस्पतिः। सिविता प्रेसुवन्भगम्। ककुच्छन्दं इहेन्द्रियम्। वशा वेहद्रौर्नं वयो दधुः। स्वाहो युज्ञं वर्ुणः। सुक्षत्रो भेषज्ञं केरत्। अतिच्छन्दा्ष्छन्दं इन्द्रियम्। बृहर्दष्भो गौर्वयो अमेत्येस्तुर्येवाङ्गोर्वयो द्युविशो वृशा वेहद्रौन वयो दयुश्चत्वारि च॥🕳 दधुः॥८७॥

वसन्तेन्तुंनां देवाः। वसंविक्षिवृतां स्तुतम्। रथन्तरेण तेजंसा। हविरिन्द्रे वयों दधुः। ग्रीष्मेणं देवा ऋतुनां। रुद्राः पंश्चदशे स्तुतम्। बृहता यशंसा बलम्। हविरिन्द्रे

पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

वयों दधुः। वृर्षाभिर्ऋतुनांऽऽदित्याः। स्तोमें सप्तदुशे स्तुतम्॥८८॥

वैरूपेणं विशोजंसा। हविरिन्द्रे वयों दधुः। शार्देनरीनां देवाः। एकविश्श ऋभवंः स्तुतम्। वैराजेनं श्रिया श्रियम्। हविरिन्द्रे वयों दधुः। हेमन्तेनरीनां देवाः। म्रुतिश्चणवे स्तुतम्। बलेन शक्तरीः सहंः। हविरिन्द्रे वयों दधुः। श्रोशिरणतुनां देवाः। त्रयश्चिश्शेऽमृतः स्तुतम्। सत्येनं रेवतीः क्षत्रम्। हविरिन्द्रे वयों दधुः॥८९॥

स्तोमें सप्तद्शे स्तुतर सहों ह्विरिन्द्रे वयों दधुश्चलारि च (वसन्तेनं श्रोष्मेणं वर्षाभिः शार्देनं हेमन्तेनं शैश्विरेण षट्॥)॥[१९]

देवं बर्हिरिन्द्रं वयोधसम्। देवं देवमंवर्धयत्। गायत्रिया छन्देसेन्द्रियम्। तेज

देवी देवं वेयोधसम्। उषे इन्द्रेमवर्धताम्। अनुष्टमा छन्देसेन्द्रियम्। वाचािमन्द्रे वयो दर्धत्। वृसुवने वसुधेयेस्य वीतां यजी। देवी जोष्टी देवमिन्द्रं वयोधसम्। देवी

झन्द्रे वयो दर्धत्। वृसुवने वसुधेयंस्य वेतु यजं। देवीद्वारी देवमिन्द्रं वयोधसमी। देवीर्देवमंवर्धयन्। उष्णिहा छन्देसेन्द्रियम्। प्राणिमिन्द्रे वयो दर्धत्। वृसुवने

बसुप्रेयंस्य वियन्तु यज्नाारि०॥

| 32, |  |
|-----|--|
|     |  |

र्वमंवर्धताम्। बृहत्या छन्देसेन्द्रियम्। श्रोत्रमिन्द्रे वयो दर्धत्। वसुवने वसुधेयेस्य देवी ऊर्जाहुती देवमिन्द्रं वयो्धसम्। देवी देवमंवर्धताम्। पृङ्क्या छन्देसेन्द्रियम् षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् २) वीतां यजं॥९१॥

शुक्रमिन्द्रे वयो दर्धत्। वसुवने वसुधेयंस्य वीतां यजी। देवा दैव्या होतांरा देवमिन्द्रं वयोधसम्। देवा देवमंवर्धताम्। त्रिष्टुभा छन्दंसिन्द्रियम्। त्विषिमिन्द्रे वयो दर्धत्। वसुवने वसुधेयंस्य वीतां यजी॥९२॥

द्वीस्तिक्षस्तिक्षो देवीर्वयोधसम्। पतिमिन्द्रमवर्धयन्। जगत्या छन्देसेन्द्रियम्

बर्लामन्द्रे वयो दर्पत्। वसुवने वसुधेयेस्य वियन्तु यजी। देवो नग्रश्गश्सो देवमिन्द्रं वयोषसमी। देवो देवमेवर्धयत्। विराजा छन्देसेन्द्रियम्। रेत् इन्द्रे वयो दर्पत्। बुसुवने वसुधेयंस्य वेतु यजी। ९३॥

देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं वयोधसम्। देवो देवमंवर्धयत्। द्विपदा छन्देसेन्द्रियम्। भगमिन्द्रे वयो दर्धत्। वृसुवने वसुधेयेस्य वेतु यजी देवं बर्हिर्वारितीनां

पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

प्राणम्। देवी देवमुषे अंनुष्टभा वाचमै। देवी जोष्ट्री बृहत्या श्रोत्रमै। देवी ऊर्जीहुती पृङ्क्षा शुक्रम्। देवा दैव्या होतांरा त्रिष्टभग त्विषिम्। देवीस्तिस्नस्तिस्त्रो देवीः पतिं जगत्या बलम्। देवो नरा्शश्सी विराजा रेतः। देवो वनुस्पतिद्विपदा

<u>उष्</u>णिहाँ

भगमैं। देवं बुग्हिवीरितीनां कुकुभा यशः। देवो अग्निः स्विष्टकुदतिंच्छन्दसा क्षत्रम्। वेतु वि्यन्तु चतुर्वीतामेको वियन्तु

चृतुर्वेत्ववर्धयदवर्धयङ् श्रुतुर्वर्धतामिकोऽवर्धयङ् श्रुतुर्वर्धयत्॥) ॥━

स्बाद्धी त्वा सोमः सुरोवन्तर् सीसेन मित्रोऽसि यद्देवा होता यक्षथ्ममिधेन्द्र<sub>े</sub> सिमेंद्र इन्द्र आर्चर्षाणुप्रा

देवं बर्ग्हर्हातां यक्षथ्ममिषाऽग्रि॰ समिद्धो अग्रिर्गक्षनाऽिक्षनां हविरिन्द्रियं देवं बर्हिः सरंस्वत्युग्निमृद्योशन्तो होतां

स्वाद्वीं त्वाऽमीमदन्त पितरः साम्रौज्याय पूतं पवित्रेणोषासानका बदेरैरधांतां देव इन्द्रो वनस्पतिः पष्टवाह्क्षां देवी

यक्षदिङस्पदे समिखो अभिः समिषो वस्तेनतुना देवं बर्हिरिन्द्रं वयोषसं वि॰श्तिः॥२०॥

देवमिन्द्रं वयोधसमी देवं देवमेवधयत्। ककुमा छन्देसेन्द्रियम्। यश् इन्द्रे वयो दर्पत्। वसुवने वसुधेयेस्य वेतु यजी देवो अग्निः स्विष्टकृद्देवमिन्द्रं वयोधसमी देवो देवमंवर्धयत्। अतिच्छन्दमा छन्देसेन्द्रियम्। क्षुत्रमिन्द्रे वयो दर्धत्। वृसुवने <u>बियुन्तु यजं वीतां यजं वीतां यजं वेतु यजं वेतु यज् पश्चं च (देवं बर्हिनांपत्रिया तेजः। देवीद्व</u>ारं बसुधेयस्य वेतु यजी।९४॥

वेयोधसं चतुर्नवितिः॥९४॥

स्बाद्वी त्वां वेतु यजा॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके षष्ठः प्रपाठकः समाप्तः॥

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

## ॥तैत्तिरीयबाह्मणे द्वितीयाष्टके सप्तमः प्रपाठकः॥

त्रिवृथ्स्तोमों भवति। ब्रह्मवर्चसं वै त्रिवृत्। ब्रह्मवर्चसमेवावं रुन्धे। अग्रिष्टोमः

अरुणो मिर्मिरस्त्रिथुंकः। एतद्वे ब्रेह्मवर्चसस्यं रूपम्। रूपेणेव ब्रेह्मवर्चसमवं रुन्ये। बृहस्पतिरकामयत देवानौं पुरोधां गेच्छेयमिति। स एतं बृहस्पतिसृवमपश्यत्। सोमो भवति। <u>ब्रह्मवर्चसं वा अग्निष्टोमः। ब्रह्मवर्चसमेवावं रुन्ये। र्थन्तर्</u>र सामे भवति। <u>ब्रह्मवर्च</u>सं वै र्थन्तरम्। <u>ब्रह्मवर्चसमेवावं रुन्ये। परिस्र</u>जी होतो भवति॥१॥

तमाऽहेरत्। तेनायजता ततो वै स देवानां पुरोधामंगच्छत्। यः पुरोधाकांमः स्यात्। स बृहस्पतिसवेनं यजेत॥२॥

पुरोधामेव गंच्छति। तस्यं प्रातः सवने स्नेषुं नाराश्र्यंसेषुं। एकांदश्र दक्षिणा

नीयन्ते। एकांदश्च माप्यं दिने सवेने सृत्रेषु नाराश्च×्सेषुं। एकांदश तृतीयसवने सृत्रेषु नाराश्च×्सेषुं। त्रयेक्नि×्श्यध्सम्पद्यन्ते। त्रयेक्नि×शृद्धे देवताः। देवतां एवावं

रुन्धे। अर्थश्चतुम्बिर्शाः। प्राजापुत्यो वा अर्थः॥३॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

प्रजापीतेश्वतुम्बिर्शो देवतांनाम्। यावंतीरेव देवताः। ता एवावं रुन्धे। कृष्णाजिनेऽभिषिश्चति। ब्रह्मेणो वा एतद्रूपम्। यत्कृष्णाजिनम्। ब्रह्मवर्चसेनैवैन्र समर्थयति। आज्येनाभिषिश्चति। तेजो वा आज्यम्। तेजं एवास्मिन्दधाति॥४॥

यदाँग्रेयो भवीते। अग्रिमुंखा ह्याद्धिः। अथु यत्पौष्णः। पुष्टिंकै पूषा। पुष्टिंकैश्यंस्य गुष्टिंमुवावं रुन्ये। प्रसुवायं सावित्रः। अथु यत्त्वाष्ट्रः। त्वष्टा हि रूपाणि विक्रोति

नुर्वरुणत्वायं वारुणः॥५॥

होतां भवति यजेत् वा अश्वों दधाति॥🕳

अथो य एव कश्च सन्थ्मूयतै। स हि वांरुणः। अथ यद्वैश्वदेवः। वैश्वदेवो हि वैश्येः। अथ यन्मांरुतः। मारुतो हि वैश्येः। सपैतानि हवी रिषे भवन्ति। सप्तमाणा वै मरुतेः। पृश्चिनः पष्टोही मांरुत्या लेम्यते। विश्वे मरुतेः। विश्वे एवैतन्मध्यतोऽभिषिच्यते। तस्माद्वा एष विशाः प्रियः। विशो हि मध्यतो-

जिमिष्च्यते। ऋष्मुचुमेऽध्यमिषिश्रति। स हि प्रजनिष्ता। द्धाजिमिषिश्रति।

ऊग्वां अत्राद्यं दिषा कुर्जेवैनम्त्राद्येन समर्थयति॥६॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २) गुरुणो विद्वै मुरुतोऽष्टो चं॥━

यदांभेयो भवंति। आग्रेयो वै ब्रांह्मणः। अथु यथ्सोम्यः। सोम्यो हि ब्रांह्मणः। प्रसवायेव सांवित्रः। अथु यद्वांर्हस्पत्यः। एतद्वे ब्रांह्मणस्यं वाक्पतीयम्। अथु यदंग्रीषोमीयः। आग्रेयो वै ब्रांह्मणः। तो युदा सृङ्ख्वेते॥७॥

अर्थ वीर्यावत्तरो भवति। अथु यथ्सीरस्वतः। एतिष्कि प्रत्यक्षे ब्राह्मणस्ये वाक्युतीयम्। निर्वरुणुत्वायेव वारुणः। अथो य एव कश्च सन्थ्सूयते। स हि

वांरुणः। अथ् यद्यांवापृथिव्यः। इन्द्रों वृत्राय वज्रमुदंयच्छत्। तं द्यावापृथिवी

नान्वंमन्येताम्। तमेतेनैव भांग्षेयेनान्वंमन्येताम्॥८॥

वज्रस्य वा एषोऽनुमानाये। अनुमतवज्ञः स्याता इति। अष्टावेतानि हवी रिषे भवन्ति। अष्टाक्षेरा गायत्री। गायत्री ब्रह्मवर्चसम्। गायत्रियेव बेह्मवर्चसमवे रुन्ये। हिरंण्येन घृतमुत्पुनाति। तेजंस एव रुचे। कृष्णाजिनेऽभिषिश्चति। ब्रह्मणो

331 वा एतदंख्सामयो क्पम्। यत्कृष्णाजिनम्। ब्रह्मंत्रेवैनंमुख्सामयोरध्यमिषिश्रति। सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

**गृ**तेनामिषिश्चति। तथां वीर्यांवत्तरो भवति॥९॥

सङ्ख्येते भागपेथेनान्वंमन्येता॰ रूपं चृत्वारि च॥🕳

न वै सोमेन सोमेस्य सुवौऽस्ति। हृतो ह्येषः। अभिषुतो ह्येषः। न हि हृतः सूयतै। सौमी॰ सूतवेशामा लेभते। सोमो वै रंतो्घाः। रेतं पुव तद्दंघाति। सौम्यर्चा-

ऽमिषिश्चति। रेतोया ह्येषा। रेतः सोमः। रेतं पृवास्मिन्दधाति। यत्किं चं राजुसूर्यमृते

सोमम्। तथ्सर्वं भवति। अषांढं युथ्सु पृतंनासु पप्रिम्। सुबर्षामुफ्स्वां वृजनंस्य

गोपाम्। भरेषुजा सुिक्षिति सुश्रवंसम्। जयंन्तं त्वामनुं मदेम सोम॥१०॥

रेतः सोमः सप्त चं॥∎

सूयतें। स मेनुष्यस्वः। एतं वै पृथेये देवाः प्रायेच्छन्। ततो वै सोऽप्यांर्ण्यानाँ

यो वै सोमेन सूयतें। स देवसुवः। यः पृथुनां सूयतें। स देवसुवः। य इष्ट्यां

पशूनामेसूयत। यावेतोः कियेतीश्च प्रजा वाच् वर्दन्ति। तासा्॰ सर्वासा॰

332 सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

य एतेन् यजेते। य उं चैनमेवं वेदं। नाराश्र्ङ्स्यर्चाऽभिषिश्रति। मृनुष्यां वै तथ्सर्वं भवति। ये में पश्चाशतं दृदुः। अश्वांनार स्परस्तुतिः। द्युमदंग्रे महि श्रवंः। नराृशक्संः। निहुत्यु वावैतत्। अथाभिषिश्चति। योत्कं चं राजुसूर्यमनुत्तरवेदीकम्॥ बृहत्क्रीधे मुघोनामा नुबद्मृत नुणाम्॥१२॥ मू<u>यते</u> म्घस्तुतिस्त्रीणि च॥**■** सूयते॥११॥

एष गोसकः। षष्टिर्ध्य उक्थ्यों बृहथ्सामा। पर्वमाने कण्वरथन्तरं मेवति। यो वै वांजुपेयः। स सेम्राट्थ्स्वः। यो रांजुसूयः। स वेरुणस्वः। प्रजापेतिः स्वाराज्यं

परमेष्ठी। स्वार्ौड्यं गौरेव। गौरिंव भवति॥१३॥

य एतेन् यजीते। य उं चैनमेवं वेदे। उुमे बृहद्रथन्त्रे भेवतः। तिष्कि स्वारौज्यम्। अयुत्ं दक्षिणाः। तिष्ठं स्वारौज्यम्। प्रितिधुषाऽभिषिश्रति। तिष्ठं स्वारौज्यम्।

अनुंद्धते वेद्यै दक्षिण्त आंहवृनीयंस्य बृह्तः स्तोत्रं प्रत्युभिषिंश्रति। इ्यं वाव

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

वयो्धाः। मृहान्मीहुत्वे तंस्तमानः। क्षत्रे गृष्टे चं जागृहि। प्रजापंतेस्त्वा परमेष्ठिनः

स्वार्"ऽयेनाभिषिश्वामीत्योह। स्वार्"ज्यमेवैनं गमयति॥१५॥

ड्व भवति रथन्तरमाहैकं च॥🕳

तेने गोस्वः। षुद्रिर्शः सर्वः। रेवज्ञातः सर्हसा बृद्धः। क्षत्राणां क्षत्रभृत्तेमो

असौ बृहत्। अनयोरेवेनमनंन्तर्हितमुभिषिश्चति। पृषुस्तोमो वा एषः।

सिं×्हे व्याघ्न उत या पृदांको। त्विषिर्ग्रो ब्रांह्मणे सूर्ये या। इन्द्रं या देवी

सुमगो जुजाने। सा न आगुन्वर्चसा संविदाना। या राजुन्ये दुन्दुभावायेतायाम्।

अर्थस्य कन्द्रे पुरुषस्य मायौ। इन्द्रं या देवी सुभगों जजाने। सा न आगन्वर्चसा

संविदाना। या हस्तिनि द्वीपिनि या हिरंण्ये। त्विष्रिक्षेषु पुरुषेषु गोषुं॥१६॥

इन्द्रं या देवी सुभगों जुजाने। सा न आग्नवर्चसा संविदाना। रथे अक्षेषुं

वृष्भस्य वाजी। वार्ते पूर्जन्ये वरुणस्य शुष्मी। इन्द्रं या देवी सुभगो जुजाने। सा

रथन्तरम्॥१४॥

333

नु आगुन्वर्चसा संविदाना। रार्डसि विरार्डसि। सम्रार्डसि स्वरार्डसि। इन्द्रांय त्वा सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

तेजंस्वते तेजंस्वन्तङ् श्रीणामि। इन्द्रांय त्वौजंस्वत् ओजंस्वन्तङ् श्रीणामि॥१७॥

इन्द्रांय त्वा पर्यस्वते पर्यस्वन्तङ् श्रीणामि। इन्द्रांय त्वाऽऽयुष्मत् आयुष्मन्तङ्

श्रीणामि। तेजोऽसि। तत्ते प्र येच्छामि। तेजंस्वदस्तु मे मुखम्। तेजंस्वच्छिरों अस्तु मे। तेजंस्वान् विश्वतेः प्रत्यङ्कः। तेजंसा सम्पिपृग्धि मा। ओजोऽसि। तत्ते

आयुंरसि। तत्ते प्र यंच्छामि। आयुंष्मदस्तु मे मुखम्। आयुंष्मच्छिरो अस्तु

पयेस्वच्छिरो अस्तु मे। पयेस्वान् विश्वतेः प्रत्यङ्कः। पयेसा सं पिपृग्धि मा॥१९॥

ओजंसा सं पिंपुग्धि मा। पयोंऽसि। तत्ते प्र यंच्छामि। पयंस्वदस्तु मे मुखमैं।

ओजंस्वदस्तु मे मुखम्। ओजंस्वृच्छिरो अस्तु मे। ओजंस्वान् विश्वतंः प्रत्यङ्का

प्र यच्छामि॥१८॥

मे। आयुष्मान् विश्वतेः प्रत्यड्डा आयुषा सं पिपृग्धि मा। इममंग्र आयुषे वर्चसे

कृधि। प्रिय॰ रेतो वरुण सोम राजन्। मातेवौस्मा अदिते शर्म यच्छ। विश्वे देवा

335 आयुरिस विश्वायुरिस। स्वधिरिस् सर्वमायुरिस। यतो वातो मनोजवाः। यतुः क्षरेन्ति सिन्धेवः। तासाँ त्वा सर्वासार क्वा। अभिषिश्रामि वर्वसा। सुमुद्र इंवासि गृह्मना। सोमे इवास्यदाैन्यः। अग्रीरिव विश्वतेः प्रत्यङ्कः। सूर्यं इव ज्योतिषा जर्दष्टियंथाऽसंत्॥२०॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

विमः॥२१॥

अपां यो द्रवेणे रसेः। तमृहमस्मा आंमुष्यायुणाये। तेजंसे ब्रह्मवर्चेसायं गुह्णामे।

अुपां य ऊर्मौ रसंः। तमृहमुस्मा आंमुष्यायुणायं। ओजंसे वीर्याय गृह्णामि। अपां

यो मध्यतो रसंः। तमृहम्स्मा आंमुष्यायुणाये। पुष्ट्रौ प्रजनंनाय गुह्यामि। अपां यो यज्ञियो रसंः। तमृहमस्मा आंमुष्यायणायं। आयुषे दीर्घायुत्वायं गृह्णामि॥२२॥ गोष्वोजंस्वन्तः श्रीणाम्योजोऽमि तत्ते प्रयंच्छामि पर्यसा सम्पिपृष्यि माऽसीद्वभूर्यजियो रसो हे चं॥———————[७] अभिप्रेहि बारयस्व। उग्रश्चेतां सपलहा। आतिष्ठ मित्रवर्धनः। तुभ्यं देवा

अधिब्रवन्। अङ्गो न्यङ्गावृभित् आतिष्ठ वृत्रह्त्रथम्। आतिष्ठंन्तं परि विश्वं अभूषन्।

336 श्रियं वसानश्ररति स्वरोचाः। मृहत्तद्स्यासुरस्य नामे। आ विश्वरूपो अमृताीन सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

तस्यौ। अनु त्वेन्द्रो मद्त्वनु बृह्स्पतिः॥२३॥

सूर्यों अहोभिरनुं त्वाऽबतु। चन्द्रमा नक्षेत्रेरनुं त्वाऽबतु। द्यौक्षं त्वा पृथिवी च प्रचेतसा। शुक्रो बृहद्दक्षिणा त्वा पिपतुं। अनुं स्वधा चिकिता ्र सोमों अग्निः। अनु सोमो अन्वग्निर्रावीत्। अनु त्वा विश्वं देवा अंवन्तु। अनु सप्त राजांनो य उतामिषिक्ताः। अनु त्वा मित्रावर्रणाविहावंतम्। अनु द्यावापृथिवी विश्वशंम्भा आऽयं पृंणक्तु रजंसी उपस्थम्॥२४॥ बृह्स्पतिः सोमो अग्निरेकं च॥🕳

प्रजापेतिः प्रजा अंसृजता ता अंस्माध्सृष्टाः परांचीरायन्। स एतं

प्रजा उपावेर्तन्ता अत्रोमेवैनं भूतं पश्यंन्तीः प्रजा उपावेर्तन्ते। य पृतेन यजेते। य उँ चैनमेवं वेदं। सर्वाण्यत्रानि भवन्ति॥२५॥ <u>प्रजापेतिरोद्नमपष्यत्। सोऽत्रं भूतोऽतिष्ठत्। ता अन्यत्रान्नाद्यमिवेत्वा। प्रजापीतं</u>

337 सर्वे पुरुषाः। सर्वाण्येवात्रान्यवं रुन्ये। सर्वान्युरुषान्। राडीसे विराडसीत्यांह सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

स्वाराँज्यमेवैनं गमयति। यद्धिरंण्यं दर्दाति। तेजस्तेनावं रुन्ये। यत्तिसृधन्वम्।

गिर्वं तेने। यदष्ट्राम्॥२६॥

तदंस्मित्रेकुघाऽधौत्। रोहिण्यां कार्यः। यद्वौह्मण एव रोहिणी। तस्मदिव। अथो

ज्योतिरेवास्मिन्दधाति। अथो तेजो वै हिरंण्यम्। तेजं पृवाऽऽत्मन्यंते। यदोंदुनं

प्राक्ष्जाति। एतदेव सर्वमवरुध्ये॥२७॥

पुष्टिं तेने। यत्केमण्डलुम्। आयुष्टेने। यद्धिरंण्यमा बुप्नाति। ज्योतिर्वे हिरंण्यम्

वर्ष्मैवेन ५ समानानां करोति। उद्यता सूर्येण कार्यः। उद्यन्तं वा एत ६ सर्वाः प्रजाः प्रतिनन्दन्ति। दिद्क्षेण्यों दर्श्यनीयों भवति। य एवं वेदं। ब्रह्मवादिनों वदन्ति॥२८॥

तत्रावैति। त्रिभिः पंबयति। त्रयं हुमे लोकाः। एभिरेवैनं लोकेः पंबयति। अथौ

अुवेत्योऽवभुथा (३) ना (३) इतिं। यद्दर्भपुअोकैः पुवयंति। तस्स्विदेवावैति।

अपां वा एतत्तेजो वर्चः। यद्दर्भाः। यद्दर्भपुअौलैः प्वयीते। अपामेवैनं तेजंसा वर्चसाऽभिषिश्चति॥२९॥ मुब्न्त्यष्ट्रामबुरुष्यं वदन्ति दुर्मा यद्दर्भपुञ्जोलैः प्वयुत्येकं च॥🕳

प्रजापेतिरकामयत बृहोर्भूयांन्थ्स्यामिति। स पृतं पंञ्जशार्दीयंमपश्यत्। तमाऽहंरत्। तेनांयजता ततो वै स बृहोर्भूयांनभवत्। यः कामयेत बृहोर्भूयांन्थ्स्यामिति। स पंञ्जशार्दीयेन यजेत। बृहोर्षेव भूयांन्भविति। मुरुष्स्तोमो वा एषः। मुरुतो हि देवानां भूयिष्ठाः॥३०॥

बहुर्भवति। य एतेन यजेते। य उंचेनमेवं वेदं। पञ्चशार्दायों भवति। पञ्च वा ऋतवेः संवथ्सरः। ऋतुष्वेव संवथ्सरे प्रति तिष्ठति। अथो पञ्चौक्षरा पङ्किः। पाङ्गों यज्ञः। यज्ञमेवावे रुन्ये। सप्तदशङ् स्तोमा नाति यन्ति। सप्तदशः प्रजापेतिः।

प्रजापेतेरास्यै॥ ३१॥

मूयिष्ठा यन्ति द्वे ची।🕳

339 सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अगस्त्यों मरुखं उक्षाः प्रौक्षेत्। तानिन्द्र आदेता। त एनं वर्धमुद्यत्याभ्यायन्त।

तानगस्त्यंश्वेवेन्द्रंश्च कयाशुभीयेनाशमयताम्। ताञ्छान्तानुपाँह्वयत। यत्केयाशुभीयं मबेति शान्त्यै। तस्मदित ऐन्द्रामारुता उक्षाणेः सब्नीयां भवन्ति। त्रयेः प्रथुमेऽहुज्ञा लेभ्यन्ते। पुवं द्वितीयै। पुवं तृतीयै॥३२॥

एवं चेतुर्थे। पश्चौनमेऽहुन्ना लेभ्यन्ते। वर्षिष्ठमिव ह्येतदहेः। वर्षिष्ठः समानानाँ भवति। य एतेन यजेते। य उचैनमेवं वेदे। स्वारौज्यं वा एष यज्ञः। एतेन वा

एक्या वां कान्द्रमः स्वाराँज्यमगच्छत्। स्वाराँज्यं गच्छति। य पृतेन् यजंते॥३३॥

य उं चैनमेवं वेदे। मारुतो वा एषः स्तोमंः। एतेन वै मुरुतो देवानां भूयिष्ठा अभवन्। भूयिष्ठः समानानां भविति। य एतेन यजेते। य उं चैनमेवं वेदे।

पञ्चशारदीयो वा एष यज्ञः। आ पेञ्चमात्पुर्कषादत्र्यमति। य एतेन यजीते। य उ चैनमेवं वेदे। सप्तदशङ् स्तोमा नाति यन्ति। सप्तद्शः प्रजापेतिः। प्रजापेतेरेव

तृतीयें गच्छति य एतेन यजतेऽति य एतेन यजते य उं चैनमेव वेद त्रीणि च (अगस्यः स्वारौज्यं मारूतः पेश्रशार्दीयो  $\frac{\sim}{\sim}$ वा एष युज्ञः संपद्धां प्रजापंतेरेव नैति॥)॥🕳 सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

भुर्ण्यवेः। वनुर्षदों वायवो न सोमाः। यजां नो मित्रावर्षणा। यजां देवा ऋतं बृहत्। अग्रे यिक्षे स्वन्दमम्। अश्विना पिबंत सुतम्। दीद्यंग्री शुचिव्रता। ऋतुनो अस्या जरोसो दुमा मुरित्रौः। अर्चछूमासो अग्नयेः पावकाः। श्विचीचयेः श्वात्रासो

यज्ञवाहसा॥३५॥

द्वे विक्षेपे चरतः स्वर्धे। अन्याऽन्यां वृष्समुपं धापयेते। हरिंग्न्यस्यां भवंति

्र स्वधावान्। शुक्रो अन्यस्यां दहशे सुवर्चाः। पूर्वापरं वंरतो माययेतौ। शिशू कीर्डन्तौ - - - -गरि यातो अध्वरम्। विश्वान्यन्यो मुवनाऽमि चष्टै। ऋत्नन्यो विदधंशायते पुनेः।

त्रीणि श्राता त्रीषृहस्रौण्युग्निम्। त्रि॰्शाचे देवा नवं चाऽसपर्यन्॥३६॥

घृतैरास्तुणन्बर्हिर्स्मै। आदिद्धोतांरं न्यंषादयन्ता अग्रिनाऽग्रिः समिध्यते। कृविगृहपेतियुवा। हृव्यवाङ्गुह्वाऽऽस्यः। अग्निदेवानां जठरम्। पूतदेक्षः

341 कृविकेतुः। देवो देवेमिरा गीमत्। अग्निशियों मुरुतो विश्वकृष्टयः। आ त्वेषमुग्रमवं सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २) ईमहे व्यम्॥३७॥

ते स्वानिनों कृद्रियां वर्षनिर्णिजः। सिर्हा न हेषकेतवः सुदानवः। यदुत्तमे मंकतो मध्यमे वा। यद्वांऽवमे सुभगासो दिवि छ। ततो नो कद्रा उत वाऽन्वस्य। अग्ने विताद्धविषो यद्यजामः। ईडे अग्निः स्ववंसन्नमोभिः। इह प्रसप्तो वि चं

यत्कृतं नेः। रथैरिव प्रभेरे वाज्यद्धिः। प्रदक्षिणिन्मुरुताङ् स्तोमंमुख्याम्॥३८॥

-श्रुधि श्रुंत्कर्ण विह्निभिः। देवैरंग्ने स्यावीभेः। आसीदन्तु बर्हिषिं। मित्रो वर्रुणो अर्यमा। प्रात्यीवीणो अध्वरम्। विश्वेषामदितिर्यक्तियानाम्। विश्वेषामतिथिमिनुषाणाम्। अग्निर्देवानामवं आवृणानः। सुमृडीको भेवतु

दिवि श्रवो दधिरे यज्ञियोसः। नक्तों च चुकुरुषसा विरूपे। कृष्णं च वर्णमरुणं च सन्धुः। त्वामेग्न आदित्यासे आस्यमैं। त्वां जिह्वार शुचेयश्चकिरे कवे। त्वार

विश्ववेदाः। त्वे अग्ने सुमृतिं भिक्षंमाणाः॥३९॥

र्गितेषाचो अध्वरेषु सश्चिरे। त्वे देवा हविरंदन्त्याहुंतम्। नि त्वां यज्ञस्य साधेनम्। अग्रे होतांरमृत्विजम्। वनुष्वहेव धीमहि प्रचेतसम्। जीरं दूतममेत्यीम्॥४०॥ थृज्बाहुसासुपर्यन्वयमृखां भिक्षेमाणाः प्रचेतसुमेकं च॥■ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

तिष्ठा हरी रथ आ युज्यमांना याहि। वायुर्न नियुतों नो अच्छे। पिबास्यन्यों अभिसृष्टो अस्मे। इन्द्रः स्वाहो रियमा ते मदाय। कस्य वृषां सुते सचा।

नियुत्वौन्वृषुमो रंणत्। बृत्रहा सोमंपीतये। इन्द्रं वृयं मंहायुने। इन्द्रमर्भे हवामहे। गुनं वृत्रेषु विज्ञिणम्॥४१॥

द्विता यो वृत्रहन्तंमः। विद इन्द्रंः शृतकेतुः। उपं नो हरिभिः सुतम्। स सूर् आजनयं ज्योतिरिन्द्रम्। अया घिया तरणिरद्रिबर्हाः। ऋतेने शुष्मी नवेमानो <u>अ</u>कैः। व्युक्तिपो अस्रो अद्रिक्तिमेद। उतत्यदा्श्विश्वेयम्। यदिन्द्र नाहुषा्ष्वा। अग्रे

भरोष्विन्द्र ५ सुहव १ हवामहे। अर्होमुच १ सुकृतं दैव्यं जनमा। अग्निं मित्रं वेक्षु प्रतीदंयत्॥४२॥

वर्रण सातये भगमै। द्यावापृथिवी मुरुतं स्वस्तयै। मृहि क्षेत्रं पुरुश्चन्द्रं वि विद्वान्। आदिथ्सखिभ्यश्चर्थर् समैरत्। इन्द्रो नृभिरजनृद्दीद्यानः साकम्। सूर्यमुषसं गातुमग्निम्। उरु नो लोकमनु निष विद्वान्। सुर्वर्वश्च्योतिरभेयः 343 ऋष्वा तं इन्द्र स्थविरस्य बाहा उपंस्थेयाम शर्णा बृहन्तां। आ नो विश्वांभिरूतिभेः स्जोषाः। ब्रह्मं जुषाणो हंर्यश्व याहि। वरीवृज्धस्थविरेभिः सुशिप्र। अस्मे दघद्वषंण्॰ शुष्मंभिन्द्र। इन्द्रांय गावं आशिरम्। दुदुहे बिञ्जणे मधुं। यथ्सीमुपह्नरे विदत्। तास्ते विज्ञन्येनवो जोजयुर्नः॥४४॥ गर्भस्तयो नियुतो विश्ववाराः। अहंरहर्भूय इज्ञोगुंवानाः। पूर्णा इन्द्र क्षुमतो भोजनस्य। इमां ते धियं प्र भेरे महो महीम्। अस्य स्तोत्रे धिषणा यत्ते आन्जे। तमुथ्सवे चे प्रस्वे चे सासहिम्। इन्द्रं देवासः शवंसा मदं ननु॥४५॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २) स्वस्ति॥४३॥

ন <u>~</u> | बुिख्रणंमयथ्स्बुस्ति जोंजयुर्नः सुप्त चं॥■

स इन्द्रंमब्रवीत्। इमान्मं ईफ्सेति। तानिन्द्रंः पश्चदशेन स्तोमेन नाऽऽप्रौत्। स विश्वौन्देवानेब्रवीत्। इमान्मं ईफ्सतेति। तान् विश्वेद्वाः संप्तदशेन स्तोमेन नाऽऽप्रुवन्। स विष्णुमब्रवीत्। इमान्मं ईफ्सेति। तान् विष्णुरेकवि॰्शेन यजेत। यदाप्रोत्। तद्प्तोर्यामेस्याप्तोर्यामृत्वम्। एतेन् वै देवा जैत्वांनि जित्वा। यं इदं विष्णुर्वि चंकम् इति व्यंकमता यस्मौत्पशवः प्रप्रेव् अश्शेरन्। स एतेनं प्रजापेतिः पुशूनेसुजता तैऽस्माध्सुष्टाः परौं च आयन्। तानीग्रेष्टोमेन इफ्सोते। नाऽऽप्रौत्। तानुक्थ्येन् नाऽऽप्रौत्। तान्थ्योड्शिना नाऽऽप्रौत्। तात्रात्रिय नाऽऽप्रौत्। तान्थ्मन्धिना नाऽऽप्रौत्। सौऽभिमंब्रवीत्। इमान्मं स्तोमेनाऽऽप्रोत्। वार्वन्तीयेनावारयत॥४७॥ तानुग्निस्त्रिकुता स्तोमेन नाऽऽप्रौत्॥४६॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

<sup>\\ \</sup>sigma\_{\sigma} \) काम्मकोमयन्तु तमाँऽऽप्रुबन्। यं कामं कामयेते। तमेतेनाँऽऽप्रोति॥४८॥ स्तोमेंन् नाऽऽप्रोदवारयत् नवं च॥■

नमेसा ते जुहोमि। मा देवानौं मिथुयाकेर्म गागम्। साबीर्गहे देव प्रसवायं पित्रे। वर्ष्माणमस्मै वरिमाणमस्मै। अथास्मभ्यः सवितः सर्वताता। दिवेदिव आ सुवा व्याघ्रोऽयमग्रौ चंरति प्रविष्टः। ऋषींणां पुत्रो अभिशस्तिपा अ्यम्। नुमुस्कारेण सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

तस्यं मृत्यौ चंरति राजुसूयम्। स राजां राज्यमनुं मन्यतामिदम्। येभिः

मूरि पृथः। भूतो भूतेषु चरति प्रविष्टः। स भूतानामधिपतिर्बभूव॥४९॥

शिल्पैः पप्रथानामद्दर्हत्। येभिद्यमिन्यपिरंशत्युजापंतिः। येभिवांचं विश्वरूपारं

सुमव्यंयत्। तेनेममंग्न इह वर्चसा समिङ्घा येभिरादित्यस्तपेति प्र केतुभिः।

योभेः सूयों दट्शे चित्रमीनुः। योभेवांचं पुष्कलेभिरव्ययत्। तेनेममंग्र इह वर्चसा

समिङ्गि॥ ५०॥

आऽयं भांतु शर्वसा पञ्चं कृषीः। इन्द्रं इव ज्येष्ठो भंवतु प्रजावान्। अस्मा

अंस्तु पुष्कुलं चित्रभांनु। आऽयं पृंणक्तु रजंसी उपस्थम्। यत्ने शिल्पं कश्यप

रोचुनावेत्। इन्द्रियावेत्पुष्कुलं चित्रभानु। यस्मिन्थ्सूर्यो अर्पिताः सृप्त साकम्।

या दिव्या आपः पर्यसा सम्बभूवुः। या अन्तरिक्ष उत पार्थिवीर्याः। तासाँ त्वा सर्वासाः कृवा। अभिषिश्चामि वर्चसा। अभि त्वा वर्चसाऽसिचं दिव्येने। पर्यसा पृश्चाद्मिषिश्चन्तु जागेतेन् छन्देसा। विश्वै त्वा देवा उंत्तर्तोऽभिषिश्चं त्वाऽनुंष्टुभेन् तथाँ त्वा सविता केरत्। इन्द्रं विश्वां अवीवृधन्। समुद्रव्यंचसक्तिरं। रथीतंमर रथीनाम्। वाजानार् सत्पतिं पतिमा। वसंवस्त्वा पुरस्तांद्रभिषिश्चन्तु गायत्रेण न छन्दंसा। रुद्रास्त्वां दक्षिणतोऽभिषिश्चन्तु त्रैष्ट्येभेन छन्दंसा। आदित्यास्त्वां -विश्रयस्य दिशों मृहीः। विश्रस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु। मा त्वद्राष्ट्रमधि अशत्। .... तस्मित्राजानमधि विश्वयमम्। द्यौरीस पृथिव्योसि। व्याघ्रो वैयाघ्रेऽधि॥५१॥ छन्देसा। बृहस्पतिस्त्वोपरिष्टाद्मिषिश्चतु पाङ्गेन छन्देसा॥५३॥ सह। यथासां राष्ट्रवर्धनः॥५२॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अरुणं त्वा वृकेमुग्रक्षंजङ्गरम्। रोचेमानं मुरुतामग्ने अचिषः। सूर्यवन्तं मुघवानं

347 सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

विषासिहिम्। इन्द्रंमुक्थेषुं नामृहूतंम॰ हुवेम। प्र बाहवां सिसृतं जीवसें नः। आ नो गर्व्योतिमुक्षतं घृतेने। आ नो जनै श्रवयतं युवाना। श्रुतं में मित्रावरुणा हवेमा। इन्द्रंस्य ते वीर्यकृतः। बाहू उपावं हरामि॥५४॥

अभि प्रोहे वीरयेस्व। उग्रश्चेतां सपलहा। आतिष्ठ वृत्रहन्तंमः। तुभ्यं बुभूवाव्यंयतेनेममेग्र इह वर्चसा समिङ्कि वैयाष्ठेऽधि राष्ट्रवर्धनः पाङ्केन छन्देसोपाबंहरामि॥===

देवा अधिब्रवन्। अङ्को न्यङ्गावभितो रथं यौ। ध्वान्तं वाताग्रमनु सञ्चरंन्तो। दूरेहेतिरिन्द्रियावान्पतत्री। ते नोऽग्रयः पप्रयः पारयन्तु। नमंस्त ऋषे गद। अव्यंथाये त्वा स्वधायै त्वा॥५५॥

मा नं इन्द्राभित्स्त्वदृष्वारिष्टासः। एवा ब्रंह्मन्तवेदंस्तु। तिष्ठा रथे अधि यद्वज्ञंहस्तः। आ र्श्मीन्देव युवसे स्वश्वः। आ तिष्ठ वृत्रहत्रातिष्ठेन्तं परि। अनु त्वेन्द्रों मदत्त्वनुं त्वा मित्रावर्षणौ। द्यौश्चं त्वा पृथिवी च प्रचेतसा। शुक्रो बृहदृष्टिषणा त्वा पिपतुं। अनु स्वधा चिकिता समोने अग्निः। अनु त्वाऽवतु

सत्पंतिं पतिमै। परिमा सेन्या घोषाः। ज्यानां वृञ्जन्तु गृप्नवंः। मेथिष्ठाः पिन्वंमाना इह। मां गोपंतिम्भि संविशन्तु। तन्मेऽनुंमतिरनुं मन्यताम्। तन्माता पृथिवी इन्द्रं विश्वां अवीवृधन्। स्मुद्रव्यंचस्क्रिःं। र्थीतंम॰ रथी्नाम्। वाजांना्॰ सविता सवेनं॥५६॥

र्तास्ता द्योः॥५७॥

तद्गावाणः सोम्मुतो मयोभुवंः। तदिश्विना श्रणुत १ सौभगा युवम्। अवं ते हेड

उदुंत्तमम्। एना व्याघ्नं पीरषस्वजानाः। सि॰्ह॰ हिंन्वन्ति महुते सौर्नगाय। समुद्रं

न सुहुवेन्तस्थिवाश्समौ। मर्मुज्यन्तै द्वीपिनंमफ्स्वेन्तः। उद्सावेतु सूर्यः। अदिदं मामकं वर्चः। उदिहि देव सूर्य। सह वृथुना ममे। अहं वाचो विवाचेनम्। मिय वागेस्तु धर्णीसः। यन्तुं नदयो वर्षेन्तु पूर्जन्यौः। सुपिप्पुला ओषंधयो भवन्तु। अन्नेवतामोद्नवंतामामिक्षेवताम्। एषाश्राश्तां भूयासम्॥५८॥

स्वृथायैं त्वा सुवेन द्यौः सूर्य सुप्त चं॥■

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

द्विनाम्री दोक्षा वृशिनी ह्युंग्रा। प्र केशाः सुवते काण्डिनो भवन्ति। तेषां ब्रह्मेदीश्रे वर्पनस्य नान्यः। आ रोह् प्रोष्टं विषेहस्व शत्रून्। अवासाग्दाक्षा वृशिनी ह्युंग्रा॥५९॥

देहि दक्षिणां प्रतिरम्बायुः। अथांमुच्यस्व वर्षणस्य पाशांत्। येनावंपथ्सविता क्षुरेणे। सोमंस्य राज्ञो वर्षणस्य विद्वान्। तेने ब्रह्माणो वपतेदम्स्योर्जेमम्। रय्या

तेभ्यों निधानं बहुधा व्यैच्छन्। अन्त्रा द्यावापृथिवी अपः सुवः। दर्भस्तम्बे

वर्चसा स॰ सुंजाथ। मा ते केशाननुं गाद्वर्चं पृतत्। तथां घाता केरोतु ते। तुम्यमिन्द्रो बृह्स्पतिः। सिविता वर्चे आदेधात्॥६०॥

वीर्यकृते निधाये। पौङ्स्येनेमं वर्चसा स॰ सुंजाथ। बले ते बाहुवोः सीवृता दंघातु। सोमेस्त्वाऽनकु पर्यसा घृतेने। स्रीषु रूपमीक्षेनैतत्रि धंतम्। पौङ्स्येनेमं

ये केशिनः प्रथमाः सुत्रमासंता येभिराभृतं यदिदं विरोचंते। तेभ्यों जुहोमि

बहुधा घृतेने। रायस्योषेगेमं वर्चसा स॰ सृजाथ। नर्ते ब्रह्मणस्तपंसो विमोकः।

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

350

वर्चमा स॰सुजाथ। यथ्मीमन्तृङ्गङ्गेतस्ते लिलेखं। यद्वां क्षुरः पीरववर्ज वपर्स्तो।

स्रोषु रूपमीक्षेनेतत्रि धंतम्। पौङ्स्येनेम॰ स॰ सुंजाथो वीर्येण॥६१॥

अवासाग्दीक्षा वृशिनी ह्युंग्राऽदंशाद्ववर्ज वपर्श् स्ते द्वे चं॥🕳

तमाऽहंग्त्। तेनायजता तेनैवासान्त॰ सङ्कर्तम्नं व्यंहन्। यद्यहन्। तिद्वेघनस्यं विघन्त्वम्। वि पाप्पानं भातृव्य॰ हते। य पृतेन् यजेते। य उं चैनमेवं वेदे॥६२॥

इन्<u>द</u>ं वै स्वाविशों मुरुतो नापोचायन्। सोऽनेपचाय्यमान पृतं विघनमेपश्यत्।

य॰ राजांनं विशो नाप्चायेयुः। यो वां ब्राह्मणस्तमंसा पाप्पना प्रावृतः स्यात्। स एतेनं यजेत। विघनेनैवैनीद्वेहत्ये। विशामाधिपत्यं गच्छति। तस्य द्वे द्वांदुशे

स्तोत्रे भवंतः। द्वे चंतुर्विर्शा औद्धियमेव तत्। एतद्वे क्षत्रस्यौद्धियम्। यदंस्मे

स्वाविशो बलि॰ हर्गन्ता।६३॥

हर्गन्त्यस्मे विशो बुलिम्। ऐनुमप्रीतिख्यातं गच्छति। य एवं वेदे। प्रबाहुग्वा

अग्रै क्षत्राण्यातेषुः। तेषामिन्द्रंः क्षत्राण्यादेता न वा इमानि क्षत्राण्यंभूवित्रिति।

351 तद्यथां हु वै संचित्रिणौ कध्नेकावुपाविहितौ स्याताम्। एवमेतौ युग्मन्तौ स्तोमौं। अयुक्षु स्तोमेषु क्रियेते। पाप्मनोऽपेहत्यै। अपं पाप्मानं भ्रातृंव्यश् हते। य एतेन यजेते। य उं चैनमेवं वेदं। तद्यथां हु वै सूतग्रामण्यः। एवं छन्दार्शसा स्तोबृहतीषु स्तुवते सृतो बृहन्। प्रजयां पशुभिरंसानीत्येव। व्यतिषक्ताभिः स्तुवते। व्यतिषक्ताभिः स्तुवते। व्यतिषक्ताभिः स्तुवते। व्यतिषक्ताभिः स्तुवते। व्यतिषक्तो। संजातैः। सजातैरवैनं व्यतिषज्जति। व्यतिषक्ताभिः स्तुवते। व्यतिषक्तो वे ग्रांमणीः संजातैः। सजातैरवैनं व्यतिषज्जति। व्यतिषक्ताभिः स्तुवते। व्यतिषक्तो वे पुरुषः पाप्मिभैः। व्यतिषक्ताभिर्वास्यं पाप्मनो नुदते॥ ६६॥ तत्रक्षेत्राणां नक्षत्रत्वम्। आ श्रेयेसो आतृष्यस्य तेजं इन्द्रियं देते। य पृतेन् यजेते तेष्वसावादित्यो बृहतीर्भ्यंदः॥६५॥ य उं चैनमेवं वेदं॥६४॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

त्रिवृद्यदाष्ट्रयोऽप्रिमुंखा ह्याख्रियदाष्ट्रेय आष्ट्रयो न वै सोमेंन यो वै सोमेंनेष गोस्बः सि॰्हेंऽभि प्रेहिं मित्रवर्धनः

वेद् हर्गन्त्येनमेवं वेदाम्यूढः पाप्मिभिरकं च॥===

[ン<u>※</u>]

352 प्रजापेतिस्ता ओंदुनं प्रजापेतिरकामयत बृहोर्भूयांनुगस्त्योस्या जरांस्सितष्ठा हरीं प्रजापेतिः पृश्रुन्त्याघ्रोऽयमुभिप्रेहिं वृत्रहन्तंमो त्रिबृद्धो वै सोमेनायुरिस बृहुर्भविति तिष्ठा हरीरथु आयं भौतु तेभ्यों निषान्॰ षट्थ्येष्टिः॥६६॥ ये केशिन इन्द्रं वा अष्टादेश॥१८॥ त्रिवृत्याप्मनो नुदते॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके सप्तमः प्रपाठकः समाप्तः॥

हरिः ओम्॥

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

## ॥तैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके अष्टमः प्रपाठकः॥

पीवाँत्रा १रयेकुधंः सुमेधाः। श्रेतः सिषक्ति नियुतामिभिश्रोः। ते बायवे समनसो

वितंस्थुः। विश्वेत्ररंः स्वपृत्यानि चक्रः। रायेऽनु यञ्जजतू रोदंसी उने। राये देवी घिषणां घाति देवम्। अघो वायुं नियुतः सश्चत् स्वाः। उत श्वेतं वर्सोधितित्रिरेके। आ वांयो प्र याभिः। प्र वायुमच्छां बृह्ती मंनीषा॥१॥

बृहद्रीयं विश्ववाराः रथुप्राम्। द्युतद्यांमा नियुतः पत्यंमानः। कृषिः

केविमियक्षसि प्रयज्यो। आ नो नियुद्धिः श्रातिनीभिरष्वरम्। सृहस्रिणीभिरुष याहि युजम्। बायौ अस्मिन् हुविषि मादयस्व। यूयं पांत स्वस्तिमिः सदां नः।

नों अस्तु॥२॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यः। विश्वां जातानि परि ता बेभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तं

वृयङ् स्यांम् पतेयो रयो्णाम्। र्योणां पतिं यज्तं बृहन्तम्। अस्मिन्गरे नृतेम्

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

वाजंसातौ। प्रजापेतिं प्रथमजामृतस्यं। यजांम देवमधि नो ब्रवीतु। प्रजापते त्वत्रिधिपाः पुंराणः। देवानां पिता जीनिता प्रजानाम्। पतिविश्वंस्य जगेतः परस्पाः। हविनो देव विह्वे जुषस्व। तवेमे लोकाः प्रदिशो दिशंश्व॥३॥

पुरावतो निवतं उद्वतंश्वा प्रजापते विश्वमुज्जीवधंन्य इदं नो देव। प्रतिहर्य

हृव्यम्। प्रजापीतें प्रथमं यज्ञियांनाम्। देवानामभे यज्तं यंजष्वम्। स नो ददातु द्रविण॰ सुवीर्यमी। रायस्पोषु विष्येतु नाभिमस्मे। यो राय ईशे शतदाय उक्थ्यंः।

यः पंशूनार् रस्थिता विष्ठितानाम्। प्रजापेतिः प्रथमजा ऋतस्ये॥४॥

सृहस्रोधामा जुषता४ हविनैः। सोमांपूषणेमौ देवौ। सोमांपूषणा रजेसो विमानमैं। सप्तर्वेऋ४ रथुमविश्वमिन्वम्। विषूवृतं मनेसा युज्यमानम्। तं जिन्वथो वृषणा् पञ्चरश्चिम्। दिव्येन्यः सदेनं चुक्त उचा। पृथिव्यामन्यो अध्यन्तरिक्षे।

अवंतु

धियं पूषा जिंन्वतु विश्वमिन्वः। रृथि॰ सोमो रयिपतिर्दधातु।

ताबुस्मभ्यं पुरुवारं पुरुक्षुम्। रायस्पोषं विष्यंतात्राभिमस्मे॥५॥

355 देव्यदितिरनर्वा। बृहद्वेदम विद्ये सुवीराः। विश्वान्यन्यो भुवेना जजाने। विश्वेमन्यो अभिचक्षाण एति। सोमांपूषणाववंतं धियं मे। युवभ्यां विश्वाः पृतेना जयेम। उदुन्तमं वेरुणास्तेश्राद्याम्। यक्किं चेदं कितवासंः। अवं ते हेड्स्तत्त्वां यामि। आदित्यानामवेसा न देक्षिणा। धारयेन्त आदित्यासंस्तिस्रो भूमीधिरयन्। अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

ते शुक्रासः शुचेयो रश्मिवन्तेः। सीदेत्रादित्या अधि बर्हिषि प्रिये। कामेन देवाः सुरधं दिवो नेः। आ याैन्तु युज्ञमुपं नो जुषाणाः। ते सूनवो अदितेः पीवसामिषम्। घृतं पिन्वत्प्रतिहर्यन्नृतेजाः। प्र यत्रिया यजमानाय येमुरे।

युज्ञो देवाना्॰ शुचिरपः॥६॥

मुनोषाऽस्तुं चृर्तस्यास्मे किंत्वासंश्रृत्वारिं च॥

आदित्याः कामं पितुमन्तेमस्मे। आ नेः पुत्रा अदितेर्यान्तु युज्ञम्। आदित्यासंः

थिभिदेवयानैः॥७॥

जुषन्ताम्। स्कुभायत्

घृतवन्त

दाशुषे स्त्रमन्तः। पुरोडाशं

अस्मे काम

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

वर्षद्वतिम्। जुषध्वं नो ह्व्यदांतिं यजत्राः। आदित्यान्काम्मवंसे हुवेम। ये भूतानि निर्ऋति॰ सेपुतामीतेम्। प्र रश्मिभिर्यतमाना अमुप्राः। आदित्याः काम् प्रयतां जनयंन्तो विचिख्युः। सीदंन्तु पुत्रा अदितेरुपस्थम्। स्तीर्णं बर्हिर्हिविरद्योय

देवाः॥८॥

स्तीणै बुर्हिः सीदता युज्ञे अस्मिन्। घाजाः सेधेन्तो अमीते दुरेबाम्। अस्मभ्यं

पुत्रा अदितेः प्र यर्श्सता आदित्याः कामं हविषों जुषाणाः। अग्ने नयं सुपथां राये अस्मान्। विश्वानि देव वृथुनानि विद्वान्। युयोध्यंस्मञ्जुहराणमेनेः। भूयिष्ठान्ते नमं उत्तिं विधेम। प्र वेः शुक्रायं भानवे भरष्वम्। हृव्यं मृतिं चाग्नये सुपूतम्॥९॥

हृष्युवाहंमर्तिं मानुषाणाम्। अग्ने त्वमस्मद्युयोध्यमीवाः। अनेग्नितां अन्यमन्त कृष्टीः। पुनंरस्मभ्यं सुवितायं देव। क्षां विश्वेभिर्जरेभिर्जजा१०॥

यो दैव्यांनि मानुषा जनूरषि। अन्तर्विश्वांनि विद्यना जिगांति। अच्छा गिरो मृतयो देव्यन्तीः। अभिं यन्ति द्रविणं भिक्षेमाणाः। सुस्नन्दशर् सुप्रतीकर्ष्ट स्वश्चम्।

अग्ने त्वं पांरया नव्यो अस्मान्। स्वस्तिमिरति दुर्गाणि विश्वा। पृक्षे पृथ्वी बंहुला ने उुर्वी। भवां तोकायु तनयायु शं योः। प्रकारवो मनना बच्यमानाः। अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

चित्रं वृषंण॰ रयिन्दाः। तवेदं विश्वमभितंः पशुव्यम्। यत्पश्यंसि चक्षंसा सूर्यंस्य। गवामसि गोपंतिरेके इन्द्र। मुक्षीमहि ते प्रयंतस्य वस्वंः। सिमेन्द्र णो मनेसा निष्

वृसूयवों वसुपते वसूनाम्। विद्या हि त्वा गोपंति॰ शूर् गोनाम्। अस्मभ्यं

द्वेब्द्रीचीं नयथ देव्यन्तेः। दृक्षिणा्वाङ्गाजिनी प्राच्येति। ह्विभर्नन्युग्नये घृताचीं।

इन्द्रं नरो युजे रथम्। ज्गुम्णाते दक्षिणमिन्द्र हस्तम्॥११॥

गोभिः। स॰ सूरिभिमधवन्थ्सङ् स्वस्त्या। सं ब्रह्मणा देवकृतं यदस्ति॥१२॥

आ वेथस्॰ स हि शुचिः। बृह्स्पतिः प्रथमं जार्यमानः। मृहो ज्योतिषः पर्मे

व्योमन्। सृप्तास्येस्तुविजातो रवेण। वि सृप्तरंश्मिरधमृतमारंसि॥१३॥

शम्बः पुरुहूत तेने। अस्मे घेहि यवमद्रोमंदिन्द्र। कृधीधियं जारेत्रे वार्जरताम्।

358 अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अत् | | | | आ नो दिवः पावीरवी। डुमा जुह्वांना यस्ते स्तनंः। सरंस्वत्यभि नो नेषि। ड्य॰ शुष्मेभिर्बिस्खा इंवारुजत्। सानु गिरीणान्तंविषेभिरूमिभिः। पारावद्घीमवेसे पुषः। पर्येबा बृह्स्पतिः समेजयुद्धसूनि। महो ब्रजान्गोमंतो देव सिषांसन्थ्सुव्रप्रतीत्तः। बृहस्पतिर्हन्त्यमित्रमकैः। बृहस्पते

मुग्रिक्तिभिः। सर्स्वतीमा विवासेम धीतिभिः॥१४॥

देव्यानैदेवाः सुपूरं यजत्र हस्तुमस्ति तमार्थस्यूमिभिद्धे चं॥🕳

सोमो धेनु सोमो अर्वन्तमाशुम्। सोमो बीरं केर्मण्यं ददातु। सादन्यं विद्ध्यः स् स्पेयम्। पितुः श्रवणं यो ददांशदस्मे। अषांढं युथ्सु त्व सोम कतुंभिः। या ते धामांनि हविषा यजन्ति। त्वमिमा ओषंधीः सोम् विश्वाः। त्वमुपो अंजनयुस्त्वङ्गः। त्वमातंतन्थोर्वन्तरिक्षम्। त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ॥१५॥

या ते धामांनि दिवि या पृथिव्याम्। या पर्वतेष्वोषधीष्वपस्। तेभिनों विश्वैः सुमना अहेडन्। राजैन्थ्सोम् प्रति हव्या गृभाय। विष्णोर्नुकं तदेस्य प्रियम्। प्र

359 अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

विचंकमे त्रिद्वः। आ ते मृहो यो जात एव। अभि गोत्राणि। आभिः स्मृथों मिथतीररिषण्यन्। अमित्रेस्य व्यथया मृन्युमिन्द्र। आभिविधां अभियुजो विष्वीः। तिद्विष्णुंः। पूरो मात्रेया तृनुवां कृथान। न ते महित्वमन्वेश्जुवन्ति। उुभे ते विद्य रजंसी पृथिव्या विष्णों देव त्वम्। प्रमस्यं विथ्से॥१६॥

आर्याय विशोवंतारीद्रांसींः। अयर शुष्वे अष् जयंत्रुत घन्। अयमुत प्र कृणुते

युधा गाः। यदा सन्यं कृणुते मन्युमिन्द्रः॥१७॥

विश्वं दृढं भेयत् एजंदस्मात्। अनुं स्वधामंक्षर्त्नापो अस्य। अवधेत् मध्य आ नाव्यांनाम्। सप्टीचीनेन मनंसा तमिन्द्र ओजिष्ठेन। हन्मंनाहत्रभिद्यन्। मरुत्वेन्तं वृष्भं वावृधानम्। अकेवारिं दिव्य शा्समिन्द्रम्। विश्वासाहमवेसे नूतेनाय। उुग्र थ

सेहोदामिह तर हुवेमा जनिष्ठा उुग्रः सहेसे तुरायं॥१८॥

म्न्द्र ओजिंधो बहुलाभिमानः। अवर्षेत्रिन्दं म्रुत्तिश्चेदत्रे। माता यद्दोरं

दुधनुद्धनिष्ठा। क्रेस्यावो मरुतः स्वृधाऽऽसीँत्। यन्मामेक ५ सुमर्धताहिहत्यै।

360 अहर् ह्यंग्रस्तविषस्तुविष्मान्। विश्वस्य शत्रोरनेमं वधुक्तेः। वृत्रस्ये त्वा श्वसथा रीषमाणाः। विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः। मृरुद्धिरिन्द्र सुख्यं ते अस्तु॥१९॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

बेभूवान्। अहमेता मनेवे विश्वश्चन्द्राः। सुगा अपश्चेकर् वज्जंबाहुः। स यो वृषा वृष्णियेभिः समोकाः। मृहो दिवः पृथिव्याश्चं सम्माट्। सतीनसेत्वा हव्यो भरेषु।

अथेमा विश्वाः पृतेना जयासि। वधौं बृत्रं मंरुत इन्द्रियेणं। स्वेन् भामेन तिषुषो

मुरुत्वाँ नो भवन्त्रिन्द्रं ऊती। इन्द्रों वृत्रमंतरद्वृत्रतूर्ये॥२०॥

अुनाधुष्यो मुघवा शूरु इन्द्रः। अन्वेनुं विशो अमदन्त पूर्वीः। अृय॰ राजा

जगेतश्वर्षणीनाम्। स एव वीरः स उं वीयांवान्। स एंकराजो जगेतः परस्पाः। युदा वृत्रमतंर्च्छूर् इन्द्रं। अथोभवद्दमिताभिक्तूनाम्। इन्द्रों युज्ञं वर्धयेन्विश्ववेदाः।

युरोडाशंस्य जुषता\* हविनेः। वृत्रं तीत्वी दांनुवं वज्नेबाहुः॥२१॥

दिशोऽद्दरहद्दुरहिता द्दरहेणेन। इमं युज्ञं वर्धयेन्विश्ववेदाः। पुरोडाशुं प्रति गुम्णालिन्द्रः। युदा वृत्रमतेरुच्छुर् इन्द्रः। अथैकराजो अभव्जनानाम्। इन्द्रो

361 देवाञ्छंम्बर्हत्यं आवत्। इन्द्रौ देवानांमभवत्पुरोगाः। इन्द्रौ युज्ञे हुविषां

वाकुषानः। कुत्रतूर्नो अर्भयुष्ट् शर्म यश्सत्। यः सृप्त सिन्धुष्ट् रदेधात्पुर्थिव्याम्। यः

सप्त लोकानकृणोद्दिशंश्व। इन्द्रो ह्विष्मान्थ्सगंणो म्रुद्धः। बृत्रतूर्नो युज्ञमिहोपं

वृव्धे विथ्म इन्द्रंस्तुरायांस्तु वृत्रतूर्ये वज्रंबाहुः पृथियात्रीणि च॥🕳 यासत्॥२२॥

इन्द्रस्तरंस्वानमिमातिहोग्रः। हिरंण्यवाशीरिषि्रः सुंवर्षाः। तस्यं व्य॰ सुमृतौ

हुत्वाभिमांतीः पृतेनाः सहंस्वान्। अथाभंयं कृणुहि विश्वतो नः। स्तुहि शूरं

नः। इन्द्रङ्रं स्तुहि वृज्जिण्ड् स्तोमपृष्ठम्। पुरोडाशंस्य जुषता॰ हविनेः॥२३॥

<u>बिञ्जणमप्रेतीत्तम्। अभिमातिहनं पुरुहृतमिन्द्रम</u>ं। य एक् इच्छुतपे<u>ति</u>जीनेषु।

-पृतेनासु जिष्णुः। स नः शर्म त्रिवर्रूथं वि यर्ष्सत्। यूयं पांत स्वस्तिमिः सदां युजियेस्य। अपि भूद्रे सौमन्से स्याम। हिरंण्यवर्णो अभयं कृणोतु। अभिमातिहेन्द्रः

362 तस्मा इन्द्रांय ह्विरा जुहोता इन्द्रों देवानांमधिपाः पुरोहिंतः। दिशां तिरम्बद्वाजिनीवान्। अमिमातिहा तिवृषस्तुविष्मान्। अस्मभ्यं चित्रं अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २) ायेन्दांत्॥ २४॥

य ड्रमे द्यावापृथिवी महित्वा। बलेनाद्दंहदभिमातिहेन्द्रं। स नो हुविः प्रति -गुम्णातु रातयै। देवानाँ देवो निधिपा नो अव्यात्। अनेवस्ते रथं वृष्णे यत्तै। इन्द्रंस्य नु वीर्याण्यहन्नहिमैं। इन्द्रो यातोऽवीसितस्य राजाँ। शमंस्य च श्रृङ्गिणो वज्नेबाहुः। सेदु राजाँ क्षेति चर्षणीनाम्। अरात्र नेमिः परि ता बेमूव॥२५॥

अपि सिष्मो अजिगादस्य शत्रून्। वितिग्मेन वृष्भेणा पुरोभेत्। सं वञ्जेणासुजद्दुत्रमिन्द्रः। प्र स्वां मतिमतिर्च्छाशंदानः। विष्णुं देवं वर्रुणमूतये भगमै। मेदंसा देवा वपयो यजष्वम्। ता नो यज्ञमागंतं विश्वघेना। प्रजावंदस्मे द्रविणेह धेतम्। मेदंसा देवा वपयो यजष्वम्। विष्णुं च देवं वर्षणं च गृतिम्॥२६॥ ता नो अमीवा अपु बाधेमानौ। इमं युज्ञं जुषमाणाबुपेतमैं। विष्णूवरुणा 363 रक्षसंश्वा अथोधत् यजीमानाय शं योः। अ<u>र्</u>होमुचो वृष्भा सुप्रतूँतीं। देवानाँ देवतेमा शिचेष्ठा। विष्णूवरुणा प्रतिहर्यतत्रः। इदं नरा प्रयेतमूतये हिविः। मही नु विष्णूवरुणावभिशस्तिपावाम्। देवा यंजन्त हविषां घृतेनं। अपामीवा॰ सेधत॰ यथ्सीं वरिष्ठे बृहती विमिन्वन्। नृवज्द्योक्षा पंप्रथानेभिरेवैंः। प्रपूर्वेजे पितरा नव्यंसीभिः। गीभिः कृणुष्व्र्र् सदेने ऋतस्यं। आ नौं द्यावापृथिवीं दैव्येन। जनेन ज्योतिषाऽर्रातीर्दहतन्तमार्शसा ययोरोजंसा स्कमिता रजारंसि। बीर्येभिर्वीरतमा यातं महि वां वर्कथम्। स इथ्स्वपा भुवेनेष्वास। य इमे द्यावोपृथिवी जजाने। <u>उ</u>वीं गंभीरे रजंसी सुमेकै। अवश्शे धीरः शच्या समैरत्॥२९॥ युवमध्वरायं नः। विशे जनाय मिहे शर्म यच्छतम्। दोर्घप्रयञ्जू हिविषां वृषाना। शविष्ठा। याऽपत्ये ते अप्रतीता सहोभिः। विष्णू अगुन्वरुणा पूर्वहूतो॥२७॥ -ट्यावोपुथिवी इह ज्येष्टें। क्चा भेवता॰ शुचयद्भिर्कैः॥२८॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

भूरिं द्वे अचेरन्ती चरेन्तम्। पृद्धन्तं गर्भमपदीदधाते। नित्यं न सूनुं पित्रोरुपस्थैं।

तं पिंपृत॰ रोदसी सत्युवाचम्। इदं द्यांवापृथिवी सृत्यमंस्तु। पितृमतिर्यदिहोपं बुवे वाम्। भूतं देवानांमवमे अवोंमिः। विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्। उवीं पृथ्वी

364

रक्षेतं पृथिवी नो अभ्वात्। या जाता ओषंययोऽति विश्वाः परिष्ठाः। या ओषंधयः बंहुले दूरे अन्ते। उप ब्रुबे नमंसा युज्ञे अस्मिन्। दर्षाते ये सुभगे सुप्रतूर्ती। द्याबा सोमंराज्ञीरश्वावृती सोमवृतीम्। ओषंधीरितिं मातरोऽन्या वो अन्यामंवतु॥३०॥

<u>∞</u>

ह्विनों दाद्धभूव रातिं पूर्वहूंतावुकैरैंरद्मिन्पश्चं च॥🕳

शुचिं नु स्तोम्ङ् श्वर्थहृत्रम्। उमा वामिन्द्राग्नी प्र चंर्षाणेभ्यंः। आ वृत्रहणा गोभिविप्रंः। ब्रह्मेणस्पते त्वमस्य यन्ता। सूक्तस्यं बोधि तनंयं च जिन्व। विश्वं तद्धद्रं यद्वनितं देवाः। बृहद्वेदेम विद्धं सुवीराः। स ईं सत्येभिः सखिभिः शुचद्धिः। गोधायस् विधन्सैरंतर्दत्। ब्रह्मेण्स्पतिवृषिभिर्वराहैः॥३१॥

घर्मस्वेदिभिद्रिविणं व्यानट्। ब्रह्मणस्पतेरभवद्यथावशम्। सृत्यो मन्युर्मिहि कर्मा करिष्युतः। यो गा उदाज्रथ्स दिवे वि चाेभजत्। मृहीवे रीतिः शवेसा सर्त्पुथेक्।

365

इन्यांनो अभिं वेनवद्वनुष्युतः। कृतब्रह्मा शूशुवद्रातहंष्यु इत्। जातेनं जातमितिसृत्प सृৼेसते। यं युजं कृणुते ब्रह्मणम्यतिः। ब्रह्मणस्यते सुयमेस्य विश्वहाँ॥३२॥

ग्यः स्यांम ग्थ्यो विवस्वतः। वोरेषु वी्रा॰ उपेपृष्टि न्स्त्वम्। यदीशांनो अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

स्अक्षाणो भुवेना देव ईयते। शुची वो ह्व्या मेरुतः शुचीनाम्।

- <u>५८</u> - <u>५८</u> - ७/ ब्रह्मणा वेषि मे हवमै। स इज्जनेन स विशा स जन्मेना। स पुत्रेवजिं भरते धना नृभिः। देवानां यः पितरेमा विवासति। श्रद्धामेना हविषा ब्रह्मणस्पतिमै। यास्ते पूष्त्रावों अन्तः। शुक्रं ते अन्यत्पूषेमा आशाः। प्रपंथे प्थामेजनिष्ट पूषा॥३३॥ प्रपंथे दिवः प्रपंथे पृथिव्याः। उमे अभि प्रियतंमे सपस्थै। आ च परां च चरति प्रजानन्। पूषा सुबन्धुर्दिव आ पृथिव्याः। इडस्पतिर्मेघवां दस्मवंचाः। तं देवासो अदंदुः सूर्यायै। कामेन कृतं तवसङ् स्वश्चम्। अजाऽर्थः पशुपा वाजंबस्त्यः। हिनोम्यष्वर् शुचिभ्यः। ऋतेनं सृत्यमृत्सापं आयन्। शुचिजन्मानः पियं जिन्नो विश्वे भुवेने अपितः। अष्ट्रां पूषा शिथिरामुद्वरीवृजत्॥३४॥

366 ुरं मुरुतो रामयन्ति। डुमे सहुः सहेस् आ नेमन्ति। डुमे श्राश्संबनुष्युतो नि पौन्ति॥३६॥ पावकाः। प्र चित्रमकै गृंणते तुराये। मारुताय स्वतंवसे भरष्वम्। ये सहार्शस् सहंसा सहंन्ते। रेजेते अग्ने पृथिवी मृखेन्यः। अश्सेष्वा मेरुतः खादयो वः॥३५॥ वक्षंः सुरूक्मा उपं शिश्रियाणाः। वि विद्युतो न वृष्टिभी रुचानाः। अनु स्वधामायुषेयेच्छ्रेमानाः। या वः शर्मे शशमानाय सन्ति। त्रिधातूनि दाशुषे यच्छुताधि। अस्मभ्यं तानि मरुतो वियन्त। रृयिं नो धत्त बृषणः सुवीरमै। इमे अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

पृश्जैः पुत्रा उंपमासो रभिष्ठाः। स्वयां मृत्या मुरुतः सं मिमिक्षः। अनु ते दायि मृह इन्द्रियाये। सूत्रा ते विश्वमनु वृत्रहत्ये। अनु क्षत्रमनु सहो यजत्र। इन्द्रे देवेभिरनु ते नृषद्यै। य इन्द्र शुष्मो मघवन्ते अस्ति॥३७॥ गुुरुद्वेषो अरंरुषे दधन्ति। अरा इवेदचंरमा अहेव। प्रप्नं जायन्ते अकेवा महोभिः।

शिक्षा सिकिंग्यः पुरुहूत नुभ्यः। त्व ९ हि हुढा मेघवन्विचेताः। अपोवृष्टि परिवृतिं

न राघेः। इन्द्रो राजा जगंतश्चर्षणीनाम्। अधिक्षमि विषुरूपं यदस्ति। ततो ददातु दा्शुषे वसीना चोद्द्राष् उपेस्तुतिश्चिद्वकि। तमुष्टहि यो अभिभूत्योजाः। व-वत्रवातः पुरुहूत इन्द्रः। अषांढमुग्र∜ सहेमानमाभिः॥३८॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

गीर्भिर्वर्ध वृष्मं चंर्षणीनाम्। स्थूरस्यं रायो बृंहतो य ईश्रौ। तमुं ष्टवाम विद्येष्विन्द्रम्। यो वायुना जयेति गोमंतीषु। प्र धृष्णुया नयिति वस्यो अच्छे। आ ते

शुष्मों वृष्भ एंतु पृक्षात्। ओत्त्रादंध्रागा पुरस्तात्। आ विश्वतो अभिसमैत्ववीङ्। वृराहें|वेश्वहाऽजनिष्ट पूषोद्वरीवृजल्बादयों वः पान्त्यस्त्यामिर्नवं च॥━ इन्द्रं द्युम् सुवर्वेष्द्रह्यस्मे॥३९॥

पुरूणि। निवेशयं च प्रसुवं च भूमे। अभीवृतं कृशनैविश्वरूपम्। हिरंण्यशम्यं यजतो बृहन्तम्। आस्थाद्रथरं सविता चित्रमोनुः। कृष्णा रजारंसि तविषों दर्यानः। सर्घा नो देवः सीविता स्वाये। आ साविष्द्वसुपितिर्वसूनि॥४०॥ आ देवो यांतु सविता सुरलेः। अन्तरिक्षप्रा वहमानो अर्थैः। हस्ते दर्यानो नर्या

368 अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

उपस्थे विश्वा भुवेनानि तस्युः। वि सुपर्णो अन्तरिक्षाण्यख्यत्। गुभीरवेपा असुरः सुनी्थः। क्रेदानी्॰ सूर्येः कश्चिकेत। कृतमान्द्वा॰ र्शिमर्स्या तेतान॥४१॥ विजनाञ्छावाः शितिपादो अख्यन्। रथु॰ हिरंण्यप्रउग् वहंन्तः। शश्वदिशंः सवितुर्देव्यंस्य विश्रयंमाणो अमीतिमुरूचीम्। मृत्भोजंनुमधंरासतेन।

भगं धियं वाजयंन्तः पुरंन्धिम्। नराश्वाश्मो ग्रास्पतिनो अव्यात्। आ ये वामस्यं सङ्ग्रथं रंशोणाम्। प्रिया देवस्यं सिवेतुः स्यांम। आ नो विश्वे अस्क्रांगमन्तु देवाः। मित्रो अर्थमा वरुणः मजोषाः। भुवन् यथां नो विश्वे वृधासः। करंन्थ्युषाहां विथुरं न शवेः। शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु। शश्स् सरंस्वती सह धीमिरंस्तु॥४२॥

शर्माभेषाचः शमुं रातिषाचेः। शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः। ये सीवेतुः सृत्यसेवस्य विश्वै। मित्रस्यं व्रते वर्षणस्य देवाः। ते सौमेगं वीरवद्गोम्दप्रेः। दर्षातन्

द्रविणं चित्रम्स्मे। अग्ने याहि दूत्यं वारिषेण्यः। देवार अच्छा" ब्रह्मकृतां गुणेने। सर्स्वतीं मुरुतो अस्थिनापः। यृष्टि देवात्रंबरेयांय विश्वान्॥४३॥ 369 ये अन्तरिक्षे य उप द्यावे छ। ये अग्निजिह्या उत वा यजंत्राः। आसद्यास्मिन्बर्हिषि द्योः पिंतः पृथिवि मात्रधूंक्। अभ्रै भातर्वसवो मृडतां नः। विश्वं आदित्या अदिते स्जोषौः। अस्मभ्यु॰ शर्म बहुलं वि यंन्ता विश्वे देवाः श्रुणुतेम॰ हवं मे। अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अस्माक् ब्रह्म पृतेनासु सह्या अस्माकम्। बृष्टिर्दिव्या सुपारा। युवं वस्नाणि

पीवसा वेसाथे। युवोरच्छिंद्रा मन्तेवो ह सर्गाः। अवांतिरतमनेतानि विश्वा। ऋतेने

-मित्रावरुणा सचेथे। तथ्सु वाँ मित्रावरुणा महित्वम्। ईमा तस्थुषीरहीभिर्दुहो। विश्वाः पिन्वथ् स्वसंरस्य धेनाः। अनु वामेकेः प्विरा वेवर्ति॥४५॥

यद्व रहिष्टुत्राति विदे सुदानू। अच्छिद्र ् शर्म भुवेनस्य गोपा। ततो नो मित्रावरुणाववीष्टम्। सिषांसन्तो जीगिवार्सः स्याम। आ नो मित्रावरुणा

ह्व्यदांतिम्। घृतेर्गव्यूतिमुक्षत्मिडांभिः। प्रतिं वामत्र वर्मा जनाय। पृणीतमुद्रो मादयध्वम्। आ वाँ मित्रावरुणा हुव्यजुष्टिम्। नमेसा देवाववेसाऽऽववृत्याम्॥४४॥ दिव्यस्य चारोः। प्र बाहवां सिसृतं जीवसे नः। आ नो गर्व्यातिमुक्षतं घृतेनं॥४६॥ 370

आ नो जने अवयतं युवाना। श्रुतं में मित्रावरुणा हवेमा। इमा मेषज्ञीमेः। व्यक्मद्वेषो वितरं व्य॰्हेः। व्यमीवाङ्श्रातयस्वा विषूचीः॥४७॥ स्थिरधेन्वने गिरं। क्षिप्रेषेवे देवायं स्वधाम्ने। अषांढाय सहंमानाय तिग्मायुधाय भरता शृणोतेन। त्वादंतेभी रुद्र शन्तंमेभिः। शृत<sup>६</sup> हिमा अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अर्हन्बिभर्षि मा नंस्तोके। आ ते पितर्मरुता॰ सुम्रमेतु। मा नः सूर्यस्य

सुन्हशों युयोथाः। अभि नों वोरो अवीत क्षमेत। प्र जायेमहि रुद्र प्रजाभिः। एवा बेओ वृषभ चेकितान। यथां देव न हंणीषे न हर्भां। हावनुश्रूनों रुद्रह बोंधि। बृहद्वंदेम विद्धे सुवीराः। परि णो रुद्रस्यं हेतिः स्तुहि श्रुतम्। मीदुष्टमार्हिन्बेभर्षि। बसूनि ततानास्तु विश्वानं ववृत्यां ववतिं घृतेन् विधूंचीः श्रुतन्द्वे चं॥■ त्वमंग्ने कृद्र आ वो राजानम्॥४८॥

सूयों देवीमुषस्॰ रोचमानामर्यः। न योषांम्भ्येति पृश्चात्। यत्रा नरो देव्यन्तों

युगानि। वितन्वते प्रति भृदायं भृदम्। भृदा अश्वां हरितः सूर्यस्य। वित्रा एदंग्वा

371

अनुमाद्यांसः। नुमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमंस्थुः। परि द्यावांपृथिवी यन्ति सृद्यः।

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

वरुणस्यामिचक्षौ। सूयौं रूपं कृणुते द्योरुपस्थै। अनुन्तमन्यद्वशंदस्य पाजेः। कृष्णमन्यद्वरितः सं भंरन्ति। अद्या देवा उदिता सूर्यस्य। निर॰हंसः पिपृतात्रिरंबद्यात्। तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम्। अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत

दिवो रूक्म उंरुचक्षा उदेति। दूरे अर्थस्तरणिर्आजमानः। नूनं जनाः सूर्येण

द्योः॥५०॥

प्रसूताः। आयत्रर्थानि कृणवृत्रपार्सिः। शं नो भव चक्षेसा शं नो अह्नाँ। शं भानुना शरू हिमा शं घृणेने। यथा शम्से शमसंदुरोणे। तथ्सूँर्य द्रविणं धेहि चित्रम्।

यदेदधुंक हरितेः सधस्थौत्। आद्रात्री वासंस्तनुते सिमस्मै। तिमित्रस्य

तथ्सूर्यस्य देवृत्वं तन्मंहित्वम्। मृध्या कर्तोवितंतुर् सञ्जेभार॥४९॥

<u>त्र</u>

आप्रा द्यावोपृथिवी अन्तरिक्षम्। सूर्यं आत्मा जगंतस्तुस्थुषेक्षा

चित्रं देवानामुदंगादनीकम्। चक्षुर्मित्रस्य वर्तणस्याग्रेः॥५१॥

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

युवतयो बिभेर्तम्। तिग्मानीकर्ङ् स्वयंशसं जनेषु। विरोचमानं परिषीत्रयन्ति। आविष्टो वर्धते वार्ररासु। जिह्यानामूर्घस्वयंशा उपस्थे॥५२॥

उमे त्वध्धिकिम्यतुर्जायमानात्। प्रतीची सि॰हं प्रतिजोषयेते। मित्रो जनाम्म स मित्र। अयं मित्रो नेमस्येः सुशेवेः। राजां सुक्षत्रो अंजनिष्ट वेधाः। तस्ये वयः सुमतौ यजियेस्य। अपि भद्रे सौमनसे स्याम। अनमीवास इडंया मदंन्तः। मितज्मेवो विरेमत्रा पृथिव्याः। आदित्यस्यं वृतमुपक्ष्यन्तंः॥५३॥

वयं मित्रस्यं सुमतौ स्यामा मित्रं न ई॰ शिम्या गोषुं गव्यवंत्। स्वाधियों विद्धे अपस्वजीजनन्। अरेजयता॰ रोदंसी पाजंसा गिरा। प्रति प्रियं येजतं

ब्रोड -

ह्यू इस्

प्विभीरुवानः।

घृतवतीनेः

वृषाभयात्वर्षैः।

हिंरण्ययो

बद्धधानः॥५४॥

द्युत्तत्र्रेस्तुरीपम्। त्वष्टो वीरं पिशङ्गरूषः। दशेमन्त्वष्टुर्जनयन्त गर्भम्। अतेन्द्रासो

नृपतिर्वाजिनीवान्। स पंप्रथानो अभि पञ्च भूमे। त्रिवन्युरो मन्सायांतु युक्तः। विश्रो येन गच्छंथो देवयन्तीः। कुत्रां चिद्यामंमिश्वेना दर्याना। स्वश्वां युश्साऽऽयांतमुर्वाक्। दस्रां निधिं मधुमन्तं पिबाथः। वि वार् रथो वष्वां अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

यादमानः॥५५॥

अन्तां दिवो बांधते वर्तीनेभ्यांम्। युवोः श्रियं परि योषांवृणीत। सूरो दुहिता परितिकेमयायाम्। यद्देवयन्तमवंथः शचींभिः। परिष्ठार सवां मनांवां वयोगाम्। यो हस्यवार् रिथरावस्ते उसाः। रथों युजानः परियाति वृतिः। तेने नः शं योरुषसो ब्युष्टो। न्यांश्वेना वहतं यज्ञे अस्मिन्। युवं भुज्युमवंविद्धः समुद्रे॥५६॥

पारयेन्ता। अग्नीषोमा यो अद्य वाम्। इदं वचेः सप्यीते। तस्मै घत्तः सुवीयम्। गवां पोष्ड् स्विश्चियम्। यो अग्नीषोमां हविषां सप्यीत्। देवद्रीचा मनेसा यो घृतेने। तस्ये व्रतः रक्षतं पातमःहंसः॥५७॥

उदूहथुरर्णसो अस्त्रिधानैः। प्तात्रिभिरश्रमैरंत्याथिभिः। द्र्सनाभिरिधिना

विशे जनांय महि शर्म यच्छतम्। अग्नीषोमा य आदीतम्। यो बां दाशाँखुविष्कृतिम्। स प्रजयां सुवीर्यम्। विश्वमायुर्व्यंश्जवत्। अग्नीषोमा चेति तद्वोर्षं वाम्। यदमुष्णीतमवसं पृणिङ्गोः। अवातिरतं प्रथयस्य शेषेः। अविन्दतं ज्योतिरेकं बृहुम्यंः। अग्नीषोमाविम स् मेऽग्नीषोमा ह्रिवषः प्रस्थितस्य॥५८॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

जुमार द्योर्भ्रेरुपस्थं उपक्ष्यन्तों बद्वर्थानो वृष्वां यादेमानः समुद्रेऽ४हेसः प्रस्थितस्य॥■

अहमेस्मि प्रथमुजा ऋतस्ये। पूर्वं देवेभ्यों अमृतंस्य नाभिः। यो मा ददांति स इदेव माऽऽवाः। अहमन्नमन्नमदन्तंमद्द्या पूर्वमग्नेरपि दहत्यन्नम्। युत्तो हांसाते अहमुत्त्रेषु। व्यात्तेमस्य पृशवंः सुजम्मम्। पश्येन्ति धीराः प्रवेरन्ति पाकाः। जहाँम्युन्यत्र जंहाम्युन्यम्। अहमत्रं वशामिचंरामि॥५९॥

समानमर्थं पर्येमि भुअत्। को मामत्रं मनुष्यों दयेत। परांके अत्रं निहिंतं लोक एतत्। विश्वेद्वेः पितुभिगुपमत्रम्। यद्दतें लुप्यते यत्पेगेप्यते। शृतत्मी

375 सा तुनूमें बभूव। मृहान्तौ चुरू संकृदुग्धेनं पप्रौ। दिवं च पृश्चितं पृथिवीं चं अत्रं प्राणमत्रेमपानमोहः। अत्रं मृत्युं तमुं जीवातुमाहः। अत्रं ब्रह्माणो ज्रसं बदन्ति। अत्रमाहः प्रजनेनं प्रजानामा मोघमत्रं विन्दते अप्रेचेताः। सृत्यं ब्रेबीमि व्य इथ्स तस्ये। नार्यमणं पुष्येति नो सखायम्। केवेलाघो भवति केवलादी। अहर सद्मुतो भवामि। मदोदित्या अधि सर्वे तपन्ति। देवीं वार्चमजनयन्त एकाँक्षरां द्विपदार् षद्देदां च। वाचें देवा उपे जीवन्ति विश्वै। वाचें देवा उपे जीवन्ति विश्वै। वाचें गन्यवीः पृशवों मनुष्याः। वाचीमा विश्वा भुवेनान्यपिता॥६२॥ यद्वाग्वदंन्ती। अनुन्तामन्तादिषे निर्मितां मृहीम्। यस्यां देवा अंदधुर्मोजनानि। साकम्। तथ्सम्पिबन्तो न मिनन्ति वृषसंः। नैतद्भयो भविति नो कनीयः॥६०॥ अहं मेघः स्तनयन्वर्षेत्रस्मि। मामेदन्यहमेक्यन्यान्॥६१॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

प्रथम्जा ऋतस्यं। वेदानां माता-सा नो हवं जुषतामिन्द्रंपत्नी। वागुक्षरं

376 ऽमृतंस्य नाभिः। सा नौ जुषाणोपं युज्ञमागौत्। अवंन्ती देवी सुहवां मे अस्तु अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

यामुषेयो मञ्रकृतो मनीषिणेः। अन्वैच्छं देवास्तपंसा श्रमेण। तान्देवीं वाच १ हविषां यजामहे। सा नो दघातु सुकृतस्यं लोके। चुत्वारि वाक्परिमिता प्दानि॥६३॥

तानि विदुब्राह्मणा ये मेनीषिणंः। गुहा त्रीणि निहिता नेक्षंयिता। तुरीयं वाचो मेनुष्यां वदन्ति। श्रद्धयाऽग्निः समिध्यते। श्रद्धयां विन्दते हविः। श्रद्धां भगंस्य मूर्धीने। वचसा वेदयामिसि। प्रियङ् श्रंद्धे ददंतः। प्रियङ् श्रंद्धे दिदांसतः। प्रियं भोजेषु यज्वसा।६४॥

इदं में उदितं कृषि। यथां देवा असुरेषु। श्रुद्धामुग्रेषुं चिन्नेरे। एवं भोजेषु यज्वेसु। अस्माकेमुदितं कृषि। श्रुद्धां देवा यजमानाः। वायुगोपा उपासते। श्रुद्धार

हंद्य्यंयाऽऽकूत्या। श्रद्धयां ह्यते ह्विः। श्रद्धां प्रातर्हेवामहे॥६५॥

श्रुद्धां मुष्यन्दिनं परि। श्रुद्धा॰ सूर्यस्य निम्रुचि। श्रद्धे श्रद्धांपयेह मा। श्रुद्धा देवानिधे वस्ते। श्रुद्धा विश्वमिदं जगेत्। श्रुद्धां कामेस्य मातरमा। हविषां

सतश्च योनिमसंतश्च विवेः। पिता विराजांमुषुमो रंयोणाम्। अन्तरिक्षं विश्वरूप् आविवेश। तम्कैर्भ्यंचीन्ते वृथ्सम्। ब्रह्म सन्तं ब्रह्मणा वर्धयन्तः।

बुप्नियां उप मा अंस्य विष्ठाः॥६६॥

ब्रह्मं देवानेजनयत्। ब्रह्म विश्वमिदं जगेत्। ब्रह्मेणः क्षत्रं निर्मितम्। ब्रह्मं ब्राह्मण आत्मना। अन्तरंस्मित्रिमे लोकाः॥६७॥

अन्तर्विर्धामिदं जगेत्। ब्रह्मेव भूतानां ज्येष्ठम्। तेन कोऽर्हाते स्पर्धितुम्। ब्रह्मेन्देवास्त्रयेस्त्रिश्यत्। ब्रह्मेत्रिन्द्रप्रजापृती। ब्रह्मेन् ह् विश्वां भूतानि। नावीवान्तः सुमाहिता। चतेस्र आशाः प्रचेरन्त्वग्रयेः। हुमं नो युज्ञं नेयतु प्रजानन्। घृतं

ब्रह्मं समिद्धंबत्याहुतीनाम्। आ गावौ अग्मत्रुत भ्द्रमंक्रन्। सीदंन्तु गोष्ठे रणयेन्त्वस्मे। प्रजावेतीः पुरुरूपां इह स्युः। इन्द्रांय पूर्वीरूषसो दुहानाः। इन्द्रो

निन्वेत्रजर ५ सुवीरम्॥६८॥

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

377

वर्धयामसि। ब्रह्मं जज्ञानं प्रंथुमं पुरस्तात्। वि सीमृतः सुरुचों वेन आंवः। स

378 यज्बेने पृण्ते चे शिक्षति। उपेद्देदाति न स्वं मुंषायति। भूयोभूयो ग्यिमिदेस्य वर्धयन्। अभिन्ने खिक्ने नि देथाति देव्युम्। न ता नंशन्ति न ता अर्वा॥६९॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

गावो भगो गाव इन्द्रों मे अच्छात्। गावः सोमंस्य प्रथमस्यं भक्षः। इमा या गावः सजनास इन्द्रेः। इच्छामीखृदा मनंसा चिदिन्द्रम्। यूयं गांवो मेदयथा कुशं चित्। अश्वीतं चित्कृणुथा सुप्रतीकम्। भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचः। बृहद्दो वयं

उच्यते सुभासु। प्रजावितीः सूयवेस॰ रिशन्तीः। शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः। मा वेः स्तेन ईशत् माऽघश्रारंसः। परि वो हेती क्द्रस्यं वृज्यात्। उपेदमुंपपर्चनम्।

आसु गोषूपंपृच्यताम्। उपंर्षुभस्य रेतिसि। उपैन्द्र तवं वीर्यै॥७०॥ चुरामि कनीयोऽन्यानर्पिता पुदानि यज्बेसु हवामहे विष्ठा लोुकाः सुवीर्मर्वा पिबेन्तोः षद्दी॥━

ता सूर्याचन्द्रमसां विश्वभृत्तमा मृहत्। तेजो वसुमद्राजतो दिवि। सामौत्मान

चरतः सामचारिणां। ययोर्वेतं न ममे जातुं देवयोंः। उभावन्ते परि यात अम्यां। दिवो न रृश्मीङ्स्तेनुतो व्यर्णेवे। उमा भुवन्ती भुवेना कृविक्रेत्। सूर्यो न चन्द्रा चेरतो

379

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

विश्ववांरा वरिवोभा वरैण्या। ता नोऽवतं मतिमन्ता महिंव्रता। विश्ववपंरी प्रतरंणा तर्न्ता। सुवर्विदां दृशये भूरिंरश्मी। सूर्या हि चन्द्रा वसुं त्वेषदंर्शता। मनस्विनोभानुंचर्तोनु सन्दिवम्। अस्य श्रवों नद्यः सप्त बिश्रति। द्यावा क्षामां पृथिवी दंर्श्यतं वपुः। अस्मे सूर्याचन्द्रमसांऽभिचक्षां श्रद्धकिमिन्द्र चरतो हतामंती। पती द्युमद्रिश्वविदां उुभा दिवः। सूर्यां उुभा चुन्द्रमंसा विचक्षणा॥७१॥

राजा। यासां देवाः शिवेनं मा चक्षुषा पश्यत। आपो भद्रा आदित्पंश्यामि। नासंदासीन्नो सदोसीन्दानीम्। नासीद्रजो नो व्योमा पुरो यत्। किमावेरीवः कुह्

पूर्वाप्रं चेरतो माययेतो। शिश्रू कीडेन्तो परि यातो अध्वरम्। विश्वान्यन्यो भुवेनाऽभि चष्टै। ऋतूनन्यो विदधेज्ञायते पुनः। हिरंण्यवर्णाः शुचयः पावका यासार

विचर्तुरम्॥७२॥

श्री अ

गर्भोरम्। न मृत्युरमृतं तर्हे न। रात्रिया

अम्भः किमासीद्रहनं

कस्य शर्मन्॥७३॥

तमे आसीत्तमंसा गूढमग्रै प्रकेतम्। सृष्ठिल॰ सर्वमा इदम्। तुच्छेनाभ्वपिहितं यदासीत्। तमेसुस्तन्मेहिना जायतैकम्। कामुस्तदग्रे समेवर्तताघे॥७४॥ आसीत्प्रकेतः। आनीदवातङ् स्वधया तदेकम्। तस्माद्धान्यं न परः किश्चनासं अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

मनेसो रेतः प्रथमं यदासीत्। सृतो बन्धुमसीते निरंविन्दन्। हृदि प्रतीष्यां कृवयों

मनीषा। तिरक्षीनो वितेतो र्यथेमरेषाम्। जुधः स्विदासी(३)दुर्पोरं स्विदासी(३)त्। रेतोषा आंसन्महिमाने आसन्। स्वधा अवस्तात्प्रयीतः प्रस्तात्। को अद्धा वेद क इह प्र वोवत्। कुत आजाता कुतं हुयं विसृष्टिः। अवग्दिवा अस्य

अथा को वेद यते आबभूवे। इयं विसृष्टियंते आबभूवे। यदि वा दुधे यदि वा न। यो अस्याध्येक्षः परमे व्योमन्। सो अङ्ग वेद यदि वा न वेदे। किश्स्विद्वनङ्ग उ स वृक्ष आसीत्। यतो द्यावापृथिवी निष्टतृक्षः। मनीषिणो मनेसा पृच्छतेदुतत्।

विसर्जनाय॥ ७५॥

यद्ष्यतिष्टुदुवेनानि घारयन्। ब्रह्म वन् ब्रह्म स वृक्ष आंसीत्॥७६॥

381 अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

ब्रह्माध्यतिष्टुद्धवेनानि धारयन्। प्रातर्भिं प्रातरिन्द्रं हवामहे। प्रातर्मित्रावर्षणा यतो द्यावांपृथिवी निष्टतक्षुः। मनीषिणो मनेसा

उत प्रपित्व उत मध्ये अह्यौम्। उतोदिता मघवन्थ्सूर्यस्य। वयं देवानारं सुमृतौ स्योम। भगं एव भगवार अस्तु देवाः॥७८॥ राजां चिद्यं भगं भक्षीत्याहो। भग प्रणेतर्भग सत्यंराघः। भगेमां धियमुदंव ददंत्रः। भगु प्र णों जनयु गोर्भिरव्यैः। भगु प्र नृभिनृवन्तेः स्याम। उतेदानीं भगेवन्तः स्याम।

तेने वयं भगेवन्तः स्थामा तं त्वां भग सर्वे इज्ञोहवीमि। स नो भग पुर पृता भेवेह। समध्वरायोषसो नमन्ता दिधिकावेव शुचेये पदाये। अर्वाचीनं वेसुविदं भगं नः। रथमिवाश्वां वाजिन आवेहन्तु। अश्वांवतोर्गोमंतीर्न उषासंः। वीरवेतीः सदेमुच्छन्तु भ्द्राः। घृतं दुहांना विश्वतः प्रपीनाः। यूयं पांत स्वस्तिभिः सदो

ゴニのる

विच्कुणा विचर्तरर शर्मत्रिधे विसर्जनायु ब्रह्म वनुं ब्रह्म स वृक्ष आंसीतुरिश्चेद्देवाः प्रपीना एकं च॥━━━ि् ९ ] पीवाँत्रान्ते पीबौत्रामभ्रे त्वं पारयानाभृष्यः शुचिं नु विश्रयमाणो दिवो क्क्मोऽत्रं प्राणमत्रन्ता सूर्याचन्द्रमसा नवंसप्ततिः॥७९॥ थुकासः सोमों धेनुमिन्द्रस्तरंस्बाञ्छुचिमा देवो यांतु सूर्यों देवीमृहमेस्मि ता सूँर्याचन्द्रमसा नवे॥९॥ पीवात्रां यूयं पांत स्वस्तिमिः सदां नः॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके अष्टमः प्रपाठकः समाप्तः॥ हरिः ओम्॥

प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

॥ अष्टकम् ३॥

## || **72**24: || **72**2: ||

## ॥तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके प्रथमः प्रपाठकः॥

अग्निनैः पातु कृत्तिकाः। नक्षेत्रं देवमिन्द्रियम्। इदमांसां विचक्षणम्। हविया्सं

स कृतिकाभिर्भिसंवसानः। अग्निर्नो देवः सुविते दंधातु। प्रजापंते रोहिणी वेतु जुंहोतन। यस्य भान्ति रृश्मयो यस्यं केतवंः। यस्येमा विश्वा भुवेनानि सर्वां। पन्नी। विश्वरूपा बृह्ती चित्रमांनुः॥१॥

सा नो युज्ञस्यं सुविते दंधातु। यथा जीवेम शुरदः सवीराः। रोहिणी

देव्युदंगात्पुरस्तौत्। विश्वां रूपाणि प्रतिमोदंमाना। प्रजापेति॰ हविषां वर्धयेन्ती। प्रिया देवानामुपेयातु यज्ञम्। सोमो राजां मृगशीर्षेण आगन्। शिवं नक्षेत्रं प्रियमंस्य धामे। आप्यायेमानो बहुधा जनेषु। रेतः प्रजां यजमाने दधातु॥२॥

यते नक्षेत्रं मृगशीर्षमस्ति। प्रिय॰ रांजन् प्रियतमं प्रियाणाम्। तस्मै ते सोम हिबिषां विधेम। शं ने एधि द्विपदे शं चतुष्पदे। आद्रीयां रुद्रः प्रथंमा न एति। श्रेष्ठों देवानां पतिरिष्टियानाम। नक्षेत्रमस्य हिबिषां विधेम। मा नेः प्रजा॰ रीरिष्न्मोत

पुमुअमानौ दुरितानि विश्वा। अपाघशः सन्नुदतामरातिम्। पुनेनौ देव्यदितिः

स्पुणोतु। पुनेर्वसू नः पुनरेतां यज्ञम्। पुनेर्नो देवा अभियेन्तु सर्वै। पुनेः पुनर्वो हविषां यजामः। एवा न देव्यदितिरन्वी। विश्वस्य भूत्रीं जगतः प्रतिष्ठा। पुनेर्वसू हविषां वर्धयेन्ती। प्रियं देवानामप्येतु पार्थः॥४॥

बृहस्पतिः प्रथमं जायेमानः। तिष्यं नक्षेत्रमभि सम्बेभूव। श्रेष्ठो देवानां पृतंनासु जिृष्णुः। दिशोऽनु सर्वा अभेयं नो अस्तु। तिष्यंः पुरस्तांदुत मध्यतो नेः। बृहस्पतिनेः

परि पातु पृश्वात्। बाघेतां द्वेषो अभेयं कृणुताम्। सुवीर्यस्य पतेयः स्याम। इद र सुर्पेन्यो हविरेस्तु जुष्टमैं। आश्रेषा येषामनुयन्ति चेतेः॥५॥ वीरान्। हेती क्दस्य परि णो वृणक्ता आद्भी नक्षेत्रं जुषता॰ हविनेः॥३॥

385 प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

सूर्यस्यापि सूर्याः। ये दिवं देवीमनुं सञ्चरीत्ता येषांमाश्रेषा अनुयन्ति काममा। तेभ्यंः सूर्पभ्यो मधुमञ्जहोमि। उपहूताः पितरो ये मघासु। मनोजवसः सुकृतंः ये अन्तरिक्षं पृथिवीं क्षियन्ति। ते नंः स्पर्सामे हवमागमिष्ठाः। ये रोचने सुकृत्याः। ते नो नक्षेत्रे हवमागीमेष्ठाः। स्वयाभिर्यज्ञं प्रयंतं जुषन्ताम्॥६॥

ये अग्निदग्धा येऽनीम्नदग्धाः। येऽमुं लोकं पितरंः क्षियन्ति। याङ्क्षं विद्या याङ् उं च न प्रविद्या मघासुं यज्ञश्सकुंतं जुषन्ताम्। गवां पितः फल्गुंनीनामिसे त्वम्। तदंर्यमन्वरुणमित्रं चारुं। तं त्वां वयश्सीनितार्शं सनीनाम्। जीवा जीवेन्तमुप् संविश्लेम। येनेमा विश्वा भुवेनानि सिञ्जिता। यस्यं देवा अनु सं यन्ति चेतः॥७॥

अर्यमा राजाऽजर्स्तुविष्मान्। फल्गुनीनामृष्मो रोरवीति। श्रेष्ठो देवानां भगवो

गोम्दर्थवृदुप् सन्नुदेह। भगो ह दाता भग इत्प्रंदाता। भगो देवीः फर्ल्युनीरा विवेश। भगस्येतं प्रंसुवं गोमेम। यत्रं देवैः संघुमादं मदेम॥८॥ भगासि। तत्त्वां विदुः फल्गुंनी्स्तस्यं वितात्। अस्मभ्यं क्षत्रम्जर् सुवीर्यम्

386 प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

विद्यनापेसम्। प्रयच्छेन्तं पपुरिं पुण्यमच्छे। हस्तः प्रयेच्छत्वमृतं वसीयः। दक्षिणेन प्रतिंगुभ्णीम एनत्। दातारेमुद्य सीवृता विदेय। यो नो हस्ताय प्रसुवाति युज्ञम्। आयोतु देवः सीवेतोपेयातु। हिर्ण्ययेन सुवृता रथेन। वहुन् हस्तरं सुभगं

त्वष्टा नक्षेत्रमुन्येति चित्राम्। सुन॰ संसं युव्ति॰ रोचंमानाम्॥९॥

निवेशयंत्रमृतान्मत्यांॐश्वा रूपाणि पि॰्शन् भुवेनानि विश्वा। तत्रस्त्वष्टा तदुं चित्रा विचेष्टाम्। तत्रक्षेत्रं भूरिदा अस्तु मह्यम्। तत्रेः प्रजां वीरवेती॰ सनोतु।

गोभिनों अर्षेः समेनकु यज्ञम्। बायुर्नेक्षेत्रमभ्येति निष्याम्। तिग्मर्थक्षे वृषुनो रोरुवाणः। सुमीरयन् भुवेना मात्रिश्वा। अप् द्वेषार्सि नुदतामरोतीः॥१०॥

तत्रों वायुस्तदु निष्ट्यां श्रणोतु। तत्रक्षेत्रं भूरिदा अंस्तु मह्यम्। तत्रों देवासो

अनुंजानन् कामम्। यथा तरेम दुरितानि विश्वा। दूरम्स्मच्छत्रेवो यन्तु भीताः।

तदिन्द्राग्नी केणुतां तद्विशांखे। तत्रों देवा अनुंमदन्तु यज्ञम्। पृक्षात् पुरस्तादभेयं नो अस्तु। नक्षेत्राणामधिपत्नो विशांखे। श्रेष्ठांविन्द्राग्नी भुवंनस्य गोपौ॥११॥

387

पुरस्तात्। उन्मध्यतः पौर्णमासी जिंगाय। तस्यां देवा अधि संवसंन्तः। उत्तमे विषूंचः शत्रूनप् बार्धमानौ। अप् क्षुधं नुदतामरातिम्। पूर्णा पृष्कादुत पूर्णा प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

नाकं <u>इ</u>ह मांदयन्ताम्। पृथ्वी सुबर्चा युर्वतिः सजोषाः। पौर्णमास्युदंगाच्छोभेमाना। आप्याययेन्ती दुरितानि विश्वा। उुरु दुहां यजेमानाय युज्ञम्॥१२॥

तस्मिन्वयम्मृतं दुहानाः। क्षुपं तरेम् दुरितिं दुरिष्टिम्। पुर-द्रायं वृष्भायं

ऋखास्मे हुव्यैर्नमेसोप्सद्ये। मित्रं देवं मित्रधेयं नो अस्तु। अनूराधान् हिविषां वर्धयंन्तः। शृतं जीवेम शृरदः सवीराः। चित्रं नक्षेत्रमुदंगात्पुरस्तात्। अनूराधास्

चेत्रभांनुर्यजनाने दघातु हृविन्ः पाथुश्वेतों जुषन्ताश्चेतों मदेम् रोचमानामरोतीर्गोपौ युज्ञम्॥====

डिति यद्वदन्ति। तम्मित्र एति पृथिभिदेवयानैः। हिर्ण्ययैवितेतेर-तरिक्षे। इन्द्रौ

ज्येष्ठामनु नक्षेत्रमेति। यस्मिन्बुत्रं वृत्रतूर्ये तृतारं॥१३॥

धृष्णवें। अषांढायु सहंमानाय मीदुषें। इन्द्रांय ज्येष्ठा मधुंमद्दुहांना। उुरु कृणोतु

यजंमानाय लोकम्। मूलै प्रजां वी्रवंतीं विदेय। पराैच्येतु निर्ऋतिः पराचा।

388 गोभिनक्षेत्रं पृशुभिः समेक्तम्। अहेर्भूयाद्यजमानाय् मह्यम्॥१४॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अहेनों अद्य सुविते देधातु। मूलं नक्षेत्रमिति यद्वदेन्ति। परोचीं बाचा निर्ऋतिं नुदामि। शिवं प्रजाये शिवमेस्तु मह्यमैं। या दिव्या आप्ः पर्यसा सम्बभूबुः। या अन्तरिक्ष उत पार्थिवीयाः। यासामषाढा अनुयन्ति कामम्। ता न आपः शङ् स्योना भेवन्तु। याश्च कृप्या याश्चे नाद्याः समुद्रियाः। याश्चे वैश्नन्तीकृत

प्रांसचीयाः॥१५॥

यासामषाढा मधुं भक्षयंन्ति। ता न आपः शङ् स्योना भंबन्तु। तन्नो विश्वे उप श्रुण्वन्तु देवाः। तदेषाढा अभिसंयन्तु यज्ञम्। तन्नक्षेत्रं प्रथतां पृशुभ्यः। कृषिवृष्टिर्यजमानाय कल्पताम्। शुआः कन्यां युवतयः सुपेशंसः। कर्मकृतः सुकृतों वी्यवितीः। विश्वान् देवान् ह्विषां वर्धयंन्तीः। अषादाः काम्मुपं यान्तु युजम्॥१६॥

यस्मिन् ब्रह्माऽभ्यजंयथ्सर्वमेतत्। अमुं चं लोकमिदमूं च सर्वम्। तत्रो नक्षेत्रममिजिद्विजित्ये। श्रियं दर्यात्वहृणीयमानम्। उुमौ लोकौ ब्रह्मणा सश्चितेमो।

तत्रो नक्षंत्रमभिजिद्विचेष्टाम्। तिस्मिन्वयं पृतेनाः सञ्जेयम। तत्रो देवासो अनुजानन्तु कामम्। शृण्वन्ति श्रोणाम्मृतेस्य गोपाम्। पुण्यांमस्या उपेश्रणोमि वाचम्॥१७॥

महीं देवीं विष्णुंपत्नीमजूर्याम्। प्रतीचीमेनार हविषां यजामः। त्रेधा विष्णुंफरुगायो विचंक्रमे। महीं दिवं पृथिवीमन्तरिक्षम्। तच्छोणैतिश्रवं इच्छमाना। पुण्यक्ष् श्लोकं यजमानाय कृण्वती। अष्टो देवा वसंवः सोम्यासंः। चतंस्रो देवीर्जसः श्लीवंष्टाः। ते यज्ञं पान्तु रजंसः प्रस्तातः। संब्ध्सरीणंममृतः

म्बस्ति॥१८॥

यज्ञं नेः पान्तु वसेवः पुरस्तीत्। दक्षिणतोऽभियेन्तु श्रविष्ठाः। पुण्यं नक्षेत्रममि संविशाम। मा नो अरोतिरघश्च॰साऽगन्। क्षत्रस्य राजा वर्षणोऽधिराजः। नक्षेत्राणाः श्वतिभैष्यविसेष्ठः। तौ देवेभ्यः कृणुतो दीर्घमायुः। श्वतः सहस्रो भेष्जानि धत्तः। यज्ञं नो राजा वर्षण् उपयातु। तत्रो विश्वे अभि संयेन्तु

देवाः॥१९॥

390 प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

आऽन्तरिंक्षमरुहुदगुन्द्याम्। त॰ सूर्यं देवम्जमेकपादम्। प्रोष्ठप्दासो अनुयन्ति येन्ति सर्वे। प्रोष्टप्दासो अमृतेस्य गोपाः। विभाजमानः समिषान उुग्रः। तत्रो नक्षंत्रः शृतमिषग्जुषाणम्। दीर्घमायुः प्रतिरद्भेषजानि। एकेपादुदेगात्पुरस्तौत्। विश्वां भूतानि प्रति मोदमानः। तस्यं देवाः सर्वे॥२०॥

\_\_\_\_\_\_\_ इति यान् वदेन्ति। ते बुधियं परिषद्यः स्तुवन्तंः। अहि<sup>६</sup> रक्षन्ति नमेसोपुसद्ये। यूषा रेवत्यन्वेति पन्थौम्। युष्टिपती पशुपा वाजंबस्त्यौ॥२१॥

ड्मानि हव्या प्रयंता जुषाणा। सुगैर्नो यानैरुपंयातां युज्ञम्। क्षुद्रान् पृशून् रक्षतु रेवती नः। गावो नो अश्वार् अन्वेतु पूषा। अन्नर् रक्षेन्तौ बहुधा विरूपम्। वाजरे अहिंबुंप्रियः प्रथमान एति। श्रेष्ठों देवानांमुत मानुषाणाम्। तं ब्राह्मणाः सोमपाः सोम्यासंः। प्रोष्टपदासो अभि रक्षन्ति सवै। चृत्वार् एकेम्भि कर्म देवाः। प्रोष्टपदास् सनुतां यजमानाय युज्ञम्। तद्श्विनांवश्र्युजोपंयाताम्। शुम्ङ्गिमेष्रो सुयमेभिरश्चैः।

391

यौ द्वानां भिषजौ हव्यवाहो। विश्वस्य द्तावृमुतंस्य गोपो। तो नक्षेत्रं स्वं नक्षेत्र ९ हिविषा यजन्तौ। मध्वा सम्पुक्तौ यजुषा समेकौ॥२२॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

जुजुषाणोपंयाताम्। नमोऽश्विभ्यां कृणुमोऽश्वयुग्भ्यांम्। अपं पाप्मानं भरंणीर्भरन्तु। तद्यमो राजा भगंबान् विचेष्टाम्। लोकस्य राजां महतो महान् हि। सुगं नः पन्यामभेयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षेत्रे युम एति राजां। यस्मिन्नेनम्भ्याषेश्चन्त देवाः। तदंस्य चित्र% ह्विषां यजाम। अपं पाप्नानं भरंणीर्भरन्तु। निवेशनी यत्ते देवा

तृतार् मह्यं प्रास्चीर्या याँन्तु युज्ञं वाचर्ं स्वृस्ति देवा अनुयन्ति सर्वे वाजंबस्त्यों समंक्तो देवास्त्रीणं च॥—————[२]

अदंधः॥२३॥

नवोनवो भवति जायमानो यमोदित्या अ॰्शुमौप्याययंन्ति। ये विरूपे समेनसा

संव्ययंन्ती। समानं तन्तुं परितातना तै। विभू प्रभू अंनुभू विश्वतों हुवे। ते नो नक्षेत्रे हवमागंमेतम्। वयं देवी ब्रह्मणा संविदानाः। सुर्लासो देववीतिं दर्यानाः। अहोरात्रे हविषां वर्धयेन्तः। अति पाप्मानमति मुक्ता गमेम। प्रत्युवहश्यायती॥२४॥

392 व्युच्छन्ती दुहिता दिवः। अपो मही वृंणुते चक्षुषा। तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरीं। प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

उदुस्रियाः सचते सूर्यः। सचा उद्यन्नक्षेत्रमर्चिमत्। तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च। सं

मुक्तेनं गमेमहि। तत्रो नक्षेत्रमर्चिमत्। भानुमतेजं उचरंत्। उपंयुज्ञमिहागंमत्॥२५॥

वीरवेतमम्। उदुत्यं चित्रम्। अदितिनं उरुष्यतु महीम् षु मातरम्। इदं विष्णुः प्रतिद्वष्णुः। अग्निर्मूधां भुवेः। अनुनोऽद्यानुमतिरन्विदेनुमते त्वम्। हृष्युवाहुङ्

स्विष्टम्॥२६॥

प्र नक्षेत्राय देवाये। इन्द्रायेन्दु १ हवामहे। स नेः सिवृता सुंवथ्सानिम्। पुष्टिदां

देवानांमजादः। यथां ह वा अग्निदेवानांमजादः। एव॰ ह वा एष मंनुष्यांणां भवति। य एतेनं हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये स्वाहा कृत्तिंकाभ्यः स्वाहाँ। अम्बाये स्वाहां दुलाये स्वाहाँ। नितत्ये स्वाहाऽभयंन्त्ये

पुरोडाशम्षाकेपाऌं निरंबपत्। ततो वै सोऽत्रादो देवानामभवत्। अग्निवै

अग्निबी अकामयत। अत्रादो देवाना ईस्यामिति। स एतम्ग्रये कृतिकाभ्यः

393 प्रजापंतिः प्रजा अंसुजता ता अंस्माथ्सुष्टाः परांचीरायन्। तासा ५ स्वाहाँ। मेघयंन्त्ये स्वाहां वृर्षयंन्त्ये स्वाहाँ। चुपुणीकांये स्वाहेति॥२७॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

रोहिणीम्न्यध्यायत्। सोऽकामयत। उप् मा वेर्तेतां समेनया गच्छेयेति। स एतं

प्रजापेतये रोहिण्ये चरुं निर्वपत्। ततो वै सा तमुपावेती। समेनयागच्छता उपे ह वा एनं प्रियमावेती। सं प्रियेणं गच्छते। य एतेनं हविषा यजेते। य उचैनदुवं वेदे। सोऽत्रं जुहोति। प्रजापेतये स्वाहां रोहिण्ये स्वाहाँ। रोचेमानाये राज्यमभ्यंजयत्। समानाना<sup>५</sup> ह<sup>े</sup> वे राज्यममिजंयति। य <u>ए</u>तेनं हविषा यजेते। य डे चैनदेवं वेदं। सोऽत्रे जुहोति। सोमाय स्वाहो मुगशीर्षाय स्वाहाँ। इन्वकाभ्यः सोमो वा अकामयत। ओषंधीना॰ राज्यममिजंयेयमिति। स पृत॰ सोमांय मुगशीर्षायं श्यामाकं चुरुं पयसि निरंवपत्। ततो वै स ओषंधीना॰ स्वाहौषंधीभ्यः स्वाहाँ। गुज्याय् स्वाहाऽभिजिंत्ये स्वाहेति॥२९॥ स्वाहाँ प्रजाभ्यः स्वाहेति॥२८॥

रुद्रो वा अंकामयत। पशुमान्थस्यामिति। स एतः रुद्रायाऽऽद्राये प्रैय्येङ्गवं चरुं पयीसे निरंवपत्। ततो वे स पंशुमानेभवत्। पशुमान् हु वे भवति। य एतेने हिविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदे। सोऽत्रं जुहोति। रुद्राय स्वाहाऽऽद्राये स्वाहाँ। पिन्वमानाये स्वाहां पुशुभ्यः स्वाहेति॥३०॥

ऋक्षा वा इयमलोमकाऽऽसीत्। साऽकामयत। ओषंधीभिर्वनस्पतिभिः प्रजायेयेति। सैतमदित्ये पुनर्वसुभ्यां वरं निरंवपत्। ततो वा इयमोषंधीभिर्वनस्पतिभि

प्राजायत। प्रजायते हु वै प्रजयां पृशुभिः। य एतेनं हृविषा यजते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अदित्ये स्वाहा पुनेर्वसुभ्याम्। स्वाहा भूत्ये स्वाहा प्रजात्ये

स्बाहेति॥३१॥

बृह्स्पतिवी अकामयत। ब्रह्मवर्चसी स्यामिति। स एतं बृह्स्पतेये तिष्यांय नैवारं चरुं पर्यासे निरंवपत्। ततो वै स ब्रह्मवर्चस्येभवत्। ब्रह्मवर्चसी ह वै भवति। य एतेने हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदा सोऽत्रं जुहोति। बृह्स्पतेये

स्वाहो तिष्योय स्वाहाँ। ब्रह्मवर्चसाय स्वाहेतिं॥३२॥

395 प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

देवासुराः संयेता आसन्। ते देवाः सपैभ्यं आश्रेषाभ्य आज्ये कर्म्मं निरंवपन्। तानेताभिरेव देवताभिरुपानयन्। पुताभिंहे वै देवताभिद्धिषन्तं आतेर्व्यमुपेनयति। य एतेने हविषा यजेते। य उं वैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। सपैभ्यः स्वाहाँऽऽश्रेषाभ्यः -स्वाहाँ। दुन्दुशूकैन्युः स्वाहेति॥३३॥

पितरो वा अंकामयन्ता पितृलोक ऋधुयामिति। त पृतं पितृभ्यों मुघाभ्यः पुरोडाश्वर षद्वपालं निरंवपन्। ततो वै ते पितृलोक आधृवन्। पितृलोके ह वा ऋघोति। य पृतेनं हविषा यजते। य उं वैनदेवं वेदा सोऽत्रं जुहोति। पितृभ्यः स्वाहां

अर्थमा वा अंकामयता पृशुमान्थ्स्यामिति। स एतमेर्थम्णे फल्नुंनीभ्यां च्हं निरंबपत्। ततो वै स पंशुमानमवत्। पृशुमान् ह वै भंवति। य एतेनं हविषा यजते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अर्थम्णे स्वाहा फल्गुंनीभ्याङ् स्वाहाँ।

मुघाभ्यंः। स्वाहांऽनुघाभ्यः स्वाहांऽगुदाभ्यंः। स्वाहांऽरुन्युतीभ्यः स्वाहेतिं॥३४॥

भगो वा अंकामयत। भूगी श्रृष्ठी देवानाई स्यामिति। स एतं भगांय फल्गुंनीभ्यां

पुशुभ्यः स्वाहेति॥३५॥

396 चुरुं निरंबपत्। ततो वै स भगी श्रेष्ठी देवानांमभवत्। भगी हु वै श्रेष्ठी संमानानां भवति। य एतेनं हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। भगांय स्वाहा फल्गुंनीभ्याङ्क स्वाहाँ। श्रेष्ठ्यांयु स्वाहेति॥३६॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

पुरोडाशमिष्टाकेपालं निरंवपत्। ततो वै स चित्रं प्रजामीविन्दत। चित्रः ह वै प्रजा विन्दते। य पृतेने हृविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। त्वष्टे स्वाहो चित्राये स्वाहा। चैत्राय स्वाहा प्रजाये स्वाहेति॥३८॥ अद्देवा अदंधता सर्विताऽमंवत्। श्रद्धवा अंस्मै मनुष्यां दधते। सर्विता संमानानां भवति। य पृतेनं हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। सर्वित्रे स्वाहा हस्ताय। स्वाहां ददते स्वाहां पृणते। स्वाहाँ प्रयच्छेते स्वाहाँ प्रतिगृग्णते स्वाहेति॥३७॥ सिविता वा अकामयता श्रन्मे देवा दधीरन्। सिविता स्यामिति। स एत४ सीवेत्रे हस्ताय पुरोडाशं द्वादेशकपाले निरंवपदाशूनां ब्रीहीणाम्। ततो वै तस्मै

प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

वायुर्वा अंकामयता कामचारंमेषु लोकेष्वभिजंययमिति। स पृतद्वायवे निष्यांयै गुष्टै दुग्धं पयो निरंवपत्। ततो वे स कामचारंमेषु लोकेष्वभ्यंजयत्। कामचारं हि वा एषु लोकेष्वभिजंयति। य एतेनं हिषिषा यजति। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। वायवे स्वाहा निष्यांये स्वाहाँ। कामचारांय स्वाहाऽभिजित्ये

स्वाहेति॥३९॥

इन्द्राग्नी वा अंकामयेताम्। श्रेष्ठ्यं देवानांमिभेजयेवेति। तावेतमिन्द्राग्निभ्यां विशांखाभ्यां पुरोडाशमेकांदशकपालं निरंवपताम्। ततो वै तौ श्रेष्ठ्यं देवानांमभ्यंजयताम्। श्रेष्ठ्यं ह वै संमानानांमिभे जंयति। य पृतेनं हविषा यजोते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। इन्द्राग्निभ्याङ् स्वाहा विशांखाभ्याङ्

अधैतत्पौणमास्या आज्यं निर्वपति। कामो वै पौणमासी। काम आज्यम्

कामेनेव काम् समर्थयति। क्षिप्रमेन् सकाम् उपनमति। येन् कामेन् यजेते

398

अग्निः पर्श्नदश प्रजापीतेः षोर्डश् सोम् एकांदश रुद्रो दश्केंकांदश् बृहस्पतिंदशं देवासुरा नवं पितर् एकांदशार्यमा भगो दशं सोऽत्रं जुहोति। पौर्णमास्यै स्वाहा कामांय स्वाहाऽऽगंत्ये स्वाहेति॥४१॥ दश सिष्ता चतुर्दश त्वष्टां बा्युरिन्दाग्री दशं दृशाथैतत्पौर्णमास्या अष्टो पश्चंदश॥==== प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

मित्रो वा अंकामयता मित्र्ययमेषु लोकेष्वभिज्ययमिति। स एतं

मित्रायांनूराधेभ्यंश्वरं निरंबपत्। ततो वै स मित्रधेयंमेषु लोकेष्वभ्यंजयत्। मित्रधेयः ह वा एषु लोकेष्वभिजयति। य एतेनं हविषा यजति। य उं वैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। मित्राय स्वाहोऽनूराधेभ्यः स्वाहाँ। मित्रधेयांय

स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहेति॥४२॥

इन्द्रो वा अंकामयता ज्येष्ठ्यं देवानांमभिजयेयमिति। स एतमिन्द्राय

ज्येष्ठायै पुरोडाशमिकोदशकपालं निरंवपन्महाब्रीहीणाम्। ततो वै स ज्यैष्ठ्यं देवानांमभ्यंजयत्। ज्यैष्ठ्यः ह वै संमानानांमभिजंयति। य पृतेनं हविषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। इन्द्रांय स्वाह्रौ ज्येष्ठाये स्वाहाँ। ज्यैष्ठ्यांय

स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहेति॥४३॥

399 प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

प्रजापेतिर्वा अकामयत। मूले प्रजां विन्देयेति। स एतं प्रजापेतये मूलोय च्रं निरंवपत्। ततो वै स मूले प्रजामेविन्दता मूले ह वै प्रजां विन्दते। य एतेने हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। प्रजापेतये स्वाहा मूलोय स्वाहाँ। प्रजायै स्वाहेति॥४४॥

आपो वा अंकामयन्ता समुद्रं कामंमभिजयेमेति। ता पृतमस्बोऽषाढाभ्यंश्वरं निरंवपन्। ततो वै ताः संमुद्रं कामंमभ्यंजयन्। समुद्रः ह वै कामंमभिजयित। य एतेनं हविषा यजते। य उं वैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अस्धः स्वाहोऽषाढाभ्यः स्वाहा। समुद्राय स्वाहा कामांय स्वाहा। अभिजित्ये स्वाहिते॥४५॥

विश्वे वै देवा अंकामयन्ता अनुप्जुच्यं जयमिति। त पृतं विश्वेभ्यो देवेभ्यों-ऽषाढाभ्यंश्वरं निरंवपन्। ततो वै तेऽनपज्यमंजयन्। अनुप्जुच्यः हु वै जयिति। य पृतेनं ह्विषा यजते। य उं वैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहोऽषाढाभ्यः स्वाहाँ। अनुपुजुय्यायु स्वाहा जित्यै स्वाहेति॥४६॥

400 ब्रह्म वा अंकामयता ब्रह्मलोकम्भिजंययमिति। तदेतं ब्रह्मणेऽभिजितं चरु प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

निर्वपत्। ततो वै तद्वेह्मलोकमम्येजयत्। बृह्मलोक॰ ह वा अभिजयिति। य एतेने हृविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। ब्रह्मणे स्वाहोऽभिजिते स्वाहाँ। ब्रह्मलोकाय स्वाहाऽभिजित्ये स्वाहेति॥४७॥

विष्णुवर्ष अंकामयत। पुण्युङ् श्लोक श्रुण्वीय। न मां पापी कार्तिरागेच्छेदिति। स एतं विष्णंवे श्रोणायै पुरोडाशं त्रिकपालं निर्वपत्। ततो वै स पुण्युङ्

वसीबो वा अकामयन्ता अग्ने देवतानां परीयामेति। त एतं वसुभ्यः श्रविष्ठाभ्यः पुरोडाशम्षाकेपालं निर्वपन्। ततो वै तेऽग्नं देवतानां पर्यायन्। अग्नर्श ह वै

समानानां पर्यति। य पृतेनं ह्विषा यजेते। य उं चैनद्वं वेदं। सोऽत्रं जुहोति

श्लोकंमश्रुणुता नैनं पापी कीर्तिरागेच्छत्। पुण्यर् ह वै श्लोकर् ग्रुणुते। नैनं पापी कीर्तिरागेच्छति। य एतेनं हिविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। विष्णंवे स्वाह्रौ श्रोणाये स्वाह्रौ। श्लोकांय स्वाह्रौ श्रुताय स्वाहेति॥४८॥

401 भेषजेभ्यंः पुरोडाशं दश्किपालं निरंवपत्कृष्णानां ब्रीहीणाम्। ततो वै स ह्ढो-ऽशिथिलोऽभवत्। ह्ढो ह् वा अशिथिलो भवति। य एतेने हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रे जुहोति। वर्षणाय स्वाहो शृतिभेषजे स्वाहाँ। भेषजेभ्यः इन्द्रो वा अकामयता हुढोऽशिथिलः स्यामिति। स पृतं वर्षणाय शृतिभिषजे वसुंभ्यः स्वाहा श्रविष्ठाभ्यः स्वाहाँ। अग्रांय स्वाहा परींत्ये स्वाहेति॥४९॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

स्वाहेति॥५०॥

अजो वा एकेपादकामयत। तेजस्वी ब्रह्मवर्चसी स्यामिति। स एतम्जायैकेपदे प्रोष्ठपदेभ्यंश्वरं निरंवपत्। ततो वै स तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यंभवत्। तेजस्वी ह वै ब्रह्मवर्चसी भवति। य एतेन हविषा यजते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अुजायैकेपदे स्वाहाँ प्रोष्ठपुदेभ्यः स्वाहाँ। तेजंसे स्वाहाँ ब्रह्मवर्चसायु स्वाहेति॥५१॥

अहिंकैं बुधियोऽकामयत। इमां प्रतिष्ठां विन्देयेति। स प्तमहेये बुधियांय प्रोष्ठप्देभ्यः पुरोडाशुं भूमिकपाऌं निरंबपत्। ततों वै स इमां प्रतिष्ठामिविन्दत।

402 प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

ड्डमा॰ ह कै प्रतिष्ठां विन्दते। य पुतेनं हविषा यजीते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अहंये बुधियांय स्वाहाँ प्रोष्ठप्देभ्यः स्वाहाँ। प्रतिष्ठाये स्वाहेति॥५२॥

पूषा वा अंकामयत। पशुमान्थ्स्यामिति। स एतं पूष्णे रेवत्ये चरुं निरंवपत्। ततो वै स पशुमानेभवत्। पशुमान् हु वै भविति। य एतेनं हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। पूष्णे स्वाहो रेवत्ये स्वाहाँ। पशुभ्यः स्वाहेति॥५३॥

अ्थिनो वा अंकामयेताम्। श्रोत्रस्विनावबंधिरौ स्यावेति। तावेतम्किन्यांमश्रुयुक्य

पुरोडाशं द्विकपालं निरंवपताम्। ततो वै तौ श्रौत्रस्विनावबंधिरावभवताम्। श्रोत्रस्वी ह वा अबंधिरो भवति। य एतेनं हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अश्विभ्याङ् स्वाहाँऽश्वयुक्भ्याङ् स्वाहाँ। श्रोत्रांय स्वाहा श्रुत्ये

स्वाहेति॥५४॥

युमो वा अंकामयत। पितृणा॰ राज्यमभिजंथेयमिति। स एतं युमायांपुभरंणीभ्यश्चरं निरंपवत्। ततो वै स पितृणा॰ राज्यमुभ्यंजयत्।

403 समानानार्थं ह वै राज्यमभि जंयति। य एतेनं हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। युमायु स्वाहोऽपुमरंणीभ्यः स्वाहाँ। राज्यायु स्वाहाऽभिजित्ये प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अथैतदेमावास्याया आज्यं निर्वपति। कामो वा अमावास्या। काम आज्यमाँ। कामेनैव कामर् समर्घयति। क्षिप्रमेनर् सकाम् उपेनमति। येन कामेन यजेते। सोऽत्रे जुहोति। अमावास्याये स्वाहा कामाय स्वाहाऽऽगंत्ये स्वाहेति॥५६॥ स्वाहेति॥५५॥

मित्र इन्द्रंः प्रजापीतेर्दशं द्शापु एकांदश् विश्वे ब्रह्म दशंदश् विष्णुक्षयोंदश् वसंव इन्द्रोऽजोऽहिंवै बुभ्नियः पूषाऽश्विनौ युमो दशं

दृशाष्ट्रेतदंमाबास्यांया अष्टो पश्चंदश॥🕳

च्न्द्रमा वा अकामयता अहोरात्रानिर्धमासान्मासोनृत्न्थ्संवर्ध्यरमास्वा

सलोकतामाप्रोत्। अहोरात्राम् ह चन्द्रमंसः सायुज्य «

404 अर्धमासान्मासांनृतून्थ्संबथ्सरमास्वा। चन्द्रमंसः सायुंज्य॰ सलोकतांमाप्रोति। य एतेन हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। चन्द्रमंसे स्वाहाँ

पतीटुश्यांये स्वाहाँ। अहोरात्रेभ्यः स्वाहाँऽर्धमासेभ्यः स्वाहाँ। मासैभ्यः स्वाहुतुभ्यः स्वाहाँ। संवृथ्सराय स्वाहेति॥५७॥

अहोरात्रे वा अंकामयेताम्। अत्यंहोरा्त्रे मुंच्येवहि। न नांवहोरात्रे आप्रयातामिति। ते एतमेहोरात्राभ्यां चरुं निरंवपताम्। द्वयानां व्रीहीणाम्। शुक्कानां च कृष्णानां च। सवात्योदुग्धे। खेताये च कृष्णाये च। ततो वै ते अत्यंहोरात्रे अंमुच्येते। नैने अहोरात्रे आप्रुताम्। अति ह वा अंहोरात्रे मुंच्यते। नैनेमहोरात्रे आप्रुतः। य एतेने हविषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रे जुहोति। अहे स्वाहा रात्रिये स्वाहां। अतिमुक्ते स्वाहति॥५८॥

उषा वा अकामयता प्रियाऽऽदित्यस्यं सुभगां स्यामिति। सैतमुषसे च्रं

निर्वपत्। ततो वै सा प्रियाऽऽदित्यस्यं सुभगोऽभवत्। प्रियो हु वै समानाना ﴿

405

सुमगों भवति। य पूतेनं हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। उषसे स्वाहा ब्युंध्ये स्वाहाँ। व्युंषुष्ये स्वाहाँ व्युच्छन्त्ये स्वाहाँ। व्युंधाये स्वाहेति॥५९॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अथैतस्मै नक्षेत्राय चरुं निर्वपति। यथा त्वं देवानामिसी। एवमहं मेनुष्यांणां भूयास्मिति। यथां ह वा एतद्देवानामि। एवश ह वा एप मेनुष्यांणां भवति। य एतेनं हिविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। नक्षेत्राय स्वाहोदेष्यते स्वाहाँ। उद्यते स्वाहोदिताय स्वाहाँ। हर्गमे स्वाहा भर्मे स्वाहाँ। आजेमे स्वाहा तेजेमे स्वाहाँ। तपेसे स्वाहाँ ब्रह्मवर्चसाय स्वाहाँ। इर्गमे स्वाहाँ। तपेसे स्वाहाँ ब्रह्मवर्चसाय स्वाहाँ।। इर्गमे स्वाहाँ।

सूर्यो वा अकामयत। नक्षेत्राणां प्रतिष्ठा स्यामिति। स एत सूर्याय नक्षेत्रेभ्यश्वरं

निरंवपत्। ततो वै स नक्षेत्राणां प्रतिष्ठाऽभंवत्। प्रतिष्ठा हु वै संमानानां भवति। य रुतेनं ह्विषा यजेते। य उं चैनद्वं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। सूर्यांयु स्वाहा नक्षंत्रेभ्यः स्वाहा। प्रतिष्ठायै स्वाहेति॥६१॥

अथैतमदित्यै च्रं निर्वपति। ड्यं वा अदितिः। अस्यामेव प्रति तिष्ठति। सोऽत्रं

अथैतं विष्णंवे चरुं निर्वपति। युज्ञों वै विष्णुंः। युज्ञ ए्वान्तृतः प्रति तिष्ठति। सोऽत्रं जुहोति। विष्णंवे स्वाहां यज्ञाय स्वाहां। प्रतिष्ठाये स्वाहेति॥६३॥ ज्होति। अदित्यै स्वाह्रौ प्रतिष्ठायै स्वाहेति॥६२॥

चन्द्रमाः पश्चंदशाहोरात्रे सुप्तदंशोषा एकोद्शाथेतस्मै नक्षेत्रायु त्रयोदश् सूर्यो दशाथेतमदित्यै पञ्चाथेत विष्णंवे षट्थ्सप्त (सुबिताऽऽशूनां ब्रीहीणामिन्द्रों मृहाब्रीहीणामिन्द्रः कृष्णानौं ब्रीहीणामेहोराबे द्वयानौं ब्रीहीणाम्। पितरः पद्वेपाल॰ सिवृता द्वादेशकपालिमिन्द्राध्री

ब्रह्म तदेतं विष्णुः स एतं वायुः स एतदापुस्ताः। पितरो विश्वे वसंवोऽकामयन्तु मेति त एतत्रिरंवपन्। आपोऽकामयन्त् एकोदशकपालृमिन्द्र एकोदशकपालृमिन्द्रो दशेकपालुं विष्णुंक्षिकपालमहिभूँमिकपालम्भिनौ द्विकपालं चन्द्रमाः पर्श्वदशकपालम्भिस्त्वष्टा वसंबोऽष्टाकेपालमुन्यत्रं चुरुम्। कुद्रौऽर्युमा पूषा पंशुमान्थस्या्॰ सोमों कुद्रो बृहस्पतिः पर्यासे बायुः पयः सोमों बायुरिन्द्राध्री मित्र इन्द्र आपो ब्रह्म युमोऽभिजित्ये त्वष्टौ प्रजापीतः प्रजायै पौर्णमास्या अमाबास्याया अगेत्ये विश्वे जित्या अश्विनौ श्रुत्यैं।

ี<u>พ</u> अन्यत्रांकामयुतेति स एतत्रिरंवपत्। इन्द्राग्नी श्रैष्ट्रामिन्द्रो ज्यैष्ट्रामिन्द्रो हुढः। अहिः सूर्योऽदिंत्यै विष्णंवे प्रतिष्टायैं। सोमों युमः मेति ता एतत्रिरंबपन्। इन्द्राथ्री अभिनांबकामयेतां वेति तावेतत्रिरंबपताम्। अहोरात्रे वा अंकामयेतामिति ते एतत्रिरंबपताम्। संमानानाम्। अग्निनों रीरिषद्न्यत्रं रीरिषः॥)॥🕳

अुग्निनं कृष्यास्म नवोनवोऽग्निर्मेत्रश्चन्द्रमाः षट्॥६॥

407 अग्निर्मस्तन्नों वायुरहिंबुभियं ऋक्षा वा इयमथैतत्पौर्णमास्या अजो वा एकपाथ्स्येक्षिषंष्टिः॥६३॥ हरिः ओम्॥ अभिनंः पातु प्रतिष्ठायै स्वाहेति॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके प्रथमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ द्वितीयः प्रश्नः॥

## ॥तौत्तरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके द्वितीयः प्रपाठकः॥

तृतीयंस्यामितो दिवि सोमं आसीत्। तं गांयव्याऽहंरत्। तस्यं पर्णमेच्छिद्यत

ब्रह्म वै पूर्णः। यत्पेर्णशाख्यां न्तरपणींऽभवत्। तत्पर्णस्यं पर्णत्वम्। निक्यः

तस्मात्रीणित्रीणि पूर्णस्यं पलाशानि। त्रिपदां गाय्त्री। यत्पंर्णशाख्या गाः वृथ्सानेपाकुरोति। ब्रह्मणैवेनानुपाकेरोति। गायुत्रो वै पूर्णः। गायुत्राः पृश्ववंः॥१॥

प्रार्थति। स्वयैवेनां देवतंया प्रापंयति। यं कामयेतापुशुः स्यादिति। अपुर्णान्तस्मै

शुष्क"ग्रामाहेरेत्। अपुशुरेव भेवति। यं कामयेत पशुमान्थस्यादिति। बृहुपूर्णान्तस्मै

बहुशाखामाहेरेत्। पृशुमन्तमेवेनं करोति॥२॥

दघाति। वायवः स्थेत्यांह। वायुर्वा अन्तरिंक्षस्याध्यंक्षाः। अन्तरिक्षदेवृत्याः खलु

यत्प्राचीमा हरैत्। देवलोकममि ज्येत्। यदुदीचीं मनुष्यलोकम्। प्राचीमुदीचीमा हंरति। उभयौलेकयोर्मिजित्यै। इषे त्वोजे त्वेत्यांह। इषेमेवोर्जे यजमाने

409 वे पश्रवंः॥३॥

बायवे एवेनान्यरि ददाति। प्र वा एनानेतदा केरोति। यदाहे। थेत्युंपायवः स्थेत्याह। यजमानायैव पृश्नुपं ह्वयते। देवो वः

॥र्पयुत्वित्यांहु प्रसूत्यै। श्रेष्टंतमाय कर्मण इत्यांह। युज्ञो हि श्रेष्टंतम् कर्म। तस्मदिवमाह। आप्यांयध्वमघ्निया देवभागमित्यांह॥४॥

वृथ्सेभ्यंश्र वा एताः पुरा मंनुष्यैभ्यक्षाप्यांयन्ता देवेभ्यं एवेना इन्द्रायाप्यांययति

ऊर्जस्वतोः पर्यस्वतोरित्योह। ऊर्ज् हि पयः सम्भरंन्ति। प्रजावंतीरनमीवा अयक्षमा इत्योह प्रजात्ये। मा वंः स्तेन ईशत माऽघश६ंस इत्योह गुस्यै। क्द्रस्य हेतिः परि वो वृण्कित्योह। क्द्रादेवेनांस्नायते। धुवा अस्मिन्गोपंतो स्यात

हिंगिरत्याह। घुवा एवास्मिन्ब्हीः केरोति॥५॥

पृश्नन्पाहीत्योह। पृश्नुनां गोपोधाये। तस्मौध्सायं पृशब्

उपेसमावेर्तन्ते। अनेघः सादयति। गर्भाणां धृत्या अप्रेपादाय। तस्माद्गर्भाः

410

प्रजानामप्रपादुकाः। उपरीव् निद्धाति। उपरीव् हि सुंवर्गो लोकः। सुवर्गस्य पुशवंः करोति पृशवो देवभा॒गमित्यांह करोति नवं च॥■ द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३) लोकस्य समिष्ट्रो॥६॥

देवस्ये त्वा सवितुः प्रेसव इत्यंश्वप्र्युमादंते प्रसूत्यै। अश्विनौंबांहुभ्यामित्याह।
अश्विनौ हि देवानांमध्वर्यू आस्ताम्। पूष्णो हस्ताभ्यामित्यांह यत्यै। यो वा ओषंधीः पर्वेशो वेदं। नैनाः स हिनस्ति। प्रजापंतिर्वा ओषंधीः पर्वेशो वेद। स एना न हिनस्ति। अश्वपृश्वी ब्र्हिरच्छैति। प्राजापत्यो वा अश्वः सयोनित्वाये॥७॥

ओषंधीनामहिरंसायै। यज्ञस्यं घोषद्सीत्यांह। यज्ञमान एव रायं दंधाति। प्रत्युष्टर् रक्षः प्रत्युष्टा अरातय इत्यांह। रक्षंसामपंहत्ये। प्रेयमंगाद्धिषणां बुर्हिरच्छेत्योह। विद्या वै प्रिषणाँ। विद्ययैवैनुदच्छेति। मनुना कृता स्वधया

त आवेहन्ति कृवयेः पुरस्तादित्योह। शुश्रुवाश्सो वै कृवयेः। युज्ञः पुरस्ताति।

मुख्त एव यज्ञमा रंभते। अथो यदेतदुक्का यतः कुतंश्<u>चा हरंति। तत्प्राच्यां ए</u>व दिशो भंवति। देवेन्यो जुष्टीमृह बर्गहरासद इत्यांह। बर्हिषः समृंस्ट्री। कर्मणो-

यद्वा ड्रदं किं चे। तद्देवानौं परिषूतम्। अथो यथा वस्येसे प्रतिप्रोच्याहेदं

ऽनेपराधाय। देवानां परिषूतम्सीत्यांह॥९॥

यावेतः स्तुम्बान्पीरिदिशेत्। यत्तेषांमुच्छिङ्ष्यात्। अति तद्यज्ञस्यं रेचयेत्। एकङ्

स्तम्बं परिदिशेत्। त॰ सर्वं दायात्॥१०॥

यज्ञस्यानंतिरेकाय। वर्षवृंद्धमुसीत्यांह। वर्षवृंद्धा वा ओषंघयः। देवंबर्शहेरित्यांह। देवेन्यं एवैनंत्करोति। मा त्वाऽन्वङ्गा तिर्यगित्याहाहि रंसायै।

पर्वे ते राध्यास्मित्याहध्यैं। आच्छेता ते मा रिषमित्योह। नास्याऽऽत्मनो मीयते।

य एवं वेदं॥११॥

देवंबर्हिः शृतवंल्श्रुं वियोहेत्यांह। प्रजा वै ब्रुहिः। प्रजानां प्रजनेनाय।

केरिप्यामीति। एवमेव तदंध्वयुर्देवेभ्यः प्रतिप्रोच्यं बर्हिदांति। आत्मनोऽहिं सायै।

द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

सृहस्रेवल्शा वि वयः केहेमेत्योह। आमेवैतामा शाँस्ते। पृथिव्याः सम्मुचेः पाहीत्योह् प्रतिष्ठित्ये। अयुङ्गायुङ्गान्मुष्टीं लुनोति। मिथुनत्वाय् प्रजाँत्ये। सुसम्भृताँ

पूषा तै ग्रन्थिं ग्रेश्रालित्याह। पुष्टिंमेव यजमाने दथाति। स ते

जांयनो॥१३॥

इन्द्राण्ये स्त्रहंनमित्याह। इन्द्राणी वा अग्ने देवतांनार् समंनद्यत। साऽऽप्नोंत्। ऋख्ये सन्नह्यति। प्रजा वे ब्रहिः। प्रजानामपंरावापाय। तस्माध्स्नावंसन्तताः प्रजा

अदित्ये रास्नाऽसीत्योह। इयं वा अदितिः। अस्या एवेन्द्रास्नां करोति।

न् सम्भेरामीत्योह। ब्रह्मणैवेन्थ्सम्भेरति॥१२॥

<u>-</u> न् उर्वन्तरिक्षमन्विहीत्योह द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३) ब्रह्मणैवैनंद्धरति।

देवानेवैनेद्रमयति। अनेधः सादयति। गर्भाणां धृत्या अप्रेपादाय। तस्माद्रभोः प्रजानामप्रेपादुकाः। उपरीव नि देधाति। उपरीव हि सुंवर्गो लोकः। सुवर्गस्ये

पूर्वेद्युरिप्नाब्र्हिः केरोति। युज्ञमेवारभ्यं गृहीत्वोपंवसति। प्रजापंतिर्यज्ञमंसुजत।

सयोनित्वायं स्वयाकृताऽसीत्यांह दायाद्वेदं भरति जायन्ते बृह्स्पतिः समेष्ट्री॥🕳

लोकस्य समंष्ट्री॥१५॥

तस्योखे अंस्र॰सेताम्। युज्ञो वै प्रजापेतिः। यथ्सान्नाय्योखे भवंतः। युज्ञस्यैव

तदुखे उपंदधात्यप्रेस्नश्साय। शुन्धेष्वं दैव्यांय कर्मणे देवयुज्याया इत्याह।

दुव्युज्यायां एवैनांनि शुन्यति। मात्तिरश्वंनो घुर्मोऽसीत्यांह॥१६॥

पर्मेण धाम्नेत्योह। बृष्टिकै विश्वधायाः। बृष्टिमेवावं रुन्ये। ह॰हंस्व मा ह्वारित्यांह

दिवश्च ह्येषा पृथिव्याश्च सम्भृता। यदुखा। तस्मांदेवमांह। विश्वधांया असि

अन्तरिक्षं वै मांतरिश्वनो घुमः। एषां लोकानां विधृत्यै। द्यौरिस पृथिव्यसीत्योह।

द्वङ्गमम्सोत्याह

414

द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

पृत्यें॥१७॥

तत्प्राणापानयों रूपम्। तिर्यक्प्रातः। तद्द्शोस्य रूपम्। दाश्येङ् ह्येतदहः। अन्नं वे

<u>च</u>न्द्रमाः। अत्रं प्राणाः। उभयंमेवोपैत्यजामित्वाय॥१९॥

तस्मांद्यः सर्वतः पवते। हुतः स्तोको हुतो द्रफ्स इत्यांह् प्रतिष्ठित्यै। हविषो-ऽस्केन्दाय। न हि हुतः स्वाहांकृतः स्कन्दंति। दिवि नाको नामाग्रिः। तस्यं

विप्रुषो भागधेयम्। अग्नये बृहते नाकायेत्यांह। नाकंमेवाग्निं भागधेयेन समधेयति। स्वाहा द्यावापृथिवीभ्यामित्याह। द्यावापृथिव्यारेवैनृत्प्रतिष्ठापयति॥२०॥

सौम्यः पर्णः संयोनित्वाये। साक्षात्प्वित्रं दुर्भाः। प्राख्सायमधिनि दंधाति।

त्रिवृत्पेलाशशाखायां दर्भमयं भवति। त्रिवृद्धे प्राणः। त्रिवृत्पेमेव प्राणं मध्यतो

यजमाने दथाति॥१८॥

बसूनां पृवित्रमुसीत्योह। प्राणा वै वस्वः। तेषां वा पृतद्धांग्धेयम्। यत्पवित्रम्॥ तेभ्यं पृवैनेत्करोति॥ शृतधार्र् सहस्रधार्मित्योह। प्राणेष्वेवायुर्दधाति सर्वेत्वाये।

415 पृवित्रंबुत्यानयिति। अपां चैबौष्धीनां चृ रस्॰् स॰सुंजति। अथो ओषंधीष्वेब द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

पश्नमितिष्ठापयति। अन्वारभ्य वाचं यच्छति। यज्ञस्य धृत्यै। घारयेत्रास्ते। घारयंनत इव् हि दुहन्ति। कामेधुक्ष इत्याहातृतीयंस्यै। त्रयं इमे लोकाः। इमानेव लोकान्

यजमानो दुहे॥२१॥

अमूमिति नामे गृह्णाति। भद्रमेवासां कर्मा विष्कंरोति। सा विश्वायुः सा विश्वव्यंचाः सा विश्वकर्मेत्योह। इयं वै विश्वायुंः। अन्तरिक्षं विश्वव्यंचाः। असौ विश्वकंर्मा। इमानेवैतामिलेकान् यंथापूर्वं दुहे। अथो यथौ प्रदात्रे पुण्यंमाशास्तै। एवमेवेनां एतदुर्पस्तौति। तस्मात्प्रादादित्युत्रीय् वन्दंमाना उपस्तुवन्तेः पृश्नुन्दु-

बहु दुग्धीन्द्रांय देकेन्यों हविशिति वाचं विसृंजते। यथादेवतमेव प्रसौति। दैव्यंस्य च मानुषस्यं च व्यावृत्ये। त्रिराह। त्रिषंत्या हि देवाः। अवांचं यमोऽनंन्वारुम्योत्तंराः। अपीरिमितमेवावं रुन्ये। न दांरुपात्रेणं दुह्यात्। अभिवद्दे दांरुपात्रम्। यद्दांरुपात्रेणं

हान्ता २२॥

दुह्यात्॥ २३॥

यातयामा हविषां यजेत। अथो खल्वांहुः। पुरोडाशंमुखानि वै हवीशिषे। नेत इतः पुरोडाश्चर् हविषो यामोऽस्तीति। कामंमेव दांरुपात्रेणं दुह्यात्। शूद्र एव न दुह्यात्। असीतो वा एष सम्भूतः। यच्छूद्रः। अहीवरेव तदित्यांहुः। यच्छूद्रो

दोग्धीति॥ २४॥

अग्निहोत्रमेव न दुंद्याच्छूद्रः। तिष्कं नोत्युनन्ति। यदा खतु वै पवित्रमत्येति। अथ तद्धविरिति। सम्पेच्यध्वमृतावर्गीरत्योह। अपां चैवौषंधीनां च रस्॰ स॰ सुंजति। तस्मांदपां चौषंधीनां च रसमुपंजीवामः। मन्द्रा धनेस्य सातय इत्योह। पुष्टिमेव यजमाने दधाति। सोमेन त्वातंन्च्मीन्द्रांय दधीत्यांह॥२५॥

सोमंमेवैनंत्करोति। यो वै सोमंं भक्षयित्वा। संवथ्सर॰ सोमं न पिबंति। पुनर्भक्ष्यौऽस्य सोमपीथो भेवति। सोमः खलु वै सान्नाय्यम्। य एवं

बिद्वान्थ्सात्राय्यं पिबंति। अपुनर्भक्ष्यौऽस्य सोमपी्थो भंवति। न मृन्मयेनापि

दध्यात्। यन्मुन्मयेनापिद्ध्यात्। पितृदेवृत्यर् स्यात्॥२६॥

अयस्पात्रेणं वा दारुपात्रेण वाऽपि दधाति। तिष्कं सदेवम्। उद्न्वद्भवति। आपो द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

वै रंक्षोघीः। रक्षंसामपेहत्यै। अदंस्तमसि विष्णंवे त्वेत्यांह। यज्ञो वै विष्णुंः। यज्ञायेवेन्ददंस्तं करोति। विष्णों हुव्य॰ रंक्षुस्वेत्यांहु गुस्यै। अनेघः सादयति।

कर्मणे वां देवेभ्यंः शकेयमित्यांह शत्तवैं। यज्ञस्य वै सन्तंतिमनुं प्रजाः पृशवो यजमानस्य सन्तायन्ते। यज्ञस्य विच्छितिमनुं प्रजाः पृशवो यजमानस्य

विच्छिंद्यन्ते। युज्ञस्य सन्तितिरसि युज्ञस्ये त्वा सन्तेत्यै स्तृणामि सन्तेत्यै त्वा

युजस्येत्याहंबनीयाथ्सन्तेनोति। यजेमानस्य प्रजायै पश्नूना॰ सन्तेत्यै। अपः प्रणेयति। श्रृद्धा वा आपेः। श्रृद्धामेवारभ्यं प्रणीय् प्रचेरति। अपः प्रणेयति। युजो

ना आपं:॥२८॥

असीत्योह् भृत्ये यजंमाने दर्यात्यजामित्वाय स्थापयति दुहे दुहन्ति दुह्यादोग्धीति दधीत्योह स्याध्सादयति पश्चं च⊪**——ि** ये

गर्भाणां धृत्या अप्रेपादाय। तस्माद्गर्भाः प्रजानामप्रेपादुकाः। उपरीव निदंधाति। उपरीव हि सुवर्गो लोकः। सुवर्गस्य लोकस्य समेध्यै॥२७॥

418 युज्ञमेवारभ्यं प्रणीय प्रचंरति। अपः प्रणंयति। वज्रो वा आपंः। वज्रमेव द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

आतृेव्येभ्यः प्रहृत्यं प्रणीय प्रचंरति। अपः प्रणंयति। आपो वै रंक्षोघीः। रक्षंसामपेहत्ये। अपः प्रणंयति। आपो वै द्वानां प्रियं धामे। देवानांमेव प्रियं

गमे प्रणीय प्रचेरति॥२९॥

अपः प्रणंयति। आपो वै सर्वा देवताः। देवतां प्वारभ्यं प्रणीय प्रचंरति। वेषांय त्वेत्यांह। वेषांय होनदाद्ते। प्रत्युंष्ट्र रक्षः प्रत्युंष्टा अरोतय इत्यांह। रक्षंसामपेहत्ये। धूरसीत्यांह। एष वै धुर्योऽग्निः। तं यदनुंपस्पृक्ष्यातीयात्॥३०॥

अष्वर्युं च यजमानं च प्रदेहत्। उपस्पृश्यात्येति। अष्वर्योश्च यजमानस्य चाप्रदाहाय। धूर्वे तं यौस्मान्यूर्वित तं धूर्वे यं वयं धूर्वाम् इत्योह। द्वौ वाव पुरुषौ। यं चैव धूर्वति। यश्चैनं धूर्वति। तावुभौ शुचाऽपयति। त्वं देवानांमिस् सिस्नितमं पप्रितमं जुष्टेतमं वहितमं देवहूर्तममित्याह। यथायजुरेवैतत्॥३१॥

<u>ूप्</u>

मा ह्वारित्यंह

हिष्यानुमित्याहानाँत्यै। ह॰हैस्ब

अह्रतमसि

मित्रस्ये त्वा चक्षुषा प्रेक्ष इत्याह मित्रत्वाये। मा भेर्मा संविक्या मा त्वां द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

हिर्मिष्मित्याहाहिरंसायै। यद्वै किं च वातो नाभि वाति। तथ्सवं वरुणदेवृत्यम्। <u>उ</u>रु वातायेत्योह्। अवारुणमेवैनेत्करोति। देवस्यं त्वा सर्वितुः प्रंसुव इत्योह

प्रसूत्यै। अश्विनौबृहुन्यामित्याह॥३२॥

अश्विनौ हि देवानांमध्वर्थ् आस्तांम्। पूष्णो हस्तांभ्यामित्यांह यत्यै। अग्नये जुष्टं निर्वपामीत्याह। अग्नयं पुवैनां जुष्टं निर्वपति। त्रिर्यजुषा। त्रयं हुमे लोकाः। एषां लोकानामास्यै। तूष्णीं चंतुर्थम्। अपीरिमितम्बावं रुन्ये। स एवमेवानुंपूर्वे र

ड्डदं देवानांमिदमुं नः सृहेत्यांह व्यावृत्ये। स्फात्यै त्वा नारांत्या इत्यांह गुत्यें। तमंसीव वा एषोंऽन्तश्चरति। यः पंरोणहिं। सुवंरमि वि

हवी शषे निर्वपति॥३३॥

ख्येषं वैश्वानरं ज्योतिरित्योह। सुवरे्वाभि वि पंश्यति वैश्वानरं ज्योतिः।

द्यावांपृथिवी ह्रिविषे गृहीत उद्वेपेताम्। हर्हन्तान्दुर्यो द्यावांपृथिव्योरित्यांह

गृहाणां द्यावापृथिव्योधृत्यै। उर्वन्तरिक्षमन्बिहीत्याह् गत्यै। अदित्यास्त्वापस्थे

सादयामीत्योह। इयं वा अदितिः। अस्या एवैनेदुपस्थे सादयति। अग्ने हृव्य ॰

द्विपाद्यजमानः प्रतिष्ठित्यै। देवो वेः सवितोत्पुंनात्वित्योह। सवितुप्रंसूत पुवैना उत्पुनाति। अच्छिद्रेण प्वित्रेणेत्योह। असौ वा आदित्योऽच्छिद्रं प्वित्रम्। तेनैवैना

उत्पुंनाति। वसोः सूर्यस्य गृश्मिमिरित्योह। प्राणा वा आपेः। प्राणा वसेवः। प्राणा

रश्मयः॥३६॥

प्राणेरेव प्राणान्थ्सं पृणिक्ति। सावित्रियर्चा। सावित्प्रपेसूतं मे कर्मासिदिति।

इन्द्रों वृत्रमंहन्। सोऽपः। अभ्यंम्रियत। तासां यन्मेध्यं यज्ञिय<sup>ू</sup> सदेवमासीत्। तदपोदेकामत्। ते दुर्भा अभवन्। यद्दर्भैरुप उंत्युनाति। या एव मेध्यां यज्ञियाः

सदेवा आपंः। ताभिरेवेना उत्पुनाति। द्वाभ्यामुत्पुनाति॥३५॥

युज्ञो वा आपो धामे प्रणीय प्रचेरत्यतीयादेतद्वाहुभ्यामित्यांह हुवी रषि निर्वपति गत्ये चत्वारि च॥\_\_\_\_

रंश्वस्वेत्यांह गुप्त्यै॥३४॥

द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

स्वितुप्रंसूतमेवास्य कर्म भवति। पुच्छो गांयत्रिया त्रिष्यमुख्त्वायं। आपो देवीरग्रेपुवो अग्रेगुव इत्याह। रूपमेवासामेतन्महिमानं व्याचेष्टे। अग्रं इमं युज्ञं नेयताग्रे युज्ञपंतिमित्याह। अग्रं एव युज्ञं नंयिन्ति। अग्रे युज्ञपंतिम्॥३७॥

है हिनिष्यत्रिन्द्र आपो बन्ने। आपो हेन्द्रं बन्निरे। संज्ञामेवासामेतथ्सामानं व्याचेष्टे। प्रोक्षिताः स्थेत्याहा तेनाऽऽपः प्रोक्षिताः। अग्रये वो जुष्टे

युष्मानिन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये यूयमिन्द्रमवृणीष्वं वृत्रतूर्ये इत्याह। वृत्र १

प्रोक्षाैम्युग्रीषोमाैभ्यामित्याह। युथादेवतमेवैना-प्रोक्षंति। त्रिः प्रोक्षंति। त्र्यांकृद्धि

यज्ञः॥३८॥

अथो रक्षेमामपेहत्यै। शुन्धेष्वं दैव्यांय कर्मणे देवयुज्याया इत्याह। देवयुज्यायां एवैनांनि शुन्यति। त्रिः प्रोक्षेति। त्र्यांबृद्धि यज्ञः। अथौ मेध्यत्वायं। अवधूत्र रक्षोऽवधूता अरांतय इत्यांह। रक्षेसामपेहत्यै। अदित्यास्त्वगुसीत्यांह। इयं वा

आदेतिः॥३९॥

अस्या एवेनत्त्वचं करोति। प्रति त्वा पृथिवी वेत्त्वत्योह् प्रतिष्ठित्यै। पुरस्तात्प्रतीचीनंग्रीवमुत्तंरलोमोपंस्तृणाति मध्यत्वाये। तस्मौत्पुरस्तौत्प्रत्यश्चेः पृश्वो मध्मुपतिष्ठन्ते। तस्मौत्प्रजा मृगं ग्राहुंकाः। यज्ञो देवेभ्यो निलायता कृष्णों रूपं कृत्वा। यत्कृष्णाजिने ह्विरंध्यवृहिन्ते। यज्ञादेव तद्यज्ञं प्रयुङ्गेः। ह्विषोऽस्केन्दाय॥४०॥

अधिषवंणमसि वानस्पत्यमित्यांह। अधिषवंणमेवैनंत्करोति। प्रति त्वा-ऽदित्यास्त्वग्वेत्त्वित्यांह सयत्वायं। अग्रेस्त्न्र्सीत्यांह। अग्नेवी एषा तन्ः। यदोषंधयः। वाचो विसर्जनमित्यांह। यदा हि प्रजा ओषंधीनामुश्जन्ति। अथ वाचुं विसुजन्ते। देववीतये त्वा गृह्यामीत्यांह॥४१॥

देवताभिरेवेनथ्समंधयति। अद्रिंग्से वानस्पृत्य इत्यांह। ग्रावांणमेवेनेत्करोति। स <u>इ</u>दं देवेम्यों ह्व्य॰ सुशमि शमिष्वेत्यांह शान्त्यैं। हविष्कृदेहीत्यांह। य एव देवानारं हिष्कुतः। तान् ह्वंयति। त्रिह्वंयति। त्रिषंत्या हि देवाः

प्रविष्टाऽऽसीत्। तेऽसुंग् यावेन्तो यज्ञायुधानांमुद्वदंतामुपार्थण्वन्। वज्ञायुधेषु तस्माध्स्वानां मध्येऽवसायं यजेत। यावेन्तोऽस्य आतृव्या यज्ञायुधानांमुद्वदंतामुप-शृण्वन्ति। ते परो भवन्ति। उचैः समाहेन्त् वा आह् विजित्ये॥४३॥

आतृव्याभिभूत्यै। मनौः श्रृद्धादेवस्य यजमानस्यासुर्घ्नी वाक्।

इषेमेवोर्ज यजमाने द्याति। द्युमद्वेदत वृय॰ संङ्गातं

<u>इषमावदोर्जमावदेत्यांह॥४२॥</u>

वृङ्क एषामिन्द्रियं वीर्यमी। श्रेष्ठं एषां भवति। वर्षवृद्धमास् प्रति त्वा वर्षवृद्धं

वेत्त्रित्योह। वर्षवृद्धा वा ओषेघयः। वर्षवृद्धा इषीकाः समृद्धी। यज्ञ १ रक्षार्ङ्स्यनु

प्राविशन्। तान्युस्ना पृशुभ्यो निरवोदयन्त। तुषैरोषंधीभ्यः। परापूत् ॰ रक्षः परापूता

अरांतय इत्यांह। रक्षंसामपंहत्ये॥४४॥

मेध्युत्वाये। बा्युर्बो विविनाक्कित्याह। पुवित्रं वै बा्युः। पुनात्येवैनान्। अन्तरिक्षादिब

रक्षेसां भागोऽसीत्योहा तुषैरेव रक्षारंसि निरवंदयते। अप उपंस्पृशति

वा एते प्रस्केन्दन्ति। ये शूर्पात्। देवो वंः सविता हिरंण्यपाणिः प्रतिगृह्वात्वित्यांह प्रतिष्ठित्ये। हविषोऽस्केन्दाय। त्रिष्फ्लीकेर्तवा आह। त्र्यांबृद्धि युज्ञः। अथो

अवंधूत्र रक्षोऽवंधूता अरांतय इत्याह। रक्षंसामपंहत्यै। अदित्यास्त्वगुसीत्याह। इयं वा अदितिः। अस्या एवैनुत्त्वचं करोति। प्रति त्वा पृथिवी वृत्त्वित्याह प्रति-

द्वाभ्यामुत्पुंनाति र्क्षमयो नयुन्त्यभ्रं युज्ञपति युज्ञोऽदितिरस्केन्दाय गृह्णामीत्यांह वदेत्यांह विजित्या अपेहत्या अस्केन्दाय श्रीणि

मध्यत्वाय॥४५॥

ष्टित्यै। पुरस्तात्मतीवन्नीनमीवमुत्तरलोमोपंस्तृणाति मेध्यत्वायं। तस्मात्पुरस्तात्मृत्यञ्चः

पृशवो मेयमुपेतिष्ठन्ते। तस्मौत्यजा मृगं ग्राहुंकाः। युज्ञो देवेभ्यो निलायत॥४६॥

हविषोऽस्केन्दाया द्यावांपृथिवी सृहास्ताम्। ते शम्यामात्रमेकमहर्ष्येता ५

दिवः स्कंम्मनिरंसि प्रति त्वाऽदित्यास्त्वग्वेत्त्वत्यांह।

शम्यामात्रमेकमहः।

कृष्णों रूपं कृत्वा। यत्कृष्णाजिने हिविर्धिपिनिधि। युजादेव तद्यज्ञं प्रयुद्धे।

425

द्यावांपृथियोवींत्यैं। थिषणांऽसि पर्वत्या प्रति त्वा दिवः स्कंम्गनिर्वेत्त्वत्यांह द्यावांपृथिव्योविधृत्यै॥४७॥ द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

धिषणांऽसि पार्वतेयी प्रति त्वा पर्वतिर्वेत्त्वित्यांह। द्यावांपृथिव्योधृत्यै। देवस्यं त्वा सिषणांऽसि प्रमेत्वे। अस्तिनौबिहुभ्यामित्यांह। अस्विनौ हि देवानांमध्वर्यू आस्तामा। पूष्णो हस्ताभ्यामित्यांह यत्यै। अधिवपामीत्यांह। यथादेवतमेवैनानधि वपति। धान्यमिस धिनुहि देवानित्यांह। एतस्य यजुषो

वीर्येण॥४८॥

याबदेकां देवतां कामयेते याबदेकां। ताबदाहीतेः प्रथते। न हि तदस्ति। यत्ताबंदेव स्यात्। यावञ्जहोतिं। प्राणायं त्वाऽपानायं त्वेत्याह। प्राणानेव यजमाने दधाति। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धामित्याह। आयुरेवास्मिन्दधाति। अन्तरिक्षादिव वा एतानि प्रस्केन्दन्ति। यानि दृषदंः। देवो वंः सविता हिरंण्यपाणिः प्रति-गृह्णात्वित्यांहु प्रतिष्ठित्यै। हुविषोऽस्केन्दाय। असंवपन्ती पि॰षाणूनि कुरुतादित्यांह

426

निलायत् विधृत्यै वीर्येण स्कन्दन्ति चत्वारि च॥🕳 द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३) मेध्यत्वायं॥४९॥

धृष्टिंशम् ब्रह्मं युच्छेत्यांह धृत्यैं। अपाँभेऽग्निमामादं जाहे निष्क्रव्यादं स्था देव्यजं वृहेत्यांह। य एवामात्क्रव्यात्। तमंपहत्यं। मेध्येऽग्रौ कपालमुपंदधाति। निदंग्युं रक्षो निदंग्या अरांतय् इत्यांह। रक्षांइंस्येव निदंहति। अग्निवत्युपंदधाति।

अस्मिनेव लोके ज्योतिर्धते। अङ्गारमधि वर्तयति॥५०॥

अन्तरिक्ष एव ज्योतिर्धते। आदित्यमेवामुष्पिँक्षोके ज्योतिर्धते। ज्योतिष्मन्तो-ऽस्मा इमे लोका भेवन्ति। य एवं वेदं। ध्रुवमीसे पृथिवीं हु॰्हेत्योह। पृथिवीमेवैतेनं

द॰ हति। धर्नमस्यन्तरिक्षं दृ॰ हेत्याह। अन्तरिक्षमेवेतेनं द॰ हति। धुरुणमिसि दिवं <u>इ॰्हेत्योहा दिवमेवैतेन इ॰्हति॥५१॥</u>

ट×हंन्तेऽस्मा ड्रमे लोकाः प्रजयां पृशुभिः। य एवं वेदं। त्रीण्यग्रे

धर्मासि दिशो हुर्हत्याह। दिशे एवैतेन हुरहिति। इमानेवैतैर्लोकान्हु हिति।

कृपाला-युपेदधाति। त्रयं इमे लोकाः। एषां लोकानामास्यैं। एकमभ्रे कृपालुमुपं दधाति। एक् वा अभ्रे कृपाले पुरुषस्य सम्मविति॥५२॥ अथ द्वे। अथ त्रीणि। अर्थं चत्वारि। अथाष्टो। तस्मांदष्टाकपालं पुरुषस्य शिरंः द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

त्रिकृता तत्। यद्दशी विराजा तत्। यदेकांदशा त्रिष्टुभा तत्। यद्वादंशापि४॥

जगेत्या तत्। छन्दं सम्मितानि स उपदर्धत्कपालानि। इमाँस्रोकानेनुपूर्वं दिशो

विधेत्यै ह<sup>र</sup>हति। अथाऽऽयुः प्राणान्यजां पश्नन् यजमाने दथाति। सजातानंस्मा अभितों बहुलान्केरोति। चितः स्थेत्याह। यथायजुरेवेतत्। भृगूणामिङ्गिरसां तपेसा

तष्यष्वमित्याह। देवतानामेवैनानि तर्पसा तपति। तानि ततः सङ्स्थिते। यानि यदेवं कृपालौन्युप्दर्थाति। युजो वै प्रजापंतिः। युज्ञमेव प्रजापंति॰ सङ्स्केरोति। <u>य</u>में कृपालौन्युपचिन्वन्ति वे्धस् इति चतुष्पदयुची वि मुंश्चति। चतुष्पादः पृशावेः। अमुष्पिक्षोकेऽनु परैति। यद्ष्टावुप्दर्याति। गायत्रिया तथ्मिम्तिम्। यत्रवे। आत्मानेमेव तथ्सङ्स्केरोति। त॰ सङ्स्कृतमात्मानम्॥५३॥

428 तस्मदिवमाह। स॰ रेवतीर्जगंतीभिर्मधुमतीर्मधुमतीभिः सुज्यष्वमित्याह। आपो वै रेवतीः। पृशवो जगंतीः। ओषंधयो मधुमतीः। आप् ओषंधीः पृश्रून्। तानेवास्मा यथादेवतमेवैनानि संवेपति। समापो अद्भिरंग्मत् समोषेथयो रसेनेत्योह। आपो वा ओषेधीर्जिन्वन्ति। ओषेथयोऽपो जिन्वन्ति। अन्या वा एतासामन्या द्वस्यं त्वा सवितुः प्रमुव इत्याह् प्रसूत्ये। अभिनौबहुभ्यामित्याहा अभिनौ हि देवानांमध्वर्षे आस्ताम्। पूष्णो हस्ताभ्यामित्याह यत्यै। सं वंपामीत्याहा वर्तेयति दिवमेवेतेने द॰हति सम्भवति त॰ सङ्स्कृतमात्मानं द्वादेश सङ्स्थिते त्रीणि च॥■ पुशुष्वेवोपरिष्टात्मति तिष्टति॥५५॥ द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३) जिन्बन्ति॥५६॥

एक्घा स्×्मुज्यं। मधुमतः करोति। अन्द्यः परि प्रजांताः स्थ् समुद्धिः पृंच्यप्वमिति प्यधिन्नवर्याते। यथा सुबृष्ट इमामेनुविसुत्ये॥५७॥

आप् ओषेधीर्मृहयन्ति। ताृहगेव तत्। जनंयत्यै त्वा संयोमीत्याह। प्रजा पुवैतेनं

429 दाधार। अग्रये त्वाऽग्रीषोमाैभ्यामित्याह व्यावृत्त्यै। मुखस्य शिरोऽसीत्याह। युज्ञो द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

घुमोऽसि विश्वायुरित्योह। विश्वेमेवायुर्यजीमाने दघाति। उुरु प्रथस्बोरु ते

वै मखः। तस्यैतच्छिरंः। यत्पुरोडाशंः। तस्मदिवमोह॥५८॥

युज्ञपंतिः प्रथतामित्योह। यजमानमेव प्रजयां पृशुभिः प्रथयति। त्वचं गृह्षीष्वेत्याह।

सर्वमेवैन्॰ सर्तनुं करोति। अथाऽऽप आनीय परिमार्छि। मा्॰्स एव तत्त्वचं

दधाति। तस्मौत्वचा मार्भ्सं छुत्रम्। घुर्मो वा एषोऽशाैन्तः॥५९॥

पर्योग्ने करोति। पृशुमेवैनेमकः। शान्त्या अप्रेदाहाय। त्रिः पर्योग्ने करोति। त्र्यांवृद्धि

युज्ञः। अथो रक्षेसामपेहत्यै। अन्तरित्र रक्षोऽन्तरिता अरांतय इत्यांह॥६०॥

अर्धमासैऽर्धमासे प्रकुंज्यते। यत्पुंरोडाशः। स ईश्वरो यजमान १ शुचा प्रदहेः।

रक्षंसाम्न्तर्हित्यै। पुरोडाशं वा अधिश्रित्र रक्षार्शस्यजिघारसम्। दिवि नाको

नामाग्री रेश्रोहा। स एुवास्माद्रक्षाॐ्स्यपोहन्। देवस्त्वो सिवेता श्रेपयुत्वित्योह।

स्वितुप्रमूत एवैनॐ अपयति। वर्षिष्टे अधि नाक् इत्योह। रक्षेसामपेहत्यै।

<u>अग्रिस्ते तनुबं</u> माऽतिधागित्याहाऽनीतेदाहाय। अग्ने ह्व्य॰ रंक्ष्म्वेत्या<u>ं</u>ह

गुस्यैं॥६१॥

अविदहन्तः श्रपयतेति वाचं विसृंजते। यज्ञमेव ह्वीङ्ष्यंभित्याहृत्य प्रतंनुते। पुरोरुचमविदाहाय श्रुत्ये करोति। मस्तिष्को वै पुरोडाशः। तं यत्राभि वासयैत्। आविमेस्तिष्केः स्यात्। अभिवासयति। तस्माद्धहां मस्तिष्केः। भस्मनाऽभिवासयति। तस्मान्यसेनास्थे छुत्रम्॥६२॥

बेदेनाभिवांसयति। तस्मात्केशैः शिरंश्छुत्रम्। अखंलतिभावुको भवति। य एवं वेदं। पृशोर्वै प्रतिमा पुरोडाशेः। स नायजुष्केमभिवास्येः। वृथेव स्यात्। ईश्वरा यजमानस्य पृशवः प्रमेतोः। सं ब्रह्मणा पृच्युस्वेत्योह। प्राणा वै ब्रह्मे॥६३॥

प्राणाः पृशवंः। प्राणेरेव पृशून्थ्सम्पृणिक्ति। न प्रमायुका भवन्ति। यजमानो वै पुरोडाशाः। प्रजा पृशवः पुरीषम्। यदेवमीभवासयीते। यजमानमेव प्रजयां पृशुभिः समर्धयति। देवा वै हविर्भुत्वाऽब्रुवन्। कस्मित्रिदं म्रेक्ष्यामह् इति।

431 मिथे तुनूः सं निधंध्वम्। अहं वृस्तं जनियिष्यामि। यस्मिन्मुक्ष्यष्व इति। ते देवा अुग्नौ तुनूः सन्त्र्यंदधत। तस्मोदाहुः। अग्निः सर्वां देवता इति। सोऽङ्गोरणाऽऽपः। द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३) सौऽग्निरंब्रवीत्॥६४॥

ततौ द्वितोऽजायता स तृतीयंमुभ्यंपातयत्। ततिम्बेतोऽजायता यदुन्धो-ऽजायन्ता तदाप्यानांमाप्युत्वम्। यदात्मभ्योऽजायन्ता तदाल्यानांमात्स्यत्वम्। अभ्यंपातयत्। ततं एकृतोऽजायत। स द्वितीयंम्भ्यंपातयत्॥६५॥

ते देवा आप्येष्वंमुजत। आप्या अंमुजत् सूर्यांन्युदिते। सूर्यांन्युदितः स्याभिनिम्रक्ता ६६॥

स्यांभिनिम्रुक्तः कुनखिनि। कुनखी श्यावदिति। श्यावदेनग्रदिधिषौ। अग्रदिधिषुः पीरिवित्ते। परिवित्तो वीर्रहिणि। वीर्रहा ब्रह्महिणि। तद्वेह्महण् नात्येच्यवत। अन्तर्वेदि निनयत्यवेरुस्ते। उल्मुकेनाभि गृह्णाति श्रतत्वाये। श्रुतकामा इव हि देवाः॥६७॥

अन्या जिन्वन्यमु विसुत्येवमाहाशान्त आह् गुस्यै छुत्रं ब्रह्मांबवीद्वितीयंमुभ्यंपातयुथ्सूर्याभिनिमुक्ते देवाः॥===

देवस्यं त्वा सिवेतुः प्रेसव इति स्फामादंते प्रसूत्यै। अश्विनौबिहुभ्यामित्योह। अश्विनौ हि देवानोमध्वर्ये आस्तौम्। पूष्णो हस्तौभ्यामित्योह यत्यै। आदंद इन्द्रंस्य बाहुरंसि दक्षिण इत्योह। इन्द्रियमेव यजमाने दधाति। सहस्रोमृष्टिः श्वततेजा इत्योह। इन्द्रियमेव यजमाने दधाति। सहस्रोमृष्टिः श्वततेजा इत्योह। हेजावेष्टे। वायुरंसि तिग्मतेजा इत्योह। तेजो वै 432 द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

तेजं एवास्मिन्दधाति। विषाह्व नामांसुर आंसीत्। सोंऽबिभेत्। यज्ञेनं मा देवा अभिमंविष्यन्तीति। स पृथिवीम्भ्यंवमीत्। सा मेष्याऽमंवत्। अथो यदिन्द्रों

वायुः॥६८॥

बुत्रमहन्। तस्य लोहितं पृथिवीमनु व्यधावत्। सा मेध्याऽभेवत्। पृथिवि

देवयजनीत्याह॥६९॥

मेध्यांमेवैनां देवयजंनीं करोति। ओषध्यास्ते मूलं मा हिरंसिषमित्याह। ओषंधीनामहिरंसायै। ब्रजं गेच्छ गोस्थानुमित्याह। छन्दारंसि वै ब्रजो गोस्थानेः।

छन्दार्धस्येवास्मै ब्रजं गोस्थानं करोति। वर्षतु ते द्यौरित्याहा बृष्टिं द्यौः।

द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

गृष्टिंमेवावं रुन्धे। ब्धान देव सवितः पर्मस्यां परावतीत्याह॥७०॥

ह्रौ वाव पुरुषौ। यं चैव द्वष्टिं। यश्चेनं द्वष्टिं। तावुनौ बंध्नाति पर्मस्यां परावतिं शतेन पाशैः। यौऽस्मान्द्वष्टि यं चं वयं द्विष्मस्तमतो मा मौगित्याहानिम्नुत्तवै। अर्रुवे नामांसुर आंसीत्। स पृथिव्यामुपंम्नुतोऽशयत्। तं देवा अपंहतोऽररुंः पृथिव्या इति पृथिव्या अपाष्टन्। भातृव्यो वा अरुरुंः। अपंहतोऽरुरुंः पृथिव्या

मा स्कानिति यदाहे। आतृष्यमेव दिवः परिबाधते। स्तम्बयुजुर्हरति। पृथिष्या एव आतृष्यमपेहन्ति। द्वितीयर् हरति॥७२॥

तमुररुस्ते दिवं माऽस्कानिति दिवः पर्यंबाधन्ता आतृष्यो वा अर्रुकः। अर्रुस्ते दिवं

आतृष्यमेव पृथिष्या अपेहन्ति। तेऽमन्यन्त। दिवं वा अ्यमितः पंतिष्यतीति।

इति यदाहं॥७१॥

अन्तरिक्षादेवेनमपेहन्ति। तृतीय १ हरति। दिव एवेनमपेहन्ति। तूर्ष्णीं चंतुर्थ १ हेरति। अपेरिमितादेवेनमपेहन्ति। असुराणां वा इयमग्रे आसीत्। यावृदासीनः

433

क्यंत्रो दास्यथेति। यावेथ्स्वयं पीरगृह्षीथेति। ते वसंवस्त्वेति दक्षिणतः पर्यगृह्षन् परापश्यंति। ताबंद्देवानांम्। ते देवा अंब्रुवन्। अस्त्वेव नोऽस्यामपीति॥७३॥ द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

रुद्रास्त्वेतिं पृश्वात्। आदित्यास्त्वेत्युंत्तर्तः। तैंऽग्रिना प्राश्चोऽजयन्। बसुभिर्दक्षिणा। रुद्रैः प्रत्यश्वः। आदित्यैरुद्शः। यस्यैवं विदुषो वेदिं परिगृह्णन्ति॥७४॥

भवंत्यात्मना। पराऽस्य आतृंत्यो भवति। देवस्यं सिवृतुः स्व इत्यांह् प्रसूत्ये।

प्राञ्जो वेद्यर्सावुन्नयति। आहुव्नीयंस्य परिगृहीत्यै। प्रतीची श्रोणीं।

प्रवणां केरोति। मेध्यामेवैनां देवयजनीं करोति॥७५॥

गार्हेपत्यस्य परिगृहीत्यै। अथौ मिथुन्त्वायं। उद्घीन्त। यद्वास्यां अमेध्यम्।

तदपंहन्ति। उद्धन्ति। तस्मादोषंधयः पराभवन्ति॥७६॥

कर्म कुण्वन्ति वेषस् इत्योह। इषित् १ हि कर्म क्रियती। पृथिष्ये मध्यं चामुध्यं च

ब्युदंकामताम्। प्राचीनंमुदीचीनं मेध्यम्। प्रतीचीनं दक्षिणाऽमेध्यम्। प्राचीमुदीचीं

मूले छिनत्ति। आतृष्यस्यैव मूले छिनत्ति। मूलं वा अतितिष्टद्रक्षाङ् स्यनूत्पिपते। यद्दस्तेन छिन्द्यात्। कुनुखिनीः मुजाः स्युः। स्फोनं छिनत्ति। वज्रो वै स्फ्यः। वज्रेणेव युजाद्रक्षार्ङ्स्यपंहन्ति। पितृदेवृत्याऽतिखाता। इयंतीं खनति॥७७॥ द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

प्रजापीतेना यज्ञमुखेन सम्मिताम्। वेदिद्वेकेयो निलायत। तां चेतुरङ्गले-

ऽन्वंविन्दन्। तस्मौचतुरङ्गुलं खेयाँ। चतुरङ्गुलं खेनति। चतुरङ्गुले ह्योषेघयः

प्रतितिष्ठन्ति। आ प्रतिष्ठायै खनति। यजमानमेव प्रतिष्ठां गमयति। वर्षीयसीं करोति। देवयजनस्यैव रूपमेकः॥७८॥

पुरीषवतीं करोति। प्रजा वै पृशवः पुरीषम्। प्रजयैवैनं पृशुभिः पुरीषवन्तं करोति। उत्तरं परिग्राहं परिगृह्णाति। एतावेती वै पृथिवी। यावेती विदिः। तस्यो एतावेत एव भ्रातृव्यं निर्भज्य। आत्मन् उत्तरं परिग्राहं परिगृह्णाति।

कूरमिंव वा पुतत्केरोति। यद्वेदिं क्रोति। धा असि स्वधा असीति योयुप्यते

ऋतमंस्यृतसदंनमस्यृत्श्रीर्सीत्यांह। यथायजुरेवेतत्॥७९॥

शान्त्यैं। उुर्वी चासि वस्वी चासीत्योह। उुर्वीमेवैनां वस्वीं करोति। पुरा कूरस्ये विसुपो विराख्योत्रित्योह मेध्यत्वाये। उुदादाये पृथिवीं जीरदानुयमिरयं चन्द्रमिसे द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

न सुच्छ -

यद्दश्च-द्रमंसि मेध्यम्। तद्स्यामेरंयति। तां धीरांसो अनुदृश्यं यजन्त

इत्याहानुंख्यात्यै। प्रोक्षणी्रा सीदया इष्माब्र्हिरुपंसादया स्रुबं

सम्मृड्डि। पत्नोर् सन्नह्या आज्येनोदहीत्योहानुपूर्वतायै। प्रोक्षणो्रा सांदयति। आपो वै रंक्षोघ्रीः॥८१॥

रक्षेसामपेहत्यै। स्फास्य वर्त्मैन्थ्सादयति। युज्ञस्य सन्तंत्यै। उवाच् हासितो

दैवृत्तः। पृतावितीवां अमुष्पिंक्षोक आपं आसन्। यावितोः प्रोक्षणीरिति।

तस्मां <u>द</u>्दहीरासाद्याः। स्म्यमुदस्यन्। यं द्विष्यातं ध्यायेत्। शुचैवैनेमर्पयति॥८२॥

स्बुधाभिरित्योह। यदेवास्यो अमुध्यम्। तदंपृहत्ये। मेध्यां देव्यजनीं कृत्वा॥८०॥

वै वायुरांह परावतीत्याहाहं द्वितीय∜ हर्तीति परिगृह्णन्तिं देवयजनीं करोति भवन्ति खनत्यकरेतत्कृत्वा रंक्षोष्ठीरंपयति॥∎ि९]

वज्रो वै स्पयः। यद्न्वश्चं धारयौत्। वज्रौऽष्व्युः क्षंण्वीत। पुरस्तापियश्चं

437 द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

ग्राचेश्च प्रतीचेश्च। स्फोनोदीचश्चाष्र्राचेश्च। स्फोन् वा एष बन्नेणास्यै पाप्मानं धारयति। वज्रो वै स्फ्यः। वज्रेणैव यज्ञस्यं दक्षिणतो रक्षाङ्कस्यपहन्ति। आग्रेभ्या

आतृव्यमपृहत्ये। उत्करेऽिषे प्रवृश्चति॥८३॥

यत्पुरस्तौत्पृत्यगुपसादयैत्। अन्यत्रोऽऽहतिप्थाद्धिमं प्रतिपादयेत्। प्रजा

वै ब्र्हिः। अपेराधुयाद्वर्हिषाँ प्रजानाँ प्रजनेनम्। पृक्षात्प्रागुपेसादयति।

आहुतिपथेनेध्मं प्रतिपादयति। सम्प्रत्येव ब्र्हिषाँ प्रजानां प्रजनेनुमुपैति। दक्षिणमिष्मम्। उत्तरं ब्र्हिः। आत्मा वा इष्मः। प्रजा ब्र्हिः। प्रजा ह्याँत्मन् उत्तरतरा तीर्थे। ततो मेधेमुपनीयं। यथादेवतमेवेनत्प्रतिष्ठापयति। प्रति तिष्ठति यथोपपायं वृश्चन्त्येवम्। हस्ताववं नेनिक्ते। आत्मानेमेव पंवयते। स्फ्यं प्रक्षांलयति मेध्यत्वाये। अथों पाप्मनं एव भातृंव्यस्य न्युङ्गं छिनिति। इध्माबर्हिरुपंसादयति युक्त्यै। यज्ञस्यं मिथुनत्वाये। अथों पुरोरुचंमेवेतां दंधाति। -उत्तरस्य कर्मणोऽनुख्यात्ये। न पुरस्ताष्यस्यगुपंसादयेत्॥८४॥

| o<br>∞        |   |
|---------------|---|
|               |   |
|               |   |
|               |   |
|               |   |
|               |   |
|               |   |
|               |   |
|               |   |
|               | - |
|               |   |
| <u>=</u><br>ঘ |   |
| 다<br>평-       |   |
| साद्येदिधाः   |   |
| []            |   |

तृतीयंस्यां देवस्यांश्वपुर्शु यो वै पूर्वेद्यः कर्मणे वामिन्द्रो वृत्रमंहुन्थ्सोऽपोऽवंधूतं धृष्टिर्देवस्येत्यांहु सं वंपामि देवस्य

स्फामा देदे वज्रो वै स्फो दशाा१०॥

तृतीयंस्यां यज्ञस्यानंतिरेकाय प्वित्रेवत्यष्व्युं चांिष्षवंणमस्युन्तरिक्ष एव रक्षंसाम्नतर्हित्ये द्वौ वाव पुरुषो यद्दश्रन्द्रमंसि हरिः ओम्॥

मेध्यं पञ्जाशीतिः॥८५॥

तृतीयंस्यां यजमानः॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके द्वितीयः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ तृतीयः प्रश्नः॥

## ॥तौत्तरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके तृतीयः प्रपाठकः॥

प्रत्युष्ट् रक्षः प्रत्युष्टा अरांतय् इत्यांह। रक्षंसामपंहत्यै। अग्रेर्वस्तेजिष्ठेन तेजंसा

निष्धेपामीत्योह मेघ्यत्वाये। स्रुच्ः सम्माष्टि। स्रुवमग्रें। पुमार्स्समेवाभ्यः सङ्श्यीत

मिथुन्त्वाये। अर्थ जुहूम्। अथोप्भृतम्। अर्थ घुवाम्। असो वै जुहूः॥१॥

अन्तरिक्षमुप्भत्। पृथिवी घुवा। इमे वै लोकाः सुचेः। वृष्टिः सम्मार्जनानि। वृष्टिवीं इमाँस्रोकानेनुपूर्वं केल्पयति। ते ततेः क्रुपाः समेधन्ते। समेधन्तेऽस्मा इमे लोकाः प्रजयां पृशुभिः। य एवं वेदं। यदिं कामयेत् वर्धुकः पूर्जन्यः स्यादिति।

अग्रतः सम्मुज्यात्॥२॥

बृष्टिंमेव नि यंच्छति। अवाचीनाया हि बृष्टिः। यदि कामयेतावंर्षुकः स्यादिति।

मूलृतः सम्मुज्यात्। बृष्टिमेवोद्यच्छति। तदु वा आहुः। अग्रुत पृवोपरिष्टाष्यम्मे-ज्यात्। मूल्तोऽधस्तात्। तद्नुपूर्वं केल्पते। वर्धुको भवतीति॥३॥

प्राचींमभ्याकारम्। अग्रैरन्तर्तः। एवमिव ह्यत्रमृद्यते। अथो अग्रद्धा ओषेधीनामूर्जं प्रजा उपेजीवन्ति। <u>ऊर्ज प</u>ृवात्राद्यस्यावंरुस्ट्यी। अधस्तांत्यृतीचीम्। दृण्डमुत्तमृतः। मूलेन मूलं प्रतिष्ठित्ये। तस्मांदर्बो प्राञ्जुपरिष्टाक्षोमानि। तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

प्रत्यश्चर्यस्तात्॥४॥

सुग्ध्येषा। प्राणो वै स्रुवः। जुहूर्दक्षिणो हस्तंः। उपभृथ्स्व्यः। आत्मा धुवा।

अत्र४ं स्म्मार्जनानि। मुख्तो वै प्राणोऽपानो भूत्वा। आत्मानमत्रं प्रविश्ये। बाह्यतस्त्नुव४ं शुभयति। तस्मौध्सुवमेवाग्रे सम्मौष्टि। मुख्तो हि प्राणोऽपानो भूत्वा। आृत्मानुमन्नमाविशति। तौ प्राणापानो। अव्यर्धुकः प्राणापानाभ्यां भवति।

य एवं वेद्॥५॥

जुहम्ज्याद्ववतीति प्रत्यश्यपस्तानमाष्टि पश्चं च॥\_\_\_\_

सुपलं नाशयामिस् स्वाहेति सुख्सम्मार्जनान्युग्नौ प्र हंरति। आपो वै दुर्भाः।

दिवः शिल्पुमवंततम्। पृथियाः कुकुभि श्रितम्। तेनं व्य॰ सृहस्रवल्शेन

441 क्पमेवैषांमेतन्महिमानं व्याचेष्टे। अनुष्टुभुचा। आनुष्टुभः प्रजापेतिः। प्राजापुत्यो तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

स्वेनेवैनानि छन्देसा। स्वयां देवतया समप्रयति। अथो ऋग्वाव योषां। दुर्भो

वृदः। वृदस्याग्रङ् सुख्सम्मार्जनानि॥६॥

गुशुमियंजीमानः। तान्येके वृथैवापौस्यन्ति। तत्तथा न कार्यम्। आरंब्यस्य यज्ञियेस्य

कर्मणः सविदोहः॥७॥

वृषा। तिमिथुनम्। मिथुनमेवास्य तद्यज्ञे केरोति प्रजनेनाय। प्रजायते प्रजय

यद्यैनानि पृशवोऽभि तिष्ठेयुः। न तत्पृशुभ्यः कम्। अद्भिमाँजीयृत्वोत्करे न्यैस्येत्। यद्वै यत्रियेस्य कर्मणोऽन्यत्राऽऽहुतीभ्यः सन्तिष्ठेते। उत्करो वाव तस्ये प्रतिष्ठा। एता १ हि तस्मै प्रतिष्ठां देवाः सममेरन्। यद्द्विमा्र्जियंति। तेने शान्तम्।

यथ्रुनेख्सम्मार्जनानि। स्तम्बुशो वा ओषंघयः। तासाँ जरत्कुक्षे पृशवो न रंमन्ते।

प्रति तिष्ठति प्रजयां पृशुभिर्यजमानः। अथौं स्तृम्बस्यु वा एतद्रूपम्।

यदुंत्क्रे न्युस्यति। प्रतिष्ठामेवैनांनि तद्नमयति॥८॥

प्रहंशति। एषा वा एतेषां योनिः। एषा प्रतिष्ठाां स्वामेवैनानि योनिम्। स्वां प्रतिष्ठां गंमयति। प्रति तिष्ठति प्रजयां पृशुभिर्यजमानः॥१०॥ नुबदाबो ह्येषां प्रियः। यावेत्प्रियो ह वै नेवदावः पंशूनाम्। तावेत्प्रियः पशूनां भेवति। यस्येतान्युग्नौ प्रहर्गन्त। तस्मोदेतान्युग्नावेव प्रहेरेत्। युत्रस्मिन्थ्सम्मुज्यात्। पृशूनां धृत्यैं। यो भूतानामिषेपतिः। कुद्रस्तेन्तिच्यो अप्रियो होषां जरत्कक्षः। यावेदप्रियो हु वै जंरत्कृक्षः पंशूनाम्। तावेदप्रियः पशूनां भेवति। यस्यैतान्यन्यत्राग्नेर्दर्यति। नृवदाव्यांसु वा ओषंधीषु पृशवो रमन्ते॥९॥ वृषां। पुशूनस्माकं मा हिंसीः। एतदंस्तु हुतं तव स्वाहेत्यंग्रिस्मार्जनान्युग्री वेदस्याग्रॐ सुख्सुम्मार्जनानि विदोहो गंमयति पृशवौ रमन्ते हि॰सीः षट चं॥=== तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अयुज्ञो वा एषः। योऽप्नीकेः। न प्रजाः प्रजायेरन्। पत्यन्वीस्ते। युज्ञमेवाकेः। 

आसीना ह्येषा बीर्यं करोति॥११॥

देशाँहक्षिणत उदीच्यन्वाँस्ते। आत्मनों गोपीथाये। आशांसांना सौमन्समित्यांह। मेध्यांमेवेनां केवंतीं कृत्वा। आशिषा समिधयति। अग्रेरनुव्रता भूत्वा सन्नेह्ये यत्यश्वात्प्राच्युन्वासीत। अनयो सुमदेन्दधीत। देवानां पत्निया सुमदेन्दधीत। तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

यम्न्वास्तै। तस्यामुष्पिँक्षोके भंबतीति योक्रेण। यद्योक्रम्। स योगंः। यदास्तै। स

क्षेमः॥१३॥

तेनैवेनां वृतमुपंनयति। तस्मांदाहुः। यश्चेवं वेद् यश्च न। योक्रेमेव युंते।

सुकृतांय कमित्योह। पृतद्वे पनिये बतोपनयेनम्॥१२॥

योगक्षेमस्य क्रस्यै। युक्तं क्रियाता आशीः कामें युज्याता इति। आशिषः समृद्धे। ग्रन्थिं ग्रेश्नाति। आशिषे एवास्यां परि गृह्णाति। पुमान् वै ग्रन्थिः। स्त्री

पतीं। तिमेथुनम्। मिथुनमेवास्य तद्युज्ञे केरोति प्रजनेनाय। प्र जायते प्रजयां

पशुभिर्यजमानः॥१४॥

अथों अर्थों वा एष आत्मनंः। यत्पत्नीं। युज्ञस्य धृत्या अशिथिलं भावाय।

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

रूपमेवास्येतन्महिमानं व्याचेष्टे। तस्य तेऽक्षीयमाणस्य निर्वपामि देवयुज्याया सुप्रजसंस्त्वा वयः सुपत्नीरुपं सेदिमेत्यांह। यज्ञमेव तिन्मेथुनीकेरोति। ऊनेऽतिरिक्तं धीयाता इति प्रजात्ये। मृहीनां पयोऽस्योषेधीना<u>ः</u> रस् इत्याह। घृतं च कै मधुं च प्रजापेतिरासीत्। यतो मध्वांसीत्। ततेः प्रजा अंसुजता तस्मान्मधुषि प्रजनेनमिवास्ति। तस्मान्मधुंषा न प्रचंरन्ति। यातयांम हि। आज्येन प्रचंरन्ति। युज्ञो वा आज्यम्। युज्ञेनैव युज्ञं प्रचंरन्त्ययांतयामत्वाय। इत्यांह। आमेवैतामा शास्ते॥१५॥ क्रोति ब्रतोपनयंनु क्षेमो यजमानः शास्ते॥🕳

पत्यवेंक्षते॥१६॥

मिथुनत्वाय प्रजात्यै। यद्वे पत्नी यज्ञस्यं करोति। मिथुनं तत्। अथो पत्निया एवेष यज्ञस्यान्वारम्भोऽनेवच्छित्यै। अमेध्यं वा एतत्करोति। यत्पत्यवेक्षेते। गार्हेपत्येऽधि श्रयति मेध्यत्वाये। आहवनीयंमभ्युद्वंवति। यज्ञस्य सन्तत्यै।

आहुबनीयंमुभ्युद्रेवति। युजस्य सन्तेत्यै।

तेजोऽस् तेजोऽनु प्रेहीत्यांह॥१७॥

तेजो वा अग्निः। तेज आज्यम्। तेजंमैव तेजः समंधयति। अग्निस्ते तेजो मा तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

सुभूद्वानामित्याह। य्थायुजुर्वेतत्। धाम्नेधाम्ने द्वेभ्यो यजुषेयजुषे भ्वेत्याह। आ-

मेवेतामा शास्ते॥१८॥

तद्वा अतेः प्वित्राभ्यामेवोत्पुनाति। यजंमानो वा आज्यम्। प्राणापानौ प्वित्रै। यजंमान एव प्राणापानौ दंधाति। पुन्यहारम्। एवमिव हि प्राणापानौ सञ्चरंतः। शुक्रमंसि ज्योतिरसि तेजोऽसीत्याह। रूपमेवास्यैतन्महिमानं व्याचेष्टे। त्रिर्यजुषा।

विनैदित्याहाहि ५ सायै। स्फास्य वर्त्मन्थ्सादयति। यज्ञस्य सन्तंत्यै। अग्नेर्जिह्नाऽसि

एषां लोकानामास्यै। त्रिः। त्र्यांबृद्धि युज्ञः। अथों मेध्यत्वाये। अथाऽऽज्यंवतीभ्यामुप

त्रयं इमे लोकाः॥१९॥

रूपमेवासांमेतद्वर्णं दघाति। अपि वा उताऽऽहुः। यथां ह वै योषां सुवर्णे ९ हिरंण्यं

पेशुलं बिभंती रूपाण्यास्तै। पुवमृता पृतर्हीति। आपो वै सर्वा देवताः॥२०॥

एुषा हि विश्वेषां देवानाँ तृनूः। यदाज्यम्। तत्रोभयौमीमार्भा। जामि स्यात्।

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

मिथुन्त्वाये। सावित्रियची। सवितुप्रंसूतं मे कर्मांसदिति। सवितुप्रंसूतमेवास्य कर्मे भवति। पुच्छो गायित्रिया त्रिष्यमुख्त्वाये। अद्भिरवोषधीः सं नयति। ओषधीभिः पृश्न्। पृशुभिर्यजीमानम्। शुक्रं त्वां शुक्रायां ज्योतिस्त्वा ज्योतिष्यविस्त्वा-ऽचिषीत्योह सर्वत्वाये। पर्यास्या अनेन्तरायाय॥२१॥ यद्यजुषाऽऽज्यं यजुंषाऽप उंत्युनीयात्। छन्दंसाऽप उत्पुंनात्यजामित्वाय। अथो

ईक्षत आहु शास्ते लोका देवता भवति षट् चं॥■

देवासुराः संयंता आसन्। स पृतमिन्द्र आज्यंस्यावकाशमंपश्यत्। तेनावैक्षता

ततों देवा अर्भवन्। पराऽसुराः। य एुवं विद्वानाज्यम्वेक्षेते। भवेत्यात्मनां। पराऽस्य आतुंच्यो भवति। ब्रह्मवादिनो वदन्ति। यदाज्येनान्यानि ह्वी १ ष्यंभिषारयंति॥२२॥

अथु केनाऽऽज्यमिति। सृत्येनेति ब्रूयात्। चक्षुर्वै सृत्यम्। सृत्येनैवैन॑दमि घांरयति। ई्रश्वरो वा पृषाैऽन्यो भवितोः। यश्वक्षुषाऽऽज्यंम्वेक्षेते। निमील्यावैक्षेत।

दाधारात्मश्रक्षेः। अभ्याज्यं घारयति। आज्यं गृह्णाति॥२३॥

छन्दार्शम् वा आज्यम्। छन्दार्थस्येव प्रीणाति। चृतुर्जुह्वां गृह्वाति। चतुष्पादः पृशवेः। पृशूनेवावे रुन्ये। अष्टावेपुमृति। अष्टाक्षेरा गायत्री। गायत्रः प्राणः। प्राणमेव पृशुषुं दघाति। चृतुर्धुवायाम्॥२४॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

गुंबाति। भातृव्यदेवत्योपभृत्। चृतुर्जुह्वां गृह्धन्मूयों गृह्षीयात्। अष्टावृपभृति गृह्धन्कनीयः। यजमानायेव भातृव्यमुपेस्तिं करोति। गौर्वे स्नुचेः। चृतुर्जुह्वां गृह्णाति चतुष्पादः पुश्ववे। पुशुष्वेवोपरिष्टात्मति तिष्ठति। यजमानदेवत्यां वै जुहः

तस्माचतुष्पदी॥२५॥

<u>स्त</u>ना अष्टाबुंपभीते। तस्मांदृष्टाशंफा। चृतुर्ध्रुवायाम्। तस्माचतुः

प्याजेभ्यस्तत्। यदुपभीते। प्रयाजानूयाजेभ्यस्तत्। सर्वस्मे वा एतद्यज्ञायं गृह्यते। गामेव तथ्सङ्स्केरोति। साऽस्मै सङ्स्कृतेषुमूर्जं दुहे। यञ्जुह्वां

अभिषारयेति गुह्नाति धुवायां चतुष्यदी प्रयाजानूयाजेभ्यस्तद्वे चं॥■ यद्धवायामाज्यम्॥२६॥

आपो देवीरग्रेपुवो अग्रेगुव इत्योह। रूपमेवासोमेतन्मीहेमानं व्याचेष्टे। अग्रे तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

हिनिष्यत्रिन्द्र आपो वक्रो आपो हेन्द्रं विविरे। स्जामेवासामेतथ्सामानं व्याचेष्टे। प्रोक्षिताः स्थेत्याह॥२७॥

ुष्मानिन्द्रोऽवृणीत वृत्रूर्ये यूयमिन्द्रमवृणीष्वं वृत्रूर्यं इत्याहा वृत्र<sup>ू</sup> हे

डुमं युज्ञत्रेयुताओं युज्ञपेतिमित्योह। अभ्रं एव युज्ञं नेयन्ति। अभ्रं युज्ञपेतिम्।

तेनाऽऽपः प्रोक्षिताः। अग्निर्देवेभ्यो निलायत। कृष्णो रूपं कृत्वा। स वनस्पतीन्माविशत्। कृष्णौऽस्याखरेष्ठौऽग्नयै त्वा स्वाहेत्यांह। अग्नयं पृवेनं जुष्टे करोति। अथो अग्नेरव मेधमवं रुन्ये। वेदिरसि बर्हिषे त्वा स्वाहेत्यांह। प्रजा वै बर्हिः। पृथिवी वेदिः॥२८॥

प्रजा एव पृथिव्यां प्रतिष्ठापयति। ब्र्हिरीस स्रुग्न्यस्त्वा स्वाहेत्योह। प्रजा वै ब्र्हिः। यजमान्ः स्रुचेः। यजमानमेव प्रजासु प्रतिष्ठापयति। दिवे त्वाऽन्तरिक्षाय

त्वा पृथिये त्वेति ब्र्हिरासाद्य प्रोक्षंति। एग्य एवैनेस्न्रोकेग्यः प्रोक्षंति। अथ् ततः

सह सुचा पुरस्तात्प्रत्यश्चं ग्रन्थिं प्रत्युक्षति। प्रजा वे ब्रुहिः। यथा सूत्ये काल आपेः पुरस्ताद्यन्ति॥२९॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

ताहगेव तत्। स्वधा पितुभ्य इत्योह। स्वधाकारो हि पितृणाम्। ऊग्मेव बर्शहेषम्ब इति दक्षिणायै श्रोणेरोत्तंरस्यै निनंयति सन्तंत्यै। मासा वै पितरों बर्शहेषदंः। मासानेव प्रीणाति। मासा वा ओषंधीर्वर्धयन्ति। मासाैः पर्वान्ते समृध्यै। अनंतिस्कन्दन् ह पुर्जन्यों वर्षति। यत्रैतदेवं ऋियते॥३०॥

ऊर्जा पृथिवीं गेच्छतेत्योह। पृथिव्यामेवोर्जं दधाति। तस्मौत्पृथिव्या ऊर्जो भुंअते। ग्रन्थिं वि स्नरंसयति। प्रजनयत्येव तत्। ऊर्ष्वं प्राश्चमुद्गंदं प्रत्यश्चमा येच्छति। तस्मौत्पाचीन्थ् रेतो धीयते। प्रतीचीः प्रजा जायन्ते। विष्णोः स्तूपो-ऽसीत्याह। यज्ञो वै विष्णुं:॥३१॥

यज्ञस्य धृत्यै। पुरस्ताप्तरस्तरं गृह्णाति। मुख्यमेवेनं करोति। इयेन्तं गृह्णाति। प्रजापेतिना यज्ञमुखेन सम्मितम्। इयेन्तं गृह्णाति। यज्ञपुरुषा सम्मितम्। इयेन्तं

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

विश्वेमेवायुर्यजनाने दथाति। इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिण इत्योह। इन्द्रियमेव

गैर्धीन्परि द्याति। गृन्युर्वोऽसि विश्वावेसुरित्योह॥३४॥

यजमाने दर्धाति। मित्रावरुणौ त्वोत्तर्तः परिधत्तामित्योह। प्राणापानौ मित्रावरुणौ।

प्राणापानावेवास्मिन्दधाति। सूर्यस्त्वा पुरस्ताँत् पात्वित्यांह। रक्षेसामपेहत्ये।

बुर्हिः स्तुणाति। प्रजा वै बुर्हिः। पृथिवी वेदिः। प्रजा एव पृथिव्यां

ऊर्णाम्रदसं त्वा स्तुणामीत्योह। यथायजुरेवैतत्। स्वास्स्थं देवेभ्य इत्योह। देवेभ्यं

रुवैनेध्स्वासस्थं केरोति॥३३॥

यजुमानो कै प्रस्तुरः। प्राणापानौ प्वित्रै। यजमान एव प्राणापानौ देथाति।

अपेरिमितं गृह्णाति। अपेरिमित्स्यावेरुद्धो। तस्मिन्पवित्रे अपि सुजति

गुह्णाति। पुताबृद्वे पुरुषे बीर्यम्। बीर्यसम्मितम्॥३२॥

450

451 कस्यांश्चिद्मिशंस्त्या इत्याह। अपीरमितादेवैनं पाति॥३५॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

समिधीमुहीत्यांहु समिद्धी। अग्ने बृहन्तंमप्वर इत्यांहु वृद्धी। विश्रो युत्रे वीतिहाँतं त्वा कव इत्योह। अग्रिमेव होत्रेण समंध्यति। द्युमन्तर्

स्थ इत्योह। विशां यत्यैं। उदीचीनांग्रे नि दंधाति प्रतिष्ठित्ये। वसूना॰ रुद्राणामादित्याना॰ सदीसे सीदेत्याह। देवतानामेव सदेने प्रस्तुर॰ सांदयति। जुह्रपंसि घृताची नाम्नेत्याह॥३६॥

असौ वै जुहः। अन्तरिक्षमुप्भृत्। पृथिवी ध्रुवा। तासांमेतदेव नामा यद्घृताचीति। यद्घृताचीत्याहे। प्रियेणेवैना नाम्ना सादयति।

वै सुंकृतस्यं लोकः। सत्य एवेनाः त्याहा गन्मे हे सुकृतस्यं लोके सांदयिति। ता विष्णो पाहीत्योहां युज्ञो वै विष्णुं। युज्ञस्य धृत्यै। पाहि युज्ञं पाहि युज्ञपेतिं पाहि मां येज्ञनियमित्योह। युज्ञाय यज्ञेमानायाऽऽत्मनै। तेभ्यं एुवाऽऽशिषुमाशास्तेऽनौत्ये॥३७॥ अंसदन्थ्मुकृतस्यं लोक इत्योह। मृत्यं

स्थेत्यांह पृथिवी वेदिर्यन्ति क्रियते वीणुर्वीर्यसम्मितं करोत्याह पाति नाम्नेत्यांह लोके सांदयति षट् चं॥━━━━━━┗[६]

ऊर्खे समिधावा देधाति। अनुयाजेभ्यंः समिधमति शिनष्टि। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्डा ऋतवंः। ऋतूनेव प्रीणाति। वेदेनोपं वाजयति। प्राजापत्यो वे वेदः। प्राजापत्यः प्राणः। यजमान आहवनीयंः। यजमान एव प्राणं दंधाति॥३९॥ अारंमते। अथौं प्रजापेतिः सर्वा देवताः। सर्वा एव देवताः प्रीणाति। अग्निमंग्रीत्रिक्धिः सं मृड्डीत्योह। त्र्यावृद्धि यज्ञः॥४०॥ अग्निना वै होत्रौ। देवा असुंरानुभ्यंभवन्। अग्नयं समिष्यमांनायानुंब्रहीत्यांह आतृंव्याभिभूत्ये। एकेविश्शतिमिध्मदा्रूणि भवन्ति। एकविश्शो वै पुरुषः। पुरुष्स्याऽऽस्यै। पश्चंदशेष्मदा्रूणयुभ्या दंधाति। पश्चंदश् वा अर्धमासस्य रात्रयः। त्रिरुपं वाजयति। त्रयो वै प्राणाः। प्राणानेवास्मिन्दधाति। वेदेनोपयत्यं स्रुवेणं प्राजापृत्यमांघारमा घारयति। युज्ञो वै प्रजापेतिः। युज्ञमेव प्रजापेतिं मुख्त अर्धमासुशः संबक्सर आप्यते। त्रीन्परिधीन्परि दधाति॥३८॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अथो रक्षेसामपेहत्यै। पुरिधीन्थ्सं माँछिं। पुनात्येवेनान्। त्रिस्रिः सं माँछिं।

त्र्यांबृद्धि यज्ञः। अथो मेध्यत्वाये। अथो एते वै देवास्वाः। देवास्वानेव तथ्सं मार्षि। सुवर्गस्यं लोकस्य समेध्ये। आसीनोऽन्यमांघारमा घारयति॥४१॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

तिष्ठेत्रन्यम्। यथाऽनो वा रथं वा युङ्यात्। एवमेव तदेष्वर्युर्यंज्ञं युनिक्ति। सुवर्गस्यं लोकस्याभ्यूँढ्ये। वहेन्त्येनं ग्राम्याः पृशवंः। य एवं वेदं। भूवेनमिसि वि पृथुस्वेत्योह। युज्ञो वै भुवेनम्। युज्ञ एव यजेमानं प्रजयां पृशुभिः प्रथयति। अभ्रे

यष्टीरेदन्नम इत्यांह॥४२॥

अग्निवें देवानां यथौ। य एव देवानां यथौ। तस्मां एव नमंस्करोति। जुहेह्यभिस्त्वौ ह्वयति देवयज्याया उपंभृदेहिं देवस्त्वां सविता ह्वयति देवयज्याया इत्योह। आग्नेयी वे जुहः। सावित्युंपभृत्। तान्यांमेवेने प्रसूत आदंते। अग्नांविष्णू मा वामवं क्रमिषमित्याह। अग्निः पुरस्तात्। विष्णुंर्यज्ञः पृक्षात्॥४३॥

ताभ्यांमेव प्रतिप्रोच्यात्या कांमति। विजिहाथां मा मा सन्तांप्तमित्याहाहि ५ सायै। लोकं में लोककृतौ कृणुतमित्यांह। आमेवैतामा शांस्ते। विष्णोः स्थानंमसीत्यांह।

इन्द्रियमेव यजमाने दथाति। समारभ्योष्की अध्वरो दिविस्पृश्वामित्योह वृद्धौ। आघारमोघार्यमाणमने समारभ्ये। एतस्मिन्काले देवाः सुंवर्ग लोकमायन्। साक्षादेव यजमानः सुवर्ग लोकमेति। अथो समृद्धनैव यज्ञेन यजमानः सुवर्ग लोकमेति। अहुतो यज्ञो यज्ञपेतेरित्याहानाँत्यै। इन्द्रांबान्स्स्वाहेत्याह। इन्द्रियमेव सुवर्गो वै लोको बृहद्धाः। सुवर्गस्यं लोकस्य समेध्यै। यजमानदेवत्यां वै जुहूः। भातृव्यदेवत्योपभृत्। प्राण आधारः। यथ्सं इस्प्रुशयैत्। भातेव्येऽस्य प्राणं देप्यात्। देवानांमेवापंराजित आयतंने तिष्ठति। इत इन्द्रों अकृणोद्दीर्याणीत्यांह॥४४॥ यज्ञो वै विष्णुंः। पुतत्खलु वै द्वानामपंराजितमायतंनम्। यजेमाने दर्याति। बृहद्धा इत्यांह॥४५॥ म् सुर्चरिते भजेत्योह॥४६॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अग्निबांव पावित्रम्। बृजिनमनृतं दुर्श्वरितम्। ऋजुकर्म॰ सृत्य॰ सुचीरितम्।

455 अग्निरेवेनं वृजिनादनृतादुश्चरितात्पाति। ऋजुकर्मे सृत्ये सुचरिते भजति। तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

तस्मांद्वमा शास्ते। आत्मनो गोपीथाये। शिरो वा एतद्यज्ञस्ये। यदांघारः। आत्मा

आघारमाघार्यं ध्रुवाः समनित्ति। आत्मन्नेव यज्ञस्य शिरः प्रतिं दधाति। द्विः समनित्ति। द्वा समनित्ति। द्वी समनित्ति। द्वी समनित्ति। द्वी समनित्ति। द्वी सिर्वे समन्द्र्यात्। त्रियोतु हि शिर् इति। शिरं इवैतद्यज्ञस्य। अथो त्रयो वै प्राणाः। प्राणानेवास्मिन्दधाति। मखस्य शिरोऽसि सञ्योतिषा ज्योतिरङ्गामित्याह। ज्योतिरेवास्मा उपरिष्टाद्द्याति।

परिंदशाति प्राणं देथाति हि युज्ञो घोरयति नम् इत्यांह पृश्वाद्वीयांणीत्यांह भा इत्यांह भुजेत्यांह धुवैवास्मिन्दधाति त्रीणि

सुवर्गस्य लोकस्यानुंख्यात्ये॥४८॥

घिष्णिया वा एते न्युप्यन्ते। यद्द्रह्मा। यद्धोता। यदंष्व्युः। यद्ग्रीत्।

यद्यजमानः। तान् यदेन्तरेयात्। यजमानस्य प्राणान्थ्सङ्कंर्षेत्। प्रमायुकः स्यात्।

पुरोडाशमपगृह्य सअरत्यष्ट्यपुंः॥४९॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

यजमानायैव तस्रोक श्री १षति। नास्यं प्राणान्थ्सङ्कंर्षति। न प्रमायुको भवति।

तां प्रजातिं यजेमानोऽनु प्र जायते। द्विरङ्गलोवनिक्ते पर्वणोः। द्विपाद्यजीमानः प्रतिष्ठित्यै। स्कृदुपं स्तुणाति। द्विरा देधाति। स्कृद्भि घारयति। चृतुः सम्पेद्यते। पुरस्तात प्रत्यङ्कासीनः। इडाया इडामा देघाति। हस्त्यार् होत्री पुशको वा इडौ पृशवः पुरुषः। पृशुष्वेव पृश्नमितिष्ठापयति। इडाये वा एषा प्रजातिः॥५०॥

चत्वारि वै पुशोः प्रतिष्ठानीने। यावानेव पृशुः। तमुपेह्नयते॥५१॥

मुखीमेव प्रत्युपंह्वयेत। सम्मुखानेव पृश्नुपुपं ह्वयते। पृशवो वा इडाँ। तस्माथ्सा-ऽन्वारभ्याँ। अध्वर्धुणो च यजमानेन च। उपेह्रतः पशुमानेसानीत्यांह। उप ह्येनो । े े "

ह्वयंते होता। इडांये देवतानामुपहवे। उपहूतः पशुमान्नेवति। य पृवं वेदं॥५२॥

यां वे हस्त्यामिडांमादधांति। वाचः सा भांगधेयम्। यामुपह्नयेते। प्राणाना र

सा। वार्चं चैव प्राणाङ्श्वावं रुन्ये। अथ् वा एतर्ह्यपैह्तायामिडांयाम्। पुरोडाशंस्येव

बेर्हिषदो मीमा×ुसा। यजमानं देवा अंबुवन्। हविनों निर्वपेति। नाहमंभागो निर्वपस्यामीत्यंब्रवीत्॥ ५३॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

तस्मांदस्थ्राऽन्याः प्रजाः प्रतितिष्ठन्ति। मार्भनान्याः। अथो खल्वांहुः। दक्षिणा वा एता हेविर्यज्ञस्यान्तर्वेद्यवं रुध्यन्ते। यत्पुंरोडाशं बर्हिषदं करोतीति। चृतुर्धा

ब्रह्मा होताँऽप्वर्युर्ग्रीत्। तम्भि मृंशेत्। इदं ब्रह्मणंः। इदर होतुंः। इदमध्वयोंः।

केरोति। चत्वारो ह्येते हिवियुज्ञस्यक्विजः॥५५॥

यजमानो वै पुंरोडाशः। प्रजा ब्र्हिः। यजमानमेव प्रजासु प्रतिष्ठापयति।

बुर्हिषदं करोति॥५४॥

न मयांऽभागयाऽनुंवक्ष्यथेति वागंब्रवीत्। नाहमंभागा पुंरोनुवाक्यां भविष्यामीति पुरोनुवाक्यां। नाहमंभागा याज्यां भविष्यामीति याज्यां। न मयांऽभागेन वर्षद्वरिष्यथेति वषद्वारः। यद्यंजमानभागं नियायं पुरोडाशं बर्राहेषदं करोति। त्रानेव तद्वागिनं करोति। चतुर्धां करोति। चतुर्धां करोति। चतुर्धां करोति। चतुर्धां करोति। चतुर्धां करोति।

अग्रिमुंखा ह्युद्धिः। अग्रिमुंखामेवर्ष्डि यजंमान ऋप्नोति। सकृदुंपस्तीर्ये द्विग्दर्यत्। उपस्तीर्ये द्विग्मि घांरयति। षट्ध्सम्पंद्यन्ते। षड्वा ऋतवंः। ऋतूनेव प्रीणाति। वेदेने ब्रह्मणे ब्रह्मभागं परिहरति। प्राजापुत्यो वै वेदः। प्राजापुत्यो

स्विता युज्ञस्य प्रसूत्यै। अथु काममन्येने। ततो होत्रै। मध्यं वा पृतद्यज्ञस्ये। यद्दोताै। मध्यत पुव युज्ञं प्रीणाति। अथाध्वर्यवै। प्रतिष्ठा वा पृषा युज्ञस्ये। यदेष्वर्युः।

ब्रह्मा॥५७॥

परांडिक ह्येतर्राहे युज्ञः। ड्राष्टिता दैव्या होतांर इत्यांह। ड्राष्टित\* हि कर्म क्रियतें॥ मृद्रवाच्यांय प्रेषितो मानुषः सूक्तवाकायं सूक्ता बूहीत्यांह। आमेवैतामा शाँस्ते।

अन्या दक्षिणा नीयन्ते। युज्ञस्य प्रतिष्ठित्यै। अग्रिमंग्रीथ्सकृथ्संकृथ्सं मृड्डीत्योह

तस्मीद्धविर्यज्ञस्यैतामेवाऽऽवृत्मनुं॥५८॥

ड्डदमग्रीष् इति। यथैवादः सौम्यैऽष्वरे। आदेशंमृत्विग्न्यो दक्षिणा नीयन्तै। तादगेव तत्। अग्रीघै प्रथुमाया देथाति॥५६॥

अथ् सुचांवनुष्टुग्भ्यां वाजंवतीभ्यां व्यूहति। प्रतिष्ठा वा अनुष्टक्। अन्नं वाजः प्रतिष्ठित्यै। अन्नाद्यस्यावेरुस्यो। प्राचीं जुहूमूहति। जातानेव भातृव्यान्प्रणुदते। प्रतीचीमुप्भृतम्। जानिष्यमाणानेव प्रतिनुदते। सविष्वं एवापोद्यं सपलान् स्बगा दैव्या होतृेभ्य इत्योह। यज्ञमेव तथ्स्बगा केरोति। स्वस्तिमनिषेभ्य इत्योह। आमेवैतामा शाँस्ते। शुं योर्बूहीत्योह। शुंयुमेव बार्हस्पत्यं भागपेयेन यथायजुरेबैतत्। स्रुक्षु प्रेस्तरमेनक्ति। इमे वै लोकाः स्रुचंः। यजमानः प्रस्तरः। यजमानमेव तेजसाऽनक्ति। त्रेषाऽनीक्ति। त्रयं इमे लोकाः॥६१॥ द्वान्याम्। द्विप्रतिष्ठो हि। वसुन्यस्त्वा क्द्रेन्यंस्त्वाऽऽदित्येन्य्स्त्वेत्याह। चुरत्युष्वुयुः प्रजातिर्ह्वयते वेदांब्रवीद्वर्रहिषदं करोत्युलिजो दधाति ब्रह्माऽनुकरोति चृत्वारि च॥🕳 यजमानः। अस्मैन्नोके प्रति तिष्ठति॥६०॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३) समंधेयति॥५९॥

ए्भ्य एवैनं लोकेभ्योऽनक्ति। अभिपूर्वमनिक्ति। अभिपूर्वमेव यजमानं तेजंसा-

युजमानमेव तेजंसाऽनक्ति। वियन्तु वय् इत्याह। वयं एवेनं कृत्वा। सुवर्गं लोकं ऽनक्ति। अक्त॰ रिहाणा इत्योह। तेजो वा आज्यम्। यजमानः प्रस्तुरः। तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

गंमयति॥६२॥

प्रजां योनिं मा निर्मुक्षमित्योह। प्रजायै गोपीथाये। आप्यायन्तामाप ओषंधय इत्योह। आपे एवौषंधोरा प्याययति। मुरुतां पृषंतयः स्थत्यांह। मुरुतो वै बृष्यां ईश्रते। बृष्टिमेवावं रुन्ये। दिवं गच्छु ततों नो बृष्टिमेर्यत्याह। बृष्टिं द्योः। वृष्टिमेवावं रुन्ये॥६३॥

याबृद्धा अध्वयुः प्रेस्तरं प्रहर्गति। ताबंदस्यायुमींयते। आयुष्पा अंग्रेऽस्यायुमें पाहीत्योह। आयुरेबाऽऽत्मन्येते। याबृद्धा अध्वयुः प्रेस्तरं प्रहर्गते। ताबंदस्य बक्षुमींयते। बक्षुष्पा अंग्रेऽसि बक्षुमें पाहीत्योह। बक्षुरेबाऽऽत्मन्येते। धुबा-ऽसीत्योह प्रतिष्ठित्ये। यं पीर्धे पर्ययेत्था इत्योह॥६४॥

युथायुजुरेवैतत्। अग्ने देव पृणिभिर्वीयमांणु इत्याह। अग्नयं एवैनुं जुष्टें

तानेव तेनं प्रोणाति। वैश्वदेव्यर्चा। एते हि विश्वं देवाः। त्रिष्टुभ्भंवति। इन्द्रियं वै त्रिष्टुक्। इन्द्रियमेव यजमाने दथाति। अग्नेर्वामपंत्रगृहस्य सर्देसि सादयामीत्याह। इयं वा अग्निरपंत्रगृहः। अस्या एवेने सदंने सादयति। सुम्नायं सुम्निनी सुम्ने मां 461 सुचौ सं प्रस्नोवयति। यदेव तत्रं कूरम्। ततेनं शमयति। जुह्नामुंपभृतम्। यजमानदेवत्यां वै जुहः। भातृव्यदेवत्योपभृत्। यजमानायेव भातृव्यमुपेस्तिं करोति। सङ्स्रावमांगाः स्थेत्याह। वसंवो वै क्द्रा आदित्याः सङ्स्रावमांगाः। त्येत्याह। वसंवो वै क्द्रा आदित्याः सङ्स्रावमांगाः। तेषां तद्धांगधेयम्॥६६॥ समितमित्योह। करोति। तन्ते एतमनु जोषं भरामीत्याह। स्जातानेवास्मा अनुकान्करोति नेदेष त्वदंपचेतयांता इत्याहानुंख्यात्ये। युजस्य पाथ उप भूमानमेवोपैति। परिधीन्म हरिति। युजस्य समिष्ये॥६५॥ तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३) यत्तीमेत्याह्॥६७॥

प्रजा वै प्शवंः सुम्रम्। प्रजामेव पृशूनात्मन्येते। धुरि धुर्यो पातमित्योह।

462 तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

जायापत्योगोंपीथाये। अभ्रेऽदब्यायोऽशीततनो इत्याह। यथायजुरेवैतत्। पाहि माऽद्य दिवः पाहि प्रसित्ये पाहि दुरिष्ट्ये पाहि दुरद्यन्ये पाहि दुश्चेरितादित्याह। आमेवैतामा शास्ते। अविषन्नः पितुं कृणु सुषदा योनिङ् स्वाहेती'ध्मसंबृश्चेनान्यन्वाहार्यपचेनेऽभ्यापायं फलीकरणहोमं जुंहोति। अतिरिक्तानि वा इध्मस् बृश्चेनानि॥६८॥

अतिरिक्ताः फलीकर्गाः। अतिरिक्तमाज्योच्छेष्णम्। अतिरिक्त पुवातिरिक्तं

वेदेनान्वेविन्दन्। वेदेन वेदि विविदुः पृथिवीम्। सा पंप्रथे पृथिवी पार्थिवानि। गर्भ बिभर्ति भुवनेष्वन्तः। ततो यज्ञो जायते विश्वदानिरिति पुरस्तौध्स्तम्बयुजुषो वेदेन दधाति। अथो अतिरिक्तेनैवातिरिक्तमास्वाऽवं रुन्ये। वेदिंदेवेभ्यो निलायत। तां

वेदि भम्माष्ट्रीनुवित्यै॥६९॥

अथो यद्देदश्र वेदिश्र भवंतः। मिथुन्त्वाय् प्रजात्यै। प्रजापंतेर्वं पृतानि

श्मश्रीण। यद्वेदः। पनिया उपस्थ आस्यीत। मिथुनमेव केरोति। विन्दतै प्रजाम्।

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

बुद १ होताऽऽहंबनीयाध्स्तृणत्रेति। युज्ञमेव तथ्सन्तेनोत्योत्तंरस्मादर्धमासात्। त १

463

सन्तंतमुत्तेरऽर्धमास आलेमते॥७०॥

तं कालेकांल आगंते यजते। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। स त्वा अंप्वर्युः स्यात्। यो यतों यज्ञं प्रयुङ्गा तदेनं प्रतिष्ठापयतीति। वाताद्वा अंप्वर्युर्यज्ञं प्रयुङ्गा देवां तिष्टतीमे लोका गमयति द्यौईष्टिमेवावं रुन्ये पर्ययंत्र्या इत्यांहु समिष्टी भाग्येयंन्यत्मित्यांहु वा इंप्मसं वृक्षंनान्यनुवित्यै लभते गातुविदो गातुं वित्वा गातुमितेत्योह। यतं एव युज्ञं प्रयुङ्का तदेनं प्रतिष्ठापयति। प्रति तिष्ठति प्रजयां पृशुभिर्यजमानः॥७१॥

यो वा अयंथादेवतं युज्ञमुंपचरीते। आ देवताभ्यो वृश्यते। पापीयान्मवति। यो यंथादेवृतम्। न देवताभ्य आवृश्यते। वसीयान्भवति। वारुणो वै पाश्रोः।

डुमं विष्यांमि वरुणस्य पाशामित्याह। वृरुणपा्शादेवेनां मुअति। सृषितुप्रंसूतो

यथादेवतम्॥ ७२॥

न देवताभ्य आवृध्यते। वसीयान्मवति। यातुश्च योनौ सुकृतस्यं लोक इत्याह।

आमेवेतामा शांस्ते पूर्णपात्रे। अन्ततोऽनुष्टुभाँ। चतुष्पद्वा एतच्छन्दः प्रतिष्ठितं पत्रिवे पूर्णपात्रे भेवति। अस्मिक्षेके प्रति तिष्ठानीति। अस्मिन्नेव लोके प्रति तिष्ठानीति। अस्मिन्नेव लोके प्रति तिष्ठाति। अथो वाग्वा अनुष्टुक्। वाङ्गिधुनम्। आपो रेतेः प्रजननम्। एतस्माद्वे मिथुनाद्विद्योतेमानः स्तनयेन्वर्षति। रेतेः सिञ्जन्॥७४॥

्रॅंड्र वानात्ये सन्त्वाये। समायुषा् सं प्रजयेत्योह॥७३॥

प्रजाः प्रंजनयन्। यद्वे युज्ञस्य ब्रह्मणा युज्यते। ब्रह्मणा वे तस्ये विमोकः। अद्धिः शान्तिः। विमुक्तं वा एतर्हि योक्नं ब्रह्मणा। आदायैन्त्यतीं सहाप उपगृह्षीते शान्त्यै।

अञ्चलौ पूर्णपात्रमा नंयति। रेतं एवास्यां प्रजां दंयाति। प्रजया हि मंनुष्यंः पूर्णः। मुखं वि मृष्टे। अवभृथस्यैव रूपं कृत्वोत्तिष्ठति॥७५॥

अग्निकै घाता। पुण्यं कमें सुकृतस्यं लोकः। अग्निरेवैनां घाता। पुण्ये कर्मणि सुकृतस्यं लोके देघाति। स्योनं में सह पत्यां करोमीत्यांह। आत्मनंश्च यजमानस्य

465 परिवेषो वा एष वनस्पतीनाम्। यदुपवेषः। य एवं वेदं। विन्दतं परिवेष्टारमै। तमुत्करे। यं देवा मेनुष्येषु। उपवेषमधोरयन्। ये अस्मदपं चेतसः। तानस्मन्यमिहा कुंरु। उपवेषोपं विद्धि नः॥७६॥ स्बित्प्रंमूतो यथादेवृतं प्रजयेत्यांह सिंअन्मृष्ट एकं च॥■

प्रजां पुष्टिमथो धनम्। द्विपदो नश्चतुष्पदः। ध्रुवाननंपगान्कुर्विति पुरस्तात्प्रत्यश्चेः श्रूदा अवेस्यन्ति। स्थिविमत उपेगूहित। तस्मौत्पुरस्तौत्प्रत्यश्चेः श्रूदा अवेस्यन्ति। स्थिविमत उपेगूहित। अप्रीतवादिन एवैनान्कुरुते। धृष्टिर्वा उपवेषः। शुचर्तो वञ्जो ब्रह्मणा संश्वितः। योपेवेषे शुक्। साऽमुमृच्छतु यं द्विष्म इति॥७७॥ अथौस्मै नाम गृह्य प्रहेरति। निरमुत्रुद् ओकंसः। सपत्नो यः पृंतन्यति। निर्बाध्येन हविषा। इन्द्रं एणं परोशरीत्। इहि तिसः पेरावतेः। इहि पञ्च जनार् अति। इहि

इन्द्रों नयतु वृत्रहा। यतो न पुनुरायीसे। शृश्वतीभ्यः समाभ्य इति। त्रिवृद्वा तिस्रोऽति रोचनायावेत्। सूर्यो असंहिवि। प्रमान्त्वां परावतम्॥७८॥

एष वज्रो ब्रह्मणा स॰श्रितः। शुचैवैनं विष्वा। एभ्यो लोकेभ्यों निर्णुद्या वर्ञेण ब्रह्मणा स्तुणुते। हृतोऽसावविधिष्मामुमित्योह स्तुत्यैं। यं द्विष्यातं ध्यायेत्। शु<del>चैवैन</del>मर्पयति॥७९॥

प्रत्युष्टं दिवः शिल्पमयंज्ञो घृतं चं देवासुराः स एतमिन्द्र आपों देवीर्प्रिना धिष्णिंया अथ् सुचौ यो वा अयंथादेवतं

परिवेषो वा एकांदश॥११॥

प्रत्युष्टमर्पयति॥

प्रत्युष्ट्मयंत्र एषा हि विश्वेषां देवानांमूर्जा पृष्यिवीमथो रक्षंसा्न्तां प्रजांतिं द्वाभ्यां तं कालेकांले नवंसप्ततिः॥७९॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके तृतीयः प्रपाठकः समाप्तः॥

हरिः ओम्॥

चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

### ॥ चतुर्थः प्रश्नः॥

# ॥तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः॥

ब्रह्मणे ब्राह्मणमालेमते। क्षत्रायं राजुन्यम्। मुरुख्रो वैश्यम्। तर्पसे शूद्रम्।

तमेसे तस्केरम्। नारंकाय वीर्हणमैं। पाप्मनै क्रीबम्। आक्रयायांयोगूम्। कामांय युॐश्<u>र</u>क्लम्। अतिकुष्टाय मागुषम्॥१॥

गीतायं सूतम्। नृतायं शैलूषम्। धर्माय सभाच्रम्। नुर्मायं रेभम्। नरिष्ठायै भीमुलम्। हसाय कारिम्। आनुन्दायं स्त्रीषुखम्। प्रमुदं कुमारीपुत्रम्। मेथायै रथकारम्। धैर्याय तक्षांणम्॥२॥

श्रमांय कौलालम्। मायायै कार्मारम्। रूपायं मणिकारम्। शुभे वपम्।

शुरव्याया इषुकारम्। हेत्यै धन्वकारम्। कर्मणे ज्याकारम्। दिष्टाये रञ्जुसर्गम्।

मृत्यवे मृग्युम्। अन्तंकाय श्वनितम्॥३॥

468 वतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

न्दीभ्यंः पौञ्चिष्टम्। ऋक्षीकाभ्यो नैषांदम्। पुरुष्याघ्रायं दुर्मदम्। प्रयुद्ध उन्मंतम्। गन्यर्वाफ्सराभ्यो ब्रात्यम्। सप्देवजनभ्योऽप्रीतपदम्। अवैभ्यः कित्वम्। इर्यताया अकितवम्। पिशाचेभ्यो बिदलकारम्। यातुधानैभ्यः कण्टककारम्॥५॥ सन्यये जारम्। गेहायोपपतिम्। निर्ऋत्ये परिवित्तम्। आत्ये परिविविदानम्। अराध्ये दिधिषूपतिम्। प्वित्राय मिषजम्। प्रज्ञानाय नक्षत्रद्र्शम्। निष्कृत्ये पेशस्कारीम्। बलायोप्दाम्। वर्णायानूरुधम्॥४॥

उथ्सादेभ्यंः कुडाम्। प्रमुदे वामनम्। द्वाभ्यंः स्नामम्। स्वप्नांयान्थम्। अर्थमिय बधिरम्। संज्ञानीय स्मरकारीम्। प्रकामोद्यायोपसदम्। आशिक्षायै प्रश्चिनम्। उपश्चिक्षायां अभिप्रश्चिनम्। म्यादाये प्रश्चविवाकम्॥६॥

ऋत्यै स्तेनहंदयम्। वैरंहत्याय पिशुंनम्। विविन्यै क्षनारम्। औपंद्रष्टाय सङ्ग्रहीतारम्। बलोयानुचरम्। भूम्ने पीरिष्क्नन्दम्। प्रियायं प्रियवादिनम्। अरिष्ट्या अश्वसादम्। मेघाय वासः पत्पूलीम्। प्रकामायं रजयित्रीम्॥७॥

469 नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

भायै दार्वाहारम्। प्रभायां आग्रेन्थम्। नाकंस्य पृष्ठायांभिषेक्तारम्। ब्रप्नस्य विष्टपांय पात्रनिर्णेगम्। देवलोकायं पेशितारम्। मनुष्यलोकायं प्रकरितारम्।

सर्वेन्यो लोकेन्यं उपसेक्तारम्। अवेत्येँ वृधायोपमन्थितारम्। सुवगीयं लोकायं

भागदुधम्। वर्षिष्ठाय नाकांय परिवेष्टारम्॥८॥

युम्यै यमुसूम्। अर्थर्वभ्योऽवेतोकाम्। संवृथ्स्रायं पर्यारिणीम्। परिवृथ्स्राया-

<u>इदाव्यस्रायांप्रकद्वंरीम्।</u>

विजाताम्।

शीलायाञ्जनीकारम्। निर्ऋत्ये कोशकारीम्। युमायासूम्॥१०॥

<u>इ</u>द्धथ्मरायातीत्वेरीम्। वृथ्मराय

मन्यवेऽयस्तापम्। कोषांय निस्रम्। शोकांयामिस्रम्। उत्कृ<u>लिवक</u>ुलाभ्यां त्रिस्थिनम्। योगांय योकारम्। क्षेमांय विमोक्तारम्। वर्षेषे मानस्कृतम्।

बीयांयाविपालम्। इरांये कीनाशम्। कीलालांय सुराकारम्। भ॒द्रायं गृहुपम्। श्रेयंसे वित्तयम्। अध्यक्षायानुक्षत्तारम्॥९॥

अमैन्यो हस्तिपम्। जुबायाँश्वपम्। पुष्टौ गोपालम्। तेजंसेऽजपालम्

सरौन्यो धेवरम्। वेशन्तान्यो दाशम्। उपस्थावंरीन्यो बैन्दम्। नृङ्गलान्येः शौष्कुलम्। पार्याय कैवर्तम्। अवायीय मार्गारम्। तीर्थेभ्यं आन्दम्। विषेमेभ्यो विजंजिराम्। संब्थ्सराय् पलिक्रीम्। वनाय वनपम्। अन्यतोरण्याय दावपम्॥११॥ नतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

मैनालम्। स्वनैयः पर्णकम्। गुहौग्यः किरातम्। सानुभ्यो जम्भेकम्। पर्वतेभ्यः

किम्प्रुषम्॥१२॥

प्रतिश्रुत्काया ऋतुलम्। घोषाय भषम्। अन्ताय बहुवादिनम्। अनुन्ताय मूकम्॥ महेसे बीणावादम्। क्रोशाय तूणवध्मम्। आकृन्दायं दुन्दुभ्याघातम्। अवरस्परायं

वर्णाय हिरण्यकारम्। विश्वेभ्यो देवेभ्यंः सिष्मुलम्। पृश्वाद्योषायं ग्लावम्। ऋत्ये

जनवादिनम्। व्यध्या अपगुल्भम्। स्॰्श्रायं प्रच्छिदम्॥१४॥

बीमुध्सायै पौल्कुसम्। भूत्यै जागर्णम्। अभूत्यै स्वपुनम्। तुलायै वाणिजम्।

शङ्खस्मम्। ऋभुग्योजिनसन्यायम्। साष्येभ्यंश्वर्मम्णम्॥१३॥

हसांय पुङ्श्रकूमा लेभते। बीणावादं गणेकं गीताये। यादेसे शाबुल्याम्। नुर्मायं

मद्रवृतीम्। तूण्व्ध्मं ग्रांमृण्यं पाणिसङ्गुतं नृताये। मोदायानुक्रोशंकम्। आनुन्दायं चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् ३) तल्बम्॥१५॥

अुक्षराजायं कित्वम्। कृतायं सर्माविनम्। त्रेताया आदिनवदुर्शम्। द्वापुरायं

बहिः सदमै। कलेये सभास्थाणुम्। दुष्कृतायं चरकांचार्यम्। अध्वेने ब्रह्मचारिणमै। पिशाचेभ्यः सैलगम्। पिपासायै गोव्यच्छम्। निर्ऋत्यै गोघातम्। क्षुये गोविकर्तम्। क्षुत्तृष्णाभ्यान्तम्। यो गां विकृन्तेन्तं मार्सं भिक्षेमाण उपतिष्ठेते॥१६॥

भूम्यै पीठस्पिण्मा लेभते। अग्रयेऽৼंस्लम्। बायवे चाण्डालम्। अन्तरिक्षाय बाचे पुरुषमा लेभते। प्राणमेपानं व्यानमुदान॰ समानं तान् बायबै। सूर्याय वर्शनृतिनम्। दिवे खंलृतिम्। मूर्याय हर्यक्षम्। चृन्द्रमंसे मिर्मिरम्। नक्षेत्रेभ्यः चक्षुरा लेभते। मनेश्वन्द्रमंसे। दिग्ग्यः श्रोत्रम्। प्रजापंतये पुरुषम्॥१८॥ किलासम्। अहे शुक्रं पिंङ्गलम्। रात्रिये कृष्णं पिङ्गक्षम्॥१७॥

अथैतानरूपेभ्य आलेभते। अतिहस्बमतिदीर्घम्। अतिकृश्ममत्यरंसलम्।

ब्रह्मणे गीतायु श्रमांय सुन्धये नुदीभ्यं उथ्सादेभ्यु ऋत्यै भाया अर्मैभ्यो मुन्यवे युम्यै दशंदश् सरीभ्यो द्वादंश अतिकिरिटमतिदन्त्रम्। प्रतिश्रुत्कांयै बीम्थ्सायै दशंदश हसांय सुप्ताक्षंगुजाय त्रयोदश भूम्यै दशं बाचे षड्थु नवैकात्रविरंशतिः॥१९॥ अतिमिर्मित्मितिमेमिषम्। आशायै जामिम्। प्रतीक्षायै कुमारीम्॥१९॥ अतिक्षक्ष्णमतिलोमशम्। अतिश्क्रमतिकृष्णम्। चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

ब्रह्मणे कुमारीम्॥

ब्रह्मणे यम्यै नवंदशा।१९॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥

पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

|| **1284**: 128: ||

## ॥तौत्तरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके पञ्चमः प्रपाठकः॥

सृत्यं प्रपेद्ये। ऋतं प्रपेद्ये। अमृतं प्रपेद्ये। प्रजापेतेः प्रियां तनुबमनौतौ प्रपेद्ये। इदमृहं पेश्चद्शेन बन्नेण। द्विषन्तं आतृष्यमवं कामामि। यौऽस्मान्द्वेष्टिं। यं चं व्यं द्विष्मः। भूर्भुबः सुवेः। हिम्॥१॥

प्र वो वाजां अभिद्यवः। ह्विष्मेन्तो घृताच्यां। द्वाञ्जिगाति सुम्रयुः। अग्रु आयांहि

वीतयै। गुणानो हव्यदातये। नि होतां सध्सि ब्युहिषि। तं त्वां समिद्धिरङ्गिरः। घृतेने वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठा। स नेः पृथुः श्रुवाय्यम्॥२॥

अच्छां देव विवासिसि। बृहदंग्ने सुवीर्यम्। ईंडेन्यों नमुस्येस्तिरः। तमार्शसि दर्शतः। सम्ग्रिरिध्यते वृषाँ। वृषों अग्निः सिमिध्यते। अश्वो न देववाहंनः। तर हिविष्मेन्त ईडते। वृषेणं त्वा वृयं वृषन्। वृषाणः समिधीमहि॥३॥

र्षे अहता देवान् येक्षि स्वध्वरा त्वर्हि हेव्यवाडीसी आ जुहोत दुवस्यती अग्निं प्रयत्येष्वरे। वृणीष्वर हेव्यवाहेनम्। त्वं वर्षण उत मित्रो अग्ने। त्वां वर्धीत्ते मृतिभिर्वसिष्ठाः। त्वे वसुं सुषणनानि सन्तु। यूयं पात स्वस्तिभिः सदां नः॥४॥ अग्रे दीद्यंतं बृहत्। अग्निं दूतं वृणीमहे। होतांरं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्यं सुकतुम्। समिष्यमानो अष्वरे। अग्निः पांवक ईड्यः। शोचिष्केश्वस्तमीमहे। समिद्धो पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

श्रुवाय्यीमधीमृद्यसिं सुप्त चं॥**—** 

ऋषिष्टतो विप्रांनुमदितः। कृविश्रम्तो ब्रह्मंस\*शितो घृताहंवनः। प्रणीर्यज्ञानाम्। मृहाः असि ब्राह्मण भारता असावसौ। देवेछो मन्विद्धः र्थीरेष्वराणाम्। अतूर्तो होतां। तूर्णिर्हव्यवाट्। आस्पात्रं जुहूर्देवानाम्॥५॥ अंग्रे

चमसो देवपानेः। अरा॰ इंवाग्ने नेमिर्देवाङ्स्त्वं पीरेभूरीसे। आ वेह देवान् यजेमानाय। अग्निमेश्र आवेह। सोमुमावेह। अग्निमावेह। प्रजापेतिमावेह। अुग्नीषोमावावंह। इन्द्राग्नी आवंह। इन्द्रमावंह। मुहेन्द्रमावंह। देवा॰ आज्यपा॰

आवेह। अग्नि॰ होत्रायावेह। स्वं मेहिमानुमा वेह। आ चौग्ने देवान् वहे। सुयजां च यज जातवेदः॥६॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

देवानामिन्द्रमा वेह षट् चे॥🕳

अग्निरहोता वेत्वग्निः। होत्रं वैतु प्रावित्रम्। स्मो वयम्। सापु ते यजमान देवता। घृतवेतीमध्वर्यो स्रुचमास्येस्व। देवायुवं विश्ववाराम्। ईडांमहे देवा॰ ईडेन्यान्। नुमस्यामे नमुस्यान्। यजांम यत्रियान्॥७॥

स्मिधों अग्रु आज्येस्य वियन्तु। तनूनपोदग्रु आज्येस्य वेतु। इडो अंग्रु अभिरहोता नवं॥🕳

आज्येस्य वियन्तु। बुर्हिरंग्रु आज्येस्य वेतु। स्वाहाऽग्निम्। स्वाहा सोमम्। स्वाहा-ऽग्निम्। स्वाहा प्रजापेतिम्। स्वाहाऽग्नीषोमौ। स्वाहेन्द्राग्नी। स्वाहेन्द्रम्। स्वाहो

महेन्द्रम्। स्वाहो देवा॰ आ"ज्युपान्। स्वाहाऽग्नि॰ होत्राञ्चुषाणाः। अग्रु आज्येस्य

वियन्तु॥८॥

ड्रन्द्राधी पश्चंच॥∎

476 पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अग्निर्वत्राणि जङ्गनत्। द्रविणस्युविपन्ययाै। समिद्धः शुक्र आहेतः। जुषाणो अग्निराज्येस्य वेतु। त्व॰ सोमासि सत्पेतिः। त्व॰ राजोत वृत्रहा। त्वं भद्रो असि कतुः। जुषाणः सोम् आज्येस्य हविषो वेतु। अग्निः प्रलेन् जन्मेना। शुम्भानस्तनुबङ् स्वाम्। कृविविप्रेण वावृधे। जुषाणो अग्निराज्येस्य वेतु। सोमं गोभिङ्घां व्यम्।

अग्निमूर्धा दिवः कुकुत्। पतिः पृथिव्या अयम्। अपा॰ रेता॰सि जिन्वति। भुवो यज्ञस्य रजसम्भ नेता। यत्रो नियुद्धः सचेसे शिवाभिः। दिवि मूर्धानं दिषिषे

स्वा∜ षट् चं॥∎

वेतु॥९॥

वृर्धयांमो वचोविदेः। सुमृडीको न आविशा जुषाणः सोम् आज्येस्य हविषो

मुबर्षाम्। जिह्वामेग्ने चकुषे हव्यवाहमी प्रजापते न त्वदेतान्यन्यः। विश्वां जातानि

गरे ता बेभूव। यत्कोमास्ते जहुमस्तं नौ अस्तु॥१०॥

वृषङ् स्यांम् पतंयो रयोणाम्। स वेद पुत्रः पितर्॰ स मातरम्। स सूनुर्भेवृथ्स

भुंवत्पुनेर्मघः। स द्यामौर्णोदन्तरिक्ष॰ स सुवेः। स विश्वा भुवो अभवध्स आर्नवत्। अग्नीषोमा सवेदसा। सहूती वनतिङ्गिरः। सन्देवत्रा बेभूवधुः। युवमृतानि दिवि तैचनानि। अग्निश्चं सोम् सर्कतू अधतम्॥११॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

युव ९ सिन्यू ९ रमिशंस्तेरवृद्यात्। अग्नीषोमावमुंश्चतं गृभीतान्। इन्द्रांग्री रोचना

दिवः। परि वाजेषु भूषथः। तद्वौञ्चेति प्रवीर्यम्। श्जर्धहृत्रमुत संनोति वाजम्॥ इन्द्रा यो अग्नी सहुरी सप्यति। इर्ज्यन्तां वस्व्यंस्य भूरैः। सहंस्तमा सहंसा वाज्यन्ता। एन्द्रं सानुसि॰ र्यिम्॥१२॥

सोजेत्वांन १ सदासहमै। वर्षिष्ठमृतये भर। प्रसंसाहिषे पुरुहूत शत्रून्। ज्येष्ठंस्ते शुष्में <u>इ</u>ह रातिरंस्तु। इन्द्रा भेर दक्षिणेना वसूनि। पतिः सिन्धूनामसि रेवतीनाम्। मृहा १ इन्द्रो य ओजंसा। पुर्जन्यो वृष्टिमा १ इव। स्तोमैवश्सस्य वावृधे। मृहा १ इन्द्रों नृवदाचेर्षाणेप्राः॥१३॥

उत द्विबर्हा अमिनः सहोभिः। अस्मद्रियंग्वावृधे वीर्याय। उरुः पृथुः सुकृतः

कर्तीमेर्मूत्। पिप्रोहि देवा र उंश्वतो यविष्ठ। विद्वा र ऋतू र र्ऋतुपते यजेह। ये दैव्यां ऋत्विज्स्तेमिरग्ने। त्व र होर्तृणामुस्यायेजिष्ठः। अग्निश् स्विष्टकृतम्। अयांडग्निर्भेः प्रिया धामांनि। अयातृथ्सोमंस्य प्रिया धामांनि॥१४॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अयांडुग्नेः प्रिया धामांनि। अयांद्रजापंतेः प्रिया धामांनि। अयांडुग्नीषोमयोः

प्रिया धामोनि। अयोडिन्द्राभ्रियोः प्रिया धामोनि। अयाडिन्द्रंस्य प्रिया धामोनि। अयाँण्महेन्द्रस्यं प्रिया धामोनि। अयाँड्रेवानांमाज्युपानाँ प्रिया धामोनि।

यक्षंद्ग्रेर्होतुः प्रिया धामानि। यक्षुथ्स्वं मेहिमानम्। आर्यजतामेज्या इषेः।

कृणोतु सो अर्ध्वरा जातवेदाः। जुषतार्थ हविः। अग्रे यदद्य विशो अष्वरस्य होतः। पावेक शोचे वेट्वर हि यज्वा। ऋता येजासि महिना वियद्भः। हव्या वेह

- उपेहूत\* रथन्त्र\* सृह पृथिव्या। उपे मा रथन्त्र\* सृह पृथिव्या ह्वेयताम्।

उपंहूतं वामदेव्यः सृहान्तरिंक्षेण। उपं मा वामदेव्यः सृहान्तरिंक्षेण ह्रयताम्।

अस्त्व<u>थत्तर र</u>ुषिं चंर्षणिप्राः सोमंस्य प्रिया धामानीषः षद्दे॥**—** 

यविष्ठ या ते अद्या१५॥

उपेहूतं बृहथ्सह दिवा। उपे मा बृहथ्सह दिवा ह्वेयताम्। उपेहूताः सृप्त होत्रौः। उपे मा सृप्त होत्रौ ह्वयन्ताम्। उपेहूता धेनुः सृहर्षेभा। उपे मा धेनुः सृहर्षेभा पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

उपंहूतो भृक्षः सखाँ। उपं मा भृक्षः सखाँ ह्वयताम्। उपंहूताँ(४)हो। इडोपंहूता। उपंहूतेडाँ। उपो अस्मार इडाँ ह्वयताम्। इडोपंहूता। उपंहूतेडाँ। मानवी घृतपंदी ह्यताम्॥१६॥

मैत्रावरूणी। ब्रह्मं द्वकृतमुपंहूतम्॥१७॥

दैव्यां अभ्वर्धव उपेहूताः। उपेहूता मनुष्याः। य इमं यज्ञमवान्। ये यज्ञपितिं वर्धान्। उपेहूते द्यावापृथिवी। पूर्वजे ऋतावंरी। देवी देवपुत्रे। उपेहूतोऽयं यजमानः। उत्तरस्यान्देवयुज्यायामुपेहूतः। भूयीसे हविष्करंण उपेहूतः। दिव्ये धाम्जुपेहूतः। ड्डं में देवा ह्विजुंषन्तामिति तस्मित्रुपंहृतः। विश्वंमस्य प्रियमुपंहृतम्। विश्वंस्य प्रियस्योपंहृतस्योपंहृतः॥१८॥

480 देवं बर्हिः। वसुवने वसुधयंस्य वेतु। देवो नराश्वःसंः। वसुवने वसुधयंस्य वेतु। देवो आग्रः स्विष्टकृत्। सुद्रविणा मन्द्रः कविः। स्त्यमंन्मायुजी होताँ। होतुरहोतुरायंजीयान्। अग्रे यान्देवानयाँट्। याः अपिप्रेः। ये ते होत्रे अमंध्सत। ताः संसनुषीः होत्रान्दवङ्गमाम्। दिवि देवेषुं यज्ञमेरंयेमम्। स्विष्टकृष्टाग्रे होता-ऽभूः। वसुवने वसुधयंस्य नमोवाके वीहि॥१९॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अपिप्रेः पश्चं च॥

ड्डं द्यांवापृथिवी भ्द्रमंभूत्। आध्में सूक्तवाकम्। उत नेमोवाकम्। ऋध्यास्मं सूक्तोच्यंमग्ने। त्वर सूक्तवागीसि। उपित्रितो दिवः पृथिव्योः। ओमंन्वती तेऽस्मिन् युत्रे यंजमान् द्यावापृथिवी स्ताम्। शृङ्ये जीरदान्। अत्रेस्नू अप्रवेदे। उरुगव्यूती अभयं कृतौं॥२०॥

कृष्टिद्यांवा रीत्यांपा। शुम्भुवौ मयोभुवौ। ऊर्जस्वती च पर्यस्वती च। सूप्चरणा चे स्वधिचर्णा चे। तयोराविदि। अग्निरिदश हविरंजुषत। अवीवृधत महो

पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

हविरंज्यता। २१॥

ज्यायोऽकृत। सोमे इद १ हिविरंजुषत। अवीवृधत् महो ज्यायोऽकृत। अग्निरिद १

अवींकृथत् महो ज्यायोंऽकृत। प्रजापीतिरिदः हविरंजुषत। अवींकृथत् महो

ज्यायोऽकृत। अग्रीषोमांविद॰ ह्विरंजुषेताम्। अवीवृधेतां महो ज्यायौऽकाताम्।

इन्द्राग्नी इद्र हिविरंजुषेताम्। अवीवृधेतां महो ज्यायौऽकाताम्। इन्द्रं इद्र

ह्विरंजुषता अवीवृधत् महो ज्यायोंऽकृता मृहेन्द्र इद॰ ह्विरंजुषत॥२२॥

अवीवृधत् महो ज्यायोऽकृता देवा आज्यपा आज्येमजुषन्ता अवीवृधन्त

महो ज्यायौंऽकता अग्निर्होत्रेणेद॰ हिविरंजुषता अवीवृधत महो ज्यायोऽकृत।

अस्यामृष्द्धोत्रायान्देवङ्गमायाम्। आशास्तेऽयं यजमानोऽसौ। आयुरा शास्ते।

सुप्रजास्त्वमा शौस्ते। सजातवनस्यामा शौस्ते॥२३॥

विश्वं प्रियमा शाँस्ते। यद्नेनं ह्विषाऽऽशाँस्ते। तदंश्यातदंध्यात्। तदंस्मे देवा

उत्तरान्देवयुज्यामा शास्ते। भूयो हिविष्करंणमा शास्ते। दिव्यं धामा शास्ते।

481

```
482
पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)
```

तच्छुं योरावृणीमहे। गातुं यज्ञाये। गातुं यज्ञपंतये। दैवीं स्वस्तिर्यस्तु नः। स्वस्तिमन्तियः। कुर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नों अस्तु द्विपदें। शं चतुष्पदे॥२५॥

आप्यांयस्व सन्तै। इह त्वष्टांरमग्रियं तत्र्रंस्तुरीपम्। देवानां पत्नीरुश्तीरंबन्तु

तच्छुं योर्ष्टो॥\_\_\_

 $\frac{1}{2}$ 

नः। प्रावेन्तु नस्तुजये वाजंसातये। याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते। ता नौ

देवीः सुहवाः शर्म यच्छता उत ग्रा वियन्तु देवपंतीः। इन्द्राण्यंग्राय्यिष्विनी राह।

आ रोदंसी वरुणानी श्रंणोतु। वियन्तुं देवीर्य ऋतुर्जनीनाम्॥२६॥

अग्निर्होतां गृहपेतिः स राजाः। विश्वां वेद जिनेमा जातवेदाः। देवानांमुत

यो मत्यांनाम्। यजिष्टः स प्र यंजतामृतावा। व्यमुं त्वा गृहपते जनांनाम्। अग्रे

रोसन्ताम्। तद्गिर्वेवो देवेभ्यो वनेते। व्यमग्नेमनिषाः। इष्टं चे वीतं चे। उमे चे नो द्यावोपृथिवी अरहेसस्पाताम्। इह गतिवामस्येदं चे। नमो देवेभ्यः॥२४॥

483 अकेर्म समियां बृहन्तम्। अस्थूरि णो गार्हेपत्यानि सन्तु। तिग्मेनं नुस्तेजंसा पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

जनीनामष्टो चं॥\_\_

स्शिशायि॥२७॥

उपेहूतं वामदेव्यश् सृहान्तरिक्षेण। उपं मा वामदेव्यश् सृहान्तरिक्षेण ह्वयताम्। उपेहूतं बृहथ्सह दिवा। उपं मा बृहथ्सह दिवा ह्वयताम्। उपेहूताः सप्त होत्राः। उपं मा सप्त होत्राँ ह्वयन्ताम्। उपेहूता घेनुः सृहर्षेभा। उपं मा घेनुः सृहर्षेभा उपंहूत रथन्त्र सृह पृथिया। उपं मा रथन्त्र सृह पृथिया ह्रयताम्

ह्वयताम्॥ २८॥

उपंहूतो भृक्षः सखाँ। उपं मा भृक्षः सखाँ ह्वयताम्। उपंहूताँ(४)हो। इडोपंहूता। उपंहूतेडाँ। उपो अस्मार इडाँ ह्वयताम्। इडोपंहूता। उपंहूतेडाँ। मानवी घृतपंदी देव्यां अध्वर्यव् उपंहूताः। उपंहूता मनुष्याः। य इमं युज्ञमवान्। ये युज्ञपंत्रीं मैत्रावरूणी। ब्रह्मे देवकृत्मुपंहूतम्॥२९॥

हविष्करंण उपेहता। दिव्ये धाम्जुपेहता। इदं में देवा हविर्जुषन्तामिति तस्मिन्नुपेहता। विश्वेमस्याः प्रियमुपेहूतम्। विश्वेस्य प्रियस्योपेहूतस्योपेहूता॥३०॥ ~ ~ **I** योग ड्रन्द्राणीवोऽविध्वा। अदितिरिवं सुपुत्रा। उत्तंरस्यान्देवयुज्यायामुपंहूता। भूयंसि वर्धान्। उपहूते द्यावापृथिवी। पूर्वजे ऋतावेरी। देवी देवपुत्रे। उपहूतेयं यजमाना। स्त्यं प्रवोऽप्रें मृहानृप्रिर्होता स्मिथोऽप्रिर्वृत्राण्यप्रिमी्र्रीपहूतं देवं बर्ग्होर्दं द्यांवाप्रथिवी तच्छुं हरिः ओम्॥ सृत्यं वृषङ् स्यांम वृष्टिद्यांवा त्रि॰्शत्॥३०॥ स्हर्षेभा ह्वयतामुपंहूत॰ सुपुत्रा षद्गा━ व्यांयुस्वोपंहृत्ज्ञयोंदश॥१३॥ स्त्यमुपहूता॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके पञ्चमः प्रपाठकः समाप्तः॥

|| **48**H: **48**:||

॥तौत्तरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके षष्ठः प्रपाठकः॥

अअन्ति त्वामध्वरे देवयन्तेः। वनस्पते मधुना दैव्येन। यदूर्व्वस्तिष्टाद्रविणेह

सुमिती मीयमानः। वर्चोघा युज्ञवाहसा समिद्धस्य श्रयंमाणः पुरस्तात्। ब्रह्मं धंतात्। यद्वा क्षयो मातुर्स्या उपस्थै। उच्छ्रंयस्व वनस्पते। वर्ष्मन्गुथिव्या अधि।

वन्वानो अजर्र सुवीरम्॥१॥

आरे अस्मदमीते बार्यमानः। उच्छ्यस्व महुते सौभेगाय। कुर्घ्वं कुषुणं कुतयैं। तिष्ठां देवो न संविता। ऊर्ज्जो वाजंस्य सर्निता यदिशिभेः। वाघाद्वेविह्नयामहे।

ऊर्ष्वो नेः पाह्य×हंसो नि केतुनां। विश्व× सम्तिणंन्दह। कृधी नं ऊर्ष्वां च रथांय जीवसें। विदा देवेषुं नो दुवेः॥२॥

जातो जायते सुदिन्त्वे अह्राम्। सम्ये आ विद्धे वर्धमानः। पुनन्ति धीरां अपसो मनीषा। देवया विप्र उदियर्ति वाचमै। युवां सुवासाः परिवीत् आगौत्। षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

स उ श्रेयांन्भवित जायेमानः। तं धीरोसः कवय उन्नेयन्ति। स्वाधियो मनेसा देवयन्तेः। पृथुपाजा अमेत्येः। घृतनिर्णिख्स्वोहुतः। अग्निर्यज्ञस्ये हव्यवाट्। तर् स्बाधो यतः स्नुंचः। इत्था धिया यज्ञवंन्तः। आचंकुरग्निमूतये। त्वं वर्रण उत मित्रो अग्ने। त्वां वर्धन्ति मृतिभिर्वसिष्ठाः। त्वे वसुं सुषण्नानि सन्तु। यूयं पोत

वर्ष्मन्दिव इडस्पदे वेत्वाऽऽज्यंस्य होतर्यज्ञं। होतां यक्षत्तनूनपांतमदितेगर्भे भुवंनस्य गोपाम्। मध्वाद्य देवो देवेभ्यों देवयानान्यथो अनन्तु वेत्वाऽऽज्यंस्य होतर्यजां। होतां यक्षत्रराश्यःसं नृश्यः प्रंगत्रम्। गोभिर्वपावान्थस्याद्वीरैः शक्तीवात्रथैः प्रथम्या वा हिरंण्येश्वन्द्री वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यंता होतां

होतो यक्षद्गिश स्मियो सुष्मिया सिमें इं नाभो पृथिव्याः संङ्गेथे वामस्यं

स्वस्तिभिः सदो नः॥३॥

मुवीरं दुवः स्वोहुतोऽष्टो चे॥🕳

यक्षद्गिमिड ईडितो देवो देवा॰ आवेक्षदूतो हेव्यवाडमूरः। उपेमं युज्ञमुपेमां

486

487 पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

देवो देवहीतेमवतु वेत्वाऽऽज्येस्य होत्यंजी होतां यक्षद्वर्हाः सुष्टरीमोर्णम्रदा अस्मिन् युज्ञे वि च प्र चे प्रथताः स्वास्स्थं देवेभ्यः। एमेनद्द्य वसेवो रुद्रा ऑदित्याः संदन्तु प्रियमिन्द्रस्यास्तु वेत्वाऽऽज्येस्य होत्यंजी॥४॥

होतां यक्षदुषासानक्तां बृहती सुपेशंसा नृङ्ः पतिभ्यो योनिं कृण्वाने। सङ्स्मर्यमाने इन्द्रेण देवैरेदं बर्हिः सींदतां बीतामाज्येस्य होत्यंजी होतां यक्षदेव्या होतांरा मन्द्रा पोतांरा कवी प्रचेतसा। स्विष्टमद्यान्यः कंरदिषा

स्वीभेगूर्तमन्य ऊर्जा सर्तवसेमं यज्ञं दिवि देवेषु धत्तां वीतामाज्येस्य होतर्यज्ञी होतां यक्षत्तिस्रो देवीरपसामपस्तेमा अच्छिद्रमद्येदमपेस्तन्वताम्। देवेभ्ये देवीद्वमपो वियन्त्वाज्येस्य होत्र्यंता होतां यक्षत्त्वष्टांरमचिष्ट्रमपोक॰ रेतोध

यशोधाम्। पुरुरूपमकामकर्शनः

होतां यक्षद्दुरं ऋष्वाः केवृष्यो कोषधावनी्रुरदाताभीजिहितां विपक्षोभिः

अयन्ताम्। सुप्रायुणा आस्मन् युज्ञे विश्रयन्तामृतावृधो वियन्त्वाज्येस्य होत्ययंज

488

शृशमन्नरंः। स्वदाथ्स्वधितिर्ऋतुथाद्य देवो देवेभ्यों हव्यावाङ्केत्वाऽऽज्येस्य होत्येजी होतो यक्षद्भिङ् स्वाहाऽऽज्येस्य स्वाहा मेदेसः स्वाहौ स्तोकानाङ् वीरैर्वेत्वाऽऽज्येस्य होतर्यजी होतां यक्षद्वनस्पतिंमुपावंस्रक्षिष्टियो जोष्टार ५ पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

स्वाहा स्वाहांकृतीनार्ष्ट स्वाहां हुव्यसूत्तीनाम्। स्वाहां देवार आज्यपान्थस्वाहा-प्रियमिन्द्रस्यास्तु बेल्वाऽऽज्येस्य होत्रर्यंजं सुबीरों बीरैर्वेत्वाऽऽज्येस्य होत्रर्यंजं च्त्वारिं च (अप्रिननूनपांतृत्रग्शश्समप्रिमिड ऽग्नि॰ होत्राञ्चषाणा अग्नु आज्यंस्य वियन्तु होत्रर्यजं॥५॥

ईडितो ब्र्हिर्दुर उषासानका दैव्या तिस्नस्वष्टांर वनस्पतिमाग्नम्। पश्च वेत्वेको वियन्तु द्विर्धातामेको वियन्तु द्विर्देत्वेको वियन्तु

होत्र्यंजं॥)॥🗕

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे। देवो देवान् यंजसि जातवेदः। आ च वहं मित्रमहश्चिकित्वान्। त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः। तनूनपात्प्थ ऋतस्य यानान्। मप्वां सम्अन्थ्यवेदया सुजिह्न। मन्मानि धोमिक्त युज्ञमृन्यन्। देव्त्रा चं कृणुह्यप्वरं नेः। नर्गश्रश्संस्य महिमानेमेषाम्। उपं स्तोषाम यज्नतस्यं युज्ञैः॥६॥

ते सुकतंवः शुचेयो धियुन्धाः। स्वदंन्तु देवा उुभयोनि हुव्या। आजुह्वांनु ईड्यो

पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

यक्षीषितो यजीयान्। प्राचीनं बर्हिः प्रदिशां पृथिव्याः। वस्तोर्स्या वृज्यते अग्रे अह्राम्। व्यु प्रथते वित्रं वरीयः। देकेयो अदितये स्योनम्॥७॥ वन्द्यंश्व। आयौद्यग्रे वसुभिः मुजोषौः। त्वं देवानांमसि यह्न होताै। स एनान्

व्यचेस्वतीरुर्विया विश्रयन्ताम्। पतिभ्यो न जनंयः शुम्भंमानाः। देवीद्वरि

उषासानक्तां सदतां नि योनौं। दिव्ये योषेणे बृहती सुंफक्ने। अधि श्रियः शुक्रपिशं दर्याने। दैव्या होतांरा प्रथमा सुवाचां। मिमांना युज्ञं मनुषो यजेध्ये॥८॥ बृहतीर्विश्वमिन्वाः। देवेभ्यो भवथ सुप्रायुणाः। आसुष्वयंन्ती यज्ते उपोके।

प्रचोदयंन्ता विद्धेषु कारू। प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशां दिशन्तां। आ नो यज्ञं भारंती तूयंमेतु। इडां मनुष्वदिह चेतयंन्ती। तिस्रो देवीर्बर्शहरेदङ् स्योनम्। सरंस्वती स्वपंसः सदन्तु। य इमे द्यावांपृथिवी जनित्री। रूपैरपि श्यद्भवंनानि सरंस्वती स्वपंसः सदन्तु। य इमे द्यावांपृथिवी जनित्री। रूपैरपि श्यद्भवंनानि विश्वा। तम्द्र होतिरिष्वितो यजीयान्। देवं त्वष्टांरिमिह यक्षि विद्वान्॥९॥

उपावेसुज्लन्यो समुअन्। देवानां पार्थ ऋतुथा ह्वी॰िषि।

490 शमिता देवो अग्निः। स्वदंन्तु हृव्यं मधुंना घृतेनं। सद्यो जातो व्यंमिमीत युज्ञम्। अग्निर्देवानांमभवत्युरोगाः। अस्य होतुंः प्रदिश्यृतस्यं वाचि। स्वाहांकृत<sup>॰</sup> अग्निरहोतां नो अध्वरे। वाजी सन्परिणीयते। देवो देवेषुं यज्ञियेः। परिजिविष्टपंष्वरम्। यात्युग्नी र्थीरिव। आ देवेषु प्रयो दर्धत्। परि वाजपितिः कृविः। अग्निरह्व्यान्यंक्रमीत्। द्युद्रलांनि दा्शुषे॥११॥ अजैंद्गिः। असंनुद्वाज्नित्रा देवो देवेभ्यों हृव्यावाँट्। प्राञ्जोभिर्हिन्वानः। धेनािभेः युज्ञैः स्योनं यज॑ध्यै विद्वानृष्टौ च॑॥■ हविरंदन्तु देवाः॥१०॥ अुग्निरहोतां नो नवं॥■

दैव्याः शमितार उत मेनुष्या आरंभध्वम्। उपंनयत् मेध्या दुरंः। आ्शासांना कल्पेमानः। युज्ञस्यायुः प्रतिरन्। उप प्रेष्यं होतः। हत्या देवेभ्यः॥१२॥

मेथेपितिभ्यां मेथम्। प्रास्मां अग्निं भेरत। स्तुणीत बर्हिः। अन्वेनं माता मेन्यताम्। अनुं पिता। अनु भाता सगेन्यः। अनु सखा सयूँध्यः। उदीचीनारं अस्य पदो <u>ब्पामुत्खिंदतात्। अन्तरेवोष्माणं वारयतात्। श्येनमंस्य वक्षंः कृणुतात्। प्रशसीं</u> पृथिवी १ अरीरम्। एकघाऽस्य त्वचमाच्छ्यतात्। पुरा नान्यां अपिशसो सूर्यं चक्षुंर्गमयतात्। वातं प्राणम्नवंस्जतात्। दिशः श्रोत्रम्। अन्तरिक्षमसुम्। शुला दोषणीं। कुश्यपेवारसी। अच्छिद्रे श्रोणीं। कृवषोक स्रेकपंणिधिवन्ताै। षड्विৼेशतिरस्य वद्ग्रेयः। ता अनुष्ठोच्योवयतात्। गात्रं गात्रम्स्यानूनं कृणुतात्। षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् ३) निधंतात्॥१३॥ गीवेष्ट॥१५॥ बाह्र॥१४॥

उरूकं मन्यंमानाः। नेद्वंस्तोके तनये। रवितारवंच्छमितारः। अधिगो शमीष्वम्।

सुशमिं शमीष्वम्। शुमीष्वमिष्ठिगो। अधिंगुश्चापांपश्च। उुभौ देवानारं शमितारौं।

ताविमं पुश्क् श्रेपयतां प्रविद्वारसौं। यथायथाऽस्य श्रपंणन्तथांतथा॥१६॥ यृत्ताद्वाहू मा राविष्ट् तथांतथा॥**≖** 

जुषस्वं सृप्रथंस्तमम्। वचो देवफ्संरस्तमम्। हृव्या जुह्वांन आसिनि। इमं नो

युज्ञमुमुतेषु घेहि। ड्रमा हुव्या जांतवेदो जुषस्व। स्तोकानांमग्ने मेदंसो

. मेदसः। होत्: प्राशांन प्रथुमो निषद्यां घृतवेन्तः पावक ते। स्तोकाः श्रोतन्ति

स्वर्धमी देववीतये॥१७॥

श्रेष्ठं नो धिहि वार्यम्। तुभ्यक्ष्ं स्तोका घृत्श्रुतंः। अग्रे विप्रांय सन्त्य। ऋषिः श्रेष्टः

समिध्यसे। यज्ञस्यं प्राविता भंव। तुभ्यक्षं ब्रोतन्त्यप्निगो शचीवः। स्तोकासो अग्ने मेदंसो घृतस्ये। कविश्वस्तो बृंहता भानुनागाः। हव्या जुंषस्व मेधिर। ओजिंधन्ते मध्यतो मेद उद्घेतम्। प्र ते वयं दंदामहे। श्रोतंन्ति ते वसो स्तोका अधित्वचि। प्रति तान्देवशोविहि॥१८॥

493 आवृत्रहणा वृत्रहमिः शुष्मैः। इन्द्रं यातन्नमोभिरम्ने अविक्। षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् ३) देववीतय उद्धंतत्र्रीणि च॥

राधोभिरकेवोभिरिन्द्र। अग्ने अस्मे भेवतमुत्तमिभैः। होतो यक्षदिन्द्राग्नी। बृपाया मेदंसः। जुषेता हिविः। होत्र्यंजी विह्यख्यन्मनंसा बस्ये इन्द्राग्नी ज्ञास उत वो सजातान्॥१९॥

नान्या युवत्प्रमीतिरस्ति मह्यम्। स वां धियं वाजयन्तीमतक्षम्। होतां यक्षदिन्द्राग्नी। पुरोडाशंस्य जुषेताः हविः। होतर्यजा त्वामीडते अजिरं दूत्याय। हविष्मेन्तः सर्दामेन्मानुषासः। यस्यं देवैरासंदो बर्हिरंग्ने। अहाँन्यस्मे सुदिनां भवन्तु। होतां यक्षद्ग्रिम्। पुरोडाशंस्य जुषताः हविः। होतर्यजी॥२०॥

गीर्भिविप्रः प्रमीतिमिच्छमानः। ईट्टं राघें युशसं पूर्वभाजम्। इन्द्रांग्री वृत्रहणा सुबज्जा। प्र णो् नव्येभिस्तिरतं देखोः। माच्छेंद्य रृश्मीर्शरति नाघेमानाः। पितृणार

स्जातानुभ्रन्द्वे चं॥🕳

494 अग्नि॰ मुंदीति॰ सुद्दर्शं गृणन्तेः। नमस्यामस्त्वेद्धं जातवेदः। त्वां दूतमंरति॰ हंव्यवाहम्। देवा अकृण्वत्रमृतेस्य नाभिम्॥२१॥ शक्तोंरनुयच्छंमानाः। ड्रन्द्राग्निभ्यां कं वृषेणो मदन्ति। ताह्यद्री घिषणांया उपस्थै। पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

जातबेदो द्वे चं॥\_\_\_\_

त्वक्ष् ह्यंग्ने प्रथमो मनोतां। अस्या धियो अभंवो दस्महोतां। त्वक्ष सीं वृषत्रकुणोर्दुष्टरीतु। सहो विश्वस्मे सहंसे सहंस्ये। अधा होता न्यंसीदो यजीयान्। इडस्पद इषयत्रीड्यः सन्। तं त्वा नरंः प्रथमं देवयन्तंः। महो राये चितयंन्तो अनुग्मन्। वृतेव यन्तं बहुभिर्वस्त्यैः। त्वे रृयिं जांगृवाक्सो अनुग्मन्॥२२॥

रुश्नतम्पिप्तं देर्श्यतं बृहन्तम्। वपावेन्तं विश्वहां दीदिवा॰सम्। पदं देवस्य नमेसा वियन्तेः। श्रृवस्यवः श्रवं आपृत्रमृक्तम्। नामोनि चिद्दधिरे यृज्ञियोनि। " मद्रायां ते रणयन्त सन्देष्टो। त्वां वेधीन्त क्षितयेः पृथिव्याम्। त्व॰ रायं उभयांसो जनानाम्। त्वं त्राता तेरणे चेत्योऽभूः। पिता माता सदमिन्मानुषाणाम्॥२३॥ पष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

सप्येण्युः स प्रियो विश्वेग्रिः। होतां मुन्द्रो निषंसादा यजीयान्। तं त्वां वयं सुम्रायवं ईमहे देवयन्तेः। त्वं विशो अनयो दीद्यांनः। दिवो अग्ने बृह्ता रोचनेने। दम् आ दींदिवा॰सम्॥ उपेज्ञुबाधो नमंसा सदम। तं त्वां वय॰ सुधियो नव्यंमग्ने

प्रतीषणि मिषयेन्तं पावकम्। राजन्तमृष्यें यंजृत\* रंयोणाम्। सो अग्न ईजे डूँ -विशां कविं विश्पति थ्राश्वेतीनाम्। नितोशीनं वृष्भं चेर्षणीनाम्॥२४॥

शश्मे च मर्तः। यस्त आनंदथ्ममिथां हव्यदांतिम्। य आहुतिं परि वेदा नमोभिः। विश्वेथ्सवामा देथते त्वोतंः। अस्मा उं ते महिं महे विथेम। नमोभिरग्ने समिथोत हव्यैः। वेदीसूनो सहसो गीभिक्कौः। आ ते भद्रायार् सुमृतौ येतेम॥२५॥

आ यस्ततन्थ रोदंसी विभासा। श्रवोभिश्च श्रवस्यंस्तरुंत्रः। बृहद्भिवजिः स्थविरेभिर्स्मे। रेवद्भिरंग्रे वितरं वि भोहि। नृवद्धंसो सदमिष्कंद्यस्मे। भूरितोकाय तनंयाय पश्चः। पूर्वीरिषो बृहतीरारे अंघाः। अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु। पुरूण्यंग्ने पुरुधा त्वाया। वसूनि राजन्वसुताते अश्याम्। पुरूणि हि त्वे पुरुवार

मिती अग्ने वसु विषते राजनित्वे॥२६॥

496 आमेरत्र शिक्षतं वज्रबाह्। अस्मार इन्द्राग्री अवत्र शर्वीमिः। इमे नु ते जागृवा ४सो अनुंग्मुन्मानुषाणाश्चर्षणीुनां येतेमाश्यान्द्वे चं॥🕳 षष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

र्श्समयः सूर्यस्य। येभिः सपित्वं पितरों न आयन्। होतां यक्षदिन्द्राग्री। छागंस्य हविष् आत्तांमुद्या मुस्यतो मेदु उद्घेतम्। पुरा द्वेषौभ्यः। पुरा पौरुषेय्या गृभः। घस्तात्रूनम्॥२७॥

घासे अंज्ञाणां यवेसप्रथमानाम्। सुमत्क्षेराणाः श्रातरुद्रियाणाम्। अग्निष्वातानां पीवोपवसनानाम्। पार्श्वतः श्रोणितः श्रितामृत उथ्साद्तः। अङ्गोदङ्गदवेत्तानाम्। करंत एवेन्द्राग्नी। जुषेताः हिविः। होतर्यज्ञी। देवेभ्यो वनस्पते हवीः धिं। हिरंण्यपर्णे प्रदिवेस्ते अर्थम्॥२८॥

हुविषेः प्रिया धामोनि। यत्र वनस्यतैः प्रिया पाथार्शसि। यत्रे देवानामाज्यपानाँ

- प्रदक्षिणिदंशनयां नियूयं। ऋतस्यं वक्षि पथिभी रजिष्ठेः। होतां यक्षुद्वनस्पतिममिहि। पिष्टतेमया रभिष्ठया रशुनयार्घित। यत्रैन्द्राभ्रियोश्छागेस्य

षष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

करंदेवं देवो वनस्पतिः। जुषतार् हविः। होत्र्यंनं पिप्रोहि देवार् उंशतो यविष्ठा विद्वारं ऋत्र्र्स्सेतुपते यजेहा ये दैव्यां ऋत्विजस्तेनिरंग्रे। त्वरं होतृंणामस्यायंजिष्ठः। होतां यक्षद्ग्रिः स्विष्टकृतमां। अयांड्ग्रिरिन्द्राभ्रियोश्छागंस्य हविषेः प्रिया धामानि। अयाङ्गनस्पतैः प्रिया पाथारंसि। अयाङ्गवानामान्यपानां प्रिया धामानि। यक्षंद्ग्रेर्होतुः प्रिया धामानि। यक्ष्यस्वं महिमानमा।

 $\sum_{\infty}$ आयेजतामेज्या इषंः। कृणोतु सो अंष्व्रा जातवेदाः। जुषतारं हविः। नूनमर्थं कृत्वी पाथा∜सि सृप्त चं॥━

होतर्यज्ञा ३०॥

उपो ह यद्विदर्थं वाजिनो गृः। गीभिविप्राः प्रमीतिमिच्छमानाः। अर्वन्तो न काष्टात्रक्षेमाणाः। इन्द्राग्री जोहुवतो नर्स्ते। वनेस्पते रश्ननयोऽभिघाये। पिष्टतेमया

498 षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

वयुनांनि विद्वान्। वहं देवत्रा दिधिषो ह्वी «षि। प्र चंदातारंममृतेषु वोचः। अग्निः स्विष्टुकृतम्। अयांडुग्निरिन्द्राभ्रियोश्छागस्य ह्विषंः प्रिया धामांनि॥३१॥

अयाङ्गनस्पतेः प्रिया पाथार्शसा अयाङ्गवानांमाज्यपानां प्रिया धामांनि। यक्षंद्ग्रेर्होतुः प्रिया धामांनि। यक्ष्य्स्वं महिमानम्। आयंजतामेज्या इषेः।

धामानि भूरेकं च॥∎

कृणोतु सो अध्वरा जातवेदाः। जुपतार्थ हविः। अग्ने यदद्य विशो अध्वरस्य होतः। पावेक शोचे वेष्टर् हि यज्वा। ऋता येजासि महिना वियद्भः। हव्या वेह मुद्धात देवं ब्र्हिः सुदेवं देवैः स्याथ्सुवीरं वीरेर्वस्तो'र्वुज्येताकोः प्रभियेतात्य-यात्राय ब्र्हिष्मतो मदेम वसुवने वसुधेयंस्य वेतु यजा। देवीद्वरिः सङ्घाते आमिमीयात्कुमार वा नवेजातो मैना अर्वा रेणुकेकाटः पृणंग्वसुवने वसुधेयेस्य वियन्तु यजं विक्वीयमिञ्छिथिरा धुवा देवहूतौ वृथ्स ईमेनास्तरुण यविष्ठ या ते अद्याविश

499 देवी उषासानकाऽद्यास्मिन् युज्ञे प्रयत्येह्नेतामपि नूनं दैर्वार्विश्यः प्रायोसिष्टार् सुप्रीते सुधिते वसुवने वसुधेयस्य वीतां यजी देवी जोष्टी वसुधितो ययोर्न्या-प्रश्नः (अष्टकम् ३) वष्ठमः

युयवदान्यावंश्वद्वसु वार्याणि यजमानाय वसुवने वसुधेयंस्य

ऽघाद्वेषार्सि

वीतां यजी देवी ऊर्जाहैती इषमूर्जमन्यावंक्षभ्सिग्धेर सपीतिमन्या नवेन् पूर्वन्दयंमानाः स्यामं पुराणेन नवन्तामूर्जमूर्जाहैती ऊर्जयंमाने अधातां वसुवने वसुधेयंस्य वीतां यजी देवा दैव्या होतारा नेष्टारा पोतारा हताघंश्वरसमावाभ्रद्धंसू वसुवने वसुधेयंस्य वीतां यजी देवीस्तिस्तस्तिस्त्रो देवीरिडा सर्रस्वती भारती ्द्यां भारत्यादित्यैरंस्यृक्षश्स्यरंस्वतीमर क्द्रेय्ज्ञमावीदिहेवेडेया वसुमत्या

वन्स्पतिर्वेर्षप्रांवा घृतनिर्णिग्द्यामग्रेणास्पृश्यदान्तरिश्रं मध्येनाप्राः

होत्रमरहतो यजी देवो

वंडकाः -

श्वतमिदेन श्वितिपृष्ठा आदेथति सृहस्रमीं प्रवेहन्ति मित्रावरुणेदंस्य हेतो बृहस्पतिः स्तोत्रमृष्ठिनाऽऽस्वेर्यवं वसुवने वसुषेयस्यं वेत्

सघुमादं मदेम वसुवने वसुघेयंस्य वियन्तु यजं। देवो नराश्रश्सांस्त्रिशीर्ष

500 षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

ते होत्रे अमध्सत तार संसनुषीर होत्रों देवङ्गमान्दिवि देवेषु यज्ञमेरंयेमङ् स्विष्टकृष्टाग्ने होताऽभूर्वसुवने वसुधेयंस्य नमोवाके वीहि यजी।३३॥ प्रच्युतीनामप्रेच्युतत्रिकाम्पर्गणं पुरुस्पार्हं यश्रोस्वदेना बर्हिषाऽन्या बर्ही इंष्युभि ष्यांम बसुवने वसुधेयेस्य वेतु यजी देवो अग्निः स्विष्टकृष्सुद्रविणा मन्द्रः कविः सत्यमेन्माऽऽयुजी होता होतुरहोतुरायेजीयानम्रे यान्देवानयाड्यार अपिप्रेये गृथिवीमुपेरेणाह ४हीद्वसुवने वसुघेयंस्य वेतु यजी। देवं बर्हिवीरितीनां निषेषांऽसि

<u>დ</u>

देवं ब्र्हिः। व्सुवने वसुघेयंस्य वेतु। देवीद्वांरः। व्सुवने वसुघेयंस्य वियन्तु

देवी उषासानक्तौ। वसुवने वसुधेयेस्य वीताम्। देवी जोष्टीं। वसुवने वसुधेयेस्य वीताम्। देवी ऊर्जाहेती। वसुवने वसुधेयस्ये वीताम्॥३४॥

् वस्वा वस्वा 10,

दैव्या होतारा। वृसुवने वसुधेयस्य वीताम्। देवीस्त्रिक्षस्तिक्षो देवीः।

वसुधेयंस्य वियन्तु। देवो नग्शश्संः। वृसुवने वसुधेयंस्य वेतु। देवो

वनस्पतिः। वसुवने वसुधेयेस्य वेतु। देवं बर्हिवारितीनाम्। वसुवने वसुधेयेस्य देवो अग्निः स्विष्टकृत्। सुद्रविणा मन्द्रः कृविः। सत्यमंन्मायजी होताँ। होतुरहोतुरायंजीयान्। अग्ने यान्देवानयाँट्। या॰ अपिप्रेः। ये ते होत्रे अमध्सत। षष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३) वेतु॥ ३५॥

ता सम्मुषी होत्रौन्देवङ्गमाम्। दिवि देवेषु यज्ञमेरयेमम्। स्विष्टकृज्ञाभे होताऽभूः। वृसुवने वसुधेयस्य नमोवाके वीहि॥३६॥

बीतां बेत्वभूरकं च॥🕳

अग्निम्द्य होतारमकृणीतायं यजमानः पर्चन्प्कीः पर्चन्पुरोडाशं बुधन्निन्दाग्निभ्यां

छागरं सूपस्था अुद्य देवो वनुस्पतिरभवदिन्द्राग्निभ्यां छागुनाघंस्तान्तं मेंदुस्तः

प्रतिपचतार्ग्रेमीष्टामवीवृथेतां पुरोडाशेन त्वामद्यर्षे आर्षेय ऋषीणात्रपादवृणीतायं यजमानो बहुभ्य आ सङ्गेतेभ्य एष में देवेषु वसु वार्या येक्ष्यत इति ता या देवा देवदानान्यदुस्तान्यस्मा आ च शास्वा चे गुरस्वेषितश्चे होत्रसि भद्रवाच्यांय

ع م ا

502

हरिः ओम्॥

अञ्जनि मूक्ताब्रीहे॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके षष्ठः प्रपाठकः समाप्तः॥

|| **स**प्तमः प्रश्नः||

## ॥तौत्तरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके सप्तमः प्रपाठकः॥

सर्वान् वा एषौऽग्रौ कामान्यवेशयति। यौऽग्रीनंन्वाधायं व्रतमुपैति। सयदनिष्टा

प्रयायात्। अकामप्रीता एनं कामा नानुप्रयायुः। अतेजा अंबीर्यः स्यात्। स जुहुयात्। तुभ्यं ता अङ्गिरस्तमा विश्वाः सुक्षितयः पृथंक्। अग्रे कामाय येमिर कामंप्रीता एनं कामा अनु प्रयान्ति। तेज्ञस्वी वीर्यावान्भवति। सन्तितिवी एषा यज्ञस्य। यौऽग्रीनेन्वाधायं व्रतमुपैति। स यदुद्वायिति। विच्छितिरेवास्य सा। तं इति। कामानेवास्मिन्दधाति॥१॥

प्राश्वमुद्धत्ये। मनुसोपेतिष्ठता मनो वै प्रजापेतिः। प्राजापुत्यो युज्ञः॥२॥

मनेसुव युज्ञ १ सन्तेनोति। भूरित्योह। भूतो वै प्रजापेतिः। भूतिमेवोपैति। वि वा एष इन्द्रियेणं वीर्येणर्ध्यते। यस्याऽऽहिंताग्रेर्गिरंपक्षायंति। यावृच्छम्यंया प्रविध्यैत्। यदि तावंदपुक्षायेत्। त॰ सम्भेरत्। इदं तु एकं पुर उं तु एकम्॥३॥

तृतीयेन ज्योतिषा संविशस्व। संवेशनस्तनुवै चार्ररिधे। प्रिये देवानाँ पर्मे जनित्र इति। ब्रह्मणैवैन्र् सम्भेरति। सैव ततः प्रायिश्चितिः। यदि सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

परस्त्रामंपृक्षायेंत्। अनुप्रयायावंस्येत्। सो एव ततः प्रायंक्षित्तिः। ओषंधोर्वा एतस्यं पृशून्पयः प्रविशति। यस्यं हविषे वृथ्सा अपाकृता घर्यान्ता।४॥

तान् यद्दुद्यात्। यातयाम्रा ह्विषां यजेत। यत्र दुह्यात्। यज्ञपुरुरुन्तरियात्।

<u>पयो</u>

अथेतेर ऐन्द्रः पुरोडाशः स्यात्। इन्द्रिये एवास्मै समीची दथाति।

अथोत्तंरस्मै हविषे वृथ्सानुपाकुर्यात्। सैव ततः प्रायंश्चित्तिः। अन्यत्रान् वा एष देवान्भांग्धेयेन व्यर्धयति। ये यजमानस्य सायं गृहमा गच्छेन्ति। यस्ये सायं

वायव्यां यवागूत्रिवंपेत्। वायुर्के पर्यसः प्रदापयिता। स एवास्मे पयः प्रदापयति। पयो वा ओषंधयः। पयः पयेः। पर्यसेवास्मे पयोऽवं रुन्धे॥५॥

दुग्ध « हविरार्तिमाच्छीते। इन्द्रांय ब्रोहीत्रिक्त्योपं बसेत्। पयो बा ओषंधयः। पयं

पुनारभ्यं गृहीत्वोपं वसति। यत्प्रातः स्यात्। तच्छुतं कुर्यात्॥६॥

505 वा ओषंधयः। पयः पयः। पयंसेवास्मे पयोऽवं रुन्ये। अथोत्तंरस्मे हविषे

बृथ्सानुपाकुर्यात्। सैव ततः प्रायीश्चित्तः। उभयान् वा एष देवान्नांगधेयेन व्यर्धयति। ये यजमानस्य सायं चे प्रातश्चे गृहमा गच्छेन्ति। यस्योभय<sup>५</sup>

ह्विरार्तिमाच्छीते॥ ७॥

ऐन्द्रं पश्चेशरावमोदनं निर्वपेत्। अग्निं देवतानां प्रथमं यंजेत्। अग्निमुंखा एव देवताः प्रीणाति। अग्निं वा अन्वन्या देवताः। इन्द्रमन्वन्याः। ता एवोभयीः प्रीणाति। पयो वा ओषंधयः। पयः पयंः। पयंसेवास्मे पयोऽवं रुन्ये। अथोत्तंस्मे हविषे

<u>ब</u>थ्सान्पाकुर्यात्॥८॥

सैव ततः प्रायंश्वित्तः। अर्थो वा एतस्यं यज्ञस्यं मीयते। यस्य व्रत्ये-ऽहुन्यल्यंनालम्भुका भवंति। तामंपरुध्यं यजेत। सर्वेणेव यज्ञेनं यजते। तामिष्ट्वोपं ह्वयेत। अमूहमॅस्मि। सा त्वम्। द्यौर्हम्। पृथिवी त्वम्। सामाहम्। ऋक्तम्। तावेहि सम्भेवाव। सह रेतों दथावहै। पु्रसे पुत्राय वेत्वै। रायस्पोषांय

909 सुप्रजास्त्वायं सुवीर्योयेति। अर्धं एवैनामुपं ह्रयते। सैव ततः प्रायिश्चित्तः॥९॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

यद्विष्णंणोन जुहुयात्। अप्रजाया अपुर्युर्यजमानः स्यात्। यदनायतने निनयैत्।

दुर्थाति युज्ञ उंतु एकन्ययंन्ति रुन्ये कुर्यादाच्छ्रत्युपाकुर्यात्मुथिवी त्वमुष्टौ चं (सर्वान् वि वै यदि परस्तुरामोषधीरन्यतरानुभयांनुर्यो

वृन्मीकेः। युज्ञः प्रजापेतिः। प्रजापेतावेव युज्ञं प्रतिष्ठापयति। भूरित्योह। भूतो वै प्रजापंतिः॥१०॥

अनायतुनः स्यौत्। प्राजापुत्ययुर्वा वेल्मीकवृपायामवं नयेत्। प्राजापुत्यो वै

भूतिमेवोपैति। तत्कृत्वा। अन्यां दुग्प्वा पुनंर्होत्व्यम्। सैव ततः प्रायिश्चित्तिः। यत्कोटावेपन्नेन जुहुयात्। अप्रेजा अपृशुर्यजमानः स्यात्। यदनायतने निनयैत्। अना्यतुनः स्यौत्। मुप्यमेनं पूर्णेनं द्यावापृथिव्यंयुर्चाऽन्तंः परिधि निनंयेत्। द्यावांपृथिच्योरेवेनत्प्रतिष्ठापयति॥११॥

तत्कृत्वा। अन्यां दुग्ध्वा पुनंरहोत्व्यम्। सैव ततः प्रायंश्वित्तिः। यदवेवृष्टेन

जुहुयात्। अपंरूपमस्याऽऽत्मञ्जायेता किलासो वास्यादंर्शसो वा। यत्प्रत्येयात्। युज्ञं विच्छिन्द्यात्। स जुंहुयात्। मित्रो जनाँन्कल्पयति प्रजानन्॥१२॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

मित्रो दांधार पृथिवीमुत द्याम्। मित्रः कृष्टीरनिमिषाऽभि चंष्टे। सृत्यायं हृव्यं घृतवंश्चहोतेति। मित्रेगेवैनेत्कल्पयति। तत्कृत्वा। अन्यां दुग्प्वा पुनेर्होत्व्यम्। सैव ततः प्रायिश्वित्तः। यत्पूर्वस्यामाहैत्याः हुतायामुत्त्राऽऽहीतः स्कन्दैत्। द्विपाद्धिः पृशुभिर्यजमानो व्युध्येत। यदुत्तंरयाऽभि जुंहयात्॥१३॥

चतुष्पाद्धः पृशुभिर्यजमानो व्युध्येत। यत्र वेत्थं वनस्पते देवानां गुह्या नामानि।

तत्रे ह्व्यानि गाम्येति वानस्पत्ययुर्वा स्मिपेमाधाये। तूष्णीमेव पुनर्जुहुयात्। वनस्पतिनैव युज्ञस्याताँ वानाताँ वाऽऽहुती वि दोधार। तत्कृत्वा। अन्यां दुग्ध्वा युनेर्होतव्यम्। सेव ततः प्रायिश्वितिः। यत्युरा प्रयाजेभ्यः प्राङक्शंरः स्कन्दैत्।

यद्दिश्वेणा। ब्रुह्मणे च यजमानाय चाकॐ स्यात्। यत्यृत्यक्। होत्रे च पत्नियै अष्वरीवे च यजेमानाय चाक इंस्यात्॥१४॥

स्यात्। यदमिजुहुयात्। कृद्रौऽस्य पृश्न्यातुंकः स्यात्। यत्राभिजुहुयात्। अशाैन्तः प्रह्नियेत॥१५॥

च् यजंमानाय् चाकर् स्यात्। यदुदङ्गं। अग्नीपें च पृशुभ्यंश्र् यजंमानाय् चाकर्

स्रुवस्य बुध्नेनाभिनिदंध्यात्। मा तेमो मा यज्ञस्तंमन्मा यज्ञेमानस्तमत्। नमेस्ते अस्त्वायते। नमो रद्र परायते। नमो यत्रे निषीदंसि। अमुं मा हिं सीर्मु मा हिं सीर्मु मा हिं सीर्मु मा हिं सीर्मु से सुन्धिरिति येन स्कन्दैत्। तं प्रहेरेत्। सृहस्र्वेश्व वृष्मो जातवेदाः। स्तोमपृष्ठो घृतवौन्ध्मुप्रतीकः। मा नो हासीन्मेत्थितो नेत्त्वा जहांम। गोपोषं नो वीरपोषं चं युच्छेति। ब्रह्मणैवेनं प्र हंरति। सैव ततः प्रायिश्चितः॥१६॥

वै प्रजापेतिः स्थापयति प्रजानत्रुमि जुंहुयाथ्स्यौद्धियेत् जहांम् त्रीणि च (यद्विष्यंणोन प्राजापृत्यया् यत्कीटा मध्यमेन् यदबेवृष्टेन्

यत्पूर्वस्यां यत्पुरा प्रयाजेभ्यः प्राङङ्गोरो यद्दिक्षिणा यत्प्रत्यग्यदुदङ्गा)॥🕳

वि वा एष इन्द्रियेणं वीर्येणध्यति। यस्याऽऽहिताभ्रेगुभ्रमध्यमानो न जायेते। यत्रान्यं पश्यैत्। ततं आहृत्यं होत्व्यम्। अग्रावेवास्याभिहोत्र॰ हुतं

मंबति। यद्यन्यन्न बिन्देत्। अजायारं होत्व्यम्। आग्रेयी वा एषा। यद्जा। अजस्य तु नाश्जीयात्। यद्जस्यांश्जीयात्। यामेवाग्नावाहीतं जुहुयात् अ्ग्रावेवास्यांभिहोत्र हुतं भवति॥१७॥

तामेद्यात्। तस्मोद्जस्य नाश्यम्। यद्यजात्र विन्देत्। ब्राह्मणस्य दक्षिणे हस्ते

होत्व्यम्। एष वा अग्निवैश्वान्रः। यद्वाँह्मणः। अग्नावेवास्यांग्निहोत्र॰ हुतं

ब्राह्मणं तु वेसत्यै नापं रुन्यात्। यद्वाह्मणं वेसत्या अपरुन्य्यात्। यस्मिन्नेवाग्नावाहीते जुहुयात्। तं भागधेयेन व्यंधयेत्। तस्माद्वाह्मणो वेसत्यै नापुरुष्यः। यदि ब्राह्मणं न विन्देत्। दुर्भस्तम्बे होतव्यम्। अग्निवान् वै देर्भस्तम्बः। अृग्रावेवास्याग्निहोत्र॰ हुतं भेवति। दुर्भाङ्स्तु नाष्यांसीत॥१९॥ मंबति॥१८॥

यद्दर्भानुष्यासीत। यामेवाग्नावाहीतें जुहुयात्। तामध्यांसीत। तस्मांद्दर्भा

नाष्यांसित्व्याः। यदि दुर्मात्र विन्देत्। अफ्सु होत्व्यम्। आपो वै सर्वा

देवताः। देवतास्वेवास्याभिहोत्र हुतं भेवति। आप्स्तु न परिचक्षीत। यदापेः सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३) परिचक्षींत॥२०॥

यामेवापस्वाहीतें जुहुयात्। तां परिचक्षीत। तस्मादापो न पीर्चक्ष्याः। मेध्यां च् वा एतस्यांमेध्या च तनुबौ स॰ सुंज्येते। यस्याऽऽहिताग्रेर-यैर्गियेरग्रयः गर्भेङ् स्रवंन्तमगदमंकः। अग्निरिन्द्रस्त्वष्टा बृहस्पतिः। पृथिव्यामवं चुश्चोतैतत्। नाभिप्राप्नोति निर्ऋति पराचैः। रेतो वा एतद्वाजिनमाहिताग्रेः। यदेग्निहोत्रम्। तद्यश्स्त्रवैत्। रेतौऽस्य वाजिनङ् स्रवेत्। गर्भेङ् स्रवंन्तमगदमंकरित्योह। रेतं

अग्रिरित्यांह। अग्रिके रेतो्घाः। रेतं एव तद्धाति। इन्द्र इत्यांह।

एवास्मिन्वाजिनं दथाति॥२२॥

चे तनुबौ व्यावेर्तयति। अग्नयै वृतपंतये पुरोडाशंमष्टाकेपालं निवंपेत्। अग्निमेव वृतपंतिङ् स्वेने भागधेयेनोपं धावति। स एवैनं वृतमा लेम्भयति॥२१॥

्स स्कुज्यन्तै। अग्नये विविचये पुरोडाशमिष्टाकेपालं निवेपेत्। मेध्यां चैवास्यांमेध्यां

इन्द्रियमेवास्मिन्दधाति। त्वष्टेत्याह। त्वष्टा वै पंशूनां मिथुनानारं रूपकृत्। रूपमेव पशुषुं दधाति। बृहस्पतिरित्याह। ब्रह्म वै देवानां बृहस्पतिः। ब्रह्मणैवास्मै प्रजाः प्र जनयति। पृथिव्यामवं चुश्चोतैतदित्याह। अस्यामेवेन्त्रातिष्ठापयति। नाभिप्राप्नोति निर्ऋति पराचैरित्याह। रक्षंसामपेहत्ये॥२३॥ अुजाऽप्रावेवास्याप्रिहोत्र॰ हुतं भवति भवत्यासीत परिचक्षीत रुम्पयति द्धाति देवानां बृहस्पतिः पश्चं च (वि वै यद्यन्यमुजायाँ ब्राह्मणस्यं दर्भस्तुम्बेऽपस् होंतृव्यम्॥ )॥🕳

याः पुरस्तौत्प्रस्रवन्ति। उपरिष्टाथ्सर्वतंश्च याः। ताभी रश्मिपंवित्राभिः। श्रद्धां युज्ञमा रेभे। देवां गातुविदः। गातुं युज्ञायं विन्दत। मनंस्स्पतिना देवेने। वाताैंबुज्ञः प्र युंज्यताम्। तृतीयंस्यै दिवः। गाय्तिया सोम् आभृंतः॥२४॥

सोमपीथाय सत्रीयेतुम्। वकेलुमन्तंरुमा देदे। आपो देवीः शुद्धाः स्थे। इमा

पात्राणि शुन्यत। <u>उ</u>पातङ्क्यांय देवानाँम्। पूर्णवृल्कमुत शुन्यत। पयो गृहेषु अघ्नियासु। पयो वृथ्सेषु पय इन्द्रांय हविषे घियस्व। गायत्री पर्णवृल्केने।

। वर्ष

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

सोमं करोत्विमम्॥२५॥

ज्योतिरुत्तमम्। श्रो युज्ञायं रमतां देवताैभ्यः। वसूत्रुद्रानांदित्यान्। इन्द्रेण सृह देवताः। ताः पूर्वः परि गृह्णामि। स्व आ्यतेने मनीषया। इमामूर्जं पश्चदुशीं ये अग्निं गृह्णामि सुरधं यो मयोगूः। य उद्यन्तंमारोहीते सूर्यमहैं। आदित्यं ज्योतिषां प्रविष्टाः। तान्द्वान्यरि गृह्णाम् पूर्वः॥२६॥

अग्निर्हेच्यवाडिह ताना वेहतु। पौर्णमास\* हविरिदमेषां मयि। आमावास्य\* हविरिदमेषां मयि। अन्तराऽग्नी पशवंः। देवस्\*सदमा गमन्। तान्पूर्वः परि गृह्णामि। स्व आयतेने मनीषयौ। इह प्रजा विश्वरूपा रमन्ताम्। अग्निं गृहपंतिमभि

स्व आयतेने मनीषया। इह पृशवो विश्वरूपा रमन्ताम्। अग्निं गृहपंतिममि संवसानाः। तान्यूर्वेः परि गृह्णामि। स्व आयतेने मनीषया। अयं पितृणामग्निः। सुंबसानाः। ताः पूर्वः परिं गृह्णामि॥२७॥

अवाङ्ख्या पितुभ्य आ। तं पूर्वः परि गृह्णामे। अविषत्रः पितुं केरत्। अजिष्

513 पर्यस्वतीरोषंघयः। पर्यस्वद्वीरुघां पर्यः। अपां पर्यसो यत्पयः। तेन मामिन्द्र सर् सृज। अग्नै व्रतपते व्रतं चीरष्यामि। तच्छेकेयं तन्ने राध्यताम्। बायौ व्रतपत् विजयमांग्॰ समिन्यताम्। अग्ने दीदांय मे सभ्य। विजित्ये श्ररदेः श्रतम्। अत्रमावस्थीयम्। अभि हंगाणे श्ररदेः श्रतम्। आवस्थे त्रियं मन्नम्। अहिंबुंधियो नि यंच्छतु। इदमहम्गिज्यैष्ठेग्यः। वसुंग्यो युज्ञं प्रब्रंबीमि। क्द्रेभ्यों युज्ञं प्र ब्रंबीमि। इदम्हं वर्षणज्येष्ठेभ्यः। आदित्येभ्यों युज्ञं प्र ब्रंबीमि। ड्रदमृहमिन्द्रंज्येष्ठेभ्यः॥२९॥ त्वा १ संभापालाः॥२८॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

आदित्य व्रतपते॥३०॥

ब्रतानौं ब्रतपते ब्रतं चीरष्यामि। तच्छेकेयं तन्ने राध्यताम्। इमां प्राचीमुदीचीम्।

इष्मूर्जमृपि सङ्स्कृताम्। बृहुपुर्णामशुष्काग्राम्। हरामि पशुपामृहम्। यत्कृष्णो

रूपं कृत्वा। प्राविश्वस्त्वं वनुस्पतीन्। तत्रस्त्वामेकविश्शतिधा। सम्मेरामि

सुसम्भृता॥३१॥

भेरामि सुसम्भृता। या जाता ओषेघयः। देवेभ्येन्नियुगं पुरा। तासां पर्वे राध्यासम्।

पुकुदाच्छित्रं बुर्हिरूणांमुदु। स्योनं पितुभ्यंस्त्वा भराम्युहम्। अस्मिन्थ्सीदन्तु मे

पितरंः सोम्याः। पितामहाः प्रपितामहाश्चानुगैः सृह॥३३॥

सन्नेह्ये सुकृतायु कम्। एनो मा निगाँङ्गतमचनाहम्। पुनंकृत्थायं बहुला भंवन्तु।

आच्छेता वो मा रिषम्। जीवानि श्ररदेः श्रतम्। अपीरमितानां परिमिताः

गुरेस्तरमाहरन्। अपां मेध्यं यज्ञियम्। सदेव शब्वमंस्तु मे॥३२॥

त्रिकृत्पेलाशे दुर्भः। इयौन्प्रादेशसीम्मितः। युज्ञे पवित्रं पोतृतमम्। पयो हृव्यं केरोतु मे। <u>इ</u>मौ प्राणापानौ। युज्ञस्याङ्गानि सर्वेशः। आप्याययन्तो सर्श्वरताम्।

अयं प्राणश्चोपानश्च। यजमानुमपि गच्छताम्। युज्ञे ह्यभूतां पोतारो।

गवित्रे हव्यशोधेने। प्वित्रे स्थो वैष्ण्वी। वायुर्वा मनंसा पुनातु॥३४॥

त्रीन्परिपीङ् स्तिसः स्मिपेः। युजायुरनुसञ्चरान्। उपवेषं मेक्षेणं धृष्टिमै। सं

शिवेय १ रञ्जेरमियानी। अघियामुपं सेवताम्। अप्रेस्न १ साय यज्ञस्यं। उखे उपंदधाम्यहम्। पशुमिः सन्नीतं बिभृताम्। इन्द्रांय शृतं दिधे। उपवेषोऽसि यज्ञाये। त्वां पीरेवेषमधारयन्। इन्द्रांय हिविः कृण्वन्तेः। शिवः शृग्मो भेवासि नः॥३६॥ हव्यशोधेने। त्वया वेदि विविदुः पृथिवीम्। त्वयां यज्ञो जायते विश्वदानिः। अच्छिद्रं युज्ञमन्वेषि विद्वान्। त्वया होता सन्तेनोत्यर्धमासान्। त्रयस्त्रिर्शोऽसि अमृन्मयन्देवपात्रम्। यज्ञस्याऽऽयुषि प्र युंज्यताम्। तिरः पवित्रमतिनीताः। आपौ धारय् मातिंगुः। देवेने सवित्रोत्पूताः। वसोः सूर्यस्य रशिमभिः। गां दोहपवित्रे तन्तूनाम्। प्वित्रेण सृहागंहि॥३५॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३) विश्वरूपाः॥३७॥

प्रजया स॰ सृजामि। रायस्पोषेण बहुलाभवेन्तीः। ऊर्जं पयः पिन्वेमाना घृतं चे।

516 जीबो जीव॑न्तीरुप॑वः सदेयम्। द्यौश्चेमं युज्ञं पृथिवी च सन्दुहाताम्। षाता सोमेन सृह वातेन वायुः। यजमानायु द्रविणं दघातु॥३८॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

उथ्सं दुहन्ति कुलश् चतुर्बिलम्। इडाँ देवीं मधुमती॰ सुर्वार्वदम्। तदिन्दाग्री जिन्वत॰ सूनुतावत्। तद्यजमानममृत्वे देघातु। कामधुक्षः प्र गोँ ब्रहि। इन्द्राय

ह्विरिन्द्रियम्। अमू यस्याँ देवानाम्। मनुष्याणां पयो हितम्। बृह दुग्धीन्द्राय देवेभ्यः। ह्व्यमा प्यायतां पुनः॥३९॥

बृथ्सेभ्यों मनुष्यौन्यः। पुनर्दोहायं कल्पताम्। यज्ञस्य सन्तंतिरसि। यज्ञस्यं त्वा सन्तंतिमनु सन्तंनोमि। अदेस्तमसि विष्णंवे त्वा। यज्ञायापि दथाम्यहम्। अद्भिरिकेन् पात्रेण। याः पूताः पीरेशेरेते। अयं पयः सोमं कृत्वा। स्वां योनिमपि गच्छत्॥४०॥

पुणुंबल्कः पुवित्रम्। सौम्यः सोमाुद्धि निर्मितः। इमौ पुर्णं चं दुर्भं चं। देवाना हव्युशोधनौ। प्रातुर्वेषायं गोपाय। विष्णों हुव्य ६ हि रक्षेसि। उुभावृग्नी उपस्तुणुते।

आभैत हुमं गृंह्णामि पूर्वेस्ताः पूर्वेः परिगृह्णामि सभापाला इन्द्रंज्येष्ठेभ्य आदिंत्य व्रतपते सुसुम्भृतां मे सृह पुंनातु गहि नो देवता उपेवसन्तु मे। अहं ग्राम्यानुपं वसामि। मह्यं गोपंतये पशून्॥४१॥ विश्वरूषा दथातु पुनर्गच्छतु पृश्न् (याः पुरस्तांदिमामूर्जीमृह प्रजा इह पृशवोऽयं पिंतृणामृष्रिः।)॥━ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

देवां देवेषु पराकमम्यम्। प्रथमा द्वितीयेषु। द्वितीयास्तुतीयेषु। त्रिरेकादशा ड्वह मांऽवत। इद १ शकेयं यदिदं करोमि। आत्मा केरोत्वात्मने। इदं केरिष्ये भेषजम्।

मुख्मपोहामि। सूर्यं ज्योतिर्वि भोहि। मृहत इन्द्रियाये। आ प्यांयतां घृतयोनिः। अग्निरहव्याऽनुं मन्यताम्। खमेङ्खः त्वचेमङ्कः। सुरूपं त्वां वसुविदम्। पृशूनां तेजंसा। अग्नये जुष्टमिभे घारयामि। स्योनं ते सदेनं करोमि॥४३॥ इदं में विश्वभेषजा। अश्विना प्रावंतं युवम्। इदमृहर् सेनाया अभीत्वेर्ये॥४२॥

घृतस्य धार्या सुशेवं कल्पयामि। तस्मिन्थ्सीदामृते प्रति तिष्ठ। ब्रोहीणां मेध सुमन्स्यमोनः। आर्द्रः प्रथस्नुर्भुवंनस्य गोपाः। श्रृत उथ्स्नाति जनिता मेतीनाम्।

यस्ते आत्मा पृशुषु प्रविष्टः। देवानौं विष्ठामनु यो विंतस्थे। आत्मन्वान्थ्सोम

518 घृतवान् हि भूत्वा। देवान्यंच्छु सुवंविन्द् यजंमानायु मह्यम्। इरा भूतिः पृथिव्ये रसो मोत्क्रेमीत्॥४४॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

देवाैः पितरः पितेरो देवाः। योऽहमंस्मि स सन् येजे। यस्याँस्मि न तमन्तरेमि। स्वं मे ड्रष्टर्ध् स्वं दुत्तम्। स्वं पूर्तर्थ् स्वर्थ् श्रान्तम्। स्वर्थ् हुतम्। तस्यं मेऽग्रिकेपद्रष्टा।

न्युरुंपश्रोता। आदित्योऽनुख्याता। द्योः पिता॥४५॥

पृथिवी माता। प्रजापेतिर्बन्धुः। य एवास्मि स सन् येजे। मा भेर्मा संविक्था मा त्वां हि॰सिषम्। मा ते तेजोऽपं कमीत्। भरतमुद्धरेमनुषिश्च। अवदानांनि ते प्रत्यवंदास्यामि। नमेस्ते अस्तु मा मां हि॰सीः। यदंवदानांनि तेऽवृद्यन्।

विलोमाकार्षमात्मनः॥४६॥

आज्येन प्रत्येनज्म्येनत्। तत्त आ प्यांयतां पुनेः। अज्यांयो यवमात्रात्। आृष्याधात्क्रेत्यतामिदम्। मा कंरुपाम युज्ञस्ये। शुद्धङ् स्विष्टमिदङ् हिविः। मित्रावरुणसमीरिताम्। दृष्टिणा्रधीदसीम्भन्दन्। मनुना हुष्टां घृतपदीम्।

अवंद्याम्येकतोम्ंखाम्॥४७॥

519

इडें भागं जुषस्व नः। जिन्व गा जिन्वावंतः। तस्यौस्ते भक्षिवाणंः स्याम।

सुर्वात्मानः सुर्वगणाः। ब्रघ्न पिन्वस्व। ददेतो मे मा क्षांयि। कुर्वतो मे मोपंदसत्।

दिशां क्रीपेरसि। दिशों में कल्पन्ताम्। कल्पेन्तां में दिशं:॥४८॥

दैवीश्व मानुषिश्व। अहोरात्रे में कल्पेताम्। अर्धमासा में कल्पन्ताम्। मासो मे कल्पन्ताम्। ऋतवो में कल्पन्ताम्। संवृथ्मरो में कल्पताम्। क्रुप्तिरसि कल्पेतां

मे। आशानां त्वाऽऽशापा्लेभ्यंः। चृतुभ्यों अमृतैभ्यः। इदं भूतस्याध्यंक्षेभ्यः॥४९॥

विधेमे ह्विषां वयम्। भजेतां भागी भागम्। मा भागोऽभेक्त। निर्भागं भेजामः। अपस्पिन्वा ओषेधीर्जिन्व। द्विपात्पोहि। चतुष्पादव। दिवो वृष्टिमेर्य।

सोम्याना समिपीथिनाम्। निर्मको ब्रौह्मणः। नेहा ब्रौह्मणस्यास्ति। सम्झा

ब्राह्मणानामिद् १ हविः॥५०॥

बुर्हिर्ह्विषां घृतेनं। समादित्यैर्वसुर्मेः सं मुरुद्धिः। समिन्द्रेण् विश्वेभिर्देविभिरङ्गाम्।

धुर्यावभूताम्। सञ्जानानौ विजंहतामरातीः। दिवि ज्योतिरज्जरमा रंभेताम्। दश्तेत तुनुवो यज्ञ यज्ञियौः। ताः प्रीणातु यजमानो घृतेने। नारिष्ठयौः प्रशिषमीडेमानः। उपनिषेदे सुप्रजास्त्वाये। सं पतो पत्यां सुकृतेनं गच्छताम्। युज्ञस्यं युक्तो दिव्यं नभो गच्छतु यथ्स्वाहाँ। इन्द्राणीवांविधवा भूयासम्। अदिंतिरिव सुपुत्रा। अस्थूरि त्वां गार्हपत्य॥५१॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

देवानां दैव्येऽपि यजमानोऽमृतोऽभूत्। यं वां देवा अंकल्पयन्॥५२॥

ऊजीं भाग १ शंतकत्। पृतद्वां तेनं प्रीणानि। तेनं तृप्यतम १ हहो। अहं देवाना १ सुकृतांमस्मि लोके। ममेदमिष्टं न मिथुर्भवाति। अहं नािरष्ठावनुं यजामि विद्वान्। यदाैम्यामिन्द्रो अदंधाद्वाग्धेयम्। अदांरसृद्धवत देवसोम। अस्मिन् युज्ञे मेरुतो मृडता नः। मा नो विद्दमिभामो अशस्तिः॥५३॥

मा नो विदहुजना द्वेष्या या। ऋषभं बाजिनं वयम्। पूर्णमांसं यजामहे। स

नो दोहता॰ सुवीर्यम्। रायस्पोष॰ सहस्रिणम्। प्राणायं सुरापंसे। पूर्णमांसाय

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

स्वाहाँ। अमावास्यां सुभगां सुश्नेवां। घेनुरिंव भूयं आप्यायंमाना। सा नों दोहता ॰ सुवीर्यम्। रायस्पोष ॰ सहस्रिणम्। अपानायं सुरायंसे। अमावास्यांये स्वाहाँ। अभि स्तुणीहि परि धेहि वेदिम्। जामिं मा हि॰सीरमुया शयांना। होतुषदंना हरिताः सुवर्णाः। निष्का इमे यजमानस्य ब्रुप्रे॥५४॥

अभीत्वेर्वे करोमि क्रमीत्पिताऽऽत्मने एकृतो मुंखां में दिशोऽप्यंक्षेभ्यो हविगांर्हपत्या कल्पयुत्रशंस्तिः सा नो दोहता॰ सुवीर्य॰ परिस्तुणीत् परिधत्ताग्रिम्। परिहितोऽग्रिर्धजीमानं भुनक्ता अपा॰

ओषंधीना ९ सुवर्णः। निष्का इमे यजंमानस्य सन्तु काम्दुघाः। अमुत्रामुष्मिं छोके

भूपेते भुवेनपते। मृहतो भूतस्यं पते। ब्रह्माणं त्वा वृणीमहे। अृहं भूपेति<u>र</u>ृहं भुवेनपतिः। अृहं मेहतो भूतस्य पतिः॥५५॥

गायभी बृणते। देवेन सिवित्रा प्रसूत आर्त्विज्यं करिष्यामि। देवं सवितरेतं त्वां भृहस्पतिं दैव्यं ब्रह्माणम्। तद्हं मनंसे प्र ब्रंबीमि। मनो गायत्रिये।

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

प्रजापंतिविश्वभयो देवेभ्यः। विश्वे देवा बृह्स्पतंये। बृह्स्पतिब्र्ह्मांगे ब्रह्म भूभुंवः

त्रिष्टुभै। त्रिष्टुन्नगंत्यै। जगंत्यनुष्टुभै। अनुष्टुक्पुङ्की। पृङ्किः प्रजापंतये॥५६॥

हुम्यै केरोमि। यो वो देवाश्वरीते ब्रह्मचरीम्। मेथावी दिक्षु मनेसा तपुस्वी॥५७॥

सुवेः। बृह्स्पतिर्देवानाँ ब्रह्मा। अहं मेनुष्यांणाम्। बृहंस्पते युज्ञं गोपाय। इदं तस्मै

अन्तर्दूतश्चरति मानुषीषु। चतुः शिखण्डा युवृतिः सुपेशाः। घृतप्रेतीका भुवेनस्य

मध्यै। मुर्मुज्यमांना मह्ते सौभंगाय। मह्यं धुक्ष्व् यजंमानाय् कामान्। भूमिर्भूत्वा

मेहिमानं पुपोष। ततो देवी वेर्धयते पयार्शिस। यज्ञियां यज्ञं वि च यन्ति शं चे। ओषेधोरापं इह शक्नेरीक्ष। यो मां हृदा मनेसा यश्चे बाचा॥५८॥

यो ब्रह्मणा कर्मणा द्विष्टि देवाः। यः श्रुतेन हृद्येनेष्णता चं। तस्यैन्द्र वञ्जेण शिर्रिष्ट्यनिद्या ऊर्णामृदु प्रथमानः स्योनम्। देवेन्यो जुष्ट्र सदंनाय बर्हिः। सुबर्गे लोके यजमान् हि घेहि। मां नाकेस्य पृष्ठे पंरमे व्योमन्। चतुः शिखण्डा युवितिः सुपेशाः। घृतप्रतीका ब्युनानि वस्ते। साऽऽस्तीर्यमाणा महते सौभेगाय॥५९॥

523 सा में धुक्ष्व यजमानाय कामान्। शिवा चं में शुग्मा चैधि। स्योना चं मे सुषदां चैिषा ऊर्जस्वती च मे पर्यस्वती चैिषा इषुमूर्जं मे पिन्वस्व। ब्रह्म तेजों मे पिन्वस्व। क्षुत्रमोजों मे पिन्वस्व। विशृं पुष्टिं मे पिन्वस्व। आयुंरुत्राद्यं मे पिन्वस्व। सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अस्मिन् युज्ञ उप भूय इत्रु मैं। अविक्षोभाय परिधीं दंधामि। धृतां धृरुणो धरीयान्। अग्निर्द्वेषार्शेस् निरितो नुंदाते। विच्छिनाच्चे विधृतीभ्यार सपत्नान्। जातान्भातृव्यान् ये चे जिनेष्यमाणाः। विशो युत्राभ्यां विधेमाम्येनान्। अहङ् प्रजां पृश्नमें पिन्वस्व॥६०॥

सीदंन्ती देवी सुकुतस्यं लोके। धृतीं स्थो विधृती स्वधृती। प्राणान्मिये धारयतम्। प्रजां मिये धारयतम्। पृशून्मिये धारयतम्। अयं प्रस्तर उभयंस्य धृती। धृती प्रयाजानांमुतानूयाजानाम्। स दांधार सामिधो विश्वरूषाः। तस्मिन्असुचो

स्वानांमुत्तमोऽसानि देवाः। विशो युत्रे नुदमांने अरांतिम्। विश्वं पाप्मानुममीते

दुमेरायुम्॥६१॥

सुकृतां यत्रे लोकाः। अवाहं बांध उपभृतां सपत्नान्। जातान्त्रातृष्यान् ये चं जिनिष्यमाणाः। दोहें यज्ञ॰ सुदुघांमिव धेनुम्। अहमुत्तेरो भूयासम्। अधेरे मध्सपत्नाः। यो मां वाचा मनेसा दुर्मरायुः। हृदाऽरांतीयादंभिदासंदग्ने॥६३॥ यत्रर्षयः प्रथमुजा ये पुंराणाः। हिरंण्यपक्षाऽजिरा सम्भृताङ्गा बहांसि मा अध्या सांदयामि। आ रोह पृथो जुंह देवयानान्॥६२॥

इदमेस्य चित्तमधेरं घुवायाः। अहमुत्तेरो भूयासम्। अधेरे मध्सपत्नाः। ऋषुमोऽसि शाक्ररः। घृताचीनाः सूनुः। प्रियेण नाम्नां प्रिये सदीसे सीद। स्योनो में सीद सुषदेः पृथिव्याम्। प्रथीये प्रजयां पृशुभिः सुवर्गे लोके। दिवि सीद

अधेरे मथ्सपत्रौः। इयङ् स्थाति घृतस्यं पूर्णा। अच्छित्रपयाः शृतधार् उथ्संः।

मा्कतेन् शर्मणा दैव्येन। युज्ञोऽसि सुर्वतः श्रितः। सुर्वतो मां भूतं भविष्यच्छ्रयताम्।

शृतं में सन्त्वाशिषेः। सृहस्रं मे सन्तु सूनृताः। इरोवतीः पशुमतीः। प्रजापेतिरसि पृथिव्यामन्तिरिक्षे। अृहमुत्तंरो भूयासम्॥६४॥

सर्वतंः श्रितः॥६५॥

सुर्वतो मां भूतं भविष्यच्छ्रेयताम्। शृतं में सन्त्वाशिषंः। सृहस्रं मे सन्तु सूनृताः। इरावतीः पशुमतीः। इदमिन्द्रियममृतं वीर्यम्। अनेनेन्द्रांय पृशवोऽचिकिथ्सन्। तेने

देवा अवतोप् माम्। इहेष्मूर्जं यशः सह ओजः सनेयम्। शृतं मिये श्रयताम्। यत्प्रीथेवीमचंरतत्प्रविष्टम्॥६६॥

येनासिश्चद्वलमिन्द्रैं प्रजापीतिः। इदं तच्छुकं मधुं बाजिनीवत्। येनोपरिष्टादधिनोन्म दधि मां धिनोत्। अयं वेदः पृथिवीमन्वविन्दत्। गुहां सतीं गहेने गह्वरेषु। स विन्दतु यजमानाय लोकम्। अच्छिदं युज्ञं भूरिकर्मा करोतु। अयं युज्ञः समंसदद्धविष्मान्। ऋ्चा साम्रा यजुषा देवताभिः॥६७॥

तेने लोकान्थ्सूर्यवतो जयेम। इन्द्रंस्य सुख्यमंमृत्त्वमंश्याम्। यो नुः कनीय इह

कामयाते। अस्मिन् युज्ञे यजमानाय मह्यम्। अप् तिमिन्द्राग्नी भुवेनात्रुदेताम्। अहं प्रजां वीरवेतीं विदेय। अग्ने वाजजित्। वाजं त्वा सरिष्यन्तम्। वाजं जेष्यन्तम्॥

ब्जुलिखाये सं मौज्मि। अग्निमेत्रादम्त्राद्याय। उपेहूतो द्योः पिता। उप् मां वाजिनं वाजजितम्॥६८॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

द्यौः पिता ह्वंयताम्। अग्निराग्नीप्नात्। आयुषे वर्चसे। जीवात्वै पुण्याय। उपेहूता आयुषे वर्चसे। जीवात्वे पुण्याय। मनो ज्योतिजुषतामाज्यम्। विच्छिन्नं युज्ञ ॰ मृथिवी माता। उप मां माता पृथिवी ह्रंयताम्। अग्निराभ्रीप्रात्॥६९॥

समिमं देपातु। बृह्स्पतिस्तनुतामिमं नंः। विश्वे देवा इह मांदयन्ताम्। यन्ते अग्न आवृश्वामि। अहं वा क्षिपितश्वरन्। प्रजां च तस्य मूलं च। नाचैदंवा नि वृश्चत॥७०॥

अग्ने यो नौऽभिदासीते। समानो यश्च निष्ट्यां। इष्पस्येव प्रक्षायंतः। मा तस्योच्छेषि किश्चना यो मां द्वेष्टि जातवेदः। यं चाऽऽहं द्वेष्मि यश्च माम्।

सर्वाङ्स्तानेभ्रे सन्दह। याङ्श्वाहं द्विष्म् ये च माम्। अभ्रे वाजजित्। वाजं त्वा

ससृवारसम्॥७१॥

अग्निमेत्रादमत्राद्याय। वेदिर्बग्हिः शृत॰ हविः। इप्पः पीर्घयः सुचेः। आज्यं युज्ञ ऋचो यजुः। याज्याश्च वषद्वाराः। सं मे सन्नेतयो नमन्ताम्। इप्मसृन्नहोने

ह्ते॥७२॥

वाजं जिगिवा॰सम्। वाजिनं वाज्जितम्। वाज्जियाये सम्माज्मि

दिवः खीलोऽवंततः। पृथिव्या अध्युत्थितः। तेनां सृहस्रंकाण्डेन। द्विषन्तरं शोचयामसि। द्विषन्में बृह शोंचतु। ओषंधे मो अहर शुंचम्। यज्ञ नमेस्ते यज्ञ। नमो नमेश्च ते यज्ञ। शिवेनं मे सन्तिष्ठस्व। स्योनेनं मे सन्तिष्ठस्व॥७३॥

सुभूतेनं मे सन्तिष्ठस्व। ब्रह्मवर्चसेनं मे सन्तिष्ठस्व। यज्ञस्यार्ष्ट्रेमनु सन्तिष्ठस्व। उपं ते यज्ञ नमेः। उपं ते नमेः। उपं ते नमेः। त्रिष्फलीकियमाणानाम्। यो न्युङ्गो अवृशिष्यंते। रक्षेसां भागुधयमैं। आपुस्तत्र वेहतादितः॥७४॥

उलूखंले मुसंले यच शूपैं। आशिक्षेषं हषदि यत्कपालैं। अबुपुषो बिप्रुषः संयेजामि। विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम्। युजे या विप्रुषः सन्ति बृहीः। अुग्रौ

उद्यत्रद्य वि नो भजा पिता पुत्रेभ्यो यथाँ। दोर्घायुत्वस्यं हेशिषे। तस्यं नो देहि सूर्य। <u>उद्यत्रद्य मित्रमहः। आरोहन्नुत्तंरां</u> दिवम्ँ। <u>हदोगं ममं सूर्य। हरि</u>माणं च नाशय। शुकेषु मे हरिमाणम्ँ। रोप्णाकांसु दध्मसि॥७६॥

दिवैनान् विद्युतां जिहि। निम्रोच्न्नपंरान्कृषि॥७५॥

अथो हारिद्रवेषु मे। हरिमाणं नि दंध्मिसि। उदंगाद्यमोदित्यः। विश्वेन सहंसा सह। द्विषन्तं ममे रन्ययन्। मो अहं द्विषतो रंधम्। यो नः शपादशंपतः। यश्चे नः शपंतः शपौत्। उषाश्च तस्मै निम्नुक्ने। सर्वं पाप॰ समूहताम्॥७७॥

यो नेः सपतो यो रणेः। मर्तोऽभिदासीते देवाः। इष्मस्येव प्रक्षायेतः। मा तस्योच्छेषि किञ्चन। अवेसृष्टः परापता श्रारो ब्रह्मेस<sup>र्</sup>शितः। गच्छाऽमित्रान्प्र

गतिः प्रजापंतये तपुस्वी वाचा सौभेगाय पृश्नुमे पिन्वस्व दुर्मगुयुं देवयानांनग्रेऽन्तरिश्वेऽहमुत्तेरो भूयासं प्रजापंतिरासि सुर्वतः

विशा मैषां कश्चनोच्छिषः॥७८॥

ताः सर्वाः स्विष्टाः सुहुंता जुहोमि। उद्यत्रद्यमित्र महः। सृपत्नांन्मे अनीनशः।

श्रितः प्रविष्टं देवतांभिर्वाज्जाजतं पृथिवी ह्वेयतामग्निराग्नीप्राद्वश्रत ससृवा॰स॰ं हुते स्योनेनं में सन्तिष्ठस्वेतः कृषि दप्मस्यूहतामृष्टौ

सक्षेदं पेश्या विधेतीरिदं पेश्या नाकेदं पेश्या रमितिः पनिष्ठा। ऋतं वर्षिष्ठम्

अमृतायान्याहुः। सूर्यो वरिष्ठो अक्कमिविमोति। अनु द्यावापृथिवी देवपुत्रे। दोक्षाऽसि तपेसो योनिः। तपोऽसि ब्रह्मणो योनिः॥७९॥

ब्रह्मांसि क्षत्रस्य योनिः। क्षत्रमेस्युतस्य योनिः। ऋतमंसि भूरा रंभे। श्रद्धां मनेसा। दीक्षां तपेसा। विश्वेस्य भुवेनस्याधिपत्नीम्। सर्वे कामा यजमानस्य सन्तु। वाते प्राणं मनेसाऽन्वा रंभामहे। प्रजापेतिं यो भुवेनस्य गोपाः। स नो मृत्योस्नायतां पात्व ५ हेसः॥८०॥

इन्द्रं शाकरानुष्टुम् प्र पंदो। तान्ते युनज्मि। इन्द्रं शाकर पृङ्कि प्रपंदो॥८१॥

ज्योग्जीवा ज्रामेशीमहि। इन्द्रं शाकर गायुत्रों प्र पंद्ये। तान्ते युनज्जि। इन्द्रं शाक्तर त्रिष्टुम् प्र पंद्ये। तान्ते युनज्जि। इन्द्रं शाक्तर् जगेतों प्र पंद्ये। तान्ते युनज्जि।

तान्ते युनज्जि। आऽहं दीक्षामंश्हमृतस्य पत्नींम्। गायत्रेण छन्दंसा ब्रह्मेणा च। ऋत् सत्येऽधायि। सत्यमृतेऽधायि। ऋतं च मे सत्यं चाभूताम्। ज्योतिश्मृब्

सुवेरगमम्। सुवगै लोकं नाकेस्य पृष्ठम्। ब्रप्नस्य विष्टपेमगमम्। पृथिवी

तयाऽग्रिर्देक्षयां दीक्षितः। ययाऽग्रिर्देक्षयां दीक्षितः। तयां त्वा दीक्षयां

दीक्षयामि। अन्तरिक्षं दीक्षा। तयां वायुर्दीक्षयां दीक्षितः। ययां वायुर्दीक्षय

रीक्षितः। तयाँ त्वा दीक्षयां दीक्षयामि। दौर्दीक्षा। तयांऽऽदित्यो दीक्षयां दीक्षितः।

ययांऽऽदित्यो दीक्षयां दीक्षितः॥८३॥

तयौ त्वा दीक्षयो दीक्षयामि। दिशो दीक्षा। तयो चन्द्रमां दीक्षयो दीक्षितः। ययो चन्द्रमां दीक्षयो दीक्षितः। तयौ त्वा दीक्षयो दीक्षयामि। आपो दीक्षा। तया वर्षणो राजां दीक्षयो दीक्षितः। यया वर्षणो राजां दीक्षयो दीक्षितः। तयौ त्वा

तया सोमो राजा दोक्षयां दीक्षितः। यया सोमो राजां दोक्षयां दीक्षितः।

दीक्षयां दीक्षयामि। ओषंघयो दीक्षा॥८४॥

आपश्चौषंधयश्च। ऊर्कं सूनृतां च। तास्त्वा दीक्षंमाणमनुं दीक्षन्ताम्। स्वे दक्षे दक्षंपितेह सींद। देवानारं सुम्रो मंहते रणाय। स्वास्स्थस्तनुवा संविश्वस्व। पितेवैधि सूनव आ सुशेवः। शिवो मां शिवमा विश्व। सृत्यं मे आत्मा। श्रुद्धा 531 ओषेधयस्त्वा दीक्षेमाणमनु दीक्षन्ताम्। वाका दीक्षेमाणमनु दीक्षताम्। ऋचेस्त्वा दीक्षेमाणमनु दीक्षन्ताम्। सामानि त्वा दीक्षेमाणमनु दीक्षन्ताम्। यजूर्षि त्वा दीक्षेमाणमनु दीक्षन्ताम्। अहेश्र रात्रिश्च। कृषिश्च वृष्टिश्च। त्विषिश्चापीचितिश्च॥८६॥ तयाँ त्वा दीक्षयां दीक्षयामि। वाग्दीक्षा। तयाँ प्राणो दीक्षयां दीक्षितः। ययाँ प्राणो दीक्षयां दीक्षितः। तयां त्वा दीक्षयां दीक्षयामि। पृथिवी त्वा दीक्षंमाण्मनुं दीक्षताम्। दिशंस्त्वा दीक्षेमाण्मनु दीक्षन्ताम्। आपंस्त्वा दीक्षेमाण्मनु दीक्षन्ताम्। अन्तरिक्षं त्वा दीक्षेमाणमनु दीक्षताम्। द्यौस्त्वा दीक्षेमाणमनु दीक्षताम्॥८५॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३) मेऽक्षितिः॥८७॥

तपों मे प्रतिष्ठा। सृषितुप्रैसूता मा दिशों दीक्षयन्तु। सृत्यमैस्मि। अृहं त्वदेसिम्

मदीसे त्वमेतत्। मर्मासे योनिस्तव योनिरस्मि। ममैव सन्वहं हव्यान्यंग्ने। पुत्रः पित्रे लोककुञ्जातवेदः। आजुह्नानः सुप्रतीकः पुरस्तात्। अग्रे स्वां योनिमा सीद साध्या। अस्मिन्थ्स्घस्थे अध्युत्तंरस्मिन्॥८८॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

ऽन्वेतु। त्रीणि व्रताय विष्णुस्त्वाऽन्वेतु। च्त्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वाऽन्वेतु। पश्चे गुशुभ्यो विष्णुस्त्वाऽन्वेतु। षड्रायस्पोषांय विष्णुस्त्वाऽन्वेतु। सप्त सप्तभ्यो होत्राभ्यो विश्वे देवा यजमानश्च सीदत। एकमिषे विष्णुस्त्वाऽन्वेतु। द्वे कुर्जे विष्णुस्त्वा-

विष्णुस्त्वाऽन्वेतु। सखायः सृप्तपंदा अभूम। सृख्यं ते गमेयम्॥८९॥

पादंः। साऽसिं सुब्रह्मण्ये। तस्यौस्तेऽन्तरिक्षं पादंः। साऽसिं सुब्रह्मण्ये। तस्यौस्ते सुख्याते मा योषम्। सुख्यान्मे मा योष्ठाः। साऽसिं सुब्रह्मण्ये। तस्यास्ते पृथिवी द्योः पादंः। साऽसिं सुब्रह्मण्ये। तस्याँस्ते दिशः पादंः॥९०॥

पुरोरंजास्ते पश्चमः पादंः। सा न् इष्मूर्जं धुक्ष्वा तेजं इन्द्रियम्।

ब्ह्यवर्चसम्त्राद्यम्। वि मिमे त्वा पर्यस्वतीम्। देवानां घेनु स्दुष्यामनपस्फुरन्तीम्।

रुद्रवंतीमादित्यवंतीम्॥९१॥

चतुः शिखण्डा युर्वतिः सुपेशाः। घृतप्रंतीका भुवंनस्य मध्ये। तस्यारं सुपूर्णाविधि

वर्ष्मन्दिवः। नाभां पृथिच्याः। यथाऽयं यजमानो न रिष्यैत्। देवस्यं सिवेतुः सुवे।

यौ निविधौ। तयौर्देवानामधि भागधेयम्। अप् जन्यं भयं नुद। अपं चक्राणि वर्तय। गृह ९ सोमेस्य गच्छतम्। न वा उं वेतिन्मियसे न रिष्यसि। देवा ९ इदेषि पथिभिः सुगेभिः। यत्र यन्ति सुकृतो नापि दुष्कृतः। तत्रं त्वा देवः सीवृता देधातु॥९२॥ ब्रह्मणो योनिर\*हंसः पृङ्कि प्रपंद्ये दोक्षा ययाऽऽदित्यो दोक्षयां दीक्षितस्तयां त्वा दोक्षयां दीक्षयाम्योषंययो दोक्षा द्योस्त्वा

दीक्षेमाणुमनुं दीक्षतामपीचितिश्राक्षितिरुत्तरस्मिन्गमेयुं दिशुः पादं आदित्यवंतीं वर्तयु पश्चं च॥------

यदुस्य पारे रजंसः। शुक्रं ज्योतिरजायता तन्नंः पर्षदति द्विषंः। अग्ने वैश्वानर

स्वाहाँ। यस्मौद्रोषाऽवाशिष्ठाः। ततो नो अभंयं कृधि। प्रजाभ्यः सर्वाभ्यो मृड। नमों क्द्रायं मोदुषै। यस्मौद्भीषा न्यषंदः। ततों नो अभंयं कृषि॥९३॥

प्रजाभ्यः सर्वाभ्यो मृड। नमो क्द्रायं मीदुषै। उदुंस्र तिष्ट्र प्रति तिष्ट् मारिषः। मेमं यज्ञं यज्ञेमानं च रीरिषः। सुवर्गे लोके यज्ञेमान् हिधेहि। शन्ने एधि द्विपदे शं चतुंष्पदे। यस्मौद्रोषाऽवेषिष्ठाः पुलायिष्ठाः सुमज्ञाँस्थाः। ततो नो अभेयं कृधि। य इदमकेः। तस्मै नमेः। तस्मै स्वाहाँ। न वा उंवेतिन्ध्रियसे। आशांनां त्वा विश्वा आशाः। युजस्य हि स्थ ऋत्वियौं। इन्द्रांशी चेतनस्य च। हुताहुतस्य तृप्यतम्। अहेतस्य हुतस्ये च। हुतस्य चाहेतस्य च। अहेतस्य हुतस्यें च। इन्द्रांग्री अस्य सोमेस्य। वीतं पिंबतं जुषेथाम्। मा यजमानं तमो विदत्। मर्लिजो मो इमाः प्रजाः। मा यः सोमीमेमं पिबौत्। स॰सृष्टमुभयं कृतम्॥९५॥ प्जाभ्यः सर्वाभ्यो मृड। नमो क्द्रायं मोदुषै॥९४॥ कृषिं मो॒दुषेऽहैतस्य च सृप्त चे॥■ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

्र अन्गगसस्त्वा वयम्। इन्द्रेण प्रिषिता उपे। वायुष्टे अस्त्व श्यम्। मित्रस्ते अस्त्व श्यम्। वर्रणस्ते अस्त्व श्यमः। अपौङ्या क्रतेम्य क्रामेः।

535 सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

घोषेणामींबा ॐ श्वातयत॥ ९६॥

युक्ताः स्य वहंता देवा ग्रावांण् इन्दुरिन्द् इत्यंवादिषुः। एन्द्रंमचुच्यवुः परमस्याः

परावतंः। आऽस्माथ्सघस्थौत्। ओरोर्न्नतिरक्षात्। आ सुभूतमेसुषवुः। ब्रह्मवर्चसं म् आसुषवुः। सम्मरे रक्षार्थस्यविषयुः। अपेहतं ब्रह्मज्यस्ये। वाक्रे त्वा मनेश्च

श्रीणीताम्॥९७॥

प्राणक्षं त्वाऽपानक्षं श्रीणीताम्। चक्षुंक्ष त्वा श्रोत्रं च श्रीणीताम्। दक्षंश्वत्वा बले

च श्रीणीताम्। ओजंश्र त्वा सहंश्र श्रीणीताम्। आयुंश्र त्वाऽज॒रा चे श्रीणीताम्।

आ्त्मा चे त्वा तृनूश्चे श्रीणीताम्। श्रुतोऽिस श्रुतं कृतः। श्रुतायं त्वा श्रुतेभ्यंस्त्वा।

यो देवानां देवतंमस्तपोजाः। तस्मै त्वा तेभ्यंस्त्वा। मयि त्यदिन्द्रियं मृहत्। मयि

यमिन्द्रेमाहुर्वर्षणं यमाहुः। यं मित्रमाहुर्यमुं सृत्यमाहुः॥९८॥

दक्षो मिष्ये ऋतुः। मिष्ये धािष्य सुवीर्यम्। त्रिशुंग्घमी वि भाेतु मे। आकूत्या मनेसा

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

जनान्प्र स मित्र। यस्मात्र जातः परो अन्यो अस्ति। य आविवेश भुवेनानि विश्वौ। प्रजापेतिः प्रजयो संविदानः। त्रीणि ज्योतीरंषि सचते स षोडशी। एष ब्रह्मा य ऋत्वियः। इन्द्रो नामे श्रुतो गुणे॥१००॥ प्र ते महे विदधे शश्सिष्ट्र हरीं। य ऋत्वियः प्र ते वन्वे। वनुषो हर्यतं मदमी इन्द्रो नामे घृतं नयः। हरिभिक्षार्फ् सेचेते। श्रुतो गण आ त्वां विशन्तु। हरिवर्षसङ्गिरेः। इन्द्राधिपतेऽधिपतिस्त्वं देवानांमसि। अधिपतिं माम्। आयुष्मन्तं तस्यं सुम्नमंशीमहि। तस्यं मुक्षमंशीमहि। वाग्जुंषाणा सोमंस्य तृप्यतु। मित्रो सुह। विराजा ज्योतिषा सुह। युज्ञेन पर्यसा सुह। तस्य दोहंमशीमहि॥९९॥

वर्चस्वन्तं मनुष्येषु कुरु॥१०१॥

इन्द्रेश्च सुम्राड्वरुणश्च राजाै। तो ते भृक्षं चेकतुरग्नं पृतम्। तयोरनुं भृक्षं भेक्षयामि। वाग्जुषाणा सोमेस्य तृष्यतु। प्रजापीतिविश्वक्रमी। तस्य मनो देवं युज्ञेनं राष्यासम्। अर्थेगा अस्य जीहितः। अवसानेपतेऽवसानं मे विन्दा नमो क्द्रायं वास्तोष्यतेये

सर्वान्युथो अंनृणा आक्षीयेम। इदमूनु श्रेयोंऽवृसानुमा गंन्म। शिवे नो

तद्यांतयामः। जीवा जीवेभ्यो नि हंराम एनत्। अनुणा अस्मिन्नंनुणाः परोस्मन्। तृतीये लोके अनुणाः स्यामा ये देवयानां उत पितृयाणाः॥१०३॥

गान्यंपामित्यान्यप्रतीतान्यस्मि। युमस्यं बुलिना चरोमि। इहैव सन्तः

द्यावांपृथिवी उमे इमे। गोमद्धनंवदर्शवदूर्जस्वत्। सुवीरां वीरेरनु सर्श्वरम। अर्कः पवित्र×् रजंसो विमानं। पुनाति देवानां भुवंनानि विश्वा। द्यावांपृथिवी पर्यसा संविदाने। घृतं दुहाते अमृतं प्रपीने। पवित्रमक्ते रजंसो विमानं। पुनाति देवानां

मुवेनानि विश्वा। सुवुज्योतिर्यशो मृहत्। अशोमहि गा्धमुत प्रतिष्ठाम्॥१०४॥

वात्यत् श्रीणीता्र सत्यमाहुरंशीमहि गुणे कुेरु विद्रवंणे पितृयाणां अको रजंसो विमानुस्त्रीणि च॥■

त ज्य

विवर्तने। यो

आवर्तने

उद्याने यत्परायंणे।

आयेने विद्रवंणे॥१०२॥

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

बुहन्त

सर्वानुमित्रानवधीद्युगेने।

अयमा।

<u>मित्रो</u> .

उदंस्ताम्प्सीथ्सविता

537

मामंकरद्वीरवेन्तम्। रथन्तरे श्रंयस्व स्वाहां पृथिव्याम्। वामदेव्ये श्रंयस्व स्वाहाऽन्तरिक्षे। बृहति श्रंयस्व स्वाहां दिवि। बृहता त्वोपंस्तभ्रोमि। आ त्वां ददे सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

यशंसे वीर्याय चा अस्मास्विघ्निया यूयं देधाथेन्द्रियं पर्यः। यस्तै द्रुफ्सो यस्ते

उद्रुषः॥१०५॥

दैव्यंः केतुर्विश्वं भुवंनमाविवेशं। स नंः पाह्यरिष्ट्ये स्वाहाँ। अनुं मा सर्वो यज्ञोऽयमेतु। विश्वे देवा मरुतः सामार्कः। आप्रियश्छन्दार्शसे निविदो यजूर्षि। अस्यै पृथिव्ये यद्यज्ञियम्। प्रजापेतेर्वर्तिनमनुं वर्तस्व। अनुवीरेरनुं राष्ट्राम् गोभिः।

अन्वश्वेरनु सर्वेरु पुष्टेः। अनु प्रजयाऽन्विन्द्रियेणं॥१०६॥

देवा नो यज्ञमुंजुधा नंथन्तु। प्रतिक्षत्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे। प्रत्यक्षेषु प्रति तिष्ठामि गोषु। प्रति प्रजायां प्रति तिष्ठामि भव्यै। विश्वमन्याऽभि वाबुधे। तदन्यस्यामधिश्रितम्। दिवे च विश्वकेमीणे। पृथिव्यै चांकरं नमंः। अस्कान्द्यौः

ग्रेथिवीम्। अस्कानुषुमो युवागाः॥१०७॥

539 स्कन्नेमा विश्वा भुवंना। स्कन्नो युज्ञः प्र जंनयतु। अस्कानजीने प्राजीने। आ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

स्कन्नाञ्जायते वृषाँ। स्कन्नात्प्र जीनेषीमहि। ये देवा येषांमिदं भांगधेयं बभूवं। येषां प्रयाजा उतानूयाजाः। इन्द्रंज्येष्ठेभ्यो वर्षणराजभ्यः। अग्निहोतुभ्यो देवेभ्यः स्वाहाँ॥ उत त्या नो दिवां मृतिः॥१०८॥ अदितिरूत्या गमत्। सा शन्तांची मयेस्करत्। अप् स्निपंः। उत त्या दैव्यां भिषजाः। शत्रेस्करतो अश्विनाः। य्यातांम्स्मद्रपेः। अप् सिधेः।

शम् अर्अभिस्करत्। शत्रेस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपाः॥१०९॥

अप स्निधंः। तदित्पदं न विचिकेत विद्वान्। यन्मृतः पुनंरप्येति जीवान्। त्रिवृद्यद्भवंनस्य रथवृत्। जीवो गर्भो न मृतः स जीवात्। प्रत्यंस्मे पिपीषते। विश्वानि विदुषे भर। अर्ङ्गमाय जग्मेवे। अपेश्वाह्म् वने । इन्दुरिन्दुमवांगात्। इन्दोरिन्द्रो-ऽपात्। तस्ये त इन्द्विन्द्रेपीतस्य मधुमतः। उपेहूतस्योपेहूतो भक्षयामि॥११०॥ <u>उदर्ष इन्द्रियेण गा मृतिरंर्षा अंगात्रीणि च॥</u>■ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

यद्वो देवा अतिपादयोनि। वाचा चित्प्रयेतं देव्हेडंनम्। अरायो अस्मा॰ अभिदुंच्छुनायते। अन्यत्रास्मन्मेरुतस्तन्नियेतन। ततं म् आपस्तदुं तायते पुनेः। स्वादिष्ठा प्रीतिरुचथाय शस्यते। अय॰ संमुद्र उत विश्वभेषजः। स्वाहांकृतस्य ब्रह्मे प्रतिष्ठा मनेसो ब्रह्मे वाचः। ब्रह्मे युज्ञानारं हविषामाज्येस्य। अतिरिक् कर्मणो यचं हीनम्। युज्ञः पर्वाणि प्रतिरत्नेति कृत्पयन्। स्वाहांकृताऽऽहुंतिरेतु देवान्। आश्रोवितमृत्याश्रोवितम्। वर्षद्भृतमृत्यनूँक्तं च युज्ञे। अतिरिक् कर्मणो यर्च हीनम्। युज्ञः पर्वाणि प्रतिरत्नेति कृत्पयन्। स्वाहांकृताऽऽहुंतिरेतु देवान्॥१११॥

इमं में वरुण तत्त्वां यामि। त्वत्रों अग्ने स त्वत्रों अग्ने। त्वमंग्ने अयासि प्रजापते समुतृष्णुतभुवः। उद्दयं तमंस्म्परि। उदुत्यं चित्रम्॥११२॥

इमं जीवेभ्यः परिधिं दंधामि। मैषान्नुंगादपंरो अर्धमेतम्। शृतं जीवन्तु शृरदंः

गुरूचीः। तिरो मृत्युं देधतां पर्वतेन। इष्टेभ्यः स्वाहा वष्डनिष्टेभ्यः स्वाहाँ। भेषजं दुरिष्ट्रे स्वाहा निष्कृत्ये स्वाहाँ। दौराँखेँ स्वाहा दैवीभ्यस्तुनूभ्यः स्वाहाँ॥११३॥ ऋखें स्वाहा समृंखें स्वाहां। यतं इन्द्र भयांमहे। ततों नो अभंयं कृधि।

आप्यांयय हरिवो वर्धमानः। यदा स्तोतुभ्यो महि गोत्रा रुजासि। भूयिष्टभाजो अधे ते स्याम। अनौज्ञातं यदाज्ञांतम्। यज्ञस्यं कियते मिथुं। अग्रे तदंस्य कल्पय। त्व॰ हि वेत्थं यथात्थम्। पुरुषसम्मितो यज्ञः। युज्ञः पुरुषसम्मितः। अग्रे तदंस्य मघंवञ्छुग्धि तव तत्रं ऊतयै। वि द्विषो वि मृधो जहि। स्वस्तिदा विशस्पतिः। वृत्रहा वि मृधो वृशी। वृषेन्द्रंः पुर एंतु नः। स्वस्तिदा अंभयङ्करः। आभिर्गीभिर्यदतों कल्पया त्व ९ हि वेत्थे यथातृथम्। यत्पांकृत्रा मनेसा दोनदेक्षा न। युज्ञस्य मन्वते यहेवा देवहेडंनम्। देवांसश्चकुमा वयम्। आदित्यास्तस्मांन्मा मुश्चत। ऋतस्यतेन  $\sum_{\infty}^{\infty}$ मर्तासः। अग्निष्टद्धोता कतुविद्विजानन्। यजिष्ठो देवा १ ऋतुशो यंजाति॥११५॥ देवार्शक्षेत्रं तुनूभ्यः स्वाहोनं पुर्षषसिम्पितोऽग्रे तदंस्य कल्पय् पर्श्नं च॥=== न ऊनम्॥११४॥

मामुता देवां जीवनकाम्या यत्। बाचाऽनृतमूदिमा अग्निर्मा तस्मादेनंसः।

542

यदन्यकृतमारिम। सजातश्र×सादुत वां जामिश्र×सात्। ज्यायंसः श्र×सांदुत वा कनीयसः। अनाज्ञातं देवकृतं यदेनेः। तस्मात्त्वम्स्माञ्जातवेदो मुमुग्धि। यद्वाचा क्रोने द्यावापृथिवी। क्रोने त्वर संरस्वति। क्रतान्मां मुश्रुतारहंसः। गार्हेपत्यः प्रमुश्चतु। दुरिता यानि चकुम। करोतु मामंनेनसम्॥११६॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

एनेश्वकार् यत्पिता। अग्निमा तस्मादेनेसः। यदां पिपेषं मातरं पितरम्। पुत्रः प्रमुदितो धयन्। अहिश्सितो पितरो मया तत्। तदेग्ने अनुणो मेवामि। यदन्तरिक्षं

गुथिवीमुत द्याम्। यन्मातरं पितरं वा जिहि शसिम। अग्निमा तस्मादेनंसः। यदाशसां

शिष्जैर्यदनुतं चकुमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनंसः। यद्धस्ताैन्यां चकर् किल्बिषाणि। अक्षाणां वृग्नुमुंपजिघ्नेमानः। दूरेपृष्या चं राष्ट्रभृचे।

यन्मनंसा। बाहुभ्यांमूरुभ्यांमष्टीबन्धांम्॥११७॥

तान्यंपस्यसावनुदत्तामृणानि। अदीव्यत्रृणं यद्हं च्कारे। यद्वादौस्यन्थ्सञ्जगारा

जनैभ्यः। अग्निमा तस्मादेनंसः। यन्मयि माता गर्ने स्ति॥११८॥

543 यदेनेश्वकृमा नूतेनं यत्पुंराणम्। अग्निर्मा तस्मादेनेसः। अति कामामि दुरितं यदेनेः। जहामि रिप्रं पंरमे सधस्थैं। यत्र यन्तिं सुकृतो नापि दुष्कृतेः। तमा रोहामि सुकृतां नु लोकम्। त्रिते देवा अमृजतैतदेनेः। त्रित एतन्मेनुष्येषु मामृजे। निश्रमा यत्पंराश्रमा॥११९॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

ततो मा यदि किश्चिदानुशे। अग्निमा तस्मादेनंसः॥१२०॥

गार्हेपत्यः प्रमुञ्जतु। दुरिता यानि चकुम। करोतु मामनेनसम्। दिवि जाता अफ्सु जाताः। या जाता ओषेधीभ्यः। अथो या अग्निजा आपेः। ता नेः शुन्यन्तु

शुन्येनीः। यदापो नक्ते दुरितं चरोम। यद्वा दिवा नूतेनं यत्पुेराणम्। हिरंण्यवर्णास्तत् उत्पुेनीत नः। इमं मे वरुण् तत्त्वां यामि। त्वन्नों अभ्रे स त्वन्नों अभ्रे। त्वमेभ्रे

अयासिं॥१२१॥

<u>अनेनसंमधोकद्धारं सति पंराशसांऽऽनुशेंऽग्रिमा तस्मादेनंसः पुनीत नुस्नीणि च (यद्देवा देवां ऋतेनं सजातशुर्साद्यद्वा</u>

अपसु जाता यदापं जाता यद्धस्तौभ्यामदींच्यं यन्मियं माता यदां पिषेषु यद्न्तिरिक्षं यदाशसाऽति कामामि त्रिते देवा दिवि डुमं में बरुण तत्त्वां यामि त्वत्रों अये स त्वत्रों अये त्वमंत्रे अयासि। )॥■

<sup>~</sup> ~ T

यते ग्राव्यणां चिच्छिदुः सीम राजन्। प्रियाण्यङ्गानि स्वधिता परूर्षि सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

तथ्सन्यथ्सवाज्येनोत वर्षयस्व। अनागसो अधमिथ्मङ्कयेम। यते प्रावां बाहुच्युतो अचुंच्यवुः। नरो यत्ते दुदुहदिक्षिणेन। तत् आप्यायतां तत्ते। निष्यायतां देव सोमा यते त्वचं बिभिदुर्यम् योनिम्। यदास्थानात्प्रच्युंतो वेनीस् त्मना॥१२२॥

त्वया तथ्सोम गुप्तमेस्तु नः। सा नेः सुन्यासीलर्मे व्योमन्। अहाच्छरीर् पर्यसा

उपं क्षरन्ति जुह्नों घृतेने। प्रियाण्यङ्गनि तवं वर्धयन्तीः। तस्मै ते सोम नम् इद्वषेद्द। उपं मा राजन्थसुकृते ह्वयस्व। सं प्रोणापानान्यार् समु चक्षेषा त्वम्। सङ्

श्रोत्रेण गच्छुस्व सोम राजन्। यत्त् आस्थित्॰ शमु तत्ते अस्तु। जानीतान्नेः सृङ्गमेने पथीनाम्। एतं जानीतात्पर्मे व्योमन्। वृकाः सधस्था विद रूपमेस्य॥१२४॥

समेत्ये। अन्यौन्यो भवति वर्णो अस्य। तस्मिन्वयमुपेहतास्तवं स्मः। आ नौ भज सदेसि विश्वरूपे। मृचक्षाः सोमे उत शुश्रुगंस्तु। मा नो वि हांसीद्विरं आवृणानः। अनांगास्तुनुवो वावृथानः। आ नो रूपं वेहतु जायंमानः॥१२३॥

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

545 यदागच्छां'त्पिथिभिदेवयानैः। इष्टापूरे कृणुतादाविरंस्मे। अरिष्टो राजन्नगदः

गच्छतात्परमे व्योमन्। अभूद्देवः सिवेता वन्द्योनु नेः। इदानीमहं उपवाच्यो नृभिः। वि यो रत्ना भजीते मानवेभ्यः। श्रेष्टं नो अत्र द्रविणं यथा दर्पत्। उपं नो मित्रावरुणाविहावेतम्। अन्वादीध्याथामिह नेः सखाया। आदित्यानां प्रसितिर्हेतिः। उग्रा शृतापौष्ठा घविषा परि णो वृणक्त। आप्यांयस्व सन्तै॥१२५॥ परेहि। नमेस्ते अस्तु चक्षेसे रघूयते। नाकुमारोह सृह यजमानेन। सूर्य

જિ ≃ **T** 

त्मना जार्यमानोऽस्य द्युत्पश्चं च॥\_\_\_\_

यहिंदोक्षे मनेसा यचं वाचा। यद्वां प्राणैश्वक्षुषा यच् श्रोत्रेण। यद्रेतेसा मिथुनेनाप्यात्मना। अख्यो लोका देधिरे तेजं इन्द्रियम्। शुक्रा दीक्षाये तपेसो विमोचेनीः। आपो विमोक्रीमीये तेजं इन्द्रियम्। यद्वा साम्रा यजुषा। पृश्नुनां

वर्मन् ह्रिवेषां दिद्येक्षे। यच्छन्दोंभिरोषंधीभिवंनुस्पतौं। अुद्धो लोका दंधिरे तेजं

ड्डिंद्यम्॥१२६॥

शुका दीक्षायै तपेसो विमोचेनीः। आपो विमोक्कीमीय तेजं इन्द्रियम्। येन ब्रह्म येनं श्वत्रम्। येनेन्द्राग्नी प्रजापेतिः सोमो वर्तणो येन राजा। विश्वं देवा ऋषयो येनं प्राणाः। अस्यो लोका दिधिरे तेजं इन्द्रियम्। शुका दीक्षायै तपेसो विमोचेनीः। आपो विमोक्कीमीय तेजं इन्द्रियम्। अपां पुष्पंमस्योषधीनार् रसः। सोमंस्य प्रियं

अग्नेः प्रियतंमर हविः स्वाहाँ। अपां पुष्पंमस्योषंधीनार रसंः। सोमंस्य प्रियं धामं। इन्द्रंस्य प्रियतंमर हविः स्वाहाँ। अपां पुष्पंमस्योषंधीनार रसंः। सोमंस्य प्रियं धामं। इन्द्रंस्य प्रियतंमर हविः स्वाहाँ। अपां पुष्पंमस्योषंधीनार रसंः। सोमंस्य प्रियं धामं। विश्वेषां देवानां प्रियतंमर हविः स्वाहाँ। वृयर सोम व्रते तवं। मनंस्तन्षु पिप्रतः। प्रजावंन्तो अशीमहि॥१२८॥

धामा।१२७॥

अनेन्तरिताः पितरः सोम्याः सोमपीथात्। अपैतु मृत्युर्मुतं न आगन्। वैवस्वतो

देकेन्यंः पितुभ्यः स्वाहाँ। सोम्येभ्यंः पितुभ्यः स्वाहाँ। कृष्येभ्यंः पितुभ्यः स्वाहाँ। देवांस इह मादयध्वम्। सोम्यांस इह मादयध्वम्। कृष्यांस इह मादयध्वम्।

नो अभंयं कुणोतु। पुर्णं वनस्पतेरिव॥१२९॥

अभि नः शीयता र्ययः। सर्वतां नः शर्वापतिः। परं मृत्यो अनु पर्रिह रीरिषो मोत बीरान्। इदमूनु श्रेयोंब्सानुमागंन्म। यद्गोजिद्धंनुजिदंश्वजिद्यत्। पुर्ण पन्थाम्। यस्ते स्व इतेरो देवयानाति। चक्षुष्मते श्रुप्वते ते ब्रवीमि। मा नेः प्रजार वनस्पतेरिव। अभि नेः शीयता॰ रयिः। सर्चतां नः शर्चोपतिः॥१३०॥

वनस्पतांवुन्द्यो लोका देथिरे तेजं इन्द्रियं धामांशीमहीवाभिनंः शीयता॰ र्यिरेकं च॥\_\_\_\_\_

सर्वान् यद्विष्यणेग्न वि वै याः पुरस्ताद्ववां देवेषु परिंस्तुणीत सक्षेदं यद्स्य पारेंऽनागस् उदंस्ताम्प्सीद्वक्षं प्रतिष्ठा

सर्वान्नूतिमेव यामेवापस्वाहीते ब्रतानौं पर्णवुल्कः सोम्यानांमुस्मिन् युज्ञेऽभ्रे यो नो ज्योग्जीवाः पुरोरंजाः प्रतेमहे ब्रह्मं

यद्देवा यत्ते प्राव्यणा यद्दिदीक्षे चतुर्दश॥१४॥

प्रतिष्ठा गार्हेपत्याञ्चे थ्यादुत्तरशृतम्॥१३०॥

सर्वोञ्छचीपतिः॥

हरिः ओम्॥

548 ॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके सप्तमः प्रपाठकः समाप्तः॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

|| अष्टमः प्रश्नः||

## ॥तौत्तरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके अष्टमः प्रपाठकः॥

साङ्गर्णयेष्ट्यां यजते। इमाञ्चनतार् सङ्गृह्वानीति। द्वादंशारत्नी रश्नना भेवति। द्वादंश मासाः संवथ्सरः। संवथ्सरमेवावं रुन्ये। मोञ्जी भेवति। ऊग्र्वे मुञ्जाः।

ऊर्जमेवावं रुन्ये। चित्रा नक्षेत्रं भवति। चित्रं वा पुतत्कर्मा।१॥

यदंश्वमेथः समृष्ट्यै। पुण्यंनाम देवयजंनमध्यवंस्यति। पुण्यांमेव तेनं कीर्तिमभि जंयति। अपंदातीनृत्विजंः समावंहन्त्या सुंब्रह्मण्यायाः। सुवर्गस्यं लोकस्य समष्ट्यै। केश्वश्यम्शु वंपते। नखानि नि केन्तते। दतो धांवते। स्नाति। अहंतं वासः परिधत्ते। पाप्मनोऽपंहत्यै। वाचं यत्वोपं वसति। सुवर्गस्यं लोकस्य गुस्यै। रात्रिं जाग्रयंन्त

आसते। सुवर्गस्यं लोकस्य समेष्ट्री॥२॥

चतुंष्टय्य आपों भवन्ति। चतुंः शफो वा अश्वः प्राजापत्यः समृद्धो। ता दिग्भ्यः

चतुः शरावो भवति। दिक्ष्वेव प्रति तिष्ठति। उभयतोष्क्कौ भवतः। उभ्यतं समाभृता भवन्ति। दिक्षु वा आपेः। अत्रं वा आपेः। अन्द्यो वा अत्रं जायते। यदेवास्बोऽत्रं जायेते। तदवे रुन्ये। तासुं ब्रह्मोदुनं पंचति। रेतं पृव तद्देयाति॥३॥ एुवास्मिनुचं दपाति। उद्धरति शृत्त्वाये। सृपिष्वांन्भवति मेध्यत्वाये। चृत्वारं अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अर्षेयाः प्राश्चेन्ति। दिशामेव ज्योतिषि जुहोति। चृत्वारि हिर्ण्यानि ददाति।

दिशामेव ज्योतीङ्ष्यवं रुन्धे॥४॥

यदाज्यंमुच्छिष्यंते। तस्मित्रश्ननान्युंनति। प्रजापंतिवां ओद्नः। रेत् आज्यमै। यदाज्ये रश्नान्युनति। प्रजापंतिमेव रेतंसा समर्धयति। दर्भमयी रश्ना भेवति। बहु वा एष कुंचरो मेध्यमुपंगच्छति। यदर्षः। पवित्रं वै दर्भाः॥५॥

यद्देर्ममयी रश्ना भवति। पुनात्येवेनम्। पूतमेनं मेध्यमा लेभते। अश्वेस्य वा

यन्मृहर्ष्विजः प्राष्ट्रजन्ति। मृहिमानेमेवास्मिन्तद्देधति। अश्वेस्य वा आलेब्यस्य रेत आलेब्यस्य महिमोदेकामत्। स मृहित्विजुः प्राविशत्। तन्मृहित्विजां महित्विकम्।

551 उदंकामत्। तथ्सुवर्णे हिरंण्यमभवत्। यथ्सुवर्णे हिरंण्यं ददांति। रेतं पृव तद्दंधाति। ओद्ने दंदाति। रेतो वा ओद्नः। रेतो हिरंण्यम्। रेतंसैवास्मिन्नेतो द्धाति॥६॥

द्याति कुन्ये दुर्मा अभवृष्यट् चं॥🕳

यो वै ब्रह्मणे देवेभ्यंः प्रजापंतयेऽप्रीतिप्रोच्याश्वं मेध्यं ब्रप्नाति। आ देवताभ्यो वृश्यते। पापीयान्मवति। यः प्रतिप्रोच्यं। न देवताभ्य आवृंश्यते। वसीयान्भवति।

यदाहै। ब्रह्मन्नश्चं मेध्यं भन्थ्यामि देवेभ्यः प्रजापेतये तेनं राध्यासमिति। ब्रह्म वै ब्रह्मा। ब्रह्मण एव देवेभ्यः प्रजापेतये प्रतिप्रोच्याश्चं मेध्यं ब्रप्नाति॥७॥ न देवताभ्य आ वृंश्यते। वसीयान्भवति। देवस्यं त्वा सवितुः प्रंसव इति रश्चनामादेते प्रसूत्ये। अश्वनौबिंहभ्यामित्योह। अश्विनौ हि देवानोमध्वयू आस्ताम्। पूष्णो हस्ताभ्यामित्योह यत्यै। व्यृंखं वा एतद्यज्ञस्यं। यदंयजुष्केण अर्मताम्। पूष्णो हस्ताभ्यामित्योह यत्यै। व्यृंखं वा एतद्यज्ञस्यं। यदंयजुष्केण िक्यते। इमामंगुभ्णत्रश्चामृतस्येत्यिधं वदति यजुष्कृत्ये। यज्ञस्य समृंस्त्रे॥८॥

552 अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

ऋतूनाम्। यथ्मंबथ्मरः। तस्यं त्रयोद्शो मासो विष्टपम्। ऋषभ एष यज्ञानाम्। यदंश्वमेषः। यथा वा ऋषभस्यं विष्टपम्। एवमेतस्यं विष्टपम्। त्रयोद्शमंरति « तदांहुः। द्वादंशारती रशुना केर्तव्या(३) त्रयोदशार्त्नी(३)रिति। ऋषुनो वा एष रश्नायांमुपा दंधाति॥९॥ यथंर्षभस्यं विष्टपर् सङ्स्करोति। ताहगेव तत्। पूर्वे आयुषि विदथेषु क्येत्योह। आयुरेवास्मिन्दर्याति। तयां देवाः सुतमा बंभूबुरित्योह।

तिमेबोपाबेतते। ऋतस्य सामैन्थ्स्रमारपुन्तीत्योह। सृत्यं वा ऋतम्।

मुत्येनुवेनमृतेनारंभते। अभिषा असीत्याह॥१०॥

भूमानमेवोपैति। युन्ताऽसीत्याह। युन्तारंमेवैनं करोति। घृर्ताऽसीत्याह।

तस्मोदश्वमेधयाजी सर्वाणि भूतान्यमि भेवति। भुवनम्सीत्याह

गुर्तारमेवेनं करोति। सौऽभ्रिं वैश्वानुरमित्योह। अृष्रावेवेनं वैश्वानुर जुहोति।

सप्रथसमित्यांह॥११॥

553 अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

प्रजयेवेनं पृशुभिः प्रथयति। स्वाहोकृत् इत्योह। होमं पृवास्यैषः।

पृथिव्यामित्योह। अस्यामेवैनं प्रतिष्ठापयति। यन्ता राड्यन्ताऽसि यमेनो धर्ताऽसि धुर्फव्यामित्योह। रूपमेवास्यैतन्महिमानं व्याचेष्टे। कृष्यै त्वा क्षेमीय त्वा रख्ये त्वा पोषांय त्वत्योह। अगमेवैतामा शास्ते। स्वगा त्वां देवेभ्य इत्योह। देवेभ्यं एवैनः स्वगा कंरोति। स्वाही त्वा प्रजापंतय इत्योह। प्राजापत्ये वा अश्वः। यस्यां एव देवतांया आत्रभ्यते। तयेवैनः समर्थयिति॥१२॥

बुधाति समृद्धा उपादंधात्यसीत्यांह सप्रथस्मित्यांह देवेभ्य इत्यांह पर्श्व च॥━━━━

यः पितुरंनुजायाैः पुत्रः। स पुरस्ताैत्रयति। यो मातुरंनुजायाैः पुत्रः। स पृक्षात्रयति। विष्वेश्वमेवास्माैत्याप्मानं विवृहतः। यो अर्वन्तं जिघारंसति

नमन्यमीति वर्षण् इति श्वानं चतुर्क्षं प्रसौति। पूरो मर्तः पुरः श्वेति शुनेश्वतुर्क्षस्य प्रहीन्ते। श्वेब् वै पाप्मा भातृव्यः। पाप्मानेमेवास्य भातृव्यर हिन्ति। सेघुकं मुसेलं

भवति॥१३॥

पाप्पानेमेवास्माच्छमेलमपे प्रावयति। ऐषीक उंदूहो भेवति। आयुर्वी इषीकाः। आयुरेवास्मिन्दयति। अमृतं वा इषीकाः। अमृतेमेवास्मिन्दयति। वेतसशाखोप्सम्बंद्धा भवति। अफ्सुयोनिर्वा अर्थः। अफ्सुजो वेतसः। स्वादेवैनं गुुचैवास्य शुचर् हन्ति। पाप्मा वा एतमीपस्तितयोहुः। यौऽश्वमेधेन यजेत इति। अर्थस्याधस्पृदमुपौस्यति। वृज्ञी वा अर्थः प्राजापृत्यः। वञ्जेणेव पाप्मानं भृहं च त्वं चे वृत्रहित्रिति ब्रह्मा यजमानस्य हस्तं गुह्णाति। ब्रह्मक्षत्रे एव योनेनिमिमीते। पुरस्तौत्पृत्यश्चेम्भ्युदूहति। पुरस्तांदेवास्मिन्यूतीच्युमृतं दघाति। कर्मकर्मेवास्मे साधयति। पौङ्श्वलेयो हन्ति। पुङ्श्वल्वां वै देवाः शुच् न्यंदधुः। सन्देधाति। अभिकत्वैन्द्र भूरपुज्मन्नित्यंष्व्युर्धजमानं वाचयत्युभिजित्यै॥१५॥ भातृेव्यमवेक्रामति। दृष्टिणाऽपं घ्रावयोते॥१४॥ मुबिते प्राबयिति मिमीते पर्शं च॥■ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

च्त्वारं ऋत्विजः समुक्षन्ति। आग्य एवैनं चत्सुभ्यो दिग्भ्योऽभि समीरयन्ति

555 श्तेने राजपुत्रैः सहाष्वर्युः। पुरस्तौत्यत्यङ्गिष्टन्योक्षेति। अनेनाश्वेन मेध्येनेष्ट्या अय १ राजा वृत्रं वेध्यादिति। राज्यं वा अध्वर्युः। क्षत्र १ राजपुत्रः। राज्येनेवास्मिन्क्षत्रं

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

दक्षिणत उद्भिष्टम्प्रोक्षेति। अनेनाश्वेन मेध्येनेष्ट्या। अयः राजाप्रतिधृष्याँ-ऽस्त्विति। बलं वै ब्रह्मा। बलेमराजोग्रः। बलेनेवास्मिन्बलं दधाति। शतेने सूतग्रामणिभिः सह होताँ। पृश्वात्प्राङ्गिष्टम्प्रोक्षेति। अनेनाश्वेन मेध्येनेष्ट्या अ्यरः

दंधाति। शतेना राजमिर्धेः सृह ब्रह्मा॥१६॥

बुहुग्वे बंहुश्वाये बहुजाविकायै। बहुब्रीहियवाये बहुमाषतिलायै। बहुहिरण्याये बहुहस्तिकाये। बहुदासपूरुषाये रियमत्ये पुष्टिमत्ये। बहुरायस्पोषाये राजास्त्विति।

राजाऽस्यै विशाः॥१७॥

भूमा वै होताँ। भूमा सूंतग्रामुण्यंः। भूम्नेवास्मिंन्यूमानं द्याति। शृतेनं क्षत्तसङ्ग्रहीतुभिः सृहोद्याता। उत्तर्तो देक्षिणा तिष्टन्प्रोक्षेति॥१८॥

अनेनाश्वेन मेध्येनेष्ट्या अयर राजा सर्वमायुरेलिति। आयुर्वा उद्याता। आयुंः

क्षत्तसङ्गरीतारंः। आयुष्टेवास्मित्रायुद्धाति। शृतर्श्वांतं भवन्ति। शृतायुः पुरुषः शृतेन्द्रियः। आयुष्येवेन्द्रिये प्रति तिष्ठति। चृतुः शृता भवन्ति। चतेस्रो दिशाः। दिक्ष्वेंच प्रति तिष्ठति॥१९॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

यत्रिक्तमनांलब्यमुथ्मुजन्ति। यथ्स्तोक्यां अन्वाहे। सर्वेहतमेवैनं करोत्यस्केन्दाय। अस्केन्र×् हि तत्। यद्भुतस्य स्कन्देति। सहस्रमन्वाह। सहस्रेसिम्मितः सुवर्गो यथा वै ह्विषों गृहीतस्य स्कन्दति। एवं वा एतदर्श्वस्य स्कन्दति ब्रह्मा विश ऽक्षति दिश्र एकं च॥■

लोकः। सुवर्गस्यं लोकस्यामिजित्ये॥२०॥

यत्परिमिता अनुब्रूयात्। परिमित्मवं रुन्धीत। अपरिमिता अन्वांह। अपरिमितः सुवगों लोकः। सुवर्गस्यं लोकस्य समिष्टी। स्तोक्यां जुहोति। या एव वर्ष्या आपेः। ता अवे रुन्ये। अस्यां जुहोति। इयं वा अग्निवैधान्रः॥२१॥

अस्यामेवेनाः प्रतिष्ठापयति। उवाचं ह प्रजापंतिः। स्तोक्यांसु वा अहमंश्वमेप्र र

557

जुहोति। सोमांय स्वाहेत्यांह। सोमांयैवैनं जुहोति। सावित्र स्वाहेत्यांह। सावित्र सङ्स्थांपयामि। तेन ततः सङ्स्थितेन चरामीति। अग्रये स्वाहेत्योह। अग्रये पुवैनं अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

विराट्। अत्रं विराट्। विराजैवात्राद्यमवं रुन्धे। प्र वा एषौऽस्मास्रोकाच्यंवते। यः परांचीराहुतीर्जुहोति। पुनेः पुनरभ्यावतै जुहोति। अस्मित्रेव लोके प्रति तिष्ठति।

मित्रायु स्वाहेत्योह। मित्रायैवैनं जुहोति। वर्षणायु स्वाहेत्योह। वर्षणायैवैनं जुहोति। पुताभ्यं पुवैनं देवताभ्यो जुहोति। दशंदश सम्पादं जुहोति। दशाँक्षरा <u>ए</u>वैनं जुहोति। बृहस्पतंये स्वाहेत्यांह। बृहस्पतंय एवैनं जुहोति। अपां मोदांय स्वाहेत्यांह। अन्द्य एवैनं जुहोति। वायवे स्वाहेत्यांह। वायवं एवैनं जुहोति॥२३॥ स्रंस्वत्ये स्वाहेत्योह। सरंस्वत्या एुबैनं जुहोति। पूष्णे स्वाहेत्योह। पूष्ण पुता\* ह वाव सौऽश्वमेघस्य सङ्स्थितिमुबाचास्केन्दाय। अस्केन्र्\* हि तत्। यद्यज्ञस्य सर्धस्थेतस्य स्कन्दंति॥२४॥ रुवैनं जुहोति॥२२॥

<u> प्रजापंतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामीति पुरस्तांत्य्रत्यिङ्गिष्टम्प्रोक्षंति। प्रजापंतिब</u>ै देवानामत्रादो बोर्यावान्। अत्राद्यमेवास्मिन्बोर्यं दघाति। तस्मादक्षेः पशूनामेत्रादो अभिजिंत्यै वैश्वान्रः संवित्र एवैनं जुहोति बायवं एवैनं जुहोति च्यवते षट् चं॥━ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

ओजं एवास्मिन्बलं दधाति। तस्मादश्वः पशूनामोजिष्टो बलिष्ठः। बायवे त्वेति गीयांवतमः। इन्द्राभिभ्यां त्वेति दक्षिणतः। इन्द्राभी वै देवानामोजिष्टो बलिष्टो।

पृश्वात्। वायुर्वे देवानामाशुः सारसारितेमः॥२५॥

ज्वमेवास्मिन्दधाति। तस्मादश्वः पश्नामाशुः सारसारितमः। विश्वैन्यस्त्वा देवेन्य इत्युत्तरतः। विश्वे वै देवा देवानां यशस्वितमाः। यशं एवास्मिन्दधाति। तस्मादश्वः पश्नां यशस्वितमः। देवेन्यस्त्वेत्य्यस्तात्। देवा वै देवानामपीचिततमाः।

अपेचितिमेबास्मिन्दधाति। तस्मादक्षेः पशूनामपेचिततमः॥२६॥

सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य इत्युपरिष्टात्। सर्वे वै देवास्त्विषिमन्तो हर्यस्वनेः। त्विषिमेवास्मिन् हरो दथाति। तस्मादक्षेः पशूनां त्विषिमान् हर्यस्वितेमः। दिवे

त्वाऽन्तरिक्षाय त्वा पृथिष्यै त्वेत्याह। एम्य एवैनं लोकेम्यः प्रोक्षंति। सृते त्वाऽसंते अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

सर्वाणि भूतान्युपंजीवन्ति। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। यत्प्रांजापृत्योऽश्वः। अथ् त्वाऽम्धस्त्वोषंधीभ्यस्त्वा विश्वभयस्त्वा भूतेभ्य इत्यांह। तस्मांदश्वमेधयाजिन्

कस्मोदेनम्न्याभ्यो देवताभ्योऽपि प्रोक्षतीति। अश्वे वै सर्वा देवतां अन्वायंताः। तं यद्विश्वैभ्यस्त्वा भूतेभ्य इति प्रोक्षति। देवतां एवास्मित्रन्वा यांतयति। तस्मादश्वे

सर्वा देवतो अन्वायेताः॥२७॥

सार्सारितमोऽपंचिततमः प्राजापृत्योऽश्वः पश्चं च॥🕳

यथा वै ह्विषों गृहीतस्य स्कन्दीते। एवं वा एतदर्थस्य स्कन्दति

कर्ोत्यस्केन्दाय। अस्केन्न्र् हि तत्। यद्भुतस्य स्कन्देति। ईङ्गाराय स्वाहेङ्गेताय स्वाहेत्याह। एतानि वा अश्वचरितानि। चरितेरेवेन्र् समंधयति॥२८॥ यत्प्रोक्षितमनोलब्यमुध्मुजन्ति। यदंश्वचार्तानि जुहोति।

तदांहुः। अनांहुतयो वा अश्वचार्तानि। नैता होंतृच्यां इति। अथो खल्वांहुः।

होतव्यां एव। अत्र वावैवं विद्वानंश्वमेधः सङ्स्थांपयति। यदंश्वचार्ताानं जुहोति। तस्मौद्धोतव्यां इति। बृहिर्धा वा एंनमेतदायतंनाइधाति। भातृव्यमस्मै

जनयोते॥२९॥

आह्वनीयेंऽश्वचार्तानि जुहोति। आयतेन एवास्याहुतीर्जुहोति। नास्मै आतृव्यं जनयति। तदांहुः। यज्ञमुखेयंज्ञमुखे होतव्याः। यज्ञस्य क्रस्यै। सुवर्गस्यं लोकस्यानुंख्यात्या इति। अथो खल्वांहुः॥३०॥ यस्यांनायत्नेऽन्यत्राग्नेराहुतीर्जुहोति। सावित्रिया इष्ट्याः पुरस्ताष्टिकषष्ट्रकृतेः।

यद्यंज्ञमुखेयंज्ञमुखे जुहुयात्। पृशुमिर्यजमानं व्यर्धयेत्। अवं सुवृगक्षिकात्पद्यता|

पापीयान्थस्यादिति। सकुदेव होतव्याः। न यजंमानं पशुमिर्व्यपंयति। अभि सुंवर्गं लोकं जंयति। न पापीयान्भवति। अष्टाचेत्वारि श्वतमश्वरूपाणि जुहोति। अष्टाचेत्वारि श्यदक्षग् जर्गती। जागुतोऽर्थः प्राजापृत्यः समुद्धो। एकुमतिरिक्तं जुहोति। तस्मादेकः प्रजास्वर्धकः॥३१॥

अर्धेयति जनयति खल्वांहुर्जगतो त्रीणि च॥■

विभूम्र्यात्रा प्रभूः पित्रेत्योह। इयं वै माता। असौ पिता। आभ्यामेवैनं परिंददाति। अश्वोऽसि हयोऽसीत्योह। शास्त्येवैनमेतत्। तस्माच्छिष्टाः प्रजा जायन्ते। अत्योऽसीत्योह। तस्मादश्वः सर्वान्यशूनत्येति। तस्मादश्वः सर्वेषां

प्र यशः श्रैष्ठ्यंमाप्रोति। य एवं वेदं। नर्गेऽस्यर्वाऽसि सप्तिरसि वाज्यंसीत्याह। रूपमेवास्येतन्मेहिमानं व्याचेष्टे। ययुर्नामाऽसीत्याह। एतद्वा अश्वस्य प्रियं

पशूनाङ् श्रेष्टमं गच्छति॥३२॥

नामुधेयम्। प्रियेणेवेनं नामुधेयेनाभि वेदति। तस्मादप्यांमित्रो

वेद्घ्वयेते। मित्रमेव भेवतः॥३३॥

मुङ्गत्या

आदित्यानां पत्वाऽन्विहीत्योह। आदित्यानेवैनं गमयति। अग्नये स्वाहा स्वाहें-द्राग्निभ्यामिति पूर्वहोमां जुहोति। पूर्वं एव द्विषन्तं आतृव्यमति कामति। भूरीसे भुवे त्वा भव्याय त्वा भविष्यते त्वेत्युथ्सुंजति सर्वत्वाये। देवां आशापाला

561

एता वा अश्वेस्य बन्धेनम्। ताभिरेवैनं बध्नाति। तस्मादश्वः प्रमुक्तो बन्धेनमा गेच्छति। तस्मादश्वः प्रमुक्तो बन्धेनं न जंहाति। राष्ट्रं वा अश्वमेधः। राष्ट्रं खलु वा एते व्यायेच्छन्ते। येऽश्वं मेध्य×् रक्षेन्ति। तेषां य उद्दं गच्छेन्ति। राष्ट्रादेव ते राष्ट्रं गेच्छन्ति। अथ् य उद्दं न गच्छेन्ति॥३५॥ 562 आशापालाः। तेभ्यं पृवेनं परि ददाति। ईश्वरो वा अश्वः प्रमुक्तः पर्रां परावतं गन्तौः। इह धृतिः स्वाहेह विधृतिः स्वाहेह रन्तिः स्वाहेह रमीतेः स्वाहेते चतुषु पुतं देवेभ्योऽश्रुं मेधांयु प्रोक्षितं गोपायुतेत्यांह। शृतं वै तल्प्यां राजपुत्रा देवा गुष्टादेव ते व्यवेच्छिद्यन्ते। प्रा वा एष सिंच्यते। योऽब्लौऽश्वमेधेन यजेते। यदमित्रा अर्थं विन्देरन्। हुन्येतांस्य यज्ञः। चृतुः शृता रंक्षन्ति। युज्ञस्याघोताय। अथान्यमानीय् प्रोक्षेयुः। सैव तत्ः प्रायिक्षितिः॥३६॥ पृथ्मु जुंहोति॥३४॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

<sup>ा</sup>च्छोते भुवतः पृथ्मु जुहोति न गच्छोन्ते नवं च॥■

563 सृप्तात्मनो देवता उदेकामन्। सा दीक्षाऽभेवत्। स पृतानि वैश्वदेवान्यपश्यत्। तान्यंजुहोत्। तैर्वे स दीक्षामवारुन्य। यद्वैश्वदेवानि जुहोति। दीक्षामेव प्रजापेतिरकामयताश्वमेधेने यजेयेति। स तपोऽतप्यता तस्यं तेपानस्यं अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

तैर्यजमानोऽवं रुन्ये॥३७॥

स्पप्त जुंहोति। स्पप्त हि ता देवतां उदकांमन्। अन्बहं जुंहोति। अन्बहमेव शुक्षामवं रुन्ये। त्रीणे वैश्वदेवानि जुहोति। चृत्वायौँद्धहुणानि। स्पप्त सम्पंद्यन्ते।

एकेविश्शतिं वैश्वद्वानिं जुहोति। एकेविश्शतिं देवलोकाः। द्वादेश् मासाः मुप्त वै शीर्षण्याः प्राणाः। प्राणा दीक्षा। प्राणेरेव प्राणान्दीक्षामवे रुन्ये॥३८॥

पश्चर्तवः। त्रयं इमे लोकाः। असावादित्य एंकविङ्शः। एष सुंवर्गो लोकः। तद्दैव्यं क्षेत्रम्। सा श्रीः। तद्वध्रस्यं विष्टपम्। तथ्स्वाराज्यमुच्यते॥३९॥

विराद्धा जुहोति। त्रि॰शदक्षरा \_\_\_\_ <u>बि</u>र्थातमीद्रहणानि

विराजेवात्राद्यमवे रुन्धे। त्रेधा विभज्ये देवतां जुहोति। त्यावृतो वै देवाः। त्यावृत

ड्डमे लोकाः। एषां लोकानामास्यै। एषां लोकानां क्रस्यै। अप् वा एतस्मौत्राणाः

क्रामन्ति॥४०॥

यो दीक्षामीतेरेचयीते। सप्ताहं प्रचंरन्ति। सप्त वै शीर्षण्याः प्राणाः। प्राणा दीक्षा। प्राणेरेव प्राणान्दीक्षामवं रुन्ये। पूर्णाहुतिमुत्तमां जुहोति। सर्वं वै पूर्णाहुतिः। सर्वमेवाप्रोति। अथौ इयं वै पूर्णाहुतिः। अस्यामेव प्रति तिष्ठति॥४१॥

कुन्ये प्राणान्दीक्षामवं कन्य उच्यते क्रामन्ति तिष्ठति॥🕳

प्रजापेतिरश्वमेथमेसुजत। त॰ सृष्टं न किश्चनोदंयच्छत्। तं वैश्वदेवान्येवोदंयच्छन्। यद्वैश्वदेवानि जुहोति। युजस्योद्येत्ये। स्वाहाऽऽधिमाधीतायु स्वाहाँ। स्वाहाऽधीत्

मनेसे स्वाहाँ। स्वाहा मनेः प्रजापेतये स्वाहाँ। काय स्वाहा कस्मे स्वाहो कतमस्मे

-स्वाहेति प्राजापृत्ये मुख्ये भवतः। प्रजापीतेमुखाभिरेवैनं देवतांभिरुद्येच्छते॥४२॥

अदितिः। अस्या एवैनं प्रतिष्ठायोद्यंच्छते। सर्स्वत्ये स्वाहा सर्स्वत्ये बृहत्यै अदित्ये स्वाहाऽदित्ये मृह्यै स्वाहाऽदित्ये सुमृडीकाये स्वाहेत्यांहा इयं वा

स्वाहा सर्स्वत्यै पावकायै स्वाहत्याह। वाग्वै सर्स्वती। वाचैवैनमुद्येच्छते। पूष्णे स्वाहां पूष्णे प्रपथ्यांय स्वाहां पूष्णे नरम्यिषाय स्वाहत्यांह। प्रश्वो वै पूषा। पशुभिरेवैनमुद्येच्छते। त्वष्ट्रे स्वाहा त्वष्ट्रे तुरीपांय स्वाहा त्वष्ट्रे पुरुरूपांय स्वाहत्यांह। त्वष्टा वै पंशूनां मिथुनानां स्वपकृत्। रूपमेव पशुषु दथाति। अथो रूपैरवैनमुद्येच्छते। विष्णांवे स्वाहा विष्णांवे निखुर्यपाय स्वाहा विष्णांवे निभूयपाय स्वाहत्यांह। यज्ञो वै विष्णुंः। यज्ञायेवैनमुद्येच्छते। पूर्णाहुतिमुत्तमां 565 अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

स्वाहा विष्णवे पूर्णाहुतिमुत्तमां जुहोति। प्रत्युत्तंब्यै सयुत्वायं॥४३॥ युच्छुते पुरुरूपांय स्वाहेत्यांहाष्टी चं॥∎

सावित्रमुष्टाकेपालं प्रातर्निर्वपति। अष्टाक्षेरा गायुत्री। गायुत्रं प्रांतः सबुनम्

प्रातः स्वनादेवैनं गायत्रियाश्छन्दसोऽधि निर्मिमीते। अथौ प्रातः सवनमेव तेनौऽऽप्रोति। गायत्रीं छन्देः। सवित्रे प्रेसवित्र एकांदशकपालं मर्प्यन्दिने। एकांदशाक्षरा त्रिष्टुप्। त्रेष्टुभें माध्यें दिन्॰ सवेनम्। माध्यें दिनादेवेन्॰

999 स्वाहेति चर्तस्र अथो माध्यं दिनमेव सर्वनं तेनाँऽऽप्रोति। त्रिष्टुभं छन्दंः। स्वित्र आंसिवेत्रे द्वादंशकपालमपराह्ने। द्वादंशाक्षरा जगंती। जागंतं तृतीयसर्वनम्। चतंस्रो दिशंः। दिग्भिरेवैन् परिगृह्णाति। आर्थत्थो घ्जो भंवति। प्रजापंतिर्देवेभ्यो तृतीयसबनमेव निलोयता अश्वो रूपं कृत्वा। सौऽश्वत्थे संवथ्सरमीतेष्ठत्। तदंश्वत्थस्याैश्वत्यत्वम्। यदाश्वत्थो ब्रजो भवति। स्व एवैन् योनौ प्रतिष्ठापयति॥४६॥ गृतीयस्वनादेवेनं जगत्याश्छन्द्सोऽधि निर्मिमीते। अथो तेनाँऽऽप्रोति। जर्गतों छन्दंः। ईश्वरो वा अश्वः प्रमुक्तः पराँ इह धृतिः स्वाहेह विधृतिः स्वाहेह रन्तिः स्वाहेह रमितिः सवनात्रिष्टुभृष्छन्द्सोऽधि निर्मिमीते॥४४॥ ब्रिष्टुभ्ष्छन्द्सोऽिष् निर्मिमीते जुहोति नवं च॥━ आह्रंतीर्जुहोति॥४५॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

आ ब्रह्मेन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चेसी जायतामित्याह। ब्राह्मण एव ब्रह्मवर्चेसं देपाति।

267 तस्मौत्पुरा ब्रौह्मणो ब्रह्मवर्चस्येजायत। आऽस्मित्राष्ट्रे रांजुन्यं इष्व्यः शूरो महारुथो अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

जायतामित्याह। राजन्यं एव शौर्यं महिमानं दधाति। तस्मौत्युरा राजन्यं इष्वयः शूरो महार्थोऽजायत। दोग्धी घेनुरित्योह। घेन्वामेव पयो देयाति। तस्मौत्युरा दोग्धी धेनुरंजायत। वोढांऽनुङ्गानित्यांह॥४७॥

अनुडुह्येव वीर्यं दधाति। तस्मौत्पुरा वोढांऽनुड्वानंजायत। आश्रुः सप्तिरित्यांह। अर्थं एव जवं दंधाति। तस्मौत्पुराऽऽशुरखोऽजायत। पुरंन्धियोषेत्यांह। योषित्येव रूपं दंधाति। तस्माथ्की युंबतिः प्रिया भावुंका। जिष्णू रंथेष्ठा इत्यांह। आ ह वै तत्रं जिष्णू रंथेष्ठा जायते॥४८॥

यत्रेतेनं यज्ञेन यजन्ते। समेयो युवेत्यांहा यो वै पूर्ववयसी। स समेयो युवा।

तस्माद्युवा पुमान्त्रियो भावुकः। आऽस्य यंजेमानस्य वीरो जायतामित्योह। आ ह वै तत्र यजेमानस्य वीरो जायते। यत्रेतेन यज्ञेन यजेन्ते। निकामेनिकामे नः प्रजन्यो वर्षात्वित्याह। निकामेनिकामे ह वै तत्रं प्रजन्यो वर्षति। यत्रेतेने

568 युज्ञेन यजन्ते। फिलिन्यों न ओषेधयः पच्यन्तामित्योह। फुलिन्यों हु वै तत्रौषेधयः पच्यन्ते। यत्रेतेन युज्ञेन यजन्ते। योगुक्षेमों नेः कल्पतामित्योह। कल्पेते हु वै अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

तत्रं प्रजाभ्यों योगक्षेमः। यत्रेतेनं युज्ञेन यजन्ते॥४९॥ अनुद्वानित्यांह जायते वर्षति सुप्त चं॥━

रुष वाव युज्ञः। यदंश्वमेषः। अप्येव नोऽत्रास्त्विति। तेभ्यं पृतानंत्रहोमान्प्रायंच्छत्। प्रजापीतिर्देकेन्यों युज्ञान्त्यादिशत्। स आत्मन्नेश्वमेधमा तं देवा अंबुवन्

तानंजुहोत्। तैर्वे स द्वानंप्रीणात्। यदंत्रहोमां जुहोति॥५०॥

यदाज्येन जुहोति। अग्रिमेव तत्प्रीणाति। मधुंना जुहोति। मृहत्ये वा एतद्देवतांयै देवानेव तैर्यजनानः प्रीणाति। आज्येन जुहोति। अग्नेर्वा एतद्रूपम्। यदाज्यम्॥ रूपम्। यन्मधुं। यन्मधुंना जुहोति॥५१॥

महतीमेव तद्देवताँ प्रीणाति। तण्डुलैर्जुहोति। वसूनां वा पृतद्दूपम्। यत्तेण्डुलाः। यत्तंण्डुलैर्जुहोतिं। वसूनेव तत्प्रींणाति। पृथुंकैर्जुहोति। रृद्राणां वा पृतद्दूपम्।

569

क्द्रानेव तस्प्रीणाति। लाजैर्जुहोति। आदित्यानां वा एतद्रूपम्। यक्षाजाः। यक्षाजैर्जुहोति। आदित्यानेव तस्प्रीणाति। क्रम्बैर्जुहोति। विश्वेषां वा एतद्रेवाना ५ यत्पृधुंकाः। यत्पृथुंकैर्जुहोतिं॥५२॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

क्पम्। यक्तरम्बाः। यक्तरम्बैजुहोति॥५३॥

विश्वांनेव तद्देवान्प्रीणाति। धानापिर्जुहोति। नक्षेत्राणां वा पृतद्रूपम्। यद्धानाः। यद्धानापिर्जुहोति। नक्षेत्राण्येव तत्प्रीणाति। सक्तिपिर्जुहोति। प्रजापेतेर्वा पृतद्रूपम्।

यथ्सक्तवः। यथ्सक्तिभिजुहोति॥५४॥

प्रजापतिमेव तत्प्रीणाति। मृसूस्यैंजुहोति। सर्वासां वा पृतद्देवताना ॰

रूपम्। यन्मुस्योनि। यन्मुस्यैजुंहोतिं। सर्वा एव तद्देवताः प्रीणाति।

<u> प्रयुङ्गतण्डुलैर्जुहोति। प्रियाङ्गो ह वै नामैते। एतैवै देवा अश्वस्याङ्गानि समंदधुः।</u>

यत्प्रियङ्गतण्डुलैजुंहोति। अर्थस्येवाङ्गानि सन्देघाति। दशात्रानि जुहोति। दशांक्षरा

570 जुहोति मधुंना जुहोति पृथुंकैर्जुहोति कुरम्बैंजुंहोति सक्तिमजुंहोति प्रियङ्गुतण्डुलैजुंहोति चृत्वारि च (अत्रहोमानाऽऽज्येना्ग्रेमधुंना विराट्। विराद्रथ्नस्यात्राद्यस्यावंशस्त्री।५५॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

प्रजापंतिरश्वमेघमंस्जत। त॰ सृष्ट॰ रक्षाङ्ंस्यजिघा॰सन्। स पुतान्युजापंतिर्नक्त तष्डुलेः पृथुंकैलाजीः क्रम्बैर्यानाभिः सक्तिभिम्सूस्यैः प्रियङ्गतण्डुलेर्दशात्रानि द्वादंशा )॥===

होमानेपश्यत्। तानेजुहोत्। तेर्वे स युजाद्रक्षा्ङ्रस्यपहिन्। यत्रेक्त रहोमां जुहोति।

युज्ञादेव तैर्यजमानो रक्षा्ङ्रस्यपं हन्ति। आज्येन जुहोति। बज्ञो वा आज्यमै।

- प्राणो वा आज्यम्। उभयतं एवास्यं प्राणं दंधाति। पुरस्तां'चोपरिष्टाच। एकंस्मे स्वाहेत्यांह। अस्मिन्नेव लोके प्रति तिष्ठति। द्वाभ्याङ् स्वाहेत्यांह। अमुष्पिन्नेव जुहोति। रक्षेसामपेहत्यै। आज्येनान्ततो जुहोति॥५७॥

अत्रहोमाञ्जेहोति। शरीरवदेवावं रुन्ये। व्यत्यासं जुहोति। उुभयुस्यावंरुद्धो। नक्तं

आज्येस्य प्रतिपदं करोति। प्राणो वा आज्यम्। मुख्त एवास्य प्राणं दंधाति।

वज्रेणेव युजाद्रक्षार्ङ्स्यपं हन्ति॥५६॥

लोके प्रति तिष्ठति। उमयौरेव लोकयोः प्रति तिष्ठति। अस्मिः श्रामुष्मिः श्रा श्तायु स्वाहेत्योह। श्रातायुर्वे पुरुषः श्रातवीयः। आयुरेव वीर्यमवं रुन्ये। महस्रांय स्वाहेत्यांहा आयुर्वे महस्रमा। आयुरेवावं रुन्या सर्वस्मे स्वाहेत्यांहा अपीरिमितमेवावं रुन्धे॥५८॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

एव युजाद्रक्षाङ्स्यपेहन्त्यन्ततो जुहोति श्रताय स्वाहेत्यांह सप्त चे॥🕳

प्रजापेतिं वा एष ईंफ्सतीत्योहुः। यौऽश्वमेधेन यजंत इति। अथो आहुः। सर्वाणि भूतानीति। एकेस्मे स्वाहेत्योह। प्रजापेतिर्वा एकेः। तमेवाऽऽप्रोति। एकेस्मे स्वाहा

द्राभ्याङ् स्वाहेत्यमिपूर्वमाहुतीर्जुहोति। अमिपूर्वमेव सुंवगै लोकमीति। एकोत्तरं

जुहोति॥५९॥

एकवदेव सुंवर्ग लोकमेति। सन्तंतं जुहोति। सुवर्गस्यं लोकस्य सन्तंत्ये। शृताय स्वाहेत्यांह। शृतायुर्वे पुरुषः शृतवीयः। आयुरेव वीर्यमवं रुन्ये। सृहस्राय स्वाहेत्यांह। आयुर्वे सृहस्रम्। आयुरेवावं रुन्ये। अयुताय स्वाहो नियुताय स्वाहाँ

त्रयं इमे लोकाः। इमानेव लोकानवं रुन्ये। अर्बुदाय् स्वाहेत्यांह। वाग्वा प्रयुतांय स्वाहेत्यांह॥६०॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

स्मुद्रमेवाऽऽप्रोति। मध्यांय स्वाहेत्यांह। मध्यंमेवाऽऽप्रोति। अन्तांय स्वाहेत्यांह। अन्तंमेवाऽऽप्रोति। प्रार्थाय स्वाहेत्यांह। प्रार्थमेवाऽऽप्रोति। उषसे

स्वाहा व्युष्टे स्वाहेत्योह। रात्रिकी उुषाः। अहव्युष्टिः। अहोरात्रे एवावे रुन्ये।

अहोग्] मोहयेत्। उषमे स्वाहा व्युष्ट्रै स्वाहोदेष्युते स्वाहोंधुते स्वाहेत्यनुदिते जुहोति। उदितायु स्वाहो सुवृगीयु स्वाहो लोकायु स्वाहेत्युदिते जुहोति।

!कोत्तरं जुहोति प्रयुतांय स्वाहेत्यांह समुद्राय स्वाहेत्याहाहृव्युष्टिः सृप्त चं॥∎

<u>अ्होरात्रयोरव्यंतिमोहाय॥६२॥</u>

अथों अहोरात्रयोंरेव प्रति तिष्ठति। ता यदुभयीदिंवां वा नक्तं वा जुहुयात्।

अर्बुदम्। वाचेमेवावं रुन्ये। न्यंबुदायं स्वाहेत्यांह। यो वै वाचो भूमा। तत्त्र्यंबुदम्। वाच एव भूमानुमवं रुन्ये। समुद्रायं स्वाहेत्यांह॥६१॥

सुवर्गं लोकं गंमयति। अग्रये स्वाहा सोमांय स्वाहेतिं पूर्वहोमाञ्जेहोति। पूर्वे रुव द्विषन्तं भातृेव्यमति कामति। पृथिव्ये स्वाहाऽन्तरिक्षाय स्वाहेत्यांह। गमयति। आयेनायु स्वाहा प्रायेणायु स्वाहेत्युंद्रावाञ्जेहोति। सर्वमेवेन्मस्केन्न॰ विभूमा्त्रा प्रभूः पित्रत्यंश्वनामानि जुहोति। उभयोरेवैनं लोकयौनमिषेयं

यथायजुरेवेतत्। अग्रये स्वाहा सोमांय स्वाहोते पूर्वदोक्षा जुहोति। पूर्वे एव द्विपन्तं भातृंव्यमति कामति॥६३॥

पृथिव्ये स्वाहाऽन्तरिक्षाय स्वाहेत्येकविश्शिनीं दीक्षां जुंहोति। एकेविश्शतिवें देवलोकाः। द्वादंश मासाः पञ्चतेवः। त्रयं इमे लोकाः। असावादित्य रेकविश्शः। एष सुवर्गो लोकः। सुवर्गस्य लोकस्य समेध्ये। भुवे देवानां कर्मणेत्युंतुदीक्षा जुंहोति। ऋतूनेवास्में कल्पयति। अग्रये स्वाहो वायवे स्वाहिते

लोकस्यास्यै। सुवर्गस्य

सङ्गामाजेत्याप्तोजुह्गोते।

अवोड्यज्ञः

जुहोत्यनंन्तरित्यै॥६४॥

ऽन्वेभवदित्येनुभूजुंहोति। सुवर्गस्यं लोकस्यानुभूत्यै। स्वाहाऽऽधिमाधीताय स्वाहेति समेस्तानि वैश्वदेवानि जुहोति। समेस्तमेव द्विषन्तं भ्रातृेव्यमति में गृहा भवन्त्वत्याभूजुंहोति। सुवर्गस्यं लोकस्याभूँत्ये। अग्रिना तपो-पर्यास्यै। भव्यं भिवृष्यदिति पर्यापीजुहोति। सुवगस्य लोकस्य अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

भामोते॥६५॥

दुन्धः स्वाहा हनूभ्याङ् स्वाहेत्यंङ्गहोमाञ्जेहोति। अङ्गेअङ्गे वै पुरुषस्य

पाप्मोपेक्षिष्टः। अक्नांदक्षांदेवैनं पाप्मनुस्तेनं मुर्ञाते। अञ्येतायं स्वाहां कृष्णाय स्वाहाँ श्वेताय स्वाहेत्यंश्वरूपाणिं जुहोति। रूपैरेवैन् समंधयति। ओषंधीभ्यः स्वाहा मूलैभ्यः स्वाहेत्योषिधिहोमाञ्जेहोति। द्वय्यो वा ओषंधयः। पुष्पैभ्योऽन्याः

फलं गृह्वन्ति। मूलैभ्योऽन्याः। ता एवोभयीरवं रुन्धे॥६६॥

मेषस्त्वां पच्तैरंवृत्वित्यपाँव्यानि जुहोति। प्राणा वै देवा अपाँव्याः। प्राणानेवावं वनस्पतिभ्यः स्वाहेति वनस्पतिहोमाञ्जहोति। आर्ण्यस्यात्राद्यस्यावंरुस्य

575

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

रुन्ये। कूप्याँभ्यः स्वाहाम्बः स्वाहेत्युपा॰ होमाँभुहोति। अपसु वा आपंः। अन्रं पূৰ্वदीक्षा जुंहोति पूर्व पूव द्विषन्तं आतृव्यमति कामृत्यनंन्तरित्यै कामति रुन्ये जायंत् एकं च॥——————[१७] वा आपेः। अन्धो वा अत्रै जायते। यदेवान्धोऽत्रं जायेते। तदवे रुन्ये॥६७॥

अम्मार्शसे जुहोति। अयं वै लोकोऽम्मार्शसे। तस्य वसवोऽधिपतयः। अग्निज्योतिः। यदम्मार्शसे जुहोति। हममेव लोकमवं रुन्ये। वसूनार सायुंज्यं गच्छति। अग्निं ज्योतिरवं रुन्ये। नमार्शसे जुहोति। अन्तरिक्षं वै नमार्शसे॥६८॥

तस्यं क्द्रा अधिपतयः। वायुज्योतिः। यन्नभार्धस जुहोति। अन्तरिक्षमेवावं रुन्ये। क्द्राणार् सायुज्यं गच्छति। वायुं ज्योतिरवं रुन्ये। महार्षेसि जुहोति। असौ वै लोको महार्षसि। तस्योदित्या अधिपतयः। सूर्यो ज्योतिः॥६९॥

सायुज्य यन्महार्शसे जुहोति। अमुमेव लोकमवं रुन्ये। आदित्यानार गच्छति। सूर्यं ज्योतिरवं रुन्ये। नमो राज्ञे नमो वर्ठणायेति

जुहोति। जुहोति। अत्राद्यस्यावेरुस्यै। मयोभूर्वातो अमि वीतूस्ना इति ग्व्यानि 9/5 <u> पृशूनामवेरुस्त्रो। प्राणाय स्वाहाँ व्यानाय स्वाहेति सन्ततिहोमाञ्जेहोति। सुवर्गस्य</u> लोकस्य सन्तंत्ये॥७०॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

सिताय स्वाहाऽसिताय स्वाहेति प्रमुक्तीजुहोति। सुवगस्यं लोकस्य प्रमुक्ते

पृथिष्यै स्वाहाऽन्तरिक्षाय स्वाहेत्योह। यथायजुरेवैतत्। दत्वते स्वाहांऽदन्तकांय स्वाहेति शरीरहोमाञ्चेहोति। पितृलोकमेव तैर्यजमानोऽवं रुन्ये। कस्त्वां युनक्ति स त्वां युनिक्किति परिधीन् युनक्ति। इमे वै लोकाः परिधयंः। इमानेवास्मै लोकान् युनक्ति। सुवर्गस्ये लोकस्य समिष्ट्री॥७१॥

ज्ञांयतामिति समंस्तानि ब्रह्मवर्चसानि जुहोति। ब्रह्मवर्चसमेव तैर्यज्ञमानोऽवं रुन्ये। जाक्ने बीजुमिति जुहोत्यनंन्तरित्यै। अग्रये समंनमत्पृथिव्ये समनम्दिति

सुवर्गमेव ताभ्यां लोकं यज्ञीमानोऽवं रुन्यां आ ब्रह्मेन्बाह्मणो ब्रह्मवर्चसी

यः प्रांणतो य आत्मदा इति महिमानौ जुहोति। सुवगों वै लोको महंः।

सत्रतिहोमाञ्जेहोति। सुवर्गस्यं लोकस्य सत्रेत्यै। भूताय् स्वाहां भविष्युते स्वाहेति

मूतामुब्यौ होमौ जुहोति। अयं वै लोको भूतम्॥७२॥

यदर्भन्दः प्रथमं जायमान् इत्यंश्वस्तोमीयं जुहोति। सर्वस्यास्यै। सर्वस्य जित्यै। असो भिविष्यत्। अनयोरेव लोकयोः प्रति तिष्ठति। सर्वस्यास्यै। सर्वस्यावेरुद्धो। सर्वमेव तेन"प्रोति। सर्वं जयति। यौऽश्वमेथेन यजेते॥७३॥

एक्यूपो वैकाद्शिनी वा। अन्येषाँ युज्ञानां यूपां भवन्ति। एक्वि र्शिन्यंश्वमेधस्या सुवर्गस्यं लोकस्यामिजित्यै। बैल्वो वां खादिरो वां पालाशो वां। अन्येषां लोकस्य समेष्ट्री। नान्येषां पशूनां तेजन्या अवृद्यान्ते। अवेद्यन्त्यश्वेस्य॥७५॥ वै नभा∜सि सूर्यो ज्योतिः सन्तेत्ये समध्ये भूतं यज्ञोते नवं च॥━ सुवर्गस्य नोकस्य समेध्ये॥७४॥

वेतसशाखायामर्थस्य। अफ्सुयोनिर्वा अर्थः। अफ्सुजो वेतसः। स्व पृवास्य योनाववे द्यति। यूपेषु ग्राम्यान्पशूत्रियुअन्ति। आरोकेष्वांरण्यान्यांरयन्ति। पृशूनां व्यावृत्ये। आ ग्राम्यान्पशूर्ळेभेन्ते। प्रारण्यान्थ्सृंजन्ति। पाप्पनोऽपंहत्ये॥७६॥ पाप्मा वै तेजनी। पाप्मनोऽपंहत्यै। घुष्यशाखायांमन्येषां पशूनामंबद्यन्ति

षद्दोलाशाः। सोमपीथस्यावेरुद्धो। एकेवि १शितेः सम्पंद्यन्ते। एकेवि १शिते

देवलोकाः। द्वादेशु मासाः पञ्चतिवेः। त्रयं इमे लोकाः। असावोदित्य एकेवि रशः।

रुष सुंबर्गो लोकः। सुबर्गस्यं लोकस्य समिष्यै। शतं प्शबो भवन्ति॥७८॥

श्तेन्द्रियः। आयुष्येवेन्द्रिये प्रति

पुण्यंस्य गुन्धस्यावेरुस्यो। भूणहुत्यामेवास्मांदपृहत्ये। पुण्येन गुन्धेनोभयतः परि

राञ्जुंदालमभ्रिष्ठं मिनोति। भूणहृत्यायां अपंहत्यै। पौतुंद्रवाव्मितों भवतः।

अर्थस्य व्यावृत्ये त्रीणि च॥🕳

गुह्णाति। षड्डेल्वा भेवन्ति। ब्रह्मवर्चसस्यावंरुस्यो षद्वोदिराः। तेज्सोऽवंरुस्ये॥७७॥

कस्मौध्सुत्यात्। दृक्षिणृतौऽन्येषां पश्नुनामंबृद्यन्ति। उत्तर्तोऽश्वुस्येति। बारुणो बा

अर्थः॥७९॥

एषा वै वर्रणस्य दिक्। स्वायांमेवास्य दिश्यवंद्यति। यदितरेषां पशूनामंवृद्यति।

शुत्देवृत्यं तेनावं रुन्ये। चितेऽग्रावधि वैत्से कटेऽश्वं चिनोति। अृफ्सुयोनिर्वा

अर्थः। अपस्पुजो वेत्सः। स्व एवैन् योनो प्रतिष्ठापयति। पुरस्ताप्यत्यर्थं तूप्रं

चिनोति। पश्चात्प्राचीनं गोमृगम्॥८०॥

प्राणापानावेवास्मिन्थ्सम्यश्चौ दधाति। अर्थं तूप्रं गोमृगमिति सर्वेहते पृताञ्चेहोति। पृषां लोकानाममिजित्यै। आत्मनाऽभि जुहोति। सात्मानमेवेन्

सतेनुं करोति। सात्माऽमुर्ष्मित्नोको भवति। य एवं वेदं। अथो वसोरेव

धार्गे तेनावे रुन्ये। इ्लुवर्दायु स्वाहो बल्विवर्दायु स्वाहेत्योह। सुंबृथ्सुरो

वा इंलुवर्दः। परिवर्थ्मरो बेलिवर्दः। संवर्थ्सरादेव परिवर्ध्मरादायुरवे रुन्ये।

579 अंश्वमुष्याप्रोति। अपीरिमिता भवन्ति। अपीरिमित्स्यावंरुस्त्रै। ब्रह्मवादिनो वदन्ति।

आयुरेवास्मिन्दधाति। तस्मादश्वमेधयाजी ज्रसां विस्नसामुं लोकमेति॥८१॥ तेजुसोऽवंरुस्डो भवुन्त्यक्षों गोमृगमिलुवदंश्रुत्वारि च॥\_\_\_\_\_

पुक्विव्शाऽभ्रिभेवति। पुक्विव्शः स्तोमंः। एकेविश्शातिर्यूपाः। यथा वा अश्वा

वर्षमा वा वृषाणः सङ्स्फुरेरन्। एवमेव तथ्स्तोमाः सङ्स्फुरन्ते। यदेकविष्शाः। ते यथ्समृच्छेरन्। हन्येतास्य युज्ञः। द्वादृश एवाग्निः स्यादित्योहुः। द्वादृशः

स्तोमः॥८२॥

एकांदश् यूपौः। यद्वांदशौंऽग्रिर्भविति। द्वादंश् मासौः संवध्स्परः। संवध्सरेणेवास्मा अन्नमवं रुन्धे। यद्दश् यूपा भवेन्ति। दशौक्षरा विराट्। अन्नं विराट्।

विराजेवात्राद्यमवे रुन्ये। य ऐकाद्शः। स्तने एवास्ये सः॥८३॥

दुह एवैनां तेने। तदोहुः। यद्वांदुशौऽभिः स्यौद्वाद्धाः स्तोम् एकांदश यूपौः।

यथा स्थूरिणा यायात्। ताटक्तत्। पुकविष्श पुवाग्निः स्यादित्योहुः। पुकविष्शः स्तोमेः। एकविष्शतिर्यूपाः। यथा प्रष्टिमियािते। ताटगेव तत्॥८४॥

581 भवति। एकवि॰्शौऽग्निर्भवति। एकवि॰्शः स्तोमंः। एकवि॰शातिर्यूपौः। एतानि रुक्वि॰्शः स्तोमंः। एकेवि॰शातिर्यूपाः। एता वा अभ्यमेषे तिसः कुकुभः। य एवं \_\_\_\_\_ वेदं। कुकुछ् राज्ञां भवति। यो वा अभ्यमेधे त्रीणि शोर्षाणि वेदं। शिरो ह राज्ञां यो वा अश्वमेषे तिस्रः कुकुभो वेदे। कुकुछ् राज्ञां भवति। एकवि॰्शौऽग्निर्भवति। वा अंश्वमेधे त्रीणि शोर्षाणि। य एवं वेदा शिरो ह राज्ञां भवति॥८५॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

द्वा<u>द</u>शः स्तोमः स एव तच्छिरों हु राज्ञां भवति षट चं॥**≖** 

देवा वा अश्वमेधे पर्वमाने। सुवर्गं लोकं न प्राजानन्। तमश्रुः प्राजानात्।

यदंश्वमेषेऽश्वंन मेध्येनोदंश्रो बहिष्यवमान सर्पन्ति। सुवर्गस्यं लोकस्य प्रज्ञांत्ये। न वै मंनुष्यंः सुवर्गं लोकमञ्जसा वेद। अश्वो वै सुंवर्गं लोकमञ्जसा वेद।

नयति।

ल कस्त

एुवमेवेनुमश्वेः सुवुगै लोकमञ्जसा नयति। पुच्छेम्न्वा रंभन्ते। सुवुर्गस्यं

उद्गातारमपुरुध्यां अर्थमुद्धीथायं वृणीते। यथां क्षेत्रज्ञोऽअंसा

यदुंद्रातोद्गायेत्। यथा क्षेत्रज्ञोऽन्येनं पृथा प्रतिपादयेत्। तादक्तत्॥८६॥

582

वडंबा उपं रुन्धन्ति। मिथुन्त्वाय् प्रजात्यै। अथो यथोपगातारं उपगायन्ति। समेष्ट्री हिं केरोति। सामैवाकः। हिं केरोति। उद्ग्रिथ पुवास्य सः॥८७॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

ताहगेव तत्। उदंगासीदश्वो मेघ्य इत्योह। प्राजापत्यो वा अश्वः। प्रजापेतिरुद्धाथः। उद्घीथमेवावं रुन्ये। अथों ऋख्सामयोरेव प्रति तिष्ठति। हिरंण्येनोपाकेरोति। ज्योतिर्वे हिरंण्यम्। ज्योतिरेव मुंख्तो दंधाति। यजमाने च प्रजासुं च। अथो हिरंण्यज्योतिर्व यजमानः सुवगै लोकमेति॥८८॥

तथ्स उपाकेरोति चत्वारि च॥∎

पुरुषो वै यज्ञः। यज्ञः प्रजापीतिः। यदस्रे पृशूत्रियुआन्ति। यज्ञादेव तद्यज्ञं प्रयुक्के। अर्भं तूप्रं गोमृगम्। तानिभ्रिष्ठ आलेभते। सेनामुखमेव तथ्सङ्घ्यति।

तस्मीद्राजमुखं भोष्मं भावुकम्। आग्रेयं कृष्णग्रीवं पुरस्ताष्ट्रलाटे। पूर्वाग्रिमेव तं अत्र. व पौष्णमन्बश्चम्। पुरस्ताध्स्थापयन्ति। तस्मौत्यूर्वाभ्रें कुरुते॥८९॥

583

तस्म"त्पूर्वाग्नावाहार्थमा हंरन्ति। ऐन्द्रापौष्णामुपरिष्टात्। ऐन्द्रो वै रांजन्योऽत्रं पूषा। अत्राद्येनैवेनेमुभ्यतः परि गृह्षाति। तस्मौद्राज्नयौऽत्रादो भावुकः। आग्रेयौ तस्मौद्राजुन्यों बाहुब्लीभावुकः। त्वाष्ट्रौ लोमशस्वयौ सुकथ्योः। सुकथ्योरेव वीर्यं धत्ते। तस्मौद्राज्न्यं ऊरुब्लीभावुंकः। श्रितिपृष्ठौ बांर्हस्पत्यौ पृष्ठे। कृष्णग्रीवो बाहुवोः। बाहुवोर्व वीर्यं धत्ते॥९०॥ अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

बृह्मवर्चसमेवोपरिष्टाद्धते। अथौ क्वचै एवैते अभितः पर्यूहते। तस्मौद्राजन्यः で で 【 वै धाता। अस्यामेव प्रति तिष्ठति। सौर्यं बुलक्षं पुच्छे। उथ्सेधमेव तं कुंरुते। तस्मोदुश्सेयं भूये प्रजा अभिसङ्श्रंयन्ति॥९१॥

साङ्गृहण्या चतुंष्टय्यो यो वै यः पितुश्चत्वारो यथा निक्तं प्रजापंतये त्वा यथा प्रोक्षितं विभूरोह प्रजापंतिरकामयताश्वमेथेनं प्रजापेतिनै किश्रुन सांवित्रमा ब्रह्मेन्युजापेतिदेवैभ्यः प्रजापेती रक्षारंसि प्रजापेतिमीफ्सति विभूरंश्वनामान्यम्भारंस्येकयूपो

|   | ४शितेः॥२३॥                   |  |
|---|------------------------------|--|
| - | देवाः पुरुष्क्रयोविश्शति     |  |
|   | ाञ्चंदालमेकवि <u>*</u> शो वे |  |

साङ्गहण्या तस्मोदश्वमेथयाजी यत्परिमिता यद्यंज्ञमुखे यो दीक्षां देवानेव त्रयं इमे सितायं प्राणापानावेवास्मिन्तस्मौद्राजुन्यं

साङ्गहुण्या सङ्श्रंयन्ति॥ एकेनवतिः॥ ९१॥

हरिं: ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके अष्टमः प्रपाठकः समाप्तः॥

**■ नवमः प्रश्नः** 

## ॥तौत्तरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके नवमः प्रपाठकः॥

यजमानोऽवं रुन्ये। संवृथ्सरस्य वा एषा प्रतिमा। यदेषाद्शिनंः। द्वादेश् मासाः तमाप्रोत्। तमास्वाऽष्टोद्शिमिरवांरुन्य। यदंष्टाद्शिनं आलुभ्यन्ते। युज्ञमेव तैरास्वा प्रजापंतिरश्वमेधमंसृजता सौऽस्माध्सृष्टोऽपाैकामत्। तमंष्टादशिभिरनु प्रायुंङ्ग पश्चतेवः॥१॥

संब्थ्सरौऽष्टादशः। यदंष्टाद्शिनं आलुभ्यन्तै। संब्थ्सरमेव तैरास्वा यजमानो-नवंनवालेभ्यन्ते सवीर्यत्वायं। यदांरण्यैः सर्ध्स्थापयैत्। व्यवंस्येतां पितापुत्रौ। ऽवं रुन्धे। अग्निष्ठेऽन्यान्यशूनुपाकरोतिं। इत्रेषु यूपैष्वष्टाद्शिनोऽज्ञामित्वायः।

ऋक्षीकाः पुरुषव्याघाः पीरमोषिणं आव्याधिनीस्तस्केरा अरंग्येष्वाजायेरन् व्यष्वांनः क्रामेयुः। विदूरं ग्रामेयोर्थामान्तौ स्यांताम्॥२॥

तदांहुः। अपंशावो वा एते। यदांरुण्याः। यदांरुण्येः सर्इस्थापयैत्। क्षिप्रे

अनेवरुद्धा अस्य पृशवंः स्युः। यत्पर्यभ्रिकृतानुथ्मुजेत्॥३॥

यज्ञवेश्वासं कुर्यात्। यत्पश्चालभेते। तेनैव पश्चनं रुन्ये। यत्पर्योग्रकृतानुथ्युजत्ययं अवंरुद्धा अस्य पशवो भवंन्ति। न यंज्ञवेश्वासम्भविति। न यजेमानमरंण्यं मृत र हंरनित। ग्राम्यैः सङ् स्थापयिति। एते वै पृशवः क्षेमो नामे। सं पितापुत्राववंस्यतः। समम्बानः कामन्ति। समन्तिकं ग्रामयोग्रामान्तो भेवतः। नक्षीकाः पुरुषव्याप्ताः पीरमोषिणं आव्याधिनोस्तस्कंग् अरंण्येष्वाज्ञायन्ते॥४॥

ऋतवंः स्यातामुथ्मुजेथ्स्यंतृस्त्रीणि च॥🕳

प्रजापंतिरकामयतोमौ लोकाववं रुन्धोयेति। स एतानुमयान्यशूनपश्यत्।

ग्राम्याङ्श्वारण्याङ्श्वा तानालेभता तैर्वे स उमौ लोकाववारन्या ग्राम्यैरेव पृशुमिरिमं लोकमवोरुन्या आर्ण्यैर्मुम्। यद्घाम्यान्यशूनालमेते। तैलोकमवे रुन्ये। यदांरुण्यान्॥५॥

अुमुं तैः। अनेवरुख्ने वा पृतस्ये संवध्मुर इत्योहुः। य इतइंतश्चातुर्मास्यानि

- ऽ संबथ्सरं प्रयुङ्क इति। एताबान् वै संबथ्सरः। यचातुर्मास्यानि। यदेते चांतुर्मास्याः पृश्ववे आलुभ्यन्तै। प्रत्यक्षेमेव तैः संबथ्सरं यजमानोऽवं रुन्ये। वि वा एष प्रजयां पृशुभिर्ऋध्यते। यः संबथ्सरं प्रयुङ्का संबथ्सरः सुंबर्गो लोकः॥६॥

सुवुगै तु लोकं नापेराप्नोति। प्रजा वै प्शवं एकाद्शिनी। यदेत

र्रकादश्चिनाः पशवे आलभ्यन्तै। साक्षादेव प्रजां पश्चन् यजमानोऽवं रुन्ये। गुजापीतिर्विराजमसुजत। सा सृष्टाऽर्व्वमेयं प्राविशत्। तान्दशिमिरनु प्रायुङ्का

तामाप्रोत्। तामास्वा दृशिभि्रवांरुन्था यद्द्यिनं आकुन्यन्तै॥७॥

विराजमेव तैरास्वा यजमानोऽवं रुन्ये। एकांदश दशत आलेभ्यन्ते। एकांदशाक्षरा त्रिष्टुप्। त्रैष्ट्रेमाः पृशवंः। पृश्नेवावं रुन्ये। वैश्वदेवो वा अश्वेः। नानादेवत्याः पशवो भवन्ति। अश्वस्य सर्वत्वाये। नानांरूपा भवन्ति।

तस्मात्रानांरूपाः पृशवंः। बृदुरूपा भेवन्ति। तस्माद्वदुरूपाः पृशवः समृष्ट्ये॥८॥

भवन्ति। अश्वस्य सर्वत्वाये।

588 अस्मै वै लोकायं ग्राम्याः पृशव आलेभ्यन्ते। अमुष्मां आर्ण्याः। यद्ग्राम्यान्पश्ननालमेते। इममेव तैर्लोकमवं रुन्ये। यदांरण्यान्। अमुं तैः। आर्णयाँक्षोको द्शिनं आलुभ्यन्ते नानांरूपाः पृशवो हे चं॥■ नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

उुभयान्पशूनालेभते। गाम्याङ्श्वांरृण्याङ्श्वां उुभयौलो्कयोरवेरुद्धो। उुभयौन्पृशूना-गुम्याङ्श्वांरण्याङ्श्वा उमयंस्यात्राद्यस्यावंरुस्या उमयान्यशूनालेमते। लेमते॥९॥

ग्राम्याङ्श्वांरण्याङ्श्वा उभयेषां पशूनामवंरुद्धा त्रयंस्नयो भवन्ति। त्रयं इमे

लोकाः। एषां लोकानामास्यै। ब्रह्मवादिनो वदन्ति। कस्मौध्सत्यात्॥१०॥

अस्मिल्लोके बहवः कामा इति। यथ्समानीभ्यो देवताभ्योऽन्येऽन्ये पश्चवं त्रुयाणां त्रयाणा सह वृपा जुहोति। त्र्यांवृतों वै देवाः। त्र्यांवृत इमे लोकाः। एषां आलुभ्यन्तै। अस्मित्रेव तस्नोके कामान्दधाति। तस्मांदस्मैस्नोके बृहवः कामाः।

लोकानामास्यै। एषां लोकानां क्रस्यै। पर्याग्रकृतानार्ण्यानुध्सुंजन्त्यहिं सायै॥११॥

अवंरुद्धा उभयाैन्युशूनालेभते सृत्यादहिरंसायै॥

शोणां धृष्णू नुवाहसेत्यांह। अहोरात्रे वै नृवाहंसा। अहोरात्रे एवास्मैं युनिक्ति। पृता एवास्मैं देवतां युनिक्ति। सुवर्गस्यं लोकस्य समंध्ये। केतुं कृण्वत्रेकेतव् इति प्वजं प्रतिमुश्चति। यशं एवेन्॰ राज्ञां गमयति। जीमूतंस्येव भवति प्रतीकमित्यांह। यथायजुरेवेतत्। ये ते पन्थांनः सवितः पूर्वास् इत्येष्वर्युर्यज्ञमानं

वाचयत्यमिजित्यै॥१४॥

ड्मे कै लोकाः परितस्थुषंः। इमानेवास्मै लोकान् युनिक्ति। रोचेन्ते रोचना दिवीत्याह। नक्षेत्राणि कै रोचना दिवि। नक्षेत्राण्येवास्मै रोचयति। युअन्त्यंस्य काम्येत्याह। कामनिवास्मै युनक्ति। हरी विपंश्वसेत्याह। इमे कै हरी विपंक्षसा।

ड्मे एवास्मे युनिक्ति॥१३॥

--वरन्। बायुमेबास्मे युनिक्ति। परितस्थुष् इत्योह॥१२॥

युअन्ति ब्रप्नमित्योह। असौ वा आदित्यो ब्रप्नः। आदित्यमेवास्मै युनाक्ति। अरुषमित्योह। अग्निर्वा अरुषः। अग्निमेवास्मै युनक्ति। चर्नन्पित्योह। वायुर्वे

589

ज्योतिश्चेवास्मे गृष्टं चं समीची दधाति। सृहस्रं भवन्ति। सृहस्रंसाम्मितः सुवगो लोकः। सुवर्गस्यं लोकस्यामिजित्यै। अप् वा एतस्मातेजं इन्द्रियं

राष्ट्रमंश्वमेघः॥१६॥

भूभुंबः सुवरिति प्राजापत्यामिरावयन्ति। प्राजापत्यो वा अर्थः। स्वयैवैनं देवतया समर्पयन्ति। भूरिति महिषी। भुव इति वावाता। सुवरिति परिवृक्ती। एषां लोकानामिभिजित्ये। हिरण्ययाः काचा भवन्ति। ज्योतिवै हिरण्यम्।

लोमाँन्येवास्य तथ्सम्भंरन्ति॥१५॥

पशवः श्रीः क्रांमन्ति। योऽश्वमेधेन यजेते। वसंवस्त्वाऽअन्तु गायत्रेण छन्दसेति महिष्यभ्यनिक्ति। तेजो वा आज्यमा। तेजो गायत्री। तेजसेवास्मे तेजोऽवं

परा वा एतस्ये यज्ञ एति। यस्ये पशुरुपाकृतोऽन्यत्र वेद्या एति। एतॐस्तोतरेतेनं पथा पुनरश्वमावितयासि न इत्योह। वायुर्वे स्तोता। वायुमेवास्यं प्रस्ताद्दधात्यावृत्ये। यथा वै हविषों गृहीतस्य स्कन्दंति। एवं वा एतदश्वस्य स्कन्दति। यदंस्योपाकृतस्य लोमानि शीयंन्ते। यद्वालेषु काचानावयीन्ता

सन्ये॥१७॥

तेजंसैवास्मां इन्द्रियमवं रुन्ये। आदित्यास्त्वाऽअन्तु जागंतेन छन्दसीते परिवृक्ती। तेजो वा आज्यम्। पृशवो जगंती। तेजंसैवास्मे पृशूनवं रुन्ये। पत्नेयोऽभ्यंअन्ति। क्द्रास्त्वांअन्तु त्रेष्ट्रेभेन् छन्द्सेति वावातां। तेजो वा आज्यम्। इन्द्रियं त्रिष्टुप्

श्रिया वा एतद्रुपम्॥१८॥

यत्पलेयः। श्रियमेवास्मिन्तद्देयति। नास्मातेजं इन्द्रियं पृशवः श्रीरपं

कामन्ति। लाजी(३)च्छाची(३)न् यशोममाँ(४) इत्यतिरिक्तमत्रमश्वायोपाहेरन्ति। प्रजामेवात्रादीं कुर्वते। एतद्देवा अत्रमतैतदत्रमछि प्रजापत् इत्याह।

-प्रजायोमेबात्राद्यं दयते। यदि नाबजिघ्नेत्। अग्निः पृषुरोसीदित्यवंघ्रापयेत्। अवं हेव जिघ्रति। आकान् वाजी कमैरत्यंकमीद्वाजी द्योस्ते पृष्ठं पृथिवी स्परस्थमित्यश्वमनुमन्नयते। एषां लोकानांममिजित्यै। समिद्धो अञ्जन्कृदेरं

नतीनामित्यर्थस्याप्रियों भवन्ति सरूपत्वायं॥१९॥

परिंतस्थुष् इत्यांहेमे एवास्मै युनत्त्याभिजिंत्यै भरन्त्यश्वमेथो कंन्ये रूपञ्जिष्ठाति त्रीणिं च॥

तेजंसा वा एष ब्रह्मवर्चसेन व्यृंख्यते। यौऽश्वमेधेन यजंते। होतां च ब्रह्मा चं ब्रह्मोद्यं वदतः। तेजंसा चैवैनं ब्रह्मवर्चसेनं च समंधयतः। दक्षिणतो ब्रह्मा भविति। दक्षिणतआयतनो वै ब्रह्मा। बार्हस्पत्यो वै ब्रह्मा। ब्रह्मवर्चसमेवास्य दक्षिणतो दंधाति। तस्माद्दक्षिणोऽधौं ब्रह्मवर्चीसतंरः। उत्तर्तो होतां भवति॥२०॥

उत्तरतआयतनो वै होता। आग्रेयो वै होता। तेजो वा अग्रिः। तेजं

ुवास्यौतरतो देथाति। तस्मादुत्तरोऽर्धस्तेजस्वितंरः। यूपंमभितो वदतः। यजमानदेवत्यो वै यूपंः। यजमानमेव तेजंसा च ब्रह्मवर्चसेनं च समर्धयतः। किङ् स्विदासीत्पूर्वचित्तिरत्याह। द्यौर्वै वृष्टिः पूर्वचित्तः॥२१॥

दिवंमेव वृष्टिमवं रुन्ये। किङ् स्विदासीद्वृहद्वयु इत्योह। अश्वो वै बृहद्वयेः। अश्वमेवावं रुन्ये। किङ् स्विदासीत्यिशङ्गिलेत्याह। रात्रिवै पिशङ्गिला। रात्रिमेवावं

रुन्ये। किङ् स्विदासीसिलिष्मिलेत्या<mark>ह</mark>। श्रीर्वे पिलिष्मिला अन्नाद्येमेवावं

593 कः स्विदेकाकी चंरतीत्योह। असौ वा आंदित्य एंकाकी चंरति। तेजं एवावं रुन्ये। क उंस्विज्ञायते पुनिरत्योह। चन्द्रमा वै जायते पुनंः। आयुरेवावं रुन्ये। किङ् स्विद्धिमस्यं भेषजमित्योह। अग्निवै हिमस्यं भेषजम्। ब्रह्मवर्चसमेवावं रुन्ये। किङ् स्विदावपेनं मृहदित्योह॥२३॥ नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अयं वै लोक आवर्पनं महत्। अस्मिनेव लोके प्रति तिष्ठति। पुच्छामिं त्वा पर्मन्तं पृथिव्या इत्योह। वेदिवै परोऽन्तंः पृथिव्याः। वेदिमेवावं रुन्ये। पुच्छामिं त्वा भुवंनस्य नामिमित्योह। यज्ञो वै भुवंनस्य नाभिः। यज्ञमेवावं रुन्ये। पुच्छामिं त्वा वृष्णो अश्वस्य रेत इत्योह। सोमो वै वृष्णो अश्वस्य रेतंः। सोमपीथमेवावं रुन्ये। पुच्छामि वाचः पर्मं व्योमेत्योह। ब्रह्म वै वाचः पर्मं व्योम। ब्रह्मवर्चसमेवावं

अप् वा एतस्मौत्राणाः कामन्ति। यौऽश्वमेधेन यजेते। प्राणाय स्वाहो

होतां भवति वै वृष्टिः पूर्वचितिरत्नाद्यमेवावं रुन्ये मृहदित्यांहु सोमो वै वृष्णो अर्थस्य रेतंश्रुत्वारि च॥====

रुन्दे॥२४॥

प्राणानेवास्मिन्दधाति।

आहुंतीर्जुहोति।

सज्जमान

स्वाहेति

नास्मौत्राणा अपेक्रामन्ति। अवेन्तीः स्थावेन्तीस्त्वाऽवन्तु। प्रियं त्वौ प्रियाणौम्। वर्षिष्टमाप्यांनाम्। निधीनां त्वां निधिपति हवामहे वसो ममेत्याह। अपैवास्मै नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अथो धुवन्त्येवेनम्। अथो न्येवास्मै ह्रवते। त्रिः परियन्ति। त्रयं इमे लोकाः तष्ट्रवते॥२५॥

रुम्य एवैनं लोकेम्यो धुवते। त्रिः पुनः परियन्ति। षट्ध्सम्पंद्यन्ते। षड्डा ऋतवंः।

कृतुभिरेवैनं धुवते। अप् वा एतेभ्यंः प्राणाः कामन्ति॥२६॥

ये युजे धुवेनं तन्वते। नुवकुत्वः परियन्ति। नव वे पुरुषे प्राणाः। प्राणानेवाऽऽत्मन्देथते। नैभ्यः प्राणा अपेकामन्ति। अम्बे अम्बाल्यम्बिक इति प्रतीमुदानयिति। अह्वतैवेनाम्। सुभेगे काम्पीलवासिनीत्याह। तपं पुवेनामुपंनयति। सुवगे लोके सम्प्रोण्वांथामित्यांह॥२७॥

सुवर्गमेवेनां लोकं गंमयति।

गर्नेधमित्याह।

आऽहमंजानि गर्मधमा त्वमंजाऽसि पृश्नात्मन्धंते। देवा गर्भः। प्रजामेव प्रजा वै पश्रावो

वा अश्वमेधे पर्वमाने। सुवर्ग लोकं न प्राजानन्। तमश्वः प्राजानात्।

प्रजात्ये

लोकस्य सुवर्गस्य यथ्सूचीमिरसिप्थान्कल्पयेन्ति। <u>त्रिष्टुबाग्तीत्यांह॥२८॥</u>

यथायजुरेवेतत्। त्रय्यः सूच्यो भवन्ति। अयस्मय्यो रजता हरिण्यः। अस्य वै लोकस्यं रूपमयस्मय्यः। अन्तरिक्षस्य रजताः। दिवो हरिण्यः। दिशो वा अयस्मय्येः। अवान्तरदिशा रजताः। ऊर्व्वा हरिण्यः। दिशं एवास्मे कल्पयति। कस्त्वौ छ्यति कस्त्वा विशास्तीत्याहाहिरंसायै॥२९॥ हुवते कामन्यूषर्वाथामित्याह जगतीत्याह कल्पयत्येकं च॥===

अप् वा एतस्माच्छ्री राष्ट्रं क्रांमति। यौऽश्वमेधेन यजति। ऊर्व्वामेनामुच्छ्रेयतादित्याह शीर्वै राष्ट्रमेश्वमेधः। श्रियमेवास्मै राष्ट्रमूर्व्वमुच्छ्रयति। वेणुभारिङ्गराविवेत्याह। राष्ट्रं

वै भारः। राष्ट्रमेवास्मे पर्यूहति। अथौस्या मध्येमेधतामित्यांह। श्रीवै राष्ट्रस्य

मध्यम्॥३०॥

969 राष्ट्रं पसंः। राष्ट्रमेव विश्याहीन्त। तस्मौद्राष्ट्रं विश्वं घातुकम्। माता चे ते पिता चे त इत्योह। इयं वै माता। असौ पिता। आभ्यामेवैनं परिददाति। अग्रं वृक्षस्यं रोहत् इत्योह। श्रीवै वृक्षस्याग्रम्। श्रियमेवावं रुन्ये॥३३॥ क्षेमेमेवावे रुन्धे। यद्धीरुणी यवमतीत्योह। विड्डै हीरुणी। राष्ट्रं यवंः। विशं चैवास्में राष्ट्रं चे समीची दर्थाति। न पुष्टं पृशु मन्यत् इत्योह। तस्माद्राजां पृशूत्र नुमीची दंधाति। आहेलमिति सर्पतीत्योह। तस्मौद्राष्ट्राय विशेः सपीन्त। आहेतं गुमे पस् इत्योह। विड्डै गर्मः॥३२॥ शूद्रा यदर्यजारा न पोषांय धनायतीत्यांह। तस्मौद्वेशीपुत्रं नाभिषिश्चन्ते। ह्ययं यका शंकुन्तिकेत्योहा विड्डै शंकुन्तिका। राष्ट्रमंश्वमेयः। विश्नं चैवास्मे राष्ट्रं चं श्रियंमेवावं रुन्ये। शीते वाते पुनत्रिवेत्यांह। क्षेमो वै राष्ट्रस्यं शीतो वातंः। नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३) पुष्यति॥ ३१॥

प्रसुलामीति ते पिता गुभे मुष्टिमेत स्मयदित्योह। विड्डे गर्भः। गुष्टं मुष्टिः।

- त. ये युज्ञेऽपूतं वदन्ति। द्धिकाव्णो अकारिष्मिति सुरमिमतीमुचं वदन्ति। प्राणा वै सुरुमयंः। प्राणानेबाऽऽत्मन्दंधते। नैभ्यः प्राणा अपंकामन्ति। आपो हि ष्ठा मयोभुब गृष्ट्रमेव विश्याहीती तस्मीदाष्ट्रं विश्वं घातुंकम्। अप् वा पृतेभ्यंः प्राणाः कामन्ति। इत्यद्भिमौजियन्ते। आपो वै सर्वा देवताः। देवताभिरेवात्मानं पवयन्ते॥३४॥

गृष्ट्रस्य मध्यं पुष्यंति गभी रुन्धे दधते चृत्वारि च॥🕳

प्रजापंतिः प्रजाः सृष्टा प्रेणाऽनु प्राविशत्। तान्यः पुनः सम्भवितुं नाशंक्रोत्। सौऽब्रवीत्। ऋप्रवदिथ्सः। यो मेतः पुनेः सम्भरदिति। तं देवा अश्वमेधेनैव समेभरन्। ततो वै त आधिवन्। यौऽश्वमेधेन् यजेते। प्रजापेतिमेव सम्भरत्युघ्नोति।

पुरुषमालेभते॥ ३५॥

वैराजो वै पुरुषः। विराजमेवालेभते। अथो अत्रं वै विराट्। अत्रमेवावं रुन्थे। अश्वमालेभते। प्राजापुत्यो वा अश्वः। प्रजापेतिमेवालेभते। अथो श्रीर्वा एकेशफम्। श्रियमेवावे रुन्ये। गामालेभते॥३६॥

<u>कन्धे</u> अजावी आलेभते भूम्ने। अथो पुष्टिकै भूमा। पुष्टिमेवावं रुन्ये। पर्योग्नकृतं पुरुषं वार्ण्याङ्श्वोध्सृजन्त्यहिर्सायै। उमौ वा एतौ पश्च आलेभ्येते। यश्चांवमो यश्चं पर्मः। तैऽस्योभये यज्ञे ब्द्धाः। अभीष्टां अभिप्रीताः। अभिजिता अभिहेता भवन्ति। नैनं द्रङ्कवं पशवो यज्ञे बद्धाः। अभीष्टां अभिप्रीताः। अभिजिता अभिहुता हि॰सन्ति। यौऽश्वमेथेन यजेते। य उं वैनमेवं वेदं॥३७॥ युज़ो वै गौः। युज्ञमुवालेभते। अथो अत्रुं वै गौः। अत्रमेवाव

कुम्ते गामालेभते पर्मौऽष्टौ चं॥🕳

प्रथमेन वा एष स्तोमेन राष्ट्रा। चतुष्टोमेनं कृतेनायांनामुत्तरहन्। एकविश्शे प्रतिष्ठायां प्रति तिष्ठति। एकविश्शात्प्रतिष्ठायां ऋतून-वारोहति। ऋतवो वै पृष्ठानि। ऋतवेः संवथ्सरः। ऋतुष्वेव संवथ्सरे प्रतिष्ठायं। देवतां अभ्यारोहति। शक्षेरयः पृष्ठं भेवन्त्यन्यदेन्यच्छन्देः। अन्यैऽन्ये वा एते पृशव् आलेभ्यन्ते॥३८॥

उतेवं ग्राम्याः। उतेवांर्ण्याः। अहंरेव रूपेण् समंधयति। अथो अहं एवैष

599 पशुमिर्वा एष व्युध्यते। यौऽश्वमेधेन यजेते। छुगुलं कुल्मार्षं किकिदीविं विदीगयमिति त्वाष्ट्रान्पश्चा लेभते। पशुभिरेवात्मान्॰ समर्धयति। ऋतुमिर्वा एष व्युध्यते। यौऽश्वमेधेन यजेते। पिशङ्गास्त्रयो वासन्ता इत्युतुपश्चालेभते। सौरीर्नेवं श्वेता वशा अनूबन्ध्यां भवन्ति। अन्तत एव ब्रह्मवर्चसमवं रुन्धे। सोमांय स्वराज्ञेऽनोवाहावेनुड्याहावितिं द्वन्द्विनंः पृशूनालेभते। अृहोरात्राणांमभिजित्ये। बिलिर्हियते। तदांहुः। अपंशवो वा पृते। यदंजावयंश्वार्णयाश्चं। पृते वै सर्वे पृशवंः। यद्वया इति। गृव्यान्पृशुनुत्मेऽहं नालेभते॥३९॥ ऋतुभिरेवात्मान् समर्धयति। आ वा एष पृष्धुभ्यो वृख्यते। यौऽश्वमेधेन यजीते। तेनैवोभयान्पशूनवं रुन्थे। प्राजापुत्या भंवन्ति। अनीभिजितस्याभिजित्यै। पर्यभ्रिकृता उथ्मृज्न्त्यनाव्रस्काय॥४०॥ लुभ्यन्ते लुमुते त्वाष्ट्रान्पश्ननालेभतेऽष्टौ चं॥━ नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

प्रजापंतिरकामयत मृहानेत्रादः स्यामिति। स एतावेश्वमेषे मंहिमानाेवपश्यत्।

राजां महिमा। यद्वपां महिम्रोभयतेः परियजीते। यजमानमेव राज्येनोभयतः परिगृह्णाति। पुरस्तौध्स्वाहाकारा वा अन्ये देवाः। उपरिष्टाध्स्वाहाकारा अन्ये। ते वा एतेऽर्थे एव मेध्ये उभयेऽवेरुध्यन्ते। यद्वपां महिम्रोभयतेः परियजीते। तानेवोभयौन्प्रीणाति॥४१॥ 9 जम्येभिरिति। आज्येमवृदानं कृत्वा प्रीतम्ङ्क्षायमाहैतीर्जुहोति। या एव देवता वेश्वदेवो वा अश्वः। तं यत्प्रोजापृत्यं कुर्यात्। या देवता अपिभागाः। ता भांगुघेयेन व्यंधेयेत्। देवताभ्यः समदं दध्यात्। स्तेगान्दङ्ष्राभ्यां मण्डुकां चतुर्देश्वेतानंनुवाकाञ्जेहोत्यनंन्तरित्यै। प्रयासाय स्वाहेति पञ्चद्शम्। पञ्चदश् वा तावेगृह्षीत। ततो वै स महानेत्रादोऽभवत्। यः कामयेत महानेत्रादः स्यामिति। स एतावेश्वमेधे मीहेमानौ गृह्षीत। महानेवात्रादो भवति। यजमानदेवत्यां वै वपा। अपिभागाः। ता भांगधेयेन समेर्धयति। न देवताभ्यः समदं दधाति॥४२॥ प्रियजीते षद्धाः—

601 अर्धमासस्य रात्रयः। अर्धमास्याः संवथ्सर आप्यते। देवासुराः संयंता आसन्। तैऽब्रुवन्नग्नयेः स्विष्टकृतेः। अश्वस्य मेध्यंस्य वयमुंद्धारमुद्धरामहे। अथैतानमि भेवामेति। ते लोहिंतमुदंहरन्त। ततो देवा अभेवन्॥४३॥ नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

क्द्रौऽभिः स्विष्टकृत्। क्द्रादेव पृशून्नतदंधाति। अथो यत्रेषाऽऽहुंतिर्ह्यते। न तत्रं पराऽसुराः। यथ्स्विष्ट्रकृम्बो लोहितं जुहोति भातृव्याऽभिभूत्यै। भवंत्यात्मना॥ परौऽस्यु आतुष्यो भवति। गोमृगुकुण्ठेनं प्रथुमामाहीतें जुहोति। पृशवो वै गोमृगः।

क्दः पृश्नन्भिमंन्यते॥४४॥

अुश्वश्वफेन द्वितीयामाहीतें जुहोति। पृशवो वा एकेशफम्। कुद्रौऽग्निः स्विष्टुकृत्।

अ्यस्मयेन कमण्डलुना तृतीयाम्। आहीतं जुहोत्यायास्यो वै प्रजाः। रुद्रोऽभिः कुद्रादेव पृश्ननुन्तर्दंयाति। अथो यत्रेषाऽऽहुतिर्ह्यते। न तत्रं कृद्रः पृश्ननुभिमंन्यते।

स्विष्टकृत्। कृदादेव प्रजा अन्तर्दधाति। अथो यत्रैषाऽऽहीतिर्ह्रयतै। न तत्रे कृदः प्रजा अभिमंन्यते॥४५॥ 602 जुहोतिं। समेंधमेवैनुमालेभते। आज्येन जुहोति। मेधो वा आज्यम्। मेधौं-अर्थस्य वा आलेब्यस्य मेष् उदंकामत्। तदंश्वस्तोमीयंमभवत्। यदंश्वस्तोमीयं दुधात्यमंबन्मन्यते प्रजा अन्तर्देधाति हे चं ॥🕳

ऽश्वस्तोमीयम्। मेधेनैवास्मिन्मेधं दधाति। षद्गिर्शतं जुहोति। षद्गिरशदक्षरा बृहतो॥४६॥

बार्हताः पृशवंः। सा पंशूनां मात्रौ। पृशूनेव मात्रेया समर्घयति। तायद्भयंसीर्वा कनीयसीर्वा जुहुयात्। पृशून्मात्रेया व्यर्धयेत्। षद्गिरंशातं जुहोति। षद्गिरंशदक्षरा बृह्ती। बार्ह्ताः पृशवंः। सा पंशूनां मात्रौ। पृशूनेव मात्रया समेर्धयति॥४७॥

अ्रुष्स्तोमीय १ हुत्वा द्विपदां जुहोति। द्विपाद्वै पुरुषो द्विप्रतिष्ठः। तदेनं प्रतिष्ठया तस्माहिपाचतुष्पादमत्ति। अथौ द्विपद्येव चतुष्पदः प्रतिष्ठायपति। द्विपदां हुत्वा। द्विपदा अन्ततो जुहोति प्रतिष्ठित्यै॥४८॥ बृहत्यंर्धयति स्थापयति पश्चं च॥■

नान्यामुत्तंरामाहीतें जुहुयात्। यद्न्यामुत्तंरामाहीतें जुहुयात्। प्र प्रतिष्ठायांश्चवेत।

प्रजापंतिरश्वमेघमंसुजता सौऽस्माथ्मुष्टोऽपौकामत्। तं यंज्ञकृतुमिर-वैच्छत्।

तं यंज्ञऋतुमिनन्बिविन्दत्। तमिष्टिमिरन्बैच्छत्। तमिष्टिमिरन्बेविन्दत्।

अश्वमेव तदन्विच्छति। तदिष्टीनामिष्टित्वम्। यथ्संबथ्सरमिष्टिभिर्यज्ञोते। सावित्रयों भवन्ति॥४९॥

हुयं वै सीविता। यो वा अस्यान्नश्येति यो निलयेते। अस्यां वाव तं विन्दन्ति। न वा हुमां कश्चनेत्योहुः। तिर्यङ्गेर्ध्वोत्येतुमहेतीति। यथ्सावित्रियो भवेन्ति। स्वितृ-प्रसूत एवेनीमच्छति। ईश्वरो वा अश्वः प्रमुक्तः परा परावतं गन्तोः। यथ्सायं

धृतींर्जुहोतिं। यथ्सायं यत्प्रातिरिष्टिमिर्यजते। अश्वमेव तदन्विच्छति। गृतीं जुहोति। अर्थस्य यत्ये धृत्यै।॥५०॥

अश्वंस्यैव यत्यै धृत्यैं। तस्मांथ्सायं प्रजाः क्षेम्यां भवन्ति। यत्प्रातरिष्टिंभिर्यजति।

अर्थमेव तर्दान्वेच्छति। तस्माहिवां नष्टेष एीते। यत्प्रातरिष्टिंभिर्यजते सायं धृतींजुँहोति। अहोरात्राभ्यांमेवेनुमन्विच्छति। अथो अहोरात्राभ्यांमेवास्मे योगक्षेमं

केत्पयति॥५१॥

<u>मुबन्ति</u> धृत्यो एनुमन्त्रिच्छुत्यकं च॥**==** 

\[ \frac{1}{\infty} \]

गायतः। श्रिया वा एतद्रुपम्। यद्वीणां। श्रियमेवास्मिन्तद्धंतः। युदा खलु वै पुरुषः अप् वा एतस्माच्छ्री राष्ट्रं कांमति। याँऽश्वमेधेन यजंते। ब्राह्मणौ वीणागाधिनौ

श्रियंमश्जुते। वीणाँऽस्मै वाद्यते। तदांहुः। यदुभौ ब्राह्मणौ गायेताम्॥५२॥

प्रअश्बुकास्माच्छीः स्यात्। न वै ब्राह्मणे श्री रंमत् इति। ब्राह्मणीऽन्यो गायैत्।

राजन्यौऽन्यः। ब्रह्म वै ब्रौह्मणः। क्षत्र\*्रांजन्यंः। तथां हास्य ब्रह्मणा च क्षत्रेणं चोम्यतुः श्रीः परिगृहीता भवति। तदांहुः। यदुभौ दिवा गायेताम्। अपौस्माद्राष्ट्रं

कामेत्॥५३॥

न वे ब्रौह्मणे राष्ट्र रमत इति। यदा खलु वे राजां कामयेते। अधं ब्राह्मणं

जिनाति। दिवा ब्राह्मणो गांयेत्। नक्त<sup>ं</sup> राजन्यः। ब्रह्मणो वे रूपमहंः। क्षत्रस्य रात्रिः। तथां हास्य ब्रह्मणा च क्षत्रेणं चोभयतो राष्ट्रं परिगृहीतं भवति। इत्येददा इत्यंयज्ञथा इत्यंपच् इति ब्राह्मणो गायैत्। इष्टापूर्तं वै ब्राह्मणस्यं॥५४॥

इष्टापूर्तेनैवैन॰ स समर्थयति। इत्येजिना इत्येयुध्यथा इत्युमु॰ संङ्गाममंहित्रिति राजन्येः। युद्धं वै राजन्येस्य। युद्धेनैवेन॰ स समर्थयति। अक्रेप्ता वा पृतस्यतिव इत्योहः। यौऽश्वमेधेन यजति इति। तिस्रौऽन्यो गायिति तिस्रौऽन्यः। षट्ध्सम्पंद्यन्ते। षङ्गायाम्। यनोयुक्ते वं शते षङ्ग क्रायाम्। अनोयुक्ते वं शते चं ददाति। शृतायुः पुरुषः शृतेन्द्रियः। आयुष्येवेन्द्रिये प्रति तिष्ठति॥५५॥ गायेताङ्गामेद्वाह्मणस्यं कल्पयतश्रुत्वारि च॥🕳

सर्वेषु वा एषु लोकेषु मृत्यवोऽन्वार्यताः। तेभ्यो यदाहेतीने जुंहुयात्

लोकलोक एनं मृत्युविंन्देत्। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहेत्यंभिपूर्वमाहुंतीर्जुहोति

909 लोकाल्लोकादेव मृत्युमवंयजते। नैनं लोकेलोके मृत्युविंन्दति। यदमुष्मे स्वाहा-

ऽमुष्मै स्वाहेति जुह्नैथ्सश्चक्षीत। बहुं मृत्युममित्रं कुर्वीत। मृत्यवे स्वाहेत्येकेस्मा एवेकां जुहुयात्। एको वा अमुष्मिंक्ष्रोके मृत्युः॥५६॥

अश्निया मृत्युरेव। तमेवामुष्मिंह्योकेऽवंयजते। भूणृहत्याये स्वाहेत्यंवभृथ आहुतिं जुहोति। भूणृहत्यामेवावं यजते। तदांहः। यद्भणृहत्या पात्र्याऽथं। कस्मांद्यज्ञेऽपि क्रियत् इतिं। अमृत्युर्वा अन्यो भूणहत्याया इत्यांहः। भूणृहत्या वाव मृत्युरितिं। यद्भणहत्याये स्वाहेत्यंवभृथ आहुतिं जुहोतिं॥५७॥

मृत्युमेवाऽऽहुत्या तर्पयित्वा परिपाणं कृत्वा। भूणुष्ठे भेष्जं केरोति। एता॰ ह वै मुण्डिभ औदन्यवः। भूणहत्याये प्रायेश्वितिं विदां चंकार। यो हास्यापि प्रजायां ब्राह्मण हिन्ते। सर्वस्मे तस्मै भेषजं केरोति। जुम्बकाय स्वाहेत्यंवभृथ रेत्तमामाहीतें जुहोति। वर्षणो वै जुम्बकः। अन्तत एव वर्षणमवंयजते।

खलतेविक्किपस्य' शुक्कस्य' पिङाक्षस्य' मूर्ध' जुंहोति। पृतद्वे वरुणस्य रूपम्। रूपेणेव वरुणमवेयजते॥५८॥

बा्रुणो वा अर्थः। तं देवतया व्यर्धयति। यत्प्रांजापृत्यं कुरोति। नमो राज्ञे नमो वर्षणायेत्योह। बार्षणो वा अर्थः। स्वयेवैनं देवतंया समंधेयति। नमोऽश्वाय नमेः प्रजापेतयु इत्योह। प्राजापुत्यो वा अर्थः। स्वयेवैनं देवतया समर्धयति। नमोऽधिपतयु इत्यांह॥५९॥ गेके मृत्युर्जुहोति मूर्पं जुंहोति द्वे चं॥**≖** 

धर्मो वा अधिपतिः। धर्ममेवावं रुन्धे। अधिपतिर्स्यधिपतिं मा कुर्वधिपतिर्हं

प्रजानां भ्यासमित्याह। अधिपतिमेवैन समानानां करोति। मां धेहि मयि धेहीत्याह। आशिषेमेवैतामा शास्ते। उपाकृताय स्वाहेत्युपाकृते जुहोति। आलेब्याय स्वाहेति नियुक्ते जुहोति। हुताय स्वाहेति हुते जुहोति। एषां लेकानांम्भिजित्यै॥६०॥ 608 नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

प्र वा एष एभ्यो लोकेन्यंश्यवते। यौऽश्वमेथेन् यजंते। आग्रेयमैन्द्राग्नमीश्विनम्।

तान्पुशूनालेभते प्रतिष्ठित्यै। यदांभ्रेयो भूवति। अभिः सर्वा देवताः। देवता पृवावं रुन्ये। ब्रह्म वा अग्रिः। क्षत्रमिन्दंः। यदैन्द्राग्नो भविति॥६१॥

ब्रह्मसुत्रे एवावे रुन्ये। यदास्थिनो भविति। आशिषामवंरुद्धो। त्रयो भवन्ति।

त्रयं ड्में लोकाः। एष्वेव लोकेषु प्रति तिष्ठति। अग्रयेऽ∜होमुचेऽष्टाकेपाल इति

दशहिविषुमिष्टिं निर्वपति। दशाँक्षरा विराट्। अत्रै विराट्। विराजेवात्राद्यमवं रुन्ये। अग्रेमीन्वे प्रथमस्य प्रचेतस् इति याज्यानुबाक्यां भवन्ति सर्वत्वायं॥६२॥

જ ~ | अधिपतयु इत्यांहामिंजित्या ऐन्द्राग्रो भवंति रुन्यु एकं च॥\_\_\_\_\_

यद्यक्षेमुप्तपिद्विन्दत्। आग्रेयम्षाकेपालं निर्वेपेत्। सौम्यं चरुम्

भिषज्यति। यथ्सौम्यो भवेति। सोमो वा ओषेधीना्॰ राजाां। याभ्यं एवेनं सावित्रम्षाकेपालम्। यदाभ्यो भवति। अभिः सर्वा देवताः। देवताभिरेवैन

विन्दति॥६३॥

ताभिरेवैनं भिषज्यति। यथ्सांवित्रो भवंति। स्वितुप्रंसूत एवैनं भिषज्यति। एताभिरेवैनं देवतांभिर्भिषज्यति। अगदो हैव भवति। पौष्णं चुरं निवंपेत्। यदि श्रोणः स्यात्। पूषा वै श्लौण्यंस्य भिषक्। स एवैनं भिषज्यति। अश्लोणो हैव भेवति॥६४॥

गैंद्रं चुरुं निर्वेपेत्। यदिं महती देवतांऽभिमन्येत। एत्हेवृत्यों वा अर्थः। स्वयेवैने

देवतंया भिषज्यति। अगुदो हैव भूवति। वैश्वान्रं द्वादंशकपालं निवंपन्मुगाख्ये

यदि नाऽऽगच्छेँत्। इयं वा अग्निवैश्वान्रः। इयमेवैनमिर्चिभ्यां परिरोधमानेयति। आहेव सुत्यमहेर्गच्छति। यद्येषीयात्॥६५॥

अग्रयेऽ९॑होमुचेऽष्टाकेपालः। सौयै पयंः। बायव्यं आज्यंभागः। यजंमानो बा अर्थः। अ९हंसा बा एष गृहीतः। यस्यात्रो मेघांय प्रोक्षितोऽध्येति। यद९ंहोमुचे निर्वपंति। अ९हंस एव तेने मुच्यते। यजंमानो बा अर्थः। रेतंसा बा एष

स समेर्धयति। यजेमानो वा अर्थः। गर्मेवा एष व्युध्यते। यस्याश्वो मेथांय प्रोक्षितो-यस्याश्वो मेधांय प्रोक्षितोऽध्येति। सौर्य १ रेतः। यथ्सौर्यं पयो भवंति। रेतंसैवेन १ ऽस्येति। बायुच्यां गर्भाः। यद्वांयुच्यं आज्यंभागो् भवंति। गर्भेरवेन् ५ स सर्मर्धयति। अथो यस्यैषाऽश्वेमेधे प्रायेश्चित्तः क्रियते। इष्ट्रा वसीयान्मविति॥६७॥

विन्दत्यश्लोणो हैव भवत्यशीयादंध्यते गर्भेरवेन्॰ स समंधयति द्वे चं॥🕳

पुतस्य छन्दारंसि। य ईजानः। तानि क एतावंदाशु पुनः प्रयुश्चोतेति। सर्वा वै तदांहुः। द्वादंश ब्रह्मौदुनान्थ्सङ्स्थिते निवंपेत्। द्वाद्शभिवेषिधिभियंजेतेति। यदिष्टिभियंजेत। <u>उ</u>पुनामुक एनं युज्ञः स्यात्। पापीयाङ्तु स्यात्। आप्तानि बा सङ्स्थिते यज्ञे बागाप्यते॥६८॥

साप्ता भंवति यातयाम्नी। कूरीकृतेव हि भवत्यरुष्कुता। सा न पुनेः

प्रयुज्येत्योहुः। द्वादेश्रेव ब्रह्मोद्नान्थ्सङ्स्थिते निर्वपेत्। प्रजापितिर्वा ओद्नः। युज्ञः प्रजापेतिः। उपनामुक एनं युज्ञो भेवति। न पापीयान्भवति। द्वादेश भवन्ति।

द्वादेश्मासाः संवथ्सरः। संवथ्सर एव प्रति तिष्ठति॥६९॥ नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

एष वै विभूनीमें युज्ञः। सर्वे ह वै तत्रं विभु भविति। यत्रेतेनं युज्ञेन यजन्ते। एष वै प्रभूनीमें युज्ञः। सर्वे ह वै तत्रं प्रभु भविति। यत्रेतेनं युज्ञेन यजन्ते। एष वा ऊर्जस्वात्रामं युज्ञः। सर्वे ह वै तत्रोर्जस्वद्भविति। यत्रेतेनं युज्ञेन यजन्ते। एष

वै पर्यस्वात्रामं युज्ञः॥७०॥

सर्वर्श्व ह के तत्र पर्यस्वद्ववति। यत्रैतेनं यज्ञेन यज्ञेन्ते। एष के विधृतो नामं यज्ञः। सर्वर्श्व ह के तत्र विधृतं भवति। यत्रेतेनं यज्ञेन यज्ञेने। एष के व्यावृत्तो नामं यज्ञः। सर्वर्श्व ह के तत्र व्यावृत्तं भवति। यत्रेतेनं यज्ञेन यज्ञेने। एष के प्रातिष्ठितो नामं यज्ञः। सर्वर्श्व ह के तत्र प्रातिष्ठितं भवति॥७१॥

यत्रैतेनं युज्ञेन यजंन्ते। एष वै तेजुस्वी नामं युज्ञः। सर्वरं हु वै तत्रं तेजुस्वि भंबति। यत्रैतेनं युज्ञेन् यजंन्ते। एष वै ब्रह्मवर्चुसी नामं युज्ञः। आ हु वै तत्रं

ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जांयते। यत्रेतेनं यज्ञेन यजंन्ते। एष वा अंतिव्याधी नामं यज्ञः। आ ह वै तत्रं राजन्योऽतिव्याधी जांयते। यत्रेतेनं यज्ञेन यजन्ते। एष वै दीघोँ नामं यज्ञः। दीघिधुषो ह वै तत्रं मनुष्यां भवन्ति। यत्रेतेनं यज्ञेन यजन्ते। एष वै क्रुसो नामं यज्ञः। कल्पेते ह वै तत्रं प्रजाभ्यों योगक्षेमः। यत्रेतेनं यज्ञेन 612 नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

ताष्यैणाश्वर् संज्ञीपयन्ति। यज्ञो वै ताष्यीम्। यज्ञेनैवैनर् समेधयन्ति। यामेन् साम्रौ प्रस्तोताऽनूपीतिष्ठते। यमुलोकमेवैनं गमयति। ताष्यें चे कृत्यधीवासे चाश्वर् संज्ञीपयन्ति। एतद्वे पंशूनार कृपम्। कृपेणेव पृशूनवं रुन्ये। हिर्ण्यकृशिषु भेवति।

कुको भेवति। सुवर्गस्यं लोकस्यानुंख्यात्यै। अश्वो भवति। प्रजापंतेरास्यैं। अस्य वै लोकस्यं रूपं ताप्यम्। अन्तरिक्षस्य कृत्यधीवासः। दिवो हिंरण्यकशिषुपु।

तेजसोऽवंरुस्ट्री॥७३॥

पथंस्बात्रामं युज्ञः प्रतिष्ठितं भवति यत्रेतेनं युज्ञेन यज्ञंने पद्वं (एष वै विभूः प्रभूरूर्जस्बान्ययंस्बान् विधृतो व्यावृत्तः प्रतिष्ठितस्तेजुस्बी

ब्रह्मवर्चस्यतिव्याधी दोर्घः क्रुसो द्वादंश॥)॥🕳

यजन्ते॥७२॥

~ ► I

613 अन्तरिक्षं कृत्यधीवासेने। दिव ५ हिरण्यकशिपुना। आदित्य ५ क्कोणं। अश्वेनेव मेध्येन प्रजापेतेः सायुज्य सलोकतामाप्रोति। एतासोमेव देवताना सायुज्यम्। सार्थिता समानलोकतामाप्रोति। यौऽश्वमेधेन यजेते। य उं चैनमेवं वेदे॥७५॥ आदित्यस्यं कुकाः। प्रजापंतेरश्वः। इममेव लोकं ताप्यैणांऽऽप्रोति॥७४॥ नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अवंरुध्या आप्रोत्यृष्टौ चं॥🕳

आदित्याश्वाङ्गिरसञ्च सुवर्गे लोकैऽस्पर्धन्त। तेऽङ्गिरस आदित्येभ्यंः

अुमुमोदित्यमश्वर्धश्वेतं भूतं दक्षिणामनयन्। तैऽब्रुवन्। यन्नो नैष्टा स वर्यो मूदिति। तस्मादश्रु सवर्येत्याह्वंयन्ति। तस्मौद्यज्ञे वरो दीयते। यत्युजापेतिरा-लुब्योऽश्वोऽभंवत्। तस्मादश्वो नामं॥७६॥

यच्छ्यदक्रासीत्। तस्मादर्वा नामं। यथ्सद्यो वाजान्थ्समजंयत्। तस्मौद्वाजी

नामे। यदसुराणां लोकानादंत्ता तस्मोदादित्यो नामे। अग्निर्वा अश्वमेधस्य

योनिंग्यतंनम्। सूर्योऽग्रेयोनिंग्यतंनम्। यदंश्वमेधेऽग्रौ चित्यं उत्तरवेदिमुंपवपति।

614 योनिमन्तमेवैनमायतेनवन्तं करोति॥७७॥ नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

योनिमानायतेनवान्भवति। य एवं वेदं। प्राणापानौ वा एतौ देवानाँम्। यदंकिश्वमेथौ। प्राणापानावेवावं रुन्ये। ओजो बलं वा एतौ देवानाँम्। यदंकिश्वमेथौ। ओजो बलेमेवावं रुन्ये। अग्निवां अश्वमेथस्य योनिरायतेनम्। सूर्योऽग्नेयोनिरायतेनम्। यदंश्वमेथैऽग्नौ चित्यं उत्तरवेदिं चिनोतिं। तावंकिश्वमेथौ। अर्काश्वमेषावेवावं रुन्ये। अथो अर्काश्वमेषयोरेव प्रति तिष्ठति॥७८॥ नामं करोति सूर्योऽग्रेयोनिंग्यतनश्रुत्वारि च॥🕳

प्रजापेतिं वै देवाः पितरम्। पृशुं भूतं मेथायाऽऽऽलेभन्ता तमालभ्योपविसन्।

प्रातर्यष्टाँस्मह् इति। एकं वा एतद्देवानामहेः। यथ्संवथ्सरः। तस्मादश्वेः पुरस्ताँथ्संवथ्सर आलेभ्यते। यत्यजापेतिरालुब्योऽश्वोऽभेवत्। तस्मादश्वेः। यथ्मद्यो मेघोऽभेवत्॥७९॥

तस्मांदश्वमेषः। वेदुकोऽश्वमाशुं भंवति। य एवं वेदं। यद्वै तत्प्रजापंतिरालुब्यो-

615 जायते। य एवं वेदं। सर्वाणि भूतानि सम्भृत्यालेभते। समेनं द्वास्तेजंसे ऽश्वोऽभंबत्। तस्मादश्वः प्रजापंतेः पशूनामनुंरूपतमः। आऽस्यं पुत्रः प्रतिरूपो य उं चैनमेवं वेदं। पुतद्वे तद्देवा पुतान्देवताम्। पृशुं भूतं मेघायालेभन्ता ब्रह्मवर्चसायं भरन्ति। यौऽश्वमेधेन यज्ञेते॥८०॥ नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

यज्ञमेव। यज्ञेन' यज्ञमंयजन्त देवाः। कामप्रं यज्ञमंकुर्वत। तेऽमृतत्वमंकामयन्त। तेऽमृतत्वमंगच्छन्। यौऽश्वमेथेन् यजेते। देवानामेवायंनेनेति॥८१॥

प्राजापुत्येनैव युज्ञेनं यजते कामुप्रेणं। अपुंनर्मारमेव गंच्छति। पृतस्य वै रूपेणं पुरस्तात्प्राजापुत्यमृष्भं तूप्रं बंहुरूपमालेभते। सर्वैन्यः कामैभ्यः। सर्वस्याऽऽस्यै। सर्वस्य जित्यै। सर्वमेव तेनौऽऽप्रोति। सर्वं जयति। यौऽश्वमेधेन यजेते। य उं चैनमेवं वेदं॥८२॥

~ | | | मेधोऽभंबृद्यजंत एति वेदं॥■

यो वा अर्थस्य मेध्यंस्य लोमंनी वेदं। अर्थस्यैव मेध्यंस्य लोमं लोमं जुहोति।

वेदं। अश्वंस्यैव मेध्यंस्य विवर्तनेविवर्तने जुहोति। असौ वा आदित्योऽश्वंः। स आहवनीयमागेच्छति। तद्विवर्तते। यदंशिहोत्रं जुहोति। अश्वंस्यैव मेध्यंस्य यद्दंशपूर्णमासौ यजेते। अश्वंस्येव मेध्यंस्य प्देपंदे जुहोति। पृतदंनुकृति ह लोमें लोमं जुहोति। पुतदंनुकृति ह स्म वै पुरा। अर्थस्य मेध्यंस्य लोमें लोमं जुह्नति। यो वा अर्थस्य मेध्यंस्य पुदे वेदं। अर्थस्येव मेध्यंस्य पुदेपंदे जुहोति। स्म वै पुरा। अर्थस्य मेध्येस्य प्देपेदे जुह्नति। यो वा अर्थस्य मेध्येस्य विवर्तनं <u>विवर्तनेविवर्तने जुहोति। एतदंनुकृति ह स्मृ</u> वै पुरा। अंश्वस्य मेध्यंस्य अहोरात्रे वा अर्श्वस्य मेध्येस्य लोमंनी। यथ्सायं प्रांतर्जुहोति। अर्श्वस्यैव मेध्येस्य द्र्शुपूर्णमासौ वा अर्थस्य मेध्यंस्य प्दे॥८३॥ नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

विवर्तनेविवर्तने जुह्नति॥८४॥

पुदे अग्निहोत्रं जुहोति त्रीणे च॥■

प्रजापंतिस्तमंष्टादाशिभिः प्रजापंतिरकामयतोभावस्मै युअन्ति तेजुसाऽपंप्राणा अप्शीरूष्वां प्रजापंतिः प्रेणाऽनुं प्रथुमेनं

617 प्रजापीतरकामयत मृहान्वैश्वदेवो वा अभोऽर्थस्य प्रजापेतिस्तं यंज्ञकृतुमिरपृश्रीब्रांह्मणौ सर्वेषु वार्ष्णो यद्यश्वन्तदोहुरेष वै प्रजापेतिर्सिक्षेक उंतर्तः श्रियंमेव प्रजापंतिरकामयत मृहान्यस्रातः प्र वा एष एभ्यो लोकेभ्यः सर्वर् ह वै तत्र क्रिभूस्ताप्यैणांदित्याः प्रजापति पितरं यो वा अश्वेस्य मेध्येस्य लोमेनी त्रयोवि॰शतिः॥२३॥ पयेः स्बुद्य ऽ चैनमेवं वेदं चृत्वार्यशीतिः॥८४॥ नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३) प्रजापीतरश्वमेधं जुंह्वति॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके नवमः प्रपाठकः समाप्तः॥

हरिः ओम्॥

## ॥तेनिरीय आरण्यकम्॥

## ॥ प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः॥

ॐ भूद्रं कर्णीभः श्रुणुयामं देवाः। भूदं पंश्येमाक्षभिर्यज्ञाः। स्थिरेरङ्गेंस्तुष्टुवा ॰

संस्त्नूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः गूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नुस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्देषातु॥ ॐ शान्तिः थान्तिः थान्तिः॥

भद्रं कर्णेभिः श्रुणुयामे देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजनाः। स्थिरेरङ्गैस्तुष्टुवा र

संस्तन्भिः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न् इन्द्रों वृद्धश्रेवाः। स्वस्ति नः रूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नुस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिर्धातु। आपेमापाम्पः सर्वाः। अस्माद्स्मादितोऽमुतः॥१॥

अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च। सृह संश्वस्कृरद्धिया। वाय्वश्वां रश्मिपतंयः। मरींच्यात्मानो

अद्रेहः। देवीर्भुवनुसूवेरीः। पुत्रवृत्वायं मे सुत। महानाम्नीर्महामानाः। मृहसो मेहसुः अपाश्च्रीष्णमपा रक्षेः। अपाश्च्रीष्णमपारघम्। अपाष्टामपं चावर्तिम्॥ स्वेः। देवीः पंजन्यसूवेरीः। पुत्रबत्वायं मे सुत॥२॥ प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

अपेद्वीरितो हिता वज्रं देवीरजीताङ्श्वा मुवेनं देवसूवेरीः। आदित्यानदिति

देवीम्। योनिनोध्वेमुदीषेत। शिवा नः शन्तंमा भवन्तु। दिव्या आप् ओषंधयः।

सुमृडीका सरेस्वति। मा ते व्योम सन्दर्शि॥३॥

स्मृतिः प्रत्यक्षेमेतिह्यमै। अनुमानश्चतुष्ट्यम्। एतैरादित्यमण्डलम्। सर्वैरेव विधौस्यते। सूर्यो मरीविमादेते। सर्वस्मौद्भवेनादृषि। तस्याः पाकविशेषेण। स्मृतं

तां नद्योऽभि समायन्ति। सोकः सती न निवितते। पुवं नानासमुत्थानाः। कालाः

संवथ्सरङ् श्रिताः। अणुश्रश्च महश्र्यश्च। सर्वे समवयत्र्रितम्। सर्तैः सर्वैः समाविष्टः। कांलिविशेषंणम्। नदीव प्रभंवात्काचित्। अक्षय्यांध्स्यन्द्ते यंथा॥४॥

सहस्र तत्र अणुभिश्च मेहद्रिश्च। सुमार्कतः प्रदृश्यंते। संवथ्सरः प्रत्यक्षेण। प्रदश्येते। प्टरो विक्रियः पिङ्गः। पृतद्वेरुणलक्षेणम्। यत्रैतंदुपृदश्येते। नीयेते। एक ९ हि शिरो नाना मुखे। कृथ्सं तंदतुलक्षेणम्॥६॥ ऊरुः संत्र निवर्तते। अधिसंवथ्संरं विद्यात्। तदेवं लक्ष्णे॥५॥ प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

उभयतः सप्तैन्द्रियाणि। जन्मितं त्वेव दिह्यते। शुक्ककृष्णे संवेध्सरस्य। दक्षिणवामयोः पार्श्वयोः। तस्यैषा भवति। शुक्रं ते अन्यद्यंजतं ते अन्यत्।

विषुंरूपे अहंनी द्यौरिवासि। विश्वा हि माया अवीस स्वधावः। भुद्रा ते पूषित्रिह

प्रत्यक्षेण प्रियतमं विद्यात्। एतद्वे संवध्सरस्य प्रियतमः रूपम्। योऽस्य महानर्थ गतिर्स्तिवति। नात्रु भुवेनम्। न पूषा। न पृशवेः। नाऽऽदित्यः संवथ्सर एव उत्पथ्स्यमानी भवति। इदं पुण्यं कुरुष्वेति। तमाहरंणं द्वात्॥७॥

साकुआनारं सुप्तर्थमाहुरेकुजम्। षडुंद्यमा ऋषेयो देवुजा इति। तेषांमिष्टानि

622 अमूॐक्षं परिरक्षेतः। एता वाचः प्रेयुज्यन्ते। यत्रेतंदुपृदक्ष्यंते। एतदेव विज्ञानीयात्। प्रमाणं कालपंथेये। विशेषणं तुं वक्ष्यामः। ऋतूनां तत्रिबोधंत। शुक्कवासां रुद्रगणः। ग्रीष्मेणांऽऽवर्तते संह। निजहंन् पृथिवी॰ सर्वाम्॥१०॥ न हि प्रवेदं सुकृतस्य पन्थामिति। ऋतुर्ऋतुना नुद्यमांनः। विनंनादाभिधांवः। षष्टिश्च त्रि॰शंका वल्गाः। शुक्ककृष्णौ च षाष्टिको। सारागवस्त्रेर्जरदंक्षः। वसन्तो वसुपिः स्ह। संवध्सरस्यं सवितुः। प्रैष्कृत्प्रंथमः स्मृतः। अमूनादयेतेत्यन्यान्॥९॥ विहिंतानि धामुशः। स्थात्रे रंजन्ते विकृतानि रूपुशः। को नुं मर्या अमिथितः। सम्बा सम्बायमब्रवीत्। जहाको अस्मदीषते। यस्तित्याजं सम्बिविद् ज्योतिषाऽप्रतिख्येनं सः। विश्वरूपाणिं वासार्धिस। आदित्यानां निबोधंत। न तस्यं बाच्यपि भागो अस्ति। यदीरं शृणोत्युलकरं शृणोति॥८॥ प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

623 प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

शाम्यतेश्वास्य चक्षुषी। या वै प्रजा भेङ्ष्यन्ते। संवथ्मराता भेङ्ष्यन्ते। याः प्रतितिष्ठन्ति संबध्सरे ताः प्रतितिष्ठन्ति। बुर्षाभ्यं इत्युर्धः॥११॥

अक्षिदुःखोत्थितस्यैव। विप्रसंत्रे कनीनिके। आङ्के चाद्नंणं नास्ति। ऋभूणाँ तत्रिबोर्धत। कनकाभानि वासा×िसि। अहतानि निबोर्धत। अन्नमश्रीतं मुज्मीत। अहं वो जीवनप्रदः। एता वाचः प्रेयुज्यन्ते। श्रास्वंत्रोपदृश्येते॥१२॥

अभिधून्वन्तोऽभिघ्नंन ड्वा वातवंन्तो मुरुद्गंणाः। अमुतो जेतुमिषुमुंखमिव

सन्नद्धाः सह देदशे हा अपध्वस्तैर्वस्तिवर्णेरिव। विशिखासं कपदिनः।

अकुद्धस्य योथ्स्यमानुस्य। कुद्धस्येव लोहिनी। हेमतश्रक्षेषी विद्यात्। अष्णयोः

दुर्भिक्षं देवेलोकेषु। मनूनांमुदकं गृहे। एता बाचः प्रंबद्नतीः। वैद्युतों यान्ति शैशिरीः। ता अग्निः पर्वमना अन्वैक्षत। इह जीविकामपीरपश्यन्। तस्यैषा भविति।

क्षिपणोरिव॥१३॥

624 प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

अग्निजिहा असश्वता नैव देवों न मृत्यः। न राजा वंरुणो विभुः। नाग्निनेन्द्रो न पंवमानः। मातुक्केचन विद्यते। दिव्यस्यैका धनुरातिः। पृथिव्यामपंरा श्रिता॥१५॥ अतिताम्राणि वासा सि। अष्टिबेज्रिशतप्रिं च। विश्वे देवा विप्रहरन्ति ड्हेहेवः स्वत्पसः। मर्ततः सूर्यत्वचः। शर्मं स्प्रथा आर्वुणे॥१४॥

तस्येन्द्रो विभिरूपेण। धृनुज्यामिछिनथ्स्वयम्। तिदंन्द्रधनुरित्युज्यम्। अभवीर्षेषु

उत्पिपेष। स प्रवग्योंऽभवत्। तस्माद्यः सप्रवग्येणं युज्ञेन् यज्ञोत। कृद्रस्य स शिर् चक्षेते। एतदेव शंयोब्रिह्स्पत्युस्य। एतद्रेद्रस्य धनुः। कृद्रस्यं त्वेव् धनुंराकिः। शिर्

प्रतिद्धाति। नैनं क्ट्र आरुको भवति। य एवं वेदं॥१६॥

अत्यूष्विक्षोऽतिरश्चात्। शिशिरः प्रदृश्येते। नैव रूपं नं वासार्भास्। न चक्षेः प्रतिदृश्येते। अन्योन्यं तु नं हिङ्खातः। सृतस्तंद्देव्लक्षेणम्। लोहितोऽक्ष्णि

शांरशोष्णिः। सूर्यस्योदयुनं प्रीते। त्वं करोषि न्यञ्चलिकाम्। त्वं करोषि <u>निजानुकाम्॥१७॥</u>

निजानुका में न्यञ्जिका। अमी वाचमुपासंतामिति। तस्मै सर्व ऋतवो नम्नो

मर्यादाकरत्वात्प्रेपुरोपाम्। ब्राह्मणं आप्रोति। य एंवं वृद। स खकु संवध्सर एतैः

सेनानीभिः सृह। इन्द्राय सर्वान्कामानीभेवृहति। स द्रफ्सः। तस्यैषा भवंति॥१८॥

अवंद्रफ्सो अर्थ्युमतीमतिष्ठत्। इयानः कृष्णो द्शभिः सृहसैः। आवृतीमेन्द्रः शच्या धमेन्तम्। उपस्रुहि तं नृमणामधेद्रामिति। एतयैवेन्द्रः सलावृक्या सृह। असुरान् पीरेकुश्चति। पृथिव्यर्शुमेती। ताम्नविस्थितः संवध्सरो दिवं चे।

नेवं विदुषाऽऽचार्यान्तेवासिनौ। अन्योन्यस्मै दुह्याताम्। यो द्रुह्यति। अश्यते " स्वेगन्निकात्। इत्युतुमेण्डलानि। सूर्यमण्डलाँन्याख्यायिकाः। अत सीनेर्वनाः॥१९॥

ऊर्धि <sup>१</sup>

आरोगो आजः पटरंः पतृङः। स्वर्णरो ज्योतिषिमान् विमासः। ते अस्मै सर्वे प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

दिवमांतपुन्ति। ऊर्जं दुहाना अनपस्फुरंन्त इति। कश्यंपोऽष्टमः। स महामेरुं ने जहाति। तस्येषा भवंति। यत्ते शिल्पं कश्यप रोचनावंत्। इन्द्रियावंत्पुष्कृत्ठं

तान्थ्सोमः कश्यपादधिनिर्धमति। अस्ताकर्मकृदिवैवम्। प्राणो जीवानीन्द्रियंजीवानि॥

तस्मिन् राजानमधिविश्रयेममिति। ते अस्मै सर्वे कश्यपाङ्योतिर्रुभन्ते।

चित्रभांनु। यस्मिन्थ्सूर्या अपिताः सृप्त साकम्॥२०॥

सप्त शीर्षेण्याः प्राणाः। सूर्यो इंत्याचार्याः। अपश्यमहमेतान्थ्सप्त सूर्यानिति।

पश्चकर्णो वाथ्स्यायनः। सप्तकर्णश्च घ्राक्षिः॥२१॥

आनुश्रविक एव नौ कश्यंप इति। उभौ वेद्यिते। न हि शेकुमिव महामेरं गुन्तुम्। अपश्यमहमेध्मूर्यमण्डलं परिवेर्तमानम्। गाग्यः प्राणत्रातः। गच्छन्त

मेहामे्रुम्। एकं चाजुहतम्। आजपटरपतंङ्गा निहने। तिष्ठत्रोतपुन्ति। तस्मोदिह

तिर्श्नेतपाः॥ २२॥

626

627 अमुत्रेतरे। तस्मीदिहातित्रीतपाः। तेषांमेषा भवंति। सप्त सूर्यो दिवमनुप्रविष्टाः। तान-वेति पथिभिदिक्षिणावान्। ते अस्मै सर्वे घृतमांतपन्ति। ऊर्जं दुहाना अनपस्फुरंन्त इति। सप्तित्विजः सूर्या इंत्याचार्याः। तेषांमेषा भवंति। सुप्त दिशो

नानांसूयांः॥ २३॥

स्प होतांर ऋत्विजः। देवा आदित्यां ये स्प्ता तेभिः सोमाभी रक्षण

इति। तदेप्याम्रायः। दिग्माज ऋतून् करोति। एतेयैवावृता सहस्रमूर्यताया इति वैशम्पायनः। तस्यैषा भवेति। यद्यावे इन्द्र ते शृत<sup>५</sup> शृतं भूमीः। उतस्युः। नत्वां वोज्रेन्थ्सहसृष्ट्र सूयोः॥२४॥

अनु न जातमष्ट रोदंसी इति। नानालिङ्गत्वादतूनां नानांसूर्यत्वम्

अष्टौ तु व्यवसिता इति। सूर्यमण्डलान्यष्टांत ऊर्प्वम्। तेषांमेषा नेविति। चित्रं देवानामुदेगादनीकम्। चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आऽप्रा द्यावापृथिवी

अन्तरिक्षम्। सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुंषश्चेति॥२५॥

<u>ラ</u> ー

केदमभ्रं निविशते। कायर् संवथ्मरो मिथः। काहः केयं देव रात्री। क मासा ऋंतवः श्रिताः। अर्थमासां मुहूर्ताः। निमेषास्तुंटिभिः सह। क्रेमा आपो निविश्नन्ते। युदीतो यान्ति सम्प्रीते। काला अफ्सु निविश्नन्ते। आपः सूर्वे सुमाहिताः॥२६॥ प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

वाताद्विष्णोर्बलमाृहः। अक्षरौद्दीप्तिकच्येते। त्रिपदाृद्धारंयद्देवः। यद्विष्णोरेकुमुत्तंमम्॥२८ अभौण्यपः प्रपद्यन्ते। विद्युथ्सूर्यं समाहिता। अनवर्णे इमे भूमी। इयं चांऽसौ च रोदसी। किङ्क्विदत्रान्तेरा भूतम्। येनमे विधृते उमे। विष्णुना विधृते भूमी। इति व्यष्टभ्राद्रोदंसी विष्णंवेते। दाधर्थं पृथिवीममितों मयूखैंः। किं तद्विष्णोर्वेल-माहुः। का दीप्तिः किं प्रायंणम्। एकों युद्धारंयद्देवः। रेजती रोद्सी उेभे। वेथ्सस्य वेदना। इरोवती धेनुमती हि भूतम्। सूयवृसिनी मनुषे दशम्यौ॥२७॥

अग्नयो वायेवश्चेव। एतदेस्य प्रायंणम्। पृच्छामि त्वा पंरं मृत्युम्। अवमं मध्युमश्रंतुम्। लोकं च पुण्येपापानाम्। एतत्पृच्छामि सम्प्रीते। अुमुमोहुः पेरं

पाप्कृतः। यत्र यातयते यमः। त्वं नस्तद्वह्मेन् प्रबूहि। यदि वैत्थाऽसृतो गृहान्॥३०॥ मृत्युम्। प्वमानं तु मध्येमम्। अग्निरेवावेमो मृत्युः। चन्द्रमाश्चतुरुच्येते॥२९॥ अनाभोगाः पंरं मृत्युम्। पापाः संयन्ति सर्वदा। आभोगास्त्वेवं संयन्ति। पुण्यकृतो जनाः। ततो मध्यमेमायन्ति। चतुमेभिं च सम्प्रीते। पृच्छामि प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

कुश्यपोदुदिताः सूर्याः। पापात्रिघ्रन्ति सर्वदा। रोदस्योन्तर्देशुषु। तत्र न्यस्यन्ते

वास्वैः। तेऽश्रारीराः प्रपद्यन्ते। यथाऽपुंण्यस्य कर्मणः। अपाण्यपादेकेशासः। तत्र

तेऽयोन्जा जनाः। मृत्वा पुनर्मृत्युमापद्यन्ते। अद्यमानाः स्वकर्मिभः॥३१॥

आशातिकाः किमेय ड्रव। ततः पूथन्ते वास्कैः। अपैतं मृत्युं जीयति। य एवं वेदं। स खल्वैवं विद्वाह्मणः। दोर्घश्रुत्तमो भविति। कश्यंपुस्यातिथिः सिद्धगंमनः

सिद्धागंमनः। तस्यैषा भवंति। आयस्मिन्थ्सप्त वांस्वाः। रोहंन्ति पूर्व्यां रुहंः॥३२॥ ऋषिर्ह दीर्घश्रुत्तंमः। इन्द्रस्य घर्मो अतिथिरिति। कश्यपः पश्यंको भुवति।

सुपथां राये अस्मान्। विश्वानि देव वृयुनांनि विद्वान्। युयोध्यंस्मञ्जृंहराणमेनेः। भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेमेति॥३३॥

यथत्वेवाग्नेरर्चिर्वर्णविशेषाः। नीलार्चिश्च पीतक"र्चिश्वेति। अथ वायोरेकादशपुरुषस्यैका पङ्किराधाश्च सप्तमः। विसर्पेवाऽष्टमोऽग्रीनाम्। एतेऽष्टौ वसवः, क्षिता इति। अग्निश्च जातंवेदाश्च। सहोजा अंजिराप्रमुः। वैश्वानरो नंर्यापाश्च। दशंस्त्रीकस्य। प्रभाजमाना व्यंवदाताः॥३४॥

याश्च वासुंकिवेद्युताः। रजताः पर्नषाः श्यामाः। कपिला अंतिलोहिताः। ऊर्घ्वा अवपंतन्ताश्चा वैद्युत इंत्येकादशा नैनं वैद्युतों हिन्स्ति। य एंवं वेदा स होवाच य एवं वेदा अथ गन्यर्वगणाः। स्वानुभाट्। अङ्गोरिर्बम्भोरः। हस्तः सुहंस्तः। व्यासः पाराश्वर्यः। विद्युद्वधमेवाहं मृत्युमैच्छमिति। न त्वकांम र हन्ति॥३५॥

631 प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

कृशांनुर्विश्वावंसुः। मूर्धन्वान्थ्सूर्यवर्चाः। कृतिरित्येकादश गंन्धर्वगणाः। मेहादेवाः। रश्मयक्ष देवां गरगिरः॥३६॥

नैनं गरों हिन्स्ति। य एवं वेद। गोरी मिमाय सिलेलानि तक्षेती। एकेपदी द्विपदी

विशेषणम्। अथ निगदंव्याख्याताः। ताननुर्कमिष्यामः। वराहवंः स्वतपसः॥३७॥ सा चतुष्पदी। अष्टापंदी नवपदी बमूबुषी। सहस्राक्षरा परमे व्योमित्रिति। वाची

विद्युन्महसो धूपयः। श्वापयो गृहमेधौश्चेत्योते। ये चेमेऽशिमिविद्विषः। पर्जन्याः

सप्त पृथिवीमभिवंर्षान्ता बृष्टिभिरिति। एतयैव विभक्तिविपरीताः। सुप्तभिर्वा

तैरुदीरिताः। अमूँह्रोकानभिवंर्षन्ति। तेषांमेषा भवंति। समानमेतदुदंकम्॥३८॥

उचैत्यंवचाहीभेः। भूमिं पर्जन्या जिन्वंन्ति। दिवं जिन्वन्त्यग्नेय इति। यदक्षेरं भूतकृतम्। विश्वे देवा उपासेते। मृहर्षिमस्य गोप्तारम्। जमदेग्रिमकुर्वत।

ब्रह्मणा वी्यांवता। शिवा नेः प्रदिशो दिशः। तच्छुं योरावृणीमहे। गातुं

जुमदिभिराप्यायते। छन्दोमिश्चतुरुत्तरेः। राज्ञः सोमंस्य तृप्तासंः॥३९॥

युज्ञाये। गातुं यज्ञपंतये। देवींः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिमनिषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषज्ञम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुष्पदे। सोमपा (३) असोमपा (३) इति

निगदंव्याख्याताः॥४०॥

सृहसृबुदियं भूमिः। पुरं व्योम सृहस्रेवृत्। अश्विनां भुज्यूनासृत्या। विश्वस्य

जगतस्पंती। जाया भूमिः पंतिव्योम। मिथुनंन्ता अतुर्यथुः। पुत्रो बृहस्पंती कृद्रः। सुरमो इति स्रीपुमम्। शुक्रं वामन्यदाजतं वामन्यत्। विषुक्ष्पे अहंनी द्योरिव

विश्वा हि माया अवेथः स्वधावन्तौ। भद्रा वां पूषणाविह गृतिरंस्तु वासाँत्यौ चित्रौ जगंतो निधानौँ। द्यावांभूमी चृरधेः स॒॰ सखायौ

ताबिश्विनां रासभाश्वा हवं में शुभस्पती आंगत<sup>५</sup> सूर्ययां सहा त्युग्रोह भुज्युमेश्विनोदमेषे। रृषिं न कश्चिन्ममृवां (२) अवाहाः। तमूहधुर्नोभिराष्मन्वतीभिः।

स्यः॥ ४१॥

प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्) अन्तरिष्युप्रक्षिरपोदकाभिः॥४२॥

तिसः, क्षपक्षिरहोतिव्रजीद्धः। नासंत्या भुज्युमूहथुः पत्कैः। समुद्रस्य

धन्वंत्रार्दस्यं पारे। त्रिभीरथैः शृतपीद्धः षडंश्वैः। सिवितारं वितंन्वन्तम्। अनुबप्नाति शाम्बरः। आपपूर्षम्बरश्चेव। सिवितारेपुसोऽभवत्। त्य॰ सुतृप्तं विदित्वेव।

बृहुसोम गिरं वंशी॥४३॥

आयस्यान्थ्सोमंतृफ्सुषु। अन्वेति तुग्रो वंकियान्तम्।

रृक्षसानिन्वताश्चे ये। अन्वेति परिवृत्याऽस्तः। एवमेतौ स्थो अश्विना। ते पृते द्युं सङ्गामस्तमौद्योऽत्योतः। वाचो गाः पिपाति तत्। स तद्गोभिः स्तवौऽत्येत्यन्ये

पृथिव्योः। अहंरहर्गमं दघाथे॥४४॥

तयोरेतौ वथ्सावेहोरात्रे। पृथिव्या अहंः। दिवो रात्रिः। ता अविसृष्टौ। दम्पेती एव भेवतः। तयोरेतौ वृथ्सौ। अग्निश्चांदित्युश्चं। रात्रेर्वेध्सः। श्वेत आदित्यः। अह्योऽग्रिः॥४५॥

ताम्रो अंक्णः। ता अविसृष्टौ। दम्पंती एव भंवतः। तयोरेतौ वृथ्सौ। वृत्रश्चं वैद्युतश्चे। अ्ग्रेर्वृत्रः। वैद्युतं आदित्यस्यं। ता अविसृष्टौ। दम्पंती एव भंवतः। तयोरेतौ वथ्सौ॥४६॥

उष्मा चे नीहारश्चे। बृत्रस्योष्मा। बैद्युतस्यं नीहारः। तौ तावेव प्रतिपद्येते। सेय×् रात्री गर्भिणी पुत्रेण संवेसति। तस्या वा एतदुल्बणम्। यद्रात्रौ रश्मयः। यथा गोर्गिर्भण्यां उल्बणम्। एवमेतस्यां उल्बणम्। प्रजियिष्णुः प्रजया च पशुभिश्च

प्वित्रेवन्तः परिवाजमासेते। पितैषां प्रको अभिरक्षिते वृतम्। समुद्रं वर्रणस्तिरोदेधे। धीरां इच्छेकुर्धरुणेष्वारभम्। प्वित्रं ते

ब्रह्मण्यते। प्रभुगत्रिणे पर्येषिविश्वतः। अतंप्ततनूर्न तदामो अंश्रुते।

मृहः वित्तं

पवित्राङ्गिरसः॥४७॥

मुवति। य ऐवं वेद। एतमुद्यन्तमपियंन्तं वृति। आदित्यः पुण्यंस्य वृथ्सः। अथ

ऋषेयः सुप्तात्रिश्च यत्। सर्वेऽत्रयो अंगस्त्युश्चा नक्षेत्रेः शङ्केतोऽवसन्। अथं इद्दहेन्तुस्तथ्समांशता ब्रह्मा देवानाम्। असंतः सुद्ये ततंक्षुः॥४८॥ प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

सवितुः श्यावाश्वस्याऽवर्तिकामस्य। अमी य ऋक्षा निहिंतास उुचा। नक्

दर्धे भें कुर्हाचिद्दिवेयुः। अदंब्यानि वर्षणस्य वृतानि। विचाकशंचन्द्रमा नक्षेत्रमेति। तथ्सिवितुर्वरीण्यम्। भर्गो देवस्ये धीमहि॥४९॥

धियो यो नेः प्रचोदयौत्। तथ्मवितुर्वृणीमहे। व्यं देवस्य भोजनम्। श्रेष्ठ ५

सर्वेघातमम्। तुर् भगस्य धीमहि। अपांगूहत सविता तृभीन्। सर्वान्दिवो अन्येसः।

नक् तान्यंभवन्दुशे। अस्थ्यस्थ्रा सम्भविष्यामः। नाम् नामेव नाम मे॥५०॥

नपुरसेकं पुमाङ्क्येस्मि। स्थावेरोऽस्म्यथ् जक्षंमः। यजेऽयक्षि यष्टाहे चे। मयां मूतान्यंयक्षत। पृशवों ममे भूतानि। अनूबन्ध्योऽस्म्यंहं विभुः। स्नियंः सृतीः। ता

उमे पु×्स आंहुः। पश्यंदक्षण्वात्रविचेतद्न्यः। कृविर्यः पुत्रः स इमा चिकेत॥५१॥ यस्ता विजानाथ्सेवितुः पितासंत्। अन्यो मणिमंविन्दत्। तमंनङ्गलिरावेयत्।

अुगीवः प्रत्यंमुश्रत्। तमजिंहा अुसश्रंत। ऊर्ष्वमूलमंबाक्छा्खम्। वृक्षं यो वेद सम्प्रीते। न स जातु जनेः श्रद्धप्यात्। मृत्युमां मार्यादितिः। हसित॰ रुदितं प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

वीणांपणबुलासितम्। मृतं जीवं चं यत्किञ्चित्। अङ्गानि स्रेव विद्धिं तत्। गोतम्॥५२॥

यश्च चेतेनः। स् तं मणिमीविन्दत्। सोऽनङ्गुल्यिव्यत्। सोऽग्रीवः प्रत्यंमुश्चत्॥५३॥

सोऽजिह्हो असश्वेत। नैतमृषिं विदित्वा नगंरं प्रविशेत्। यंदि प्रविशेत्। मिथौ चरित्वा प्रविशेत्। तथ्सम्भवंस्य व्रतम्। आतमेग्ने रथं तिष्ठ। एकाश्वमेकयोजनम्। एकचक्रेमेक्धुरम्। बातप्रोजिगतिं विभो। न रिष्यति न व्यथते॥५४॥ नास्याक्षो यातु सन्नीता यच्छ्वेतान् रोहिता १ श्वाग्रेः। रथे युंकाऽधितिष्ठिति। एकया

च दशभिश्चं स्वर्मेते। द्वाभ्यामिष्टये विৼंशत्या च। तिसृभिश्च वहसे त्रिৼंशता च। नियुद्धिर्वायविह तो विमुञ्जापुरा।

 $\frac{1}{2}$ 

आतंनुष्यु प्रतंनुष्य। उद्धमाऽऽधंम् सन्धंम। आदित्ये चन्द्रंवर्णानाम्। गर्भमाधेहि

यः पुमान्। इतः सिक्ति भूर्यंगतम्। चन्द्रमंसे रसं कृषि। वारादं जनयाग्रेऽग्रिम्। य एको रुद्र उच्येते। अस्ङ्याताः संहस्राणि। स्मर्यते न च दश्येते॥५६॥

केचित्रियेमुरित्र पाशिनः। द्यन्वेव ता इहि। मा मन्द्रेरिन्द्र हरिभिः। यामि म्यूरेरोमभिः। मा मा केचित्रियेमुरित्र पाशिनः। नि्यन्वेव तां (२) इमि। अणुभिक्ष एुवमेतं निबोधता आम्न्द्रैरिन्द्र हरिभिः। याहि म्यूरेरोमभिः। मा त्वा

महोद्धेश्वा५७॥

निघृष्वैरसमायुतैः। कालैर्हरित्वमाप्त्रैः। इन्द्राऽऽयांहि सृहस्रंयुक्।

अग्निमिष्ट्रिवसनः। वायुः श्वेतीसिकद्रुकः। संवृथ्स्रो विषूवर्णैः। नित्यास्तेऽनुचेरास्त्व सुब्रह्मण्यो १ सुब्रह्मण्यो १ सुंब्रह्मण्योम्। इन्द्राऽऽगच्छ हरिव आगच्छ मेथातिथेः।

मेष वृषणश्चस्य मेने॥५८॥

ताम्राश्वास्तामुरथाः। तामवर्णास्तथाऽसिताः। दण्डहस्ताः खाद्ग्दतः। इतो रुद्राः पराङ्गताः॥५९॥

ड्हागंताः। वसंवः पृथिविक्षितः। अष्टोद्ग्वासंसोऽग्नयः। अग्निश्च जातवेदाश्चेत्येते।

उक्तॐ स्थानं प्रमाणं चे पुर् इता बृहुस्पतिक्ष सिवृता चे। विश्वरूपैपिरहाऽऽगेताम्।

कालावयवानामितेः

रथेनोदक्वर्त्मना। अफ्सुषां इति तद्देयोः। उक्तो वेषो वासार्धिस च।

प्रतीज्या। वासात्यां इत्युष्टिनोः। कोऽन्तरिक्षे शब्दं

केरोतीति। वासिष्टो रौहिणो मीमार्स्सां चक्र। तस्यैषा भवेति। वाश्रेवं विद्युदिति। ब्रह्मेण उदरंणमसि। ब्रह्मेण उदीरणमसि। ब्रह्मेण आस्तरंणमसि। ब्रह्मेण

[अपंक्रामत गर्भिण्यंः]

उपस्तरंणमसि॥६०॥

639 वामृत्युर्घाऽऽहंरत्। अष्टयौन्यष्टपुंत्रम्। अष्टपंदिदमन्तरिंक्षम्। अहं वेद न में मृत्युः। न वामृत्युर्घाऽऽहंरत्। अष्टयोनीमृष्टपुंत्राम्। अष्टपंत्रीमुमूं दिवमूँ॥६१॥ मुष्टयोनीमृष्टपुत्राम्। अष्टपुत्नीमिमां महीम्। अहं बेद् न में मृत्युः। न प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

अहं वेद न में मृत्युः। न चामृत्युर्घाऽऽहंरत्। सुत्रामाणं मृहीमू षु। अदितिद्वौरदितिर्न्तरिक्षम्। अदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः <u> पश्चजनाः। अदितिजातमदितिजीनैत्वम्। अष्टो पुत्रासो अदितेः। ये जातास्तन्वेः</u> नरि। देवां (२) उपप्रैथ्सप्तर्भिः॥६२॥

प्रा मार्ताण्डमास्यंत्। स्प्तिमेः पुत्रेरदितिः। उपप्रैत्यूब्यं युगम्। प्रजायै मृत्यवे

तेत्। प्रा मार्ताण्डमार्भरदिति। ताननुक्रीमध्यामः। मित्रञ्च वरुणञ्च। घाता चाँर्यमा चे। अश्योश्च भगेश्व। इन्द्रश्च विवस्वार्थश्चेत्येते। हिरण्यगर्भो हश्सः यीचिषत्। ब्रह्मेजज्ञानं तदित्पदमिति। गुर्भः प्राजापृत्यः। अथु पुरुषः सुप्त पुरुषः॥६३॥

[यथास्थानं गर्मिण्यंः]

योऽसौ तपत्रुदेति। स सर्वेषां भूतानां प्राणानादायोदेति। मा मैं प्रजाया मा पेशूनाम्। मा ममे प्राणानादायोदेगाः। असौ यौऽस्तमेति। स सर्वेषां भूतानाँ प्राणानादायाऽस्तमेति। मा मै प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणानादायाऽस्तेङ्गः।

असो य आपूर्यति। स सर्वेषां भूतानां प्राणेरापूर्यति॥६४॥

मा मैं प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणेरापूरिषाः। असौ योऽपृक्षीयंति। स

सर्वेषां भूतानाँ प्राणेरपेक्षीयति। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणेरपेक्षेष्ठाः।

अमूनि नक्षेत्राणि। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पन्ति चोथ्संपीन्ते च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममे प्राणैरपंप्रसृपत् मोथ्सुंपत॥६५॥

ड्मे मासाक्षार्धमासाश्चा सर्वेषां भूतानां प्राणैरपेप्रसर्पन्ति चोथ्सेर्पन्ति चा मा सर्वेषां भूतानां प्राणेरपेप्रसर्पन्ति चोथ्संपीन्त च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममे प्राणेरपेप्रसृपत् मोथ्सृपत। इम ऋतवंः।

नोथ्संपीते च॥६६॥

मा मैं प्रजाया मा पेशूनाम्। मा ममे प्राणैरपेप्रसुषु मोध्सुप। इदमहेः। सर्वेषां

मूतानां प्राणेरपेप्रसर्पति चोथ्संपीते च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममे

प्राणेरपेप्रसुप् मोथ्सुप। इय॰ रात्रिः। सर्वेषां भूतानां प्राणेरपेप्रसर्पति चोथ्संपीते

च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममे प्राणैरपेप्रसृप मोथ्सेप। ॐ भूर्भुवः स्वेः। एतद्वो मिथुनं मा नो मिथुन॰ रोद्बम्॥६७॥

अथाऽऽदित्यस्याष्टपुंरुष्स्य। वसूनामादित्यानाङ् स्थाने स्वतेजंसा भानि।

अभिधून्वतांमिष्ट्रिताम्। वातवंतां मुरुताम्। आदित्यानाङ् स्थाने स्वतेजंसा भानि।

स्वतेजंसा भानि। सतार्थ सत्यानाम्। आदित्यानाङ् स्थाने स्वतेजंसा

रुद्राणामादित्यानाङ् स्थाने स्वतेजंसा भानि। आदित्यानामदित्यानाङ्

स्थाने

642 प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

स्थाने स्वतेजंसा भानि। संबध्सरंस्य स्वितुः। आदित्यस्य स्थाने स्वतेजंसा

मानि। ॐ भूर्भुवः स्वंः। रश्मयो वो मिथुनं मा नो मिथुन॰ रोद्धम्॥६८॥

स्वतेजंसा भानि। कश्यपस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। ॐ भूभुंब्ः स्वंः। आपो बो

मिथुनं मा नो मिथुंन श्रृद्धम्॥६९॥

वासुकिवैद्युताना॰ रुद्राणाङ् स्थाने स्वतेजंसा भानि। रजताना॰ रुद्राणाङ् स्थाने

स्थाने स्वतेजंसा भानि। व्यवदाताना॰ रुद्राणाङ् स्थाने स्वतेजंसा भानि।

अध वायोरेकादशपुरुषस्यैकादशंस्त्रीकस्य।

रुज्ञाणाङ्

प्रभाजमानानार

स्वतेजंसा मानि। ज्योतिषीमतस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। विभासस्य स्थाने

स्थाने स्वतेजंसा भानि। पतङ्गस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। स्वर्णरस्य स्थाने

आरोगस्य स्थाने स्वतेजंसा मानि। भ्राजस्य स्थाने स्वतेजंसा मानि। पटरस्य

## ऋभूणामादित्यानाङ् स्थाने स्वतेजंसा भानि। विश्वेषां देवानाम्। आदित्यानाङ्

\[ \sigma\_{\infty} \]
\[ \sigma\_{\infty} \]

स्वतेजंसा भानि। परुषाणा रुद्राणाङ् स्थाने स्वतेजंसा भानि। श्यामाना

643

मानि। अतिलोहिताना १ रुद्राणा १ स्थाने स्वतेजंसा मानि। ऊर्घ्वाना १ रुद्राणा १ रुद्राणाङ् स्थाने स्वतेजंसा भानि। कपिलाना॰ रुद्राणाङ् स्थाने स्वतेजंसा स्थाने स्वतेजंसा भानि॥७०॥

अवपतन्तानाः रुद्राणाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। वैद्युतानाः रुद्राणाः

स्थाने स्वतेजंसा भानि। प्रभाजमानीना॰ रुद्राणीनाङ् स्थाने स्वतेजंसा

मानि। व्यवदातीना॰ रुद्राणीना॰ स्थाने स्वतेजंसा भानि। वासुकिवैद्युतीना॰

रुद्राणीनाङ् स्थाने स्वतेजंसा भानि। रजताना॰ रुद्राणीनाङ् स्थाने स्वतेजंसा

मानि। परुषाणा १ रुद्राणीना १ स्थाने स्वतेजंसा भानि। श्यामाना १ रुद्राणीना १

स्थाने स्वतेजंसा मानि। कपिलाना॰ रुद्राणीना॰ स्थाने स्वतेजंसा मानि।

अतिलोहितीना॰ रुद्राणीनाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। ऊर्घ्वाना॰ रुद्राणीनाः

स्थाने स्वतेजंसा भानि। अवपतन्तीना॰ रुद्राणीना॰ स्थाने स्वतेजंसा भानि।

वैद्युतीना॰ रुद्राणीना॰ स्थाने स्वतेजंसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वंः। रूपाणि वो

[の ② 【 मिथुनं मा नो मिथुंनर रोबुम्॥७१॥

उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। सहोजसो दक्षिणदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा अथाग्नेरष्टपुरुषस्य। अग्नेः पूर्वदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। जातवेदस

स्थाने स्वतेजंसा भानि। नर्यापस उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। पङ्किराधस उदग्दिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। विसर्पिण उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा मानि। अजिराप्रभव उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। वैश्वानरस्यापरदिश्यस्य

दक्षिणपूर्वस्यां दिशि विसेपीं नरकः। तस्मात्रः पीरपाहि। दक्षिणापरस्यां

मानि। ॐ भूभुंबः स्बंः। दिशो वो मिथुनं मा नो मिथुनर गुढुम्॥७२॥

तस्मान्नः पेरिपाहि। उत्तरापरस्यां दिश्यविषांदी नरकः। तस्मान्नः पेरिपाहि। आ दिश्यविसंपी नुरकः। तस्मान्नः पीरेपाहि। उत्तरपूर्वस्यां दिशि विषादी नुरकः।

यस्मिन्थ्सप्त वासवा इन्द्रियाणि शतकतंवित्येते॥७३॥

645 प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)

प्रथमः

ड्रन्द्रघोषा वो वसीभेः पुरस्तादुपंदधताम्। मनोजवसो वः पितृभिदेक्षिणत उपंदधताम्। प्रचेता वो क्द्रैः पृश्चादुपंदधताम्। विश्वकंमां व आदित्यैकंत्तर्त उपंदधताम्। त्वष्टां वो क्पैरुपरिष्टादुपंदधताम्। संज्ञानं वः पेश्वादिति। आदित्यः

आपेमापामपः सर्वाः। अस्मादस्मादितोऽमुतेः। अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च। सह संश्वस्क्ररिद्धया। वाष्ट्रश्चा रश्मिपतेयः। मरीच्यात्मानो अद्गुहः। देवीर्भुवनुसूर्वरीः।

देवीः पंजन्यसूबेरीः। पुत्रबत्वायं मे सुत। अपाश्चीष्णाम्पा रक्षेः। अपाश्चीष्णा-

युत्रबत्वायं मे सुता महानाम्नीमेहामानाः। मृह्सो मेहस्ः स्वंः॥७५॥

် (၃

सर्वोऽाग्रः पृथिव्याम्। वायुर्न्तारेक्षे। सूर्यो दिवि। चन्द्रमां दिक्षु। नक्षेत्राणि स्वलोके। पुवा ह्येव। पुवा ह्येग्ने। पुवा हि वायो। पुवा हीन्द्र। पुवा हि पूषन्। पुवा हि देवाः॥७४॥

646

देवसूबेरीः। आदित्यानदितिं देवीम्। योनिनोर्ध्वमुदीषंत॥७६॥

भद्रं कर्णेभिः श्रुणुयामे देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजनाः। स्थिरेरङ्गेंस्तुष्टुवा र

संस्तनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रेवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नुस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिदेधातु।

सहस्रुधायेसम्। श्रिवा नः शन्तेमा भवन्तु। दिव्या आप् ओषेधयः। सुमृडीका

सर्स्वति। मा ते व्योम सन्दर्शि॥७७॥

कृतवो अर्ुणासश्चा ऋषयो वातंरश्चनाः। प्रतिष्ठा॰ शृतधो हि। समाहितासो

पुष्यवान् प्रजावान् पशुमान् भेवति। य एवं वेदे। योऽपामायतेन् वेदे। आयतेनवान्

भवति। अग्निर्वा अपामायतेनम्। आयतेनवान् भवति। यौऽग्रेरायतेनं वेदं॥७८॥

योऽपां पुष्पं वेदे। पुष्पेवान् प्रजावान् पशुमान् भेवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पमाै।

647 प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

योऽपामायतेन् वेदा आयतेनवान् भवति। वायुर्वा अपामायतेनम्। आयतेनवान् आपो वै बायोरायतेनम्। आयतेनबान् भवति। य एवं वेदे। योऽपामायतेन् आयतंनवान् भवति। आपो वा अग्रेरायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदे। भवति। यो वायोरायतेनुं वेदे। आयतेनवान् भवति॥७९॥

योऽमुष्य् तपेत आयतेनं वेदा आयतेनवान् भवति। आपो वा अमुष्य तपेत वेदं। आयतेनवान् भवति। असौ वै तपंत्रपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। आयतनम्॥८०॥

<u>व</u>न्द्रमा बा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यश्चन्द्रमंस आयतंनं वेदे। आ्यतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आयतेनवान् भवति। आपो वै चन्द्रमंस आयतेनम्। आयतेनवान् भवति॥८१॥

य एवं वेदं। योऽपामायतंनुं वेदं। आयतंनवान् भवति। नक्षेत्राणि वा अपामायतेनम्। आयतेनवान् भवति। यो नक्षेत्राणामायतेनं वेदे। आयतेनवान्

भवति। आपो वै नक्षेत्राणामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं॥८२॥

648

वै प्रजन्यंस्याऽऽयतेनम्। आयतेनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतेने आ्यतेनवान् भवति। यः पूर्जन्यस्याऽऽयतेनं वेदे। आयतेनवान् भवति। आपो वेद्॥८३॥

आयतंनवान् भवति। संबुध्सरो वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यः

संबध्सरस्याऽऽयतेनं वेदे। आयतेनवान् भवति। आपो वै संबध्सरस्याऽऽयतेनम्। आयतेनवान् भवति। य एवं वेदे। यौऽफ्सु नाव् प्रतिष्ठितां वेदे। प्रत्येव

तिष्ठति॥८४॥

ड्रमे वै लोका अपसु प्रतिष्ठिताः। तदेषाऽभ्यनूँक्ता। अपार रस्मुदंयरसन्।

सूर्वे शुक्र% समाभैतम्। अपा% रसंस्य यो रसंः। तं वो गृह्वाम्युत्तममिति। इमे वै लोका अपा% रसंः। तेऽमुष्मित्रादित्ये समाभैताः। जानुदघ्रीमुंतरवेदीं खात्वा।

अपां पूरियत्वा गुल्फद्घम्॥८५॥

पुष्करपर्णैः पुष्करदण्डैः पुष्करैश्चं सङ्स्तीर्यं। तस्मिन्विहायसे। अग्निं प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

649

प्रणीयोपसमाषाये। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। कस्माप्त्रणीतेऽयमुग्निश्चोयते। साप्रणीतेऽयमफ्सु ह्ययं चीयते। असौ भुवंनेप्यनाहिताग्निरेताः। तमभितं एता अबीष्टंका उपदर्याति। अग्निहोत्रे दर्शपूर्णमासयोः। पृशुब्न्ये चांतुर्मास्येषुं॥८६॥

अथौ आहुः। सर्वेषु यज्ञकृतुष्विति। एतर्छं स्मृ वा आहुः शण्डिलाः। कमुभिं चिनुते। सत्रियमभ्रिं चिन्वानः। संवध्सरं प्रत्यक्षेण। कमभ्रिं चिनुते। सावित्रमभिं चिन्वानः। अमुमोदित्यं प्रत्यक्षेण। कमभिं चिनुते॥८७॥

नाचिकेतम्भिं चिन्वानः। प्राणान्यृत्यक्षेण। कम्भिं चिनुते। चातुर्होत्रियम्भिं चिन्वानः। ब्रह्मं प्रत्यक्षेण। कमभिं चिनुते। वैश्वसृजमभिं चिन्वानः। शरीरं प्रत्यक्षेण। कम्भिं चिनुते। उपानुबाक्येमाशुमभिं चिन्वानः॥८८॥

डुमाँख्रोकान्य्रत्यक्षेण। कमाग्नें चिंनुते। डुममांरुणकेतुकमाग्नें चिंन्बान इति। य एुवासौ। इतश्चाऽमुतंश्चाऽव्यतीपाती। तमिति। यौऽग्रेमिंथूया वेदं। मिथुनुवान्नेवति।

650 प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

आपो वा अग्रेमिथूयाः। मिथुनुवान्नंवति। य एवं वेदं॥८९॥

आपो वा इदमांसन्थ्सिलिलमेवा स प्रजापंतिरेकंः पुष्करपर्णे समंभवत्

तस्यान्तर्मनीस कामः समेवर्तत। इद<sup>ः</sup> सृंजेयमिति। तस्माद्यत्पुरुषो मनेसाऽभिगच्छेति। तद्वाचा वेदति। तत्कर्मणा करोति। तदेषाऽभ्यनूँका। कामस्तद्ये समेवर्तताधि। मनेसो रेतः प्रथमं यदासीत्॥ ६०॥

स्तो बन्युमसीते निरीवन्दत्रा हृदि प्रतीष्यां क्वयों मनीषेति।

उपैनन्तदुपेनमति। यत्कांमो भवेति। य एवं वेदं। स तपोऽतप्यता स तपेस्तुम्बा। शरीरमधूनुत। तस्य यन्मा×ुसमासीत्। ततोऽकृणाः कृतवो वातंरश्चना ऋषंय उदंतिष्ठज्ञ॥९१॥

ये नखाः। ते वैखानुसाः। ये वालाः। ते वांलखिल्याः। यो रसंः। सोऽपाम्। अन्तर्तः कूमै भूत सर्पन्तम्। तमेब्रवीत्। मम् वैत्वङ्गार्सा। समेभूत्॥९२॥

651 नेत्यंब्रवीत्। पूर्वमेवाहमिहासमिति। तत्पुरुषस्य पुरुष्त्वम्। स सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रेपात्। भूत्वोदंतिष्ठत्। तमेब्रवीत्। त्वं वै पूर्वे समेभूः। त्वमिदं पूर्वः कुरुष्वीते। स इत आ्दायाऽऽपं:॥९३॥ प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

अञ्जलिनां पुरस्तांदुपादंघात्। पृवाह्येवेतिं। ततं आदित्य उदंतिष्ठत्। सा प्राची

एवाहीन्द्रेति। ततो वा इन्द्र<sup>ं</sup>उदंतिष्ठत्। सोदींची<sup>ं</sup>दिक्। अर्थारुणः केतुर्मध्यं <u>उ</u>पादंधात्। एवा हि पूषित्रिति। ततो वै पूषोदंतिष्ठत्। सेयं दिक्॥९५॥ दिक्। अर्थारुणः केतुर्दक्षिण्त उपादंघात्। एवाह्यम् इति। ततो वा अग्निरुदंतिष्ठत्। ततो वायुरुदंतिष्ठत्। सा प्रतीची दिक्। अथांरुणः केतुरुंत्तर्त उपादंधात्। सा दिक्गा दिक्। अथांरुणः केतुः पृक्षादुपादंधात्। एवा हि वायो इति॥९४॥

अथांरुणः केतुरूपरिष्टादुपादंधात्। एवा हि देवा इति। ततो देवमनुष्याः पितरंः।

गन्थर्वाफ्सरसञ्चोदंतिष्ठत्र। सोध्वा दिक्। या विप्रुषो विपरापतत्र। ताभ्योऽसुंरा रक्षार्सि पिशावाश्चोदंतिष्ठत्र। तस्माते पराभवत्र। विप्रुझ्रो हि ते समेभवत्र।

652 प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम) तदेषाऽन्यन्का॥९६॥

आपों हु यद्देहतीर्गर्भमायत्री दक्षं दर्याना जनयंन्तीः स्वयुम्मुम्।

ङ्मेष्यसुंज्यन्त सर्गाः। अद्यो वा इद*॰* सम्भूत्। तस्मांदिद*॰* सर्वं ब्रह्मं स्वयुम्भ्विति। तस्मांदिद*॰* सर्वे॰ शिथिलमिवाऽधुवीमवाभवत्। प्रजापेतिवीव

तत्। आत्मनाऽऽत्मानं विधाये। तदेवानुप्राविशत्। तदेषाऽभ्यनूक्ता॥९७॥

विपायं लोकान् विपायं भूतानि। विपायं सर्वाः प्रदिशो दिशंक्ष। प्रजापंतिः

प्रथम्जा ऋतस्य। आत्मनाऽऽत्मानमभि संविवेशोते। सर्वमेवेदमास्वा।

सर्वमव्रुखां। तद्वानुप्रविशति। य एवं वेदे॥९८॥

चतुंष्टय्यु आपो गुह्णाति। चृत्वारि वा अृपा॰ रूपाणि। मेघो विद्युत्

एुता वै ब्रह्मवर्चस्या आपेः। मुख्त एव ब्रह्मवर्चसमवंरुन्ये। तस्मौन्मुख्तो

स्त्नायुनुर्वृष्टिः। तान्येवावंकन्ये। आतपंति वर्ष्यां गृह्णाति। ताः पुरस्तादुपंदधाति।

653

कूप्यां गुह्णाति। ता दंक्षिण्त उपंदधाति। एता वै तेंज्रस्विनी्रापंः। प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम) ब्रह्मवर्चीसेतरः॥९९॥

गृह्णाति। ताः पृश्चादुपेदधाति। प्रतिष्ठिता वै स्थांवृराः। पृश्चादेव प्रतितिष्ठति। वहंन्तीर्गृह्वाति॥१००॥

ता उंत्तर्त उपंदधाति। ओजंसा वा एता वहंन्तीरिवोद्दंतीरिव आकूजंतीरिव

गावेन्तीः। ओजं एवास्यौतर्तो दंघाति। तस्मादुत्त्रोऽर्धं ओज्स्वितंरः। स्म्भायी

गृह्णाति। ता मध्य उपंदधाति। इयं वै संम्मायाः। जुस्यामेव प्रतितिष्ठति। पृत्वत्या गृह्णाति। ता उपरिष्टादुपादंधाति॥१०१॥

असौ वै पंल्वयाः। अमुष्यांमेव प्रतितिष्ठति। दिक्षपंदधाति। दिक्षु वा आपंः।

अन्नं वा आपंः। अन्धो वा अन्नं जायते। यदेवान्धोऽन्नं जायेते। तदवंभन्ये। तं वा

पुतमंकृणाः केतवो वातंरश्ना ऋषंयोऽचिन्वन्। तस्मांदारुणकेतुकंः॥१०२॥

तेजं ए्वास्यं दक्षिण्तो दंधाति। तस्माद्दक्षिणोऽर्धेस्तेज्रस्वितंरः। स्थावरा

654 तदेषाऽभ्यनूँक्ता। केतवो अरुणासश्च। ऋष्यो वातंरश्नाः। प्रतिष्ठा॰ शृतघो हि।

समाहितासो सहस्रघायेसामिति। शृतशेश्वेव सहस्रशश्च प्रतितिष्ठति। य पृतमग्नि चिनुते। य उंचैनमेवं वेदं॥१०३॥ \ \ \ \

जानुद्धीमुत्तरवेदी खात्वा। अपां पूरयति। अपा॰ सर्वेत्वाये। पुष्करपर्णे॰ रुक्नं पुरुष्पित्युपेदधाति। तपो वै पुष्करपूर्णम्। सत्य॰ रुक्मः। अमृतं पुरुषः।

पुताबुद्वा वाऽस्ति। यावेदेतत्। यावेदेवास्ति॥१०४॥

समेष्ट्रो। आपेमापामुपः सर्वाः। अस्मादुस्मादितोऽमुतेः। अग्निर्वायुश्च सूर्येश्च। सृह तदवंरुन्ये। कूर्ममुपंदधाति। अपामेव मेथुमवंरुन्ये। अथौ स्वर्गस्यं लोकस्य संश्वस्क्राद्धिया इति। बाय्बश्वां रश्मिपतंयः। लोकं पृणच्छिद्रं पृण॥१०५॥

यास्तिसः पंरमजाः। इन्द्रघोषा वो वसुभिरेवाह्येवेति। पश्चचितंय उपंदधाति। पाङ्गोऽभिः। यावोनेवाभ्रिः। तं चिनुते। लोकं पृणया द्वितीयामुपंदधाति। पश्चं पदा वै

655 विराट्। तस्या वा इयं पादंः। अन्तरिक्षं पादंः। द्यौः पादंः। दिशः पादंः। प्रोरंजाः पादंः। विराज्येव प्रतितिष्ठति। य एतम्भिं विनुते। य उंचैनमेवं वेदं॥१०६॥ प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

अग्निं प्रणीयोपसमाधाये। तमभित एता अबीष्टका उपदर्धाति। अग्निहोत्रे देशपूर्णमासयोः। पशुबन्ये चांतुर्मास्येषु। अथो आहः। सर्वेषु यज्ञकृतुष्विति। अथे ह स्माहारूणः स्वायम्भुवेः। सावित्रः सर्वोऽग्निरित्यनेनुषङ्गं मन्यामहे। नाना वा

एतेषां बोर्याणि। कम्भिं चिनुते॥१०७॥

सत्रियमुष्किं चिन्वानः। कमुष्किं चिनुते। सावित्रमुष्किं चिन्वानः। कमुष्किं चिनुते। नाचिकेतमुष्किं चिन्वानः। कमुष्किं चिनुते। चातुर्होत्रियमुष्किं चिन्वानः। कमुष्किं चिनुते। वैश्वसृजमुष्किं चिन्वानः। कमुष्किं चिनुते॥१०८॥

उपानुवाक्येमाशुमग्रिं विन्वानः। कमग्रिं विनुते। इममारुणकेतुकमग्रिं विन्वान इति। वृषा वा अग्निः। वृषाणौ सङ्स्फालयेत्। हुन्येतौस्य युज्ञः। तस्मात्रानुषज्येः।

प्राजापत्यो वा एषौऽग्रिः। प्राजापत्याः प्रजाः। प्रजावान् भवति। य एवं वेदं। पशुकामिश्चिन्वीत। संज्ञानं वा एतत् पश्चनाम्। यदापंः। पश्चनामेव संज्ञानेऽग्रिं चिनुते। पशुमान् भवति। य एवं वेदं॥११०॥ सोत्तेरवेदिषुं कृतुषुं चिन्वीत। उत्तरवेद्याङ् ह्यंग्निश्चीयतै। प्रजाकांमश्चिन्वीत॥१०९॥ प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

वृष्टिकामश्चिन्वीत। आपो वै वृष्टिः। पर्जन्यो वर्षुको भवति। य एवं वेदं। आम्यावी चिन्वीत। आपो वै भेषजम्। भेषजमेवास्मै करोति। सर्वमायुरेति। अभिचरङ्धिन्वीत। वज्रो वा आपेः॥१११॥ वज्रमेव आतृष्येभ्यः प्रहेरति। स्तृणुत एनम्। तेजंस्कामो यशंस्कामः। <u>ब्रह्मवर्च</u>सकामः स्वर्गकामश्चिन्वीत। <u>ए</u>ताबद्घा वाऽस्ति। यावंदेतत्। यावंदेवास्ति। तदवंरुन्ये। तस्येतद्वतम्। वर्षति न घावेत्॥११२॥

अमृतं वा आपंः। अमृत्स्यानंन्तरित्यै। नापसु मूत्रेपुरीषं कुर्यात्। निष्ठीवेत्। न विवसेनः स्नायात्। गुह्यो वा पृषोँऽग्रिः। पृतस्याग्नेरनेतिदाहाय।

पुंष्करपुणीिन हिरंण्यं वाऽधितिष्ठैत्। एतस्याग्नेरनेभ्यारोहाय। न कूर्मस्याश्रीयात्। नोद्कस्याघातुकान्येनेमोद्कानि भवन्ति। अघातुका आपेः। य एतमुग्ने चिनुते। य उचेनमेवं वेदे॥११३॥

मरीचयः स्वायम्भुवाः। ये शंरीराण्यंकल्पयत्र्। ते देहं केल्पयन्तु। मा चं ते ख्यास्मे तीरिषत्। उतिष्ठत् मा स्वंप्ता अग्निमिच्छध्वं भारताः। राज्ञः सोमेस्य

देवानां पूरेयोध्या। तस्या १ हिरणमेयः कोशः। स्वर्गो लोको ज्योतिषाऽऽवृतः।

तृपासंः। सूर्येण स्युजोषसः। युवो सुवासाः। अष्टाचेका नवेद्वारा॥११५॥

आद्तिरीरन्द्रः सुह सीषधातु। आदित्यैरिन्द्रः सगणो मुरुद्धिः। अस्मार्कं भूत्वविता

तुनूनौम्। आप्नेवस्व प्रप्नेवस्व। आण्डीमेवज् मा मृहुः। सुखादीन्दुःखनिषनाम्।

प्रतिमुश्चस्व स्वां पुरम्॥११४॥

ड्मानुंकं भुंवना सीषधेम। इन्द्रंश्च विश्वं च देवाः। युज्ञं चं नस्तुन्वं चं प्रजां चं।

कीर्तिं प्रजां देदुः। विभ्राजमाना् हरिणीम्। युशसां सम्प्रीवृताम्। पुर ५ हिरण्मेयीं

यो वै तां ब्रह्मणो वेदा अमुतेनाऽऽवृतां पुरीम्। तस्मै ब्रह्म चं ब्रह्मा चा आयुः

ब्रह्मा॥११६॥

विद्वान्देवासुरानुेम्यान्। यत्कुेमारी मन्द्रयेते। यृद्योषिद्यत्पंतिव्रता। अरिष्टं यक्किं च विवेशांऽपुराजिता। पराङेत्यंज्यामुयी। पराङेत्यंनाशकी। इह चामुत्रं चान्वेति। क्रियते। अग्रिस्तदनुवेधति। अश्रुतांसः श्रंतासुश्रा।११७॥

अपेत बीत बि चे सर्पतातः। येऽत्र स्थ पुंराणा ये च नूतेनाः। अहोभिर्द्धिरुक्तु-यज्वानो येऽप्ययज्वनंः। स्वयंन्तो नापैक्षन्ते। इन्द्रंमुभिं चं ये विदुः। सिकंता इव संयन्ति। रश्मिमिः समुदीरिताः। अस्माल्लोकादंमुष्माच। ऋषिभिरदात्पृश्रिभिः। भेव्यक्तम्॥११८॥

यमो देदात्ववसानेमस्मै। नृ मुंणन्तु नृपात्वर्यः। अकृष्टा ये च कृष्टेजाः। कुमारीषु कनीनीषु। जारिणीषु च ये हिताः। रेतः पीता आण्डेपीताः। अङ्गरेषु च ये हुताः।

629

अदो यद्वह्मं विल्बम्। पितृणां चे यमस्यं च। वर्षणस्यार्थिनोर्ग्रेः। मरुतां च विहायंसाम्। कामप्रयवेणं मे अस्तु। स ह्येवास्मिं सुनातेनः। इति नाको ब्राह्मिश्रवो रायो धनम्। पुत्रानापो देवीपि्हाऽऽहित॥१२०॥

[タペ] |

विशींणीं गुप्रेशीणीं च। अपेतों निर्ऋति॰ हंथः। परिबाधङ् श्वेंतकुक्षम्

निजङ्गः शब्लोदंरम्। स तान् वाच्यायेया सृह। अभ्रे नाशंय सन्दर्शः।

ईर्ष्यांसूये बुंमुक्षाम्। मृन्युं कृत्यां चं दीधिरे। रथेन किश्युकावेता। अग्रे नाश्र्य सन्दशः॥१२१॥

पुर्जन्यांयु प्रगायता दिवस्युत्रायं मीदुषै। स नो यवसीमच्छतु। इदं वचेः

पुर्जन्यांय स्वराजें। हृदो अ्स्त्वन्तंरन्तद्यंयोत। मयोभूर्वातो विश्वकृष्टयः सन्त्वस्मे।

| |-|-

सुपिप्पुला ओषंधीर्देवगोपाः। यो गर्भुमोषंधीनाम्। गवां कुणोत्यवंताम्। पर्जन्यः <u>न</u>ुरुषीणा"म्॥१२२॥

पुनेममिलिन्द्रियम्। पुन्रायुः पुनर्भगंः। पुनुब्रिह्मणमेतु मा। पुनद्रिविणमेतु मा। यन्मेऽद्य रेतेः पृथिवीमस्कान्। यदोषेधीरृप्यसंरृद्यदापेः। इदं तत्पुन्रादेदे।

रीर्घायुत्वाय् वर्चसे। यन्मे रेतः प्रसिच्यते। यन्म् आजायते पुनेः। तेनं माम्मृतं

कुरु। तेने सुप्रजसं कुरु॥१२३॥

अम्ब्यस्तिग्ऽघाऽजांयत। तवं वैश्रवणः संदा। तिरोऽघेहि सप्नान्नः। ये

अपोऽश्रन्ति केचन। त्वाष्ट्रीं मायां वैश्ववणः। रथर् सहस्रवन्धुरम्। पुरुश्वकर सहंस्राश्वम्। आस्थायायाहि नो बुलिम्। यस्मै भूतानि बुलिमावेहन्ति। धनं गावो

် က

हस्ति हिरंण्युमश्वान्॥१२४॥

661

असाम सुमतौ यज्ञियंस्य। त्रियं बिभूतोऽत्रंमुखीं विराजमीं सुदर्शने चं कोश्चे ची मैनागे चे महागिरी। शृतद्वाटारंगमन्ता। स्रहार्यं नगरं तवे। इति मत्रोः। कल्पोऽत ऊर्ध्वम्। यदि बलि॰ हरेंत्। हिरण्यनामये वितुदये कोबेरायायं प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

बेलिः॥१२५॥

सर्वभूताधिपतये नम इति। अथ बिले॰ हत्वोपतिष्ठेत। क्षत्रं क्षत्रं वैश्रवणः।

ब्राह्मणां वयुङ्क स्मः। नमेस्ते अस्तु मा मां हि॰सीः। अस्मात्प्रविष्यात्रमिद्धोति। अथ

तिरोऽधाः स्वंः। तिरोऽधा भूभुवः स्वंः। सर्वेषां लोकानामाधिपत्यं सीदेति। अथ तमग्निमिन्धोत। यस्मिन्नेतत्कर्म प्रयुश्चीत। तिरोऽधा भूः स्वाहाँ। तिरोऽधा भुवः स्वाहाँ। तिरोऽधाः स्वंः स्वाहाँ। तिरोऽधा भूभुवः स्वंः स्वाहाँ। यस्मिन्नस्य काले

अपि ब्राह्मणंमुखोनाः। तस्मित्रहः काले प्रंयुअोता परंः सुप्तजंनाद्वेपि। मास्म

सर्वा आहुतीर्हुतां भवेयुः॥१२७॥

तमग्रिमांदर्योत। यस्मिन्नेतत्कर्म प्रयुश्चीत। तिरोऽषा भूः। तिरोऽषा भुकं:॥१२६॥

662 प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

प्रमाद्यन्तंमाध्यापयेत्। सर्वार्थाः सिद्धन्ते। य एंवं वेद। क्षुध्यत्रिदंमजानताम्। सर्वाथीं ने सिद्धन्ते। यस्ते विघातुको आता। ममान्तर्हृदये श्रितः॥१२८॥

तस्मां इममग्रपिण्डं जुहोमि। स मेंऽर्थान्मा विवंधीत्। मयि स्वाहाँ। राजापिराजायं प्रसह्यसाहिने। नमों वयं वैश्ववणायं कुमहे। स में कामान्कामकामांय महामा। कामेश्वरो वैश्ववणो दंदातु। कुबेरायं वेश्ववणायां महाराजाय नमंः। केतवो अर्पणासश्च। ऋषयो वातंरश्चनाः। प्रतिष्ठाः श्वतपो हि। समाहितासो सहस्रधायंसम्। शिवा नः शन्तमा भवन्तु। दिव्या आप ओषंधयः। सुमृडीका सरंस्वित। मा ते व्योम सन्हिशी॥१२९॥

संवथ्सरमेतंद्वतं चरेत्। द्वौ वा मासौ। नियमः संमासेन। तस्मित्रियमंविशेषाः

त्रिषवणमुदकोंपस्पुर्शी। चतुर्थकालपानंभक्तः स्यात्। अहरहर्वा भैक्षंमश्रीयात् औद्म्बरीभिः समिद्धिराग्नें परिचरेत्। पुनर्मामैत्विन्द्रियमित्येतेनऽनुवाकेन

अंसञ्चयवान्। अग्रये वायवे सूर्याय। ब्रह्मणे प्रंजापृतये। चन्द्रमसे नंक्षत्रेभ्यः।

ऋतुभ्यः संबेध्सराया वरुणायारुणायेति व्रंतहोमाः। प्रवग्यंवंदाद्शः। अरुणाः कौण्डऋषयः। अरण्येऽधीयोरत्र्। भद्रं कर्णेभिरिति द्वे जिप्त्वा॥१३१॥

महानाम्रीमिरुदक १ सं १ स्पृश्यी तमाचौयों दुद्यात्। शिवा नः शन्तमेत्योषधीरालुभ

सुमृडीकेति भूमिम्। एवमंपव्गे। धेनुर्दक्षिणा। करसं वासंश्र क्षोमम्। अन्यंद्वा

गुक्रम्। यंथाश्राक्ति वा। एवङ्स्वाध्यायंथर्मेण। अरण्येऽधीयीत। तपस्वी पुण्यो म्बति तपस्बी पुंण्यो भवति॥१३२॥

संस्तुनीनेः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रेवाः। स्वस्ति नः पूषा भद्रं कर्णीभः श्रुणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजनाः। स्थिरेरङ्गेंस्तुष्टुवार

विश्ववेदाः। स्वस्ति नुस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिदेधातु॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

## ॥ द्वितीयः प्रश्नः॥

ॐ नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमेः पृथिव्यै नम् ओषेधीभ्यः। नमो बाचे नमो बाचस्पतंये नमो विष्णंवे बृह्ते केरोमि॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

सह वै देवानां चासुराणां च यज्ञौ प्रतंतावास्तां वयङ् स्वर्गं लोकमौष्यामो वयमौष्याम् इति तेऽसुराः सन्नह्य सहंसेवाचंरन् ब्रह्मचर्येण तपंसेव देवास्तेऽसुरा अमुह्यङ्क्ष्ते न प्राजान् इस्ते परांऽभवन्ते न स्वर्गं लोकमायन् प्रसंतेन वै यज्ञेनं देवाः स्वर्गं लोकमायत्र प्रसंतेनासुरान् परांभावयन् प्रसंतो ह वै यंज्ञोपवीतिनो यज्ञोऽप्रेसृतोऽनुपवीतिनो यत्किं चं ब्राह्मणो यंज्ञोपवीत्यधीते यज्ञंत एव तत्तस्माधज्ञोपवीत्येवाधीयीत याज्ञयेद्यजेत वा यज्ञस्य प्रसंत्या अजिनं वासो

- वा दक्षिण्त उंप्वीय दक्षिणं बाहुमुद्धंर्तेऽवं धत्ते स्व्यमितिं यज्ञोपवीतमेतदेव

विपेरीतं प्राचीनावीत ﴿ संवीतं मानुषम्॥१॥

999 द्वितीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

रक्षार्शम् ह वां पुरोऽनुवाके तपोग्रीमतिष्ठन्त तान् प्रजापंतिवृरेणोपामत्रथत् तानि वरमवृणीताऽऽदित्यो नो योद्धा इति तान् प्रजापंतिरब्रवोद्योर्षयथ्वमिति

तस्मादुतिष्ठ-तुर् ह वा तानि रक्षार्श्स्यादित्यं योधयन्ति यावेदस्तमन्वेगातानि ह वा एतानि रक्षार्शसे गायत्रियाऽभिमत्रितेनाम्भेसा शाम्यन्ति तदुं ह वा एते

ब्रह्मवादिनः पूर्वाभिमुखाः सुन्ध्यायां गायत्रियाऽभिमत्रिता आपं ऊर्ध्वं विक्षिपन्ति ता एता आपो बन्नीभूत्वा तानि रक्षांशसि मुन्देहारुणे द्वोपे प्रक्षिपन्ति यत्प्रेदक्षिणं

ब्रौह्मणो विद्वान्थ्सकले भ्दमेश्रुतेऽसावीदित्यो ब्रह्मेति ब्रह्मेव सन् ब्रह्माप्येति य

प्रक्रेमन्ति तेने पाप्पानुमवधून्वन्त्युद्यन्तेमस्तं यन्तेम् आदित्यमीभिष्यायन् कुर्वन्

यहेवा देवहेळेनं देवोसश्चकुमा वयम्। आदित्यास्तस्मान्मा मुञ्जत्तस्यतेन मामित। देवां जीवनकाम्या यद्वाचाऽनृतमूदिम। तस्मात्र इह मुञ्जत विश्वे देवाः स्जोषेसः। ऋतेने द्यावापृथिवी ऋतेन् त्वे संरस्वति। कृतात्रेः पा्होनेसो यक्कि

667 द्वतीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

वानुंतमूदिम। इन्द्राग्री मित्रावरुणौ सोमौ घाता बृहस्पतिः। ते नौ मुश्रुन्त्वेनसो यद्न्यकृतमारिम। सजातश्र\*सादुत जामिश्र\*साष्यायेसः श\*सांदुत कनीयसः। अनोधृष्टं देवकृतं यदेनस्तस्मात् त्वमस्माञ्जातवेदो मुमुग्धि॥३॥

यद्वाचा यन्मनंसा बाहुभ्यांमूरुभ्यांमष्ठीवन्धाः शिन्नैर्यदनृतं चकुमा वयम्।
अग्निर्मा तस्मादेनंसो गार्हेपत्यः प्रमुञ्जतु चकुम यानि दुष्कृता। येनं त्रितो
अर्णवात्रिर्बभूव येन सूर्यं तमंसो निर्मुमोचं। येनेन्द्रो विश्वा अजंहादरांतीस्तेनाहं
ज्योतिषा ज्योतिरानशान आशि। यत्कुसींदमप्रतीत् मयेह येनं यमस्यं निधिना चरांमि। एतत्तदंग्ने अनुणो भेवामि जीवेन्नेव प्रति तत्ते दधामि। यन्मिये माता

यदां पिपेषु यद्न्तरिक्षं यदा्शसातिकामामि त्रिते देवा दिवि जाता यदापं इमं

में बरुण तत्त्वां यामि त्वं नो अग्रे स त्वं नो अग्रे त्वमंग्रे अयासि॥४॥

यददीँव्यत्रृणम्हं बभूवादिंथ्सन्वा सञ्जगर् जनैंग्यः। अग्निर्मा तस्मादिन्द्रेश्च संविदानौ प्रमुञ्जताम्। यद्धस्तौग्यां चुकर् किल्बिषाण्युक्षाणां वृग्नुमुप्जिघ्नेमानः।

m

899 उग्रं पश्या चे राष्ट्रभृच तान्यंफ्सरसावनुंदत्तामृणानि। उग्रं पश्ये राष्ट्रंभृत्कित्त्विषाणि यद्क्षवृत्तमनुंदत्तमेतत्। नेत्रं ऋणानृणव इथ्संमानो यमस्यं लोके अधिरञ्जुरायं। अवं ते हेळ उदुत्तममिमं में वरुण तत्त्वां यामि त्वं नो अग्रे स त्वं नो अग्रे। सङ्कुंसुको द्वितीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

तमेस्मै प्रसुवामसि। सं वर्चसा पर्यसा सन्तुनूभिरगंन्महि मनेसा स॰ शिवेने।

त्वष्टां नो अत्र विदेषातु रायोऽनुमाष्टुं तुन्वो(१) यद्विलिष्टम्॥५॥

निर्वक्ष्ममचीचते कृत्यां निर्ॠतिं च। तेन् योऽ(१)स्मथ्समुच्छाते तमस्मे

विकुंसुको निर्ऋथो यश्चे निस्वनः। तेऽ(१)स्मद्यक्ष्ममनांगसो दूराद्दूरमंचीचतम्।

ते। आयुद्री अग्ने हविषों जुषाणो घृतप्रंतीको घृतयोनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु चार्

आयुष्टे विश्वतो दघदयमग्निवरीण्यः। पुनंस्ते प्राण आयांति परायक्ष्मरं सुवामि

गव्यं पितेवं पुत्रम्भिरंक्षतादिमम्। इममंग्र आयुषे वर्चसे कृधि तिग्ममोजो वरुण्

699

र्मेपत्नान्मत्यजाताअतवेदो नुदस्व। अधि नो ब्रहि सुमनस्यमानो वयङ् स्याम प्रणुदा नः सपत्नान्। अग्ने यो नोऽभितो जनो वृको वारो जिघारंसति। ताङ्स्त्वं वृत्रहं जहि वस्वस्मभ्यमाभेर। अग्ने यो नोऽभिदासीत समानो यश्च निष्ठ्यंः। तं

समूहताम्। यो नः सृपत्नो यो रणो मतोंऽभिदासीते देवाः। इध्मस्येव प्रक्षायेतो

यो नः शपादशपतो यश्चे नः शपंतः शपौत्। उषाश्च तस्मै निमुक्च सर्वं पाप र

व्यः समिधं कृत्वा तुभ्यंम्ग्रेऽपि दध्मसि॥७॥

अग्ने जातान्प्रणुदा नः स्पर्वान्प्रत्यजाताञ्जातवेदो नुदस्वा अस्मे दीदिहि

अग्निर्ऋषिः पर्वमानः पार्ञजन्यः पुरोहितः।

स्वपां अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधंद्रयिं मयि पोषम्॥६॥

तमीमहे महागयम्

सुमना अहेळ्ञ्छमेन्ते स्याम त्रिवरूथ उद्भौ। सहंसा जातान्प्रणुंदा नः

सर्शिशाधि। मातेवाँस्मा अदिते शमें यच्छु विश्वं देवा जरंदष्टिर्यथाऽसंत्। अग्र आयूरंषि पवस् आ सुवोर्जीमिषं च नः। आरे बांधस्व दुच्छुनाँम्। अग्रे पर्वस्व

मा तस्योच्छ्रीष किं चन। यो मां द्विष्टिं जातवेदो यं चाहं द्विष्म् यश्च माम्। द्वितीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

सर्वाष्ट्रस्तानेग्ने सन्देह याङ्श्<u>या</u>हं द्विष्मि ये च माम्। यो अस्मभ्यंमरातीयाद्यश्चं नो द्वेषेते जनेः। निन्दाद्यो अस्मान्दिफ्साँच सर्वाष्ट्रस्तान्मंष्पषा कुरु। स॰श्चितं मे ब्रह्म स॰शितं वीर्या(१)म्बलम्। स॰शितं क्षत्रं में जिष्णु यस्याहमस्मि पुरोहितः।

उदेषां बाहू अतिरुमुद्दर्वो अथो बलम्। क्षिणोमि ब्रह्मणाऽमित्रानुत्रयामि स्वा(१)म्

अहम्। पुनर्मनः पुन्रार्थुर्म आगात्पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रं म् आगात्पुनेः प्राणः पुन्राक्तं म् आगात्पुनश्चितं पुन्राधीतं म् आगात्। वैश्वान्रो मेऽदंब्यस्तन्पा अवंबाधतां

दुरितानि विश्वा॥८॥

वैश्वान्राय प्रतिवेदयामो यदीनृण॰ संङ्गो देवतांसु। स पृतान्पाशांन् प्रमुचन् प्रवेद स नो मुञ्जातु दुरितादवद्यात्। वैश्वान्रः पवयात्रः पवित्रेयध्संङ्गरमभिषावांम्याशाः अनोजान्मनंसा यार्चमानो यदत्रेनो अव तथ्सुवामि। अमी ये सुभगे दिवि

<u> विचृतौ नाम् तारंके। प्रेहामृतंस्य यच्छतामृतद्धंद्धकृमोचंनम्। विजिहीर्ष्</u>

| ` |   | _ |
|---|---|---|
| ( |   | Н |
| ` |   | н |
| _ |   |   |
|   |   | Н |
|   |   | • |
|   | 1 |   |

लोकान्क्रीधे बन्धान्मुंश्वासि बद्धंकम्। योनेरिव प्रच्युंतो गर्भः सर्वांन् पथो अनुष्व। स प्रजानन्प्रतिगृग्णीत विद्वान्यजापेतिः प्रथम्जा ऋतस्ये। अस्मार्भिर्दतं जरसं द्वितीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

पुरस्तादच्छित्रं तन्तुंमनुसर्थरेम॥९॥

त्तं तन्तुमन्वेके अनु सर्श्वरन्ति येषां दत्तं पित्यमायेनवत्। अबन्ध्वेके ददंतः प्रयच्छादातुं चेच्छुक्रवार्क्तः स्वर्गे एषाम्। आरंभेथामनु सर्श्नेथार समानं

-पन्थामवथो घृतेने। यद्वां पूर्तं परिविष्टं यद्ग्रो तस्मे गोत्रायेह जायांपती

स॰र्भेथाम्। यद्न्तरिक्षं पृथिवीमुत द्यां यन्मातरं पितरं वा जिहिश्सिम

अग्निमा तस्मादेनेसो गार्हपत्य उन्नो नेषद्दुरिता यानि चकुम। भूमिर्माताऽदितिनों जनित्रं भाताऽन्तरिक्षम्भिश्चस्त एनः। द्योनेः पिता पितृयाच्छं भेवासि जामि

मित्वा मा विविध्सि लोकात्। यत्रं सुहार्दः सुकृतो मदेन्ते विहाय रोगं

यदत्रुमस्यनृतेन देवा दास्यत्रदास्यत्रुत वां करिष्यन्। यद्देवानां चक्षुष्यागो अस्ति

तुन्वा(१) 🐇 स्वायाम्। अस्रोणाङ्गेरहुताः स्वुर्गे तत्रं पश्येम पितरं च पुत्रम्।

672 द्वितीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

यदेव किं चे प्रतिजग्राहमृषिमाँ तस्मोदनृणं कृणोतु। यदत्रमझि बहुधा विरूप्

वासो हिरंण्यमुत गामजामविमै। यद्देवानां चक्षुष्यागो अस्ति यदेव किं चं प्रतिजग्राहमग्रिमो तस्मोदनृणं कृणोतु। यन्मयो मनेसा वाचा कृतमेनेः कदाचन। सर्वस्मौतस्मौन्मेळितो मोग्धि त्व॰ हि वेत्थे यथात्थम्॥१०॥

तपंसा च तानुषेयोऽब्रुवन्कुथा निलायं चर्थेति त ऋषीनब्रुवृत्रमो वोऽस्तु

वातंरशना ह वा ऋषंयः अमृणा ऊर्ध्वमंन्थिनो बंभूबुस्तानृषंयोऽर्थमांयुङ्स्ते

कूश्माण्डानि ताॐ्स्तेष्वन्वंविन्दञ्छद्धयां

निलायमचर्ङ्स्तेऽनुप्रविशुः

भगवन्तोऽस्मिन्याम्नि केनं वः सपर्यामेति तानृषेयोऽब्रुवन्पवित्रं नो ब्रूत येनारेपसेः स्यामेति त पुतानि सूक्तान्यपश्यन् यहेवा देव्हेळेनं यददीव्यञ्जणमृहं

वदंबांचीनुमेनौँ भूणहृत्यायास्तस्मौन्मोक्ष्यंष्व इति त पृतैरंजुहबुस्तेऽरेपसों-

बभूबाऽऽयुष्टे विश्वतो दर्घादत्येतेराज्यं जुहुत वैश्वान्राय प्रतिवेद्याम् इत्युपेतिष्ठत

673 ऽभवन्कर्मादिष्वेतैर्जुह्यात्यूतो देवलोकान्थ्समंश्रुते॥११॥ द्वतीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

कृश्माण्डैर्जुहुयाद्योऽपूंत इव मन्येत यथां स्तेनो यथां भूण्हेवमेष भेवित योऽयोनो रेतंः सिश्चित यदंर्वाचीनमेनो भूणहृत्यायास्तस्मान्मुच्यते यावदेनो दीक्षामुपैति दीक्षित एतेः संति जुहोति संवश्मरं दीक्षितो भंवित संवश्मरः दीक्षितो मासं दीक्षितो भंवित यो मासः संवश्मरः संवश्मरादेवाऽऽत्मानं पुनीते मासं दीक्षितो भंवित यो मासः भंवश्मरः संवश्मरः संवश्मरादेवाऽऽत्मानं पुनीते द्वादंश्म मासाः संवश्मरः संवश्मरादेवाऽऽत्मानं पुनीते द्वादंश्म मासाः संवश्मरः संवश्मरादेवाऽऽत्मानं पुनीते प्रजीदिक्षितो भंवित प्रद्वां मासाः संवश्मरः संवश्मरादेवाऽऽत्मानं पुनीते प्रज्ञादिक्षितो भंवित प्रद्वां मासाः संवश्मरः संवश्मरादेवाऽऽत्मानं पुनीते तिस्रो रात्रीदिक्षितो भंवित प्रद्वां मायत्री गायत्री गायित्रया प्रवाऽत्मानं पुनीते तिस्रो रात्रीदिक्षितो भविति त्रिपदां गायत्री गायत्री गायित्रया प्रवाऽऽत्मानं पुनीते

गायित्रिया एवाऽऽत्मान

जुगुफ्सेतानृतात्पयों

मारसमंश्रीयात्र

674

वृतं येवागू रोजन्येस्यामिक्षा वैश्यस्याथों सौम्येप्यंष्वर एतद्वतं ब्रंयाद्यदि

-मन्येतोप्दस्यामीत्योद्नं घानाः सक्तं घृतमित्यनुष्रतयेदात्मनोऽनुपदासाय॥१२॥

अुजान् हु वै पृश्री ईस्तप्स्यमांनान् ब्रह्मं स्वयुम्न्वेभ्यानंर्षुत्त ऋषेयोऽभवन्तद्षींणाग 

तां देवतामुपोतिष्ठन्तं यज्ञकोमास्तं पृतं ब्रह्मयज्ञमपेषयन्तमाहेरन्तेनोयजन्त् यद्दचोऽध्यगीषत् ताः पयेआहुतयो देवानोमभवन् यद्यजूर्शेषे घृताहेतयो यथ्सामोनि सोमोहुतयो यदर्थवीङ्गिरसो मध्वाहुतयो यद्वाह्मणानीतिहासान्

गुंराणानि कल्पान्नाथां नाराश्चर्सीमेंदाहुतयों देवानांमभवन्ताभिः क्षुधं पाप्मानुम-पष्टित्रपाप्नानो देवाः स्वर्गं लोकमायन् ब्रह्मणः सायुज्यमुषयोऽगच्छन्॥१३॥

पञ्च वा पृते मेहायुज्ञाः संतति प्रतायन्ते सत्ति सन्तिष्ठन्ते देवयुज्ञः पितृयुज्ञो भूतयुज्ञो मेनुष्ययुज्ञो ब्रह्मयुज्ञ इति यदुग्रौ जुहोत्यपि समिधं तहेवयुज्ञः

675 गथ्स्वाध्यायमधीयोतैकामप्युच यजुः सामं वा तद्वसय्जः सन्तिष्ठते यद्वोऽधीते हर्गते तद्भैतयज्ञः सन्तिष्ठते यद्वौह्मणेभ्योऽत्रं दर्दाति तन्मंनुष्ययुज्ञः सन्तिष्ठते पर्यसः कूल्यां अस्य पितृन्थस्वया अभिवंहन्ति यद्यजूरंषि घृतस्यं कूल्या यथ्सामानि सोमं एभ्यः पवते यद्धविङ्गिरसो मधौः कूल्या यद्वाह्मणानीतिहासान् गहुचोऽधीते पर्यआहुतिभिरेव तहेवाङ्स्तेपयति यद्यज्ञू शिष घृताहीतिभिर्यध्सामानि पुंराणानि कल्पानाथां नाराश्वर्सीमेंदंसः कूल्यां अस्य पितृन्थ्स्बंधा अभिवेहन्ति कल्पान्गाथां नाराश॒॰्सीमेंदाहुतिभिरेव तद्देवाङ्स्तेर्पयति त ऐनं तृपा आयुषा सन्तिष्ठते यत्पितुम्यः स्व्या क्रोत्यप्यपस्तत्पितृयुज्ञः सन्तिष्ठते यद्भुतेभ्यो बुलि ॰ तेजंसा वर्चसा श्रिया यशंसा ब्रह्मवर्चसेनात्राद्यंन च तर्पर्यान्ते॥१४॥ मध्वांहतिभियद्वांह्यणानीतिहासान् सोमाहितिमियदथविष्ट्रिंग्सो द्वितीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

ब्ह्ययुज्ञेने युक्ष्यमाणुः प्राच्यां दिशि आमादछीदर्द्श्श उदीच्यां प्रागुदीच्यां

द्वितीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

बोदितं आदित्ये दंक्षिणत उपवीयोपविश्य हस्तांववनिज्य त्रिराचांमेहिः पीरुमुज्यं सकुदुपस्पुश्य शिर्श्वक्षुंषी नासिके श्रोत्रे हदंयमालभ्य यत्रिराचार्मित तेन ऋचेः प्रीणाति यहिः पीरेमुजीते तेन यजूरंषि यथ्सकुदुंपस्पृशंति तेन सामोनि यथ्सव्यं पाणिं पादौ प्रोक्षिते यच्छिर्श्वक्षुंषी नासिके श्रोत्रे हदंयमालभेते तेनार्थवािङ्ग्रसौ

रसो यहुर्माः सर्समेव ब्रह्मं कुरुते दक्षिणोत्तरौ पाणी पादौ कृत्वा सपवित्रावोमिति प्रतिपद्यत एतद्वै यजुम्बयों विद्यां प्रत्येषा वागेतत्परममक्षरं तदेतहचाञ्चेत्तमृचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुर्यस्तन्न वेद किमृचा केरिष्यति

ब्राह्मणानीतिहासान् पुंराणानि कल्पान्नाथां नाराश्चर्सीः प्रीणाति दर्भाणां

मृहदुपस्तीर्योपस्थं कृत्वा प्राङासीनः स्वाध्यायमधीयीतापां वा एष ओषधीना र

य इत्राद्विदुस्त इमे समोसत् इति त्रीनेव प्रायुङ्क भूभुंवः स्वरित्योहेतद्वे वाचः सत्यं

संविता श्रियः प्रसविता श्रियमेवाऽऽप्रोत्यथौ प्रज्ञातंयैव प्रतिपदा छन्दारंसि

यदेव वाचः सृत्यं तत्प्रायुङ्गार्थं सावित्रीं गायत्रीं त्रिरन्वांह पच्छोंऽर्धर्चशोऽनवान र

प्रतिपद्यते॥१५॥

```
677
```

आमे मनंसा स्वाध्यायमधीयीत दिवा नक्तं वेति हं स्माऽऽह शोच आहेय उतारंण्येऽबले उत वाचोत तिष्ठंत्रुत व्रजंत्रुताऽऽसींन उत शयांनोऽधीयीतैव स्वाध्यायं तपंस्वी पुण्यों भवति य एवं विद्वान्अस्वाध्यायमधीते नमो ब्रह्मणे नमों अस्त्वग्रये नमंः पृथित्ये नम् ओषंधीभ्यः। नमों वाचे नमों वाचस्पतंये नमो विष्णंवे बृहते कंरोमि॥१६॥

स वा एष युज्ञः सुद्यः प्रतायते सुद्यः सन्तिष्ठते तस्यु प्राक् सायमेवभुथो नमो

मध्यन्दिने प्रबलमधीयीतासौ खलु वावैष आंदित्यो यद्वाँह्यणस्तस्मातर्राहे तेऽक्ष्णिष्ठं तर्पति तदेषाऽन्युक्ता। वित्रं देवानामुदेगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वर्षणस्याग्नेः। आऽप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष्॰ सूर्य आत्मा जगंतस्तस्थुष्श्चिति

678 ब्रह्मण् इति परिधानीयां त्रिरन्वाहाप उपस्मुश्यं गृहानेति ततो यत्कि च दर्दाति मा दक्षिणा॥१७॥

यदंबस्फूर्जिति सोऽनुंबषद्वारो बायुरात्माऽमांबास्यां स्विष्टकृद्य एवं विद्वान्मेघे

समानानां भवति यावेन्तः ह वा इमां वित्तस्यं पूर्णां ददंथ्स्वर्गं लोकं जयति तावेन्तं लोकं जयिति भूयारंसं वाक्ष्य्यं वापं पुनर्मृत्युं जयिति ब्रह्मणः सायुज्यं

गच्छोते॥१८॥

तस्य वा एतस्यं य्जस्य द्वावंनध्यायौ यदात्माऽशुचियंद्देशः समीछदैवतानि

| | |-

बर्षति विद्योतमाने स्तनयंत्यवस्फूजीते पर्वमाने वायावमावास्यायाः स्वाध्यायमधीते तपे एव तत्तेप्यते तपो हि स्वाध्याय इत्युत्तमं नाक रे रोहत्युत्तमः

य एवं विद्वान्मंहारात्र उषस्युदिते ब्रज्ङ्स्तिष्टत्रासीनः शयांनोऽरण्यै ग्रामे वा यावेत्त्रसङ् स्वाध्यायमधीते सर्वाक्षेकाञ्जयति सर्वाक्षेकानेनुणोऽनु-द्वितीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

सर्वाष्ट्रोकानेनुणोऽनु-

सश्चरित तदेषाभ्युक्ता। अनुणा अस्मित्रेनुणाः परीस्मङ्स्तृतीये लोके अनुणाः

स्यामा ये देवयानां उत पितृयाणाः सर्वांन्यथो अनृणा आक्षीयेमेत्यभ्रिं वै जातं पाप्मा जोग्राह् तं देवा आहैतीभिः पाप्मानुमपाष्ट्रज्ञाहैतीनां

युजेने युजस्य दक्षिणामिदक्षिणानां ब्राह्मणेने ब्राह्मणस्य छन्दोमिश्छन्देसा इ

-स्वाध्यायेनापेहतपाप्ना स्वाध्यायो देवपीवित्रं वा पृतत्तं योऽनूष्मुजत्यभागो

वाचि पेवत्यभौगो नाके तदेषाऽभ्युक्ता। यस्तित्याजं सखिविद् स्बायं न तस्यं वाच्यपि भागो अस्ति। यदीरं शृणोत्युलकरं शृणोति न हि प्रवेदं

मुकुतस्य पन्थामिति तस्माध्स्वाध्यायोऽध्येत्व्यो यं कृतुमधीते तेन तेनास्येष्ट

मेनत्युग्नेर्वायोरोदित्यस्य सायुज्यं गच्छति तदेषाऽभ्युक्ता। ये अवद्धित वां पुराणे

सखायं न

बुदं बिद्वा॰संमुमितों बदन्त्यादित्यमेव ते परिंबदन्ति सर्वे आभ्रें द्वितीयं तृतीयं च

629

680

द्वितीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

हु×्समिति यावेतीवै देवतास्ताः सर्वा वेद्विदि ब्राह्मणे वेसन्ति तस्मौद्वाह्मणेभ्यों वेद्विस्यों दिवे दिवे नमेस्कुर्यात्राक्षोलं कीतियेदेता एव देवताः प्रीणाति॥१९॥

5° ≈ |

रिच्यंत इव वा एष प्रेव रिच्यते यो याजयंति प्रति वा गृह्णाति याजयित्वा प्रतिगृह्य वाऽनेश्रिश्चः स्वाध्यायं वेदमधीयीत त्रिग्नं वा सावित्रीं गांयत्रीम्न्वातिरेचयति वर्गे दक्षिणा वरेणेव वर्षं स्पुणोत्यात्मा हि वरंः॥२०॥

\( \varphi \)

दुहे ह वा एष छन्दार्शिस यो याजयीते स येनं यज्ञकतुनां याजयेथ्सोऽरंण्यं प्रेत्यं शुचौ देशे स्वाध्यायमेवेनमधीयत्रासीत तस्यानशंनं दीक्षा स्थानमुपसद आसंनर सुत्या वाग्जुहर्मनं उपमृद्धितिधुंवा प्राणो हविः सामाष्ट्ययुः स वा एष यज्ञः प्राणदिक्षिणोऽनंन्तदिक्षिणः समृद्धतरः॥२१॥

681 कृतिघावकीर्णी प्रविशति चतुर्धेत्याहब्रह्मवादिनो मुरुतः प्राणैरिन्द्रं बलेन द्वितीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

मोऽऽसिश्चन्तु मुरुतः समिन्द्रः सं बृहस्यतिः। सं माऽयमुग्नः सिश्चत्वायुषा च बलेन् चाऽऽयुष्पन्तं करोत् मिति प्रति हास्मै मुरुतः प्राणान्देयति प्रतीन्द्रो बलं प्रति बृहस्पतिब्रह्मवर्चसं प्रत्यग्निरितर्थ्सर्वे सर्वतनुर्भत्वा सर्वमायुरेति त्रिर्भिमंत्रयेत् त्रिषेत्या हि देवा योऽपूत इव मन्येत स इत्थं जुहुयादित्थमभिमंत्रयेत पुनीत पृवाऽऽत्मानुमायुरेवाऽऽत्मन्येते वर्ो दक्षिणा वरेणेव वर्धं स्पुणोत्यात्मा हि

स्वाहा कामाभिद्रुग्धोऽस्म्यभिद्रुग्धोऽस्मि काम कामांय स्वाहेत्यमृतं वा आज्येममृतमेवाऽऽत्मन्येते हुत्वा प्रयंताञ्चलिः कवातिर्यङ्काग्रमभिमेत्रयेत सं

सुदेवः काँश्यपो यो ब्रह्मचार्यविकिरेदमावास्यायाङ् रात्यांमुछं प्रणीयोपसमाषाय

हुराज्यस्योप्घातं जुहोति कामावेकीर्णोऽस्म्यवेकीर्णोऽस्मि

बृहस्पतिं ब्रह्मवर्चसेनाग्रिमेवेतरेण सर्वेण तस्येतां प्रायिश्वितिं विदां

682

द्वितीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

भूः प्रपेद्ये भुवः प्रपेद्ये स्वेः प्रपेद्ये भूभृवः स्वेः प्रपेद्ये ब्रह्म प्रपेद्ये ब्रह्मकोशं प्रपेद्येऽमृतं प्रपेद्येऽमृतकोशं प्रपेद्ये चतुर्जालं ब्रह्मकोशं यं मृत्युनावपश्येति तं

कश्येपस्य यस्मै नम्स्तच्छिरो धर्मो मूर्धानं ब्रह्मोत्तंरा हनुर्यज्ञोऽधंरा विष्णुर्ह्रदंय संवध्सरः प्रजनंनमश्विनौ पूर्वपादांबित्रमध्यं मित्रावर्त्रणावपरपादांबिग्नः पुच्छंस्य प्रथमं काण्डं तत् इन्द्रस्ततंः प्रजापंतिरभंयं चतुर्थर स वा एष दिव्यः शांकरः शिशुंमार्स्तर ह य एवं वेदापं पुनर्मृत्युं जयिति जयिति स्वर्गं लोकं नाष्विने प्रमीयते नापस् प्रमीयते नाभौ प्रमीयते नानपत्यः प्रमीयते लघ्वात्रो भवति ध्रुवस्त्वमीसे

धुवस्य क्षितमसि त्वं भूतानामधिपतिरसि त्वं भूताना्ङ् श्रेष्ठोऽसि त्वां भूतान्युपे

प्यवितिन्ते नमेस्ते नम्ः सर्वं ते नमो नमेः शिशुकुमाराय् नमेः॥२३॥

प्रपंदो देवान् प्रपंदो देवपुरं प्रपंद्ये परीवृतो वरीवृतो ब्रह्मणा वर्मणाऽहं तेजंसा

683 नमः प्राच्यै दिशे याश्चे देवतां एतस्यां प्रतिवसन्त्येताभ्येश्च नमो नमो दक्षिणायै दिशे याश्चे देवतां एतस्यां प्रतिवसन्त्येताभ्यंश्च नमो नमः प्रतीच्ये ॐ नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वुग्रये नमेः पृथिव्यै नम् ओषंधीभ्यः। नमों बाचे गङ्गयमुनयोमुनिभ्यश्च नमो नमो गङ्गयमुनयोमुनिभ्यश्च नमः॥२४॥ नमो बाचस्पतंये नमो विष्णंवे बृहते केरोमि॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

## ॥ तृतीयः प्रश्नः॥

ॐ तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं यज्ञाये। गातुं यज्ञपंतये। देवीं: स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिमनुषेभ्यः। कुर्धं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शान्तिः थान्तिः शान्तिः॥

चित्तिः स्रुक्। चित्तमाज्यम्। वाग्वेदिः। आधीतं ब्र्हिः। केतो अभिः।

विज्ञांतम्भिः। वाक्पंतिर्होतां। मनं उपवृक्ता। प्राणो हविः। सामाध्वर्धुः। वार्चस्पते विधे नामन्। विधेमे ते नामे। विधेस्त्वम्स्माकं नामे। बा्चस्पतिः सोमं पिबतु।

आऽस्मासु नृम्णन्याध्स्वाहाँ॥१॥

अष्वर्षुः पश्चं च⊪

पृथिवी होता। द्यौरंध्वर्युः। कृद्रौऽग्रीत्। बृह्स्पतिंरुपवृक्ता। वार्चस्पते वा्चो

बीर्येण। सम्भुततमेनायक्ष्यसे। यजमानाय वार्यम्। आसुबस्करंस्मे। वाचस्पतिः सोमं पिबतु। जजन्दिन्द्रीमन्द्रियाय् स्वाहा॥२॥

685 अग्निर्होताँ। अश्विनाँऽप्वर्यू। त्वष्टाऽग्नीत्। मित्र उंपवक्ता। सोमः सोमंस्य गाः। शुक्रः शुकस्यं पुरोगाः। श्रातास्तं इन्द्र सोमाः। वातपिर्हवन्शुतः तृतीयः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्) पृथिंकी होता दर्शा⊫

पुरोगाः। शुक्रः शुकस्यं पुरोगाः। श्रातास्तं स्वाहा॥३॥ अभिहोताऽष्टो॥∎

<u>m</u> सूर्यं ते चक्षुंः। वातं प्राणः। द्यां पृष्ठम्। अन्तरिक्षमात्मा। अङ्गैंर्यज्ञम्। पृथिवी ॰ शरीरेः। वाचेस्पतेऽच्छिंद्रया वाचा। अच्छिंदया जुह्वा। दिवि देवाकुष॒॰ होत्रा मेर्यस्व स्वाहाँ॥४॥

मृहाहीविरहोता। सृत्यहीवरष्व्युः। अच्युतपाजा अग्नीत्। अच्युतमना उपवक्ता।

अनाधृष्यश्रीप्रतिधृष्यश्चे युजस्याभिग्रो। अयास्यं उद्घाता। वाचंस्पते हृद्विधे न्नम्। विधेमं ते नामं। विधेस्त्वम्स्माकं नामं। वाचस्पतिः सोमंमपात्। मा दैव्यस्तन्तुक्छेदि मा मंनुष्यंः। नमों दिवे। नमंः पृथिव्यै स्वाहाँ॥५॥

```
तृतीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)
```

989 वाग्घोतां। दाृक्षा पत्नीं। वाताँऽप्वृयुः। आपोऽभिग्रः। मनो हविः। तपीस

<u>พ</u> जुहोमि। भूर्भुवः सुवंः। ब्रह्मं स्वयम्भु। ब्रह्मणे स्वयम्भुवे स्वाहाँ॥६॥

ब्राह्मण एकेहोता। स यज्ञः। स में ददातु प्रजां पृश्नुन्पुष्टिं यशंः। यज्ञश्चे मे भूयात्। अग्निर्द्विहोता। स भृतां। स में ददातु प्रजां पृश्नुनुष्टिं यशंः। भृतां चे मे

वाग्घोता॒ नवं॥∎

मूयात्। पृथिवी त्रिहोता। स प्रतिष्ठा॥७॥

स में ददातु प्रजां पश्चन्युष्टिं यशंः। प्रतिष्ठा चं मे भूयात्। अन्तरिक्षं चतुंरहोता। स विष्ठाः। स में ददातु प्रजां पश्चन्युष्टिं यशंः। विष्ठाश्चं मे भूयात्। वायुः पश्चेहोता। स प्राणः। स में ददातु प्रजां पृश्चन्युष्टिं यशंः। प्राणश्चं मे भूयात्॥८॥

चन्द्रमाः षड्डोता। स ऋतून्केल्पयाति। स में ददातु प्रजां पृश्नुन्पुष्टिं यशेः। ऋतवेश्च मे कल्पन्ताम्। अन्नर्श्नमहोता। स प्राणस्यं प्राणः। स में ददातु प्रजां पृश्नुन्पुष्टिं यशेः। प्राणस्यं च मे प्राणो भूयात्। द्यौर्ष्टहोता। सोऽनाधृष्यः॥९॥

687 स में ददातु प्रजां पशून्युष्टिं यशेः। अनाधृष्यक्षं भूयासम्। आदित्यो नवेहोता। स तेजस्वी। स में ददातु प्रजां पशून्युष्टिं यशेः। तेजस्वी चे भूयासम्। तृतीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

प्रजापेतिर्दशहोता। स इद॰ सर्वम्। स में ददातु प्रजां पृश्रून्पुष्टिं यशः। सर्वं च

में भूयात्॥१०॥

प्रतिष्ठा प्राणक्षं मे भूयादनाधृष्यः सर्वं च मे भूयात्॥■

अग्निर्यज्ञीर्भेः। सविता स्तोर्मैः। इन्द्रं उक्थामदैः। मित्रावरुणावाशिषाै। अङ्गिरसो यिष्णियेरग्रिभिः। मरुतेः सदोहविर्धानाभ्याम्। आप्ः प्रोक्षणीभिः। ओषंघयो बुर्हिषाै। अदितिर्वेद्याै। सोमो दाक्षयाँ॥११॥

त्वष्टेध्मेनं। विष्णुंर्यज्ञेनं। वसंव आज्येन। आदित्या दक्षिणाभिः। विश्वे देवा ऊर्जा। पूषा स्वेगाकारेणे। बृहस्पतिः पुरोधयाँ। प्रजापीतिरुद्दोधेनं। अन्तरिक्षं पवित्रेण। वायुः पात्रैः। अहङ् श्रद्धयां॥१२॥ दोक्षया पात्रेरकं च॥🕳

688 तृतीयः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)

सेनेन्द्रंस्य। धेना बृह्स्पतैः। पृत्थ्यां पूष्णः। बाग्बायोः। दीक्षा सोमंस्य। थुव्येग्नः। वसूनां गायत्री। क्द्राणां त्रिष्टक्। आदित्यानां जगती। ा्थिव्योग्रेः। वसूनां -

विष्णोरनुष्टक्॥१३॥

वर्षणस्य विराट्। यज्ञस्यं पङ्काः। प्रजापंतेरनुमतिः। मित्रस्यं श्रद्धा। सवितुः प्रसूतिः। सूर्यस्य मरीचिः। चन्द्रमंसो रोहिणी। ऋषीणामरुन्यती। पर्जन्यस्य विद्युत्। वर्तस्रो दिशः। वर्तस्रोऽवान्तरदिशाः। अहंश्च रात्रिश्च। कृषिश्च वृष्टिश्च।

क्विषिश्वापीचितिश्व। आपृश्वौषेधयश्व। ऊर्क सूनृतां च देवानां पत्नेयः॥१४॥

अनुष्टुग्दिशः षद्गाः——

देवस्यं त्वा सवितुः प्रंस्वे। अश्विनौबंहुभ्याँम्। पूष्णो हस्ताँभ्यां प्रतिंगृह्णामि। राजाँ त्वा वर्रणो नयतु देवि दक्षिणेऽभ्रये हिरंण्यम्। तेनांमृतत्वमंश्याम्। वयों दात्रे। मयो मह्यमस्तु प्रतिभ्रहीत्रे। क इदं कस्मां अदात्। कामः कामाय। कामो

एषा ते काम दक्षिणा। <u>उ</u>त्तानस्त्वाँङ्गीर्सः प्रतिंगृह्वातु। सोमांय वासंः। क्द्राय गाम्। वर्षणायाश्वम्। प्रजापंतये पुरुषम्॥१६॥ कामंः प्रतिग्रहोता। काम ५ समुद्रमाविशा कामेन त्वा प्रतिगृह्णामि। कामैतते। तृतीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

मनेवे तल्पम्। त्वष्ट्रेऽजाम्। पूष्णेऽविम्। निर्ऋत्या अश्वतरगर्दभौ। हिमवेतो हुस्तिनम्। गुन्धुबापस्याभ्यः स्रगलं कर्णे। विश्वैभ्यो देवेभ्यो धान्यम्। बाचेऽन्नम्॥ -ब्रह्मेण ओद्नम्। स्मुद्रायापंः॥१७॥

उत्तानायाक्षीरसायानेः। वैश्वानराय रथम्। वैश्वानरः प्रलथा नाकमारुहत्। दिवः पृष्ठं भन्देमानः सुमन्मेभिः। स पूर्वेवज्ञनयेज्ञन्तवे धनम्। समानमेज्मा परियाति जागृविः। राजा व्यं वर्ठणो नयतु देवि दक्षिणे वैश्वानराय रथम्। तेनांमृत्त्वमंश्याम्। वयो दात्रा मयो मह्यंमस्तु प्रतिग्रहीत्रे॥१८॥

क इदं कस्मो अदात्। काम्ः कामाया कामो दाता। कामेः प्रतिग्रहीता।

काम ५ समुद्रमा विशा कामेन त्वा प्रतिगृह्णामि। कामैतत्तै। पृषा ते काम् दक्षिणा।

उत्तानस्त्वाङ्गीयसः प्रतिगृह्णातु॥१९॥

दाता पुरुष्मपः प्रतिश्रहोत्रे नवं च॥🕳

सुवर्णं घुमै परिवेद वेनम्। इन्द्रेस्यात्मानं दश्घा चरंन्तम्। अन्तः संमुद्रे

मनेसा चरेन्तम्। ब्रह्मान्वेविन्दद्दशेहोतार्मणै। अन्तः प्रविष्टः शा्स्ता जनानाम्।

एकः सन्बंहुधा विचारः। श्रृतः शुक्राणि यत्रेकं भवीत्त। सर्वे वेदा यत्रेकं भवीत्त। सर्वे होतांरो यत्रेकं भवेत्ति। समानंसीन आत्मा जनानाम्॥२०॥

अन्तः प्रविष्टः शास्ता जनाना॰ सर्वात्मा। सर्वाः प्रजा यत्रेकं भवन्ति। चतुरहोतारो यत्रे सम्पदं गच्छेन्ति देवैः। समानेसीन आत्मा जनानाम्। ब्रह्मेन्द्रेमुभि

क्कपम्। बाचो बोर्यं तपुसाऽन्वंविन्दत्। अन्तः प्रविष्टं कृतरिंमेतम्। त्वष्टांर ५ कृपाणि

विकुर्वन्तं विपश्चिम्॥२१॥

अमृतंस्य प्राणं यज्ञमेतम्। चतुंर्होतुणामात्मानं कवयो निर्चिक्युः। अन्तः प्रविष्टं कृतींरमेतम्। देवानां बन्यु निहितं गुहांसु। अमृतेन क्कुपं यज्ञमेतम्। 691 पश्चेहोता। अमृतं देवानामायुंः रंश्मीनां मध्ये तपंन्तम्। ऋतस्यं पदे कवयो निपान्ति। य आण्डकोशे भुवेनं बिभिति। अनिर्मिण्णः सन्नथं लोकान् विचष्टै। यस्याण्डकोशः शुष्मेमाहः प्राणमुल्बम्। तेनं क्कप्तोऽमृतेनाहमेस्मि। सुवर्णं कोशः रजंसा परीवृतम्। देवानां वसुधानीं इन्द्र×् राजांन× सवितारमेतम्। वायोरात्मानं कृवयो निर्चिक्युः। रशिम× चतुंरहोतृणामात्मानं कृवयो निचिक्युः। शृतं नियुतः परिवेद् विश्वां विश्ववांरः। इन्द्रस्यात्मा निहितः तृतीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्) विश्वमिदं वृणाति। प्रजानाम्॥२२॥

अमृतेस्य पूर्णान्तामुं कृलां विचेक्षते। पाद्र् षङ्घोतुर्म किलांविविध्से। येनृतेवेः

विराजम्॥२३॥

पश्चयोत क्रुपाः। उत वां षुद्धा मनुसोत क्रुपाः। त॰ षड्घोतारमृतुभिः कल्पेमानम्।

क्तस्यं पुदे कृषयो निपान्ति। अन्तः प्रविष्टं कृतरिंमेतम्। अन्तश्चन्द्रमिस् मनंसा वरंन्तम्। सृहेव सन्तुं न विजानन्ति देवाः। इन्द्रंस्यात्मान् शतया वरंन्तम्॥२४॥ तृतीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

इन्द्रो राजा जगेतो य ईशौ। सप्तहोता सप्तथा विक्रेप्तः। परेण तन्तुं परिषिच्यमोनम्। अन्तरोदित्ये मनेसा चरेन्तम्। देवाना॰ हृदेयं ब्रह्मान्वेविन्दत्। ब्रह्मेतद्व्रह्मेण् उज्जेभार। अर्केश् श्रोतेन्तेश् सरिरस्य मध्यै। आ यस्मिन्थ्मप्त पेरवः। मेहन्ति बहुलाश् श्रियम्। बृह्यामिन्द्र गोमंतीम्॥२५॥

अच्युंतां बहुलाङ् श्रियम्। स हरिवंसुवित्तमः। पे्रुरिन्द्राय पिन्वते। बृह् श्वामिन्द् गोमंतीम्। अच्युतां बहुलाङ् श्रियम्। मह्यमिन्द्रो नियंच्छतु। शृत श्राता अस्य युक्ता हरीणाम्। अर्वाङा यांतु वसुभी र्शिमरिन्द्रं। प्रमश्हेमाणो बहुलाङ् श्रियम्॥

र् रश्मिरिन्द्रः सविता मे नियेच्छतु॥२६॥

घृतं तेजो मधुमदिन्द्रियम्। मय्ययमुप्रिद्धातु। हिर्पः पतृङ्गः पट्री सुपर्णः। दिबिक्षयो नर्भसा य एति। स न इन्द्रं कामब्रं देदातु। पश्चारं च्रं परिवर्तते

693 तृतीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

पृथु। हिरंण्यज्योतिः सरिरस्य मध्यै। अजम्बं ज्योतिनभंसा सपेदेति। स न इन्द्रं ऽऽ कामवरं दंदातु। सृप्त युंअन्ति रथमेकेचकम्॥२७॥

एको अश्वो वहति सप्तनामा। त्रिनाभि चक्रमजर्मनंबम्। येनेमा विश्वा भुवेनानि तस्थुः। भुद्रं पश्येन्तु उपेसेदुरग्रे"। तपो दीक्षामुषेयः सुवविदः। ततेः क्षत्रं बलुमोजिश्व जातम्। तद्स्मै देवा अभि सन्नमन्तु। श्रेत॰ र्शिमं बोभुज्यमानम्। अपां नेतारं

भुवंनस्य गोपाम्। इन्द्रं निचिक्युः पर्मे व्योमन्॥२८॥

रोहिणीः पिङ्गला एकेरूपाः। क्षरंन्तीः पिङ्गला एकेरूपाः। शृत\* सृहस्राणि

पश्नस्यनांनि। अस्माकं ददातु। श्वेतो रश्मिः परि सर्वं बभूव। सुवन्मह्यं पृश्नन् वेश्वस्त्पान। पत्रङ्गक्तमानेनाम् स्वत्ताः प्रयुतानि नाव्यानाम्। अयं यः श्रेतो रश्मिः। परि सर्वमिदं जर्गत्। प्रजां

ावेश्वरूपान्। पृतृङ्मुक्तमसुरस्य माययां॥२९॥

हृदा पंश्यन्ति मनेसा मनीषिणंः। समुद्रे अन्तः कृवयो विचेक्षते। मरीचीनां पृदमिच्छन्ति वेथसंः। पृतृङ्गो वाच् मनेसा बिभर्ति। तां गन्युवोऽवदृद्गे अन्तः।

तां द्योतेमानाङ् स्वर्षं मनीषाम्। ऋतस्यं पदे कवयो निपाँन्ति। ये ग्राम्याः पृशवो विश्वरूपाः। विरूपाः सन्ते बहुपैकेरूपाः। अग्रिस्ता॰ अग्रे प्रमुमोक्तु देवः॥३०॥

प्रजापेतिः प्रजयो संविदानः। वीतः स्तुकेस्तुके। युवमस्मासु नियंच्छतम्। प्र प्रे यज्ञपेतिनिर। ये ग्राम्याः पृशवो विश्वक्ष्पाः। विक्ष्पाः सन्तो बहुयैकेरूपाः।

तेषार् सप्तानामिह रन्तिरस्तु। रायस्पोषांय सुप्रजास्त्वायं सुवीर्याया आंरण्याः पृशवो विश्वरूपाः। विरूपाः सन्तो बहुधैकेरूपाः। वायुस्तार अग्रे प्रमुमोक्त देवः।

आ़ल्मा जनांनां विकुर्वन्तं विपक्षिं प्रजानां वसुधानीं विराजं चरेन्तं गोमंतीं मे नियंच्छुत्वेकेचक्रं व्योमन्माययां देव एकेरूपा

सप्तानामिह रन्तिंरस्तु। रायस्योषांय सुप्रजास्त्वायं सुबीर्याय॥३१॥

~ T

सृहस्राक्षः सृहस्रोपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा।

सृहसंशीर्षा पुरुषः।

प्रजापेतिः प्रजयो संविदानः। इडाेयै सुप्तं घृतवेचराचरम्। देवा अन्वेविन्दन्गुहां हितम्। य आंर्ण्याः पृशवो विश्वरूपाः। विरूपाः सन्तो बहुपैकेरूपाः। तेषा ५

695 तृतीयः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)

अत्येतिष्ठदृशाङ्गुलम्। पुरुष पुवेद॰ सर्वम्। यद्भुतं यच् भव्यम्। उतामृत्त्वस्येशांनः।

यदत्रेनातिरोहीते। पुतावानस्य महिमा। अतो ज्यायारंश्च पूर्षषः॥३२॥

पादौऽस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादंस्यामृतं दिवि। त्रिपादूर्घं उदैत्पुरुषः। पादौऽस्येहामेवात्पुनः। ततो विष्वुङ्घोकामत्। साशुनानुशुने अभि। तस्मीद्विराडंजायत विराजो अधि पूर्षाः। स जातो अत्यीरच्यत। पृक्षाद्भमिषों पुरः॥३३॥

यत्पुरुषेण हविषां। देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यम्। ग्रोष्म इष्मः शुरद्धविः। सप्तास्यांसन्परिययः। त्रिः सप्त समिषेः कृताः। देवा यद्यज्ञं तेन्वानाः। अवध्रन्पुरुषं पशुम्। तं यज्ञं बर्शहिषि प्रोक्षन्। पुरुषं जातमेग्रतः॥३४॥ सम्भेतं पृषदाज्यम्। पृश्क्र्स्ताक्ष्यंक्रे वायव्यान्। आरण्यान्यास्य ये। तस्मौद्यज्ञाथ्सर्वेहुतः। ऋचः सामोनि जजिरे। छन्दार्धसे जजिरे तस्मौत्। देवा अयेजन्ता साष्या ऋषेयश्च ये। तस्मांद्यज्ञाथ्संर्वेहुतंः।

यजुस्तस्मादजायत॥ ३५॥

अंजावयः। यत्पुरुषुं व्यंदधुः। कृतिषा व्यंकल्पयन्। मुख्ं किमंस्यु को बाहू। काबूरू पादांबुच्येते। ब्राह्मणौऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांज्न्यः कृतः॥३६॥

ऊरू तदेस्य यद्देश्यः। पुद्धाः शूद्रो अजायत। चुन्द्रमा मनेसो जातः। चक्षोः सूयों अजायता मुखादिन्द्रश्चाग्निश्चा प्राणाद्वायुरंजायता नाभ्यां आसीद्न्तरिक्षम्।

शोष्णों द्योः समेवर्तत। पुन्द्यां भूमिदिशः श्रोत्रौत्। तथां लोकार अंकत्पयन्॥३७॥

वेदाहमेतं पुरुषं मृहान्तम्। आदित्यवंर्णं तमंसुस्तु पारे। सर्वाणि रूपाणि

विचित्य धीरंः। नामांनि कृत्वाऽभिवद्न् यदास्तै। धाता पुरस्ताद्यमुदाज्हारं। श्रकः प्रविद्वान्यदिश्क्षतेस्रः। तमेवं विद्वान्मृतं इह भेवति। नान्यः पन्या अयेनाय विद्यते। युज्ञेने युज्ञमेयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथुमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानंः

सचन्ते। यत्रु पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥३८॥

पूर्षेषः पुरोऽयृतोऽजायत कृतोऽकल्पयत्रासं द्वे चं (ज्यायानिषे पूर्षषः। अन्यत्र पुर्षषः॥)॥■

आतेपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यों जातः। नमों रुचाय ब्राह्मये। रुचे ब्राह्मं जनयेन्तः। देवा अभे तदंबुवन्। यस्त्वेवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्ये देवा असन्वशें। हीश्चे ते लक्ष्मीश्च पत्यौं। अहोरात्रे पार्खे। नक्षेत्राणि रूपम्। अश्विनो अद्धाः सम्भूतः पृथिव्यै रसाँचा विश्वकेर्मणः समेवर्ततार्धि। तस्य त्वष्टां विद्धेद्रुपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रे। वेदाहमेतं पुरुषं मृहान्तम्। जादित्यवर्णं तमेसः परंस्तात्। तमेवं विद्वानमृतं इहं मेवति। नान्यः पन्थां विद्यतेऽयेनाय। प्रजापेतिश्वरति गर्भे अन्तः। अजायेमानो बहुधा विजायते॥३९॥ तस्य धीराः परिजाननि योनिम्। मरीचीनां प्दमिच्छन्ति वेधसंः। यो देवेभ्य व्यातम्। हुष्टं मीनेषाण। अुमुं मीनेषाण। सर्वं मनिषाण॥४०॥ जायते वशे सप चं॥—

भर्ता सन्भियमाणो बिभर्ति। एको देवो बंहुधा निविष्टः। युदा भारं तुन्द्रयंते

स भर्तुम्। निषाये भारं पुनरस्तेमेति। तमेव मृत्युममृतं तमोहः। तं भृतरिं तमु

गोप्तारंमाहुः। स भृतो भ्रियमोणो बिभर्ति। य एंनुं वेदं सृत्येनु भर्तुम्। सृद्यो जातमुत जेहात्येषः। उतो जरंन्तुं न जेहात्येकम्॥४१॥ तृतीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

उुतो बृहूनेकुमहेर्जहार। अतेन्द्रो देवः सदेमेव प्रार्थः। यस्तद्वेद् यते आबुभूवे

सुन्यां च् या॰ सन्दुषे ब्रह्मणेषः। रमेते तस्मिन्नुत जीणे शयोने। नैनं जहात्यहंः

सु पूर्व्येषुं। त्वामापो अनु सर्वाश्चरन्ति जानृतीः। वृथ्सं पर्यसा पुनानाः। त्वमृग्नि॰ हेव्युवाहु॰् सिमैन्थ्से। त्वं मृती मोतृरिश्वौ प्रजानौम्॥४२॥

त्वं यज्ञस्त्वमुंवेवासि सोमंः। तवं देवा हवमायन्ति सर्वे। त्वमेकोऽसि

बृहूननुप्रविष्टः। नर्मस्ते अस्तु सुहवो म एथि। नमो वामस्तु श्रुणुत् १ हवं मे। प्राणापानावजिर स्भ्यरन्तो। ह्यामि वां ब्रह्मणा तूर्तमेतम्। यो मां द्वेष्टि तं जिहितं

युवाना। प्राणांपानौ संविदानौ जंहितम्। अमुष्यासुनामा सङ्ग्साथाम्॥४३॥

तं में देवा ब्रह्मणा संविदानौ। वृधायं दन्ं तमृह<sup>ू</sup> हंनामि। असंज्ञजान सत आबेभूव। यं यं जुजानु स उं गोपो अस्य। युदा भारं तुन्द्रयेते स भर्तुमैं।

प्रास्यं भारं पुन्रस्तमिति। तद्वे त्वं प्राणो अभवः। मृहान्नोगंः प्रजापेतेः। भुजंः करिष्यमाणः। यद्देवान्प्राणेयो नवं॥४४॥

एकै प्रजानाक्ष्माथां नव॥\_

हरि<u>र हर्गन्तमनुयन्ति देवाः। विश्वस्येशानं वृष</u>भं मंतीनाम्। ब्रह्म सर्रूपमनुमेदमागौत्। अर्यन् मा विवर्धोर्विक्षेमस्व। मा छिदो मृत्यो मा

वेधीः। मा<sup>ं</sup>मे बलं विवृहो मा प्रमोषीः। प्रजां मा में रीरिष आयुंरुग्रा नृचक्षेसं त्वा ह्विषां विधेम। सुद्यश्लेकमानाये। प्रवेषानायं मृत्यवे॥४५॥

प्रास्मा आशां अश्रुण्वन्। कामेनाजनयन्युनंः। कामेन मे काम आगाँत्। हदयाद्धदेयं मृत्योः। यदमीषांमदः प्रियम्। तदैतूपमामिभे। परं मृत्यो अनु परेहि पन्थाँम्। यस्ते स्व इतिरो देव्यानाँत्। चक्षुष्मते श्रुण्वते ते ब्रवीमि। मा नेः प्रजार

रोरिषो मोत बोरान्। प्र पूर्व्यं मनेसा बन्दंमानः। नाधंमानो बृष्भं चंर्षणीनाम्। यः प्रजानांमेक्राण्मानुषीणांम्। मृत्युं यंजे प्रथम्जामृतस्यं॥४६॥

मृत्यवे वारा श्र्यत्वारि च॥

| तृतीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय 3 | प्रारण्यकम्) |              |           |               |          |         |             |      | 700     |
|-----------------------------|--------------|--------------|-----------|---------------|----------|---------|-------------|------|---------|
| त्रीणेविश्वदंशत             | न ज्योति     | म्योतिष्कृदी | <b>₽</b>  | <u>त</u><br>स | <u> </u> | वेश्वमा | म्यास       |      | रोचनम्। |
| उपयामग्रीहोतो तम            | मयीय         | 5            | भार्मस्वत |               | 7        | ∕t⊂     | एष ते योतिः | मयीय | 5       |

֝֝֝֝֝֝֝֝֝֝֝֝֝֝֝֝֝֝֝֝֡֝֝֝֡֝֝֡֝֡֝֡֝֡֝֝֡֡֝֝֡֡֝֡֡֝ ファンラス <u>5</u> 5 5 उपथामगुहाताजा भाजस्वते॥४७॥

आ प्यांयस्व मदिन्तम् सोम् विश्वांभिक्तिभिंः। भवां नः स्प्रथंस्तमः॥४८॥

[の | |-| **-**

<u>ई</u>युष्टे ये पूर्वतरामपंश्यन् व्युच्छन्तीमुषस्ं मत्यीसः। अस्माभिक् नु

\ \<u>\</u> प्रतिचक्ष्यांऽभूदो ते यन्ति ये अप्रीषु पश्यान्॥४९॥

सादयामि दीप्येमानां त्वा सादयामि रोचेमानां त्वा सादयाम्यजेम्नां त्वा सादयामि ज्योतिष्मतीं त्वा सादयामि ज्योतिष्कृतं त्वा सादयामि ज्योतिर्विदं त्वा सादयामि भास्वेतीं त्वा सादयामि ज्वलेन्तीं त्वा सादयामि मल्मलाभवंन्तीं त्वा

| 701        |
|------------|
|            |
|            |
|            |
|            |
|            |
|            |
|            |
|            |
| आरण्यकम्)  |
| (तैत्तिरीय |
| ᅺᄽᆧ        |
| तृतीयः     |

बृहज्योतिषं त्वा सादयामि बोधयंन्तीं त्वा सादयामि जाग्रेतीं त्वा सादयामि॥५०॥

|  | प्रयासाय स्वाहोऽऽयासाय स्वाहो वियासाय स्वाहो संयासाय स्वाहोद्यासाय<br>स्वाहोऽवयासाय स्वाहो शुचे स्वाहा शोकाय स्वाहो तप्यत्वे स्वाहा तपेते स्वाहाँ |  |
|--|---|--|
|--|---|--|

ब्रह्महुत्याये स्वाहा सर्वस्मे स्वाहा॥५१॥

် (၁) स्थूलहृद्येनाग्नि ॰

पाँर्अनोषिष्ठहन<sup>ङ्</sup>

~ ~ तच्छुं योरावृणीमहे। गातुं युज्ञाये। गातुं युज्ञपंतये। दैवींः स्वस्तिरंस्तु नः। चित्तर सन्तानेन भवं यक्रा रुद्रन्तनिम्ना पशुपति इं हद्येन रुद्रं लोहितेन शुर्वं मतंस्नाभ्यां महादेवम्न्तः शिक्नीनिकोश्याभ्याम्॥५२॥

स्वस्तिमनुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेष्जम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ तृतीयः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

नमों बाचे या चोदिता या चानुदिता तस्यै बाचे नमो नमों बाचे नमो ॥ चतुर्थेः प्रश्नः॥

ग्चस्पतंये नम् ऋषिभ्यो मञ्रुकृद्धो मञ्नपितिभ्यो मा मामुषयो मञ्जकृतो मञ्चपतंयः

-गरोदुमहिमृषीन्मत्रकृतो मत्रुपतीन्यरोदां वैश्वदेवीं वाचेमुद्यास<sup>ू</sup> शिवामदेस्तां जुष्टों

देकेयुः शर्म मे द्योः शर्म पृथिवी शर्म विश्वमिदं जगत्। शर्म चन्द्रश्च सूर्यश्च

- न शर्म ब्रह्मप्रजापुती। भूतं वीदष्ये भुवेनं विदष्ये तेजो विदष्ये यशो विदष्ये तपो विदिष्ये ब्रह्मं विदिष्ये सुत्यं विदिष्ये तस्मो अहमिदमुपुस्तरंणमुपेस्तुण उपस्तरंणं मे

प्रजायै पश्नां भूयादुप्स्तरंणम्हं प्रजायै पश्नां भूयासं प्राणांपानौ मृत्योमां पातं प्राणांपानौ मा मां हासिष्टं मधुं मनित्ये मधुं जनित्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं वदित्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वार्चमुद्यासः शुश्रूषेण्यां मनुत्यैभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभाये

नमों बाचे या चोंदिता या चानुदिता तस्यै बाचे नमों नमों बाचे नमों

पितरोऽनुमदन्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

703

704 प्रजायै पशूनां भूयादुप्स्तरंणमहं प्रजायै पशूनां भूयासं प्राणांपानौ मृत्योमां पातं प्राणांपानौ मा मां हासिष्टं मधुं मनित्ये मधुं जनित्ये मधुं बक्ष्यामि मधुं बदित्यामि मधुमतीं देवेभ्यो वार्चमुद्यासः शुश्रूषेण्यां मनुष्यैभ्यस्तं मां देवा अंवन्तु शोभायै शर्म ब्रह्मप्रजापुती। भूतं वीदष्ये भुवेनं विदष्ये तेजों विदष्ये यशों विदष्ये तपों विदिष्ये ब्रह्मे विदिष्ये सृत्यं विदिष्ये तस्मो अृहमिदमुप्स्तरंणमुपेस्तुण उपस्तरंणं मे देवेन्यः शर्म मे द्योः शर्म पृथिवी शर्म विश्वमिदं जगेत्। शर्म चन्द्रश्च सूर्यश्च परोदुमहिमृषीन्मत्रुकृतो मत्रुपतोन्परोदां वैश्वदेवीं वाचेमुद्यास॰ शिवामदेस्तां जुष्टां वाचस्पतंये नम् ऋषिभ्यो मत्रुकृद्धो मत्रपितिभ्यो मा मामुषेयो मत्रुकृतो मत्रुपतंयु चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्) प्तिरोऽनुमदन्तु॥१॥

युअते मनं उत युअते धियः। विप्रा विप्रंस्य बृह्तो विपश्चितं। वि होत्रो दधे वयुनाविदेक् इत्। मृही देवस्यं सिवृतुः परिष्टृतिः। देवस्यं त्वा सिवृतुः प्रंसुवे।

705 अश्विनौबाहुन्याम्। पूष्णो हस्तान्यामादंदे। अभिरस् नारिरसि। अष्वरकुद्देवेन्यः

देवयन्तंस्त्वेमहे। उपु प्रयंन्तु मुरुतः सुदानंवः। इन्द्रं प्राशूर्भवा सचा। प्रेतु

उतिष्ट ब्रह्मणस्पते॥२॥

-ब्रह्मण्स्पतिः। प्र देव्येतु सूनृताः। अच्छा वारं नर्यं पृङ्किरांधसम्। देवा युज्ञं नंयन्तु

नः। देवीं द्यावापृथिवीं अनुं मे म॰साथाम्। ऋद्यासंमुद्य। मुखस्यु शिरंः॥३॥

मुखायं त्वा। मुखस्यं त्वा शीर्ष्णो। इयुत्यग्रं आसीः। ऋद्यासंमुद्या मुखस्य

मखाये त्वा। मखस्ये त्वा शीर्ष्णो। इन्द्रस्यौजोऽसि। ऋद्यासंमद्य। मखस्य शिरंः। मुखाये त्वा। मुखस्ये त्वा शोृर्ष्णो। अग्रिजा असि प्रजापेते रेतेः। शिरंः। मुखाये त्वा। मुखस्ये त्वा शोर्ष्णो। देवीविम्रीरुस्य भूतस्ये प्रथमजा ऋतावरीः। क्छासंम्दा मुखस्य शिरं:॥४॥

क्छासंम्दा मुखस्य शिरं॥५॥

मुखाये त्वा। मुखस्ये त्वा शोृर्ष्णो। आयुर्धेहि प्राणं धेहि। अपानं धेहि व्यानं

90/

धेहि। चक्षुर्धिह् श्रोत्रं धिहि। मनो धिह् वाचं धिहि। आत्मानं धिह प्रतिष्ठां धेहि। मां धेहि मधि धेहि। मधु त्वा मधुला केरोतु। मुखस्य शिरोऽसि॥६॥ चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

जागेतेन त्वा छन्देसा करोमि। मुखस्य रास्नोऽसि। अदितिस्ते बिलं गृह्वातु। पाङ्गेन् युज्ञस्यं पुदे स्थंः। गायुत्रेणं त्वा छन्दंसा करोमि। त्रैष्टुंभेन त्वा छन्दंसा करोमि।

पुते शिरं ऋतावरीर्ऋद्यासंमुद्य मुखस्य शिर्ः शिर्ः शिरोऽसि नवं च॥🕳 छन्देसा। सूर्येस्य हरंसा श्राय। मुखोऽसि॥७॥

वृष्णो अर्श्वस्य निष्पदंसि। वर्रणस्त्वा धृतव्रंत आर्थ्पयतु। मित्रावर्रणयोधुवेण्

धर्मणा। अर्चिषै त्वा। शोचिषै त्वा। ज्योतिषे त्वा। तपेसे त्वा। अभीमं मीहेना दिवम्। मित्रो बेभूव सप्रथाः। उत श्रवंसा पृथिवीम्॥८॥

मित्रस्यं चर्षणीप्रुतः। श्रवीं देवस्यं सानुसिम्। द्युम्नं चित्रश्रंवस्तमम्। सिध्यैं

त्वा। देवस्त्वां सर्वितोद्वेपतु। सुपाणिः स्वंङ्गिरः। सुबाहुरुत शक्त्या। अपंद्यमानः गृथिव्याम्। आशा दिश् आ पृंण। उत्तिष्ठ बृहन्मेव॥९॥

सुक्षित्यै त्वा भूत्यै त्वा। इदमहममुमांमुष्यायुणं विशा पशुभिष्र्रह्मवर्चसेन पर्यूहामि। गायुत्रेणे त्वा छन्दुसाऽऽच्छुणिद्या त्रेष्ट्रेभेन त्वा छन्दुसाऽऽच्छुणिद्या जागेतेन त्वा कुर्वस्तिष्ठख्रुवस्त्वम्। सूर्यस्य त्वा चक्षुषाऽन्वीक्षे। ऋजवै त्वा। साधवै त्वा।

<u>m</u> वाचम्। छुन्यूर्जम्। छुन्यि हुबिः। देवं पुरश्चर सुग्ध्यासं त्वा॥१०॥ पृथिवीं भेव वाख्यद्वी।—

ट्ट्साऽऽच्छृणाद्ये। छुणतुं त्वा वाक्। छुणतुं त्वोक्। छुणतुं त्वा हविः। छुन्धि

ब्रह्मेन् प्रवग्येण प्रचीरेष्यामः। होतंर्घर्ममभिष्टेहि। अग्रीद्रौहिणौ पुरोडाशाविधेश्रय। प्रतिप्रस्थात्रिहिरा प्रस्तोतः सामोनि गाय। यजुर्युक् सामेमिराकेखन्वा।

मरुद्धिः। दक्षिणाभिः प्रतंतं पारयिष्णुम्। स्तुभो वहन्तु विश्वेदवैरनुमतं

स नो रुचं घेह्यहंणीयमानः। भूभृंवः सुवंः। ओमिन्द्रवन्तः सुमनस्यमानम्। प्रचरत॥११॥

 $\frac{\mathbb{Z}}{\mathbf{I}}$ अहंणीयमानो द्वे चं॥

708 ब्रह्म-प्रचीरष्यामः। होतंर्धर्ममिषेष्टेहि। यमायं त्वा मुखायं त्वा। सूर्यस्य हरंसे त्वा। प्राणाय स्वाहाँ व्यानाय स्वाहोऽपानाय स्वाहाँ। चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहाँ। मनेसे स्वाहो वाचे सरंस्वत्ये स्वाहाँ। दक्षाय स्वाहा क्रतंवे स्वाहाँ। ओजंसे स्वाहा इन्द्रस्याधिपत्ये। प्रजां में दाः। सुषदां पृक्षात्। देवस्यं सिवृतुराधिपत्ये। प्राणं में पृथिवीं तपंसस्नायस्व। अर्चिरीसे शोचिरीसे ज्योतिरिसे तपोऽिस। स॰सीदस्व मृहा॰ असि। शोचेस्व देव्वीतेमः। विधूममेग्ने अरूषं मियेष्य। सृज प्रेशस्तदर्शतम्। अञ्जन्ति यं प्रथयंन्तो न विप्राः। वपावेन्तं नाग्निना तपंन्तः। पितुर्न पुत्र उपसि प्रेष्ठः। आ घुर्मो अग्निमृतयंत्रसादीत्॥१३॥ अनाधृष्या पुरस्तात्। अग्नेराधिपत्ये। आयुर्मे दाः। पुत्रवंती दक्षिण्तः। बलांय स्वाहां। देवस्त्वां सविता मध्वांऽनक्ता।१२॥ चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम) दाः। आश्रृतिरुत्तरतः॥१४॥

मित्रावर्षणयोराधिपत्ये। श्रोत्रं मे दाः। विधैतिकृपरिष्टात्। बृह्स्पतेराधिपत्ये।

709

ब्रह्मं मे दाः क्षत्रं में दाः। तेजों मे धा वर्चों मे धाः। यशों मे धास्तपों मे धाः। मनों मे धाः। मनोरश्वोऽसि भूरिंपुत्रा। विश्वाैभ्यो मा नाष्ट्राभ्यः पाहि॥१५॥ सूप्सदो मे भूया मा मो हि॰सीः। तपोष्षेष्रे अन्तेरा॰ अमित्राने। चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

अयासः। चितः स्थ परिचितः। स्वाहां मुरुद्धिः परिश्रयस्व। मा असि। प्रमा ू-तपाशश्समर्कषः परस्य। तपावसो चिकितानो अचितान्। वि ते तिष्ठन्तामुजर्पा ।

तपंसस्रायस्व। आग्मिर्गीर्मिर्यदतो न ऊनम्। आप्यांयय हरिको वर्धमानः। यदा स्तोतुभ्यो महि गोत्रा रूजासि। भूयिष्टभाजो अधे ते स्याम। शुक्रं ते अन्यद्येजतं स्म्मा असि। विमा असि। उन्मा असि। अन्तरिक्षस्यान्तर्धिरसि। दिवं असि। प्रतिमा असि॥१६॥

ते अन्यत्॥१७॥

विषुंरूपे अहंनी द्यौरिवासि। विश्वा हि माया अवसि स्वधावः। भुद्रा ते पूषित्रिह

रातिरंस्तु। अर्हन्बिभर्षि सार्यकानि धन्वं। अर्हं निष्कं यंजतं विश्वरूपम्। अर्हं

निदन्दंयसे विश्वमञ्जुवम्। न वा ओजीयो रुद्र त्वदंस्ति। गायत्रमंसि। त्रेष्टुंभमसि

अनुक्कसादीदुत्तरतः पाहि प्रतिमा असि यज्तन्ते अन्यज्ञागंतमुस्येकं च॥━━ जागंतमसि। मधु मधु मधुं॥१८॥

दश् प्राचीद्शं भासि दक्षिणा। दशं प्रतीचीद्शं भास्युदीचीः। दशोष्वी भासि

सुमन्स्यमांनः। स नो रुचं घे्ह्यहंणीयमानः। अग्निष्टा वसुभिः पुरस्ताद्रोचयतु

गायुत्रेण् छन्दंसा। स मां रुचितो रोचय। इन्द्रंस्त्वा क्द्रेदंक्षिण्तो रोचयतु त्रैधुभेन्

छन्देसा। स मां रुचितो रोचय। वरुणस्त्वादित्यैः पृश्वाद्रोचयतु जागेतेन छन्दंसा।

स मां रुचितो रोंचय॥१९॥

द्युतानस्त्वां मारुतो मुरुद्विरुत्तरतो रोचयुत्वानुष्टुभेन् छन्देसा। स मां रुचितो रोचय। बृहस्पतिस्त्वा विश्वेदेवेरुपरिष्टाद्रोचयतु पाङ्केन् छन्देसा। स मां रुचितो

रोचय। <u>रोचितस्त्वं देव घर्म देवेष्वासी। रोचिष</u>ीयाहं मीनुष्येषु। सम्रौक्षमं रुचितस्त्वं देवेष्वायुष्माङ्स्तेजुस्वी ब्रह्मवर्चस्यीसे। रुचितोऽहं मीनुष्यैष्वायुष्माङ्स्तेजुस्बी

```
711
चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)
```

मिये कक्। दशं पुरस्ताद्रोचसे। दशं दक्षिणा। दशं प्रत्यङ्घा दशोदङ्घा दशोष्जो

ब्रह्मवर्चसी भूयासम्। रुगीसे। रुचं मार्घे घेहि॥२०॥

भोसि सुमनुस्यमोनः। स नः सम्राडिषुमूजै धेहि। बाजी बाजिने पबस्व। रोचितो

वर्मो रुंचीय॥२१॥

ोच्य धोहे नवं च॥🕳

अपेश्यं गोपामनिपद्यमानम्। आ च परो च पािथभिष्यरंन्तम्। स सप्नीचीः स विष्चीर्वसानः। आ वेरीवर्ति भुवेनेष्वन्तः। अत्रं प्रावीः। मधु मार्ध्वीभ्यां मधु माध्रेचीभ्याम्। अनु वां देववीतये। सम्शिर्धिनां गता सं देवेने सिव्ता। स॰

स्वाहा समग्रिस्तपंसा गत। सं देवेनं सवित्रा। स॰ सूर्यणारोचिष्ट। घृतां दिवो विभोसि रजंसः। पृथिव्या घृती। उरोर्न्तरिक्षस्य घृती। घृतां देवो देवानाँम्।

सूर्येण रोचते॥२२॥

अमेर्त्यस्तपोजाः। हृदे त्वा मनेसे त्वा। दिवे त्वा सूर्याय त्वा॥२३॥

ऊर्व्वीमेममध्वरं क्रीधे। दिवि देवेषु होत्रां यच्छ। विश्वांसां भुवां पते। विश्वंस्य भुवनस्पते। विश्वंस्य मनसस्पते। विश्वंस्य वचसस्पते। विश्वंस्य तपसस्पते। विश्वस्य ब्रह्मणस्पते। देवश्रूस्त्वं देव घर्म देवान्पोहि। तृपोजां वार्चमुस्मे नियेच्छ देवायुवम्॥ २४॥

गर्भों देवानाँम्। पिता मेतीनाम्। पतिः प्रजानाँम्। मतिः कवीनाम्। सं देवो देवेने सवित्रा येतिष्ट। स॰ सूर्येणारुक्त। आयुर्दास्त्वमस्मभ्यं घर्म वर्चोदा असि। पिता नोऽसि पिता नो बोध। आयुर्धास्तेनूषाः पयोधाः। वर्चोदा विश्वोदा

द्रविणोदाः॥२५॥

गृहपंतिर्विशामंसि। विश्वांसां मानुषीणाम्। शृतं पूर्भियंविष्ठं पाद्यश्हेसः। समेद्धार्थं शृत्रं हिमाः। तन्द्राविण्ं हार्दिवानम्। इहैव गृतयेः सन्तु। त्वधीमती ते सपेय। सुरेता रेतो दर्याना। वीरं विदेय तवं सन्दर्शि। माऽहरं ग्यस्पोषेण अन्तरिक्षप्र उरोर्वरीयान्। अशोमहि त्वा मा मां हि॰सीः। त्वमंग्रे

वि योषम्॥२६॥

713

देवस्ये त्वा सवितुः प्रेसवे। अश्विनौंबाहुभ्याम्। पूष्णो हस्ताभ्यामादेदे। अदित्ये रास्नोसि। इड् एहिं। अदित एहिं। सरंस्वत्येहिं। असावेहिं। असावेहिं। ोच्ते सूर्याय त्वा देवायुवं द्रविणोदा दर्यांना द्वे चं॥🕳

असावेहिं॥२७॥

अदित्या उष्णीषेमसि। वायुरंस्येडः। पूषा त्वोपावेसृजतु। अभिभ्यां प्रदापय।

यस्ते स्तनः शश्वयो यो मंयोभूः। येन विश्वा पुष्यंसि वार्याणि। यो रंत्रथा वंसुविद्यः सुदत्रेः। सरंस्वति तमिह घातंवेकः। उस्रं घुर्मः शिंश्व। उस्रं घुर्मं पाहि॥२८॥ घुमीये शि॰ष। बृह्स्पत्रिस्त्वोपंसीदतु। दानंवः स्यू पेरंवः। विष्वुग्बुतो लोहितेन

अक्षिभ्यां पिन्वस्व। सरंस्वत्ये पिन्वस्व। पूष्णे पिन्वस्व। बृह्स्पतंये पिन्वस्व। इन्द्रांय पिन्वस्व। इन्द्रांय पिन्वस्व॥२९॥

गायुत्रोऽसि। त्रेष्ट्रेमोऽसि। जागेतमसि। सृहोर्जो भागेनोपुमेहिं। इन्द्राक्षिना

मधुंनः सार्घस्ये। घुमै पोत वसवो यजेता वट्। स्वाहाँ त्वा सूर्यस्य र्थमये वृष्टिवनेये जुहोमि। मधुं हविरीसे। सूर्यस्य तपंस्तप। द्यावोपुर्थिवीभ्याँ त्वा

अन्तिरिक्षेण त्वोपंयच्छामि। देवानौं त्वा पितृणामनुमतो भर्तु ५ शकेयम्। तेजोऽसि। तेजोऽनु प्रेहि। दिविस्पृङ्गा मां हि॰सीः। अन्तिरिक्षस्पृङ्गा मां हि॰सीः।

परिगृह्वामि॥ ३०॥

गुथिविस्पृङ्गा मां हि॰सीः। सुवंरसि सुवंर्ने यच्छ। दिवं यच्छ दिवो मां

वातांय स्वाहाँ। अप्रतिषुष्यायं त्वा वातांय स्वाहाँ। अवस्यवे त्वा वातांय स्वाहाँ। दुवंस्वते त्वा वातांय स्वाहाँ। शिमिद्रते त्वा वातांय स्वाहाँ। अग्रये त्वा वसुमते स्वाहाँ। सोमांय त्वा क्द्रवंते स्वाहाँ। वर्षणाय त्वाऽऽदित्यवंते स्वाहाँ॥३२॥

सुमुद्रायं त्वा वातोय स्वाहाँ। सुलिलायं त्वा वाताय स्वाहाँ। अनाधृष्यायं त्वा

एहिं पाहि पिन्वस्व गृह्णामि नवं च॥■

पाहि॥३१॥

स्वाहाँ। युमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहाँ। विश्वा आशां दक्षिणसत्। विश्वां देवानेयाडिह। स्वाहोकृतस्य घर्मस्यं। मधौः पिबतमश्विना। स्वाहाऽग्रये यजियाय। शं यजुर्भिः। अश्विना घुमै पांत॰ हार्दिवानम्॥३३॥ बृह्स्पतंये त्वा विश्वदेव्यावते स्वाहाँ। सावित्रे त्वेभुमते विभुमते प्रभुमते वाजीवते " स्वाहेन्द्रावट्। घुर्ममपातमश्चिना हार्दिवानम्। अहंदिवाभिक्तिभिः। अनु वां द्यावोपुथिवी अमेरसाताम्। तं प्राच्यं यथा वट्। नमो दिवे। नमेः पृथिच्ये॥३४॥ दिवि धौ इमं यज्ञम्। यज्ञमिमं दिवि धौः। दिवं गच्छ। अन्तरिक्षं गच्छ। पृथिवीं गेच्छ। पश्चे प्रदिशो गच्छ। देवान्धर्मपान्नोच्छ। पितृन्धर्मपान्नोच्छ॥३५॥ अहंर्दिवाभिरूतिभिः। अनु वां द्यावापृथिवी मर्साताम्। स्वाहेन्द्राय। आदित्यवेते स्वाहो हार्दिवानं पृथिव्या अष्टो चे॥🕳 चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

ओषंधीभ्यः पीपिहि। वनुस्पतिभ्यः पीपिहि। द्यावापृथिवीभ्यां पीपिहि। सुभूतायं ड्डे पीपिहि। कुर्जे पीपिहि। ब्रह्मेणे पीपिहि। क्षुत्रायं पीपिहि। अ्रद्धः पीपिहि

716 चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

अमुष्यं त्वा प्राणे सांदयामि। अमुनां सह निर्धं गंच्छ। याँऽस्मान्द्रिष्टि। यं चं व्यं द्विष्मः। पूष्णे शर्रेसे स्वाहाँ। प्रावेन्यः स्वाहाँ। प्रतिरेन्यः स्वाहाँ। द्यावांपृथिवीन्याङ्

अहुज्योतिः केतुनां जुषताम्। सुज्योतिज्योतिषाङ् स्वाहाँ। रात्रिज्योतिः केतुनां

स्वाहाँ। पितुभ्यो धर्मपेभ्यः स्वाहाँ। क्द्रायं क्द्रहाँत्रे स्वाहाँ॥३८॥

जुषताम्। सुज्योतिज्योतिषाङ् स्वाहाँ। अपीपरो माऽह्यो रात्रियै मा पाहि। एषा

ते अग्ने सामित्। तया समिध्यस्व। आयुर्मे दाः। वर्चसा माञ्जीः। अपीपरो मा

रात्रिया अह्रो मा पाहि॥३९॥

एषा ते अग्ने स्मित्। तया सिमध्यस्व। आयुर्मे दाः। वर्चसा माञ्जीः।

ड्डन्ड्रियायं त्वा भूत्यै त्वा। धर्मांऽसि सुधर्मा में न्युस्मे। ब्रह्मांणि धारय। क्षत्राणि

धारया विश्नं धारया नेत्त्वा वातंः स्कन्दयात्॥३७॥

यजंमानाय पीपिहि। मह्यं ज्यैष्ट्यांय पीपिहि। त्विष्यैं त्वा। द्युम्नायं त्वा।

पीपिहि। ब्रह्मवर्च्सायं पीपिहि॥३६॥

अग्निऽन्योतिरमीतिर्गिः स्वाहाँ। सूर्यो ज्योतिज्योतिः सूर्यः स्वाहाँ। भूः स्वाहाँ। हुत १ हिविः। मधु हिविः। इन्द्रंतमेऽग्रौ॥४०॥ चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

पिता नोऽसि मा मा हि॰सीः। अष्यामं ते देवघर्म। मधुमतो बाजवतः पितुमतः।

अङ्गिरस्वतः स्वधाविनंः। अशोमहि त्वा मा मो हि॰सीः। स्वाह्रौ त्वा सूर्यस्य .-रश्मिभ्यंः। स्वाह्रौ त्वा नक्षेत्रेभ्यः॥४१॥

ब्ह्यवर्चसायं पीपिहि स्कन्दयाँद्रुदायं कृदहोँत्रे स्वाहाऽहों मा पाह्यभ्रौ सप चं॥━

घर्म या ते दिवि शुक्। या गांयत्रे छन्दंसि। या ब्रौह्मणे। या हंविधीनै। तान्तं एतेनावे यजे स्वाहाँ। घर्म या तेऽन्तिरिक्षे शुक्। या त्रैष्ट्रेमे छन्दंसि। या रांजन्यै। याऽऽग्रीप्ने। तान्ते एतेनावे यजे स्वाहाँ॥४२॥

घर्म या ते पृथिव्या॰ शुक्। या जागेते छन्दंसि। या वैश्यै। या सदंसि। तान्ते पुतेनावे यजे स्वाहाँ। अनुनोऽद्यानुमितिः। अन्विदंनुमते त्वम्। दिवस्त्वां

पर्स्पायौः। अन्तरिक्षस्य तनुबंः पाहि। पृथिव्यास्त्वा धर्मणा॥४३॥

718 चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

व्यमनुकामाम सुविताय नव्यंसे। ब्रह्मणस्त्वा पर्स्पायाः। क्षत्रस्यं त्नुबंः पाहि।

विशस्त्वा धर्मणा। वयमनुकामाम सुविताय नव्यसे। प्राणस्य त्वा परस्यायै। चक्षेषस्तनुवेः पाहि। श्रोत्रेस्य त्वा धर्मणा। वयमनुकामाम सुविताय नव्यसे। वृत्जुरसि शुं युधायाः॥४४॥

शिशुर्जनेपायाः। शं च वक्षि परि च वक्षि। चतुः स्निक्तिनीभिर्ऋतस्ये।

सदो विश्वायुः शर्म सप्रथाः। अप् द्वेषो अप् ह्वरंः। अन्यद्वेतस्य सश्चिम।

आ चे प्यासिषीमहिं॥४५॥

रन्तिनीमीसि दिव्यो गेन्युवैः। तस्ये ते पृद्धक्षिविधीनमै। अग्रिरध्येक्षाः। रुद्रोऽधिपतिः। समृहमायुषा। सं प्राणेने। सं वर्चसा। सं पर्यसा। सं गौपत्येने।

व्यंसौ। यौऽस्मान्द्विष्टि। यं चं वयं द्विष्मः। अचिकदद्वुषा हिरिः। मृहान्मित्रो

स॰ रायस्पोषेण॥४६॥

न दंरशृतः। स॰ सूर्येण रोचते। चिदंसि समुद्रयोनिः। इन्दुर्दक्षेः श्येन ऋतावाँ हिरंण्यपक्षः शकुनो भुंरुण्युः। मृहान्थ्स्परस्थैं धुव आनिषंतः॥४७॥ चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

नमंस्ते अस्तु मा मां हि॰सीः। विश्वावंसु॰ सोम गन्युर्वम्। आपो ददृशुषीः।

तदृतेना्व्यायन्। तद्न्ववैत्। इन्द्रो रारहाण आंसाम्। परि सूर्यस्य परिधी ॰

रंपश्यत्। विश्वावसुर्मि तन्नो गृणातु। दिव्यो गन्युवी रजंसो विमानेः। यद्वां

उदुत्यं चित्रम्। ड्रममूषुत्यम्सम्य<ं स्निम्। गायुत्रं नवीयारसम्। अग्ने देवेषु

दुर्मित्रास्तस्मै भूयासुः। यौऽस्मान्द्विष्टिं। यं चं वृयं द्विष्मः। उद्वयं तर्मसूस्परिं।

सुह प्रजयां सुह रायस्योषेण। सुमित्रा न् आप् ओषंधयः सन्तु॥४९॥

अश्मेत्रजानाम्। प्रासौन्यन्येवों अमृतोनि वोचत्। इन्द्रो दक्षं परिजानादहीनमै। एतत्त्वं देव घर्म देवो देवानुपोगाः। इदम्हं मेनुष्यों मनुष्याने। सोमेपीथानुमेहि।

धियो हिन्वानो धिय इत्रो अव्यात्। सिन्नेमविन्दचरंणे नदीनाम्। अपांवृणोद्दरो

षा स्त्यमुत यत्र विद्य॥४८॥

| चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)   |
|--|
| प्रवांचः॥५०॥   |
| याऽऽग्रींप्रे तान्तं युतेनावं यजे स्वाहा धर्मणा श्रं युधायाः प्यासिषीमहि पोषेण निषेतो विद्य संन्त्वष्टो॥————[१९] |
| मृहोनां पयोऽसि विहितं देवत्रा। ज्योतिमी असि वनुस्पतीनामोषधीना र स्नैः।   |
| बाजिनं त्वा बाजिनोऽवं नयामः। कुर्ध्वं मनंः सुबर्गम्॥५१॥  |

~ ~ **I** अस्कान्द्यौः पृष्टिवीम्। अस्कांनृषुभो युवागाः। स्कन्नेमा विश्वा भुवंना। स्कन्नो

युज्ञः प्रजंनयतु। अस्कानजीने प्राजीने। आ स्कृत्राञ्चायते वृषाै। स्कृत्रात् प्रजीनेषीमहि॥५२॥ या पुरस्ताप्टिद्युदापंतत्। तान्तं एतेनावं यजे स्वाहां। या दंक्षिणतः। या पश्चात्।

\rangle \sigma \sigma \cdot \frac{\pi}{\pi}

योत्तर्तः। योपरिष्टाद्विद्युदापंतत्। तान्तं पृतेनावं यजे स्वाहा॥५३॥

721 प्राणाय स्वाहाँ व्यानाय स्वाहोऽपानाय स्वाहाँ। चक्षेषे स्वाहा श्रोत्रांय स्वाहाँ। मनेसे स्वाहो वाचे सरेस्वत्ये स्वाहाँ॥५४॥ चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

पूष्णे स्वाहो पूष्णे शर्रसे स्वाहाँ। पूष्णे प्रपत्थ्यांय स्वाहो पूष्णे नरन्त्रिषाय स्वाहाँ। पूष्णेऽङ्घेणये स्वाहो पूष्णे नुरुणांय स्वाहाँ। पूष्णे सांकेताय स्वाहाँ॥५५॥

उदेस्य शुष्मौद्रानुर्नार्ते बिभेति। भारं पृथिवी न भूमे। प्र शुक्रेतुं देवी मेनीषा। अस्मध्सुतेष्टो रथो न बाजी। अर्चन्त एके महि सामेमन्वत। तेन् सूर्यमधारयन्।

[タ ∞] **|** तेन सूर्यमरोचयन्। घर्मः शिर्स्तद्यमुग्निः। पुरीषमिस् सं प्रियं प्रजयां पृशुभिर्भुबत्। 

अग्निर्यसि वैश्वान्रोऽसि। संवध्सरोऽसि परिवध्सरोऽसि। इदावध्सरोऽसीदुवध्सरो इद्वध्सरोऽसि वध्सरोऽसि। तस्ये ते वसन्तः शिरंः। ग्रीष्मो दक्षिणः पक्षः। \frac{\infty}{\infty} 722 यास्ते अग्ने तुनुब ऊर्जो नामे। तामिस्त्वमुभयीभिः संविदानः। प्रजाभिरग्ने द्रविणेह वर्षाः पुच्छम्। श्रारदुत्तेरः पृक्षः। हेमन्तो मध्यम्। पूर्वपृक्षाश्चितेयः। अपरपृक्षाः पुरीषम्। अहोरात्राणीष्टेकाः। तस्यं ते मासाक्षार्धमासाश्चं कल्पन्ताम्। ऋतवेस्ते कल्पन्ताम्। सुंबृथ्सुरस्ते कल्पताम्। अृहो्गुत्राणि ते कल्पन्ताम्। एति प्रेति वीति यास्ते अग्र आर्क्री योनेयो याः कुलायिनीः। ये ते अग्र इन्देवो या उ नाभेयः। समित्युदिति। प्रजापीतस्त्वा सादयतु। तयो देवतयाऽङ्गिरस्बद्धवः सीद॥५८॥ सींद। प्रजापीतेस्त्वा सादयतु। तयां देवतयाऽङ्गिर्म्बद्धवा सींद॥५७॥ चतुर्थः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)

चितेयो नवं च॥

भूभुंबः सुवेः। कुर्घ्वं कु षु णं कुतयै। कुर्घ्वो नंः पा्ह्य इहंसः। विधुन्दंद्राण ९

समेने बहूनाम्। युवांन् ् सन्तं पलितो जंगार। देवस्यं पश्य काव्यं महित्वाद्या मुमारं। सह्यः समान। यट्ते चिंदर्भिश्रिषंः। पुरा जुरीभ्यं आतुदंः। सन्यांता सृन्धिं -मघवो पुरोबसुः॥५९॥

निष्केर्ता विहुतं पुनंः। पुनंकजां सह रथ्या। मा नो धर्म व्यथितो विव्यथो नः। मा नः पर्मधेरं मा रजोऽनैः। मोष्वंस्माङ् स्तमंस्यन्त्रा धाः। मा रुद्रियांसो

अभिगुंर्कुघानेः। मा नः कतुंभिर्हीडितेभिरम्मान्। द्विषांसुनीते मा परां दाः। मा नों कृद्रो निर्ऋतिमां नो अस्तां। मा द्यावांपृथिवी हींडिषाताम्॥६०॥

उपं नो मित्रावरुणाविहावंतम्। अन्वादीष्याथामिह नंः सखाया। आदित्यानां

प्रसितिर्हेतिः। उुग्रा शृतापौष्ठा घविषा परि णो वृणक्तु। इुमं में वरुण तत्त्वों यामि। त्वं नो अग्ने स त्वं नो अग्ने। त्वमंग्ने अयासि। उद्दुयं तमेसुस्परि। उदुत्यं चित्रम्। वयेः सुपूर्णाः॥६१॥

<sup>ို</sup>င် | युरोबसुंरहीडिषाता∜ सुप्णांः॥■

भूभुंवः सुवंः। मयि त्यदिन्द्रियं महत्। मयि दक्षो मयि कतुंः। मयि धायि सुवीर्यम्। त्रिशुंग्यमो विभोतु मे। आकैत्या मनंसा सह। विराजा ज्योतिषा सह। यज्ञेन पर्यसा सह। ब्रह्मणा तेजंसा सह। क्षत्रेण यशंसा सह। सत्येन तपंसा सह। तस्य दोहंमशीमहि। तस्य सुम्नमंशीमहि। तस्यं भूक्षमंशीमहि। तस्यं त इन्द्रेण ~ ~ ■ यास्ते अग्ने घोरास्तुनुवंः। क्षुच्च तृष्णां च। अस्रुक्कानांहृतिश्च। अशुनया चं पिपासा चे। सेदिश्चामेतिश्च। एतास्ते अग्ने घोरास्तुनुवंः। ताभिरमुं गच्छ। योऽस्मान्द्वेष्टिं। गुतस्य मधुमतः। उपंहृतस्योपंहृतो भक्षयामि॥६२॥ चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्) यं चं वयं हिष्मः॥ ह३॥ यशंसा सह षद्धे॥**—** 

स्निक्क स्नीहितिश्च स्निहितिश्च। उष्णा चे शीता चे। उग्रा चे भीमा चे। सदाम्नी सेदिरिनेरा। एतास्ते अग्ने घोरास्तुनुबेः। तार्मिर्मु गच्छ। यौऽस्मान्द्वेष्टि। यं चे व्यं

द्विष्मः॥६४॥

| 725                                  | (2) |  |
|--------------------------------------|-----|--|
| चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्) |     |  |

 $\frac{1}{2}$ उुगश्रु धुनिश्च ष्वान्तश्चं ष्वनश्चं ष्वनयङ्श्च। सहस्बाङ्श्च सहमानश्च सहस्वाङ्श्व सहीयाङ्खा एत्य प्रेत्यं विक्षिपः॥६६॥ رتز

5 8 अहोरात्रे त्वोदीरयताम्। अर्धमासास्त्वोदीं जयन्तु। मासीस्त्वा श्रपयन्तु।

โช 8 ऋतवंस्त्वा पचन्तु। संबृध्सरस्त्वां हन्त्वसौ॥६७॥

खट् फट् जृहि। छिन्भी मिन्भी हुन्भी कट्। इति वार्चः क्रुगुणि॥६८॥

[の で] **T** विगा इंन्द्र विचरैन्थ्स्पाशयस्व। स्वपन्तीमेन्द्र पशुमन्तीमेच्छ। वञ्जेणामुं बोंधय

726 चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

नमेः। पश्चकृत्वेस्ते नमेः। दशकृत्वेस्ते नमेः। शृतकृत्वेस्ते नमेः। आसृहस्रकृत्वेस्ते नमेः। अपुरिमित्कृत्वेस्ते नमेः। नमेस्ते अस्तु मा मां हिश्सीः॥६९॥

दुर्विदत्रम्। स्वपूतौऽस्य प्रहेर भोजनिभ्यः। अग्ने अग्निमा संवेदस्व। मृत्यो मृत्युना संवेदस्व। नर्मस्ते अस्तु भगवः। सुकृत्ते अग्ने नर्मः। द्विस्ते नर्मः। त्रिस्ते नर्मः। चृतुस्ते

यदींषितो यदि वा स्वकामी। भृयेडेको वदिति वाचेमेताम्। तामिन्दाग्री ब्रह्मणा

यदेतद्दंकुसो भूत्वा। वाग्दे व्यमिरायंसि। द्विषन्तं मेऽभिराय। तं मृत्यो मृत्यवे

नय। स आत्यीतिमार्च्छत्॥७१॥

अस्न्मुखो रुधिरेणाव्यक्तः। युमस्यं दूतः श्वपाद्विधांवसि। गृप्नं सुपुर्णः कुणप्

त्रिस्ते नमेः सप्त च॥\_\_\_

निषेवसे। युमस्ये दूतः प्रहितो भूवस्यं चोभयौः॥७०॥

| 727                                  |  | \( \int \) | ह्रवन्तं मेऽव-  |
|--------------------------------------|--|------------|---|
|                                      |  |            | दि दक्षिणतो वदाष्टि   |
| चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्) | संविदानौ। श्रिवाम्सम्यं कृणुतं गृहेषुं॥७२॥ |            | दीर्घमुखि दुर्हणु। मा स्मे दक्षिण्तो वेदः। यदि दक्षिण्तो वदाँ हिषन्तं मेऽवे |

| 5<br>0001<br>=<br>9   | आग्तः।   |
|---|--|
| <del>-</del>  | ण<br>ज   |
| <u>\$</u><br>\$<br>~  | रू<br>स्र-<br>सा   |
| 5   | -  |
| <del>-</del><br><del>9</del>  | न्या <u>म</u> ्ख   |
| <u>-</u>  | ( <del> </del>   |
| <u>9</u>  |  |
| E   | <u>Ji</u>  |
|   | प्<br>प्रमुख   |
| )<br>()<br>*3   | 동  |
| दावताचे ७ ४,०५। ना दन दाहागुरा वदः। वाद दाहागुरा वदाहान न<br>बाघासी॥७३॥ | इत्थादलेक आपंत्रत। हिरण्याक्षो अयोम्भ्वः। रक्षेसां दत आगंतः। |
| Ø   | I  |

| तमिते<br>-                              |   |
|---|---|
| ं दूत आगंतः।                            | - |
| اناق                                    | - |
| रक्षमा                                  |   |
|   |   |
| ो अयोमुखः।                              |   |
| हे-पयाक्षो<br>                          | - |
| —<br>ভ                                  |   |
| आपंप्त                                  |   |
| है।<br>  ×<br>  ×                       | - |
| ड्रत्थादुलूंक आपंतत्।<br>नांशयाग्ने॥७४॥ |   |
|   |   |

| \rac{7}{2} | मृत्यवे            |
|------------|--------------------|
|            | तार्मत्यो          |
|            | ः परावद।           |
|            | द्विषतों नः        |
|            | व<br>विद्यासी<br>- |
|            | देवीं वाच          |
|            | न्यन्वाविश्या      |
|            | यदेतद्भी           |

तमितो  $\begin{bmatrix} \infty \\ \infty \\ \end{bmatrix}$ : こ ろ و नय। त आत्यीऽऽर्तिमाच्छेन्तु। अभिनाऽभिः संवेदताम्॥७५॥ ァ を シ

| रीय आरण्यकम) |   |   |   |
|--------------|---|---|---|
| . आरण्यकम)   |   | α | ) |
| . आरण्यकम)   |   | Ū | ١ |
| 원            |   | Γ |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   |   |   |
| 원            |   | Ъ | _ |
| 원            |   | K | - |
| 원            |   | F | , |
| 원            |   | F | , |
| ो<br>अ       |   | Þ | _ |
| ्य           |   | 垥 | , |
| व            |   |   |   |
| 4            |   | Þ | , |
| <b>'</b> 77  | • | 勽 | / |

चतुथ:

| <u>च</u> नामेमत्॥ ७ ६॥ | <u> </u>   |
|------------------------|--|
| मेहकस्य                |  |
| <u>च</u>               | ı  |
| नियेपि                 |  |
| स्वमाक्षे              |  |
| पत्तीस                 |  |
| सक्थ्यों<br>-          |  |
| प्रसाय                 |  |
|                        | मुक्थ्यौ पतिसि। सुव्यमिक्षे निपेपि च। मेहकेस्य च |

โพ M

आह्राबंद्या शृतस्य ह्विषो यथौ। तथ्मृत्यम्। यद्मुं युमस्य जम्मेयोः।

आदंथामि तथा हि तत्। खण्फण्मसि॥७८॥

ब्रह्मणा त्वा शपामि। ब्रह्मणस्त्वा श्रुपथेन शपामि। घोरेणं त्वा भृगूंणां चक्षुंषा

प्रेक्षे। रोद्रेण त्वाङ्गिरसां मनेसा ध्यायामि। अघस्य त्वा धारया विद्यामि।

[タゕ] **|** 

अथौं क्षुद्राः। अथौं कृष्णा अथौं खेताः। अथौं आशातिका हृताः। खेताभिः सह

सर्वे ह्ताः॥७७॥

अत्रिणा त्वा किमे हन्मि। कण्वेन जुमदीग्नेना। विश्वावंसोब्रह्मणा हुतः।

क्रिमीणा॰ राजा। अप्येषाङ् स्थुपतिरहुतः। अथो माताऽथो पिता। अथो स्थूरा

| 729                                  |                            | [३८]<br>ग मरीचीरुप                                   |
|--------------------------------------|----------------------------|--|
|                                      |                            | में  |
|                                      |                            | प्रवेशय।   |
|                                      |                            | 1201   |
|                                      |                            | 3/<br>[7]  |
|                                      |                            | ल<br>जून-<br>जून-                                    |
|                                      |                            | न -  |
| किम्)                                |                            | शिमिजावरि। तल्पेजे तल्प् उत्तुंद। गिरीर रनु प्रवेशय। |
| आरण्ड                                | =                          |  |
| चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्) | त्प <u>ं</u> द्यस्वासौ॥७९॥ | श्रीमेजा   |
| 고<br>작<br>작                          | <u> </u>                   | 3त्त ि   |
| न्।<br>वर्ण<br>व                     | मत्पृ                      | h  |

मन्नुद। यावेदितः पुरस्तांदुदयोति सूर्यः। तावेदितोऽमुं नांशय। यौऽस्मान्द्वेष्टिं। यं

ने वयं द्विष्मः॥८०॥

~ ~ **I** 

भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः। भुवौऽद्धायि भुवौऽद्धायि भुवौऽद्धायि। नुम्यापि <sub>.</sub>

नृम्णं नृम्णायि नृम्णं नृम्णायि नृम्णम्। निर्धाय्यो बायि निर्धाय्यो बायि निधाय्यो बायि। ए अस्मे अस्मे। सुबर्न ज्योतीं:॥८१॥

गुृथिवी सृमित्। तामृष्रिः समिन्ये। साऽग्रि॰ समिन्ये। तामृह॰ समिन्ये। सा

म् सिमेद्धा आयुष् तेजंसा। वर्चसा श्रिया। यशंसा ब्रह्मवर्चसेनं। अत्राद्येन [0<u>%</u>]

730 तां वायुः समिन्ये। सा वायु॰ समिन्ये। तामृह॰ समिन्ये। सा मा समिद्धा। आयुषा तेजंसा। वर्चसा श्रिया। यशंसा ब्रह्मवर्चसेनं। अत्राद्यंन सिनंताङ् स्वाहाँ। समिन्ताङ्क स्वाहा। अन्तरिक्षर समित्॥८२॥ चतुर्थः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)

द्यौः समित्। तामांदित्यः समिन्ये॥८३॥

साऽऽद्तिय समिन्ये। तामृह समिन्ये। सा मा समिद्धा। आयुषा तेजंसा।

वर्चसा श्रिया। यश्नेसा ब्रह्मवर्चसेने। अत्राद्येन समिन्ताङ् स्वाहाँ। प्राजापत्या मे स्मिदंसि सपलृक्षयेणी। भातृव्यहा मेऽसि स्वाहाँ। अभ्रै ब्रतपते ब्रतं

तच्छेकेयं तन्में राष्यताम्। वायौ व्रतपत् आदित्य ब्रतपते। ब्रतानां ब्रतपते

वीरष्यामि॥८४॥

साऽऽदित्य समिन्ये। तामृह समिन्ये। सा मा समिद्धा। आयुषा तेजंसा॥८५॥

व्रतं चीरध्यामि। तच्छेकेयं तन्मे राध्यताम्। द्यौः सामित्। तामादित्यः समिन्ये।

वर्चसा श्रिया। यशसा ब्रह्मवर्चसेने। अत्राद्येन समिन्ताङ् स्वाहाँ। अन्तरिक्ष॰

731 चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

सुमित्। तां बायुः समिन्ये। सा बायु॰ समिन्ये। तामृह॰ समिन्ये। सा मा

यशंसा ब्रह्मवर्चसेनं। अत्राद्येन समिन्ताङ् स्वाहाँ। पृथिवी समित्। तामग्रिः समिन्ये। साऽग्रि॰ समिन्ये। तामृह॰ समिन्ये। सा मा समिद्धा। आयुषा तेजंसा।

वर्चसा श्रिया। यशसमा ब्रह्मवर्चसेने॥८७॥

समिद्धा। आयुषा तेजंसा। वर्चसा श्रिया॥८६॥

अत्राद्येन समिन्ताङ् स्वाहा। प्राजापुत्या में समिदंसि सपलक्षयणी। आतृब्यहा मेऽसि स्वाहा। आदित्य व्रतपते वृतमेचारिषम्। तदंशक् तन्मेऽराधि। वायो

व्रतपुतेऽभ्नै व्रतपते। वृतानां व्रतपते वृतमंचारिषम्। तदंशकं तन्मेऽराधि॥८८॥

शं नो वातेः पवतां मातिरिश्वा शं नेस्तपतु सूर्यः। अहांनिशं भेवन्तु नुः

सुमिध्समिन्धे व्रतं चीरष्याम्यायुषा तेर्जासा वर्चसा श्रिया यश्नासा ब्रह्मवर्चसेनाष्टौ ची॥🕳

श र रात्रिः प्रतिधीयताम्। शमुषा नो व्युच्छतु शमादित्य उदेतु नः। शिवा

चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

वात आवांतु भेषजम्। श्रम्भूमंयोभूनों हृदे प्र ण आयूरंषि तारिषत्। इन्द्रंस्य गृहोंऽसि तं त्वा प्रपंद्ये सगुः सार्थः। सह यन्मे अस्ति तेन। भूः प्रपंद्ये भुवः प्रपंद्ये सुवः प्रपंद्ये सुवः प्रपंद्ये सुवः प्रपंद्ये सुवः प्रपंद्ये सुवः प्रपंद्ये सुवः प्रपंद्ये वायुं प्रपद्येऽनातां देवतां प्रपद्येऽश्मानमाखणं प्रपंद्ये मुजः प्रपंद्ये अपंद्ये आपंद्ये। अन्तिरंक्षं म उर्वन्तरं बृहद्श्ययः

दक्षं मे अन्य आवातु परान्यो वांतु यद्रपंः। यद्दो वांतते गृहेऽमृतंस्य निधिर्षहेतः। ततो नो देहि जीवसे ततो नो धेहि भेषजम्। ततो नो मह आवेह

यद्रपंः। त्व र हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयंसे। द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्योरा

परावतः॥८९॥

732

शन्तेमा भव सुमृडीका सरंस्वति। मा ते व्योम सन्हिशी इडाये वास्त्विसि वास्तुमद्दीमद्दीस्तुमद्दीस्तुमतो भूयास्म मा वास्तीश्विष्ठस्मह्यवास्तुः स भूयाद्यौऽस्मान्द्रिष्टि यं चं वयं द्विष्मः। प्रतिष्ठासि प्रतिष्ठावेन्तो भूयास्म मा प्रतिष्ठायाशिक्ष्यस्त्रप्रतिष्ठः स भूयाद्यौऽस्मान्द्रिष्टि यं चं वयं द्विष्मः। आ वात वाहि भेष्जं वि वात वाहि

733 चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

मृत्योमां पातं प्राणांपानो मा मां हासिष्टं मियं मेथां मियं प्रजां मय्यग्निस्तेजों दथातु मिये मेथां मिये प्रजां मयीन्द्रं इन्द्रियं देधातु मिये मेथां मिये प्रजां मिये

पर्वताश्च यया वातंः स्वस्त्या स्वंस्तिमान्तयां स्वस्त्या स्वंस्तिमानंसानि। प्राणांपानौ

ट्टढाचिंदारुजे वसु। अभी षु णः सखींनामविता जीरितृणाम्। शृतं भेवास्यूतिभिः। वयः सुपुणी उपेसेदुरिन्द्रं प्रियमेथा ऋषेयो नार्थमानाः। अपं प्वान्तमूर्णुहि पूर्धि

वर्क्षेमुंमुग्ध्यंस्मात्रिययंव बृद्धान्॥९१॥

मामहन्तामदितिः सिन्धुं पृथिवी उत द्यौः। कयां नश्चित्र आ भुंवदूती स्वाकृषः सखाँ। कया शाचेष्ठया वृता। कस्त्वां सृत्यो मदानां मरहिष्ठो मध्सदन्धेसः।

बुभिर्कुभिः परिपातम्स्मानरिष्टेभिरिश्वम् सौभेगेभिः। तन्नौ मित्रो वर्षणो

मूर्यो आजो दघातु॥९०॥

शं नो देवीर्मिष्टंय आपो भवन्तु पीतयै। शुं योर्मिस्नंवन्तु नः। ईशाना वार्याणां क्षयंन्तीश्चर्षणी्नाम्। अपो यांचामि भेष्जम्। सुमित्रा न् आप् ओर्षययः सन्तु

दुर्मित्रास्तस्मै भूयासुर्यौऽस्मान्द्विष्टि यं चं वयं द्विष्मः। आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता ने ऊर्जे देघातन। मृहे रणांय चक्षेसे। यो वेः शिवतमो रस्स्तस्यं भाजयतेह नेः। चतुर्थः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)

उशतीरिव मातरेः। तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंधा।९२॥

आपों जुनयंथा च नः। पृथिवी शान्ता साऽग्निनां शान्ता सा में शान्ता शुच ५

शमयतु। अन्तरिक्ष॰ शान्तं तद्वायुनां शान्तं तन्में शान्त॰ शुच॰ शमयतु। द्योः

शान्ता साऽऽदित्येने शान्ता सा में शान्ता शुच थामयतु। पृथिवी शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिवौः शान्तिर्दिशः शान्तिरवान्तरदिशाः शान्तिर्भिः शान्तिवृषुः शान्तिरादित्यः

शान्तिश्<u>व</u>-द्रमाः शान्तिनेक्षेत्राणि शान्तिरापः शान्तिरोषेषयः शान्तिवेनस्पतंयः शान्तिगौः शान्तिरजा शान्तिरश्वः शान्तिः पुरुषः शान्तिब्रह्म शान्तिब्रह्मणः शान्तिः

द्विपदे चतुष्पदे च शान्तिं करोमि शान्तिमें अस्तु शान्तिः। एह श्रीश्च हीश्च

स्त्यं धर्मश्रुतानि मोतिष्ठन्तु

, জ জ

गृतिश्व तपो मेघा प्रतिष्ठा

शान्तिरेव शान्तिः शान्तिमे अस्तु शान्तिः। तयाहरू शान्त्या सर्वशान्त्या मह्यं

735 चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

मार्थ् श्रीश्च हीश्च धृतिश्च तपो मेधा प्रतिष्ठा श्रद्धा सत्यं धर्मश्चेतानि मा मा होसिषुः। उदायुषा स्वायुषोदोषंधीनार् रसेनोत्पर्जन्यंस्य शुष्मेणोदंस्थाममृतार् अनु। तच्चक्षेर्देवहितं पुरस्तौच्छुक्रमुचरंत्। पश्येम श्रदंः शतं जीवेम श्रदंः शतं नन्दाम श्रदेः श्रतं मोदाम श्रदेः शतं भवाम श्रदेः श्रतं श्रुणवीम

शुरदेः शृतं प्रब्रेवाम शुरदेः शृतमजीताः स्याम शुरदेः शृतं ज्योक्र सूर्यं हुशे। य उदेगान्महृतोऽर्णवाहिभाजमानः सरि्रस्य मध्याष्य मां वृष्मो लोहिताक्षः

सूयों विपक्षिन्मनंसा पुनातु। ब्रह्मणश्चोतंन्यसि ब्रह्मण आणी स्थो ब्रह्मण आणि स्थो ब्रह्मण आवर्पनमसि धारितेयं पृथिवी ब्रह्मणा मही धारितमेनेन महदन्तिरेश्चं दिवे दाधार पृथिवीः सदेवां यदहं वेद तदहं धारयाणि मा मद्वेदोऽधिविस्नेसत्। मेथामनीषे माविश्वाताः समीचीं भूतस्य भव्यस्यावेरुत्ये सर्वमायुरयाणि सर्वमायुरयाणि। आभिगींभिर्यदतों न ऊनमाप्यांयय हरिवो वर्धमानः। यदा स्तोतुभ्यो महि गोत्रा

रुजासि भूयिष्ट्रभाजो अर्ध ते स्याम। ब्रह्म प्रावोदिष्म् तत्रो मा होसीत्। ॐ

736 शानिः शानिः शानिः॥९३॥ पुरावतो दथातु बुद्धां जिन्वंथ हुशे सुप्त चं॥∎ चतुर्थः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

नमों बाचे या चोदिता या चानुदिता तस्यै बाचे नमो नमो बाचे नमों

वाचस्पतंये नम् ऋषिभ्यो मञ्चकुद्धो मत्र्रपतिभ्यो मा मामुषंयो मञ्चकृतो मञ्चपतंयः

प्रोदुमहिमृषीन्मत्रकृतो मत्रपतीन्परोदां वैश्वदेवीं वाचेमुद्यास॰ शिवामदेस्तां जुष्टों देवेन्यः शर्म मे द्योः शर्म पृथिवी शर्म विश्वमिदं जगेत्। शर्म चन्द्रश्च सूर्येश्च

न -शर्म ब्रह्मप्रजाप्ती। भूतं वीदष्ये भुवेनं विदष्ये तेजो विदष्ये यशो विदष्ये तपो विदिष्ये ब्रह्मे विदिष्ये सृत्यं विदिष्ये तस्मी अहमिदमुपस्तरंणमुपस्तुण उपस्तरंणं मे

प्रजायै पश्रूनां भूयादुपस्तरंणमहं प्रजायै पश्रूनां भूयासं प्राणापानौ मृत्योमां पातं प्राणापानौ मा मां हासिष्टं मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं बक्ष्यामि मधुं बिदष्यामि

मधुमतीं देवेभ्यों वार्चमुद्यास॰ शुश्रूषेण्यां मनुष्यैभ्युस्तं मां देवा अवन्तु शोभाये

पितरोऽनुंमदन्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

चतुर्थः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)



देवा वै सत्रमांसता ऋद्धिपरिमितं यशंस्कामाः। तेऽब्रुवन्। यत्रेः प्रथमं यशं ॐ शं नुस्तन्रो मा होसीत्॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ऋच्छात्। सर्वेषां नुस्तथ्सृहास्दिति। तेषां कुरुक्षेत्रं वेदिरासीत्। तस्यै खाण्डुवो देक्षिणार्धे आसीत्। तूर्घेमुत्तरार्थः। परीणञ्जेघनार्थः। मुरवे उत्करः॥१॥

तेषां मखं वैष्णवं यशं आच्छेत्। तत्र्यंकामयता तेनापाकामत्। तं

तमेक्×ु सन्तम्। बृहवो नाभ्यंधृष्णुवन्। तस्मादेकंमिषुर्यान्वनम्॥ देवा अन्वायम्। यशोऽवरुरुक्षमानाः। तस्यान्वागेतस्य। स्व्याद्धनुरजायत। दक्षिणादिषेवः। तस्मोदिषुयन्वं पुण्यंजन्म। युज्ञजंन्मा हि॥२॥

बृहवोऽनिषुयन्वा नामिधृष्णुवन्ति। सौऽस्मयत। एकं मा सन्ते बहवो नाभ्यंधर्षिषुरिति। तस्यं सिष्मियाणस्य तेजोऽपौकामत्। तद्देवा ओर्षेधीषु न्यमृजुः। ते श्यामाको अभवन्। स्मयाका वै नामैते॥३॥

739 तथ्स्म्याकांनाङ् स्मयाकृत्वम्। तस्माद्दीक्षितेनांपिगृह्यं स्मेत्व्यम्। तेजंसो धृत्यै। पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

रंन्थयाम। यत्र क्रं च खनाम। तद्पोऽभितृणदामिति। तर्मादुप्दीका यत्र क्रं च खनीन्त। तद्पोऽभितृन्दन्ति॥४॥ स धनुः प्रतिष्कभ्योतिष्ठत्। ता उपदीको अबुवन्वरं वृणामहे। अर्थ व इमर

वारेवृत्ङ् ह्यांसाम्। तस्य ज्यामप्यांदन्। तस्य धर्नुर्विप्रवंमाण्<sup>र</sup> शिर् उदेवर्तयत्। तद्यावापृथिवी अनुप्रावेर्तता यत्प्रावेर्तत। तत्प्रंवग्येस्य प्रवग्युत्वम्।

यद्धाँ(४)इत्यपंतत्। तद्घमंस्यं घर्मत्वम्। मृह्तो वीर्यमपप्तदिति। तन्मंहावीरस्यं

महावीर्त्वम्॥५॥

यदस्याः सममेरन्। तथ्सम्राज्ञंः सम्राद्वम्। तङ् स्तृतं देवताँक्षेघा व्यंगृह्नत। अग्निः प्रातः सबनम्। इन्द्रो माध्यं दिन्॰ सबनम्। विश्वेदेवास्तृतीयसबनम्।

तेनापंशीर्षा युज्ञेन् यजमानाः। नाशिषोऽवारुन्यत। न सुंवुगै लोकमुन्यंजयन्। ते

देवा अस्थिनांवब्रुवन्॥६॥

ग्रहं एुव नावत्रापि गृह्यतामिति। ताभ्यामेतमाभिनमभृक्षन्। तावेतद्यज्ञस्य शिरः अभि सुंबगै लोकमंजयन्। यत्प्रंबग्धं प्रबृणात्ते। यज्ञस्यैव तच्छिरः प्रतिद्धाति। तेन सशीष्णां युज्ञेन यजमानः। अवाशिषों कुन्धे। अभि सुंबगै लोकं जंयति। प्रत्यंथत्ताम्। यत्प्रंवुग्र्यः। तेन् सशौंष्णां यृज्ञेन् यजंमानाः। अवाशिषोऽफंन्यता मिषजो वै स्थैः। इदं युजस्य शिरः प्रतिधन्मिति। तावेब्रतां वरं वृणावहै। सावित्रं जुंहोति प्रसूत्यै। चृतुर्गृहोतेनं जुहोति। चतुष्पादः पृशवंः। पृशूनेवावंकन्ये। तस्मदिष आस्थिनप्रवया इव। यत्प्रवर्गः॥७॥ उत्करो होते तृन्दन्ति महावीर्ष्वमेब्रुवत्रजयन्थ्सुप्त चं॥■ पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

चतेस्रो दिशः। दिक्ष्वेव प्रतितिष्ठिति छन्दार्ससे देवेभ्योऽपाकामन्। न बोऽभागानि हृव्यं वेक्ष्याम् इति। तेभ्यं एतच्नेतुर्गृहीतमेधारयन्। पुरोनुबाक्यांये याज्यांये॥८॥ द्वतांयै वषद्वाराये। यचंतुर्गृहोतं जुहोतिं। छन्दार्धस्येव तत् प्रीणाति। तान्यंस्य

प्रोतानि देवेभ्यों हुव्यं वेहन्ति। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। होतृव्यं दीक्षितस्यं गृहा(३)इ न

होंत्व्या(३)मिति। ह्विर्वे दींक्षितः। यज्ञुंहुयात्। ह्विष्कृंतं यजमानमुग्नौ प्रदेध्यात्। पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्) यत्र जुहुयात्॥९॥

शिरौऽच्छिनत्। तस्यै द्वेधा रसः परापतत्। पृथिवीम्र्यः प्राविशत्। पृशून्र्यः। यः न यंजपुरुन्तरेति। गायत्री छन्दाङ्स्यत्यंमन्यत। तस्यै वषद्वारीज्यय्य यज्ञपुरुरुनतरियात्। यजुरेव वेदेत्। न ह्विष्कृतं यजमानमुग्नौ प्रदर्याति।

गृथिकों प्राविशत्॥१०॥

स खीद्रोऽभवत्। यः पृश्न्। सोऽजाम्। यत्खोद्यिभ्रिभेवीते। छन्दंसामेव रसेन युजस्य शिर्ः सम्भेरति। यदौदुम्बरी। ऊग्वी उंदुम्बर्ः। ऊजैव युजस्य शिरः सम्मेरति। यद्वैण्वी। तेजो वै वेणुः॥११॥

तेजंसैव युज्ञस्य शिरः सम्भेरति। यद्वैकेङ्कती। भा पृवावंकन्ये। देवस्यं त्वा सावितुः प्रेसव इत्यभ्रिमादंते प्रसूत्ये। अश्विनौर्बाहुभ्यामित्याह। अश्विनौ हि देवानांमध्वर्षे आस्ताम्। पूष्णो हस्ताभ्यामित्यांह यत्यै। वज्रं इव वा पृषा।

अष्ट्रकुट्टेकेम्य इत्योह। युज्ञो वा अष्ट्यरः। युज्ञकृट्टेकेम्य इति वावैतदाह। उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पत् इत्योह। ब्रह्मणेव युज्ञस्य शिरोऽच्छैति। प्रैतु ब्रह्मणस्पतिरित्याह। प्रेत्यैव यदभ्रिः। अभ्रिंगम् नारिंग्सीत्यांह शान्त्यैं॥१२॥ पश्चमः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)

युजस्य शिरोऽच्छैति। प्र देव्येतु सूनृतेत्यांह। युजो वै सूनृताँ। अच्छा वीरं नयै पङ्किरोधस्मित्यांह॥१३॥

पाङ्गो हि यज्ञः। देवा यज्ञं नंथन्तु न इत्योह। देवानेव यंज्ञनियंः कुरुते। देवीं द्यावापृथिवी अनुं मे मश्साथामित्योह। आभ्यामेवानुंमतो यज्ञस्य शिरः सम्भेरति। ऋखासंमद्य मखस्य शिर इत्योह। यज्ञो वै मखः। ऋखासंमद्य यज्ञस्य शिर इति वावैतदाह। मुखायं त्वा मुखस्यं त्वा शोर्ष्णं इत्योह। निर्दिश्येवेनेद्धरित॥१४॥

त्रिर्ह्रती। त्रयं इमे लोकाः। एम्य एव लोकेम्यों युजस्य शिरः सम्मेरति।

तूष्णीं चेतुर्थश् हंरति। अपीरिमितादेव यज्ञस्य शिरः सम्भेरति। मृत्खनादग्रे हरति। तस्मौन्मृत्खनः केरुण्येतरः। इयत्यग्रं आसीरित्योह। अस्यामेवाछेम्बद्वारं यज्ञस्य

743 पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

तमेवावंरुन्ये। पञ्चेते सम्मारा भवन्ति। पाङ्गो युज्ञः। यावानेव युज्ञः। तस्य या इति। तदूतीकानामूतीकृत्वम्। यदूतीका भवन्ति। युज्ञायैवोति दंधति। अग्रिजा कृष्णाजिनेन सम्भेरति। आर्णयानेव पृश्बञ्छुचार्पयति। तस्मौथ्समावेत्पशूनां शिरः सम्मेरति। यद्घान्याणौ पशूनां चर्नणा सम्मरेत्। ग्राम्यान्पशूञ्छुचाऽपेयेत्।

असि प्रजापेते रेत् इत्योह। य एव रसंः पृशून्प्राविशत्॥१७॥

आर्णयाः पृशवः कनीया स्सः। शुचा ह्यंताः। लोम्तः सम्मंरति। अतो ह्यंस्य

प्रजायमानाम्॥१८॥

तत्राष्ट्रियता स पूतीकस्तम्बे पराकमता सौऽष्ट्रियता सौऽब्रवीत्। ऊति वै मे यद्वल्मीकम्। यद्वल्मीकवपा संम्मारो भवंति। ऊर्जमेव रसं पृथिव्या अवंरुन्धे। अथो | श्रोत्रमेव। श्रोत्रङ् ह्येतत्पृथियाः। यद्दल्मीकः। अबिधिरो भवति। य एवं वेदे।

शिर्ः सम्मेरति। ऊर्जं वा एत॰ रसं पृथिव्या उंप्दीका उदिहन्ति॥१५॥ इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदंयच्छत्। स यत्रं यत्र प्राक्रमत॥१६॥

मेध्यम्। परिगृह्या येन्ति। रक्षेसामपेहत्यै। बहवों हरन्ति। अपीचितिमेवास्मिन्दधति। उद्घेते सिकेतोपोप्ने परिश्रिते निदंधति शान्त्यै। मदंन्तीभिकपं सुजिति॥१९॥ पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

तेजं एवास्मिन्दधाति। मधुं त्वा मधुला केर्गेत्वित्याह। ब्रह्मणेवास्मिन्तेजों

दधाति। यद्ग्राम्याणां पात्रांणां कृपालैंः स॰सृजेत्। ग्राम्याणि पात्रांणि शुचाऽर्पयेत्।

<u>अ</u>र्मेकृपा्लैः स×सृंजति। एतानि वा अंनुपजीवनो्यानि। तान्येव शुचार्पयति।

शर्कराभिः स॰सृजति धृत्यै। अथो श्रन्वाये। अजुलोमेः स॰सृजति। पुषा वा अग्रेः प्रिया तनूः। यद्जा। प्रिययैवैनं तनुवा स॰सृंजति। अथो तेजंसा। कृष्णाजिनस्य लोमीमेः स॰सृंजति। युज्ञो वै कृष्णाजिनम्। युज्ञेनैव युज्ञ॰ स॰सृंजति॥२०॥ याज्यांये न जुंहुयादविशृक्षेणुः शान्त्ये पक्किरांधसुमित्यांह हरति दिहन्ति प्राकंमुताविशत् प्रजायंमानाना॰ सुजति शृन्वायाष्ट्रो

प्राण्यात्। प्राणाञ्छुचार्पयेत्। अपृहायु प्राणिति। प्राणानां गोपीथाये। न प्रेवग्यै

परिश्रिते करोति। ब्रह्मवर्चसस्य परिगृहीत्यै। न कुर्वत्रमि प्राण्यात्। यत्कुर्वत्रीभि

बीयै वै छन्दार्शस। बीयैणेवैनं करोति। यजुषा बिले करोति व्यावृत्यै। इयं तं करोति। प्रजापीतेना यज्ञमुखेन सम्मितम्। इयं तं करोति। यज्ञपुरुषा सम्मितम्। तस्मोदेवमोह। युज्ञस्ये पुदे स्थु इत्योह। युज्ञस्य होते पुदे। अथो प्रतिष्ठित्यै। गायुत्रेणं त्वा छन्देसा करोमीत्योह। छन्दोभिरेवैनं करोति। त्र्युंष्टिं करोति। त्रयं तस्मात्रान्तराध्यम्। आत्मनो गोपीथाये। वेर्णुना करोति। तेजो वै वेर्णुः। तेजं प्रवग्र्ः। तेजंसैव तेजः समर्धयति। मृखस्यु शिरोऽसीत्यांह। युज्ञो वै मृखः। डुमे लोकाः। एषां लोकानामास्यै। छन्दोभिः करोति॥२३॥ चादित्यं चान्तरेयात्। यदंन्तरेयात्। दुश्चर्मां स्यात्॥२१॥ तस्यैतच्छिरंः। यत्प्रेवर्गः॥२२॥ पश्चमः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)

अपंरिमितं करोति। अपंरिमित्स्यावेरुद्धो। परिश्रोवं केरोति धृत्यैं। सूर्यस्य

इयं तं करोति। पृताबृद्धे पुरुषे बी्र्यम्। बी्र्यमम्मितम्॥२४॥

हर्गसा श्रायेत्योह। यथायजुरेवैतत्। अश्वशकेनं धूपयति। प्राजापत्यो वा अश्वेः सयोनित्वाये। वृष्णो अश्वेस्य निष्पद्सीत्योह। असौ वा आदित्यो वृषाऽश्वेः। तस्य पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

छन्दार्से मिष्यत्॥२५॥

छन्दोभिरेवैनं धूपयति। अचिषै त्वा शोचिषे त्वत्योह। तेजं पुवास्मिन्दधाति। वारुणोऽभीद्धेः। मैत्रियोपैति शान्त्यैं। सिद्धै त्वेत्यांह। यथायजुरेवैतत्। देवस्त्वां सवितोद्वेपत्वित्यांह। सवितुप्रेसूत एवैनं ब्रह्मणा देवतांभिरुद्वपति। अपंद्यमानः पृथिव्यामाशा दिश्च आपृणेत्यांह॥२६॥

प्रतिष्ठित्यै। ईश्वरो वा एषौऽन्यो भवितोः। यः प्रवग्यंमन्वीक्षेते। सूर्यस्य त्वा चक्षुषाऽन्वीक्ष इत्याह। चक्षुषो गोपीथाये। ऋजवै त्वा सापवै त्वा सुक्षित्यै त्वा तस्मोद्ग्रिः सर्वो दिशोऽनु विभोति। उत्तिष्ठ बृहन्भेवोर्ध्वस्तिष्ठ ध्रुवस्त्वमित्योह

भूत्ये त्वेत्यांहा इयं वा ऋजुः। अन्तरिक्ष॰ साधु। असौ सुक्षितिः॥२७॥

दिशो भूतिः। इमानेवास्मै लोकान्केल्पयति। अथो प्रतिष्ठित्यै। इदमृहमुमामुष्यार्

विशेति राजुन्यस्य ब्रूयात्। विशैवेनं पर्यूहति। पृशुभिरिति वैश्यस्य। पृशुभिरेवेनं विशा पुशुभिब्रह्मवर्चसेन पर्यूहामीत्याह। विशेवेनं पुशुभिब्रह्मवर्चसेन पर्यूहति नर्रहति। अ<u>्</u>सुर्यं पात्रमनांच्छुण्णम्॥२८॥ पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

स्याद्यस्रवेश्कुन्दोभिः करोति वीर्यसम्मितं छन्दार्शमि निष्यस्युणेत्योह सुक्षितिरनाँच्छुण्ज्छन्दाङ्रस्याच्छुणत्युष्टो चे॥\_\_\_\_\_ 3 ] आच्छुंणात्ति। देवत्राकेः। अज्ञक्षीरेणाऽऽच्छुंणाति। पुरमं वा पृतत्पयेः। यदंजक्षीरम्। पुरमेणेवेनं पयुसाऽऽच्छुंणाति। यजुंषा व्यावृंत्ये। छन्दोभिराच्छुंणाति। छन्दोभिवा एष त्रियते। छन्दोभिरेव छन्दाङ्स्याच्छुंणाति। छुन्धि वाचुमित्याह। वाचेमेवावंरुन्ये। छुन्यूर्जुमित्यांहा ऊर्जमेवावंरुन्ये। छुन्यि हुविरित्यांह। हविरेवाकः। देवं पुरश्चर स्घ्यास्न्लेत्याह। यथायुजुरेवैतत्॥२९॥

ब्रह्मन्प्रचीरथ्यामो होर्तर्घर्ममभिष्टुहीत्यांह। एष वा एतर्राहे बृह्स्पतिः। यद्वह्या। तस्मां एव प्रतिप्रोच्य प्रचंरति। आत्मनोऽनाँत्यै। युमायं त्वा मुखाय त्वेत्यांह।

पुता वा पुतस्यं देवताः। ताभिरेवेन् समर्घयति। मदंन्तीभिः प्रोक्षेति। तेजं

748 अभिपूर्वं प्रोक्षंति। अभिपूर्वमेवास्मिन्तेजो दथाति। त्रिः प्रोक्षंति। त्र्यावृद्धि यज्ञः। पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्) एवास्मिन्दधाति॥३०॥

प्राणाहुतीर्जुहोति। प्राणानेव यजमाने दथाति। सृप्त जुहोति। सृप्त वै शीर्षणयाैः

प्राणाः। प्राणानेवास्मिन्दधाति। देवस्त्वां सविता मध्वांऽनुक्कित्यांह॥३३॥

तेजंसैवेनमनक्ति। पृथिवीं तपंसम्नायस्वेति हिरंण्यमुपास्यति।

अनेतिदाहाय। शिरो वा पृतद्यज्ञस्यं। यत्प्रेव्ग्यः। अुग्रिः सर्वा

अस्ता

गायुत्रो हि प्राणः। प्राणमेव यजमाने दथाति। सन्तंतमन्वाह। प्राणानामृत्राद्यस्य

अथो मेप्यत्वाये। होताऽन्वांह। रक्षेसामपंहत्ये। अनंवानम्। प्राणाना्॰ सन्तंत्ये।

त्रिष्टुमेः सतीगयित्रीरिवान्वाह॥३१॥

सन्तेत्ये। अथो रक्षेसामपेहत्ये। यत्परिमिता अनुब्रूयात्। परिमितमवेरुन्यीता

अपीरिमिता अन्वाह। अपीरिमितस्यावंरुस्यै। शिरो वा पृतद्युज्ञस्यं॥३२॥

मृहा ९ असीत्योह। मृहान् ह्येषः। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। पृते वाव त ऋक्विजंः। ये दंर्शपूर्णमासयोः। अर्थ कथा होता यजमानायाऽऽशिषो नाशास्त इति। पुरस्तादाशीः खलु वा अन्यो यज्ञः। उपरिष्टादाशीरन्यः॥३५॥ अनाधृष्या पुरस्तादिति यदेतानि यजुङ्ष्याहै। शीर्षत एव यज्ञस्य यजंमान आशिषोऽवंरुन्ये। आयुं: पुरस्तादाह। प्रजां दक्षिणतः। प्राणं प्रक्षात्। श्रोत्रंमुत्तरतः। विधेतिमुपरिष्टात्। प्राणानेवास्मै सुमीचों दथाति। ईश्वरो वा एष दिशोऽनून्मेदितोः। प्रलुवानादीप्योपौस्यति। देवतौस्वेव युज्ञस्य शिर्ः प्रतिदधाति। अप्रतिशीणांअं अचिरीसे शोचिर्मीत्योह। तेजं एवास्मिन्बह्मवर्चसं दंघाति। स॰सींदस्व भवति। एतद्वंश्हिर्ह्येषः॥३४॥ पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

मनोरक्षांसि भूरिपुत्रेतीमामुभिमृंशति। इयं वै मनोरक्षा भूरिपुत्रा। अस्यामेव यं दिशोऽनुं व्यास्थापयंन्ति॥३६॥

प्रतितिष्टुत्यनुन्मादाय। सूपुसदो मे भूया मा मो हि॰सीपित्याहाहि॰सायै। चितेः

पश्चमः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)

त्रयोदशो स्वाहां मुरुद्धिः परिश्रयुस्वेत्योह। अमुमेवाऽऽदित्य॰ रुश्मिभिः पर्यूहति। तस्मोदसावोदित्योऽमुष्पिंक्षोके रुश्मिभिः पर्यूढः। तस्माद्राजां विश्रा पर्यूढः। तस्मौद्धामुणीः संजातैः पर्यूढः। अग्रेः सृष्टस्यं यतः। विकेङ्कतं भा आच्छ्त्। यद्वैकेङ्कताः परिषयो भवेन्ति। भा पुवावेरुन्ये। द्वादंश भवन्ति॥३८॥ द्वादंशु मासाः संवध्सरः। संवध्सरमेवावंकन्ये। अस्ति

मास् इत्योहः। यत्रेयोद्शः पीर्धिर्मविति। तेनैव त्रेयोद्शं मासमवेरुन्ये। अन्तरिक्षस्यान्तर्धिरुसीत्योह व्यावृत्ये। दिवं तपेसस्नायुस्वेत्युपरिष्टाद्धिरंण्युमिष्

-नेदंधाति। अुमुष्या अनेतिदाहाय। अथों आभ्यामेवैनंमुभूयतः परिंगृह्वाति।

अर्हेन् बिभर्षि सायंकानि धन्वेत्यांह॥३९॥

स्तौत्येवैनंमृतत्। गायुत्रमंसि त्रेष्टुंभमसि जागंतम्सीति घृषित्राण्यादेते।

स्थ परिचित् इत्याह। अपीचितिमे्बास्मिन्द्याति। शिरो् वा पृतद्यज्ञस्ये। यत्प्रेवृग्येः। असौ खलु वा आंदित्यः प्रंवग्यैः। तस्यं मुरुतो रुश्मयः॥३७॥

पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

छन्दोभिरेवैनान्यादेते। मधु मध्विति धूनोति। प्राणो वै मधुं। प्राणमेव यजमाने दधाति। त्रिः परियन्ति। त्रिबृद्धि प्राणः। त्रिः परियन्ति। त्र्याबृद्धि युज्ञः॥४०॥

एष ह वा अस्य प्रियां तनुबमाकांमति। यित्रिः प्रीत्यं चतुर्थं पर्येति। एता॰ ह वा अस्योग्रदेवो राजीनुराचेकाम॥४१॥ अथो रक्षेसामपेहत्यै। त्रिः पुनः परियन्ति। षट्ध्सम्पंद्यन्ते। षड्या ऋतवंः। ऋतुष्वेव प्रतितिष्ठन्ति। यो वै घुर्मस्य प्रियां तुनुवेमा्कामीते। दुश्वर्मा वै स भेवति।

ततो वे स दुश्चर्माऽभवत्। तस्मात्रिः पृरीत्यु न चंतुर्थं परीयात्। आत्मनो

गोपीथाये। प्राणा वै घवित्राणि। अव्यतिषङ्गं धून्वन्ति। प्राणानामव्यतिषङ्गाय क्रुस्यै। विनिषद्यं धून्वन्ति। दिक्ष्वेव प्रतितिष्ठन्ति। कुर्ध्वं धून्वन्ति। सुवर्गस्यं लोकस्य समेष्ट्री। सर्वतो धून्वन्ति। तस्मांद्य॰ सर्वतेः पवते॥४२॥

द्यातीबान्बांह युज्ञस्यांहेष उपरिष्टादाशीर्न्यो व्यास्थापयन्ति रृश्मयों भवन्ति धन्वेत्यांह युज्ञक्षंक्राम् समंध्ये द्वे चं॥\_\_\_\_[४]

अग्निष्ट्या वसुभिः पुरस्तीद्रोचयतु गाय्त्रेण् छन्द्सेत्योह। अग्निरेवैनं वसुभिः

युरस्ताद्रोचयति गायुत्रेण् छन्दंसा। स मां रुचितो रोंच्येत्योह। आशिषंमेवैतामा शौस्ते। इन्द्रंस्त्वा क्ट्रैदंक्षिण्तो रोचयतु त्रैष्ट्रंभेन् छन्द्सेत्यांह। इन्द्रं पृवैन<sup>५</sup> पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

मरुद्धिरुत्तरतो रोचयत्वानुष्टुभेन छन्दुसेत्योह। द्युतान एवैनं मारुतो मरुद्धिरुत्तरतो रोचयत्यानुष्टुभेन छन्दुसेत्याह। आशिषेमेवैतामाश्रास्ते। रोचयत्यानुष्टुभेन छन्दुसा। स मो रुचितो रोचयत्याह। आशिषेमेवैतामाश्रास्ते। बृहस्पतिरेवैनं बृहस्पतिरत्वा विश्वेदिवेरुपरिष्टाद्रोचयतु पाङ्केन छन्दुसात स मो रुचितो रोचयत्याह। ट्टे वेश्वेदवेरुपरिष्टाद्रोचयति पाङ्गेन छन्देसा। स आशिषंमेवैतामा शाँस्ते॥४४॥

गोचेषीयाहं ति। विव <u>चि</u> श्चे व गुचितस्त्वं देव घर्म देवेष्वसीत्योहा गुचितो

753 मंनुष्यौष्वित्योह। रोचंत एवेष मंनुष्येषु। सम्रौङ्घर्म रुचितस्त्वं देवेष्वायुष्माङ्स्तेज्रस्वी पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

ब्रह्मवर्चस्यंसीत्याह। रुचितो होष देवष्वायुष्माङ्स्तेजुस्वी ब्रह्मवर्चेसी। रुचितोऽहं मंनुष्यैष्वायुष्माङ्स्तेजुस्वी ब्रह्मवर्चसी भूयासामित्याह। रुचित एवेष मंनुष्यैष्वायुष्माङ्स्तेजुस्वी ब्रह्मवर्चसी भंवति। रुगस्ति रुचं मधि धेहि मयि

रुगित्योह। आशिषेमेवेतामा शौस्ते। तं यदेतैर्यजुर्भिरोचयित्वा। रुचितो घर्मे इति प्रब्रूयात्। अरोचुकोऽस्बर्युः स्यात्। अरोचुको यजमानः। अथ् यदेनमेतैर्यजुर्भी रोचयित्वा। रुचितो घर्मे इति प्राहे। रोचुकोऽस्बर्युर्भवीते। रोचुको यजमानः॥४५॥

शिरो वा एतद्यज्ञस्ये। यत्प्रेवग्यैः। ग्रीवा उपसदेः। पुरस्तोदुपुसदौ प्रवग्यै प्रवृणिक्ति। ग्रीवास्वेव यज्ञस्य शिरः प्रतिदर्याति। त्रिः प्रवृणक्ति। त्रये हुमे लोकाः।

पुग्य एव लोकेची यज्ञस्य शिरोऽवंरुचे। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्डा ऋतवंः॥४६॥

पृक्षाद्रौचयति जार्गतेन छन्देसा पाङ्केन छन्देसा स मां रुचितो रोंच्येत्यांहाशिषंमेवेतामाशास्ते शास्तेऽष्टो चं॥————— 🗲

ऋतुभ्यं एव युज्ञस्य शिरोऽवंरुन्ये। द्वादंशकृत्वः प्रवृंणिक्ते। द्वादंश् मासौः संवथ्सरः। संवथ्सरादेव यज्ञस्य शिरोऽवंरुन्ये। चतुर्विश्शितिः सम्पंद्यन्ते। चतुर्विश्शितिरर्धमासाः। अर्धमासेभ्यं एव यज्ञस्य शिरोऽवंरुन्ये। अथो खतु। सक्देव प्रवृज्यः। एक्र् हि शिरंः॥४७॥ पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

अग्रिष्टोमे प्रवृणिक्ति। पृतावान् वै युज्ञः। यावानिभ्रष्टोमः। यावानेव युज्ञः। तस्य शिर्ः प्रतिद्धाति। नोक्थ्यै प्रवृज्जात्। प्रजा वै पृशवं उक्थानि। यदुक्थ्यै प्रवृज्ज्यात्।

प्रजां प्शूनेस्य निदंहत्। विश्वजिति सर्वपृष्टे प्रवृणक्ति॥४८॥

पृष्ठानि वा अच्युतं च्यावयन्ति। पृष्ठेर्वास्मा अच्युतं च्यावयित्वाऽवेरुन्ये। अपेश्यं

असौ वा आंदित्यो गोपाः। स हीमाः प्रजा गोपायिति। तमेव प्रजानां गोपारं गोपामित्योह। प्राणो वै गोपाः। प्राणमेव प्रजासु वियातयति। अपेश्यं गोपामित्याह। कुरुते। अनिपद्यमानमित्यांह॥४९॥

न ह्येष निपद्येते। आ च परां च पाथिभिक्षरंन्तमित्यांह। आ च ह्येष परां च

755 दिवि देवेषु होत्रां युच्छेत्यांह। होत्रांभिरेवेमाँस्रोकान्थ्यन्दंधाति। विश्वांसां भुवां पत् इत्यांह। हैमन्तिकावेवास्मां ऋतू केल्पयति। देवश्रूस्त्वं देव घर्म देवान्याहीत्यांह। शेशिरावेवास्मां ऋतू केल्पयति। तपोजां वार्चमस्मे नियंच्छ देवायुव्मित्यांह। या वै मेध्या वाक्। सा तपोजाः। तामेवावंरुन्धा ५२॥ पृथिभिश्वर्गते। स सुप्रीचीः स विष्वीर्वसान इत्योह। सुप्रीचीश्व ह्येष विष्वीश्व वसानः प्रजा अभि विपश्यति। आविशवर्ति भुवनेष्वन्तरित्योह। आ ह्येष विश्वति सृङ्खेते। स्वाहा समग्निस्तपंसा गृतेत्याह। पूर्वमेवोदितम्। उत्तरेणाभिगृणाति। धृती दिवो विभासि रजेसः पृथिव्या इत्योह। शार्दावेवास्मां ऋतू केल्पयति॥५१॥ भुवेनेष्वन्तः। अत्रे प्रावीमेधु माष्वीभ्यां मधु माधूचीभ्यामित्याहि। वासंन्तिकावेवास्मां ऋतू केल्पयति। सम्गिर्धेग्रेनां गृतेत्याहि॥५०॥ ग्रैष्मांवेवास्मां ऋतू केल्पयति। सम्प्रिर्प्रिनां गृतेत्यांह। अग्रिह्यंवेषौऽग्रिनां पश्चमः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)

गर्भो देवानामित्योह। गर्भो ह्येष देवानाम्। पिता मंतीनामित्योह। प्रजा वै

756

मृतयेः। तासांमेष एव पिता। यत्प्रंबग्यैः। तस्मांदेवमांह। पतिः प्रजानामित्यांह। गतिर्ह्येष प्रजानाम्। मतिः कवीनामित्यांह॥५३॥ पश्चमः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)

मतिह्येष केबीनाम्। सं देवो देवेनं सिवित्रा यंतिष्ट् स्॰ सूर्येणारुक्तेत्याह। अमुं

चैवाऽऽदित्यं प्रवग्यैं च स॰शास्ति। आयुर्दास्त्वमस्मभ्यं घर्मं वर्चोदा असीत्याह। आशिषेमेवेतामा शास्ते। पिता नोऽसि पिता नों बोधेत्यांह। बोघयंत्येवेनमैं। न

रुचितमवैक्षन्ते। रुचिताद्वे प्रजापीतेः प्रजा अंसृजत। प्रजानार् सृष्ट्यै। रुचितमवैक्षन्ते। रुचिताद्वे पर्जन्यो वर्षाते। वर्षुकः पर्जन्यो भवति। सं प्रजा प्रेयन्ते। रुचितमवैक्षन्ते। रुचितं वै ब्रह्मवर्चसम्। ब्रह्मवर्चिसिनो भवन्ति॥५६॥ नाभिर्दश्वमी। प्राणानेव यजंमाने दथाति। अथो दशाँक्षरा विराट्। अत्रे विराट्। विराजैवात्राद्यमवंरुन्ये। यज्ञस्य शिरौंऽच्छिद्यत। तद्देवा होत्रोभिः प्रत्येदयुः। ऋत्विजोऽवैक्षन्ते। पृता वै होत्रौः। होत्रोभिरेव यज्ञस्य शिरः प्रतिदधाति॥५५॥ वै तेऽवकाशा भवन्ति। पनिये दश्मः। नव् वै पुरुषे प्राणाः॥५४॥

757 यजुंर्वाचयति। प्रजायते। नास्यै प्रजां निर्दहति। त्वष्टीमती ते सपेयेत्यांह। सपािष्ड अश्विनौ हि देवानांमध्वर्यू आस्ताँम्। पूष्णो हस्ताँभ्यामित्यांह यत्यैं। आद्देऽदित्यै रास्राऽसीत्यांह यजुष्कृत्यै। इड् एह्यदित एहि सर्स्वत्येहीत्यांह। पृतानि वा अंस्यै देवनामानि। देवनामैरेवैनामाह्नयति। असावेह्यसावेह्यसावेहीत्योह। पृतानि प्रजां त्वंस्यै निदंहेत्। यत्रावेक्षेता न प्रजायेता नास्यै प्रजां निदंहेत्। तिर्म्कृत्य ऋतवो हि शिरः सर्वपृष्टे प्रवृण्त्यनिपद्यमानुमित्योह गुतेत्योह शार्दावृवास्मो ऋतू केल्पयति रुन्धे कर्वोनामित्योह प्राणाः द्वस्यं त्वा सिवृतुः प्रसुव इति रशुनामादेते प्रसूत्ये। अश्विनौबृहुभ्यामित्याह। अधीयन्तोऽवेंक्षन्ते। सर्वमायुंर्यन्ति। न पत्यवेंक्षेत। यत्पत्यवेक्षेत। प्रजायेत वा अस्यै मनुष्यनामानि॥५८॥ पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्) प्रतिंदधाति भवन्ति वाचयति चत्वारि च॥**■** मुजाः मुजायन्ते॥५७॥

मुनुष्युनामैरेवेनामाह्नयति। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्डा ऋतवंः। ऋतुभिरेवेनामाह्नयति

पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

अदित्या उष्णीषंमुसीत्योह। यथायजुरेवैतत्। वायुरंस्यैड इत्योह। वायुदेवत्यों वै वृथ्सः। पूषा त्वोपावंसुज्ञित्योह। पौष्णा वै देवतंया पृशवंः॥५९॥

स्वयैवेनं देवतंयोपावंसुजति। अक्षिभ्यां प्रदांपयेत्यांह। अक्षिनो वै देवानां भिषजौं। ताभ्यांमेवास्मे भेषजं केरोति। यस्ते स्तनंः शश्य इत्यांह। स्तौत्येवेनांम्। उस्रं घर्मे शृष्षोस्रं घर्मं पाहि घर्मायं शिष्षेत्यांह। यथां ब्रूयादमुष्में देहीति। तादगेव तत्। बृहस्पतिस्त्वोपं सीद्त्वित्यांह॥६०॥

मेध्यांनेवैनांन्करोति। विष्वुग्वृतो लोहितेनेत्यांह व्यावृंत्यै। अश्विभ्यां पिन्वस्व सरंस्वत्यै पिन्वस्व पूष्णे पिन्वस्व बृहस्पतंये पिन्वस्वेत्यांह। एताभ्यो ह्येषा देवताभ्यः पिन्वते। इन्द्राय पिन्वस्वेन्द्राय पिन्वस्वेत्यांह। इन्द्रमेव भागधेयेन

ब्रह्म वै द्वानां बृह्स्पतिः। ब्रह्मणैवैनामुपंसीदति। दानेवः स्थ पेरंव इत्याह।

तस्मादिन्द्रो देवतानां भूयिष्टभाक्तमः। गायुत्रोऽसि त्रेधुभोऽसि जार्गतम्सीति

समेर्यता द्विरिन्दायेत्यांह॥६१॥

पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

न् जूर्बाभ्यां वर्षाद्वयाता इति। इन्द्राक्षिना मधुनः सार्घस्येत्याह। अक्षिभ्यांमेव पूर्वाभ्यां वर्षद्वरोति। अथो अक्षिनांवेव भाग्धेयेन समर्धयति॥६२॥

घुमै पांत वसवो यजंता वडित्यांह। वसूनेव भांग्येयेन समंधयति। यद्वंषद्वर्यात्।

शफोपयुमानादेते। छुन्दोभिरेवैनानादेते। सृहोर्जो भागेनोपुमेहीत्योह। ऊर्ज एवैनं मागुमेकः। अश्विनौ वा एतद्युज्ञस्य शिरंः प्रतिदर्धतावब्रूताम्। आवाभ्यामेव

यातयांमाऽस्य वषद्वारः स्यौत्। यत्र वषद्वयीत्। रक्षार्शिसे युज्ञ १ हेन्युः। वर्डित्योह। पुरोक्षेमेव वषद्वरोति। नास्ये यातयांमा वषद्वारो भवंति। न युज्ञ १ रक्षार्शिस

द्यन्ति॥६३॥

स्वाहाँ त्वा सूर्येस्य रृश्मये वृष्टिवनीये जुहोमीत्योह। यो वा अस्य पुण्यों रृश्मिः। स वृष्टिवनिः। तस्मां पुवैनं जुहोति। मधुं हविर्सीत्योह। स्वदयंत्येवेनमैं।

सूर्यस्य तपंस्तपेत्यांह। यथायजुरेवैतत्। द्यावांपृथिवीभ्यां त्वा परिगृह्यामीत्यांह। द्यावांपृथिवीभ्यांमेवेनं परिगृह्वाति॥६४॥

अन्तरिक्षेण् त्वोपंयच्छामीत्याह। अन्तरिक्षेणेवैन्मुपंयच्छति। न वा एतं पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

मंनुष्यों भर्तुमर्हति। देवानां त्वा पितृणामनुमतो भर्तु शकेयमित्याह।

ट्वेरेवेनं पितुभिरनुमत आदेते। वि वा एंनमेतदंर्धयन्ति। यत्पश्चात्प्र पुरो जुह्वति। तेजोऽसि तेजोऽनु प्रेहीत्याह। तेजं एवास्मिन्दर्ह दिविस्पृङ्घा मां हि॰सीरन्तरिक्षस्पुङ्घा मां हि॰सीः पृथिविस्पुङ्घा

यत्पश्चात्प्रवृज्य

शिरो वा एतद्यज्ञस्ये। यत्प्रेवग्येः। आत्मा वायुः। उद्यत्ये वातनामान्याह। आत्मत्रेव युज्ञस्य शिरः प्रतिद्धाति। अनेवानम्। प्राणानार् सन्तेत्यै। पञ्चाह॥६६॥

सुवंरिस सुवंने यच्छु दिवं यच्छ दिवो मां पाहीत्यांह। आशिषंमेवेतामा शाँस्ते।

हि॰सीरित्याहाहि॰सायै॥६५॥

पाङ्गो युज्ञः। यावानेव युज्ञः। तस्य शिर्ः प्रतिदधाति। अग्रये त्वा वसुमते

रृद्रवंते स्वाहेत्योह। चुन्द्रमा वै सोमों रृद्रवान्। तस्मां एवैनं जुहोति। वर्षणाय

स्वाहेत्यांह। असौ वा आंदित्यौऽग्निर्वसुमान्। तस्मां एवैनं जुहोति। सोमांय त्वा

761 पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

विभुमान्प्रेभुमान् बाजीबान्। तस्मां एवैनं जुहोति। युमायु त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहेत्योह। प्राणो वै युमोऽङ्गिरस्वान्पितृमान्॥६८॥

दशाक्षरा विराट। अत्रं विराट। विराजेवात्राद्यमवंरुन्ये। गैहिणाप्यां वे

तस्मां एवैनं जुहोति। एतान्यं एवैनं देवतान्यो जुहोति। दश् सम्पंद्यन्ते।

खाः सुवगै लोकमायन्। तद्रौहिणयों गैहिण्त्वम्। यद्रौहिणौ भवंतः।

गैहिणाभ्यांमेव तद्यजंमानः सुवर्गं लोकमंति। अह्ज्योंतिः केतुनां जुषता सुज्योतिज्योंतिषाङ् स्वाहा रात्रिज्योंतिः केतुनां जुषता सुज्योतिज्योंतिषाङ्

स्वाहेत्यांह। आदित्यमेव तद्मुष्मिँ श्रोकेऽह्नां प्रस्ताँ द्दाधार। रात्रिया अवस्ताँत्।

विश्वदैय्यावते स्वाहेत्योह। ब्रह्म वै देवानां बृह्स्पतिः। ब्रह्मणैवैनं जुहोति। सावित्रे त्वेभुमते विभुमतै प्रभुमते वाजविते स्वाहेत्याह। संवृथ्सरो वै सीवेतर्भुमान्

अफ्सु वै वर्रण आदित्यवान्। तस्मां एवैनं जुहोति। बृहस्पतंये त्वा

त्वाऽऽदित्यवंते स्वाहेत्यांह॥६७॥

762 पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

मुनुष्युनामानि पुशवंः सीदुत्वित्याहेन्द्रायेत्यांहार्धयति घ्रन्ति गृह्यात्यहि<sup>५</sup>सायै पञ्चाऽहादित्यवंते स्वाहेत्यांह पितृमानेति चुत्वारि

तस्मोदसावोदित्योऽमुष्मिँ श्रोकेऽहोरात्राभ्यां धृतः॥६९॥

भागपेयेन समर्पयति। अनु वां द्यावापृथिवी मर्सातामित्याहानुमत्यै। स्वाहेन्द्राय स्वाहेन्द्राविडित्याह। इन्द्राय हि पुरो हूयते। आश्राव्याह घर्मस्य यजेति। वर्षद्वते

जुहोति। रक्षेसामपेहत्यै। अनुयजति स्वगाकृत्यै। घर्ममपातमिश्वनेत्यांह॥७१॥

अश्विना घमै पांत॰ हार्दिबानमहंदिवाभिक्तिभिरित्यांह। अश्विनांबेब

समर्धयति। स्वाह्यऽग्रये यज्ञियांय शं यजुर्भिरित्यांह। अग्येवेनं घारयति। अथो

हिविर्वाकंः॥७०॥

स्वाहांकृतस्य घुर्मस्य मधौः पिबतमिश्वनेत्यांहा अश्विनांवेव भांगधेयेन

एवैनं पाति। विश्वां देवानयाडिहेत्याह। विश्वानेव देवान्नांगधेयेन समधेयति।

विश्वा आशां दक्षिणसदित्यांह। विश्वांनेव देवान्प्रींणाति। अथो दुरिष्ट्या

पूर्वमेवोदितम्। उत्तेरेणामिगृणाति। अनु वां द्यावापृथिवी अमर्सातामित्याहानुमत तं प्राच्यं यथावण्णमो दिवे नमेः पृथिच्या इत्योह। यथायजुरेवैतत्। दिविधो इमं यज्ञं यज्ञमिमं दिविधा इत्योह। सुवर्गमेवैनं लोकं गमयति। दिवे गच्छान्तरिक्षं गच्छ पृथिवीं गच्छेत्योह। एष्वेवैनं लोकेषु प्रतिष्ठापयति। पश्चे 763 दिक्ष्वेवेनं प्रतिष्ठापयति। देवान्धेर्मपान्नोच्छ पितृन्धेर्मपान्गच्छेत्योह। उभयैष्वेवेनं प्रतिष्ठापयति। यस्पिन्वेते। वर्षुकः प्रजन्यो भवति। तस्मास्पिन्वेमानः पुण्येः। र्वेचत्राकेः। अथो खलुं। सर्वो अनु दिशंः पिन्वयति। सर्वो दिशः समेधन्ते। यत्रत्यक्। तन्मंनुष्यांणाम्। यदुदङ्गं। तदुदाणाम्। प्राश्रमुदंश्चं पिन्वयति। यत्प्राङ्गिन्वते। तद्देवानाम्। यद्देष्ट्रिणा। तत्पितृणाम्॥७३॥ . अन्तःप्रिषि पिन्वयति॥७४॥ पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्) प्रदिशो गच्छेत्यांह॥७२॥

तेजुसोऽस्केन्दाय। इषे पीपिह्यूर्जे पीपिहीत्याह। इषेमेवोर्जं यजमाने दयाति।

प्राणे सोंदयाम्यमुना सह निर्धं गच्छेति ब्रूयाद्यं द्विष्यात्। यमेव द्वेष्टिं तेनैन ॰ सह निर्धं गमयति। पूष्णे शरेसे स्वाहेत्याह। या एव देवता हुतमांगाः। ताभ्यं ताभ्यं एवैनं जुहोति। प्रतिरेभ्यः स्वाहेत्याह। प्राणा वै देवाः प्रतिराः। तेभ्यं एवैनं जुहोति। द्यावांपृथिवीभ्याङ् स्वाहेत्याह। द्यावांपृथिवीभ्यांमेवैनं जुहोति। पितुभ्यों घर्मपेभ्यः स्वाहेत्यांह। ये वै यज्वानः। ते पितरों घर्मपाः। तेभ्यं एवैनं जुहोति॥७७॥ त्वा भूत्ये त्वेत्याह। युथायुजुरेवैतत्। धर्मासि सुधर्मा में न्युस्मे ब्रह्माणि <u> पीपि</u>हीत्यांह। आ<u>त्</u>यननं <u>ए</u>वेतामाशिष्माशीस्ते। त्विष्यै त्वा द्युम्नायं त्वेन्द्रियायं ब्रह्मत्रेवेनं प्रतिष्ठापयति। नेत्वा वातेः स्कन्दयादिति यद्योभेचरैत्। अमुष्ये त्वा यजमानाय पीपिहीत्योह। यजमानायैवेतामाशिष्माशास्ते। मह्यं ज्येष्माय रुवैनं जुहोति। ग्रावेभ्यः स्वाहेत्यांह। या पृवान्तरिक्षे वार्चः॥७६॥ पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्) गारयेत्याह॥७५॥

कुदायं कुद्रहोंत्रे स्वाहेत्योह। कुद्रमेव भांगुयेयेन समंधयति। सुर्वतः समनिक्ति।

765 पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

आयुरेवास्मिन्वर्चो दधाति। अपीपरो मा रात्रिया अह्नो मा पाह्येषा ते अग्ने समित्तया समिध्यस्वाऽऽयुर्मे दा वर्चसा माऽऽञ्चीरित्याह। आयुरेवास्मिन्वर्चो दधाति। अग्निज्योतिज्योतिराग्नः स्वाहा सूर्यो ज्योतिज्यीतिः सूर्यः सुर्वते एव रुद्रं निरवेदयते। उदंश्चं निरंस्यति। एषा वै रुद्रस्य दिक्। स्वायांमेव दिशि रुद्रं निरवेदयते। अप उपेस्पृशति मेध्यत्वाये। नान्वीक्षेत। यद्न्वीक्षेत॥७८॥ चक्षुंरस्य प्रमायुंकङ् स्यात्। तस्मान्नान्वीक्ष्यंः। अपीपरो माऽह्यो रात्रियै होतव्यमग्रिहोत्रा(३)त्र मा पाद्येषा ते अग्ने समितया समिध्यस्वायुमें दा वर्चसा माऽऽश्रीरित्याह। स्वाहेत्यांह। यथायजुरेवेतत्। ब्रह्मवादिनो वदन्ति।

होतव्या(३)मिति॥७९॥

यद्यजुषा जुहुयात्। अयंथापूर्वमाहुंती जुहुयात्। यत्र जुंहुयात्। अग्निः परांभवेत्। भूः स्वाहेत्येव होतव्यम्। यथापूर्वमाहुंती जुहोति। नाग्निः परांभवति। हुत १ हविमधुं हविरित्याह। स्वदयंत्येवेनम्। इन्द्रंतमेऽग्नावित्यांह॥८०॥

992 आशिषेमेवेतामा शाँस्ते। स्वधाविनोऽशीमहिं त्वा मा मां हि॰सीरित्याहाहि॰सायै। तेजंसा वा एते व्यध्यन्ते। ये प्रवग्येण वर्गन्ते। प्राश्जेन्ति। तेजं पुवात्मन्दंधते॥८१॥ प्राणो वा इन्द्रंतमोऽग्रिः। प्राण एवैनमिन्द्रंतमेऽग्रौ जुंहोति। पिता नोऽसि मा मा हि ॰ सीरित्याहाहि ॰ सायै। अश्यामं ते देव घर्म मधुमतो बाजवतः पितुमत इत्याह। पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

संबथ्सरं न मार्समंश्जीयात्। न रामामुपेयात्। न मुन्मयेन पिबेत्। नास्यं राम उच्छिष्टं पिबेत्। तेज एव तथ्सङ्श्यीते। देवासुराः संयेता आसन्। ते देवा विजयमुप्यन्तः। विभ्राजि सौये ब्रह्मसन्त्रदयत। यक्किं चं दिवाकीत्यम्॥ तेतदेतेनेव ब्रतेनांगोपायत्। तस्मादेतद्वतं चार्यम्॥ तेजंसो गोपीथाये। तस्मादेतानि

यजूरंषि विभाजः सौर्यस्येत्यांहुः। स्वाहाँ त्वा सूर्यस्य र्शिभभ्य इति प्रातः स॰सोदयति। स्वाहौ त्वा नक्षेत्रेभ्य इति सायम्। पृता वा पृतस्ये देवताः।

जुहोत्यु-वीक्षेत अकर्षियेतयोह प्रदिशों गुच्छेत्योह पितृणामंन्तःपरिषि पिन्वयति धार्येत्यांहु बाचों घर्मपास्तेभ्यं पृवैनं ताभिरेवेन ५ समर्थयति॥८२॥

होत्ब्या(३)मित्युग्रावित्यांह दघतेऽगोपायथ्मुप्त चं॥**—** 

767 पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

घर्म या ते दिवि शुगिति तिस आह्तीर्जुहोति। छन्दोंभिर्वास्येभ्यो

लोकेन्यः शुचमवं यजते। इयत्यमें जुहोति। अथयत्यथयेति। त्रयं इमे लोकाः। अनु नोऽद्यानुमतिरित्याहानुमत्यै। दिवस्त्वां पर्स्पाया इत्याह। दिव एवेमाँस्लोकान्दांधार। ब्रह्मणस्त्वा पर्स्पाया इत्याह॥८३॥

प्राश्चमुद्दांसयति। तस्मांद्सावांदित्यः पुरस्तादुदेति। शफोपयमान्यवित्रांणि धृष्टी

प्राणान्दांधार। शिरो वा एतद्यज्ञस्यं। यत्प्रेवग्यंः। असौ खलु वा आंदित्यः प्रेवग्येः। तं यद्दंशिणा प्रत्यश्चमुदंश्वमुद्दासयैत्। जिहां य्जस्य शिरो हरेत्। प्राश्चमुद्दांसयिति। पुरस्तांदेव य्जस्य शिरः प्रतिद्धाति॥८४॥

एष्वेव लोकेषु प्रजा दांधारा प्राणस्यं त्वा पर्स्पाया इत्याहा प्रजास्वेव

इत्युन्ववहरन्ति। सात्मीनमेवेन् सतेनुं करोति। सात्माऽमुष्पिंत्रोके भेवति। य

रुवं वेदं। औदुंम्बराणि भवन्ति। ऊग्वीं उंदुम्बरंः। ऊर्जमेवावंरुन्धे। वर्त्मना वा

अन्बित्यं॥८५॥

युज्ञ रक्षार्सेस जिघारसन्ति। साम्रौ प्रस्तोताऽन्ववैति। साम् वै रक्षोहा

रक्षेसामपेहत्यै। त्रिर्मिधनमुपैति। त्रयं इमे लोकाः। एभ्य एव रक्षाङ्कस्यपेहन्ति। पुर्रुषः पुरुषो निधनमुपैति। पुरुषः पुरुषो हि

त्र्धंसामपंहत्ये॥८६॥

यत्पृंथिव्यामुंद्वासयेंत्। पृथिवी॰ शुचाऽर्पयेत्। यद्पन्सु। अपः शुचार्पयेत्। यदोषंधीषु। ओषंधीः शुचाऽर्पयेत्। यद्वनुस्पतिषु। वनुस्पतीञ्छुचार्पयेत्। हिरंण्यं

अमृतं एवैन् प्रतिष्ठापयति। वृत्नाुरीसे शुं युधाया इति त्रिः पीरिषिश्चन्पर्यति।

निषायोद्वांसयति। अमृतं वै हिरंण्यम्॥८७॥

त्रिवृद्वा आग्रः। यावानेवाग्रिः। तस्य शुच्ं शमयति। त्रिः पुनः पर्येति

यट्थ्सम्पद्यन्ते। पृद्धाः सृत्वेः। सृतुभिरेवास्य शुच<sup>५</sup>

स्रक्तिनॉभिंश्ऋतस्येत्याह॥८८॥

ड्यं वा ऋतम्। तस्यो एष एव नाभिः। यत्प्रेवग्यैः। तस्मोदेवमोह। सदो

पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

768

69/ वृषा हिरिः। महान्मित्रो न देर्श्वत इत्योह। स्तौत्येवैनेमेतत्। चिदिसि समुद्रयोनिरित्योह। स्वामेवैनं योनिं गमयिति। नमेस्ते अस्तु मा मां हिर्सोरित्याहाहिर्सायै। विश्वावेसुर सोम गन्यवीमत्योह। यदेवास्य कियमाण-स्यान्तर्यन्ति। तदेवास्यैतेना प्याययिति। विश्वावंसुर्भि तन्नो गुणात्वित्याह॥९१॥ रूपमेवास्यैतन्मेहिमान्॰ रन्तिं बन्युतां व्याचेष्टे। समृहमायुषा सं प्राणेनेत्याह। आशिषेमेवैतामा शास्ते। व्यंसौ यौऽस्मान्द्रिष्टि यं चं वयं द्विष्म इत्याह। अभिचार विश्वायुरित्यांह। सदो हीयम्। अप् द्वेषो अप् ह्वर् इत्यांह भातृंव्यापनुन्यै। घर्मैतत्तेऽत्रोमेतत्पुरीषमिति दुभ्रा मंधुमिश्रेणं पूरयति। ऊग्बी अन्नाद्यं दिधे। ऊर्जैवेनमन्नाद्येन समेर्धयति॥८९॥ अनंशनायुको भवति। य एवं वेदं। रन्तिनामांसि दिव्यो गन्युवं इत्याह। पुवास्यैषः। अचिकदृद्धृषा हरिरित्योह। वृषा होषः॥९०॥ पञ्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

पूर्वमेवोदितम्। उत्तरेणामि गुंणाति। धियो हिन्बानो धिय इन्नो अव्यादित्याह।

ऋत्नेवास्मे कल्पयति। प्राऽऽसाँ गन्युर्वो अमृतानि वोचदित्योह। प्राणा वा अमृताः। प्राणानेवास्मे कल्पयति। एतत्त्वं देव घर्म देवो देवानुपांगा इत्योह। देवो ह्येष सं देवानुपैति। इदम्हं मंनुष्यों मनुष्यांनित्यांह॥९२॥ पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

मनुष्यों हि। एष सन्मेनुष्यांनुपैतिं। ईश्वरो वै प्रवन्यमुद्दासयन्। प्रजां पृश्नस्योमपीथमंनुद्वासः सोमं पीथानुमेहि। सह प्रजयां सह रायस्पोषेणेत्यांहा प्रजामेव पश्चस्योमपीथमात्मन्यते। सुमित्रा न आप ओषंध्यः सन्त्वत्यांहा आशिषंमेवेतामा शास्ते। दुर्मित्रास्तस्में भूयासुयोऽस्मान्द्रिष्टि यं वं वयं द्विष्म इत्याहा। अभिवार एवास्यैषः। प्र वा एषोऽस्मान्नोकाञ्चवते। यः प्रवन्यमुद्वासयिते। उदुत्यं चित्रमिति सौरीभ्यांमुग्भ्यां पुनरेत्य गार्हेपत्ये जुहोति। अयं वै लोको गार्हेपत्यः। अस्मिन्नेव लोके प्रतितिष्ठति। असौ खलु वा आदित्यः सुवग् ना लोकः। यथ्सौरी भवंतः। तेनैव सुवगित्रािशिकान्नेति॥९३॥

ब्रह्मणस्त्वा पर्स्पाया इत्योह द्यात्यन्त्रित्यं रक्ष्म्वी रक्षेसामपेहत्ये वै हिरंण्यमाहार्धयति ह्यंष गुणात्वित्यांह मनुष्यांनित्यांहास्येषोंऽष्टौ

पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

प्रजापेति वै देवाः शुक्रं पयोऽदुह्नम्। तदैभ्यो न व्येभवत्। तद्गिर्यव्यकरोत्। तानि शुक्रियाणि सामौन्यभवन्। तेषां यो रसोऽत्यक्षेरत्। तानि शुक्रयज् १ ष्येभवन्। शुक्तियाणां वा पृतानि शुक्तियाणि। सामप्यसं वा पृतयोर्न्यत्। देवानांम्न्यत्पयंः

यद्गोः पयंः॥९४॥

तथ्साम्नः पर्यः। यद्जायै पर्यः। तद्दवानां पर्यः। तस्माद्यत्रेतैर्यजुर्भिश्चरंन्ति। तत्पर्यसा चरन्ति। प्रजापेतिमेव तत्पर्यसाऽत्राद्येन समर्धयन्ति। एष ह त्वे साक्षात्प्रंबग्धं भक्षयति। यस्यैवं विदुषेः प्रवृग्धेः प्रवृज्यते। उत्तर्वेद्यामुद्द्योस-येतेजंस्कामस्या तेजो वा उंत्तरवेदिः॥९५॥

तेजः प्रवग्यः। तेजंसैव तेजः समंधयति। <u>उत्तर्वेद्यामुद्</u>दांसयेदत्रेकामस्य। शिरो वा एतद्यज्ञस्ये। यत्प्रेवग्येः। मुखंमुत्तरवेदिः। शीर्ष्णेव मुख् ् सन्दंघात्यत्राद्याय। अत्राद एव भवति। यत्र खलु वा एतमुद्दांसितं वयारंसि प्यसिते। परि वे तार

772 पश्चमः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)

पुरस्ताद्वा एतक्ष्योतिरुदेति। तत्पुश्चात्रिम्नौचति। स्वामेवेनु योनिमनूद्वांसयति। अपां

तस्मोदुत्तरवेद्यामेवोद्द्रोसयेत्। प्रजानौं गोपी्थाये। पुरो वां पृश्राद्वोद्द्रांसयेत्।

समां प्रजा वयाङ्स्यासते॥९६॥

मध्य उद्वांसयेत्। अपां वा एतन्मध्याष्ट्योतिंरजायत। ज्योतिः प्रवग्यैः। स्वयैवैनं

योनौ प्रतिष्ठापयति॥९७॥

तदुद्वांसयेद्वृष्टिकामस्या पृता वा अपामंनूज्झावयों नामं। यद्दर्भाः। असौ खलु वा आदित्य इतो वृष्टिमुदीरयति। असावेवास्मां आदित्यो वृष्टिं नियंच्छति। ता

ड्दम्हमुस्यामुष्यायुणस्यं शुचा प्राणमपि दहामीत्याह। शुचैवास्यं

प्राणमपि दहति। ताजगार्तिमाच्छीते। यत्रं दुर्भा उपदीकंसन्तताः स्युः।

यं द्विष्यात्। यत्र स स्यात्। तस्यां दिश्युद्वांसयेत्। एष वा अग्निवैश्वान्यः। यत्प्रेवग्र्यः। अग्निनैवैनै वैश्वान्रणामि प्रवेर्तयति। औदुम्बर्याष्ट्र शाखांयामुद्वांसयेत्।

ऊग्र्वा उंदुम्बरेः। अत्रं प्राणः। शुग्धर्मः॥९८॥

773

आपो नियंता धन्वंना यन्ति॥९९॥ गोः पर्यं उत्तरबेदिरांसते स्थापयति घुमों यन्ति॥🕳 पश्चमः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)

प्रजापेतिः सम्भियमाणः। सुम्राट्थ्सम्भृतः। घुर्मः प्रबृक्तः। मृहाबीर उद्वासितः

असौ खलु बावैष आंदित्यः। यत्प्रेवग्यैः। स पृतानि नामाैन्यकुरुता य पृबं वेदे। विदुरेनं नाम्रौ। ब्रह्मवादिनो वदन्ति॥१००॥

यो वै वसीया श्सं यथानाममुप्चरीते। पुण्याति वै स तस्में कामयते। पुण्यातिमस्मे कामयन्ते। य पृवं वेदं। तस्मोदेवं विद्वान्। घमं इति दिवाऽऽचेक्षीत। सम्राडिति नक्तमा। पृते वा पृतस्ये प्रिये तनुवा। पृते अस्य प्रिये नामनी। प्रिययैवेनं तनुवा॥१०१॥

प्रियेण् नाम्ना समेधयति। कोतिरंस्य पूर्वागेच्छति जनतामायृतः। गायुत्री देकेस्योऽपौक्रामत्। तां देवाः प्रवृग्येंणेवानु व्यंभवन्। प्रवृग्येंणाप्रुवन्।

यचंतुर्वि रशातिकृत्वेः प्रवृग्यं प्रवृणक्ति। गायुत्रीमेव तदनु विभंवति। गायुत्रीमाप्रोति।

774 वसंबः प्रवृक्तः। सोमोऽभिकोर्यमाणः। आष्ट्रिनः पर्यस्यानीयमाने। मारुतः कथन्। पौष्ण उदन्तः। सार्यस्वतो विष्यन्दंमानः। मैत्रः शरो गृहीतः। तेज उद्यंतः। पूर्वाऽस्य जनं यतः कार्तिर्गच्छति। वैश्वदेवः सश्संत्रः॥१०२॥ पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

बायुहियमाणः। प्रजापेतिर्ह्यमानो बाग्युतः॥१०३॥

असौ खकु वावैष आंदित्यः। यत्प्रंवग्रीः। स एतानि नामाैन्यकुरुत। य एवं वेदं। विदुरेनं नाम्ना। ब्रह्मवादिनो वदन्ति। यन्मुन्मयमाहीतें नाश्जुतेऽथी। कस्मांदेषौऽश्जुत इति। वागेष इति ब्र्यात्। वाच्येव वाचे दधाति॥१०४॥

तस्मांदश्जुते। प्रजापंतिर्वा एष द्वांदश्या विहितः। यत्प्रंवग्यः। यत्प्रागंवकाशेभ्यः॥ तेनं प्रजा अंसुजता अवकाशैर्दवासुरानंसुजता यद्ध्वीमंवकाशेभ्यः। तेनात्रीम-स्जता अत्रं प्रजापंतिः। प्रजापंतिवविषः॥१०५॥ बद्नि तनुबा सरसेन्नो ह्यमांनो बाग्धुतो देघात्येषः॥■

 $\frac{1}{2}$ 

स्विता भूत्वा प्रथमेऽहुन्मवृज्यते। तेन कामार् एति। यद्दितीयेऽहंन्मवृज्यते। अग्निर्भूत्वा देवानेति। यत्तृतीयेऽहंन्मवृज्यते। वायुर्भूत्वा प्राणानेति। यचंतुर्थेऽहंन्मवृज्यते 775 पश्चमः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

आदित्यो भूत्वा रृश्मीनेति। यत्पेश्रुमेऽहंन्प्रबृज्यतें। चृन्द्रमां भूत्वा नक्षेत्राण्येति॥१०६॥

यत्ष्षेऽहंन्प्रवृज्यते। ऋतुर्भृत्वा संवथ्सरमेति। यथ्संप्रमेऽहंन्प्रवृज्यते। धाता भूत्वा शक्नेरीमेति। यदंष्टमेऽहंन्प्रवृज्यते। बृह्स्पतिर्भृत्वा गांयत्रीमेति। यत्रेवमेऽहंन्प्पवृज्यते। मित्रो भूत्वा त्रिवृतं हुमाँस्रोकानेति। यद्दंशमेऽहंन्प्रवृज्यते। वर्षणो भूत्वा विराजमिति॥१०७॥

यदेकाद्शेऽहेन्प्रवृज्यतें। इन्द्रों भूत्वा त्रिष्टुभंमेति। यद्दांद्शेऽहंन्प्यवृज्यतें। सोमों भूत्वा सुत्यामेति। यत्पुरस्तांदुप्सदां प्रवृज्यतें। तस्मांदितः परांड्ग्मूंश्चोकाङ्-

स्तपेत्रेति। यदुपरिष्टादुपुसदौ प्रवृज्यतै। तस्मांदुमुतोऽर्वाङ्गिमाँस्रोकाङ्स्तपेत्रेति। य एवं वेदे। ऐव तेपति॥१०८॥

नक्षंत्राण्येति वि्राजमिति तपति॥■

ॐ शं नुस्तन्रो मा हांसीत्॥ ॐ शान्तिः शान्तिः॥

पश्चमः प्रश्नः (तैतिरीय आरण्यकम्)



षष्ठः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

## | d8: 72: |

ॐ सन्त्वां सिश्चामि यजुषां प्रजामायुर्धनं च॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

प्रेयुवा सं प्रवतो महीरनु बहुभ्यः पन्थामनपस्पशानम्। वैवस्वत सङ्मनं

जनोनां युमः राजानः हविषां दुवस्यता इदं त्वा वस्नं प्रथमन्वागुत्रपैतदूह

्र इमो युनज्मि ते बृही असुनीथाय बोढवै। याभ्यां यमस्य सादेन सुकृतां बापि गच्छतात्। पूषा त्वेतश्च्यांवयतु प्रविद्वाननंष्टपशुभुवेनस्य गोपाः। स त्वेतेभ्यः परिददात्पितृभ्योऽग्निर्देवेभ्यः सुविदत्रेभ्यः। पूषेमा आशा् अनुवेद सर्वाः सो अस्मा र यदिहाबिभः पुरा। इष्टापूर्तमनु सम्पेश्य दक्षिणां यथां ते दुनं बेहुधा विबेन्युषु। अभेयतमेन नेषत्। स्वस्तिदा अधीणेः सर्ववीरोऽप्रेयुच्छन्पुर एंतु प्रविद्वान्॥१॥

आयुर्विश्वायुः परिपासति त्वा पूषा त्वां पातु प्रपंथे पुरस्तांत्। यत्राऽऽसंते सुकृतो यत्र ते युयुस्तत्रे त्वा देवः संविता देधातु। भुवेनस्य पत इद॰ हविः।

उत्ते -अग्नये रियमते स्वाहाँ। पुरुषस्य सयाव्यपेद्घानि मृज्महे। यथां नो अत्र

षष्ठः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

शरीरेण महीमिहि स्वधयेहि पितृनुपं प्रजयाऽस्मानिहावेह। मैवं माङ्र स्ता प्रियेऽहं देवी सती पितृलोकं यदैषि। विश्ववांग् नर्भसा संव्ययन्त्युगौ नो लोकौ

नयेसाऽभ्यावंबृथ्स्व॥२॥

नापंरः पुरा जरम् आयीता पुरुषस्य सयावरि वि तै प्राणमीस स्नसम्।

इयं नारी पतिलोकं वृंणाना निपंद्यत उपं त्वा मर्त्य प्रेतमा। विश्वं पुराणमन् पालयंन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं वेह धेहि। उदीर्ष्वं नार्यभि जीवलोकमितासुमेतमुपंशेष एहि। हस्त्रग्राभस्यं दिधिषोस्त्वमेतत्पत्युंजीनित्वमिमे सम्बंभूव। सुवर्णे हस्तांदाददाना मृतस्यं श्रिये ब्रह्मणे तेजंसे बलाय। अत्रैव त्वमिह वयः सुशेवा विश्वाः स्पृथों अभिमातिजियम। धनुरहस्तांदाददाना मृतस्यं श्रिये क्षत्रायोजंसे बलाय। अत्रैव त्वमिह वयः सुशेवा विश्वाः स्पृथों अभिमातिजियम। धनुरहस्तांदाददाना मृतस्यं श्रिये विशे पृष्टे बलाय। अत्रैव

-अत्रेव -

त्वमिह वृय॰ सुशेवा विश्वाः स्पृषो अभिमीतीर्जयम॥३॥

778

देवपानस्तिस्मिन्देवा अमृतां मादयन्ताम्। अग्नेर्वम् पिर् गोभिर्व्ययस्व सं प्रोणुंष्व् मेदंसा पीवंसा व। नेत्वं धृष्णुर्हरंसा जर्ह्वणाणे दर्धिद्वपक्ष्यन्पर्धक्षयाते। मैनंमग्ने विदंहो माऽभिशोंचो माऽस्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम्। यदा श्रुतं करवो जातवेदोऽथेमेनं प्रहिणुतात्पितुभ्यः। श्रुतं यदा करिसे जातवेदोऽथेमेनं परिदत्तात्पितुभ्यः। यदा गच्छात्यसुनीतिमेतामथां देवानां वश्नीभेवाति। सूर्यं ते चक्षुंगच्छतु वातेमात्मा द्यां च गच्छं पृथिवीं च धर्मणा। अपो वां गच्छ यदि तत्रे ते हितमोषंधीषु प्रतितिष्ठा शरीरैः। अजो भागस्तपंसा तं तंपस्व तं ते शोचिस्तंपतु तं ते अर्चिः। यास्ते शिवास्तनुवों जातवेदस्ताभिवेहेम सुकृतां यत्रे लोकाः। अयं वै त्वमस्मादधि त्वमेतद्यं वै तदंस्य योनिरसि। वैश्वानरः पुत्रः पित्रे लोककुञ्जातवेदो वहेम सुकृतां यत्रे लोकाः॥४॥ ड्ममंग्ने चम्सं मा विजींह्नरः प्रियो देवानांमुत सोम्यानांम्। एष यश्चम्सो षष्टः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

वृद्वानुभ्यावेवृथ्स्वाभिमांतीर्जयम् शरीरैश्रुत्वारि च॥**≖** 

780 य पृतस्यं पथो गोप्तार्स्तेभ्यः स्वाहा य पृतस्यं पथो रेक्षितार्स्तेभ्यः स्वाहा य पृतस्यं पथोभिऽरीक्षेतार्स्तेभ्यः स्वाहाऽऽख्यात्रे स्वाहोऽपाख्यात्रे षष्टः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

यमत्र

स्वाह्य

स्वाहोऽभिलालेपते स्वाहोऽपुलालेपते स्वाहाऽभ्रये कर्मकृते

. जायतां

नाधोमस्तस्मै स्वाहाँ। यस्ते इध्मं जमरेथ्सिष्विदानो मूर्धानं वात तपेते त्वाया। दिवो विश्वस्माथ्सीमघायत उरुष्यः। अस्मात्त्वमधि जातोऽसि त्वद्यं जायतां पुनः। अग्नये वेश्वानुरायं सुवर्गायं लोकाय स्वाहाँ॥५॥

मामुदानंडपामुपस्थे महिषो वेवधी इदं त एकं पर ऊंत एकं तृतीयेन ज्योतिषा संविधास्व। संवेशनस्तनुवै चारुरेधि प्रियो देवानां पर्मे सधस्थे। नाके सुपर्णमुप् यत्पतेन्ते हृदा वेनन्तो अभ्यवेक्षत त्वा। हिरंण्यपक्षं वर्षणस्य दूतं युमस्य योनों

प्र केतुनां बृह्ता भौत्युग्निराविविश्वांनि वृष्मो रोरवीति। दिवश्चिदन्तादुप

य एतस्य त्वत्पश्रं॥■

शकुनं भुंरुण्युम्। अतिद्रव सारमेयौ थानौ चतुर्क्षौ शृबलौ साधुनां पृथा। अथां

781 षष्टः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

पितृन्थ्सुविदत्रा अपीहि यमेन ये संघमादं मदेन्ति। यौ ते श्वानौ यमरक्षितारौ चतुर्क्षौ पिथ्रिक्षी नृचक्षेसा। ताभ्या रंगज्न्परि देह्येन इंस्वस्ति चौस्मा अनमीवं

चे धेहि॥६॥

रेमष्वमुत्तिष्ठत प्रतेरता सखायः। अत्रां जहाम ये असूत्रश्रेवाः शिवान् वयमपि सुवर्गताः। तपो ये चिक्रिरे महत्ताः श्रिदेवापि गच्छतात्। अश्मन्वती रेवतीः स॰

वाजानुत्रेम॥७॥

यद्वे देवस्यं सवितुः पवित्रः सहस्रधारं वितंतम्न्तरिक्षे। येनापुंनादिन्द्रमनातिमात्ये तेनाहं मार सर्वतेनुं पुनामि। या राष्ट्रात्पृत्रादप् यन्ति शाखां अभिमृता

सूर्यांय पुनंदिता बसुमचिह भद्रम्। सोम एकैभ्यः पवते घृतमेक उपांसते। येभ्यो मधु प्रधाविति ताङ्श्विदेवापि गच्छतात्। ये युध्यन्ते प्रधनेषु शूरोसो ये तंनुत्यज्ञाः। ये वां सहस्रेद्धिणास्ताङ्श्विदेवापि गच्छतात्। तपंसा ये अनाधृष्यास्तपंसा ये

782 षष्ठः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

स×सृजाथ। उद्वयं तर्मसम्परि पश्यन्तो ज्योतिरुत्तेरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगेन्म

ज्योतिंकत्मम्। थाता पुनातु सिब्ता पुनातु। अग्रेस्तेजंसा सूर्यस्य वर्चसा॥८॥

नृपतिमिच्छमानाः। घातुस्ताः सर्वाः पर्वनेन पूताः प्रजयास्मात्रय्या वर्चसा

यन्त्वमेग्ने समदेहस्त्वमु निर्वापया पुनेः। क्याम्बूरत्रे जायतां पाकदूर्वा व्येत्कशा। शीतिके शीतिकावति ह्वादुके ह्वादुकावति। मण्डुक्यां सुसङ्गमयेमङ् स्वीग्ने॰ शमये। शं ते घन्वन्या आपः शमुं ते सन्त्वनूक्याः। शं ते समुद्रिया आपः शमुं ते सन्तु

यन्ते अग्रिममंन्थाम बृषुभायेव पक्तेवे। इमन्त॰ शंमयामसि क्षीरेणं चोद्केनं च

वर्ष्याः। शं ते स्नवन्तीस्तुनुवे शमु ते सन्तु कृष्याः। शन्ते नीहारो वेर्षतु शमु

पृष्वाऽवशोयताम्॥ ९॥

अवं सुज पुनंरग्ने पितुभ्यो यस्त आहुंतश्चरंति स्वधाभिः। आयुर्वसांन उपं यातु शेष्×् सङ्गेच्छतां तुनुवां जातवेदः। सङ्गेच्छस्व पितुभिः सङ् स्वधाभिः समिष्टापूर्तेन

पर्मे व्योमन्। यत्र भूम्यै वृणसे तत्रं गच्छु तत्रं त्वा देवः संविता दंधातु। यत्ते कृष्णः शंकुन आंतुतोदं पिपीलः सर्पं उत वा क्षापंदः। अभ्रष्टद्विश्वांदनुणं कृणोतु सोमंश्र्य यो ब्राह्मणमाविवेशां उत्तिष्टातंस्तनुव्य सम्भंरस्व मेह गात्रमवंहा मा श्रित्मा यत्र भूम्यै वृणसे तत्रं गच्छु तत्रं त्वा देवः संविता दंधातु। इदं त एकं पूर ऊत एकं तृतीयेन ज्योतिषा संविशस्व। संवेशनस्तनुवे वार्ररिध प्रियो देवानां परमे स्धस्था। उतिष्ट प्रोहे प्रद्रवोकः कृणुष्व परमे व्योमन्। यमेन त्वं यम्यां संविदानोत्तमं नाकुमिधे रोहेमम्। अश्मंन्वती रेवतीयिहै देवस्य सिवितः 783 -पिवित्रं या राष्ट्राप्यत्रद्वयं तमेसस्परि धाता पुंनातु। अस्मात्त्वमधि जातौऽस्ययं त्वदधिजायताम्। अग्नये वैश्वान्रायं सुवर्गायं लोकाय् स्वाहाँ॥१०॥ षष्ठः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्) अवंशीयता॰ स्पस्थे पश्चं च॥🕳

आयांतु देवः सुमनांभिर्ष्टातिर्भिर्यमो हेवेह प्रयंताभिर्क्ता। आसींदता॰ सुप्रयतेह बुर्हिष्यूर्जाय जात्यै ममे शत्रुहत्यै। युमे इंब् यतमाने यदेतं प्रवाम्भर्न्मानुषा

784 देवयन्तेः। आसीदत्र्ः स्वमुं लोकं विदाने स्वासम्थे भेवतमिन्देवे नः। युमाय सोमरं सुनुत युमायं जुहुता हृविः। युमर हं युजो गेच्छत्युभ्रिद्तो अरंङ्कृतः। युमायं घृतवेद्धविजुहोत् प्र चं तिष्ठता स नो देवेष्वायंमद्दीर्घमायुः प्र जीवसौ। युमायं घृतवेद्धविजुहोत् प्र चं तिष्ठता स नो देवेष्वायंमद्दीर्घमायुः प्र जीवसौ। युमायं मधुमत्तम् राज्ञे हृव्यं जुहोतन। इदं नम् ऋषिभ्यः पूर्वेजेभ्यः पूर्वेभ्यः द्यौः पृथिवी दृढा। हिरण्यकक्ष्यान् सुधुरान् हिरण्याक्षानंयः श्रफान्। अश्वाननश्येतो दानं यमो राजाभि तिष्ठति। यमो दांधार पृथिवीं यमो विश्वमिदं जगेत्। यमाय सर्वेमित्रेस्थे यत्प्राणद्वायुर्सक्षितम्। यथा पञ्च यथा षड्यथा पञ्चे दशर्षयः। यमं योऽस्य कोष्य जर्गतः पार्थिवस्यैकं इद्वशी। यमं भंक्षुश्रवो गांय यो तजानप्रोध्यः। यमक्षायं भक्ष्युश्रवो यो राजानप्रोध्यः। येनापो नृद्यो धन्वानि येन त्रिकंद्रकेभिः पर्ताते षडुवीरेकमिद्धृहत्। गायुत्री त्रिष्टुष्छन्दारंसि सर्वा ता यो विद्याध्म ब्र्याद्ययेक ऋषिविजान्ते॥१२॥ षष्ठः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्) पथिकृष्यं:॥११॥

785 यम आहिता। अहेरहर्नथमानो गामश्चं पुरुषं जगंत्। वैवंस्वतो न तृंप्यति पश्चीमेमांनेवैर्यमः। वैवंस्वते विविच्यन्ते यमे राजीन ते जनाः। ये चेह सत्येनेच्छंन्ते य उ चानृंतवादिनः। ते राजित्रिह विविच्यन्तेऽथा येन्ति त्वामुपं। देवाःश्च ये ममस्यन्ति ब्राह्मणाःश्चापिवत्यति। यस्मिन्बुक्षे सुंपलाशे देवैः सम्प्रबंते यमः। षष्ठः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

संमुद्र श्वतर्धारमुथ्संब्यच्यमांनं भुवंनस्य मध्यै। घृतं दुहांनामदितिं जनायाग्ने मा हि९सीः पर्मे व्योमन्। अपेत वीत वि चं सर्पतातो येऽत्र स्थ पुराणा ये च

नूतेनाः। अहोभिर्द्धिरक्कुभिव्यंक्तं युमो दंदात्ववृसानंमस्मै। स्वितेतानि शरीराणि

पितामुहं प्रपितामहं बिभर्त्यिन्वेमाने। द्रफ्सश्चेंस्कन्द पृथिवीमनु द्यामिमं च

वैश्वानरे ह्विरिदं जुहोमि साहस्रमुध्सरं श्रातधारमेतम्। तस्मिनेष पितरं

अत्रो नो विश्पतिः पिता पुंराणा अनुवेनति॥१३॥

पृष्टिकृष्ट्यो विज्ञानुतेऽनु वेनति॥🕳

योनिमनु यश्च पूर्वः। तृतीयं योनिमनु स्श्चरंन्तं द्रफ्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः। ड्रम ॰

786

मृथ्वियै मातुरुपस्य आदंधे। तेभिर्युज्यन्तामघ्रियाः॥१४॥ षष्ठः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

शुनं वाहाः शुनं नाराः शुनं कृषतु लाङ्गंलम्। शुनं वंरत्रा बंध्यन्ताः शुनमष्ट्रामुदिङ्गय शुनांसीरा शुनमस्मासुं धत्तम्। शुनांसीराविमां वाचं यदिवि वंक्रशुः पयंः। तेनेमामुपं सिश्चतम्। सीते वन्दांमहे त्वाऽर्वाची सुभगे भवा यथां नः सुभगा सीसे यथां नः सुफला सीसा। सवितेतानि शरीराणि पृथिव्ये मातुरुपस्य आदेधे। तेभिरदिते शं भेव। विमुच्यव्वमष्ट्रिया देवयाना अतारिष्म तमेसस्यारमस्य। ज्योतिरापाम् सुवंरगन्म॥१५॥

प्र बाता बान्ति पृतयन्ति विद्युत उदोषंधीजिंहते पिन्वंते सुवंः। इरा विश्वंस्मै भुवंनाय जायते यत्पर्जन्यंः पृथिवीं १ रेत्साऽविति। यथां युमायं हार्म्यमवंपन्यश्चं मानुवाः। एवं वंपामि हार्म्यं यथासाम जीवलोके भूरयः। चितंः स्थ परिचितं ऊर्ज्वितेः श्रयध्वं पितरो देवता। प्रजापीतिर्वः सादयतु तयां देवतया। आप्यायस्ब

षष्ठः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

पृथिवीं त्वत्परीमं लोकं निद्धन्मो अहर रिषम्।

उत्ते तभ्रोमि

एषा ते यमसादेने स्वधा निधीयते गृहे। अक्षितिनांमे ते असौ। इदं पितुभ्यः प्रभेरेम ब्राहिदेंबेभ्यो जीवेन्त उत्तंर भरेम। तत्त्वेमारोहासो मेध्यो भवं यमेन त्वं यम्यां संविदानः। मा त्वां बृक्षौ सम्बाधिष्टां मा माता पृथिवि त्वम्। पितृन् हि यत्र गच्छास्येथांसं यम्राज्यै। मा त्वां बृक्षौ सम्बाधिष्यां सम्बाधिष्यां मा माता पृथिवी

सूपवञ्चना। माता पुत्रं यथांसिचाभ्येनं भूमि वृणु। उष्ठश्चमाना पृथिवी हि तिष्ठंसि सहस्रं मित् उप् हि श्रयंन्ताम्। ते गृहासों मधुश्चतों विश्वाहाँस्मे शर्णाः सन्त्वत्रे।

पातु निर्ऋत्या उपस्थै। उष्ट्रेश्चस्व पृथिवि मा विबाधिथाः सूपायनास्मे

मूमिमेतामुंरुव्यवंसं पृथिवी समुशेवाम्। ऊर्णम्रदा युवतिदक्षिणावत्येषा

स्थूणां पितरों घारयन्तु तेऽत्रां युमः सादंनाते मिनोतु। उपंसर्प

रुणीर्थाना हरिणीरर्जुनीः सन्तु धेनवंः। तिलेवध्सा ऊर्जमस्मै दुहांना विश्वाहां

सन्त्वनपस्पूरन्तोः॥१७॥

787

मुही। बैबस्बत हि गच्छोसि यमुराज्ये विराजसि। नुळं घ्रुवमारोहेतं नुळेन

पृथोऽन्विहि। स त्वं न्ळघ्नेवो भूत्वा सन्तंरु प्रत्रोत्तंर॥१८॥

स्वितेतानि शरीराणि पृथिकौ मातुरुपस्थ आदेधे। तेभ्यः पृथिवि शं भंव।

षड्डोता सूर्यं ते चक्षुंगच्छतु वार्तमात्मा द्यां च गच्छं पृथिवीं च धर्मणा। अपो वां गच्छु यदि तत्रं ते हितमोषंधीषु प्रतितिष्ठा शरीरेः। परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां यस्ते स्व इतेरो देवयानात। चक्षुंष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नेः प्रजाः रीरिषो मोत वीरान्। शं वातः शः हि ते घृणिः शमुं ते सन्त्वोषंधीः। कल्पेन्तां मे दिशः

शुग्माः। पृथिव्यास्त्वां लोके सांदयाम्युमुष्यु शर्मासि पितरों देवतां। प्रजापीतिस्त्वा सादयतु तयां देवतया। अन्तरिक्षस्य त्वा दिवस्त्वां दिशां त्वा नाकेस्य त्वा पृष्ठे

ब्रप्नस्यं त्वा विष्टपे सादयाम्युमुष्यु शर्मासि पितरों देवता। प्रजापेतिस्त्वा सादयतु

तयां देवतंया॥१९॥

अपूपवाँ-यृतवा ईश्वरुरेह सींदतूत्तभुवन् पृथिवीं द्यामुतोपरि। योनिकृतः

788

789 पष्टः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

परिददामि तस्यां त्वा मा देभन्यितरों देवतां। प्रजापीतस्त्वा सादयतु तयां देवतया। अपूपवाञ्कुतवान् क्षीरवान्दिधिवान्मधुमाः श्रुकरेह सींदतूत्तभुवन् पृथिवीं द्यामुतोपरिं। योनिकृतेः पिथिकृतेः सपर्यत ये देवानाः श्रुतभांगाः क्षीरभांगा दिधिभागा मधुभागा इह स्था एषा ते यमसादेने स्वधा निधीयते गृहेऽसौ। श्रताक्षेरा सहस्राक्षरायुताश्वराऽच्युताक्षरा ताः रंक्षस्व तां गोपायस्व तां ते परिंददामि तस्यां त्वा मा देभन्यितरों देवता। प्रजापीतस्त्वा सादयतु तयां पथिकृतेः सपर्यत ये देवानां घृतभांगा इह स्था एषा ते यमसादेने स्वृषा निधीयते गृहेऽसौ। दशाक्षरा ता॰ रक्षस्व तां गोपायस्व तां ते

अनेपस्फुरन्ती्रुरत्रं देवतंया द्वे चं॥🕳 देवतया॥२०॥

एतास्तै स्वधा अमृताः करोमि यास्ते धानाः पीर्किराम्यत्रा तास्ते यमः पितृमि

संविदानोऽत्रं घेनूः कामुदुषौः करोतु। त्वामर्जुनौषंधीनां पयौ ब्रह्माण् इद्विदुः। तासौँ

षष्ठः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

य एतस्यै दिशः प्रामेवन्नघायवो यथा तेनामेवान्युनेः। दुर्भाणाङ् स्तुम्बमाहेर त्वा मध्यादादेदे चुरुभ्यो अपिधातवे। दूर्वाणार्डं स्तुम्बमाहेरैतां प्रियतेमां ममे। ड्मां दिशं मनुष्योणां भूयिष्ठानु वि रोहतु। काशांनाङ् स्तम्बमाहेर् रक्षेसामपेहत्यै

थ रुपारेच पुरास्त क्यान्। अन्वस्ये मूले जीवादनु काण्डुमधो फलम्॥२१॥ पितृणामोषेधीं प्रियाम्। अन्वस्ये मूले जीवादनु काण्डुमधो फलम्॥२१॥ . भिर्मान्सिक्त कर्मि सन्त

लोकं पृंण ता अंस्य सूदंदोहसः। शं वातः श्र॰ हि ते घृणिः शमुं ते सुन्त्वोषंधीः। कल्पन्तां ते दिशः सर्वाः। इदमेव मेतोऽपंगमातिमाराम काश्चन। तथा तद्भिभ्यां कृतं मित्रेण वर्षणेन व। वरणो वार्यादिदं देवो वनस्पतिः। आर्त्ये निर्ऋत्ये द्वेषां वनस्पतिः। आर्त्ये निर्ऋत्ये द्वेषां वनस्पतिः। अर्त्ये निर्ऋत्ये द्वेषां वनस्पतिः। विधृतिरसि विधारयास्मद्घा द्वेषाः देवाः सि श्रमयास्मद्घा द्वेषाः सि यव यवयास्मद्घा द्वेषाः पृथिवीं गच्छान्तिरक्षं गच्छ् दिवं गच्छ् दिशों गच्छ्

सुवंगच्छु सुवंगच्छु दिशो गच्छु दिवं गच्छान्तरिक्षं गच्छु पृथिवीं गंच्छाऽऽपो वां गच्छु यदि तत्रे ते हितमोषंधीषु प्रतितिष्ठा शरीरैः। अश्मंन्वती रेवतीयेंद्वे देवस्य

सिवितुः प्वित्रं या गृष्टात्पुत्रादुहुयं तर्मस्स्परि धाता पुनातु॥२२॥

पष्टः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

आ रोहताऽऽयुर्जरसं गृणाना अनुपूर्वं यतमाना यतिष्ठा इह त्वष्टां सुजनिमा सुरहों दीर्घमायुः करतु जीवसे वः। यथाऽहाँन्यनुपूर्वं भवेन्ति यथ्तेवं ऋतुभियिन्ति क्कुपाः। यथा न पूर्वमपेरो जहाँत्येवा धांत्रायू १षि कल्पयैषाम्। न हि ते अग्ने तुनुबै

कूरं चकार् मर्त्यः। कपिर्बभस्ति तेजंनं पुनंर्जुरायु गौरिव। अपं नः शोशुंचद्घमभ्रे शुशुष्या रयिम्। अपं नः शोशुंचद्घं मृत्यवे स्वाहाँ। अनुड्वाहंमन्वारंभामहे स्वस्तयै। स न इन्द्रे इव देवेभ्यो विहिः सम्पारंणो भव॥२३॥

इमे जीवा वि मृतैरावंवर्तित्रभूद्धद्रा देवहूर्तिं नो अद्या प्राञ्जोगामानृतये हसांय द्राधीय आयुः प्रतरां दर्यानाः। मृत्योः पदं योपयंन्तो यदैम द्राधीय आयुः प्रतरां दर्यानाः। आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भेवध यज्ञियासः। इमं जीवेभ्यः परिधिं देधामि मा नोऽनुंगादपेरो अर्धमेतम्। शृतं जीवन्तु श्ररदेः

-पुरूचीस्तिरो मृत्युं देदाहे पर्वतेन। इमा नारीरविध्वाः सुपत्नीराञ्जेनेन सपिषा

सम्मृंशन्ताम्। अनुश्रवो अनमीवाः सुशेवा आरोहन्तु जनयो योनिमग्रै। यदाञ्जनं त्रैककुदं जातर हिमवेतस्परि। तेनामृतेस्य मूलेनारोतीर्जम्भयामिति। यथा त्वमुद्धिनथ्स्योषधे पृथिव्या अधि। एवमिम उद्घिन्दन्तु कीत्यी यशंसा ब्रह्मवर्चसेने। 792 पष्टः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम)

युतीरपास्मध्स्येन्दतामृषम्। अपं नृः शोधुचद्घम्। उद्दनादुंदकानीवापास्मध्स्यंन्दतामृष

द्विषों नो विश्वतोमुखाऽति नाविव पारया अपं नः शोशुंचद्घम्। स नः

त्वः हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि। अपं नः शोधुंचद्घम्।

सिन्धुंमिव नावयाति पर्षा स्वस्तयै। अपं नः शोधुंचद्घम्। आपं प्रवणादिव

अपं नः शोधुंचद्घमग्ने शुशुष्या र्यिम्। अपं नः शोधुंचद्घम्। सुक्षेत्रिया सुगातुया वेसूया चे यजामहे। अपं नः शोधुंचद्घम्। प्रयद्भन्दिष्ठ एषां प्रास्माकांसक्ष सूरयेः। अपं नः शोधुंचद्घम्। प्रयद्ग्नेः सहंस्वतो विश्वतो यन्तिं सूरयेः। अपं नः

अजौऽस्यजास्मद्घा द्वेषारंसि युवोऽसि युवयास्मद्घा द्वेषारंसि॥२४॥

मृष् जुम्भ्यामुसि श्रीणे च॥■

शोधुंचद्घम्। प्रयते अग्ने सूरयो जायेमहि प्र ते वृयम्। अपं नः शोधुंचद्घम्॥२५॥

793 अपं नः शोधुंचद्घम्। आन्न्दायं प्रमोदाय पुन्रागाङ्क स्वान्गृहान्। अपं नः शोधुंचद्घम्। न वै तत्र प्रमीयते गौरखः पुरुषः पृषुः। यत्रेदं ब्रह्मं क्रियते परि्धिर्जीवेनायकमपं नः शोधुंचद्घम्॥२६॥ षष्टः प्रश्नः (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

अ्घम्षं च्त्वारि च॥**—** 

अपेश्याम युवतिमाचरेन्तीं मृताये जीवां पीरणीयमांनाम्। अन्येन या तमेसा प्रावृताऽसि प्राचीमवांचीमवयत्रिरिष्टी। मयेतां माङ्स्तां भ्रियमाणा देवी सती पितृलोकं यदैषिं। विश्ववारा नमेसा संव्यंयन्त्युभौ नो लोकौ पयसाऽऽवृणीहि।

स्वसोऽऽदित्यानांम्मृतंस्य नाभिः। प्रणुवोचं चिकितुषे जनांय मागामनांगामदितिं

वधिष्ट। पिबंतूद्कं तृणांन्यत्। ओमुध्सृजत॥२७॥

तेम्यों घृतस्यं धारयितुं मधुंधारा व्युन्द्ती। माता क्द्राणां दुहिता वसूना इ

वर्चसा सर्चस्वा नः स्वस्तयै। ये जीवा ये चं मृता ये जाता ये च जन्त्याैः।

रियेष्ठामुग्निं मधुमन्तमूर्मिणमूर्जः सन्तं त्वा पयुसोप् स॰संदेम। स॰ र्य्या समु

~ T

सन्त्वां सिश्चाम् यजुषां प्रजामायुर्धनं च॥ ॐ शान्तिः शान्तिः॥ वृषिष्ट द्वे चं॥∎

सुमङ्गलीरियं वृषूरिमा॰ समेत् पश्यंत। सौभौग्यम्स्यै दुत्त्वायाथास्तुं वि परेतन।

ड्मां त्वमिन्द्र मीद्वः सुपुत्रा॰ सुभगां कुरु। दशास्यां पुत्राना धेहि पतिमेकादुशं कृषि॥ आवहंन्ती वितन्वाना। कुर्वाणा चीरंमात्मनंः। वासारंसि मम गावंश्व। अत्रपाने च सर्वदा। ततो मे श्रियमावंह।

% शानिः शानिः शानिः॥

॥ सप्तमः प्रश्नः — शीक्षावस्त्री॥

शं नौ मित्रः शं वरुणः। शं नौ भवत्वर्यमा। शं नृ इन्द्रो बृहुस्पतिः। शं नो

विष्णूरुरुमाः। नमो ब्रह्मणे। नमेस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मोसि। त्वमेव प्रत्यक्षं

ब्रह्मं वदिष्यामि। ऋतं वंदिष्यामि। सृत्यं वंदिष्यामि। तन्मामंवतु। तद्दक्तारंमवतु।

अवंतु माम्। अवंतु वक्तारम्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥१॥

सृत्यं वीदिष्यामि पर्श्वं च॥∎

शींक्षाध्यायः॥२॥

शीक्षां पश्र∥∎

सृह नो यशः। सृह नो ब्रह्मवर्चसम्। अथातः स॰हिताया उपनिषदं

व्यांख्यास्यामः।

प्रजमध्यात्मम्।

महास शहिता

अधिलोकमधिज्यौतिषमधिविद्यमधि-

इंत्याचक्षते। अर्थाधिलोकम्। पृथिवी

शीक्षां व्यौख्यास्यामः। वर्णः स्वरः। मात्रा बलम्। सामं सन्तानः। इत्युक्तः

795

96/ वायुंः सन्यानम्। इत्योधिलोकम्। अर्थाधिज्योतिषम्। अग्निः पूर्वरूपम्। आदित्य उत्तंररूपम्। आपः सन्यः। वैद्युतः सन्यानम्। इत्योधिज्योतिषम्। अर्थाधिविद्यम्। पूर्वरूपम्। द्यौरुत्तंररूपम्। आकांशः सन्धिः॥३॥ सप्तमः प्रश्नः — शीक्षाबन्धी (तैत्तिरीय आरण्यकम्) आचार्यः पूर्वरूपम्॥४॥

अन्तेवास्युत्तंररूपम्। विद्या सन्भिः। प्रवचनर् सन्यानम्। इत्यंधिविद्यम्। अथाध्रिप्रजम्। माता पूर्वरूपम्। पितोत्तंररूपम्। प्रेजा सन्भिः। प्रजननर् सन्यानम्। इत्यष्टिप्रजम्॥५॥

अथाध्यात्मम्। अधराहनुः पूैर्वरूपम्। उत्तराहनुरुत्तंररूपम्। वाख्सन्धिः। जिह्वां सन्यानम्। इत्यध्यात्मम्। इतीमा मेहास्र\*हिताः। य एवमेता महास\*हिता व्याख्यांता वेद। सन्धीयते प्रजीया पृशुभिः। ब्रह्मवर्चसेनात्राद्येन सुवर्ग्येणं

सृन्धिराचार्यः पूर्वरूपमित्यध्रिप्रजं लोकेन॥∎

797 यश्छन्दंसामृष्मो विश्वरूपः। छन्दोग्योऽप्यमृताध्सम्बभूवं। स मेन्द्रों मेथयाँ स्पृणोतु। अमृतंस्य देव धारंणो भूयासम्। शरींरं मे विवंर्षणम्। जिह्वा मे मधुंमत्तमा। कर्णांभ्यां भूरि विश्रुवम्। ब्रह्मंणः को्शोंऽसि मेथयाऽपिहितः। श्रुतं में सप्तमः प्रश्नः — शीक्षावन्नी (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

गोपाय। आवहंन्ती वितन्वाना॥७॥

कुर्वाणा चीरंमात्मनंः। वासारंसि मम् गावंक्षा अत्रपाने चं सर्वदा। ततों में श्रियमावंह। लोम्शां पशुभिः सह स्वाहाँ। आ मां यन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहाँ। वि मोऽऽयन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहाँ। प्र मोऽऽयन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहाँ। दमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहाँ। शमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहाँ॥८॥

यशो जनेऽसानि स्वाहाँ। श्रेयान् वस्येसोऽसानि स्वाहाँ। तं त्वां भग प्रविशानि स्वाहाँ। स मां भग प्रविश्व स्वाहाँ। तस्मिन्थ्सहस्रेशाखे। निभेगाहं त्विये मुजे स्वाहाँ। यथाऽऽपः प्रवेता यन्ति। यथा मासां अहर्जरम्। एवं मां ब्रह्मचारिणेः। धात्रायेन्तु सर्वतः स्वाहाँ। प्रातिवेशोऽसि प्र मां भाहि प्र मां पद्यस्व॥९॥

भूर्भुवः सुवरिति वा पृतास्तिस्रो व्याह्तंतयः। तासांमुहस्मै तां चंतुर्थीम्। माहांचमस्यः प्रवेदयते। मह् इतिं। तद्वह्मं। स आत्मा। अङ्गान्यन्या देवताैः। भूरिति वा अयं लोकः। भुव इत्यन्तरिक्षम्। सुवरित्यसौ लोकः॥१०॥ सप्तमः प्रश्नः — शीक्षाबन्नी (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

मह् इत्योदित्यः। आदित्येन वाव सर्वे लोका महीयन्ते। भूरिति वा अग्निः। भुव इति वायुः। सुवरित्योदित्यः। मह् इति चन्द्रमाः। चन्द्रमेसा वाव सर्वाणि ज्योतीरंषि महीयन्ते। भूरिति वा ऋचेः। भुव इति सामानि। सुवरिति यजूरंषि॥११॥

मह् इति ब्रह्मं। ब्रह्मणा वाव सर्वे वेदा महीयन्ते। भूरिति वै प्राणः। भुव इत्येपानः। सुवरिति व्यानः। मह् इत्यन्नमै। अन्नेन वाव सर्वे प्राणा महीयन्ते। ता

- वा एताश्रंतस्रश्चतुर्धा। चतंस्रश्चतस्रो व्याहंतयः। ता यो वेदं। स वेद् ब्रह्मं। सर्वेऽस्मै

देवा बलिमावहन्ति॥१२॥

अुसौ लोको यजू∜षि वेद हे चं॥■

799 सप्तमः प्रश्नः — शीक्षावक्षी (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

अन्तेरेण तालुके। य एष स्तनं इवावृत्जम्बेते। सैन्द्रयोनिः। यत्रासौ केशान्तो स य एषौऽन्तर्ह्दय आकाशः। तस्मिन्नयं पुरुषो मनोमयः। अमृतो हिर्णमयेः विवर्तते। व्यपोह्यं शीर्षकपाले। भूरित्युग्नौ प्रतितिष्ठति। भुव इति वायौ॥१३॥

सुवरित्यांदित्ये। मह् इति ब्रह्मीणे। आप्रोति स्वारौज्यम्। आप्रोति मनेसुस्पतिमै। वाक्पेतिश्वक्षुष्पतिः। श्रोत्रेपतिर्विज्ञानेपतिः। एतत्ततो भवति।

आकाशशरीरं ब्रह्मं। सत्यात्मेप्राणारामं मने आनन्दम्। शान्तिसमुद्धमुतम्। इति प्राचीनयोग्योपाँस्व॥१४॥ वाथावुमृतमेकं च॥∎

पृथियेनतिरंशं द्योदिशोऽवान्तरिष्शाः। अभिविषुरादित्यश्चन्द्रमा नक्षेत्राणि।

व्यानोऽपान उेदानः सीमानः। चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक्कक्। चर्मं मार्भ्सः स्नावास्थि मुज्जा। एतदीधे विधायर्षिरवोचत्। पाङ्गं वा इदर सर्वमै। पाङ्गेनैव पाङ्गः आप् ओषंधयो वनुस्पतंय आकाृश आृत्मा। इत्यंधिभूतम्। अधाष्याृत्मम्। प्राणो

सप्तमः प्रश्नः — शीक्षाबन्नी (तैत्तिरीय आरण्यकम्) स्पूर्णोतीति॥१५॥ सर्वमेकं च॥∎

आमिते ब्रह्म। ऑमितोद् सर्वम्। ऑमित्येतद्नुकृति ह स्म वा अप्योशवियत्याश्रवयन्ति। ओमिति सामानि गायन्ति। ओ॰शोमिति शस्त्राणि श×सन्ति। ओमित्येष्व्युः प्रतिग्रं प्रतिगृणाति। ओमिति ब्रह्मा प्रसौति। ओमिति ब्रह्मं। ओमितीद सर्वम्। ओमित्येतदंनुकृति ह

ब्रह्मैबोपा"प्रोति॥१६॥

ओन्दर्शा 🗖

ऋतं च स्वाध्यायप्रवंचने च। सत्यं च स्वाध्यायप्रवंचने च। तपश्च

अग्नयश्च स्वाप्यायप्रवंचने च। अग्निहोत्रं च स्वाप्यायप्रवंचने च। अतिथयश्च स्वाध्यायप्रवंचने च। दमश्च स्वाध्यायप्रवंचने च। शमश्च स्वाष्यायप्रवंचने च।

च। प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवंचने च। प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवंचने च। सत्यमिति स्वाध्यायप्रवेचने च। मानुषं च स्वाध्यायप्रवेचने च। प्रजा च स्वाध्यायप्रवेचने ओमिति बाह्मणः प्रवृक्ष्यत्राह ब्रह्मोपाप्रवानीति। ओमित्यंग्रिहोत्रमनुंजानाति।

सत्यवचां राथोतरः। तप इति तपोनित्यः पौंरुशिष्टिः। स्वाध्यायप्रवचने एवेति नाको मौद्रल्यः। तिष्क तर्पस्तिष्क तपः॥१७॥

प्रजा च स्वाध्यायप्रबंचने च षद्धै॥■

अहं बृक्षस्य रेरिवा। कीतिः पृष्ठं गिरेरिव। ऊर्ध्वपिवित्रो वाजिनीव स्वमृतिमस्मि द्रविण् ्रसर्वर्चसम्। सुमेधा अमृतोक्षितः। इति त्रिशङ्गोर्वेदानुब्चनम्॥१८॥

वेदमनूच्याऽऽचार्योऽन्तेवासिनमंनुशास्ति। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायाँन्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यंवच्छुथ्सीः। सत्यात्र प्रमंदित्व्यम्। धर्मात्र प्रमंदित्व्यम्। कुशलात्र प्रमंदित्व्यम्। भूत्यै न

प्रमेदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमेदितव्यम्॥१९॥

देवपितृकार्याभ्यां न प्रमीदित्व्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो

भव। अतिर्थिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि। तानि सेवितव्यानि। नो इंतराणि।

802 नो इंतराणि। ये के चास्मच्छ्रेयार्स्सो ब्राह्मणाः। तेषां त्वयाऽऽसनेन यान्यस्माक सुर्चारतानि। तानि त्वयोपास्यानि॥२०॥ सप्तमः प्रश्नः — शीक्षाबन्नी (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

भिया देयम्। संविदा देयम्। अथ यदि ते कर्मविचिकिथ्सा वा वृत्तविचिकिथ्सा वा स्यात्॥२१॥

प्रश्नंसित्व्यम्। श्रद्धंया देयम्। अश्रद्धंयाऽदेयम्। श्रिया देयम्। हिंया देयम्।

ये तत्र ब्राह्मणाैः सम्मुर्गशनः। युक्तां आयुक्ताः। अॡक्षां धर्मकामाः स्युः। यथा

ते तत्रे वर्तेरन्। तथा तत्रे वर्तेथाः। अथाभ्यांख्यातेषु। ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः।

ऱुषं आदेशः। एष उंपदेशः। एषा वेदोप्निषत्। एतदंनुशासनम्। एवमुपांसित्व्यम्। युक्तां आयुक्ताः। अलूक्षां धर्मकामाः स्युः। यथा ते तेषुं वर्तेरन्। तथा तेषुं वर्तेथाः। एवमु चैतंदुपास्यम्॥२२॥

स्वाध्यायप्रवचनाभ्यात्र प्रमंदितव्यं तानि त्वयोपास्यानि स्यात्तेषुं वर्तेरन्थसुप्त ची॥🕳

शं नो मित्रः शं वर्ठणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो

विष्णुंरुरुकमः। नमो ब्रह्मणे। नर्मस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मांसि। त्वामेव प्रत्यक्षं

ब्रह्मावोदिषम्। ऋतमेवादिषम्। सत्यमेवादिषम्। तन्मामोवीत्। तद्वक्तारंमावीत्।

आवीन्माम्। आवीद्दक्तारम्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥२३॥

सृत्यमंबादिषं पश्चं च॥∎

॥ अष्टमः प्रश्नः — ब्रह्मानन्दवर्ह्यो॥

ॐ सृह नांववतु। सृह नौ भुनक्तु। सृह वीर्यं करवावहै। तेज्रस्वि नावधीतमस्तु

मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ब्रह्मविदाप्नोति परम्। तदेषाभ्युंक्ता। सृत्यं ज्ञानमंनन्तं ब्रह्मं। यो वेद् निहितं गुहायां पर्मे व्योमन्। सौऽश्जुते सर्वान्कामान्थमृह। ब्रह्मणा विपुश्चितेति।

<u> अ</u>न्द्यः पृष्टिकी। पृष्टिक्या ओर्षधयः। ओर्षधिन्योऽत्रम्। अत्रात्पुरुषः। स वा एष तस्माद्वा एतस्मांदात्मनं आका्शः सम्भूतः। आका्शाद्वायुः। वायोर्गग्रः। अग्रेरापंः।

पुरुषोऽत्ररसमयः। तस्येदमेव शिरः। अयं दक्षिणः पक्षः। अयमुत्तरः पक्षः।

804 अयमात्मा। इदं पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भूवति॥१॥

अत्राद्वे प्रजाः प्रजायंन्ते। याः काश्चं पृथिवीङ् श्रिताः। अथो अत्रेनेव जीवन्ति। अथैनदिपे यन्त्यन्ततः। अत्र्र् हि भूतानां ज्येष्ठम्। तस्माध्सर्वोषधमुंच्यते। सर्वे वै तेऽत्रमाप्रुवन्ति। येऽत्रं ब्रह्मोपासंते। अत्रर् हि भूतानां ज्येष्ठम्॥ तस्माध्सर्वोष्यमुंच्यते। अत्राद्भुतानि जायंन्ते। जातान्यत्रेन वर्धन्ते। अद्यतेऽत्ति चं मूतानि। तस्मादत्रं तदुच्यंत इति। तस्माद्वा एतस्मादत्रंरस्मयात्। अन्योऽन्तर अस्मै। प्राणमयः। तेनैष पूर्णः। स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुषविधताम्।

अन्वयं पुरुष्विधः। तस्य प्राणं एव शिरः। व्यानो दक्षिणः पृक्षः। अपान उत्तरः पृक्षः। आकांश आत्मा। पृथिवी पुच्छं प्रतिष्ठा। तदव्येष श्लोको भूवति॥२॥

तस्मौथ्सर्वायुषमुच्यते। सर्वमेव त आयुर्यन्ति। ये प्राणं ब्रह्मोपासेते। प्राणो हि

मूतोनामायुः। तस्माथ्सवीयुषमुच्यंत इति। तस्यैष एव शारीर आत्मा। यंः पूर्वस्य।

प्राणं देवा अनु प्राणीन्ता मुनुष्याः पृशवंश्रु ये। प्राणो हि भूतानामायुंः।

तस्माद्वा एतस्मौत् प्राणुमयात्। अन्योऽन्तर आत्मो मनोमयः। तेनैष पूर्णः। स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुषिविधताम्। अन्वयं पुरुषविधः। तस्य यजुरेब अष्टमः प्रश्नः — ब्रह्मानन्दवल्ली (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

शिरः। ऋग्दक्षिणः पक्षः। सामोत्तंरः पृक्षः। आदेश आत्मा। अथर्वाङ्गिरसः पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भवति॥३॥

यतो वाचो निवंतन्ते। अप्रौप्य मनेसा सृह। आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्। न बिभेति

कदांचनेति। तस्यैष एव शारीर आत्मा। यंः पूर्वस्य। तस्माद्वा एतस्मांन्मनोमयात्। अन्योऽन्तर आत्मा विज्ञानमयः। तेनैष पूर्णः। स वा एष पुरुषविध ए्व। तस्य सत्यमुत्तेरः पृक्षः। योग आत्मा। महः पुच्छं प्रतिष्ठा। तदत्येष श्लोको भ्वति॥४॥ पुरुषविष्टताम्। अन्वयं पुरुष्विघः। तस्य श्रेद्धेव शिरः। ऋतं दक्षिणः पृक्षः।

बि्जानं युज्ञं तेनुते। कर्माणि तनुतेऽपि च। वि्जानं देवाः सर्वे। ब्रह्म ज्येष्टमुपांसते। विज्ञानं ब्रह्म चेद्वदे। तस्माचेत्र प्रमाद्यंति। शरीरं पाप्नेनो हित्वा। सर्वान्कामान्थ्समश्जुत इति। तस्यैष एव शारीर आत्मा। येः पूर्वस्य। तस्माद्वा

एतस्माद्विज्ञानुमयात्। अन्योऽन्तर आत्मोऽऽनन्दुमयः। तेनैष पूर्णः। स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुषविधताम्। अन्वयं पुरुषविधः। तस्य प्रियमेव शिरः। मोदो दक्षिणः पृक्षः। प्रमोद उत्तंरः पृक्षः। आनंन्द आृत्मा। ब्रह्म पुच्छं प्रतिष्ठा।

तदप्येष श्रोको भवति॥५॥

असंत्रेव सं भवति। असद्वह्मिति वेद चेत्। अस्ति ब्रह्मेति चेह्नेद। सन्तमेनं ततो विदुरिति। तस्यैष एव शारीर आत्मा। येः पूर्वस्य। अथातोऽनुप्रश्जाः। उता विद्वानुमु

ने के प्रत्या कश्चन गेच्छती(३)॥ आहो विद्वानुमुँ ह्योकं प्रत्या कश्चिश्चममेश्जुता(३)

उ। सोऽकामयत। बृहु स्यां प्रजायेयेति। स तपोऽतप्यत। स तपेस्तुस्वा। इद ॰

-सर्वमसुजत। यदिदं किं चे। तथ्मृष्टा। तदेवानु प्राविशत्। तदेनुप्रविश्ये। सच त्यचोभवत्। निरुक्तं चानिरुक्तं च। निलयेनं चानिलयनं च। विज्ञानं चाविज्ञानं

च। सत्यं चानुतं च संत्यम्भवत्। यदिदं किं च। तथ्सत्यमित्यांचक्षते। तदप्येष

स्यात्। एष ह्येवानंन्दयाति। यदा ह्येवेष एतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽनयं लब्बाऽऽनेन्दी मुवति। को ह्येवान्यौत्कः प्राण्यात्। यदेष आकाश आनंन्दो न् प्रतिष्ठां विन्दते। अथ सोऽभयं गंतो भूवति। युदा ह्येवेषु एतस्मिन्नुदरमन्तेरं कुरुते। अथ तस्य भंयं भूवति। तत्त्वेव भयं विदुषोऽमंन्वानुस्य। तदप्येष श्रोको तस्मात्तथ्मुकृतमुच्यंत इति। यद्वे तथ्मुकृतम्। रंसो वे सः। रसङ् ह्येवायं असद्वा इदमग्रे आसीत्। ततो वै सदंजायत। तदात्मानङ् स्वयंमकुरुत

भवति॥ ७॥

भोषाऽस्माद्वातंः पवते। भोषोदेति सूर्यः। भीषाऽस्मादग्निश्चेन्द्रश्च। मृत्युर्धावति आशिष्ठों हिडिष्ठों बलिष्ठः। तस्येयं पृथिवीं सर्वा वित्तस्यं पूर्णा स्यात्। स एको ते ये शतं मनुष्यगन्यर्वाणांमानुन्दाः। स एको देवगन्यर्वाणांमानुन्दः। श्रोत्रियस्य पश्चेम इति। सैषाऽऽनन्दस्य मीमार्ৼसा भवति। युवा स्याथ्सापु युंवाऽध्यायकः। मानुषं आन्न्दः। ते ये शतं मानुषां आन्न्दाः। स एको मनुष्यगन्यवाणांमान्न्दः। श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य।

चाकामहतस्य।

ते ये शतं देवगन्थर्वाणामानन्दाः। स एकः पितृणां चिरलोकलोकानामानन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामंहतस्य। ते ये शतं पितृणां चिरलोकलोकानांमान्न्दाः। स एक आजानजाना देवानांमानन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामंहतस्य।

ते ये शतमाजानजानां देवानांमानुन्दाः। स एकः कर्मदेवानां देवानांमानुन्दः।

ये कर्मणा देवानीपयन्ति। श्रोत्रियस्य चाकामंहतस्य।

ते ये शतं कर्मदेवानां देवानांमान्न्दाः। स एको देवानांमान्न्दः। श्रोत्रियस्य

वाकामहतस्य।

ते ये शतमिन्द्रंस्याऽऽनन्दाः। स एको बृहस्पतेंरानुन्दः। श्रोत्रियस्य ते ये शतं देवानांमान्न्दाः। स एक इन्द्रंस्यान्न्दः। श्रोत्रियस्य चाकामंहत्स्य। चाकामहतस्य। ते ये शतं बृहस्पतेंरान्न्दाः। स एकः प्रजापतेरान्न्दः।

ते ये शतं प्रजापतेरानन्दाः। स एको ब्रह्मणं आनन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामंहतस्य चाकामहतस्य।

स यश्चायं पुरुषे। यश्चासांबादित्ये। स एकेः। स यं एवंवित्। अस्माह्नोकात्रेत्य

मनोमयमात्मानमुपेसङ्कार्मोते। एतं विज्ञानमयमात्मानमुपंसङ्कामति। एतमानन्द-

एतमत्रमयमात्मानमुपंसङ्गामति। एतं प्राणमयमात्मानमुपंसङ्गामति। एतं

यतो वाचो निवंतन्ते। अप्रौप्य मनंसा सृह। आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्। न बिभेति कुतंश्चेनेति। एत॰ ह वावं न तृपति। किमह॰ साधुं नाक्रवम्। किमहं मयमात्मानमुपंसङ्गमति। तदव्येष श्लोको भवति॥८॥

पापमकर्रवमिति। स य एवं विद्वानेते आत्मीनङ् स्पृणुते। उुमे ह्येवेषु एते आत्मीनङ् स्पृणुते। य एवं वेदं। इत्युंपनिषंत्॥९॥

सृह नांववतु। सृह नौ भुनक्तु। सृह वी्यै करवावहै। तेज्रस्वि नावधीतमस्तु

मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

## ॥ नवमः प्रश्नः — भृगुवछ्रो॥

ॐ सृह नांववतु। सृह नौं भुनक्तु। सृह वीयैं करवावहै। तेज्जिस्व नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः॥

भृगुर्वे बांरुणिः। वरुणुं पितंर्मुपंससार। अधीहि भगवो ब्रह्मिति। तस्मां

एतत्प्रोंबाच। अत्रं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं मनो बाचमिति। त॰ होबाच। यतो बा इमानि भूतोनि जायेन्ते। येन जातोनि जीवंन्ति। यत्प्रयेन्त्यमि संविशन्ति। तद्विजिज्ञासस्व। तद्वह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपेस्तुस्वा॥१॥

अत्रं ब्रह्मिति व्यंजानात्। अत्रास्त्रंव खिल्वमानि भूतानि जायेन्ते। अत्रेन् जातानि

जीवेन्ति। अत्रं प्रयेन्त्यभि संविशन्तीति। तद्विज्ञाये। पुनेरेव वर्षणं पितंरमुपंससार। अधीहि भगवो ब्रह्मेति। त४ होवाच। तपंसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मेति।

प्राणो ब्रह्मेति व्यंजानात्। प्राणास्त्रंव खिल्वमानि भूतांनि जायंन्ते। प्राणेन जातांनि जीवंन्ति। प्राणं प्रयंन्त्युभि संविश्वन्तीति। तिद्वज्ञाये। पुनेरेव वर्षण् नवमः प्रश्नः — भृगुवन्नी (तैत्तिरीय आरण्यकम्) स तपोंऽतप्यता स तपंस्तम्बा॥२॥

पेतंरमुपंससार। अधीहि भगवो ब्रह्मिति। त॰ होवाच। तपंसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मिति। स तपोऽतप्यत। स तपेस्तम्बा॥३॥

मनो ब्रह्मेति व्यंजानात्। मनंसो ह्यंब खिल्वमानि भूतांनि जायंन्ते। मनंसा जातांनि जीवंन्ति। मनः प्रयंन्त्युभि संविश्वन्तीति। तिद्वेजाये। पुनेरेब बर्ुणं पेतंरमुपंससार। अधीहि भगवो ब्रह्मेति। त॰ होवाच। तपंसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मिति। स तपोऽतप्यत। स तपंस्तस्वा॥४॥

विज्ञानं ब्रह्मेति व्यंजानात्। विज्ञानास्त्रेव खिल्वमानि भूतानि जायेन्ते। विज्ञानेन जातानि जीवेन्ति। विज्ञानं प्रयेन्त्युभि संविश्वन्तीति। तिष्टुज्ञाये। पुनेरेव वर्षणुं

पितंरमुपंससार। अधीहि भगवो ब्रह्मेति। त॰ होवाच। तपंसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व।

तपो ब्रह्मोति। स तपोऽतप्यत। स तपंस्तुष्या॥५॥

812 नवमः प्रश्नः — भृगुवह्री (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

रुतदत्रुमत्रे प्रतिष्ठितं वेद् प्रतितिष्ठति। अत्रेवानजादो भैवति। मृहान्भेवति प्रजयो अत्रं न निन्द्यात्। तद्वतम्। प्राणो वा अन्नमै। शरीरमन्नादम्। शरीरं प्रतिष्ठितम्। शरीरे प्राणः प्रतिष्ठितः। तद्तदत्रमन्ने प्रतिष्ठितम्।

ज्योतिः प्रतिष्ठितम्। ज्योतिष्यापः प्रतिष्ठिताः। तदेतदेत्रमन्ने प्रतिष्ठितम्। स य एतदत्रुमन्ने प्रतिष्ठितं वेद् प्रतितिष्ठति। अत्रेवानत्रादो भवति। मृहान्भेवति प्रजया

अत्रं न परिचक्षीता तद्वतम्। आपो वा अन्नम्। ज्योतिरन्नादम्।

पुशुभिब्रह्मवर्चसेनं। मृहान्कोत्यां॥७॥

अत्रं बहु कुर्वीत। तद्वतम्। पृथिवी वा अत्रम्। आका्शौऽत्रादः। पृथिव्यामोका्शः

पुशुभिक्रीवर्चसेने। मृहान्कीत्यी॥८॥

A A A

आनन्दो ब्रह्मेति व्यंजानात्। आनन्दास्त्रंव खल्विमानि भूतानि जायंन्ते। आनन्देन जातानि जीवंन्ति। आनन्दं प्रयंन्त्युभि संविश्वन्तीति। सैषा भाँगीबी वांरुणी विद्या। पुरमे व्योमन् प्रतिष्ठिता। य एवं वेद् प्रतितिष्ठति। अत्रेवानजादो भेवति। मृहान्भेवति प्रजयो पुशुभिब्रह्मवर्चसेने। मृहान्कात्यी॥६॥

प्रतिष्ठितः। आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता। तदेतदत्रमन्ने प्रतिष्ठितम्। स य एतदत्रमन्ने प्रतिष्ठितं वेद् प्रतितिष्ठति। अत्रैवानत्रादो भैवति। मृहान्भैवति प्रजया नवमः प्रश्नः — भृगुवन्नी (तैत्तिरीय आरण्यकम्) पशुभिन्नेह्मवर्चसेने। महान्कीर्त्या॥९॥

न कश्चन वसतौ प्रत्यांचक्षोता तद्वतम्। तस्माद्यया कया च विधया बह्वेत्रं

प्राप्नुयात्। अराध्यस्मा अन्नमित्याचृक्षते। एतद्वे मुखतौऽन्न॰ राष्ट्रम्। मुखतोऽस्मा

अन्नर राष्यते। एतद्वे मध्यतौऽन्नर राखम्। मध्यतोऽस्मा अन्नर राष्यते। एतद्वा अन्ततौऽन्नर राखम्। अन्ततोऽस्मा अंत्रर राष्यते। य एवं वृद। क्षेम इति वाचि।

योगक्षेम इति प्राणापानयोः। कर्मेति हस्तयोः। गतिरिति पादयोः। विमुक्तिरिति

गुयौ। इति मानुषौः समाजाः। अथ दैवीः। तृप्तिरिति वृष्टौ। बलमिति विद्युति। यश

तद्वसेत्युंपासीता ब्रह्मवान्म्वति। तद्वह्मणः परिमर इत्युंपासीता पर्येणं म्रियन्ते

तस्रतिष्ठेत्युपासीत। प्रतिष्ठांवान्यवति। तन्मह् इत्युपासीत। मंहान्यवति। तन्मन

इत्युपासीत। मानेवान्ग्वति। तत्रम इत्युपासीत। नम्यन्तैऽस्मे

इति पृशुषु। ज्योतिरिति नंक्षत्रेषु। प्रजातिरमृतमानन्द इंत्युपुस्थे। सर्वमित्याका्शे।

814 द्विपन्तंः सपताः। परि येऽप्रियां भातृव्याः। स यश्चांयं पुरुषे। यश्वासांवादित्ये। स

प्राणमयमात्मानमुपंसङ्गन्य। एतं मनोमयमात्मानमुपंसङ्गन्य। एतं एकेः। स यं एवंवित्। अस्मान्नोकात्येत्य। एतमन्नमयमात्मानमुपंसङ्गम्य।

विज्ञानमयमात्मानमुपंसङ्गम्य। एतमानन्दमयमात्मानमुपंसङ्गम्य। इमाँस्रोकान्कामात्री अहमत्रमत्रमहमत्रम्। अहमत्रादो(२)ऽहमत्रादो(२)ऽहमत्रादः। अहर् श्रोककृद्हङ् श्लोककृद्हङ् श्लोककृत्। अहमस्मि प्रथमजा ऋता(३) स्य। पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य ना(३) भाइ। यो मा ददाति स इदेव मा(३) वाः। अहमत्रमत्रमत्रमत्रमदन्तमा(३) स्रि। अहं विश्वं भुवंनमभ्यंभवाम्। सुवर्न ज्योतीः। य एवं वेदे। इत्युपनिषेत्॥१०॥ कामरूप्येनुस्अरन्। एतथ्साम गांयत्रास्ते। हा(३) बु हा(३) बुं।

सृह नांववतु। सृह नौ भुनक्तु। सृह वी्यै करवावहै। तेज्रस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

नवमः प्रश्नः — भृगुवन्नी (तैत्तिरीय आरण्यकम्)





## ॥ द्शमः प्रश्नः — महानारायणोर्पानेषत्॥

ॐ सृह नांववतु। सृह नौं भुनक्तु। सृह वीयैं करवावहै। तेज्जिस्व नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

### ∥अम्मस्य पारे॥

अम्मेस्य पारे भुवेनस्य मध्ये नाकेस्य पृष्ठे मंह्तो महीयान्। शुकेण ज्योती र्षि

समनुप्रविष्टः प्रजापेतिश्वरति गर्भे अन्तः॥ यस्मित्रिद् सं च विचैति सर्व

यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः। तदेव भूतं तदु भव्यंमा इदं तद्क्षरे पर्मे

व्योमन्॥ येनोऽऽबृतं खं च दिवं महीं च येनोऽऽदित्यस्तपीते तेजंसा आजंसा च। यम्न्तः संमुद्रे कृवयों वर्यन्ति यद्क्षेरं पर्मे प्रजाः॥ यतेः प्रसूता जुगतेः

प्रसूतो तोयेन जीवान् व्यसंसर्ज भूम्याम्। यदोषंधीभिः पुरुषान्पश्चर्ङ्श्य विवेश

मूतानि चराचुराणि॥ अतेः परं नान्यदणीयस॰ हि परौत्परं यन्महेतो मुहान्तमै॥

यदेकम्ब्यक्ममनेतरूप् विश्वं पुराणं तमेसः परेस्तात्॥१॥

दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

तदेव शुक्रममृतं तद्वह्म तदापः स प्रजापीतः॥ सर्वं निमेषा जाझेरं विद्युतः पुरुषादिषे। कृला मुहूर्ताः काष्ठौश्राहोरा्त्राश्चं सर्वेशः॥ अर्धेमासा मासो ऋतवेः संबथ्स्रक्षं कल्पन्ताम्। स आपेः प्रदुषे उमे इमे अन्तरिक्षमथो सुबेः॥ नैनेमूर्ष्व तदेवतै तदुं सत्यमांहस्तदेव ब्रह्मं पर्मं केवीनाम्। इष्टापूर्तं बंहुधा जातं जायेमानं विश्वं बिभर्ति मुबेनस्य नाभिः॥ तदेवाग्रिस्तद्वायुस्तध्सूर्यस्तदुं चन्द्रमाः। न तिर्येश्रं न मध्ये परिजग्रमत्। न तस्येश्रे कश्रुन तस्यं नाम मृहद्यशंः॥२॥ एष हि देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो हि जातः स उ गर्ने अन्तः। स विजायंमानः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्गुःखाँस्तिष्ठति विश्वतोमुखः॥ विश्वतंश्वसुरूत विश्वतोमुखो विश्वतोहस्त उत विश्वतंस्पात्। सं बाहुभ्यां नमीते सं पतंत्रेद्यांवांपृथिवी जनयंन्देव एकेः॥ वेनस्तत्पश्यन्विश्वा भुवंनानि विद्वान् यत्र विश्वं भवत्येकंनीळम्। यस्मिन्निद्

न सन्दर्शे तिष्ठति रूपेमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनेनम्। हृदा मेनीषा मनेसाऽभिक्नेसो य एनं विदुरमृतास्ते भेवन्ति॥ अन्द्यः सम्भूतो हिरण्यगुर्भ इत्युष्टो॥

सं च विचेक्र स ओतः प्रोतंश्च विभुः प्रजासु। प्र तद्दोंचे अमृतं नु विद्वान्यंचों दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैत्तिरीय आरण्यकम्) नाम् निहितं गुहांसु॥३॥

त्रीणि पदा निहिंता गुहांसु यस्तद्वेदं सिवेतुः पिताऽसंत्। स नो बन्धुंर्जीनेता स विधाता धामानि वेद् भुवेनानि विश्वा। यत्रं देवा अमृतंमानशानास्तृतीये धामान्यभ्यैरयन्त। परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः परि लोकान् परि दिशः

परि सुवेः। ऋतस्य तन्तुं विततं विचृत्य तदंपश्यतदंभवत् प्रजासुं। प्रीत्यं लोकान्प्रीत्यं भूतानि प्रीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशंक्षा प्रजापंतिः प्रथमजा ऋतस्याऽऽत्मनाऽऽत्मानमिसम्बंभूव। सदंसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रंस्य काम्यम्। सनिं मेधामयासिषम्। उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपृष्रत्रिर्ऋतिं ममी॥४॥

पृश्ङ्श्च मह्यमार्वेह जीवेनं च दिशों दिशा मा नो हि॰सीज्ञातवेदो गामश्वं पुरुषुं जगेत्। अबिभृदग्न आगेहि श्रिया मा परिपातय।

# पुरुषस्य विदा सहस्राक्षस्यं महादेवस्यं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्

तत्पुरुषाय विदाहे महादेवाय धीमहि। तत्रों रुद्रः प्रचोदयौत्। तत्पुरुषाय विदाहे

वक्रतुण्डायं घीमहि। तन्नों दन्तिः प्रचोदयौत्। तत्पुरुषाय विद्यहें चक्रतुण्डायं

धीमहि॥५॥

प्रचोदयौत्। तत्पुरुषाय विद्यहे सुवर्णपृक्षायं धीमहि। तन्नो गरुडः प्रचोदयौत्। वेदात्मनायं विद्यहे हिरण्यगुर्भायं धीमहि। तन्नौ ब्रह्मं प्रचोदयौत्। नारायणायं विद्यहे वासुदेवायं धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयौत्। वृज्जनुखायं विद्यहे तीक्ष्णदुङ्ष्ट्रायं

धोमहि॥६॥

तत्रों नन्दिः प्रचोदयौत्। तत्पुरुषाय विद्यहे महासेनायं धीमहि। तत्रेः षण्मुखः

तत्रों नारसि रहः प्रचोदयात्। भास्करायं विद्यहें महद्युतिकरायं धीमहि। तत्रों आदित्यः प्रचोदयात्। वैश्वानरायं विद्यहें लालीलायं धीमहि। तत्रों अग्निः प्रचोदयात्। कात्यायनायं विद्यहें कन्यकुमारिं धीमहि। तत्रों दुर्गिः प्रचोदयात्।

दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैत्तिरीय आरण्यकम्) ॥ गायत्रोमन्त्राः॥

819

#### वास्क्रम्॥

सृहस्रपरेमा देवी शतमूला श्राताङ्केरा। सर्वे हरतु मे पापं दूर्वा दुःस्वप्रनाशनी। काण्डौत्काण्डात् प्ररोहंन्ती पर्कषः प्रकृषः परि॥७॥ एवानों दुर्वे प्रतंनु सृहस्रेण शतेनं च। या शतेनं प्रतनोषिं सृहस्रेण विरोहंसि। तस्यौस्ते देवीष्टके विधेमं ह्विषां व्यम्। अश्वेत्रान्ते रंथकान्ते विष्णुक्रौन्ते वृसुन्येरा। शिरसो धारयिष्यामि रुष्ट्रस्व माँ पट्रे पदे।

#### ॥ मृत्तिकासूकम्॥

भूमिर्धेनुर्धरणी लोकपारिणी। उद्धृतांऽसि वंराहेण कृष्णेन शंतबाहुना। मृत्तिकं

हने मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्। मृतिकै ब्रह्मदत्ताऽसि काश्यपेनाभिमत्र्रिता। मृतिके देहिं मे पुष्टिं त्वयि संवै प्रतिष्ठितम्॥८॥

मृतिकै प्रतिष्ठिते सर्वे तुन्मे निर्णुद् मृतिके। तयां हतेने पापेन् गुच्छामि पंरमां

821 दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

विमुधों जिहि। स्वस्तिदा विशस्पतिवृत्रहा विमुधों वृशी। वृषेन्द्रः पुर एंतु नः धुनिः शिमीवाञ्छरुमार ऋजीषी। सोमो विश्वान्यतृसावनानि नार्वागिन्द्रं यते इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृषि। मधंवन्छुग्धि तव् तत्रं ऊतये विद्विषो स्वस्तिदा अभयङ्करः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नुस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्देषातु। आपौन्तमन्युस्तुपलेप्रभर्मा

प्रतिमानांनिदेभुः॥९॥

ब्रह्मेजज्ञानं प्रेथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। सबुधियो उपमा अस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमसंतश्च विवेः। स्योना पृथिवि भवोऽनुश्वरा निवेशनी। यच्छोनः शर्म सप्रथाः। गन्यद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरी ५ वै देवाश्छन्दोभिरिमाँक्षोकानंनपज्य्यमुभ्यंजयन्। मृहा॰ इन्द्रो वज्रबाहुः षोदृशी सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियम्। श्रीमें भुजतु। अलक्ष्मीमें नुश्यतु। विष्णुंमुखा

दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

स्बस्ति नों मुघवां करोतु हन्तुं पाप्मानुं योंऽस्मान् द्वेष्टि। सोमानुङ् स्वरंणं कृणुहि

ब्रह्मणस्पते। कुक्षीवेन्तं य औश्विजम्। शरीरं यज्ञशम्लं कुसींदं तस्मिन्थ्मीदतु

यौऽस्मान् द्विष्टि। चरंणं पुवित्रं वितंतं पुराणं येनं पूतस्तरंति दुष्कृतानि। तेनं

गुबेत्रेण शुद्धने पूता अति पाप्मानुमर्रातिं तरेमा सजीषां इन्द्र सगेणो मरुद्धिः

नः। सुमित्रा न् आप् ओषंधयः सन्तु दुर्मित्रास्तस्मै भूयासुर्यौऽस्मान् द्वेष्टि यं चं

व्यं द्विष्मः। आपो हि ष्ठा मंयो भुव्स्ता नं ऊर्जे दंघातन॥११॥

मृहेरणांयु चक्षंसे। यो वेः श्रिवतंमो रस्स्तस्यं भाजयतेह नेः। उ्शृतीरिंब

मातरेः। तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वंधा आपो जनयंथा च नः।

हिरंण्यश्रङ्गं वर्षणं प्रपंद्ये तो्धं में देहि याचितः। युन्मयां भुक्तम्साधूनां पापेभ्यंश्व

॥ अघमषणसूक्तम्॥

सोमं पिब बुत्रहञ्छूर विद्वान्। जाहि शत्रू॰ रप् मृषों नुदस्वाथाभंयं कृणुहि विश्वतों

शर्म यच्छत्॥१०॥

822

823 प्रतिप्रेहः। यन्मे मनेसा बाचा कर्मणा वा दुष्कृतं कृतम्। तत्र इन्द्रो वर्षणो बृहस्पतिः साविता चे पुनन्तु पुनेः पुनः। नमोऽग्रयैऽफ्सुमते नम् इन्द्रांय नमो वर्षणाय नमो दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैत्तिरीय आरण्यकम्) वारुण्यै नमोऽद्धः॥१२॥

यद्पां कूरं यदंमेध्यं यदंशान्तं तदपंगच्छतात्। अत्याशनादंतीपानाद्यच उग्रात् प्रतिग्रहात्। तत्रो वर्रणो राजा पाणिना ह्यव्मर्शतु। सोऽहमपापो विरजो निर्मुक्तो

मुक्तिकिल्बिषः। नाकेस्य पृष्ठमार्केह्य गच्छेद्वह्मंसलोकताम्। यश्चाप्सु वर्ठणः स पुनात्वेघमर्षणः। इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुदि स्तोमर् सचता पर्राष्णाः। असिक्रिया मंरुद्वुधे वितस्त्याऽऽजीकीये श्रणुह्या सुषोमंया। ऋतं चे सृत्यं वाभीष्द्रात्तपुसोऽध्यंजायत। ततो रात्रिरजायत् ततंः समुद्रो अर्णवः॥१३॥

सुमुद्रादेर्णवादिषे संवथ्सरो अंजायत। अहोरात्राणि विद्धाद्विश्वस्य मिष्तो वृशी। सूर्याचुन्द्रमसौ घाता येथापूर्वमेकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो सुवेः।

गत्पृथिया १ रजीः स्वमान्तरिक्षे विरोदंसी। इमा १स्तदापो वेरुणः पुनात्वेघमर्षणः

पुनन्तु वसंवः पुनातु वरुणः पुनात्वेघमर्षणः। एष भूतस्यं मध्ये भुवंनस्य गोप्ता। एष पुण्यकृतां लोकानेष मृत्योर्हिरणमयम्। द्यावांपृथिव्योर्हिरणमयर् सर्धितेत्र सुवंः॥१४॥ जुहोमि स्वाहाँ। अकार्यकार्यवकीणीं स्तेनो भूणहा गुरुतल्पगः। वरुणोऽपामंघ-मर्षणस्तस्मौत्पापात् प्रमुच्यते। रजो भूमिस्त्वमार रोदंयस्व प्रवंदन्ति धीराँः। आक्रौन्थ्समुद्रः प्रथमे विधेमै जनयंन्यजा भुवंनस्य राजाँ। वृषां पवित्रे अधि स नः सुबः स॰शिशाधि। आर्द्रै ज्वलेति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिज्वलेति ब्रह्माहर्मोस्म। योऽहर्मास्म् ब्रह्माहर्मास्म। अहर्मास्म् ब्रहाहर्मास्म। अहमेवाहं मां सानो अव्ये बृहध्सोमो वावृधे सुवान इन्दुं॥१५॥

# ॥दुगांसूकम्॥

जातवेदसे सुनवाम् सोमंमरातीयुतो निजंहाति वेदंः। स नंः पर्षदिति दुर्गाणि

विश्वां नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्युग्निः। तामृग्निवर्णां तपंसा ज्वलन्तों वैरोचनी दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

केर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गा देवीर शर्गमहं प्रपंदी सुतर्सि तरसे नमः। अभ्रे त्वं पारया नव्यो अस्मान्थ्र्वस्तिमिरति दुर्गाणि विश्वा। पृश्वं पृथ्वी बंहुला ने उवीं भवां तोकाय तनयाय शं योः। विश्वानि नो दुर्गहां जातवेदः सिन्धुं न

नावा दुरिताति पर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनंसा गृणानौऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम्।

पृतनाजित<sup>्</sup> सहेमानमुभ्रक्ष हुवेम परमाध्स्घस्थात्। स नेः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षाम<u>ं</u>द्देवो अति दुरिताऽत्युग्निः। प्रलोषि कमीद्यो अष्वरेषु सनाच

-रोता नव्यंश्व सथ्सि। स्वाश्वौग्ने तनुवं पिप्रयंस्वास्मभ्यं च सौभंगमायंजस्व। गोभिजुंधेम्युजो निर्षिक्त तवैन्द्र विष्णोरनुसश्चरेमा नाकेस्य पृष्ठमभि संवसानो

त्रैष्णंवीं लोक ड्रह मांदयन्ताम्॥१६॥

# ॥ व्याह्यंतेह्येमन्त्राः॥

भूरत्रमग्नये पृथिष्ये स्वाहा भुवोऽत्रं वायवेऽन्तरिक्षाय स्वाहा सुवरत्रमादित्यायं दिवे स्वाहा भूभुंबः सुब्रज्नं च्न्द्रमंसे दिग्ग्यः स्वाहा नमों देवेग्यः स्व्धा पितृभ्यो भूर्भुवः सुव्रत्रमोम्॥१७॥

भूरग्रयें पृथिष्यै स्वाहा भुवों वायवेऽन्तरिंक्षाय स्वाहा सुवंरादित्यायं दिवे स्वाहा

भूभुंवः सुवंश्वन्द्रमंसे दिग्ग्यः स्वाहा नमों देवेग्यंः स्वृषा पितुभ्यो भूभुंवः सुव्रश्र

ओम्॥१८॥

भूरग्नये च पृथिव्ये चं महते च स्वाहा भुवों वायवें चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा सुवेरादित्याये च दिवे चं महते च स्वाहा भूभुंबः सुवेश्च-द्रमेसे च नक्षेत्रेभ्यश्च दिग्ग्यक्षं महते च स्वाहा नमों देवेग्यंः स्वधा पितुग्यों भूभुंबः सुवमंहरोम्॥१९॥

# ॥ ज्ञानप्रास्यथेहोममन्त्राः॥

पाहि नो अग्र एनेसे स्बाहा। पाहि नो विश्ववेदंसे स्बाहा। यज्ञं पाहि विभावंसो स्वाहा। सर्वं पाहि शतर्न्नतो स्वाहा॥२०॥

पाहि नो अग्र एकेया। पाद्युंत द्वितीयंया। पाद्यूजैं तृतीयंया। पाहि गीभिश्चं w I

तसुर्मिर्वसो स्वाहा॥२१॥

॥ वेद्विस्मरणाय जपमन्त्राः॥

सता र शिक्यः

पुरोबाचौपनिषदिन्द्रौ ज्येष्ठ इन्द्रियाय ऋषिभ्यो नमी देवेभ्यः स्वधा पितुभ्यो

भूभुंवः सुवृष्छन्द् ओम्॥२२॥

यश्छन्दंसामुषुनो विश्वस्त्पृश्छन्दौन्युश्छन्दार्श्स्याविवेशो।

| 82   | . \ | ᠈ᢩ᠂ᠮᠮ           |
|--|-----|-----------------|
| ~  | Ī   | अत.             |
|  |     | . कर्णयोः       |
|  |     | भूयासं          |
| <u> </u>   |     | <u>यारियेता</u> |
| रू।<br>स्रार्                                      |     | करणं            |
| शमः प्रश्नः — महानारायणापानषत् (तात्तराय आरण्यकम्) |     | अस्त्वनिराकरण   |
| で <u>あ</u> し                                       |     | ,               |
| 70114  |     | Æ<br>⊢          |
| हानारार  |     | धारणं मे        |
| ∓<br>  |     | नमों ब्रह्मणे   |
| ;;<br>⊼  |     | <br> <br> <br>  |
| ::<br>₹  |     | िं              |

च्यौंडुं ममामुष्यु ओम्॥२३॥

॥तपः प्रशंसा॥

ऋतं तपेः सत्यं तपेः श्रुतं तपेः शान्तं तपो दम्स्तपः शम्स्तपो दानं तपो यज्ञं

तपो भूर्भुवः सुवृब्रह्मेतदुपाँस्यैतत्तपंः॥२४॥

॥ विहिताचरणप्रशंसा निषिद्धाचरणनिन्दा च॥

यथां वृक्षस्यं सम्पुष्यितस्य दूराद्रन्यो वौत्येवं पुण्यंस्य कर्मणों दूराद्रन्यो

मंतिष्यामीत्येवम्नृतांदात्मानं जुगुफ्सेंत्॥२५॥

वाति यथाऽसिषारां कर्तेऽवहितामवकामे यद्युवे युवे ह वा विह्नयिष्यामि करी

~ T

वीतशोको धातुः प्रसादौन्महिमानमीशम्। सप्त प्राणाः प्रभवंन्ति तस्माध्सप्तार्चिषंः समिधंः सप्त जिह्वाः। सप्त इमे लोका येषु चरेन्ति प्राणा गुहाशयां निहिताः अृणोरणीयान्महुतो महीयानात्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः। तमेकतुं पश्यति

सुप्त सप्ता अतेः समुद्रा गिरयेश्र सर्वेऽस्माथ्स्यन्दंन्ते सिन्धंवः सर्वरूपाः।

अतेश्च विश्वा ओषंधयो रसाँच येनैष भूतस्तिष्ठत्यन्तरात्मा। ब्रह्मा देवानां पदवीः केवीनामुषिविप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गुप्ताणाङ् स्वधितिर्वनानार् सोमेः

यवित्रमत्येति रेभन्। अजामेकां लोहितशुक्ककृष्णां बह्वां प्रजां जनयेन्तीर सर्रुपाम्। अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहाँत्येनां भुक्तभोगामजौऽन्यः॥२६॥

ह×्सः शुंचिषद्वसुंरन्तरिक्षसद्धोतां वेदिषदतिथिर्दुरोण्सत्। नृषद्वंरसदंतसद्योमसद् गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्। घृतं मिमिक्षिरे घृतमेस्य योनिर्धृते श्रितो

घृतमुंबस्य धामे। अनुष्वधमावेह मादयेस्व स्वाहोकृतं वृषभ विक्षे हव्यम्। समुद्रादूर्मिमधुमारू उदारदुपार्शुना समेमृत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतेस्य नाभिः। वयं नाम प्रब्रेवामा घृतेनास्मिन यज्ञे धारयामा नमोभः। उपे ब्रह्मा श्रेणवच्छस्यमानं चतुः श्रङ्गोऽवमीद्रौर एतत्। चत्वारि श्रङ्गा नमोभः। उपे ब्रह्मा श्रेणवच्छस्यमानं चतुः श्रङ्गोऽवमीद्रौर एतत्। चत्वारि श्रङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधां बद्धो वृष्भो रोरवीति

मृहो देवो मर्त्यो॰् आविवेश॥२७॥

त्रिधां हितं पाणिभिगुधिमांनं गविं देवासों घृतमन्वंविन्दन्। इन्द्र एक्र॰ सूर्य

एकं जजान वेनादेक ईं स्वधया निष्टंतक्षुः। यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधियो

रुद्रो मृहर्षिः। हि<u>रण्यग</u>र्भ पंश्यत् जायेमान्<sup>र</sup> स नो देवः<sup>-</sup> शुभया स्मृत्या संयुनक्ता यस्मात्परं नापेर्मस्ति किश्चिद्यस्मात्राणीयो न ज्यायोऽस्ति कश्चित्।

बृक्ष इंव स्तब्यो दिवि तिष्टत्येक्स्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण् सर्वम्। न कर्मणा न प्रजया

यनेन् त्यागेनेके अमृत्त्वमान्युः। परेण् नाक् निहितं गुहायां विभाजेते यद्यतयो

मृहेश्वरः॥२८॥

पुरमध्यस्ङ्स्थम्। तत्रापि दहं गगनं विशोक्स्तिस्मेन् यदन्तस्तदुपोसितव्यम्। यो वेदादौ स्वरः प्रोको वेदान्ते च प्रतिष्ठितः। तस्यं प्रकृतिलीनस्य यः परं स

-तु परौन्तकाले परोमृतात्परिमुच्यन्ति सर्वे। दृहं विपापं प्रमेशमभूतं यत्पुंण्डरीकं

विशन्ति। वेदा-तविज्ञानुसुनिक्षितार्थाः सत्र्यांसयोगाद्यतंयः शुद्धसत्त्वाः। ते ब्रह्मलोके

सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंम्भुवम्। विश्वं नारायेणं देवमक्षरं परमं पदम्। विश्वतः परमात्रित्यं विश्वं नारायणः हीरम्। विश्वमेवेदं पुर्ुषस्तिद्विश्वमुपेजीविते। पतिं विश्वस्याऽऽत्मेश्वरः शाश्वतः शिवमेच्युतम्। नारायणं मेहाज्ञेयं विश्वात्मानं परायेणम्। नारायणपेरो ज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायण परं ब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः। नारायणपेरो ध्याता ध्यानं नारायणः परः। यत्र विश्वञ्जाध्सर्वे

अनेन्तमव्यंयं कृवि॰ संमुद्रेऽन्तं विश्वशंम्भुवम्। पद्मकोश प्रंतीकाश्र॰ हृदयं हुश्यते श्र्यतेऽपि वा॥ अन्तर्बहिश्चं तथ्मुर्वे व्याप्य नांरायुणः स्थितः॥२९॥ दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

चाप्ययोमुंखम्। अयो निष्ट्या वितस्त्यान्ते नाम्यामुपरि तिष्ठीते। ज्वालुमालाकुलं

भाती विश्वस्योऽऽयत्नं मेहत्। सन्तेत*॰* शिलामिस्तुलम्बेत्याकोश्नसन्निमम्। तस्यान्ते सुष्टिर*॰* सूक्ष्मं तस्मिन्थ्सुर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्यु मध्ये मृहाने-

ग्निविक्वाचिविक्वतोमुखः। सोऽग्रेमुग्विमेजन्तिष्ट्रत्राहोरमजुरः कृषिः। तिर्युगूर्खमधः

शायी रशमयंस्तस्य सन्तेता। सन्तापयेति स्वं देहमापोदतलमस्तेकः। तस्य मध्ये बिह्नेशिखा अणीयौष्वी व्यवस्थितः। नीलतोयदेमध्यस्थाद्विद्युह्नेखेव भास्वेरा। नीवारशूकेवत्तन्वी पीता भौस्वत्यणूपेमा। तस्यौः शिखाया मध्ये परमौत्मा

व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवः स हिर्यः सेन्द्रः सोऽक्षंरः पर्मः स्वराट्॥३०॥

नारायुणः स्थितो व्यवस्थितश्रुत्वारि च॥∎

आदित्यो वा एष एतन्मण्डले तपीते तत्र ता ऋचस्तह्वा मंण्डले॰ स ऋचां लोकोऽथ् य एष एतस्मिन्मण्डलेऽचिर्दीप्यते तानि सामानि स साम्नां मण्डले॰ स साम्नां लोकोऽथ् य एष एतस्मिन्मण्डलेऽचिषि पुर्ुषस्तानि यज्रूंशेष स यजुषा मण्डले॰ स यजुषां लोकः सैषा त्र्येवं विद्या तपिति य एषौऽन्तरांदित्ये हिर्णमयः ॥ आदित्यमण्डले परब्रह्मोपासनम्॥

आदित्यो वै तेज ओजो बलं यश्रुश्बक्षुः श्रोत्रमात्मा मनो मन्युर्मनुर्मृत्युः सृत्यो

॥ आदित्यपुरुषस्य सर्वात्मकत्वप्रदृशेनम्॥

पुरुषः॥ ३१॥

मित्रो वायुराकाशः प्राणो लोकपालः कः किं कं तथ्मत्यमन्नमृतों जीवो विश्वः

सलोकतामाप्रोत्येतासांमेव देवतांना ॰ सायुंज्य ॰ सार्षिता ॰ समानलोकतांमाप्रोति

कत्मः स्वंयुम्भु ब्रह्मेतदमृत एष पुरुष पृष भूतानामधिपतिब्रह्मणः सायुज्य र

833

হ ~ |

॥ शिवोपासनमन्त्राः॥

निधंनपतये नमः। निधंनपतान्तिकाय नमः। ऊर्घ्वाय नमः। ऊर्घ्विनिङ्गाय

नमः। हिरण्यायु नमः। हिरण्यलिङ्गायु नमः। सुवर्णायु नमः। सुवर्णलिङ्गायु नमः।

शर्वलिङ्गाय नमः। शिवाय नमः। शिवलिङ्गाय नमः। ज्वलाय नमः। ज्वलोलेङ्गाय

नमः। आत्मायु नमः। आत्मलिङ्गायु नमः। परमायु नमः। परमोलेङ्गायु नमः।

एतथ्सोमस्यं सूर्यस्य सर्विलिङ्गः स्थाप्यति पाणिमत्रं पवित्रम्॥३३॥

दिव्याय नमः। दिव्यलिङ्गाय नमः। भवाय नमः। भवलिङ्गाय नमः। शर्वाय नमः।

# ॥ पश्चिमवक्र-प्रांतेपाद्क-मन्त्रः ॥

सुद्योजातं प्रेपद्यामि सुद्योजातायु वै नमो नमेः। भूवे भेषे नाति भवे भवस्ब

[୭≈]**-**

# ॥ उत्तरवक्र-प्रतिपाद्क-मन्त्रः ॥

बामदेवाय नमौ ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमो कद्राय नमः कालाय कलेविकरणाय नमो बलेविकरणाय नमो बलाय नमो बलेप्रमधनाय

सर्वभूतदमनाय नमों मनोन्मेनाय नमेः॥३५॥

'뷖'뷖

[28]

॥ द्षिणवऋ-प्रतिपाद्क-मन्त्रः ॥

अघोरैभ्योऽधु घोरैभ्यो घोरुघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वश्रवेभ्यो नर्मस्ते अस्तु

रुद्रक्षेपेन्यः॥३६॥

तत्पुरुषाय विद्यहे महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयात्॥३७॥ ॥ प्राग्वञ्च-प्रांतेपाद्क-मन्त्रः॥

# ॥ ऊध्वेवक्र-प्रतिपाद्क-मन्त्रः॥

် (၁)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिब्रह्मणोऽधिपतिब्रह्मां शिवो

में अस्तु सदाशिवोम्॥३८॥

॥ नमस्कारमन्त्राः॥

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतय

ऋत ९ सत्यं पेरं ब्रह्म पुरुषं कुर्ष्णापिङ्गंलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय

उमापतये पशुपतयें नमो नमः॥३९॥

7 7

~~ •~ •~

|          | 7<br>Y |
|----------|--------|
|          |        |
|          |        |
|          |        |
|          |        |
|          |        |
|          |        |
|          |        |
|          |        |
| =        |        |
| =        |        |
| -<br>- 1 |        |

| _ |              |
|---|--------------|
|   | <u>नम्</u>   |
|   | सन्महो       |
|   | के<br>उद्ग   |
|   | <b>1</b> 0   |
|   | ्।<br>पुरुषो |
|   | अस्तु।       |
|   | नम्          |
|   | रुद्राय      |
|   | कुद्रस्तस्मे |
|   | NO           |
|   | तर्वो के     |

井岩

विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बंहुया जातं जायंमानं च यत्। सर्वो ह्यंष क्द्रस्तस्में कृदाय

```
नमों अस्तु॥४१॥
```

```
कदुदाय प्रचेतसे मीदुष्टमाय तव्यसे। वो चेम् शन्तेम ६ हुदे। सर्वो ह्येष
```

कुदस्तस्में कुद्राय नमो अस्तु॥४२॥

# ॥ अप्रिहोत्रहवण्याः उपयुक्तस्य वृक्षविशेषस्याभिधानम्॥

5 8

यस्य वैकंङ्कत्यग्निहोत्रहर्वणी भवति प्रत्येवास्याह्तयस्तिष्टन्त्यथो प्रतिष्ठित्यै॥४३॥

[の | |

कृणुष्य पाज् इति पर्शा४४॥

॥ भूद्वताकमन्त्रः॥

अदितिदेवा गन्यवी मनुष्याः पितरोऽसुरास्तेषारं सर्वभूतानां माता मेदिनी महता मही साविशे गायशे जगत्युवी पृथ्वी बंहुला विश्वां भूता केतमा का या

[ | | マ |

सा सत्येत्यमृतेति वसिष्ठः॥४५॥

॥ सर्वेदेवता आपः॥

प्राणा वा आपंः पृश्व

स्वराडापुश्छन्दाङ्क्यापो

ज्योती॒ ॐष्यापे॒ यजुॐ्ष्याप॑ः सृत्यमाप॒ः सर्वां देवता॒ आपो॒ भूर्भृव॒ः सुवराप्

<u>विराडापः</u> -

सुन्नाडापो

आपोऽत्रुमापोऽभृतमापः

आपो वा ड्रद॰ सर्वे विश्वां भूतान्यापंः

# ॥ सन्ध्यावन्द्नमन्त्राः॥

आपेः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मण्यतिब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टमभौज्यं यद्वां दुश्वरितं ममे। सर्वं पुनन्तु मामापोऽस्तां चे प्रोतेग्रह्ङु स्वाहाँ॥४७॥

<u>ရ</u>

आंग्रेश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युंकृतेभ्यः। पापेभ्यों रक्षन्ताम्।

हस्ताभ्याम्। पद्धामुदरेण शिश्र्या

अहस्तदंबलुम्पतु। यक्किं चं दुरितं मयि। इदमहं माममृतयोनौ। सत्ये ज्योतिषि यदहा पापंमकारिषम्। मनसा वाचां

~ ~ **I** नुहोमि स्बाहा॥४८॥

गत्रिस्तदेवलुम्पतु। यक्तिं चं दुरितं मयि। इदमहं माममृतयोनौ। सूर्ये ज्योतिषि गुहोमि स्वाहा॥४९॥ ි ල | जुहोंमि स्बाहा॥४९॥

॥ प्रणवस्य ऋष्यादिविवरणम्॥

ओमित्येकाक्षेरं ब्रह्मा अग्निदेवता ब्रह्मं इत्यार्षम्। गायत्रं छन्दं परमात्म

विनियोगम्॥५०॥ सरूपम्। सायुज्य

# ॥ गायत्र्यावाहनमन्त्राः॥

छन्देसां मातेदं

श्रम नुत्र यद्रात्रियां त्कुरुते आयोतु वर्षा देवी अक्षरं ब्रह्मसम्मितम्। गायत्रीं जुषस्वे मे। यदह्रौत्कुरुते पापं तदह्रौत्प्रतिमुच्येते। र तद्रात्रियाँत्यतिमुच्यते। सर्वे वर्णे मेहादेवि सुन्ध्याविद्ये स्रस्वंति॥५१॥

ओजोऽसि सहोऽसि बलेमसि आजोऽसि देवानां धाम नामासि विश्वेमसि

विश्वायुः सर्वमसि स्वरियुरिभभूरों गायत्रीमावाहियामि सावित्रीमावाहियामि

न्रस्वतीमावाहयामि छन्दऋषीनावाहयामि श्रियमावाहयामि गायत्रिया गायत्रीच्छन्दो विश्वामित्र ऋषिः सविता देवताऽग्रिमुंखं ब्रह्मा शिरो विष्णुर्हृदय॰

रुद्रः शिखा पृथिवी योनिः प्राणापानव्यानोदानसमाना सप्राणा श्वेतवर्णा

साङ्घायनसगोत्रा गायत्री चतुर्वि शत्यक्षरा त्रिपदा षद्धिष्टः पञ्चशीर्षोपनयने विनियोगु ओं भूः। ओं भुवः। ओ॰ सुवः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओ॰ 

ओमापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूभुंबः सुब्रोम्॥५२॥

॥गायत्री उपस्थानमन्त्राः॥

उत्तमे शिखेरे जाते भूम्यां पेर्वतमूर्धीने। ब्राह्मणैभ्योऽभ्यंनुज्ञाता गुच्छ देवि यथासुंखम्। स्तुतो मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ती पवने द्विजाता। आयुः

पृथिव्यां द्रविणं ब्रह्मवर्चुस् मह्यं दत्वा प्रजातुं ब्रह्मलोकम्॥५३॥

॥ आदित्यदेवतामन्त्रः॥

घृणिः सूर्यं आदित्यो न प्रभां वात्यक्षंरम्। मधुं क्षरन्ति तद्रंसम्। सृत्यं वे

[のm] |-तद्रसमापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूभुंबः सुब्रोम्॥५४॥

# ॥ त्रिसुपर्णमन्त्राः ॥

ब्रह्ममेतु माम्। मधुमेतु माम्। ब्रह्ममेव मधुमेतु माम्। यास्ते सोम प्रजावृथ्सोमि

सो अहम्। दुःस्वंप्रहन्दुेरुष्यह। यास्ते सोम प्राणाङ्स्तां जुहोमि। त्रिसुंपर्णमयांचितं

843 ब्राह्मणाये दद्यात्। ब्रह्महुत्यां वा पृते घ्रन्ति। ये ब्राह्मणास्त्रिसुंपर्णं पठेन्ति। ते सोम् प्राप्नुंबन्ति। आसृहस्रात्युङ्किं पुनेन्ति। ओम्॥५५॥ दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

ब्रह्मं मेथया। मधु मेथया। ब्रह्ममेव मधु मेथया। अद्या नो देव सवितः

प्रजावेथ्सावीः सौमेगम्। परो दुःष्वप्रियः सुवा विश्वानि देव सवितर्दुरितानि

परों सुव। यद्भद्रं तन्म आ सुव। मधु वातों ऋतायते मधुं क्षरिन्ति सिन्धेवः।

माध्वीनः स्न्त्वोषेधीः। मधु नक्तेमुतोषिस् मधुमत्पार्थिवर् रजः। मधु द्योरंस्तु नः त्रिसुपर्णमयांचितं ब्राह्मणाये दद्यात्। भूणहृत्यां वा पृते घ्नीन्त। ये ब्राह्मणास्त्रिसुपर्णे पठेन्ति। ते सोम् प्राप्नुबन्ति। आसृहस्रात्पक्किं पुनीन्ते। ओम्॥५६॥ पिता। मधुमात्रो वनस्पतिमधुमा॰ अस्तु सूर्यः। माष्वीगीवो भवन्तु नः। य इमं

ब्रह्म मेथवा। मधु मेथवा। ब्रह्ममेव मधु मेथवा। ब्रह्मा देवानां पद्वीः

केवीनामृषिविप्राणां महिषो मृगाणांम्। श्येनो गुप्राणाङ्क स्विषेतिविनांनाङ्क सोमेः पवित्रमत्येति रेभन्। हर्ष्यः शुंचिषद्वसुंरन्तिरक्षसद्धोतां वेदिषदितिथिदुरोण्सत्। नृषद्वरसदंतसद्योमसद्जा गोजा क्रेतजा अद्रिजा क्रुतं बृहत्। क्ष्ये त्वां रुचे त्वा समिध्क्षेवन्ति सरितो न धेनाः। अन्तर्हृदा मनेसा पूयमांनाः। घृतस्य धारां अभिचांकशीमि। हिर्ण्ययो वेतसो मध्यं आसाम्। तिस्मन्धैसुप्णों मधुकृत्कुला्धी

मजन्नास्ते मधुंदेवताभ्यः। तस्यांसते हरंयः सृप्ततीरै स्वधां दुहांना अमृतंस्य धाराँम्। य इदं त्रिसुंपर्णमयांचितं ब्राह्मणायं दद्यात्। वीर्हत्यां वा एते घ्रन्ति। ये ब्राह्मणास्त्रिसुंपर्णं पठेन्ति। ते सोमं प्राप्नेवन्ति। आसहस्रात्पक्षिं पुनेन्ति।

# ॥ मेघासूकम्॥

ओम्⊪५७॥

मेघा देवी जुषमाणा न आगाँद्विथाची भुद्रा सुमन्स्यमाना। त्वया जुष्टां

% **I** 

आसृहसात्पृङ्कं पुनन्ति

| गुषमांणा दुरुक्तांन्बृहद्वंदेम विदर्धे सुवीराः॥ त्वया जुष्टं ऋषिर्भवति देवि त्वया<br>ह्यारऽगतश्रीरुत त्वयाः। त्वया ज्रष्टेश्चित्रं विन्दते वस सा नो ज्ञषस्व दर्विणो न |
|---|
|---|

| × | 2 - 5                              |
|---|------------------------------------|
|   | ा <sup>5</sup><br>अश्विनांब्भावाधे |
|   | 本                                  |
|   | मेधां                              |
|   | सरस्वती।                           |
|   | 10 to                              |
|   | मेधां देवी                         |
|   | द्वात                              |
|   | - <del>  v</del>                   |
|   | 坤                                  |
|   | मेधां                              |

| अस्विनांबुभावाध  | -<br>(=2 |
|------------------|----------|
| <b>#</b>         | л<br>-   |
| मेयां            |          |
| सरस्वती।         | -<br>4   |
| 10,              | 1        |
| मेधां            |          |
| <u>で</u>         | -        |
| 7 <del>y</del> w |          |
| ابا              |          |
| 뎐.               |          |

| . अश्विनांबुभावार्धतां | दैवीं मुधा सरंस्वती |
|------------------------|---------------------|
| मेथां मे               | यन्मनः।             |
| सर्स्वती।              | गन्धर्वेषु च        |
| क्।                    | या मेधा             |
| इन्द्रो ददातु मेथां    | अफ्सरासुं च या      |
| मेथां म                | पुष्केरस्रजा।       |

| <u>5</u>                | - <del>   </del>     |
|-------------------------|----------------------|
|                         | दैवीं मेधा           |
| ਨ<br>ਨ                  | وان ا                |
| ์<br>5<br>เ             |                      |
|                         | व                    |
|                         | ा गन्धवेषु च यन्मनः। |
| 5<br>5<br>1             | मू                   |
| <u>5</u> ,              | ਕੋ                   |
| <u>_</u> 2              | । च                  |
| でする<br>マ<br>マ<br>マ<br>エ | अफ्सरासुं च या       |
| <del>x</del>            |                      |
| ۲ı                      | ਜ<br>ਗ               |

| <u>ರ</u>   | 4-<br>14-                       |
|--|---------------------------------|
| म् अन्यव्यविध्यावाद्य                            | Ŧ                               |
| <u>८</u>   | दैवीं मेधा                      |
| <u> </u>   | ∕H<br>≕∕⊢                       |
| रु '   | 90                              |
| Ŧ  | <del></del>                     |
| <u>ਡ</u><br>• •                                  | तन्न                            |
| =  | व                               |
| <u>9</u>   | , 10<br>- 12 %                  |
|  | गन्धर्वेषु                      |
|  | मेधा                            |
| ֖֖֖֡֝֝֝֟֝֝֝֝֝֝֝֝֝֝֝<br>֓֓֞֞֞֞֜֞֞֞֡֞֜֞֡֞֜֡֞֜֡֞֜֞֡ | पा<br>व                         |
| <del>-</del> 2                                   | व                               |
| <u>v</u>   | -<br>-<br>-<br>-<br>-<br>-<br>- |
| <u>ะ</u><br>ช<br>ห<br>ห<br>ห                     | अफ्सरासु च                      |
| ŢI   | 픱                               |

आ माँ मेघा सुरभिर्विश्वरूपा हिरंण्यवर्णा जगंती जगुम्या। ऊर्जस्वतो पर्यसा

で × T

पिन्वंमाना सा मां मेथा सुप्रतींका जुषन्ताम्॥६०॥

\( \int \( \int \)

मिथे मेथां मिथे प्रजां मय्युग्निस्तेजों दथातु मिथे मेथां मिथे प्रजां मयीन्द्रं

सा माँ मेथा सुरभिजुषताङ् स्वाहा॥५९॥

| <b>।। मृत्युनि</b><br>गुरुगुम् : यागुन्नेतुम्बर् | मृत्युनिवारणमन्त्राः ॥<br><sub>सम्बन</sub> े मे अर्भेशं क्राणेत | _ |  |
|--|---|---|--|
|--|---|---|--|

अपैंतु मृत्युर्मृतं न आगंन्वैवस्वतो नो अभंयं कृणोतु। पुर्णं वनस्यतेरिवाभिनंः शीयता ४ रुयिः स चे तात्रः शर्चापतिः॥६२॥ \( \sigma \) \( \

परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतंरो देवयानाँत्। चक्षुष्मते श्रुप्वते तें ब्रवीमि मा नेः प्रजा॰ रीरिषो मोत वीरान्॥६३॥

້∞ ×≥ **T** 

बातं प्राणं मनेसाऽन्वा रेभामहे प्रजापेतिं यो भुवंनस्य गोपाः। स नौ

मृत्योस्नायतां पात्व १ हंसो ज्योग्जीवा ज्रामंशीमहि॥६४॥

[タ×]**ー** 

| 847     | प्रत्यौहतामुश्चिना |   |
|---------|--------------------|---|
| ग्यकम्) | अभिश्रंस्तेरमुंअः। | = |

[2<u>8</u>] अमुत्र भूयादष यद्यमस्य बृहंस्पते मृत्युमंस्माद्देवानांमग्ने मिषजा शावींभिः॥६५

वृष्मं मंतीनाम्। हरिष् हर्गन्मनुयन्ति देवा विश्वस्येशानं सर्ष्णमनुमेदमागादयेनं मा विवेधोविक्रेमस्व॥६६॥

। জু

[ | | |

शल्कैर्ग्रिमिन्यान उुमौ लोकौ सनेमृहम्। उुभयौलेकियोर्-ऋष्वाऽति मृत्युं 0 5'

तराम्यहम्॥६७॥

~ 5 | मा छिदो मृत्यो मा वेधीमी मे बलं विवृहो मा प्रमोषीः। प्रजां मा में रीरिष् आयुंरुग्र नृचक्षेसं त्वा हविषो विधेम॥६८॥

マ シ **エ** 

| 848      | 耳                |                  |
|----------|------------------|------------------|
|          | <u>उक्षितम्।</u> | _                |
|          | - ㄷ              | ~<br>~           |
|          | 큐                | =<br>=           |
|          | ار<br>ال         | शीरेषः॥६९        |
| (        | उक्ष-तमुत        | र<br>स्र         |
| यकम्     | ا تا             | नस्तन्वे         |
| आरण      | 耳                | - <del>[</del> - |
| तैतिरीय  | मा नो अर्भकं     | प्रिया मा        |
| गत् (    | ᠯᠮ               | 4 .              |
| ोपनि     | 量                | मात्र            |
| ानारायणं | नहान्तमुत        | मोत ग            |
| – मह     | मृहा             | पितरं            |
| 湠        | <del>-</del> /   | -                |
| 표        | F                | मेऽबधाः          |
| दशमः     | ,,               | <b>市</b>         |

| = o o o =              |  |
|------------------------|--|
| विधेम ते               |  |
| । नर्मसा               |  |
| र्ह्रविष्मंन्तो        |  |
| <u>म</u> ेतोऽवधीः<br>- |  |
| रुद्र भागि             |  |
| <b>₹</b>               |  |

मा नेस्तोके तनेये मा न आयीषे मा नो गोषु मा नो अर्थेषु रीरिषः। बीरान्मा

# ॥ प्रजापतिप्रार्थनामन्त्रः॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तत्रों

स्वस्तिदा विशस्पतिर्वत्रहा विमुधो वृशी। वृषेन्द्रंः पुर ऐतु नः स्वस्तिदा

॥ इन्द्रप्राथेनामन्त्रः ॥

# अस्तु वयङ् स्यांम पतंयो रयोणाम्॥७१॥

|         | ॥ मृत्युञ्जयमन्त्राः॥                                |
|---------|--|
| [x x ]  |  |
| [ , , ] | अनेयङ्करः॥७२॥<br>-                                   |
| 849     | दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैत्तिरीय आरण्यकम्) |

# त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योमुक्षीय माऽमृताँत्॥ ७३॥

ีพ ช ये ते सृहस्रोम्युतं पाशा मृत्यो मत्यांय हन्तेवे। तान् युज्ञस्यं मायया सर्वानवं

यजामहे॥ ७४॥

ラ シ ー मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहाँ॥७५॥ [25] T

# ॥ पार्पानेवारक-मन्त्राः॥

देवकृतस्यैनंसोऽवयजनंमसि स्वाहां। मनुष्यंकृतस्यैनंसोऽवयजनमसि स्वाहाँ। पितृकृतस्यैनंसोऽवयजनंमसि स्वाहाँ। आत्मकृतस्यैनंसोऽवयजनंमसि म्नुष्यंकृतस्यैनंसोऽव्यजनंमसि

स्वाह्र॥ यहिवा च नक् चैनेश्वकृम तस्यांवयजनमास स्वाह्य॥ यथ्स्वपन्तेश्व स्वाहाँ। अन्यकृत्स्यैनंसोऽव्यजनंमास् स्वाहाँ। अस्मत्कृत्स्यैनंसोऽव्यजनंमास् तस्योवयजनमास् स्वाहाँ। यद्विद्वा॰स्अाविद्वा॰स्अजैनंश्रकुम तस्यांवयजनमास् जाप्रंतश्चेनंश्रकुम तस्यांवयजंनमसि स्वाहाँ। यथ्सुषुप्तंश्च जाप्रंतश्चेनंश्रकुम स्वाहाँ। एनस एनसोऽवयजनमीसे स्वाहा॥७६॥ ॥ वसुप्राथेनामन्त्रः॥

यद्वों देवाश्वकुम जि्ह्नयों गुरुमनेसो वा प्रयुती देव हेर्डनम्। अरोवा यो नो

अभि दुंच्छुनायते तस्मिन्तदेनों वसवो निघेतन स्वाहाँ॥७७॥

် ဖ

# ॥कामोऽकार्षीत्-मन्युरकार्षीत् मन्त्रः॥

# कामोऽकार्षीन्नमो नमः। कामोऽकार्षीत्कामः करोति नाहं करोमि कामः कर्ता

नाहं कर्ता कामें कारयिता नाहें कार्यिता एष ते काम कामांय स्वाहा॥७८॥

मन्युरकार्षींत्रमो नमः। मन्युरकार्षीन्मन्युः करोति नाहं करोमि मन्युः कर्ता

<u>∞</u> •

# नाहं कर्ता मन्युः कार्ययेता नाहं कार्यिता एष ते मन्यो मन्यंवे स्वाहा॥७९॥

নি আ

॥ विराजहोममन्त्राः॥

तिला श्रुहोमि सरसा १ सपिष्टान् गन्यार मम चित्ते रमंन्तु स्बाहा। गावो हिरण्यं

धनमत्रपान सर्वेषा ई श्रिये स्वाहा। श्रियं च लक्ष्मीं च पुष्टिं च कीर्तिं चानुण्यताम्।

ब्रह्मण्यं बंहुपुत्रताम्। श्रद्धामेघे प्रजाः सन्ददांतु स्वाहा॥८०॥

तिलाः कृष्णास्तिलाः श्रेतास्तिलाः सौम्या वंशानुगाः। तिलाः पुनन्तुं मे पापुं यत्किञ्चिद्दुरितं मीये स्वाहा। चोर्स्यात्रं नेवश्राष्ट्रं ब्रह्महा गुंफतुल्पगः। गोस्तेय ॰

सुरापानुं भूणहत्या तिला शान्ति॰ शमयेन्तु स्वाहा। श्रीश्र लक्ष्मीश्र पुष्टीश्र

कीर्तिं चानृण्यताम्। ब्रह्मण्यं बंहुपुत्रताम्। श्रद्धामेधे प्रज्ञा तु जातवेदः सन्ददांतु

स्बाह्ग॥८१॥

प्राणापानव्यानोदानसमाना में शुब्धन्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयास्

स्वाहाँ। वाङ्गनश्रक्षःश्रोत्रजिह्नाघ्राणरेतोबुद्धाकूतिःसङ्गल्पा में शुद्धन्तां ज्योति<u>र</u>हं विपाप्मा भूयास् स्वाहा। त्वक्रमेमारसरुधिरमेदोमज्ञास्नायवो- <u>बिरजां विपाप्मा भूयासङ् स्वाहाँ। उत्तिष्ठ पुरुष हरित पिङ्गल लोहिताक्षि देहि</u>

शिरःपाणिपादपार्श्वपृष्ठोरूदरजङ्घशिश्योपस्थपायवो मे शुस्यन्तां ज्योतिरहं

ऽस्थीनि में शुख्यन्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयास्थं स्वाहाँ।

विरजा

853 देहि ददापयिता में शुख्यन्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयास्ङु स्वाहा॥८२॥ दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैतिरीय आरण्यकम्)

पृथिव्यापस्तेजोबायुराकाशा में शुख्यन्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयास् स्वाहा। शब्दस्पर्शरूपरसगन्या में शुख्यन्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयास् स्वाहा। मनोबाक्कायकर्माणि में शुख्यन्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयास्

स्वाहाँ। अव्यक्तभावैरंहङ्कारैज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयास्ङ् स्वाहाँ। आत्मा

में शुद्धन्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयासङ् स्वाहाँ। अन्तरात्मा में

शुद्धन्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्पा भूथास्ङ् स्वाहाँ। परमात्मा में शुद्धन्तां ज्योति<u>र</u>हं विरजां विपाप्पा भूथास्ङ् स्वाहाँ। क्षुषे स्वाहाँ। क्षुत्पिपासाय स्वाहाँ। विविद्ये स्वाहाँ। ऋग्विधानाय स्वाहाँ। कृषोत्काय स्वाहाँ। क्षुत्पेपासामेलं

ज्येष्टाम्लक्ष्मीनांशयाम्यहम्। अभूतिमसंमृष्टिं च सर्वात्रिर्णुद मे पाप्नांनङ् स्वाहा। अत्रमय-प्राणमय-मनोमय-विज्ञानमय-मानन्दमय-मात्मा मे शुद्धान्तां ज्योतिंर्हं

विरजी विपाप्मा भूयास्ङ् स्वाहा॥८३॥

दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैतिरीय आरण्यकम्)

س س ا

अग्रये स्वाहाँ। विश्वैभ्यो देवेभ्यः स्वाहाँ। ध्रुवायं भूमाय् स्वाहाँ। ध्रुवक्षितंये स्वाहाँ। अच्युतक्षितंये स्वाहाँ। अग्रये स्विष्टकृते स्वाहाँ ॥ धर्माय स्वाहाँ। अर्थमीय स्वाहा। अस्यः स्वाहा। ओष्धिवनस्पतिभ्यः स्वाहा॥८४॥

रृक्षोदेवजनेभ्यः स्वाहाँ। गृह्याभ्यः स्वाहाँ। अवसानैभ्यः स्वाहाँ। अवसानपतिभ्यः स्वाहाँ। सर्वभूतेभ्यः स्वाहाँ। कामाय स्वाहाँ। अन्तरिक्षाय स्वाहाँ। यदेजति जगति

दिवे स्वाहाँ। सूर्याय स्वाहाँ। चन्द्रमंसे स्वाहाँ। नक्षेत्रेभ्यः स्वाहाँ। इन्द्रांय स्वाहाँ। बृहुस्पतंये स्वाहाँ। प्रजापंतये स्वाहाँ। ब्रह्मणे स्वाहाँ। स्वधा पितुभ्यः यम् चेष्टिति नाम्नो भागोऽयं नाम्ने स्वाहाँ। पृथिष्ये स्वाहाँ। अन्तरिक्षाय स्वाहाँ॥८५॥ स्वाहाँ। नमों क्द्रायं पशुपतंये स्वाहाँ॥८६॥

देवेभ्यः स्वाहाँ। पितुभ्यः स्वृधाऽस्तुं। भूतेभ्यो नमंः। मृनुष्यैभ्यो हन्ताँ। प्रजापंतये

स्वाहाँ। प्रमेष्ठिने स्वाहाँ। यथा कूपः शृतपारः सृहस्रोधारो अक्षितः। एवा में अस्तु धान्यः सृहस्रोधारुमक्षितम्। धनेधान्ये स्वाहाँ। ये भूताः प्रचरेन्ति दिवानक् बलिमिच्छन्तो वितुदेस्य प्रष्याः। तेभ्यों बुलिं पुष्टिकामों हरामि मिये पुष्टिं | | | | ओं तद्द्रह्मा ओं तद्दायुः। ओं तदात्मा। आं तथ्सत्यम्। ओं तथ्सर्वम्॥ पृष्टिपतिर्देधातु स्वाहाँ॥८७॥

ओं तत्पुरोनीमः॥ अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु। त्वं यज्ञस्त्वं वषद्वारस्त्वमिन्द्रस्त्व १ रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः। त्वं तंदाप् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूभृवस्सुव्योम्॥८८॥

# ॥ प्राणाहृतिमन्त्राः ॥

[ソゼ] |-

<u>श्र्</u>द्धायाँ प्राणे निविधोऽमृतं जुहोमि। श्र्द्धायांमपाने निविधोऽमृतं जुहोमि।

अमृतापुस्तरणमासे॥ श्रद्धाया प्राणे निविधोऽमृतं जुहोमि। शिवो मां विशाप्रदाहाय। प्राणाय स्वाहाँ॥ श्रद्धायांमपाने निविधोऽमृतं जुहोमि। शिवो मां ट्र विशाप्रेदाहाय। अपानाय स्वाहाँ॥ श्रद्धायाँ व्याने निविधोऽमृतं जुहोमि। श्रिको मो विशाप्रेदाहाय। व्यानाय स्वाहाँ॥ श्रद्धायांमुदाने निविधोऽमृतं जुहोमि। श्रिको <u>श्र</u>ुद्धाया<sup>९</sup> समाने निविधोऽमृतं जुहोमि। ब्रह्मणि म आत्माऽमृत्वाये॥ मां विशाप्रदाहाय। उदानाय स्वाहा॥ श्रद्धायां समाने निविधोऽमृतं जुहोमि। <u> श्रुद्धायाँ व्याने निविधोऽमृतं जुहोमि। श्रुद्धायांमुदाने निविधोऽमृतं जुहोमि</u> म आत्माऽमृत्वाय ब्रह्मणि अमृतोप्स्तरंणमसि॥ श्रद्धायाँ प्राणे निविष्टोऽमृतं शिवो मां विशाप्रदाहाय। सुमानाय स्वाहा॥ अमृतापिषानमंसि॥८९॥

# ॥ भुक्ताझाभिमञ्जामञाः॥

· 信,

-अद्धायाः -

श्रद्धायामपान निविश्यामृत४ हुतम्। प्राणमत्रेनाप्यायस्व।

# ॥भोजनान्ते आत्मानुसन्यानमन्त्राः॥

် ၅

अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽङ्गुष्ठं चे समाश्रितः। ईशः सर्वस्य जगतः प्रभुः प्रीणाति

# [≈g] |-विश्वमुक्॥॥९१॥

# ॥ अवयवस्वस्थता-प्राथंनामन्त्रः॥

- वाङ्गे आसन्। नुसोः प्राणः। अक्योक्षक्षुः। कर्णयोः श्रोत्रम्। बाहुवोर्बलम्॥

हिश्सीः॥९२॥

॥ इन्द्रसप्तिषि-संवाद्मन्त्रः॥

| 858 |  |
|-----|--|
|     |  |

| अपं ध्वान्तमूणुहि  |  |
|--|--|
| ऋषेयो नार्यमानाः।  |  |
| वयंः सुपुणां उपं सेदुरिन्द्रं प्रियमेथा<br>धे चक्षेमुमुग्ध्यंस्मात्रिधयेऽव बुद्धान्। |  |

# ॥ हृद्यालम्भनमन्त्रः ॥

- प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनात्रेनांप्यायुस्व॥९३॥
- [×ッ] **-**॥ देवताप्राणनिरूपणमन्त्रः ॥

नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि॥९४॥

[ショ] **-**

# ॥ ऑग्रेस्त्रांतेमन्त्रः॥

त्वमंग्रे द्यमिस्त्वमांशुशुक्षणिस्त्वमुद्धस्त्वमश्मनस्यरि। त्वं वनैन्यस्त्वमोषंधीभ्यस्त्वं नृणां नृपते जायसे शुर्चिः॥९५॥

しゅり り |

॥ अमीष्टयाचनामन्त्राः॥

शिवने मे सन्तिष्ठस्व स्योनेन मे सन्तिष्ठस्व सुभूतेन मे सन्तिष्ठस्व ब्रह्मवर्चसेन

मे सन्तिष्ठस्व युज्ञस्यर्धिमनु सन्तिष्टस्वोपं ते यज्ञ नम् उपं ते नम् उपं ते नमः॥९६॥

मृत्यं परं पर स्तिय स्तिन न सुंबगिष्ठोकाच्यंवन्ते कृदाचन सृता ह ॥ परतत्त्व-निरूपणम्॥

तद्दुरांधर्षुं तस्मात्तपीसे रमन्ते 。दम् इति नियंतं ब्रह्मचारिणस्तस्माद्दमे रमन्ते ँ

सत्यं तस्मौध्सत्ये रंमन्ते 。तप् इति तपो नानशंनात्परं यद्धि परं तप्स्तद्दुर्धर्षं

शम् इत्यरंण्ये मुनय्स्तस्माच्छमे रमन्ते 。 दानमिति सर्वाणि भूतानि प्रशक्षित्ति दानात्राति दुष्करं तस्मौद्दाने रंमन्ते 。 धर्म इति धर्मेण सर्वमिदं परिगृहीतं धर्मात्राति दुष्करं तस्मौद्दमें रंमन्ते 。 प्रजन् इति भूयारंसस्तस्माद्धियेष्टाः प्रजायन्ते तस्माद्भविष्ठाः प्रजनंने रमन्तेऽग्रय 。 इत्यांह तस्मांदग्नय आधांतव्या अग्निहोत्रमित्यांह तस्मांदग्निहोत्रे रमन्ते 。 यज्ञ इति यज्ञो हि देवास्तस्मांद्यज्ञे रमन्ते 。 मानसमिति विद्वाश्सस्तस्मादिद्वाश्सं एव मानसे रमन्ते 。 न्यास इति ब्रह्मा ब्रह्मा हि परः परो हि ब्रह्मा तानि वा एतान्यवराणि पराशेसि न्यास 860 \ タ **ー** दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैत्तिरीय आरण्यकम्) एवात्येरेचयुद्य एवं वेदे त्युपनिषत्॥ ९७॥

## ॥ ज्ञानसाधन-निरूपणम्॥

प्राजापत्यो हारुणिः सुपर्णेयः प्रजापेतिं पितर्मुपंससार् किं भंगवन्तः पंरमं वेद्न्तीति तस्मै प्रोवाच 。सृत्येनं वायुरावाति सृत्येनाऽऽदित्यो रोचते दिवि

ᅺᄽᆥ

दशमः

मुत्यं बाचः प्रतिष्ठा मृत्ये मुवै प्रतिष्ठितं तस्माध्मृत्यं पंरुमं बदेन्ति ं तपेसा देवा

न्ब प्रतिष्ठितं तस्मात्तपः परमं बदन्ति 。दमेन दान्ताः किल्बिषमवधून्वन्ति दमेन

द्वतामग्रं आयुन्तपुसर्षयः सुब्रन्वंविन्दं तपंसा स्पतान् प्रणुदामारातीस्तपं

ब्रह्मचारिणः सुवेरगच्छुन्दमो भूतानां दुराधर्षं दमे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माद्दमः

पर्मं वर्दन्ति 。शमेन शान्ताः शिवमाचर्रन्ति शमेन नाकं मुनयोऽन्वविन्दुञ्छमे

धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मौद्धर्मं पर्गमं वर्दन्ति 。प्रजनमनं वे प्रतिष्ठा लोके साधु प्रजायौस्तन्तुं तेन्वानः पितृणामेनृणो भविति तदेव तस्यानृणं तस्मौत् प्रजनेनं पर्मं वर्दन्त्युग्नयो वे त्रयी विद्या 。 देवयानः पन्यो गारहपत्य ऋक्पेथिबी

सुवर्गो

वामदेव्यमांहवृनोयः

(थन्त्रमन्वाहायेपचन

विश्वस्य जगंतः प्रतिष्ठा लोके धृमिष्ठं प्रजा उपसूर्पान्तं धुर्मेणं पापमंपुनुदीत

भूतानाँ दुराधर्षञ्छमे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माच्छमंः परमं वर्दन्ति 。दानं यज्ञानां वर्रुषं दक्षिणा लोके दातार्थं सर्वभूतान्युपजीवन्तिं दानेनारीतीरपोनुदन्त दानेने द्विषन्तो मित्रा भेवन्ति दाने सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मौद्दानं परमं वर्दन्ति 。 घुर्मो

861

862 दशमः प्रशः — महानारायणोपनिषत् (तैतिरीय आरण्यकम्)

नुशन्य। पर्पाय पुर्यं सामान्य सम्मित्र अद्धा श्रद्धयां मेधा मेधयां मनीषा मवत्यत्रेन प्राणाः प्राणेर्बलं बलेन तप्स्तपंसा श्रद्धा श्रद्धयां मेधा मेधयां मनीषा मनीषया मनो मनेसा शान्तिः शान्त्यां चित्तं चित्ते स्मृतिङ्क स्मृत्या स्मार्ङ् स्मारेण विज्ञाने विज्ञानेनात्माने वेदयति तस्मांदुत्रं दद्न्थ्सवाण्येतानि ददात्यत्राात्

पुर्जन्यो बर्षति

प्जीनीषधिवनस्पृतयः प्रजायन्त ओषोधेवनस्पोतोभैरत्र

पुवित्रं मानसेन मनेसा साधु पंश्यति मानसा ऋषेयः प्रजा अंसृजन्त मानसे सुवै प्रतिष्ठितं तस्मान्मानसं पंरमं वर्दान्ति ः न्यास इत्याहुर्मनीषिणौ ब्रह्माणें ब्रह्मा विश्वः कतमः स्वयम्भः प्रजापतिः संवथ्सर इति संवथ्सरोऽसावादित्यो य एष आदित्ये पुरुषः स पंरमेष्ठी ब्रह्मात्मा ः याभिरादित्यस्तपति रश्मिभिस्तािभेः

बृहत्तस्मांदग्नीन्यंग्मं वदंन्त्यग्निहोत्र सायं प्रातर्गृहाणां निष्कृतिः स्विष्ट सृहुतं

863 प्राणा भेवन्ति 🌣 भूतानौं प्राणैर्मनो मनेसश्च विज्ञानं विज्ञानांदानन्दो ब्रह्मयोनिः स दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

वा एष पुरुषः पञ्चया पेञ्चात्मा येन सर्वीमृदं प्रोतं पृथिवी चान्तरिक्षं च द्योञ्च

दिशंश्वावान्तरदिशाश्व स वै सर्वमिदं जगुथ्स च भूतरं स भृव्यं जिज्ञासक्कुप्त ऋेतजा रियेष्ठा ं श्रृद्धा सृत्यो महेस्वान्तपसो विरिष्ठाद्वात्वां तमेवं मनेसा हृदा

च भूयो न मृत्युमुपेयाहि विद्वान्तस्माैत्र्यासमेषां तपेसामतिरिक्तमाहुर्वसुरण्वो विभूरीसे प्राणे त्वमिसे सन्याता <sub>ँ</sub> ब्रह्मेन् त्वमिसे विश्वधृत्तेजोदास्त्वमेस्युग्निरीसे वर्चोदास्त्वमीस् सूर्यस्य झुम्रोदास्त्वमीसे चन्द्रमंस उपयामगृहीतोऽसि ब्रह्मणै त्वा ं महस् ओमित्यात्मानं युआैतैतद्वे मेहोप्निषंदं देवानां गुह्यं य एवं वेदं ब्रह्मणी महिमानमाप्रोति तस्मौद्ध्रह्मणों महिमानीमित्युपनिषत्॥१८॥

॥ ज्ञानयज्ञः ॥

तस्यैवं विदुषों युज्ञस्याऽऽत्मा यजमानः श्रृद्धा पती शरीरमिष्ममुरो वेदिलोमानि

बुर्हिवेदः शिखा हदेयं यूपः काम् आज्यं मृन्युः पृशुस्तपोऽग्रिदेमः शमियेत दशमः प्रशः — महानारायणोपनिषत् (तैतिरीय आरण्यकम्)

यथ्सश्चरंत्युपविशंत्युतिष्ठेते च स प्रवग्यों यन्मुख तदाहवनाया या व्याहीतेराहुतिर्यदंस्य विज्ञानं तञ्जुहोति यथ्सायं प्रातरीते तथ्समिषं यत्पातर्मध्यं

दिन॰ साँयं च तानि सर्वनानि ये अहोरात्रे ते दंरशपूर्णमासौ यैऽर्धमासाश्च मासाश्च ते चांतुर्मास्यानि य ऋतवस्ते पंशुबन्या ये संवध्सराश्चे परिवध्सराश्च तेऽहर्गणाः सर्ववेद्सं वा ुरुतध्सत्रं यन्मरंणं तदंबभृधं एतद्वे जंरामर्थमग्रिहोत्र॰

ब्राह्मणो विद्वानुभिजंयति

सुत्रं य एवं विद्वानुंद्गयेने प्रमीयेते देवानांमेव मीहेमानं गुल्वाऽऽदित्यस्य सायुंज्यं

गच्छुत्यथु 。यो देक्षिणे प्रमीयंते पितृणामेव महिमानं गुत्वा चन्द्रमंसः सायुंज्य ॰

तस्माँद्रह्मणों महिमानंमाप्रोति तस्माँद्रह्मणों महिमानंमित्युपनिषत्॥९९॥

वै सूर्याचन्द्रमसोमिहिमानौ

सल्रोकतांमाप्रोत्येतौ

दक्षिणा वाग्घोता" प्राण उंद्याता चक्षुंरप्बर्धुर्मनो ब्रह्मा ं श्रोत्रमग्नीद्याबद्धियेते सा दोक्षा यदश्जोति तद्धविरीत्पिबेति तदंस्य सोमपानं यद्रमेते तदुंप्सदो

दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् (तैत्तिरीय आरण्यकम्)

ॐ सृह नांववतु। सृह नौ भुनक्तु। सृह वीर्यं करवावहै। तेज्रस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

[°2] 865

॥ कृष्णयजुर्वेदीयतेत्तिरीय-काठकम्॥

गर्गान्यात्रात्यात् अयोतिष्माङ्कतेजंक्वानातपङ्कतपंत्रभितपन्। रोचनो ग्यानामान्थ्यम्यान्। ज्योतिष्माङ्कतेजंक्वानातपङ्करतपंत्रभितपन्। रोचनो रोचेमानः शोमनः शोमेमानः कृल्याणेः। दर्शां हृष्टा दंरशता विश्वक्षा

<u>प्रभानाभान्थ्सम्भान्।</u>

सुदर्शुना। आष्यायेमाना प्यायेमाना प्यायो सूनुतेरा। आषूर्यमाणा पूर्यमाणा

र्यन्ती पूर्णा पौर्णमासी। दाता प्रदाताऽऽन्न्दो मोदेः प्रमोदः॥१॥

कल्पंमानुमुपंक्कपं क्रुप्तम्। श्रेयो वसीय आयथ्सम्भूतं भूतम्। चित्रः केतुः प्रभानाभान्थ्सम्भान्। ज्योतिष्माङ्स्तेजंस्वानातपङ्स्तपंत्रभितपन्। रोचनो

संज्ञानं विज्ञानं प्रज्ञानं ज्ञानदीमेजानत्। सङ्कल्पेमानं प्रकल्पेमानमुप-

आवेशयोत्रवेशयैन्थ्संवेशनः स॰शौन्तः शान्तः। आभवेन्प्रभवैन्थ्सम्भवन्थ्सम्भेतो भूतः। प्रस्तुेतं विष्टुेत<u>ः</u> सङ्स्तुेतं कृल्याणं विश्वक्षपम्। शुक्रममृतं तेज्रस्वि तेज्ञः समिद्धम्। अरुणं भानुमन्मरीविमदभितपृतप्तपेस्वत्। सविता प्रसविता दीप्तो

र्युपयुन्दीप्यमानः। ज्वलंड्यिलिता तपन्वितपैन्थ्स्न्तपन्। रोचनो रोचमानः शुम्भः

|| प्रथम: प्रश्न: ||

गुम्नंमानो बामः। सुता सुंन्वती प्रसुता सूयमांनाऽभिषूयमांणा। पीती प्रपा सम्पा प्रथमः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

कान्ता काम्या कामजाताऽऽयुष्मती कामदुवां। अभिशास्ताऽनुमन्ताऽऽनन्दो मोदं प्रमोदः। आसादयंत्रिषादयँन्थ्सर्सादंनः सर्सेन्नः सन्नः। आभूर्विभूः प्रभूः शम्भूभुवंः। पवित्रं पवयिष्यन्यूतो मेध्यंः। यशो यशंस्वानायुर्मतंः। जीवो जीविष्यन्थ्स्वर्गो लोकः। सहंस्वान्थ्सहीयानोजंस्वान्थ्सहंमानः। जयंत्रमिजयँन्थ्सु-द्रविणो द्रविणोदाः। आर्द्रपंवित्रो हिरिकेशो मोदंः प्रमोदः॥३॥

अरुणोऽरुणरंजाः पुण्डरीको विश्वजिदिमिजित्। आर्दः पिन्वेमानोऽत्रेवात्रसंवानिरां सर्वोष्यः संम्मरो महंस्वान्। एजत्का जोवत्काः। क्षुञ्जकाः शिपिविष्टकाः।

आशुर्निमेषः फुणो द्रवेत्रतिद्रवन्। त्वर्ङ्स्त्वरंमाण आशुराशीयाञ्चवः। अग्निष्टोम मुरिस्तराः सुशेरवः। अजिरासो गमिष्णवंः। इदानीं तदानीमेतर्हि क्षिप्रमीजिरम्।

उुकथ्योऽतिरात्रो द्विरात्रिक्षेत्रात्रश्चेत्रात्रः। अग्निर्ऋतुः सूर्य ऋतुश्चन्द्रमां ऋतुः।

प्रथमः प्रश्नः (कृष्णायजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्) प्रजापंतिः संबध्सरो महान्कः॥४॥

भूराग्नें चे पृथिवीं च मां चे। त्रीङ्श्चे लोकान्थ्संवथ्सरं चे। प्रजापेतिस्त्वा सादयतु। तयो देवतेयाऽङ्गिरस्बद्धुवा सींद। भुवों वायुं चान्तरिक्षं च मां चे।

त्रीङ्श्रं लोकान्थ्संवथ्सरं चे। प्रजापेतिस्त्वा सादयतु। तयो देवतंयाऽङ्गिरम्बद्धवा

सीद। स्वेरादित्यं च दिवं च मां चे। त्रीङ्क्षं लोकान्थ्संवथ्सरं चे। प्रजापेतिस्त्वा सादयतु। तयों देवतेयाऽङ्गिर्म्बद्धवा सीद। भूभृंवः स्वेश्चन्द्रमंसं च दिशंश्च मां चे। त्रीङ्श्रं लोकान्थ्संवथ्सरं चं। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्क्षव्धवा

で 【

त्वमेव त्वां वैत्थ योऽसि सोऽसि। त्वमेव त्वामेचैषीः। चितश्रासि

सिश्रितश्वास्यग्ने। पुताबा् कुश्वासि भूया ईश्वास्यग्ने। यत्ते अग्ने न्यूनं यदु तेऽतिरिक्तम्।

870 आदित्यास्तदिङ्गरसिश्चन्तु। विश्वे ते देवािश्वितिमापूरयन्तु। चितश्वािस सिर्धितश्वास्यग्ने। एतावाङ्श्वासि भूयाङ्श्वास्यग्ने। मा ते अग्ने च येन माऽति च येनाऽऽयुरावृक्षि। सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्यददाबुदेति। तपेसो जातमनिभृष्टमोजः। तत्ते ज्योतिरिष्टके। तेने मे तपा तेने मे ज्वल। तेने मे दीदिहि। यावेद्देवाः। प्रथमः प्रश्नः (कृष्णायजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्)

यावदसाति सूर्यः। यावंदुतापि ब्रह्मं॥६॥

संवथ्सरोऽसि परिवथ्सरोऽसि। इदावथ्सरोऽसीदुवथ्सरोऽसि। इद्वथ्सरोऽसि वथ्सरोऽसि। तस्ये ते वस्न्तः शिरंः। ग्रोष्मो दक्षिणः पृक्षः। वर्षाः पुच्छम्।

शुरदुत्तेरः पृक्षः। हेम्न्तो मध्यम्। पूर्वपृक्षािश्चतेयः। अपुरपृक्षाः पुरीषम्॥७॥

अहोरात्राणीष्टंकाः। ऋषमोऽसि स्वर्गो लोकः। यस्याँ दिशि महीयंसे। ततो नो मह आवेह। बायुर्भूत्वा सर्वा दिश् आवीह। सर्वा दिशोऽनुविवीहि। सर्वा दिशोऽनुसंवीह। चित्या चितिमापृण। अचित्या चितिमापृण। चिदंसि

समुद्रयोनिः॥८॥

इन्दुर्दक्षेः श्येन ऋतावा। हिरंण्यपक्षः शकुनो भुंरण्युः। मृहान्थ्स्थस्थे ध्रुव आनिषंतः। नमंस्ते अस्तु मा मां हि॰सीः। एति प्रेति वीति समित्युदिति। दिवं

मे यच्छ। अन्तरिक्षं मे यच्छ। पृथिवीं में यच्छ। पृथिवीं में यच्छ। अन्तरिक्षं

मे यच्छ। दिवं मे यच्छ। अहा प्रसारया रात्या समंचा रात्या प्रसारया अहा

समेचा कामं प्रसारया काम्र्ंसमेच॥९॥

भूभुंवः स्वंः। ओजो बलम्। ब्रह्मं क्षत्रम्। यशों महत्। सृत्यं तपो नामे। रूपममृतम्। चक्षुः श्रोत्रम्। मन् आयुंः। विश्वं यशों महः। समं तपो हरो भाः। जातवेदा यदि वा पावकोऽसिं। वैश्वान्रो यदि वा वैद्युतोऽसिं। शं प्रजाभ्यो यजमानाय लोकम्। ऊर्जं पुष्टिं ददंदभ्यावंवृथ्स्व॥१०॥

प्रथमः प्रश्नः (कृष्णायजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

872

राज्ञीं विराज्ञीं। सम्प्राज्ञीं स्वराज्ञीं। अचिः शोचिः। तपो हरो भाः। अग्निरिन्द्रो बृहस्पतिः। विश्वे देवा भुवेनस्य गोपाः। ते मा सर्वे यशंसा स॰सृजन्तु॥११॥

<u>س</u> ا

स्वाहाऽधिपतये न्वाहाँ। दिवां पतेये स्वाहाऽ९॑हस्पत्याय स्वाहाँ। चाक्षुष्मत्याय स्वाहाँ ज्योतिष्मत्याय स्वाहाँ। राज्ञे स्वाहां विराज्ञे स्वाहाँ। सम्राज्ञे स्वाहाँ स्वराज्ञे

स्वाहाँ। शूषांयु स्वाहा सूर्यांयु स्वाहाँ। चुन्द्रमंसे स्वाहा ज्योतिषे स्वाहाँ। सुरुसपांयु

स्वाहो कल्याणांय स्वाहाँ। अर्जुनाय स्वाहाँ॥१२॥

अत्यो न कीर्डन्नसर्द्वषा हिरिः। उपयामगृहीतोऽसि

जीणामितिसपीते त्वचम्।

विपश्चिते पर्वमानाय गायत। मृहो न धाराऽत्यन्यो अर्षात। अहिर्ह

मृत्यवे त्वा जुष्टं गृह्णामि। एष ते योनिर्मृत्यवे त्वा। अपंमृत्युमपृक्षुथम्। अपेतः

असंवे स्वाहा वसंवे स्वाहाँ। विभुंवे स्वाहा विवस्वते स्वाहाँ। अभिभुवे

सर्वानवेयजामहे। मृक्षौऽस्यमृतमृक्षः। तस्ये ते मृत्युपीतस्यामृतंवतः। स्वगाकृतस्य मधुमतः। उपहूतस्योपंहूतो भक्षयामि। मन्द्राऽभिभूतिः केतुर्यज्ञानां वाक्। अग्निमें बाचि श्रितः। बाग्धृदेये। हृदंयं मिये। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मणि। बायुमें अन्यो जागृविः प्राणा असाविहि। बधिर औकन्दयितरपाना असाविहि। अहस्तोस्त्वा चक्षुः। असाविहि। अपादाशो मनेः। असाविहि। कवे विप्रवित् श्रोत्रो ये ते सहस्रमयुतं पाशाः। मृत्यो मत्यांय हन्तेवे। तान् यज्ञस्यं मायया। सुह्स्तः सुंबासाः। शूषो नामौस्युमृतो मर्त्येषु। तं त्वाऽहं तथा वेदे। असाविहि। शुपर्थं जिहि। अधी नो अग्रु आवेह। रायस्पोष् सहस्रिणम्॥१३॥ प्रथमः प्रश्नः (कृष्णायजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्) असावेहिं॥१४॥ असावेहिं॥१५॥

प्राणो हदये। हदयं मिये। अहम्मृतै। अमृतं ब्रह्मणि। सूयों मे चक्षीषि श्रितः।

प्राणे श्रितः॥१६॥

चक्षुर्हदेये। हदंयं मयि। अहम्मृतै। अुमृतं ब्रह्मोणे। चुन्द्रमां मे मनीसे श्रितः॥१७॥ मनो हद्ये। हद्यं मयि। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मणि। दिशों मे श्रोत्रे श्रिताः। श्रोत्र×् हद्ये। हद्यं मयि। अहम्मृतै। अमृतं ब्रह्मणि। आपों मे रेतिस श्रिताः॥१८॥ प्रथमः प्रश्नः (कृष्णायजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

रेतो हदेये। हदेयं मिये। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मीण। पृथिवी मे शरीरे श्रिता। शरीर् हदेये। हदंयं मिये। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मीण। ओष्धिवनस्पतयों मे लोमंसु श्रिताः॥१९॥

लोमांनि हदेये। हदेयं मयि। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मोणे। इन्द्रों मे बलै श्रितः। बलु॰ हदेये। हदेयं मयि। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मोणे। पुर्जन्यों मे मूर्घि श्रितः॥२०॥ श्रितः। मृन्युर्हदेये। हदेयं मिये। अृहमुमृतै। अमृतं ब्रह्मीणे। आ़त्मा मे आ़त्मिनि मूर्धा हदये। हदयं मिये। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मणि। ईशानो मे मन्यौ

ब्रह्मणि। पुनेर्म हदंयं मियां अहममृतां अमृतं आत्मा हदये। िश्रेतः॥२१॥

पुनुरायुरागाँत्। पुनेः प्राणः पुनराकूतमागाँत्। वैश्वानुरो रशिमित्रिबिवृधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतेस्य गोपाः॥२२॥ प्रथमः प्रश्नः (कृष्णायजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्)

प्रजापंतिर्देवानंसुजत। ते पाप्मना सन्दिंता अजायन्त। तान्व्यंद्यत्। यद्यद्यत्

तस्मौद्विद्युत्। तमेवृश्चत्। यदवृश्चत्। तस्माद्वृष्टिः। तस्माद्यत्रैते देवते अभिप्राप्नुतः। वि चे हैवास्य तत्रे पाप्मानं द्यतेः॥२३॥

वृश्चतंश्व। सैषा मीमा॰्साऽग्निहोत्र एव संम्पन्ना। अथो आहुः। सर्वेषु यज्ञकृतुष्विति। होष्यंत्रप उपस्पृशेत्। विद्युंदसि विद्यं मे पाप्मानमिति। अथं हुत्वोपंस्पृशेत्। वृष्टिंरसि वृश्चं मे पाप्मानुमिति। युक्ष्यमाणो वृष्टा बा। वि चं

हैवास्यैते देवते पाप्मानं द्यतः॥२४॥

कृश्वतंश्व। अत्युष्हो हाऽऽर्राणः। ब्रह्मचारिणै प्रश्नान्पोच्य प्रजिघाय। परेहि। प्रक्षं

दय्यांम्पातिं पृच्छ। वेत्थं सावित्रा(३)त्र वेत्था(३) इति। तमागत्यं पप्रच्छ। आचार्यो

स कस्मिन्प्रतिष्ठित इति। प्रोरंजसीति। कस्तद्यत्परोरंजा इति। एष वाव स प्रोरंजा इति होवाच। य एष तपीते। एषौऽवीग्रंजा इति। स कस्मिन्त्वेष इति। सत्य इति। किं तथ्मत्यमिति। तप इति॥२६॥ म् प्राहेषीत्। वेत्थं सावित्रा(३)त्र वृत्था(३) इति। स होवाच् वेदेति॥२५॥ प्रथमः प्रश्नः (कृष्णायजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

कस्मिन्नु तप् इति। बल् इति। किं तद्दल्मिति। प्राण इति। मा स्मे

प्राणमतिपृच्छु इति माऽऽचायौंऽब्रवीदिति होवाच ब्रह्मचारी। स होवाच घुक्षो दय्यौम्पातिः। यद्वे ब्रह्मचारिन्याणमत्येप्रक्ष्यः। मूर्धा ते व्यपेतिष्यत्। अृहमुत

श्रीस्तपों मन्यते। अन्वेस्मै तपों बलें मन्यते। अन्वेस्मै बलें प्राणं मन्यते। स

यदाहे। सुंजानै विज्ञानुं दर्शां टुष्ठेति। एष एव तत्॥२८॥

सहास्मिञ्छ्यं दघाति। अनु ह वा अस्मा असी तप्ञ्छ्यं मन्यते। अन्वस्मे

तस्मौथ्सावित्रे न संवेदता स यो हु वै सावित्रं विदुषा सावित्रे संवदता

आचार्याच्छ्रयान्मविष्यामि। यो मां सावित्रे समवादिष्टति॥२७॥

प्रथमः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्)

अथ यदाहे। प्रस्तुंतं विष्टुंतः सुता सुंन्वतीति। एष एव तत्। एष ह्येव तान्यहोनि। एष रात्रेयः। अथ यदाहे। चित्रः केतुर्दाता प्रेदाता संविता प्रेसिविताऽभिशास्ताऽनुंमन्तेति। एष एव तत्। एष ह्येव तेऽह्ये मुहूर्ताः। एष रात्रेः॥२९॥

तत्। एष ह्येव तेऽर्धमासाः। एष मासाः। अथ यदाहे। अग्निष्टोम उक्थ्योऽग्निर्ऋतुः प्रजापेतिः संवथ्सर इति। एष एव तत्। एष ह्येव ते येज्ञकृतवेः। एष कृतवेः॥३०॥ अथ् यदाहे। पुवित्रं पवियुष्यन्थ्सहंस्वान्थ्सहीयानकृणोऽकृणरंजा इति। एष एव

एष संबथ्सरः। अथ् यदाहे। इदानीं तृदानीमिति। एष एव तत्। एष ह्येव ते मुहूतीनां मुहूतीः। जनको ह वैदेहः। अहोरात्रेः समाजगाम। तर होचुः। यो वा अस्मान् वेदे। विजहेत्पाप्मानमिति॥३१॥

नास्याम्ष्यिंक्षोकेऽत्रं क्षीयत अभि स्वगै लोकं सर्वमायुरेति। अभि स्वर्ग लोकं जंयति। इति। विजहंद् वै पाप्मानमिति। सर्वमायुरेति।

नास्यामुर्ष्मिंस्रोकेऽत्रं क्षीयते। य एवं वेदं। अहींना हाऽऽश्वध्यः। सावित्रं विदां प्रथमः प्रश्नः (कृष्णायजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्) चकार॥३२॥ स हे हु॰सो हिरणमयो भूत्वा। स्वर्ग लोकमियाय। आदित्यस्य सायुज्यम्। हु॰सो हु वै हिरणमयो भूत्वा। स्वर्ग लोकमेति। आदित्यस्य सायुज्यम्। य एवं वेदे। देवमागो हे श्रौतर्षः। सावित्रं विदां चेकार। त॰ हु वागदंश्यमानाऽभ्युंवाच॥३३॥

सर्वं बत गौतमो वेदं। यः सांवित्रं वेदेतिं। स होवाच। कैषा वागुसीतिं। अयमहरू सांवित्रः। देवानांमुत्तमो लोकः। गुह्यं महो बिभ्रदितिं। एताविति ह गौत्मः। युज्ञोपुवीतं कृत्वाऽधो निपंपात। नमो नम् इतिं॥३४॥

स होवाच। मा भैषीगौतम। जितो वै ते लोक इति। तस्माद्ये के चे सावित्रं विदुः। सर्वे ते जितलोकाः। स यो ह वै सांवित्रस्याष्टाक्षरं पद्ध् श्रियाऽभिषित्तं वेदं। श्रिया हैवाभिषिच्यते। घृणिरिति द्वे अक्षरें। सूर्ये इति त्रीणि। आदित्य इति

इति। न ह वा एतस्युची न यजुंषा न साम्नाऽथौंऽस्ति। यः सांवित्रं वेदं॥३६॥
तदेतत्पीर् यद्देवचक्रम्। आर्द्रं पिन्वमानः स्वर्गे लोक एति। विजहिद्धियां
भूतानि सम्पश्यंत्। आद्रों ह वै पिन्वमानः। स्वर्गे लोक एति। विजहित्यियां
भूतानि सम्पश्यन्। य एवं वेद्। शूषो ह वै वार्ष्ण्यः। आदित्येनं समाजंगाम। तः
होवाच। एहि सावित्रं विद्धि। अयं वै स्वग्यौंऽग्रिः पारियेष्णुरमृताध्सम्भृत इति।
एष वाव स सांवित्रः। य एष तपेति। एहि मां विद्धि। इति हैवैनं तदुवाच॥३७॥ 879 एतद्वे सांवित्रस्याष्टाक्षरं पदङ् श्रियाऽभिषिक्तम्। य एवं वेदं। श्रिया हैवाभिषिच्यते। तदेतद्वाऽभ्युक्तम्। ऋचो अक्षरं परमे व्यामन्। यक्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः। यस्तं न वेद् किमृचा कीरिष्यति। य इत्तद्विदुस्त इमे समासित् प्रथमः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्)

ड्डयं वाव सुरघाँ। तस्यां आग्नेरेव सांरुघं मधुं। या पृताः पूर्वपक्षापरपृक्षयो

880 प्रथमः प्रश्नः (कृष्णायजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्)

रात्रेयः। ता मंधुकृतेः। यान्यहांनि। ते मंधुकृषाः। स यो ह वा एता मंधुकृतंश्च मधुकुषाङ्श्व वेदं। कुर्वन्ति हास्येता अग्रो मधु। नास्यैष्टापूर्तं धंयन्ति। अथ् यो न

नामुधेयोनि वेदे। नाहोरात्रेष्वार्तिमाच्छेति। संज्ञानं विज्ञानं दर्शां हृष्टेति। एतावेनुवाकौ पूर्वपक्षस्योहोरात्राणां नामुधेयोनि। प्रस्तुतं विष्टुंतर सुता सुन्वतीति। एतावेनुवाकावेपरपुक्षस्याहोरात्राणां नामुधेयांनि। नाहोरात्रेष्वार्तिमाच्छेति। य एवं

न हाँस्यैता अग्रौ मधुं कुर्वन्ति। धयंन्त्यस्येष्टापूर्तम्। यो हु वा अहोरात्राणाँ

वेदं॥३८॥

न मुहूरेप्बार्तिमाच्छीत। य एवं वेदं। यो ह वा अर्धमासानौं च मासानां च

यो हु वै मुंहूर्तानां नाम्धेयांनि वेदं। न मुंहूर्तेष्वार्तिमाच्छंति। चित्रः केतुर्दाता

वद् ॥ ३९ ॥

प्रदाता सीवृता प्रेसविताऽभिशास्ताऽनुमन्तेति। पृतेऽनुवाका मुहूर्तानां नामधेयानि।

नामुधेयांनि वेदे। नार्धमासेषु न मासेष्वार्तिमाच्छंति। पृवित्रं पवयिष्यन्थसहे-स्वान्थ्सहीयानकृणोऽकृणरंजा इति। एतेऽनुवाका अर्धमासानाँ प्रथमः प्रश्नः (कृष्णायजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

नार्धमासेषु न मासेष्वार्तिमाच्छीते। य एवं वेदं। यो ह वै यंज्ञकतूनां

चेतूनां चे संबक्सरस्ये च नामधेयांनि वेदे। न यंज्ञकतुषु नर्तेषु न संबक्सर

आर्तिमाच्छीते। अग्निष्टोम उकथ्यौऽग्निर्ऋतुः प्रजापीतेः संवथ्सर इति। एतेऽनुवाका यंज्ञकतूनां चेर्तुनां चे संवथ्सरस्यं च नामधेयोनि॥४१॥ न यंज्ञकृतुषु नर्तेषु न संवथ्सर आर्तिमाच्छीते। य एवं वेदे। यो ह वे मुहूर्तानां मुहूर्तान् वेदं। न मुंहूर्तानां मुहूर्तष्वार्तिमाच्छीते। इदानीं तदानीमिति। एते वै मुंहूर्तानां मुहूर्ताः। न मुहूर्तानां मुहूर्तेष्वार्तिमाच्छीते। य एवं वेदं। अथो यथां क्षेत्रज्ञो

भूत्वाऽनुंप्रविश्यात्रमत्ति। एवमेवेतान्क्षेत्रज्ञो भूत्वाऽनुंप्रविश्यात्रमत्ति। स एतेषांमेव

882 सेलोकतार् सायुज्यमश्रुते। अपं पुनर्मृत्युं जयिति। य पृवं वेदं॥४२॥ प्रथमः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्)

स स्वं लोकं प्रतिप्रजानाति। एष उं वेवेनं तथ्सांवित्रः। स्वर्गं लोकमभिवेहति। अहोरात्रेवि इदर्सस्युग्भिः क्रियते। इतिरात्रायांदीक्षिषत। इतिरात्रायं

अथु यो हैवैतम्ग्रि॰ सांवित्रं वेदा स पृवास्माल्लोकास्रेत्या आत्मानं वेदा

<u>अ्यमृहम्स्मीति॥४३॥</u>

ब्रतमुपांगुरिति। तानिहानेवं विदुषः। अमुर्ष्मिंस्रोके शेवृषिं धंयन्ति। धोत १ हैव स

र्तेवधिमनु परैति। अथ् यो हैवैत्मग्नि॰ सावित्रं वेद्॥४४॥

तस्यं हैवाहोंग्त्राणि। अमुष्मिंक्ष्रोके शेवधिं न धंयन्ति। अधींत॰ हैव स

शेव्धिमनु परेति। भ्रद्वांजो ह त्रिभिरायुंभिब्रह्मचर्यमुवास।

तर ह जीपिंड

कश्चिंद्ध वा अस्माह्योकात्प्रेत्ये। आत्मानं वेद। अयमृहम्स्मीति। कश्चिथ्स्वं लोकं न प्रतिप्रजानाति। अग्निमुंग्यो हैव धूमतान्तः। स्वं लोकं न प्रतिप्रजानाति।

प्रथमः प्रश्नः (कृष्णायजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

त॰ हु त्रीन्गिरिरूपानविज्ञातानिव दर्श्ययां चेकार। तेषा॰ हैकैकस्मान्मुष्टिनाऽऽदे स्थविर्॰ शयानम्। इन्द्रं उपव्रज्योवाच। सर्द्वाजा यत्ते चतुर्थमायुर्द्घाम्। किमेनेन कुर्या इति। ब्रह्मचर्यमेवैनेन चर्यमिति होवाच॥४५॥

स होबाच। भरंद्वाजेत्यामञ्या वेदा वा एते। अनन्ता वे वेदाः। एतद्वा

रुतैस्त्रिमिरायुर्मिरन्ववोचथाः। अर्थ त इतंर्दनंनूक्तमेवा एहीमं विद्धि। अयं वै

संविव्यति॥४६॥

तस्मै हैतम्प्रि॰ सांवित्रमुंवाचा त॰ स विदित्वा। अमृतों भूत्वा। स्वुगै

लोकमियाय। आदित्यस्य सायुंज्यम्। अमृतों हैव भूत्वा। स्वर्ग लोकमेति। ऑदित्यस्य सायुंज्यम्। य एवं वेदं। एषो एव त्रयीं विद्या॥४७॥

यावेन्त ह वै त्रय्या विद्ययो लोकं जयिति। तावेन्तं लोकं जयिति। य पृवं वेदं। अग्नेर्वा पृतानि नामधेयानि। अग्नेरेव सायुंज्य सलोकतामाप्रोति। य पृवं वेदं। बायोर्वा पृतानि नामधेयानि। बायोरेव सायुंज्य सलोकतामाप्रोति। य पृवं

884 वेदं। इन्द्रंस्य वा एतानि नामधेयांनि॥४८॥ द्वितीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

इन्द्रंस्यैव सायुंज्य॰ सलोकतामाप्रोति। य एवं वेदं। बृहस्पतेर्वा एतानि

नामुषेयांनि। बृहुस्पतेरेव सायुज्य॰ सलोकतांमाप्रोति। य एवं वेदं। प्रजापेतेवी

एतानि नामधेयोनि। प्रजापेतेरेव सायुंज्य॰ सलोकतामाप्रोति। य एवं वेदे। ब्रह्मणी

वा एतानि नाम्घेयोनि। ब्रह्मण एव सायुज्य॰ सलोकतामाप्रोति। य एवं वेदं। स

वा एषौंऽग्निरंपक्षपुच्छो वायुरेव। तस्याग्निर्मुखम्। असावादित्यः शिरंः। स यदेते

देवते अन्तरेण। तथ्सर्वर् सीव्यति। तस्माध्सावित्रः॥४९॥

~ | |

॥इति कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयकाठके प्रथमः प्रश्नः समाप्तः॥१॥

लोकोऽसि स्वगोऽसि। अन्नतौऽस्यपारोऽसि। अक्षितोऽस्यक्षय्योऽसि। तपंसः

॥ द्वितीयः प्रश्नः॥

प्रतिष्ठा। त्वयीदमन्तः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वःं सुभूतम्। विश्वस्य भूता

तपोऽसि लोके श्रितम्। तेजंसः प्रतिष्ठा। त्वयोदम्न्तः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वंस्य जनयिता। तं त्वोपंदधे काम्दुघमक्षितम्। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां द्वितीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्) देवतयोऽङ्गिरम्बद्धवा सीद॥१॥

विश्व∜ सुभूतम्। विश्वस्य भृतुं विश्वस्य जनयितु। तत्त्वोपंदधे कामृदुघुमक्षितम्। प्रजापीतस्त्वा सादयतु। तयो देवतयोऽङ्गिर्म्बद्धवा सींद॥२॥

तेजोऽसि तपीसि श्रितम्। समुद्रस्यं प्रतिष्ठा। त्वयीदमन्तः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वः सुभूतम्। विश्वंस्य भूर्तु विश्वंस्य जनयित्। तत्त्वोपंदधे कामृदुघमक्षितम्। प्रजापेतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिरस्बद्धवा सींद॥३॥ समुद्रोऽसि तेजीसे श्रितः। अपां प्रतिष्ठा। त्वयीदमन्तः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वं सुभूतम्। विश्वंस्य भृतां विश्वंस्य जनयिता। तं त्वोपंदधे कामृदुघुमक्षितम्। प्रजापेतिस्त्वा सादयत्। तयां देवतंयाऽङ्गिर्म्बद्धवा सींद॥४॥

आपंः स्थ समुद्रे श्रिताः। पृथिव्याः प्रतिष्ठा युष्मासुं। इदम्नतः। विश्वं यक्षं विश्वं

886 भूतं विश्व ९ सुभूतम्। विश्वस्य भृत्यों विश्वस्य जनयित्र्यंः। ता व उपदेधे कामुदुषा जेक्षिताः। प्रजापेतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतयांऽङ्गिर्म्बद्धवा सीद॥५॥ द्वितीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

पृथिव्येस्यफ्सु श्रिता। अग्नेः प्रीतेष्ठा। त्वयीदमन्तः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वरं सुभूतम्। विश्वंस्य भूत्री विश्वंस्य जनयित्री। तां त्वोपंदधे कामदुषामक्षिताम्।

प्जापेतिस्त्वा सादयत्। तयो देवतयाऽङ्गिर्म्बद्धवा सीद॥६॥

अग्निग्से पृथियाः श्रितः। अन्तरिक्षस्य प्रतिष्ठा। त्वयीदम्नतः। विर्वं यृक्षं विश्वं भूतं विश्वः सुभूतम्। विश्वंस्य भृतां विश्वंस्य जनयिता। तं त्वोपंदधे कामुदुर्घमक्षितम्। प्रजापैतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्म्बद्धवा सीद॥७॥

अन्तरिक्षमस्यग्नौ श्रितम्। वायोः प्रतिष्ठा। त्वयीदमन्तः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वं सुभूतम्। विश्वंस्य भृतुं विश्वंस्य जनयितु। तत्त्वोपंदधे कामृदुष्यमिक्षेतम्।

प्रजापेतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिरम्बद्धवा सींद॥८॥

887 द्वितीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

बायुरंस्यन्तरिक्षे श्रितः। दिवः प्रतिष्ठा। त्वयीदमन्तः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं

बौरसि बायौ श्रिता। आदित्यस्यं प्रतिष्ठा। त्वयीदम्न्तः। विश्वं यक्षं

विश्व ९ सुभूतम्। विश्वस्य भृता विश्वस्य जनयिता। तं त्वोपंदधे कामृदुषुमक्षितम्।

प्रजापेतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्म्त्वद्भुवा सीद॥९॥

विश्वं भूतं विश्वरं सुभूतम्। विश्वंस्य भूत्रीं विश्वंस्य जनयित्री। तां त्वोपंदधे

कामुदुर्घामक्षिताम्। प्रजापेतिस्त्वा सादयतु। तयो देवतंयाऽङ्गिरम्बद्धवा

सीद॥१०॥

आदित्योऽसि दिवि श्रितः। चन्द्रमंसः प्रतिष्ठा। त्वयीदमन्तः। विश्वं यक्षं

विश्वं भूतं विश्वरं सुभूतम्। विश्वंस्य भृतां विश्वंस्य जनयिता। तं त्वोपंदधे

काम्दुघ्मिक्षितम्। प्रजापैतिस्त्वा सादयतु। तयो देवतयाऽङ्गिर्म्बद्धुवा सींद॥११॥

च्-द्रमां अस्यादित्ये श्रितः। नक्षेत्राणां प्रतिष्ठा। त्वयीदम्न्तः। विश्वं यक्षं

विश्वं भूतं विश्वरं सुभूतम्। विश्वंस्य भृतां विश्वंस्य जनयिता। तं त्वोपंदधे

नक्षंत्राणि स्थ चुन्द्रमंसि श्रितानि। संवृष्स्रस्यं प्रतिष्ठा युष्मासु। इदम्नतः। विश्वं कामदुघमक्षितम्। प्रजापेतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिरम्बद्धवा सीद॥१२॥

युक्षं विश्वं भूतं विश्वरं सुभूतम्। विश्वस्य भृतृणि विश्वस्य जनयितृणि। तानि व

उपंदधे काम्दुघान्यक्षितानि। प्रजापीतिस्त्वा सादयतु। तयो देवतंयाऽङ्गिरम्बद्धवा

सींद॥१३॥

संबृध्सरोऽसि नक्षेत्रेषु श्रितः। ऋतूनां प्रतिष्ठा। त्वयीदमन्तः। विश्वं यक्षं

विश्वं भूतं विश्वरं सुभूतम्। विश्वस्य भृता विश्वस्य जनयिता। तं त्वोपंदधे काम्दुघमक्षितम्। प्रजापेतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतयाऽङ्गिर्म्बद्धवा सींद॥१४॥

क्रुतवेः स्थ संवथ्सुरे श्रिताः। मासीनां प्रतिष्ठा युष्मासु। इदम्नतः। विश्वं यक्षं

विश्वं भूतं विश्वरं सुभूतम्। विश्वस्य भृतारो विश्वस्य जनयितारंः। तान् व उपेदधे

कामदुघानक्षितान्। प्रजापेतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्म्बद्धवा सीद॥१५॥

मासाः स्थतिषु श्रिताः। अर्धमासानां प्रतिष्ठा युष्मासु। इदम्नतः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वर्षं सुभूतम्। विश्वंस्य भृतांग् विश्वंस्य जनयितारंः। तान् व उपंदधे कामृदुघानिक्षितान्। प्रजापेतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतयाऽङ्गिर्म्बद्धवा सींद॥१६॥ द्वितीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

अर्धमासाः स्थं मासु श्रिताः। अहोरात्रयौः प्रतिष्ठा युष्मासु। इदम्नतः। विश्वं

युक्षं विश्वं भूतं विश्वरं सुभूतम्। विश्वंस्य भृतांग्रे विश्वंस्य जनयितारं। तान् व उपंदधे काम्दुघानक्षितान्। प्रजापेतिस्त्वा सादयतु। तयो देवतेयाऽङ्गिर्म्बद्धवा

अहोरात्रे स्थौऽर्धमासेषु श्रिते। भूतस्य प्रतिष्ठे भव्यंस्य प्रतिष्ठे। युवयोरिदमन्तः। सींद॥१७॥

विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वं सुभूतम्। विश्वंस्य भूत्रौं विश्वंस्य जनयित्रौं। ते वामुपंदधे कामुदुषे अक्षिते। प्रजापेतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्म्बद्धवा सींद॥१८॥

पौर्णमास्यष्टकाऽमाबास्या। अत्रादाः स्थात्रदुषो युष्मासु। इदमन्तः। विश्वं

उपदेध काम्दुषा अक्षिताः। मुजापीतिस्त्वा सादयतु। तयो देवतयाऽङ्गिर्स्वद्धवा सींद॥१९॥

राडीस बृह्ती श्रोर्सीन्द्रेपत्नी धर्मपत्नी। विश्वं भूतमनुप्रमूता। त्वयीदम्तः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वः सुभूतम्। विश्वंस्य भूर्ती विश्वंस्य जनयित्री। तां

त्वोपंदधे काम्दुघामिक्षिताम्। प्रजापितिस्त्वा सादयतु। तयो देवतेयाऽङ्गिर्म्बद्धुवा

सींद॥२०॥

ओजोऽिस सहोऽिस। बलेमिस आजोऽिस। देवानां धामामृतमै। अमेत्येस्तपोजाः। त्वयोदमन्तः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वं सुभूतम्। विश्वेस्य भूती विश्वस्य जनयिता। तं त्वोपंदधे कामुदुषुमक्षितम्। प्रजापेतिस्त्वा

सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिरम्बद्धवा सींद॥२१॥

891 द्वितीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

त्वमेग्ने क्द्रो असुरो मुहो दिवः। त्व॰ शर्षो मार्कतं पृक्ष ईशिषे। त्वं

वातैंररुणैयांसि शङ्गयः। त्वं पूषा विंधृतः पांसि नु त्मनां। देवां देवेषु श्रयप्वम्। प्रथंमा द्वितीयेषु श्रयध्वम्। द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयध्वम्। तृतीयाश्चतुर्थेषु श्रयध्वम्। <u>चृतुर्थाः पंश्रमेषु अयध्वम्। पृश्रमाः षृष्ठेषु अयध्वम्॥२२॥</u>

द्वादशास्त्रयोदशेषु अयप्वम्। त्रयोदशाश्वेतुर्दशेषु अयप्वम्। चतुर्दशाः पंश्वदशेषु अयध्वम्। पुञ्चदुशाः षोडुशेषु अयध्वम्॥२३॥

षोड्शाः संपद्शेषु अयप्वम्। स्पट्शा अंष्टाद्शेषु अयप्वम्। अष्टाद्शा

एंकात्रवि॰्शेषुं अयप्वम्। एकात्रवि॰्शा वि॰्शेषुं अयप्वम्। वि॰्शा एंकवि॰्शेषुं अयप्वम्। एकवि॰्शा द्वावि॰्शेषुं अयप्वम्। द्वावि॰्शास्नयोवि॰्शेषु अयप्वम्। त्रयोवि॰्शाश्चेतुर्वि॰्शेषुं अयप्वम्। चृतुर्वि॰्शाः पंश्चवि॰्शेषुं अयप्वम्। प्श्चवि॰्शाः षुष्ठाः संप्तमेषुं अयध्वम्। सृप्तमा अष्टमेषुं अयध्वम्। अष्टमा नंबमेषुं अयध्वम्। नुबुमा देशमेषुं अयध्वम्। दुशुमा ऐकादुशेषुं अयध्वम्। एकादृशा द्वांदुशेषुं अयध्वम्।

पंड्रि॰्योपुं अयध्वम्॥२४॥

पुड्डि॰्शाः संप्तिवे॰्शेषु अयप्वम्। सृप्तिवे॰्शा अंष्टावि॰्शेषु अयप्वम्।

अष्टावि∝्या एकात्रत्रि×्योषु अयप्वम्। एकात्रत्रि×्याम्बि×्योषु अयप्वम्। त्रि×्या पेकत्रि×्योषु अयप्वम्। एकत्रि×्या ह्यौत्रि×्योषु अयप्वम्। ह्यात्रि×्याम्बयम्बि×्-शेषुं अयध्वम्। देवास्त्रिरेकादशास्त्रिस्त्रीयस्त्रिर्धाः। उत्तरे भवता उत्तरवत्मीन उत्रस्तत्वानः। यत्काम इदं जुहोमि। तन्मे समृध्यताम्। वृयङ् स्यांम् पतियो

रयोणाम्। भूर्नुवः स्वंः स्वाहाँ॥२५॥

विराज्ञी। सम्राज्ञी स्वराज्ञी। अचिः शोचिः। तपो हरो भाः। अग्निः सोमो बृहस्पतिः।

विश्वे देवा भुवेनस्य गोपाः। ते सर्वे सङ्गत्ये। इदं मे प्रावेता वचेः। वृयङ् स्यांम

पतेयो रयोणाम्। भूभुवः स्वंः स्वाहाँ॥२६॥

<u>ത</u> 893 अत्रंपतेऽत्रंस्य नो देहि। अनुमीवस्यं शुष्मिणंः। प्र प्रदातारं तारिषः। ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे। अग्ने पृथिबीपते। सोमं बीरुधां पते। त्वष्टंः समिधां पते। द्वितीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

विष्णंवाशानां पते। मित्रं सत्यानां पते। वर्षण धर्मणां पते॥२७॥

मुरुतो गणानां पतयः। रुद्रं पशूनां पते। इन्द्रोजसां पते। बृहंस्पते ब्रह्मणस्पते।

आ रुचा रोचेऽहॐ स्वयम्। रुचा रुरुचे रोचेमानः। अतीत्यादः स्वेराभेरेह। तस्मिन् योनौँ प्रजुनौ प्रजायेय। वृयङ् स्यांम् पतयो रयोणाम्। भूर्भुवः स्वंः स्वाहाँ॥२८॥

∞ **T** 

स्पप्त ते अग्रे समिधेः सप्त जिह्वाः। स्पर्षयः सप्त धामे प्रियाणि। सप्त होत्रां अनुविद्वान्। सप्त योनीरापृणस्वा घृतेने। प्राची दिक्। अग्निर्देवता। अग्नि॰ स दिशां देवं देवतानामुच्छतु। यो मैतस्यै दिशोऽभिदासीता दक्षिणा दिक्। इन्द्रो देवता॥२९॥

इन्द्र॰ स दिशां देवं देवतांनामृच्छतु। यो मैतस्यै दिशोंऽभिदासीत। प्रतीची दिक्। सोमों देवतां। सोम॰ स दिशां देवं देवतांनामृच्छतु। यो मैतस्यै दिशोंऽभिदासीते। उदीची दिक्। मित्रावरुणों देवतां। मित्रावरुणों स दिशां देवों देवतांनामृच्छतु। यो मैतस्यै दिशोंऽभिदासीते॥३०॥

ऊर्ध्वा दिक्। बृहस्पतिर्देवतां। बृहस्पति॰ स दिशां देवं देवतांनामुच्छतु। यो मैतस्यै दिशोऽभिदासीते। इयं दिक्। अदितिर्देवतां। अदिति॰ स दिशां देवीं देवतांनामृच्छतु। यो मैतस्यै दिशोऽभिदासीते। पुरुषो दिक्। पुरुषो मे

कामान्थ्समंधयतु॥ ३१॥

अन्यो जागृीवेः प्राणा असावेहिं। बधिर आकन्दयितरपाना असावेहिं। <u>उषसंमुषसमशीया अहमसो ज्योतिरशीया अहमसो</u>ऽपोऽशीया वृयङ् स्यांम पतंयो रयोणाम्। भूभुंबः स्वंः स्वाहाँ॥३२॥

विश्वे ते देवाश्चितिमापूरयन्तु। चितश्चासि सश्चितश्चास्यग्ने। पृतावाङ्श्व्यासि भूयांङ्श्वास्यग्ने। लोकं पृण च्छिद्रं पृण। अथो सीद शिवा त्वम्। इन्द्राग्नी त्वा बृहस्पतिः। अस्मिन् योनांवसीषदन्॥३३॥

तयां देवतंयाऽङ्गिर्म्बद्धवा सीद। ता अस्य सूदंदोहसः। सोमध् श्रीणन्ति

पृश्रयः। जन्मं देवानां विशंः। त्रिष्वा रोचने दिवः। तयां देवतंयाऽङ्गिरस्वछूवा

सीद। अग्ने देवा॰ इहाऽऽवेह। जज्ञानो वृक्तबंर्हिषे। असि होतो न ईड्येः। अगेन्म मृहा मनेसा यविष्ठम्॥३४॥

यो दीदाय समिष्ट स्वे दुरोणे। चित्रभानू रोदंसी अन्तरुवीं। स्वाहुतं विश्वतेः प्रत्यश्रम्। मेघाकारं विदर्थस्य प्रसाधेनम्। अग्नि॰ होतारं परिभूतमं मृतिम्।

त्वामर्भेस्य हविषेः समानमित्। त्वां मृहो वृंणते नरो नान्यं त्वत्। मृनुष्वत्वा निधीमहि। मृनुष्वथ्समिधीमहि। अग्ने मनुष्वदेङ्गिरः॥३५॥

देवान्देवायते यंजा अग्निर्गहे वाजिनं विश्वा ददांति विश्वचंर्षणिः। अग्नी राये स्वामुवम्। स प्रोतो याति वार्यम्। इषङ् स्तोतुभ्य आमेर। पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः

ग्रीथेव्याम्। पृष्टो विश्वा ओषंधी्राविवेशा वैश्वान्रः सहंसा पृष्टो अग्निः। स नो अयं वाव यः पवेते। सौऽभ्रिनांचिकेतः। स यत्प्राङ् पवेते। तदंस्य शिरंः। अथ दिवा स रिषः पांतु नक्तम्॥३६॥

यह्सिष्या। स दक्षिणः पृक्षः। अथु यत्प्रत्यक्। तत्पुच्छम्। यदुदङ्ङ्। स उत्तरः पक्षः॥३७॥

अथ यथ्संवाति। तदंस्य समर्थनं च प्रसारंणं च। अथों सम्पदेवास्य सा। स॰ ह वा अस्मे स कामेः पद्यते। यत्कामो यज्ञेत। यौऽभ्रिं नांचिकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदे। यो हु वा अथ्रेनींचिकेतस्याऽऽयतेनं प्रतिष्ठां वेदे। आयतेनवान्भवति।

गच्छंति प्रतिष्ठाम्॥३८॥

हिर्गण्यं वा अग्रेनांचिकेतस्याऽऽयतेनं प्रतिष्ठा। य एवं वेदे। आयतेनवान्भवति

गच्छेति प्रतिष्ठाम्। यो हु वा अग्नेनीचिकेतस्य शरीरं वेदं। सशंरीर एव स्वुगै लोकमेति। हिरंण्यं वा अग्नेनीचिकेतस्य शरीरम्। य एवं वेदं। सशंरीर एव स्वुगै लोकमेति। अथो यथां रुक्न उत्तेत्तो भाष्यात्॥३९॥

एवमेव स तेजंसा यशंसा। अस्मिङ्श्चं लोकेऽमुष्मिङ्श्च भाति। उरवों ह वै नामैते लोकाः। येऽवेरणाऽऽदित्यम्। अर्थ हैते वरीया॰सो लोकाः। ये

परेणाऽऽदित्यम्। अन्तेवन्त॰ ह् वा एष क्षय्यं लोकं जोयति। योऽवेरेणाऽऽदित्यम्। अधे हेषोऽन्नतमेपारमेक्षय्यं लोकं जीयति। यः परेणाऽऽदित्यम्॥४०॥

अन्नत् ह् वा अपारमंश्वय्यं लोकं जयिति। यौऽभ्रिं नांचिकेतं चिनुते। य उं

चैनमेवं वेदे। अथो यथा रथे तिष्टन्यक्षेसी पर्यावर्तमाने प्रत्यपेक्षते। एवमेहोरात्रे प्रत्यपेक्षते। नास्यांहोरात्रे लोकमाप्रुतः। यौऽभ्रिं नांचिकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं

वेद॥४१॥

उशन् हु वै वांजश्रवसः संविवद्सं देदौ। तस्यं हु नचिकेता नामं पुत्र आंसा त हे कुमार सन्तम्। दक्षिणासु नीयमांनासु श्रद्धाऽऽविवेशा स होवाच। तत कस्मै मां दास्यसीति। द्वितीयं तृतीयम्। त ह परीत उवाच। मृत्यवै त्वा

स यदि त्वा पुच्छेत्। कुमार कित रात्रीरवाध्सीरिति। तिस्र इति प्रतिब्रूतात्। किं गौतंम कुमारमिति। स होवाच। परेहि मृत्योगृहान्। मृत्यवे वै त्वांऽदामिति। तं वै प्रवसंन्तं गुन्तासीति होवाच। तस्यं स्म तिस्रो रात्रोरनाश्वान्गुहे वंसतात्। ददामीति। त॰ हु स्मोत्थितं वागुभिवंदति॥४२॥ प्रथमार रात्रिमाश्रा इति॥४३॥

प्रजां त इति। किं द्वितीयामिति। पृश्क्ष्स्त इति। किं तृतीयामिति। साधुकृत्यां त इति। तं वे प्रवसेन्तं जगाम। तस्ये ह तिस्रो रात्रीरनांश्वान्गृह उंवास। तमागत्ये पप्रच्छ। कुमांर् कित् रात्रीरवाध्सीरिति। तिस्न इति प्रत्युंवाच॥४४॥

किं प्रथमार रात्रिमाश्रा इति। प्रजां त् इति। किं द्वितीयामिति। पृश्क्ष्स्त

इष्टापूर्तयोमेंऽक्षितिं ब्रूहीतिं होवाच। तस्मैं हैतमांअं नांचिकेतमुंवाच। ततो वै तस्यैष्टापूर्ते ना क्षीयेते। नास्यैष्टापूर्ते क्षीयेते। यौऽभ्रिं नांचिकेतं चिनुते। य उं इति। किं तृतीयामिति। साधुकृत्यां त इति। नमंस्ते अस्तु भगव इति होवाच। वरं वृणीष्वेति। पितरंमेव जीवंत्रयानीति। द्वितीयं वृणीष्वेति॥४५॥

चैनमेवं वेदं। तृतीयं वृणीष्वेति। युन्मृत्योमेऽपीचितिं बूहीतिं होवाच। तस्मै हैतम्भि नांचिकेतमुंबाच। ततो बै सोऽपं पुनर्मृत्युमंजयत्॥४६॥

अपं पुनर्मृत्युं जयिति। यौऽभ्रिं नािचिक्तं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदे। प्रजापिति

प्रजाकांम्स्तपोऽतप्यता स हिरण्यमुदांस्यत्। तद्ग्रो प्रास्यंत्। तदंस्मे नाच्छंदयत्। तिद्वितीयं प्रास्येत्। तदंस्मे नैवाच्छंदयत्। तत्तृतीयं प्रास्यंत्॥४७॥

तदंस्मे नैवाच्छंदयत्। तदात्मत्रेव हंद्य्यैऽग्रौ वैश्वान्रे प्रास्यंत्। तदंस्मा अच्छदयत्। तस्माद्धिरंण्यं कनिष्टं धनानाम्। भुअस्रियतेमम्। हृद्युज॰ हि।

द्वितीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

900

दक्षांय त्वा दक्षिणां प्रतिगृह्णामीति। सोऽदक्षत् दक्षिणां प्रतिगृह्यं। दक्षेते ह वे दक्षिणां प्रतिगृह्यं। य एवं वेदं। एतद्धं स्मृ वे तिष्ट्रद्वार्सो वाजश्रवसा गोतंमाः। अप्यंनूदेश्यां दक्षिणां प्रतिगृह्यंनि। उभयेन वयं दक्षिप्यामह एव दक्षिणां प्रतिगृह्यांति। उभयेन वयं दक्षिष्यामह एव दक्षिणां प्रतिगृह्यांति। तेऽदक्षन्त दक्षिणां प्रतिगृह्यं। दक्षेते ह वे दक्षिणां प्रतिगृह्यं। य एवं

दक्षिणायानयत्। तां प्रत्यंगृह्णात्॥४८॥

त ९ हैतमेके पशुब्न्य एवोर्तारवेद्यां चिन्वते। उत्तरवेदिसीम्मित एषौऽग्रिरिति

वेदा प्र हान्यं ब्रीनाति॥४९॥

वदंन्तः। तत्र तथां कुर्यात्। एतमृष्णिं कामेन व्यर्धयेत्। स एनं कामेन व्युद्धः। कामेन व्यर्धयेत्। सौम्ये वावेनमप्जरे चिन्वीत। यत्रे वा भूयिष्टा आहुतयो हूयेरन्। एतमृष्णिं कामेन समर्धयति। स एनं कामेन समृद्धः॥५०॥

स वै तमेव नाविन्दत्। यस्मे तां दक्षिणामनैष्यत्। ताङ् स्वायेव हस्तांय

901 कामेन समर्धयति। अर्थ हैनं पुरर्षयः। उत्तर्वेद्यामेव सन्नियंमचिन्वत। ततो वै तेऽविन्दन्त प्रजाम्। अभि स्वर्गं लोकमंजयन्। विन्दतं एव प्रजाम्। अभि स्वर्गं लोकं जंयति। यौऽभ्रिं नांचिकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदं। अर्थ हैनं पर्श्वं दक्षिणतः। पर्श्वं पृक्षात्। पश्चौतर्ततः। एकां मध्यै। ततो वै स सृहर्स्नं पृशून्प्राप्नौत्। प्र सृहर्स्नं पशूनौप्रोति। यौऽभ्रिं नांचिकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदे। अर्थ हेनं प्रजापतिज्यैष्ट्यंकामो यशस्कामः प्रजननकामः। त्रिवृतंमेव चिक्ये॥५३॥ यथान्युप्तमेवोपंदधे। ततो वै स एतामुद्धिमाप्नीत्। यामिदं वायुर्ऋद्धः। एतामुद्धिमुप्नोति। यामिदं वायुर्ऋ्छः। यौऽिभं नाविकृतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदं। अर्थ हेनं गोब्लो वार्षाः पृशुकांमः। पाङ्गंमेव चिक्ये। पञ्चं पुरस्तांत्॥५२॥ द्वितीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्) वायुर्ऋद्विकामः॥५१॥

सृप पुरस्ताँत्। तिस्रो देक्षिणृतः। सृप्त पृश्वात्। तिस्र उत्तर्तः। एकां मध्यै। ततो वै स प्र यशो् ज्यैष्ठममाप्रोत्। एतां प्रजातिं प्राजायत। यामिदं प्रजाः प्रजायेन्ते।

त्रिकृत्यजनेनम्। उपस्थो योनिर्मध्यमा। प्र यशो ज्यैष्ठ्यंमाप्रोति। एतां प्रजातिं प्रजायते। यामिदं प्रजाः प्रजायेन्ते। योऽभिं नािचकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदे। त्रिवृद्धे ज्यैष्टम्। माता पिता पुत्रः॥५४॥ द्वितीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

प्रागाद्यशंस्वती। सा मा प्रोणींतु। तेजंसा यशंसा ब्रह्मवर्चसेनेति। तेजुस्व्येव यंशुस्वी ब्रह्मवर्चसी भवति। अथु यदीच्छेत्। भूयिष्ठं मे अद्देधीरन्। भूयिष्ठा

दक्षिणा नयेयुरिति। दक्षिणासु नीयमांनासु प्राच्येहि प्राच्येहीति प्राची जुषाणा

तेजुस्वी येशुस्वी ब्रह्मवर्चुसी स्यामिति। प्राङाहोतुर्घिष्णयादुश्सपेत्। येयं

यदीच्छेत्॥५६॥

ज्यैष्ठमं गच्छति। यौऽभ्रिं नाचिकेतं चिनुते। य उं चैनमुषं वेदं। अर्थ हैनम्सावादित्यः स्वर्गकामः। प्राचीरेवोपंदधे। ततो वै सोऽभि स्वर्गं लोकमंजयत्। अभि स्वर्गं लोकं जयति। यौऽभ्रिं नांचिकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदे। स अर्थ हैनमिन्द्रो ज्यैष्ट्यंकामः। कुर्घ्वा एवोपंदधे। ततो वै स<sup>े</sup> ज्यैष्ट्यंमगच्छत्॥५५॥

903 भूयिष्टमेवास्मे श्रद्देथते। भूयिष्टा दक्षिणा नयन्ति। पुरीषमुप्धाये। चितिक्कृप्तिमिर्ममुश्ये। अग्निं प्रणीयोपसमायाये। चतंस्र एता आहेतीर्जुहोति। त्वमंग्ने कुद्र इति शतक्द्रीयंस्य क्पम्। अग्नोविष्णू इति वसोर्धारायाः। अन्नेपत् वेत्वाऽऽज्यंस्य स्वाहेति स्रुवेणोपहत्यांऽऽहवनीये जुहुयात्॥५७॥ द्वितीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

इत्यंत्रहोमः। सृप्त ते अग्रे सृमिषः सृप्त जि्हा इति विश्वप्रीः॥५८॥

यां प्रथमामिष्टंकामुपदर्थाति। इमं तयां लोकममिजंयति। अथो या अस्मैंब्रोके

तासा्॒र सायुज्यः सलोकतामाप्रोति। यां तृतीयांमुप्दर्याति। अुमुं तयां देवताः। तासा<u>ः</u> सायुज्यः सलोकतांमाप्रोति। यां द्वितीयांमुपदर्याति। अन्तरिक्षलोकं तयाऽभिज्यति। अथो या अन्तरिक्षलोके देवताः। अन्तरिक्षलोकं तयाऽभिजंयति। अथो या

अथो या अमुर्षिक्षेके देवताः। तासार् सायुंज्यर सलोकतांमाप्रोति। अथो लोकम्भिजंयति॥५९॥

904 ग्रीष्मो दक्षिणः पृक्षः। बर्षा उत्तरः। श्वरत्युच्छुम्। मासाः कर्मकाराः। अहोरात्रे श्रीतरुद्रीयम्। पर्जन्यो बसोर्धारा। यथा वै पर्जन्यः सुवृष्टं बृद्घा। प्रजान्यः सर्वान्कामान्थसम्पूरयेति। एवमेव स तस्य सर्वान्कामान्थ्सम्पूरयिति। योऽभ्रि या अमूरितंरा अष्टादंशा य एवामी उरवंश्च वरीयाश्सक्ष लोकाः। तानेव ताभिंरमिजंयति॥ कामचारो ह वा अस्योरुषुं च वरीयःसु च लोकेषु भवति। यौऽभिं नांचिकेतं चिनुता य उं चैनमेवं वेदा संवृथ्सरो वा अभिनांचिकेतः द्वितीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्) तस्ये वसन्तः शिरं:॥६०॥ नांचिकेतं चिनुते॥६१॥

य उं चैनमेवं वेदं। संवथ्सरो वा अग्रिनीचिकेतः। तस्यं वसन्तः शिरंः। ग्रीष्मो दिक्षिणः पृक्षः। वर्षाः पुच्छम्। श्र्रदुत्तंरः पृक्षः। हेमन्तो मध्यम्। पूर्वपक्षाश्चितंयः। अप्र्परपक्षाः पुरीषम्। अहोरात्राणीष्टंकाः। एष वाव सौऽग्रिरंग्निमयंः पुनर्णवः। अग्रिमयोः पुनर्णवः। अग्रिमयोः पुनर्णवः। अग्रिमयो ह वै पुनर्णवो भूत्वा। स्वर्गं लोकमेति। आदित्यस्य सायुज्यम्। यौऽग्निं

॥इति कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तितरीय काठके द्वितीयः प्रश्नः समाप्तः॥२॥

°≈ **I** 

## ॥ तृतीयः प्रश्नः॥

तुभ्यं ता अंक्षिरस्तमाऽश्याम् तं कामंमग्ने। आशांनां त्वा विश्वा आशाः। अनुं नोऽद्यानुमितिरन्विदेनुमते त्वम्। कामो भूतस्य कामस्तदग्रे। ब्रह्मं जज्ञानं पिता

<u>बि</u>राजाम्। युज्ञो रायोऽयं युज्ञः। आपो भ<u>ु</u>द्रा आदित्पंश्यामि। तुभ्यं भरन्ति यो

देहाः। पूर्वं देवा अपेरेण प्राणापानौ। हव्यवाह्र् स्विष्टम्॥१॥

देवेच्यो के स्वर्गो के मो

- - स्बर्गो लोकस्तिरोऽभवत्। ते प्रजापीतमब्रुवन्। प्रजापते लोकस्तिरोऽभूत्। तमन्बिच्छेति। तं येज्ञकृतुभिर-बैच्छत्।

906 तमिष्टिभिरन्वविन्दत् इत्याचंक्षते प्रोक्षेण तदिष्टीनामिष्टित्वम्। एष्टेयो हु वै नामे। ता इष्टंय तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्) यंज्ञकृतुमिन्निन्वविन्दत्। पुरोक्षीप्रया इवृ हि देवाः॥२॥

तमाशाऽब्रवीत्। प्रजापत आ्राथा वै श्राम्यसि। अृहमु वा आशाऽस्मि। मां

नु यंजस्व। अर्थ ते सत्याऽऽशां भविष्यति। अनुं स्वगं लोकं वेथ्स्यसीति। स एतम्भ्रये कामांय पुरोडाशंमष्टाकंपालं निरंवपत्। आशाये चरुम्। अनुमत्ये चरुम्। यनुमत्ये चरुम्। ततो वे तस्यं सत्याऽऽशांऽभवत्। अनुं स्वगं लोकमंविन्दत्। सत्या ह वा अस्याऽऽशां भवति। अनुं स्वगं लोकं विन्दति। य एतेनं हविषा यजेते। य उं चैनद्वं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अभ्रये कामांय स्वाहाऽऽशाये स्वाहाँ। अनुमत्ये

तं कामौऽब्रवीत्। प्रजापते कामेन वै श्राम्यासा अहमु वै कामौऽस्मि। मां नु यंजस्व। अर्थ ते मृत्यः कामो भविष्यति। अनु स्वर्ग लोकं वेध्स्यसीति।

स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वर्गाय लोकाय स्वाहाऽग्रये स्विष्टकृते स्वाहेति॥३॥

पुरोडाशमष्टाकेपाऌं निरंवपत्। कामाय चुरुम्। अनुमत्ये

स एतमुग्रये कामांय

206 तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्)

चुरुम्। ततो वै तस्ये सृत्यः कामोऽभवत्। अनुं स्वुगं लोकमंविन्दत्। सृत्यो ह

वा अस्य कामो भवति। अनु स्वर्ग लोकं विन्दति। य एतेनं हविषा यजते। य

उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्रये कामांय स्वाहा कामांय स्वाहाँ। अनुमत्ये

स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वर्गाय लोकाय स्वाहाऽग्रये स्वष्टकृते स्वाहेति॥४॥

तं ब्रह्माँऽब्रवीत्। प्रज्ञांपते ब्रह्मणा वै श्रांम्यिसि। अहमु वै ब्रह्माँऽस्मि। मां नु यजंस्व। अर्थ ते ब्रह्मण्वान् युजो भविष्यिति। अनुं स्वर्ग लोकं वेध्स्यसीति। स एतम्भ्रये कामांय पुरोडाशंमष्टाकेपालं निरंवपत्। ब्रह्मणे चरुम्। अनुमत्ये चरुम्। ततो वै तस्य ब्रह्मण्वान् युजोऽभवत्। अनुं स्वर्ग लोकमीविन्दत्। ब्रह्मण्वान् ह वा अस्य युजो भविति। अनुं स्वर्ग लोकं विन्दति। य पुतेनं हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्रये कामांय स्वाह्। ब्रह्मणे स्वाहाँ। अनुमत्ये

तं युज्ञौऽब्रवीत्। प्रजापते युज्ञेन वै श्रौम्यसि। अृहमु वै युज्ञौऽस्मि। मां नु जस्व। अर्थ ते सृत्यो युज्ञो भविष्यति। अनुं स्वुर्गं लोकं वेध्स्यसीति। स

यंजस्व। अर्थ ते सृत्यो युज्ञो मंविष्यति। अनु न

स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वर्गायं लोकाय् स्वाहाऽग्रये स्विष्टुकृते स्वाहेति॥५॥

908 पृतम्भये कामांय पुरोडाशंमष्टाकेपालं निरंवपत्। यज्ञायं चरुम्। अनुमत्ये चरुम्। तितो वै तस्यं सत्यो यज्ञोऽनवत्। अनुं स्वर्गं लोकमीविन्दत्। सत्यो ह वा अस्य यज्ञो भवति। अनुं स्वर्गं लोकं विन्दति। य पृतेनं हविषा यज्ञेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अभ्रये कामांय स्वाहां यज्ञाय स्वाहाँ। अनुंमत्ये स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वर्गायं लोकाय स्वाहाऽभ्रये स्विष्टकृते स्वाहाँ। स्वर्गायं लोकाय स्वाहाऽभ्रये स्विष्टकृते स्वाहोति॥६॥ तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम)

तमापौऽब्रुवन्। प्रजापतेऽफ्सु वै सर्वे कामाैः श्रिताः। वयमु वा आपेः स्मः। अस्मान्नु येजस्व। अथ् त्वयि सर्वे कामाैः श्रयिष्यन्ते। अनुं स्वगै लोकं वेध्स्यसीति। स एतम्ग्रये कामाय पुरोडाशमिष्टाकेपालं निरंवपत्। अन्ध्रश्वरुम्। अनुमत्ये वरुम्।

ततो वै तस्मिन्थ्सर्वे कामां अश्रयन्ता अनुं स्वर्गं लोकमंविन्दत्। सर्वे ह वा अस्मिन्कामाः श्रयन्ते। अनुं स्वर्गं लोकं विन्दति। य एतेनं ह्विषा यजेते। य

स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वुगायं लोकाय् स्वाहाऽभ्रये स्विष्टुकृते स्वाहेति॥७॥

उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोतिं। अग्नये कामाय स्वाहाऽस्वः स्वाहां। अनुमत्ये

606 तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

ं - - हैं। अहमु वा अग्निबीलेमानेस्मि। मां नु यंजस्व। अर्थ ते सर्वाणि भूतानि बुलिश हेरिष्यन्ति। अनु स्वर्ग लोकं वेध्स्यसीति। म गनमज्ञे नामि

बेलिश हिरिष्यन्ति। अनु स्वर्ग लोकं वेष्स्यसीति। स एतमग्नये कामाय पुरोडाश्रमष्टाकेपालं निरंवपत्। अग्नयं बलिमते चरुम्। अनुमत्ये चरुम्। ततो वै तस्मै सर्वाणि भूतानि बलिमहर्रम्। अनु स्वर्ग लोकमिवन्दत्। सर्वाणि ह वा अस्मै भूतानि बलिश हर्रान्ता अनु स्वर्ग लोकं विन्दति। य एतेनं हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये कामांय स्वाहाऽग्नये बलिमते स्वाहाँ। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये कामांय स्वाहाऽग्नये बलिमते स्वाहाँ। अनुमत्ये स्वाहा प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वर्गायं लोकाय स्वाहाऽग्नये सिवष्टकृते

अहम् वा अनु स्वर्ग निरंवपत्।

स एतम्भये कामोय पुरोडाशमष्टाकेपालं

तमनुवित्तिरब्रवीत्। प्रजापते स्वर्गं वै लोकमनुविविध्ससि। गुवित्तिरस्मि। मां नु यंजस्व। अथं ते सृत्याऽनुवित्तिर्भविष्यति।

अनुवितिरस्मि। मां

स्वाहेतिं॥८॥

लोकं वेथ्स्यसीति।

तम्श्रिबंक्रिमानेब्रवीत्। प्रजापतेऽग्रये वै बंक्रिमते सर्वाणि भूतानि

910 अनुवित्यै चुरुम्। अनुमत्यै चुरुम्। ततो वै तस्यं सृत्याऽनुवित्तिरभवत्। अनु स्बर्ग लोकमेविन्दत्। सृत्या ह वा अस्यानुवित्तिर्भवति। अनु स्बर्ग लोकं विन्दति। य एतेने ह्विषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्रये कामाय ता वा पृताः सप्त स्वर्गस्यं लोकस्य द्वारंः। दिवःश्यंनयोऽनुवित्तयो नामे। आशां प्रथुमार रक्षिति। कामों द्वितीयाँम्। ब्रह्मं तृतीयाँम्। यज्ञश्चंतुर्थीम्। आपंः पञ्चमीम्। अग्निबंलिमान्थ्यधीम्। अनुवित्तिः सप्तमीम्। अनु ह वै स्वर्गं लोकं विन्दति। काम्वारोऽस्य स्वर्गे लोके भवति। य ए्ताभिरिष्टिभिर्यजते। य उं चैना एवं वेदे। स्वाहाऽनुविन्ये स्वाहाँ। अनुमत्ये स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वगायं स्वाहाऽग्रये स्विष्टकृते स्वाहेति॥९॥ तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

तपसा तपुसर्षंयः स्वंरन्वविन्दन्। आयन्। देवा देवतामभं

तास्वन्बिष्टि। पृष्टोहीव्रां दंद्यात्कर्सं चे। स्नियै चाऽऽभार समृष्ट्ये॥१०॥

ह युक्षं प्रथम् सम्बेभूव। श्रृद्धया देवो देवृत्वमेश्रुते। श्रुद्धा प्रतिष्ठा लोकस्य सुपला-प्रणुदामारोतीः। येनेदं विश्वं परिभूतं यदस्ति। प्रथम्जं देव॰ हविषो विधेम। स्वयुम्भु ब्रह्मं पर्मं तपो यत्। स एव पुत्रः स पिता स माता। तपो तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

देवी॥११॥

सा नो जुषाणोपे यज्ञमागौत्। कामेवथ्साऽमृतं दुहोना। श्रुद्धा देवी प्रथमुजा ऋतस्ये। विश्वस्य भूर्ती जगेतः प्रतिष्ठा। ताङ् श्रुद्धा॰ हविषो यजामहे। सा

नों लोकमुमृतं दथातु। ईशांना देवी भुवंनस्याधिपत्नी। आगांष्य्मत्यश हविरिदं जुंषाणम्। यस्माहेवा जेजिरे भुवंनं च विश्वा तस्मै विधेम हविषां घृतेनं॥१२॥

यथां देवेः संधुमादं मदेम। यस्यं प्रतिष्ठोर्वन्तरिक्षम्। यस्मौद्देवा जीजिरे भुवेनं

च सर्वे। तथ्सत्यमर्चेदुपं युज्ञं न आगौत्। ब्रह्माऽऽहुतीरुपुमोदंमानम्। मनंसो बशे

सर्विमिदं बेभूव। नान्यस्य मनो वशमन्वियाय। भोष्मो हि देवः सहेसः सहीयान्। स नो जुषाण उपे युज्ञमागौत्। आकूतीनामिधिपितें चेतंसां च॥१३॥

912 विपक्षिम्। मनो राजानमिह वर्धयन्तः। उपहवेऽस्य पुवित्रं वितेतं पुराणम्। येनं पूतस्तरीते दुष्कृतानि। तेनं तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्) मुङ्गल्पजीते देव

पवित्रेण शुक्कने पूताः। अति पाप्मानमर्रातिं तरेम। लोकस्य द्वारंमर्चिमत्पवित्रम्। ज्योतिष्मुद्वाजीमानुं महेस्वत्। अुमृतेस्य धारो बहुधा दोहेमानम्। चरेणं नो लोके

सुधितां दपातु। अग्निमूर्धा भुवेः। अनु नोऽद्यानुमितिरन्विदेनुमते त्वम्। हृव्यवाह् <्

स्वर्गी लोकस्तिरोऽभवत्। ते प्रजापीतमब्रुवन्। प्रजापते लोकस्तिरोऽभूत्। तमन्बिच्छेति। तं यंज्ञऋतुभिर-बैच्छत्।

तं तपौऽब्रवीत्। प्रजापते तपेसा वै श्रौम्यसि। अृहमु वै तपौऽस्मि। मां नु

इत्याचंक्षते प्रोक्षेण

इष्ट्रय

नामं। ता

तिद्धीनामिष्टित्वम्। एष्ट्यो ह बै

यंज्ञ कृतुमिन्निन्वविन्दत्।

\_ पुरोक्षंप्रिया इव् हि देवाः॥१५॥

तमिष्टिंभिरन्वंविन्दत्

तमिष्टिभिरन्वैच्छत्।

स्वष्टम्॥१४॥

तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

यंजस्व। अर्थ ते मृत्यं तपौ भविष्यति। अनुं स्वृगं लोकं वृष्स्यसीति। स

एतमांभ्रेयमष्टाकेपालं निरंबपत्। तपेसे चुरुम्। अनुमत्यै चुरुम्। ततो वै तस्यं स्त्यं तपोऽभवत्। अनुं स्वर्गं लोकमीविन्दत्। सृत्यं ह वा अस्य तपो भविति। अनुं स्वर्गं लोकमीविन्दत्। सृत्यः ह वा अस्य तपो भविति। अनुं स्वर्गं लोकं विन्दिति। य एतेने हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्रये स्वाहा तपेसे स्वाहा। अनुमत्ये स्वाहा प्रजापेतये स्वाहा। स्वर्गायं

तः श्रुद्धाऽब्रेवीत्। प्रजापते श्रुद्धया वै श्राम्यसि। अहमु वै श्रुद्धाऽस्मि। मां मु यंजस्व। अर्थ ते सत्या श्रुद्धा भविष्यति। अनु स्वर्ग लोकं वेध्स्यसीति। स एतमीश्रेयम्ष्टाकेपालं निरंवपत्। श्रुद्धाये चुरुम्। अनुमत्ये चुरुम्। ततो वै तस्ये

लोकाय स्वाहाऽम्रये स्विष्टकृते स्वाहेति॥१६॥

नृत्या श्रद्धाऽभेवत्। अनुं स्वर्गं लोकमीविन्दत्। सत्या ह वा अंस्य श्रद्धा भेवति। अनुं स्वर्गं लोकं विन्दति। य एतेनं हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये स्वाह्रौं श्रद्धाये स्वाह्रौ। अनुंमत्ये स्वाह्रौं प्रजापंतये स्वाह्रौं। स्वर्गायं

लेकाय स्वाहाऽग्रयें स्विष्टुकृते स्वाहेति॥१७॥

913

तः सृत्यमंब्रवीत्। प्रजापते सृत्येन वै श्राम्यसि। अहमु वै सृत्यमंस्मि। मां नु यंजस्व। अर्थ ते सृत्यः सृत्यं भविष्यति। अनु स्वर्गं लोकं वेथ्स्यसीति। स एतमौग्रेयमृष्टाकेपाले निरंवपत्। सृत्यायं चुरुम्। अनुमत्ये चुरुम्। ततो वै तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

तस्यं सत्ये स्त्यमंभवत्। अनुं स्वर्गं लोकमंविन्दत्। सत्य॰ ह् वा अंस्य सत्यं

मेवति। अनु स्वर्ग लोकं विन्दति। य पृतेनं हविषा यजेते। ये उं चैनदेवं वेदे। सोऽत्रं जुहोति। अग्रये स्वाहो सत्याय स्वाहाँ। अनुमत्ये स्वाहाँ प्रजापेतये स्वाहाँ। स्वर्गाय लोकाय स्वाहाऽग्रये स्विष्टकृते स्वाहेति॥१८॥

सोऽन

जुहोति। अग्रये स्वाहा मनेसे स्वाहाँ। अनुमत्ये स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वुगीय

सत्यं मनोऽभवत्। अनुं स्वगै लोकमीविन्दत्। सत्यः ह वा अस्य मनो भवति। अनुं स्वगै लोकं विन्दति। य एतेने हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रे

नु यंजस्व। अर्थ ते सत्यं मनो भविष्यति। अनुं स्वर्गं लोकं वेथ्स्यसीति। स एतमौग्रेयमृष्टाकेपाऌं निरंवपत्। मनेसे चुरुम्। अनुमत्यै चुरुम्। ततो वै तस्यं

तं मनौऽब्रवीत्। प्रजापते मनंसा वै श्राम्यसि। अहमु वै मनौऽस्मि।

915 तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्)

लोकाय स्वाहाऽग्रयै स्विष्टुकृते स्वाहेति॥१९॥

तं चरंणमब्रवीत्। प्रज्ञांपते चरंणेन वै श्राम्यिसि। अहमु वै चरंणमस्मि। मां मु यंजस्व। अर्थ ते सृत्यं चरंणं भविष्यिति। अनुं स्वर्गं लोकं वेध्स्यसीति। स् पृतमांश्रेयमृष्टाकंपालं निरंवपत्। चरंणाय चरुम्। अनुमत्ये चरुम्। ततो वै तस्यं सृत्यांश्रेयमृष्टाकंपालं निरंवपत्। चरंणाय चरुम्। अनुमत्ये चरुम्। ततो वै तस्यं सृत्यं चरंणमभवत्। अनुं स्वर्गं लोकमिविन्दत्। सृत्यः ह वा अस्य चरंणं भविति। अनुं स्वर्गं ति य पृतेनं हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये स्वाहा चरंणाय् स्वाहा। अनुमत्ये स्वाहा प्रजापंतये स्वाहा।

पश्चमीम्। अनु हु वै स्वर्गं लोकं विन्दति। कामवारोऽस्य स्वर्गे लोके भवति। य एताभिरिष्टिभिर्यजीते। य उं चैना एवं वेदे। तास्वन्विष्टि। पृष्टोहीवरां देद्यात्कर्स

वं। स्निये चाऽऽमार् समृष्ट्ये॥२१॥

तपः प्रथुमा॰ रक्षिति। श्रुद्धा द्वितीयाम्। सृत्यं तृतीयाम्। मनंश्वतुर्थीम्। चरंणं

ता वा एताः पश्चं स्वर्गस्यं लोकस्य द्वारंः। अपाष्टा अनुवितयो

स्वर्गायं लोकाय स्वाहाऽग्रये स्विष्टकृते स्वाहेति॥२०॥

तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

अथो पश्रंहोतुत्वम्। सर्वा हास्मै दिशंः कल्पन्ते। वाचस्पतिर्होता दश्होतॄणाम्

ब्रह्म वै चतुंरहोतारः। चतुंरहोतुभ्योऽधिंयज्ञो निर्मितः। नैन<sup>५</sup> शृप्तम्। नाभिचेरितमागेच्छति। य एवं वेदे। यो हु वै चतुंरहोतृणां चतुरहोतुत्वं वेदे।

ग्रुथिवी होता चतुर्होतॄणाम्॥२२॥

अग्निरहोता पर्श्वहोतॄणाम्। वाग्घोता षड्डोतॄणाम्। मृहाहीविर्होतो सृप्तहोतॄणाम्।

एतद्वै चतुंरहोतृणां चतुरहोतृत्वम्। अथो पश्चंहोतृत्वम्। सर्वा हास्मे दिशंः कल्पन्ते। य एवं वेदं। एषा वै संविविद्या। एतद्भेष्जम्। एषा पद्भिः स्वर्गस्यं लोकस्याश्चसाऽयंनिः स्रुतिः॥२३॥

एतान् योऽध्यैत्यछंदिद्र्शे यावंत्रसम्। स्वेरेति। अनुपृष्ठवः सर्वमायुरेति

विन्दते प्रजाम्। रायस्पोषं गौप्त्यम्। ब्रह्मवर्चसी भेवति। एतान् योऽप्यैति। स्पृणोत्यात्मानम्। प्रजां पितृन्। एतान् वा अंरुण औपवेशिर्विदां चंकार॥२४॥

पृतैर्रिधबादमपोजयत्। अथो विश्वं पाप्मानम्। स्वेरयो। पृतान्योऽध्यैति। अधिबादं जयित। अथो विश्वं पाप्मानम्। स्वेरिति। पृतैर्धिं चिन्वीत स्वर्गकामः। युतेरायुष्कामः। प्रजापृशुकामो वा॥२५॥ तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

पुरस्ताद्दशंहोतार्मुदंश्वमुपंदधाति यावत्प्दम्। हृदंयं यजुषी पत्यौ च। दक्षिणतः प्राश्चं चतुर्होतारम्। पृक्षादुदंश्चं पश्चहोतारम्। उत्तरतः प्राश्च॰ पृङ्गोतारम्। उपरिष्टात्प्राश्च॰ स्पत्रहोतारम्। हृदंयं यजू॰षि पत्येश्च। यथावकाशं प्रहान्। यथावकाशं प्रीतेग्रहाँक्षोंकं पृणाश्च। सर्वो हास्यैता देवताः प्रीता अभीष्टां

अन्तरिक्षमुक्थ्येन। स्वेरतिरात्रेणं। सर्वाक्षोकानेहीनेनं। अथो स्त्रेणं। वर्गे

सदेवम् अं चिनुते। र्थसीम्मतश्रेत्व्यः। वज्रो वै रथः। वज्रेणेव पाप्मानं आतृव्य इ

भवन्ति॥ २६॥

स्तृणुते। पृक्षः सीम्मतश्चेतव्यः। पृतावान् वै रथः। यावेत्पृक्षः। रथसीम्मतमेव चिनुते।

इममेव लोकं पंशुबन्धेनाभिजंयति। अथौ अग्निष्टोमेने॥२७॥

असावीदित्य ऐकविश्वाः। अमुमेवाऽऽदित्यमाप्नोति। श्वतं दर्वाति। श्वतायुः दक्षिणा। वरेणेव वरङ्ं स्मुणोति। आत्मा हि वरंः। एकेवि॰शतिर्दक्षिणा ददाति। पुक्विष्र्थो वा इतः स्वर्गो लोकः। प्र स्वर्गं लोकमाप्रोति॥२८॥ तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्)

वया १सि॥ २९॥

सर्वस्याऽऽस्यैं। सर्वस्यावेरुद्धौ। यदि न विन्देतं। मन्थानेतावतो दंद्यादोदनान्

वा। अश्रुते तं कामम्। यस्मे कामायाग्रिश्चोयते। पृष्ठोहीं त्वन्तर्वतीं दद्यात्। सा हि सर्वाणि वयारंसि। सर्वस्याऽऽस्यै। सर्वस्यावंरुख्ये॥३०॥

हिरंण्यं ददाति। हिरंण्यज्योतिरेव स्वर्गं लोकमेति। वासो ददाति। तेनाऽऽयुः

प्रतिरते। वेदितृतीये यंजेत। त्रिषंत्या हि देवाः। स संत्यमग्निं चिनुते। तदेतत्पंशुबन्धे ब्राह्मणं ब्रूयात्। नेतरेषु युज्ञेषु। यो हु वै चतुरहोतॄननुसब्नं तंर्पयित्व्यान् वेदं॥३१॥ पुरुषः श्रोतिद्वयः। आयुष्येविन्द्रिये प्रतितिष्ठति। सृहस्रं ददाति। सृहस्रंसिम्नितः स्वगो लोकः। स्वर्गस्यं लोकस्यामिजित्यै। अन्विष्टकं दक्षिणा ददाति। सर्वाण्

तृप्यंति प्रजयां पशुभिः। उपैन १ सोमपीथो नमिति। एते वै चतुंरहोतारोऽनुसवनं तंपीयत्व्याः। ये ब्राह्मणा बंहुविदंः। तेभ्यो यहक्षिणा न नयैत्। दुरिष्ट १ स्यात्। अग्रिमेस्य बुऔरन्। तेभ्यों यथाश्रुद्धं दंद्यात्। स्विष्टमेवैतित्क्रियते। नास्याभिं तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्)

वृंअते॥ ३२॥

हिर्ण्येष्टको भंवति। यावंदुत्तममंङ्गलिकाण्डं यंज्ञपुरुषा सिम्नितम्। तेजो

हिरंण्यम्। यदि हिरंण्यं न विन्देत्। शकंरा अक्ता उपंदध्यात्। तेजो

सतेजसमेवाभ्रिं चिनुते। अभ्रिं चित्वा सौत्रामण्या यंजेत मैत्रावरुण्या वाँ। वीर्येण वा एष व्युध्यते। यौऽभ्रिं चिनुते॥३३॥ यावंदेव वीर्यम्। तदंस्मिन्दधाति। ब्रह्मणः सायुंज्यः सलोकतामाप्रोति। एतासामेव देवतानाः सायुंज्यम्। सार्धिताः समानलोकतामाप्रोति। य एतमभ्रिं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदं। एतदेव सावित्रे ब्राह्मणमा अशो नानिते । प्रतम्भिं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदं। एतदेव सावित्रे

ब्राह्मणम्। अथो नाचिकेते॥३४॥

तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्)

यचामृतं यच् मर्त्यम्। यच् प्राणिति यच् न। सर्वास्ता इष्टेकाः कृत्वा। उपं काम्दुष्टां दधे। तेनर्षिणा तेन् ब्रह्मेणा। तयां देवतंयाऽङ्गिर्म्बद्धुवा सींद। सर्वाः स्त्रियः सर्वान्युर्सः। सर्वे न स्त्रीपुमं च यत्। सर्वास्ताः। यावेन्तः पार्सवो

सङ्घांता देवमायया। सर्वास्ताः। यावंन्त ऊषाः पशूनाम्। पृथियां पुष्टिर्हिताः। मुमें:॥३५॥

सर्वोस्ताः। यावेतोः सिकेताः सर्वाः। अपस्वेन्तश्च याः श्रिताः। सर्वोस्ताः। यावेतीः

शर्केग् धृत्यै। अस्यां पृथिव्यामधि॥३६॥

यावेतीर्वीरुषः सर्वाः। विष्ठिताः पृथिवीमनु। सर्वास्ताः। यावेतोरोषेषीः सर्वाः। सर्वोस्ताः। याव्न्तोऽश्मांनोऽस्यां पृथिव्याम्। प्रतिष्ठासु प्रतिष्ठिताः। सर्वास्ताः

विष्टिताः पृथिवीमनु। सर्वास्ताः॥३७॥

सर्वे। आर्ण्याश्रु ये। सर्वास्ताः। ये द्विपाद्श्रतुष्पादः। अृपादं उदरसृर्पिणः।

यावेन्तो वनुस्पतंयः। अस्यां पृथिव्यामधि। सर्वास्ताः। यावेन्तो ग्राम्याः पृशवः

921 तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

देवत्रा यचे मानुषम्। सर्वोस्ताः। यावेत्कृष्णायेस्॰ सर्वम्। देवत्रा यचे मानुषम्। सर्वोस्ताः। यावेस्नोहायेस्॰ सर्वम्। देवत्रा यचे मानुषम्। सर्वोस्ताः। सर्वे॰ सीस्॰ सर्वोस्ताः। यावृदाञ्जनमुच्यते॥३८॥

सर्वे त्रपुं। देवता यचं मानुषम्॥३९॥

सर्वोस्ताः। सर्वे॰ हिरंण्य॰ रजुतम्। देव्त्रा यचं मानुषम्। सर्वोस्ताः। सर्वे॰

सर्वा दिशो दिक्षा यचान्तर्भूतं प्रतिष्ठितम्। सर्वास्ता इष्टेकाः कृत्वा। उपे काम्दुषां दधे। तेनर्षिणा तेन् ब्रह्मेणा। तथां देवतंयाऽङ्गिर्म्बद्धुवा सींद। अन्तरिक्षं

गुन्युर्वाफ्सुरसंश्च ये। सर्वास्ताः। सर्वानुदारान्थ्सालिलान्। अन्तरिश्चे प्रतिष्ठितान्। च् केवेलम्। यचास्मिन्नन्तराहितम्। सर्वास्ताः। आन्तारिक्ष्यंश्च याः प्रजाः॥४१॥

सर्वोस्ताः। सर्वोनुदारान्थ्सेलिलान्। स्थावृराः प्रोष्यांश्च ये। सर्वोस्ताः। सर्वो धुनि< सर्वान्य्रसान्। हिमो यच्चं शोयते॥४२॥ तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्)

सर्वोस्ताः। सर्वान्मरीचीन् वितंतान्। नीहारो यच्चं शोयते। सर्वोस्ताः। सर्वा

विद्युतः सर्वान्थ्यतनयित्नम्। ह्यादुनीर्यचं शीयते। सर्वास्ताः। सर्वाः स्नर्वन्तीः सृरितेः।

सर्वमफ्सुच्रं च यत्। सर्वोस्ताः॥४३॥

याश्च कूप्या याश्चे नाद्यौः समुद्रियौः। याश्चं वेशन्तीकृत प्रांसचीर्याः। सर्वास्ताः। ये चोत्तिष्टन्ति जीमूतौः। याश्च वर्षन्ति वृष्टयेः। सर्वास्ताः। तपुस्तेजं आकाशम्। यबांऽऽकाशे प्रतिष्ठितम्। सर्वास्ताः। वायुं वयार्भिम् सर्वाणि॥४४॥

अन्तरिक्षचरं च यत्। सर्वास्ताः। अग्नि॰ सूर्यं चन्द्रम्। मित्रं वर्ुणं भगम्। सर्वास्ताः। सृत्यङ् श्रद्धां तपो दमम्। नामं रूपं चं भूतानाम्। सर्वास्ता इष्ठेकाः कृत्वा। उपं कामुदुषां दधे। तेनर्षिणा तेन् ब्रह्मणा। तयां देवतंयाऽङ्गिरस्बद्धुवा

तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्) सींद॥४५∥

सर्वान्दिव्रु सर्वोन्देवान्दिवि। यज्ञान्तर्भूतं प्रतिष्ठितम्। सर्वास्ता इष्टेकाः कुत्वा। उपं काम्दुघां दधे। तेनर्षिणा तेन् ब्रह्मणा। तयां देवतंयाऽङ्गिर्म्बद्धवा

-सींद। यावेतीस्तारंकाः सर्वाः। वितंता रोच्ने दिवि। सर्वास्ताः। ऋचो यजूरंषि सामांनि॥४६॥

अथर्वाङ्गिरसंश्व ये। सर्वास्ताः। इतिहासपुराणं चं। सर्पदेवजनाश्व ये। सर्वास्ताः। ये चं लोका ये चालोकाः। अन्तर्भूतं प्रतिष्ठितम्। सर्वास्ताः। यम् ब्रह्म यचाब्रह्म। अन्तर्ब्रह्मन्यतिष्ठितम्॥४७॥

सर्वोस्ताः। अहोरात्राणि सर्वाणि। अर्धमासाङ्श्व केवेलान्। सर्वोस्ताः। सर्वानृत्न्थ्सर्वान्मासान्। संवध्सरं च केवेलम्। सर्वोस्ताः। सर्वं भूतर् सर्वे भव्यम्। यज्ञातोऽधिभविष्यति। सर्वास्ता इष्टेकाः कृत्वा। उपं कामुदुषां दथे।

तेनर्षिणा तेन् ब्रह्मणा। तयां देवतंयाऽङ्गिरम्बद्धवा सीद॥४८॥

ऋचां प्राचीं महती दिगुंच्यते। दक्षिणामाहुर्यजुषामपाराम्। अर्थर्वणामिङ्गिरसां

प्रतीचीं। साम्रामुदीची महती दिगुच्यते। ऋग्भिः पूर्वाक्षे दिवि देव ईयते। युजुर्वेदे तिष्ठति मध्ये अहः। सामवेदेनाऽस्तम्ये महीयते। वेदेरशून्यक्रिमिरीते सूर्यः।

क्रुभ्यो जाता सर्वेशो मूर्तिमाहुः। सर्वो गतिर्याजुषी हैव शर्यत्॥४९॥

सर्व तेजः सामरूप्य १ हे शक्षत्। सर्व १ हेदं ब्रह्मणा हैव सृष्टम्। क्रुभ्यो जातं वैश्यं वर्णमाहः। युजुर्वेदं क्षेत्रियस्यांऽऽहुर्योनिम्। सामवेदो ब्राह्मणानां प्रसूतिः।

रूर्वे पूर्वेभ्यो वर्च एतद्वुः। आद्र्शम्भिं चिन्वानाः। पूर्वे विश्वसुजोऽमृताः। शृतं

वेर्षसहस्राणि। दाक्षिताः सृत्रमांसत॥५०॥

तपं आसीद्गृहपंतिः। ब्रह्मं ब्रह्माऽभंवध्स्वयम्। सृत्य॰ हु होतैषामासीँत्।

तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

यिद्वेश्वमुज् आसीता अमृतीमेभ्य उदेगायत्। सृहस्रं परिवध्सरान्। भूत॰ ह प्रस्तोतैषामासीत्। मुबिष्यत्प्रति वाहरत्। प्राणो अध्वयुरंभवत्। इद॰ सर्वे॰ अपानो विद्वानावृतः। प्रतिप्रातिष्ठदध्वरे। आतिवा उंपगातारः। सदस्यां

सिषांसताम्॥५१॥

ऋतवोऽभवन्। अर्धमासाश्च मासाश्च। चमसाष्वर्षवोऽभेवन्। अश्चरंसद्वह्मणस्तेजः। अच्छावाकोऽभेवद्यशः। ऋतमेषां प्रशास्ताऽऽसीत्। यद्विश्वसुज् आसेत॥५२॥

<u>ऊर्जाजांनुमुदंबहत्। धुवगोपः सहोऽभवत्। ओजोऽभ्यंध</u>ोद्घाळणंः। यद्विश्<u>य</u>सुज

ड्रध्म॰ ह् क्षुचैभ्य उग्रे। तृष्णा चाऽऽवंहतामुभे। वागेषा॰ सुब्रह्मण्याऽऽसीत्। छुन्दोयोगान् विजानती। कल्पतत्र्ज्ञाणि तन्वानाऽहेः। स्ङ्स्थाश्चं सर्वशः। अहोरात्रे पंशुपाल्यो। मुहूर्ताः प्रेष्यां अभवन्। मृत्युस्तदंभवद्धाता। शमितोग्रो विशां आसंत। अपंचितिः पोत्रीयांमयजत्। नेष्ट्रीयांमयजन्तिषिः। आग्नीद्धाद्विदुषीं सृत्यम्। \_ <u> श्रुद्धा हैवायंज्ञथ्स्वयम्। इरा पत्नी विश्वसुजाम्। आकृतिरपिनड्वविः॥५३॥</u>

विश्वसुजः प्रथुमाः सृत्रमोसत। सृहस्रोसम् प्रसुतेन् यन्तः। ततो ह जजे भुवेनस्य

पतिः॥५४॥

गोपाः। हिर्णमयेः शकुनिब्रह्म नामे। येन सूर्यस्तपीते तेजंसेद्धः। पिता पुत्रेणं

पितृमान् योनियोनौ। नावेदविन्मनुते तं बृहन्तमै। सुर्वानुभुमात्मान४ सम्पराये।

एष नित्यो मेहिमा ब्रौह्मणस्यं। न कर्मणा वर्धते नो कनीयान्॥५५॥

तस्यैवाऽऽत्मा पंद्वित्तं विदित्वा। न कर्मणा लिप्यते पापेकेन।

पश्चेपश्चाशतिष्कृवृतेः संवथ्स्याः। पश्चेपश्चाशतेः पश्चद्शाः। पश्चेपश्चाशतेः सप्तदशाः

पश्चेपञ्चाशते एकवि॰्शाः। विश्वमुजार् सहस्रेसंवथ्सरम्। एतेन वै विश्वमुजं इदं विश्वेमसुजन्ता यद्विश्वमसुंजन्त। तस्मौद्विश्वमुजंः। विश्वेमेनाननु प्रजायते।

समानलोकतां यन्ति। य पृतदुप्यन्ति। ये चैन्त्राहुः। येन्येश्वेन्त्पाहुः॥५६॥ ॐ॥

ब्रह्मणुः सायुंज्य सलोकताँ यन्ति। युतासमिव देवताना र् सायुंज्यम्। सार्थिता रं

तृतीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैतिरीय-काठकम्)

## 976

<u>~</u>

॥इति कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयकाठके तृतीयः प्रश्नः समाप्तः॥३॥ ॥इति कृष्णयजुर्वेदीयतैतिरीयकाठकं समाप्तम्॥

ह्या<u>र</u>े: ॐ =